திருவொற்றியூரான்

சாமவேத சங்கிதை

இரண்டாம் பாகம்.

வே. மொ. பெ. கா. வெளியீடு, எ. 4.

சாமவேத சங்கிதை

இரண்டாம் பாகம்

சாயண பாடியம்.

காசிவாசி

சிவானந்த யதீந்திர சுவாமிகளவர்களால்

மொழி பெயர்க்கப்பட்டது.

மொழி பெயர்ப்பாசிரியரின் பதவுரையும்,
குறிப்புரையும் அடங்கியது.

திருவொற்றியூரான் அடிமை என்னும்

சென்னை

த. ப. இராமசாமிப் பிள்ளை யவர்களால்

பதிப்பித்து

நன்கொடையாக அளிக்கப்பெற்றது.

யுவ ஸ்ரீ கார்த்திஷகத் திங்கள்.

1935.

காபிரைட்]

[ரிஜிஸ்தர் செய்யப்பட்டது.

PRINTED AT THE
EVEREADY PRESS,
34, HUNTERS ROAD,
CHOOLAI - VEPERY,
MADRAS.

சாமவேத சங்கிதை

உத்தரார்ச்சிக

மந்திரங்களின் அட்டவணை.

मन्त्र संख्या.	मन्त्राः.	पृष्ठ संख्या.	मन्त्र संख्या.	मन्त्राः.	पृष्ठ संख्या.
1251	अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे	620	1404	अग्निर्जुषतनो गिरो	783
1302	अगन्म महानमसा	670	1829	अग्निर्ज्योतिर्ज्योति	1265
660	अग्न आयाहि वीतये	11	1530	अग्निर्मूर्द्धादिवः	922
1550	अग्न आयाह्यग्निभि	944	1394	अग्निर्वृत्राणि जङ्घनत्	771
1462	अग्न आयूंषि पवसे	848	1736	अग्निर्हि वाजिनं विशे	1147
1516	अग्न आयूंषि पवसे	909	1529	अग्ने केतुर्विशामसि	921
1735	अग्निं तमन्ये यो	1145	1775	अग्ने तमद्याश्वं	1196
790	अग्निं दूतं वृणीमहे	146	1814	अग्ने तवश्रवो वयो	1247
1371	अग्निं नरोदीधिति	744	1107	अग्ने त्वं नो अन्तम	475
1217	अग्निं वो देवमग्निभिः	583	792	अग्ने देवां इहावह	148
946	अग्निं वो वृधन्त	312	1528	अग्ने नक्षत्रमजर	920
1553	अग्निं सूनुं सहसो	947	1518	अग्ने पवस्व स्वपा	911
1525	अग्निं हिन्वन्तु नो	917	1519	अग्ने पावक रोचिषा	911
1811	अग्निं होतारं मन्ये	1240	1381	अग्ने युङ्क्ष्वाहि ये	755
1709	अग्निः प्रत्नेन जन्मना	1118	1559	अग्ने वाजस्य गोमता	954
1708	अग्निः प्रियेषु धामसु	1116	1778	अग्ने विवस्वदुषसः	1200
844	अग्निनाग्निः समिध्यते	202	1501	अग्ने विश्वेभिरग्निभिः	893
791	अग्निमग्निं हवीमभि	147	1033	अग्ने सिन्धूनां	404
1823	अग्निरिन्द्राय पवते	1259	1348	अग्ने सुक्षतमे रथे	719
1517	अग्निर्ऋषिः पवमानः	910	1403	अग्ने स्तोभं मनामहे	782
1825	अग्निर्जागारतमृचः	1261	1527	अग्ने स्थूरं रयिं	919

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
1614	अग्ने गो राजा	1020
1042	अचिकदद्वृषा	412
658	अच्छाकोशं	9
1552	अच्छा नः शीरशोचिषं	946
1382	अच्छा नो याह्यावहा	756
659	अच्छा समुद्रमिन्दवो	10
1551	अच्छा हित्वा सहसः	945
1506	अजीजनो अमृत	899
1363	अजीजनो हि पवमानः	736
1612	अञ्जते व्यञ्जते	1017
838	अतस्त्वा रयि	197
1672	अतो देवा अवन्तु	1082
1742	अत्यायातमश्विना	1454
1189	अत्याहि याना	558
1806	अत्राविनेमिरेषा	1235
915	अत्राह गौरमं	278
1089	अथाते अन्तमानां	455
1513	अदर्शि गातुवित्तमो	907
1554	अदाभ्यः पूरयेत	949
1629	अदक्षपा परिष्कृतो	1039
1456	अद्याश्वः श्व इन्द्रः	842
839	अद्या हिन्वान इन्द्रियं	198
1486	अधत्विषीमां	876
1020	अध धारया मध्वा	388
1494	अध यदि ते पवमानः	887
1549	अधास्वं हि नस्करो	943
710	अधाहीन्द्रो गिर्वणः	66
1776	अध्वन्यो क्रतो	1197
1039	अधुक्षत प्रियं मधु	409
1223	अध्वर्यो अद्रिभिः	590
1636	अनुते शुष्मं	1046
989	अनुत्वा रोदसी	356
744	अनुप्रवस्योक	101
1364	अनु हित्वा सुतं	737
998	अनूपे गोमान्	365
1375	अन्तश्चरति रोचना	748
1869	अन्धा अमित्राः	1314
1193	अपघ्नन्तो अराव्णः	561
1211	अपघ्नन् पवते	578
1235	अपघ्नन् पवसे मृधः	604
1122	अपद्वारामतीनां	489
1412	अपां नपातं सुभगं	792
995	अप्सा इन्द्राय	362
1842	अप्सुरेतः शिश्रिये	1279
1745	अबोधि होतायजं	1158
1756	अबोध्यग्निर्ज उदेति	1175
1744	अबोध्यग्निः समिधा	1157
1032	अभिक्रन्दन् कलशं	402
1062	अभिगव्यानि वीत	429
962	अभिगावो अध	330

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
1853	अभिगोत्राणि	1296
652	अभिते मधुना	3
1571	अभित्वा पूर्ववीत	969
1406	अभित्रिषृष्ठं वृषणं	785
731	अभित्वा वृषभ	88
680	अभित्वा शूर	32
1011	अभिद्युम्नं बृहद्यश	379
765	अभिद्रोणानि बभूव	122
1773	अभि द्विजन्मानि	1194
1426	अभिनो अर्षदिव्यः	809
1487	अभिप्रगोपर्ति	879
811	अभिप्रवः	167
1555	अभिप्रयांसि वाहसा	950
1125	अभिप्रियं दिवस्पदं	492
1760	अभिप्रियाणि काव्या	1181
700	अभिप्रियाणि पवते	52
1202	अभिप्रिया दिवः	569
870	अभिब्रह्मीरनूषत	230
1425	अभिवस्तासुवस	1808
1841	अभिवाजि विश्वरूपो	278
1424	अभिवायुं वीत्यर्षा	807
1195	अभिविप्रा अनूषत	563
1021	अभिव्रतानि पवते	389
1246	अभिसि सत्यसोमपाः	613
856	अभि सोमास आयवः	214
1236	अभीनो वाजसातये	604
684	अभीषु णः	36
1505	अभ्यभि हि श्रवसा	898
971	अभ्यर्ष बृहद्यशो	338
1053	अभ्यर्ष स्वायुध	421
1601	अभ्यारमिदद्रयो	1003
1054	अभ्यार्षानपच्युत	422
1387	अभ्रातृव्यो अना	762
1863	अमित्रसेनां	1308
1415	अमित्रहा विचर्षणिः	880
1859	अमीषां चित्तं	1303
725	अयं त इन्द्र सोमो	82
1100	अयं दक्षाय साध	467
823	अयं पुनान उषसो	181
818	अयं पूषारयिर्भगः	175
695	अयं भराय	48
947	अयं यथा न आ	313
910	अयं वा मित्रा वरुणा	273
948	अयं विश्वा अभि	314
757	अयं विश्वानि तिष्ठति	115
900	अयं सयो दिव	263
1606	अयं सहस्रमृषिभि	1009
1843	अयं सहस्रा	1281
1774	अयं स होता	1195
756	अयं सूर्य इवोषा	114

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
1469	अयं सोम इन्द्र तुभ्यं	854
1597	अयमु ते समतसि	999
805	अयाचितो विपानया	160
1713	अयानिजघ्निरोजसा	1122
772	अया पवस्व देवयू	129
1214	अया पवस्व धारया	581
1104	अया पवा पवस्वे	471
1588	अया रुचा हिरण्या	988
1208	अया वीति परिस्रव	575
1215	अयुक्त सूर एतशं	581
1338	अयुद्ध इद्युधावृतं	730
1660	अरं त इन्द्र कुक्षये	1070
877	अरूरुचदुषसे	238
1755	अर्चन्ति नारीरपसो	1174
1758	अर्वाङ् चित्रको	1178
1335	अर्षा नः सोम	704
994	अर्षा सोमद्युम	361
1318	अलर्षि रातिं	688
1359	अव चक्रिणं वृषभं	731
702	अवद्युतानः	55
1861	अवसृष्टा परापत	1306
1092	अवस्म दुर्हृणाय	459
1522	अवानो अग्ने ऊतिभिः	914
1131	अव्यावारे परि	498
1205	अव्यावारेः परि	572

मन्त्र सं.	मन्त्राः	पृष्ठ सं.
1582	अश्वं न गीर्भि	981
1632	अश्वं नत्वा वारवन्तं	1042
1732	अश्विनावतिरस्मदा	1142
1724	अश्वेव चित्रारुषी	1134
783	अश्वो न चक्रदो	139
1154	असाढमुग्रं पृतनासु	522
942	असर्जि कलशां	307
1028	असाविसोम इन्द्रः	397
1314	असाविसोमो अरु	683
1008	असाव्यंशुर्मदाय	376
1003	असि हि वीरः	370
1034	असृक्षत प्रवाजि	405
1810	असृग्रं देववीतये	1239
1216	असृग्रमिन्दवः पथा	493
1858	असौ या सेना मरुतः	1302
1675	अस्ताविमन्म पूर्व्यं	1085
1783	अस्ति सोमो अयं	1207
1134	अस्मभ्यं रोदसी रयिं	500
1046	अस्मभ्यमिन्दविन्द्रियं	415
1441	अस्मा अस्मा इदन्धसो	1498
1857	अस्माकमिन्द्रः समृते	1301
755	अस्य प्रत्नामनुद्युतं	113
1397	अस्य प्रेषा हेमना	774
1714	अस्य व्रतानि नाद्दषे	1123
696	अस्येदिन्द्रो	49

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
1572	अन्येदिन्द्रो वावृधे	970
1499	अहं प्रत्नेन जन्मना	891
1498	अहमिद्धि पितुष्परि	890
1085	आघत्त्वावान्मना	452
745	आघागमद्यति	102
1336	आघाये अग्निमिन्धते	705
1355	आ जागृविर्विप्र	726
1385	आजामिरत्के	759
1029	आतिष्ठ वृत्रहन्	398
728	आतून इन्द्र क्षुमन्तं	85
1022	आते अग्न इधीमहि	390
1023	आते अग्न ऋचाहविः	391
1135	आते दक्षं मयो	501
1164	आते वत्सो मनो	532
1807	आत्वा ग्रावा	1236
667	आत्वा ब्रह्मयुजा	17
1769	आत्वा रथं यथोतये	1189
1390	आत्वा रथे हिरा	765
1658	आत्वा विशन्त्विन्द	1068
1389	आत्वा सहस्रमा	764
740	आत्वेता निषीदते	97
851	आदहस्वधामनु	209
1112	आदित्यैरिन्द्रः सगणो	479
1493	आदीं केचित्पश्य	886
771	आदीं त्रितस्य	128

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
770	आदीं हंसो	127
1010	आदीमश्वं न होतार	378
835	आन इन्दो शात	194
1152	आनः सोम संयतं	520
834	आनः सोम सहो	193
1431	आनस्ते गन्तु	816
1523	आनो अग्नेरा	915
1524	आनो अग्नेसु	916
1497	आनो भज पर	889
663	आनो मित्रावरुणा	13
1743	आनो रत्नानि	1155
1490	आनो विश्वासु	882
863	आ पप्राथमहिना	222
1201	आ पवमान धारया	568
906	आ पवमान सुष्टुतिं	269
1206	आ पवस्व मदिन्तम	573
895	आ पवस्व महीमिषं	259
786	आ पवस्व सुवीर्यं	142
1121	आपानासो विवा	488
1835	आपो हिष्ठा	1271
1750	आमात्यागिरुषा	1166
1136	आ मन्द्रमावरेण्यमा	502
1716	आमन्द्रैरिन्द्र	1124
1326	आमहः सुतास	696
1429	आमासु पक्वमैरय	813

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
1133	आमित्रे वरुणेभ	499
1374	आयं गौः प्रश्नि	747
1772	आयः पुरं नार्मिणी	1192
1086	आयद्दुवः शतक्रत	453
1060	आययो स्त्रिंशतं	428
666	आयाहि सुषुमाहि	16
925	आयो निमरुणो	288
1137	आरयिमासु चेतुनमा	503
879	आवंसते मघवा	241
1038	आवच्यस्व महि	408
1012	आवच्यस्व सुदक्ष	380
902	आ विवासन् परा	265
1847	आशुः शिशानो	1287
898	आशुरर्ष बृहन्मते	261
1478	आसुते सिञ्चत	863
1392	आसोता परि	768
1687	आ सोमस्वानो	1098
1488	आहरयः सप्त°	880
768	आहर्यतो अर्जुनो	124
721	इच्छन्ति देवाः	78
914	इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः	277
1075	इदं वां मदिरं	443
734	इदं वसो सुत	91
1667	इदं विष्णुर्विचक्रमे	1077
1747	इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां	1161
1453	इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां	839
737	इदं ह्यन्वोजसा	94
1544	इनो राजन्नरति	936
873	इन्दुरिन्द्राय पवत	233
1019	इन्दुर्वाजी पवते	387
976	इन्दो यथा तवस्तवो	343
964	इन्दो यदद्रिभिः सु	332
1854	इन्द्र आसां नेता	1297
715	इन्द्र इनो महोनां	72
797	इन्द्र इद्धर्योः सचा	153
1454	इन्द्र क्रतुं न आभरपिता	840
953	इन्द्र जठरं नव्यं	319
952	इन्द्र जुषस्व प्रवहा	318
671	इन्द्रमग्निं कविच्छदा	21
694	इन्द्रमच्छ सुता इमे	47
796	इन्द्रमिद्गाथिनो	151
1030	इन्द्रमिद्धरी वहतो	399
1585	इन्द्रमिद्देवतातय	954
1250	इन्द्रमीशान मोजसाभि	618
798	इन्द्रवाजेषु नोऽव	153
1401	इन्द्र शुद्धो न आगहि	779
1402	इन्द्र शुद्धोहि नोरयिं	780
1627	इन्द्रश्च वायवेषां	1037
746	इन्द्र सुतेषु सोमेषु	102
954	इन्द्रस्तु राधाणित्रो न	320

மந்த்ர ஸ.	மந்த்ராः	பृष्ठ ஸ.
1683	इन्द्रस्था तर्हरीणां	1093
1367	इन्द्रस्ते सोमसुतस्य	738
1867	इन्द्रस्य बाहूस्थविरौ	1312
1855	इन्द्रस्य वृष्णो वरूण	1298
1228	इन्द्रस्य सोम पवमान	596
1178	इन्द्रस्य सोम राधसे	548
934	इन्द्रं तं शुम्भपुरु	299
1793	इन्द्रं वाणी रनुत्तम	1218
827	इन्द्रं विश्वा अवीवृध	186
1618	इन्द्रं वो विश्वतः	1025
1221	इन्द्रः सदा मनेकृत	588
1692	इन्द्राग्नी अपसस्परि	1103
1575	इन्द्राग्नी अपसस्परि	973
669	इन्द्राग्नी आगतं सुतं	19
670	इन्द्राग्नी जरितुः सचा	20
1576	इन्द्राग्नी तविषाणि	974
1693	इन्द्राग्नी तविषाणि	1104
1574	इन्द्राग्नी नवतिं पुरो	972
1702	इन्द्राग्नी नवतिं पुरो	1110
991	इन्द्राग्नी युवामिमे	358
1691	इन्द्राग्नी रोचाना दिवः	1102
1489	इन्द्राय गाव आशिरं	881
951	इन्द्राय नून मर्चतो	317
722	इन्द्राय मद्वने सुतं	79
1025	इन्द्राय सामगायत	394
1446	इन्द्राय सोमपातवे	831
1329	इन्द्राय सोमपातवे वृत्रघ्ने	699
1677	इन्द्राय सोमपातवे वृत्रघ्ने	1088
1144	इन्द्रायाहि चित्रभानो	511
1146	इन्द्रायाहि तूतुजान	513
1145	इन्द्रायाहि धियेषितो	512
1076	इन्द्रायेन्दो मरुत्वते	444
800	इन्द्रे अग्मानमो	155
850	इन्द्रेण संहिदृक्षसे	208
913	इन्द्रो दधीचो	276
799	इन्द्रो दीर्घाय चक्षस	154
1002	इन्द्रो मदाय वावृधे	369
1586	इन्द्रो महारोदसी	985
949	इममिन्द्र सुतं पिब	315
1495	इममूषुत्वमस्माकं	888
1583	इमं मे वरुणश्रुधी	982
1064	इमं स्तोममर्हते	431
1605	इमा उत्वा पुरूवसो	1008
753	इमा उत्वां दिविष्टय	110
1110	इमानुकं भुवना	477
1674	इमे हिते ब्रह्मकृतः	1084
916	इयं वामस्य मन्मना	279
1817	इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व	1251
996	इषं तोकायनो	363
841	इषे पवस्व धारया	199

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ स.
1818	इ र्तारमध्वरस्य	1252
733	इहत्वा गोपरीणसं	90
1536	ईडेन्यो नमस्यस्ति	928
957	ईशान इमा भुवनानि	325
1531	ईशिषेपार्यस्यहि	923
1803	उक्थंच न शस्यमानं	1232
1370	उक्षामि मेति प्रतियन्ति	743
854	उग्रा विघनिता मृध	212
672	उचाते जातमन्धसो	23
1216	उतत्याहरितो रथे	582
1105	उत न एना पवया	472
1459	उत नः प्रिया प्रियासु	845
1063	उत नो गोमतीरिषो	430
977	उत नो गो विदश्च	343
1591	उत नो गोषणीं	993
1188	उत नो वाजसातये	557
1418	उत प्रपिप्य ऊधर	799
1380	उत ब्रुवन्तु जन्तवः	754
1839	उत वात पितासि	1276
1725	उत सखास्यश्विनोरुत	1135
1351	उत स्वराजो अदिति	722
1752	उतायातं सङ्गवे	1169
1785	उतोन्वस्यजोषमा	1209
988	उत्तिष्ठन्नोजसा सह	355
1539	उत्ते बृहन्तो अर्चयः	931
1203	उत्ते शुष्मा स ईरते	570
1712	उत्ते शुष्मासो अस्थू	1121
1352	उत्वा मदन्तु सोमाः	723
1383	उदग्ने भारतद्युम	757
1532	उदग्ने शुचयस्तव	924
1754	उदपप्तन्नरुणाभानवो	1173
1360	उदुत्ये मधुमत्तमा	732
752	उदुस्रियाः सृजते सूर्यः	109
1639	उद्गा आजदङ्गिरो	1049
1448	उद्वेदभिश्रुतामघं	833
1219	उद्यस्य ते नवजातस्य	586
1856	उद्वर्षय मघवन्नायु	1299
1704	उप छायामिव	1112
709	उप त्वा कर्मन्नूतये	64
1568	उप त्वा जामयो	964
1540	उप त्वा जुह्वो मम	932
1703	उप त्वा रण्व संदृशं	1111
1014	उप त्रितस्य पाष्यो	382
1088	उप नः सवनागहि	455
1593	उप नः सूनवो गिरः	995
1788	उप नो हरिभिः	1213
1377	उप प्रयन्तो अध्वरं	751
761	उप शिक्षा च तस्थुषो	118
1480	उप स्रक्वेषु वत्सतः	866
763	उपास्मै गायता नरः	120

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
651	उप्वस्मै गायता नरः	2
1369	उपो मतिः पृच्यते	741
762	उपोषु जातमप्तुरं	119
1333	उपोषु जातमप्तुरं	703
1508	उपो हरीणां पतिं	901
887	उभयतः पवमानस्यरश्म	251
1231	उभयं शृणुवच्चन इन्द्रो	600
1090	उभे यदिन्द्रे रोदसी	456
1408	उरुगव्यूतिर भयानि	787
1792	उरुव्य च सेमहिने	1217
664	उरु शंसान मोवृधा	14
1729	उषस्तच्चित्रमा	1139
1730	उषो अद्येह गोम	1140
1058	उस्रा वेद वसूनां	426
1448	उद्वेदभि श्रुता	833
1710	ऊर्जो न पातमाह्वेग्निं	1119
704	ऊर्जो न पातं स	59
1816	ऊर्जो न पाज्जात वेदः	1250
1599	ऊर्ध्वस्तिष्ठान ऊतं	1001
1845	ऊर्ध्वो गन्धर्वो	1283
1464	ऋतमृतेन सपन्तेषिरं	848
701	ऋतस्य जिह्वापवते	54
1819	ऋतावानं महिषं	1253
1706	ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य	1114
848	ऋतेन मित्रा वरुणावृता	206

मन्त्र सं.	मन्त्राः	पृष्ठ सं.
794	ऋतेन यावृता वृधा वृतस्य	150
656	ऋधक् सोमस्वस्तये	7
1174	ऋषिमनाय ऋषिकृत्स्वर्षाः	544
679	ऋषिर्विप्रः पुर एता	30
1266	एतं मृजन्ति मर्ज्यमुप	635
1273	एतं त्रितस्य योषणो	641
1277	एतं त्वं हरितो	645
830	एत असृग्रमिन्दवः	190
1081	एतमुत्यं दशक्षिपो	448
1271	एतमुत्यं दशक्षिपो	639
1753	एता उत्या उषसः	1171
861	एते सोमा अभिप्रिय	546
1061	एते सोमा असृक्षत	429
1400	एतोन्विन्द्रं	777
1682	एदु मधोः मदिन्तरं	1092
674	एना विश्वान्यर्य	25
749	एना वो अग्निं नम	106
1507	एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत	900
1805	एन्द्र याहि हरिभिरूप	1234
1245	एन्द्र नो गधिप्रिय	612
1782	एभिर्ददे वृष्ण्या	1205
1777	एभिर्नो अर्कैभव	1198
143	एमेनं प्रत्येतन	825
1656	एव हरी ब्रह्मयुजा	1066
861	एवानः सोमपरिषि	219

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
808	एवा पवस्व मदिरो	164
1366	एवामृताय	738
825	एवा रातिस्तु वीमघ	184
824	एवाह्यासि वीरयुरेव	183
1285	एष इन्द्राय वायवे	653
1263	एष उस्य पुरुव्रतो	632
1272	एष उस्य वृषा	640
1284	एष कविरभिष्टुतः	652
1287	एष गव्युरचिक्रद	655
1261	एष दिवं व्यासरत्तिरो	630
1260	एष दिवं विधावति	629
1254	एष देवो अमर्त्यः	624
1259	एष देवो विपाकृतोति	628
1258	एष देवो विपन्युभिः	627
1257	एष देवो रथर्यति	627
1280	एष देवः शुभायतेधि	648
1264	एष धियायात्यण्व्या	633
1286	एष नृभिर्विनीयते	654
1279	एष पवित्रे अक्षरत्सोमो	647
1265	एष पुरु धियायते	634
758	एष प्रत्नेन मन्मना	116
759	एष प्रत्नेन जन्मना	117
1262	एष प्रत्नेन जन्मना	631
1766	एष ब्रह्माय ऋत्विया	1187
1268	एष रुक्मिभिरीयते	637
1270	एष वसूनि पिब्दनः	639
1278	एष वाजी हितो	646
1255	एष विप्रैरभिष्टुतो	625
1256	एष विश्वानिवार्या	626
1281	एष वृषाकनि	649
1289	एष शुष्म्यदाभ्यः	656
1288	एष शुष्म्यसिष्यद	655
1269	एष शृङ्गाणि दोधुव	638
1282	एष सूर्यमरोचयत्	650
1283	एष सूर्येण हासते	651
1276	एषस्य पीतये सुतो	644
1275	एषस्य मद्यो रसोवचष्टे	643
1274	एषस्य मानुषीष्वा	642
1267	एष हितो विनीयतेन्तः	636
1726	एषो उषा अपूर्व्या	1136
1733	एह देवामयो भुवा	1143
1656	एह हरी ब्रह्मयुजा	1066
705	एह्यूषु ब्रवाणि तेग्न	61
1024	ओमे सुश्चन्द्रविश्वते	392
1694	कई वेदसुते सचे	1104
1862	कङ्काः सुपर्णा अनु	1307
1306	कण्वा इन्द्रं यदक्रत	674
1361	कण्वा इव भृगवः	734
866	कण्वेभिः धृष्णावेवा	225
1341	कदामर्त्तमराधसं	710

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
1547	कयाते अग्ने	941
1584	कयात्वं न ऊत्यामिः	983
682	कयानश्चित्र आ भुवदूति	34
1533	कस्ते जामिर्जनानामग्ने	925
683	कस्त्वा सत्योमदानां	35
1243	कविमिव प्रशंस्यं	610
1316	कविर्वेधस्या	685
849	कवी नो मित्रावरुणा	207
1680	कस्तमिन्द्र त्वावसो	1090
1623	किमित्ते विष्णो	1030
1666	कुवित्सस्य प्रहि	1076
1647	कुवित्सुनो गविष्टयेग्ने	1058
832	कृण्वन्तो वरिवो	192
1545	कृष्णां यदेनीमभि	938
959	केतुं कृण्वं दिवस्परि	327
1468	केतुं कृण्वन्न केतवे	852
974	क्रीडुर्मखोन मंहयुः	341
1561	क्षपो राजन्नुत	956
1395	गर्भे मातुष्पितुः पिता	772
1718	गभीरामुदधिं	1127
1828	गायत्रं त्रैष्टुभं	1264
1342	गायन्तित्वा गाय	712
1600	गाव उपवदा	1002
1043	गिरस्त इन्द्र ओजसा	412
1222	गिरा वज्रोन सम्भृतः	589
665	गृणाना जमदग्निना	15
1854	गोत्रमिदं गोविदं	1294
1609	गोमन्न इन्द्रो	1013
955	गोवित्पवस्व वसुवि	322
1045	गोषा इन्दोनृषा	414
1435	घृतं पवस्व	821
1175	चमूषच्छ्येन	545
816	जघ्निर्वृत्रम मित्रियं	173
960	जज्ञानो वाचमिष्यसि	328
907	जनस्य गोपा अजनिष्ट	270
1458	जनीयन्तोन्व ग्रवः	844
1661	जरा बोधतद्वि	1071
1192	जुष्ट इन्द्रायमत्सरः	560
1779	जुष्टोहि दूतो	1201
1031	ज्योतिर्यज्ञस्य पवते	401
1428	तत्ते यज्ञो अजायत	812
1460	तत्सवितुर्वरेण्यं	846
882	तदद्याचित्त उक्थिनो	244
1481	तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं	867
1671	तद्विप्रासो विपन्यवो	1081
1670	तद्विष्णोः परमं पदं	1080
1664	तद्वो गायसुते सचा	1074
876	तपोष्पवित्रं विततं	237
1372	तमग्निमस्ते वसवो	745
1630	तमस्यमर्जयामसि	1040

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
1334	तमिद्वर्द्धन्तुनोगिरो	703
1220	तमिद्वं वाजयामसि	587
1147	तमीडिष्वयो अर्चिषा	514
1410	तमुत्वानून मसुरप्रचेतसं	789
885	तमुष्टवापयंगिर	247
748	तमुहुवे वाजसातय	104
1822	तमोषधीर्दधिरे	1258
1434	तया पवस्व धारया	820
867	तरणिरित्सिषा सतिवाजं	227
1057	तरत्समन्दिधावति	424
857	तरत्समुद्रं पवमानः	215
687	तरोभिर्वो विदद्वसु	39
1052	तवक्रत्वा तपोति	420
1224	तवत्य इन्दो अन्धसो	591
1643	तवत्यदिन्द्रियं	1053
1644	तवद्यौरिन्द्र पौंस्यं	1054
1325	तवद्रप्सा उदप्रुत	695
1821	तवद्रप्सो नीलवान्	1256
982	तवश्रियो वर्ष्यस्येव	348
923	तवाहं नक्तमुत सोम	286
922	तवाहं सोमरारण	285
1837	तस्मा अरंगमाम	1274
1631	तंगाथया पुराण्या	1041
1685	तंगूर्धया स्वर्णरं	1095
880	तं तेमदं गृणीमसि	242

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
736	तं तेयवं यथा	93
1520	तं त्वा घृतस्न वीमहे	912
804	तं त्वा धर्तारमोण्यो	159
836	तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं	195
1044	तं त्वा मदाय घृष्वय	413
1077	तं त्वा विप्रा वचोविदः	445
1109	तं त्वा शोचिष्ठ	476
661	तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो	12
699	तं दुरोषमभी नरः	52
1098	तंवः सखायो मदाय	465
685	तं वोदस्ममृतीषहं	37
1684	तं वो वाजानां पतिः	1094
1678	तं सखायः पुरु रुचं	1089
1715	तं हिन्वन्ति मदच्युतं	1123
1232	तं हिरण्यराजं वृषभं	601
1512	तं होतारमध्वरस्य	906
1007	ता अस्य नमसासहः	375
1006	ता अस्य पृशना युवः	374
1463	तानः शक्तं पार्थिवस्य	848
1143	तानः शक्तं पार्थिवस्य	510
1149	तनो वाजवतीरिष	515
993	ताभिरगच्छतं नरोपेदं	360
802	तवां गीर्भिर्विपन्युवः	157
986	तावां सम्यगद्रुह्वाणेष	335
912	तासम्राजा घृतासुती	275

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
801	ताहि शश्वन्त ईडत	156
853	ता हुवेययोरिदं पप्रे	211
859	तिस्रोवाच ईरयति	217
869	तिस्रोवाच उदीरते	229
777	तुभ्येमा भुवना कवे	134
1608	तुरण्यवो मधुमन्तं	1012
1770	तुविशुष्म तुविक्रतो	1190
1423	ते अस्य सन्तुकेतवो	805
1479	ते जानतस्वमो	865
1190	ते नः सहस्रिणं	559
1168	ते नो वृष्टिं दिवस्परि	531
1102	ते पूतासो विपश्चितः	469
1036	ते विश्वादाशुषे वसु	407
1809	ते सुतासो विपश्चितः	1238
1069	ते स्यामदेव मरुण	437
1700	तोशा वृत्रहणा	1109
1074	तोशासा रथयावाना	442
1640	त्यमुवः सत्रासाहं	1050
724	त्रिकद्रुकेषु चेतनं	81
1484	त्रिकद्रुकेषु महिषो	872
1421	त्रिरस्मै सप्तधेनवो	803
1376	त्रिंशद्धाम विराजति	749
1015	त्रीणि त्रितस्य धारया	383
1668	त्रीणि पदा विचक्रमे	1078
1472	त्वमग्ने यज्ञानां	858
1405	त्वमग्ने सप्रथा	784
1721	त्वमङ्ग प्रशंसिषो देवः	1131
1635	त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि	1045
1409	त्वमिन्द्र यशा अस्पृजीषि	788
1026	त्वमिन्द्राभिभूरसित्वं	395
1354	त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र	725
1534	त्वं जामिर्जनानामग्ने	926
1491	त्वं दाता प्रथमो	883
1018	त्वं द्यां च महिव्रत	386
718	त्वं न इन्द्रवाजयुस्त्वं	75
1167	त्वं न इन्द्राभर	535
1621	त्वं नश्चित्र ऊत्या	1028
956	त्वं नृचक्षसा असि सोम	324
1503	त्वं नो अग्ने अग्निभिः	896
1580	त्वं पुरु सहस्राणि	979
1249	त्वं बलस्य गोमतो	616
1244	त्वं यविष्ठदाशुषो	611
972	त्वं राजेव सुव्रतो	339
1304	त्वं वरुण उतमित्रो	672
1094	त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु	461
776	त्वं समुद्रिया अपो	133
1800	त्वं सिन्धूं रवा	1228
1322	त्वं सुतो मदिन्तमो	693
1323	त्वं सुष्वाणो अद्रि	694
1051	त्वं सूर्येन आ भज	420

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
965	त्वं सोमनृमादनः	333
981	त्वं सोम परिस्रव	347
1321	त्वं सोमासि धारयु	691
1590	त्वं हत्यत्पणीनां	991
1320	त्वं हि राधसस्पते	690
1790	त्वं हि वृत्रहन्नेषां	1215
1247	त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र	614
1432	त्वं हि शूरः सनिता	817
938	त्वं ह्याङ्गदैव्य	303
1579	त्वं ह्योर्हिचेरवे	977
908	त्वामग्ने अङ्गिरसो	271
1767	त्वामिच्छवसस्पते	1188
813	त्वामिदाह्योनरोवि	170
809	त्वामिद्धि हवामहे	165
1139	त्वाविश्वे अमृत	506
1566	त्वां दूतमग्ने अमृतं	422
1055	त्वां यज्ञैरवीवृधन्	422
1017	त्वां रिहन्ति धीतयो	385
1645	त्वां विष्णुर्बृहन्	1055
1169	त्वां शुष्मिन् पुरुहूत	537
1168	त्वां हि नः पिता	536
1483	त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति	870
1095	त्वे विश्वे स जोषसो	462
1504	त्वे सोमप्रथमा	897
654	दविद्युतत्या रुचा	5

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
1695	दानामृगोन वारण	1104
1548	दाशेमकस्य मनसा	942
1225	दिवः पीयूषमुत्तमं	592
1241	दिवो धर्त्तासि शुक्रः	608
1197	दिवोनाभा विचक्षणो	565
1091	दीर्घं ह्यङ्कुशं	458
676	दुहान ऊधर्दिव्यं	27
760	दुहानः प्रत्नमित्पयः	117
1180	देवेभ्यस्त्वामदाय	550
1511	देवो वो द्रविणोदाः	905
686	द्युक्षं सुदानुं	38
1846	द्रप्सः समुद्रमभि	1285
1789	द्वितं यो वृत्रहन्तमो	1214
1328	द्विर्यं पञ्च स्वयशं	698
1226	धर्ता दिवः पवते	593
1477	धिया चक्रे वरेण्यो	862
941	धीभिः मृजन्ति वाजिनं	306
1834	धेनुष्ट इन्द्र सूनृता	1270
1059	ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा	427
1414	नकिरस्य सहन्त्य	794
1153	नकिष्टं कर्मणा	521
950	नकिष्ट्वद्रथीतरो हरी	316
1388	नकी रेवन्तं सख्याय	763
1665	नघावसुर्नियमते	1075
720	नघेमन्यदा पवन	77

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
1797	न ते गिरो अपि	1223
681	न त्वा वां अन्यो	33
1213	न त्वा शतञ्च नहुतो	580
1510	नदं व ओदतीनां	903
868	न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु	228
1444	नमसे दुपसीदत	830
1646	नमस्ते अग्न ओजसे	1057
1826	नमः सखिभ्यः पूर्वं	1262
688	नयं दुध्रावरन्तेन	41
1347	नराशं समिह प्रिय	718
1449	नवयो नवतिं	834
1751	न संस्कृतं प्रमिमीतो	1168
707	नहि ते पूर्त्तिमक्षिप	62
730	नहि त्वा शूरदेवा	87
1509	नह्याङ्ग पुराच न	902
1844	नाके सुवर्णमुपयत्पतन्तं	1282
1124	नाभानाभिं न आददे	490
1140	नाभिं यज्ञानां सदनं	507
1200	नित्यस्तोत्रो वनस्पति	567
1654	नीव शीर्षाणि मृद्वं	1063
1312	नूनं पुनानोविभिः	681
926	नृनो रयिं महामिन्द्रो	289
931	नेमिं नमन्ति चक्षसा	295
1183	नृचक्षसं त्वावय	552
735	नृभिर्धौतः सुतो	92

मन्त्र सं.	मन्त्राः	पृष्ठ. सं
758	नृभिर्येमाणो हर्यतो	216
1570	पदं देवस्य	967
1353	पदापणीनराधिसो	724
1655	पन्यं पन्यमित्सोतार	1065
1564	पन्यांसं जातवेदसं	960
1327	परित्यं हर्यतं हरिं	697
1679	परित्यं हर्यतं हरिं	1090
897	परि नः शर्म यः त्या	260
1210	परि नो अश्वमश्ववि	577
1365	परि प्रधन्व	737
935	परिप्रिया दिवः कवि	300
1129	परि यत् काव्या	496
1016	परि विश्वानि चेतसा	337
899	परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं	262
1238	परिस्य स्वानो	605
1313	परि स्वानश्चक्षसे	682
1120	परि स्वानास इन्दवे	487
1093	परि स्वानो गिरिष्ठाः	460
1311	परीतोषिञ्चता	679
1315	पर्जन्यः पिता महिषस्य	684
1362	पर्यूषु प्रधन्व	735
1622	पर्षितोकं तनयं	1029
773	पवते हर्यतो	130
1187	पवन्ते वाजसातये	556
921	पवमान धियाहितो	284

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
1234	पवमान नितोशसे	603
1186	पवमान मखस्य वो	555
890	पवमान रसस्तव मदो	254
905	पवमान रुचा रुचा	268
1310	पवमान व्यश्नुहि	679
1447	पवमान सुवीर्यं	832
1308	पवमानस्य जिघ्नतो	677
657	पवमानस्य ते कवे	8
891	पवमानस्य ते रसो	255
787	पवमानस्य ते वयं	143
958	पवमानस्य विश्ववित्	327
1697	पवमाना असृक्षत	1107
1698	पवमाना दिवस्प	1108
1699	पवमानास आशवः	1108
889	पवमानो अजीजन	253
1130	पवमानो अभिस्पृधो	497
1437	पवमानो असिष्य	823
1309	पवमानो रथितमः	678
919	पवस्व दक्षसाधनो	282
1233	पवस्व देव आयुष	602
1037	पवस्व देवविरति	408
1324	पवस्व देववीतय	694
692	पवस्व मधुमत्तम	45
775	पवस्व वाचो अग्रियः	132
1016	पवस्व वाजसातये	384
896	पवस्व विश्वचर्षण आ	259
966	पवस्व वृत्रहन्तम	334
1433	पवस्व वृष्टिमा	819
1808	पवस्व सोममन्द	1237
1239	पवस्व सोममहान्	606
1330	पवस्व सोममहे	700
778	पवस्वेन्दो वृषा सुतः	135
875	पवित्रं ते विततं	235
1050	पवीतारः पुनीतन	419
987	पातं नो मित्रा	354
1657	पाता वृत्रहा सुतमा	1067
1815	पावकवर्चाः शुक्रवर्चा	1248
1298	पावमानीः स्वस्त्ययनीः	665
1301	पावमानीः स्वस्त्ययनीस्ता	668
1299	पावमानीर्दधन्तु न इमं	666
1297	पावमानीर्यो अध्ये	664
1542	पाहिनो अग्न एकया	934
1543	पाहि विश्वस्माद्रक्षसो	935
1784	पिबन्ति मित्रो अर्यमा	1208
1391	पिबात्वास्य गीर्वणः	767
1419	पिबा सुतस्य रसिनो	800
927	पिबा सोममिन्द्र मन्दतु	290
1830	पुनरूजा निवर्तस्व	1266
1157	पुनाता दक्षसाधनं	526
1181	पुनानः कलशेष्वा	551

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
675	पुनानः सोमधारया	25
1177	पुनानासश्चमूषदो	547
1595	पुनाने तन्वामिथः	997
924	पुनानो अक्रमीदभि	287
843	पुनानो देववीतय	201
842	पुनानो वरिवस्कृध्यूर्जं	200
1080	पुनानो वारे पवमानो	447
1209	पुरः सद्य इत्था	576
1248	पुरां भिन्दुर्युवा	615
1165	पुरुत्राहि सदङ्ङसि	533
714	पुरुहूतं पुरुष्टुतं	71
741	पुरूतमं पुरूणामीशानं	98
985	पुरूरुणाचिध्यस्य	352
697	पुरोजीति वो अन्धसः	50
829	पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो	188
1578	पौरो अश्वस्य	976
968	प्रकविर्देववीतये व्या	336
1114	प्रकाव्यमुशनेव ब्रुवा	481
1307	प्रजामृतस्य पिप्रतः	675
886	प्रत आश्विनीः पवमान	249
1624	प्रतत्ते अद्य शिपि	1032
1741	प्रतिप्रियतमं रथं	1153
1067	प्रति वां सूर उदिते	435
1723	प्रतिष्या सूनरी	1133
677	प्रतु द्रव परिकोशं	28

मन्त्र सं.	मन्त्राः	पृष्ठ. सं
739	प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः	96
1759	प्र ते धारा असश्चतो	1180
1331	प्र ते सोतारो रसं	701
1492	प्रत्नं पीयूषं	885
1438	प्रत्यस्मै पिपीषते	824
751	प्रत्यु अदर्श्यायन्यू	108
1515	प्रदैवो दासो अग्निः	909
1127	प्र धारामधो	494
963	प्र पवमान धन्वसि	331
937	प्र प्रक्षाय पन्यसे	300
1457	प्र भङ्गि शूरो मघवा	843
878	प्र मंहिष्ठाय गायत	240
892	प्र यद्वाचो नभूर्ण	256
1128	प्र युजा वाचो	495
716	प्र व इन्द्रायमादनं	73
1199	प्र वाचमिन्दुरिष्यति	567
1158	प्र वाज्यक्षाः सहस्रधार	527
1573	प्र वामर्चन्त्युक्थिनो	971
1701	प्र वामर्चन्त्युक्थिनो	1110
1594	प्र वां महित्वची	996
1151	प्र वो धियो मन्द्रयुवो	518
1791	प्र वो महे महे	1216
1141	प्र वो मित्राय गायत	508
1113	प्र वोचोपः	480
1502	प्र स विश्वेभिरग्निभिः	895

மந்த்ர ஸ.	மந்த்ராः.	पृष्ठ सं.
1204	प्र सवेत उदीरते	571
1384	प्र सुन्वानायान्धसो	758
774	प्र सुन्वानायान्धसो	130
1820	प्र सो अग्ने तवोतिभिः	1255
767	प्र सोम देव वीतये	123
1160	प्र सोम याहीन्द्रस्य	528
961	प्र सोमासो अधन्विषुः	329
769	प्र सोमासो मदच्युतः	126
764	प्र सोमासो विपश्चितो	121
1117	प्र स्वानासो रथा	485
1115	प्र हंसासस्तृपल	482
1589	प्राचीमनुप्रदिशं	990
1013	प्राणा शिशुर्महीनां	381
945	प्रावी विपद्वाच ऊर्मिं	311
1763	प्रास्य धारा अक्षरन्	1184
1617	प्रियो नो अस्तु	1024
1860	प्रेता जयता नर	1305
1373	प्रेद्धो अग्नेदीदिः	746
1242	प्रेष्ठं वो अतिथिं	609
1150	प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य	517
1218	प्रोथदश्वो न यवसे	585
1799	प्रोष्वस्मै पुरो	1226
1442	बभ्रवेनु स्वतवे	828
1851	बलविज्ञायः स्थविरः	1293
1337	बृहन्निदिध्म एषां	706
1850	बृहस्पते परिदीया	1292
929	बोधसु मे मघवन्	292
1396	ब्रह्म प्रजावदाभर	773
668	ब्रह्माणस्त्वायुजा	18
944	ब्रह्मा देवानां पदवीः	309
1872	भद्रं कर्णेभिः	1317
1558	भद्रं मनः कृणुष्वः	953
1398	भद्रा वस्त्रा समन्या	775
1557	भद्रो नो अग्निराहुतो	952
1546	भद्रो भद्रया सचमान	939
1065	भरामेध्वं कृणवामा	433
1070	भिन्धि विश्वा उपद्विषः	438
1420	भूयामते सुमतौ	801
1798	भूरि हिते सवना	1224
1182	मघोन आ पवस्व	551
1681	मघोनः स्मा वृत्रहत्येषु	1090
1252	मत्सि वायुमिष्टये	622
1430	मत्स्यपायिते महः	815
814	मत्स्वा सुशिप्रिन्	171
1196	मदच्युत् क्षेति	564
1346	मधुमन्तं तनूनपाद्य	717
822	मनीषिभिः पवते	180
1720	मन्दन्तु त्वा मघवन्नि	1129
1541	मन्दं होतारमृत्विजं	933
1868	मर्माणि ते वर्मणा	1313

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
1253	महत्तत्सोमो	623
1040	महान्तं त्वा महीरन्वापो	410
1305	महां इन्द्रो य	673
1596	मही मित्रस्य	998
1106	महीमे अस्य वृषनाम	473
1738	महे नो अद्य बोध	1149
1212	महो नो राय आभर	579
1358	माचिदन्यद्विशंसत	730
1722	मा ते राधांसि मात	1132
732	मात्वा मूरा अविष्यवो	89
1804	मा न इन्द्र पीयत्नवे	1233
1648	मा नो अग्ने महा	1058
1455	मा नो अज्ञाता	841
918	मा पापत्वाय नो	281
1603	मा भेममाश्रा	1005
793	मित्रं वयं हवामहे	149
847	मित्रं हुवे पूतदक्षं	205
1138	मूर्धानं दिवो अरतिं	504
1871	मृगो न भीमः	1316
1179	मृजन्ति त्वा दशक्षिपो	549
1079	मृज्यमानः सुहस्त्या	446
984	मेधाकारं विदथस्य	351
1673	मोषु त्वा वाघतश्च	1083
826	मोषु ब्रह्मेव तन्द्रयु	185
1162	य आर्जीकेषु	530

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
1707	य इदं प्रति पप्रथे	1115
1148	य इद्ध आ विवासति	515
1705	य उग्र इव शर्यहा	1112
1696	य उग्रः सन्ननिष्टृतः	1105
1339	य एक इद्विदयते	708
820	य ओजिष्ठस्तमाभर	177
1616	यच्चिद्धि शश्वतातना	1023
1535	यजानो मित्रावरुणा	927
1812	यजिष्ठं त्वा यजमाना	1242
1411	यजिष्ठं त्वा ववृमहे	791
1427	यज्जायथा अपूर्व्य	811
1637	यज्ञमिन्द्रमवर्द्धयद्यद्भूमिं	1047
909	यज्ञस्य केतुं प्रथमं	272
1073	यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विज	441
1111	यज्ञं च नस्तन्वञ्च	478
703	यज्ञा यज्ञावो अग्नये	57
1319	यत इन्द्र भयामहे	689
1172	यत्तेदिक्षु प्रराध्यं	540
706	यत्र क्व च ते मनो	61
1864	यत्र बाणाः सम्पतन्ति	1309
1343	यत्सानोः सान्वारुहो	713
999	यत्सोम चित्रमुक्थ्यं	366
1719	यथा गौरी अपाकृतं	1128
1840	यददो वात ते	1277
785	यदद्भिः परिषिच्यसे	141

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
1349	यदद्य सूर उदिते	720
1170	यदिन्द्र चित्रम	538
1229	यदिन्द्र प्रागपागु	597
1794	यदिन्द्र यावतस्त्वमे	1220
1832	यदिन्द्राहं यथा	1268
1440	यदी सुतेभिरिन्दुभिः	826
1746	यदीं गणस्य रशनामजीगः	1159
1004	यदुदीरत आजयो	371
862	यद्याव इन्द्र ते शतं	221
1757	यद्युञ्जाथे वृषणमश्विना	1177
1230	यद्वारुमे रुशमे	598
1072	यद्वीडाविन्द्र यत्	440
1171	यन्मन्यसे वरेण्य	539
1413	यमग्ने पृत्सु	793
1526	यया गा आकरामहै	918
975	यवं यवं नो अन्धसा	342
1340	यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य	709
884	यस्त इन्द्र नवीयसीं	246
738	यस्ते अनुस्वधाम सत्सुते	95
928	यस्ते मदो युज्यश्चारुरस्ति	291
815	यस्ते वरेण्यस्तेना	172
727	यस्ते शृङ्गवृषो णपात्	84
845	यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूतं	203
1514	यस्माद्रेजन्त कृष्टयः	908
723	यस्मिन् विश्वा अधि	80
1097	यस्य त इन्द्रः पिबाद्यस्य	464
693	यस्य ते पीत्वा वृषभो	46
1771	यस्य ते महिनामहः	1191
1071	यस्य ते विश्वमानुष	439
779	यस्य ते सख्ये वयंसासद्याम	136
1569	यस्य त्रिधात्ववृतं	966
1607	यस्यायं विश्व	1011
1563	यं जनासो हविष्मन्तो	959
1296	यः पावमानीरध्ये	663
1198	यः सोमः कलशेष्वा	566
1378	यः स्त्रीहितीषु	752
780	याते भीमान्यायुधा	136
1727	या दस्रा सिन्धुमानरा	1137
1734	यावित्था श्लोकमादिवो	1144
1739	या सुनीथे शौचद्रथे	1151
979	यास्ते धारा मधुश्चुतो	345
1344	युङ्क्ष्वा हि केशिना	714
1731	युङ्क्ष्वा हि वाजि	1141
1466	युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं	850
712	युञ्जन्ति हरि इषिरस्य	68
1467	युञ्जन्त्यस्य काम्या	851
1827	युञ्जे वाचं शत	1263
1641	युध्मं सन्तमनर्वाणं	1051
754	युवं चित्रं ददथुर्भोजा	111
1001	युवं हि स्थः स्वः पति	368

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
788	ये ते पवित्रमूर्मयो	144
1500	ये त्वामिन्द्र न तुष्टु	892
881	येन ज्योतिंषायवे	243
1300	येन देवाः पवित्रेणात्मानं	667
939	येना नवग्वादध्यङ्	304
1161	ये सोमासः परावति	529
846	यो अग्निं देववीतये	204
743	योगो योगो तवस्तरं	100
1824	यो जागार तमृचः	1260
978	यो जिनाति न जीयते	344
698	यो धारया पावकया	51
1870	यो नः स्वो रणो	1315
933	यो राजा चर्षणीनां	297
1836	यो वः शिवतमो	1272
1581	यो विश्वादयते	980
690	रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि	43
1056	रयिं नश्चित्रमश्विनमिन्दो	424
1078	रसं ते मित्रो अर्यमा	445
807	रसाय्यः पयसा पिन्व	163
911	राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे	274
1119	राजानो न प्रशस्तिभिः	487
833	राजा मेधाभिरीयते	193
871	रायः समुद्रांश्चतुरो	231
1068	राया हिरण्यया	436
1748	रुशद्वत्सा रुशती	1162
1084	रेवती नः सधमाद	451
1802	रेवां इद्रेवत	1231
1728	वच्यन्ते वां ककुहासो	1138
1787	वट्सूर्य श्रवसा	1211
1786	वण्महां असि	1210
719	वयमुत्वा तदिदर्था	76
708	वयमूत्वामपूर्व्यस्थूरं	63
1689	वयमेनमिदाह्योपीपे	1100
864	वयं घत्वा सुतावन्त	223
1237	वयं ते अस्य राधसो	604
691	वरि वो धातमो भुवो	44
795	वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो	151
1625	वषट् ते विष्णवास	1034
1108	वसुरग्निर्वसुश्रवा	476
990	वाचमष्टा पदीमहे	357
1476	वाजी वाजेषु धीयते	861
1838	वात आवातु भेषजं	1275
983	वातोपजूत इषितो	350
1628	वायविन्द्रश्च शुष्मिणा	1038
1626	वायो शुक्रो अयामि	1035
711	वार्णं त्वायव्याभि	67
1482	वावृधानः शवसा	868
1191	वाश्रा अर्षन्तीन्दवो	560
831	विघ्नन्तो दुरिता पुरु	191

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
1650	विचिद्वृत्रस्य दोधतः	1060
1780	विधुं भद्राणं समने	1202
1866	विन इन्द्रमृधो जा हि	1311
1613	विपश्चिते पवमानाय	1018
1496	विभक्तासि चित्रभानो	888
1686	विभूतरातिं विप्र	1096
1567	विभूषन्नग्न उभयां	964
1027	विभ्राड्ज्योतिषा	396
1451	विभ्राट् बृहत्पिबतु	836
1452	विभ्राट् बृहत्सुभृतं	837
1865	विरक्षो विमृधो	1310
1659	विव्यक्थमहिना वृषन्	1069
1562	विशो विशो वो अतिथिं	958
1587	विश्वकर्मन् हविषा	987
840	विश्वस्मा इत्स्वर्दृशे	199
888	विश्वा धामानि विश्वचक्ष	252
930	विश्वाः पृतना अभि	293
1615	विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमं	1022
1801	विषु विश्वा अरातयो	1229
1669	विष्णोः कर्माणि पश्यत	1079
1768	विसृतयो यथा पथा	1188
729	विद्मा हित्वा तु विकूर्मिं	86
852	वीटुचिदारुजन्नुभिर्गुहा	210
1521	वीतिहोत्रं त्वा कवे	912
1690	वृकश्चिदस्य वारणः	1100
1717	वृत्र खादो बलं रुजः	1126
1538	वृषणं त्वा वयं वृषन्	930
803	वृषा पवस्व धारया	158
1000	वृषा पुनान आयूंषि	367
821	वृषा मतीनां पवते	178
1620	वृषा यूथेव वंसगः	1027
806	वृषा शोणो अभिक	161
781	वृषा सोमद्युमां असि	136
784	वृषा ह्यसि भानुना	140
1537	वृषो अग्निः समिध्यते	929
1465	वृष्टिद्यावा रीत्या	849
1184	वृष्टिं दिवः परिस्रव	553
782	वृष्णस्ते वृष्ण्यंशवो	138
1474	वेत्था हि वेधो अध्वनः	859
1638	व्यान्तरीक्षमतिरन्मदे	1048
1066	शके मत्वा समिधं	434
812	शतानीकेव प्रजिगाति	169
1577	शध्यूषु शचीपत	975
1592	शशमानस्य वानरः	994
717	शंसेदुक्थं सुदानव	74
1781	शाक्मना शाको	1204
726	शाचिगो शाचि पूजनाय	82
1642	शिक्षाण इन्द्र	1052
1833	शिक्षेयमस्मै	1269
1795	शिक्षेयमिन्महयते	1221

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
1332	शिशुं जज्ञानं हरिं	702
1773	शिशुं जज्ञानं हर्यतं	542
1240	शुक्रः पवस्व देवेभ्यः	607
967	शुचिः पावक उच्यते	335
1009	शुभ्रमन्धो देव वातमप्सु	377
1035	शुम्भमाना ऋतायुभि	406
1471	शुष्मीशर्धोन मारुतं	856
1407	शूरग्रामः सर्ववीतः	786
1227	शूरो न धत्त	594
917	शृणु तं जरितुर्हव	280
894	शृण्वे वृष्टेरिवस्व नः	258
1317	श्रायन्त इव सूर्यं	687
883	श्रुधीहवं तिरश्च्या	245
1796	श्रुधीहवं विपिपान	1222
1560	स इधानो वसु	955
1849	स इषु हस्तैः	1290
1470	स ईं रथो न	855
828	सख्येत इन्द्रवाजिनो	187
1633	सघा नः सूनुः	1043
742	सघा नो योगा	99
1293	स त्रितस्याधिसा	660
810	सत्वं नश्चित्र वज्रहस्त	166
1295	स देवः कविने	662
1450	स न इन्द्रः शिवः	835
673	स न इन्द्राय यज्यवे	24
1436	स न ऊर्ज्ये व्या	822
653	स नः पवस्व शं	4
789	स नः पुनान आभर	145
662	स नः पृथुः श्रवाय्य	13
1047	सनाच सोमजोषि	416
1048	सना ज्योतिस्सना	417
1049	सना दक्षमुतक्रतुमप	418
1611	सनेमित्वमस्मदा	1015
1634	सनो दूराच्चा	1044
1083	सनो भगाय वायवे	450
1473	सनो मन्द्राभिरा	858
1662	सनो महां	1072
1711	सनो मित्रमहा	1120
1762	सनो विश्वादिवो	1182
1379	सनो वेदो अ	753
1619	सनो वृषन्नमुं	1026
1610	सनो हरीणां	1014
1207	स पवस्व मदिन्तम	574
1291	स पवित्रे विचक्षा	658
1356	स पुनान उपसूरे	727
1764	सप्तिं मृजन्ति	1185
747	स प्रथमे व्योमनि	103
1422	स भक्ष्यमाणो	804
1166	समत्स्वग्निमवसे	534
1761	समर्मृजान आयु	1181

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
1649	समस्य मन्ववे	1059
1303	समहा विश्वा	671
1749	समानो अध्वा	1164
1688	समामृजे तिरो	1099
1565	समिद्धमग्निं समिधा	961
1082	समिद्रेणोत वायुना	449
1676	समिन्द्रो रायो	1086
903	समीचीना अनूषत	266
1123	समीचीनास आशत	490
1156	समीं वत्सं न मातृभिः	525
1041	समुद्रो अप्सु मामृजे	411
819	समुप्रिया अनूषत	176
1399	समुप्रियो मृज्यते	776
932	समुरे मासो	296
817	सम्मिश्लो अरुषो	174
1142	सम्राजाया घृतयोनी	509
1116	सयोजत उरुगाय	484
750	सयोजते अरुषा	107
1653	सरूप वृषन्ना	1063
1663	स रेवां इव	1073
1357	स वर्धिता वर्धनः	729
973	स वह्निरप्सु दुष्टरो	340
1415	स वाजं विश्वच	795
1292	स वाजी रोचनं	659
1159	स वाज्यक्षाः सहस्र	528
1155	स वाय आ निषीदत	524
1132	स वायुमिन्द्रमश्विना	499
1386	स वीरो दक्षसाधनो	760
1294	स वृत्रहावृषा	661
1604	स व्यामनुस्फिग्यं	1007
1290	स सुतः पीतये	656
1096	स सुन्वे यो वसूनां	463
936	स सूनुर्मातराशो	301
1831	सहरय्या निवर्त	1267
1393	सहसधारं वृषभं	769
874	सहस्रधारः पवते	234
1813	स हि पुरुचिदो	1245
969	सहिष्मा जरितृभ्या	337
1848	संक्रन्दनानेन	1289
920	सं देवैः शोभते	283
1417	सं मातृभिर्न्नशिशुः	797
1099	संवत्स इव मातृभिः	466
837	संवृक्त घृष्णुमुक्थ्यां	196
1416	साकमुक्षो मर्जयन्त	796
1485	साकं जातः क्रतुना	874
1740	सा नो अद्याभर	1152
1556	साह्वान् विश्वा	951
1602	सिञ्चन्ति नमसा	1004
901	सुत एति पवित्र	264
766	सुता इन्द्राय वायवे	123

मन्त्र सं.	मन्त्राः.	पृष्ठ सं.
872	सुता सोम मधुमत्तमाः	232
1350	सुप्रा वीरस्तु सक्षयः	720
1652	सुमन्वावस्थिरन्ति	1062
1087	सुरूपकृत्नुमूतये	454
893	सुवितस्य वनामहे	257
1345	सुषमिद्धो न आवह	716
1765	सुषहासो मता	1186
1103	सुष्वाणा सोम्यं	470
1368	सूर्यस्येव रश्मयो	740
1737	सो अग्नियों वसु	1148
980	सो अर्षेन्द्राय पीतये	346
997	सोम उष्वाणः	364
860	सोमं गावो धेनवो	218
943	सोमः पवते जनिता	308
940	सोमः पुनान ऊर्मि	305
1185	सोमः पुनानो अर्षति	554
1194	सोमा असृग्रमिन्दवः	562
1461	सोमानां स्वरणं	847
1101	सोमाः पवन्त इन्दवो	468
1598	स्तोत्रं राधानां	1000
865	स्वरन्ति त्वासुरे	224
1873	स्वस्ति न इन्द्रो	1319
1005	स्वादोरित्था	373
689	स्वादिष्ठयामदिष्ठया	42
678	स्वायुधः पवते	29
855	हथो वृत्राण्यार्या	213
1443	हस्तच्युतेभिरद्रिभिः	829
904	हिन्वन्ति सूरमुस्रयः	266
1118	हिन्वानासो रथा इव	486
655	हिन्वानो हेतृभिः	6
1475	होता देवो	860
1651	ओजस्तदस्यतित्विष	1061

ஓம்

சாமவேதாய நம:

சாமவேத சங்கிரை

உத்தரார்ச்சிகம்.

1-வது பிரபாடகம்—முற்பாதி.

முதலாவது அத்தியாயம்.

சாயணபாடிய அவதாரிகையின்

சுருக்கம்.

நன்மனத்தர்களான வாகீசன் (பிரமன்) முதலியோர்கள், எவனை வணங்கிச் செயற்பாலதைச் செய்தவர்களானார்களோ, அவ் வாணமுகனை வணங்குகின்றேன்.

எவரிடத்திலிருந்து வேதங்கள் வெளிப்பட்டனவோ, எவர் வேதங்களிலிருந்து உலகனைத்தையு முண்டாக்கினரோ, அந்த வித்தியாதீர்த்த மகேசுரரை இறைஞ்சுகின்றேன்.

எண்ணளவு கொண்ட தோத்திர மந்திரங்களைக் கூறுதற்பொருட்டு இவ் வுத்தரார்ச்சிகந் தொடக்கப்படுகின்றது. அதாவது தோத்திர மஞ்சரி (தோத்திரக் கொத்து) என்பதாலுண்டாகிய சோமயாக முதலியவைகளிற் கூறத்தக்க, மும்முறையாகிய பதினைந்து முதலியன கூறப்படுகின்றன என்பதாம். அதுபற்றியே தைத்திரிய மோதுவோர்கள் கடாவிடைகளால் கிழ்வருமாறு கூறுகின்றார்கள் :—"அச்சோதிகள் எத்தனைவகைகள்? எவை? இதனுடைய கூட்டங்கள் (தோத்திர மஞ்சரிகள்) மும்முறை பதினைந்து பதினேழு இருபத்தொன்று, இவைகளே அச்சோதிகள் எவை? இதனுடைய கூட்டங்கள்" என. இத்தன்மைய தோத்திர மஞ்சரிகள் அநேகமுள; இடையிலும் அளவிலாத வேறுபாடுகளை யுடையவைகளாய் ஒன்பது வகைத்தாம். அவைகளுள், முற்கூறிய மும்முறைகொண்ட

பதினேந்து முதலியனவோ, நான்கு, மூன்று, ஒன்பது, மூன்றென்பதாம். சந்த நாமமுடைய தோத்திர மஞ்சரிகள் மூன்றும், அவற்றுள், இருபத்து நான்கு தோத்திரமஞ்சரி முதலாவதாம். அதுவோ? இருபத்துநான்கு எழுத்துக்களால் அளவிடப்படுகின்றது. முப்பத்து நான்கு, அல்லது, நாற்பது என்பது இரண்டாவதாம். அதுவோ? 'திருஷ்டுப்' என்னுஞ் சந்தப்பண்ணு லளவிடப்படுகின்றது. நாற்பத்தெட்டு என்பது மூன்றுவதாம். அதுவோ? 'சகதி' என்னுஞ் சந்தத்தால் (பண்ணால்) அளவிடப்படுகின்றது. இவ்வாறு பலவகையாயினமை காண்க. அநேகவிதமான தோத்திரப் பண்களை எண்ணுடன் கணக்கிட்டுக் கூறத்தொடங்குகின்றது; இருபத்தொரு அத்தியாயங் கொண்ட இவ் வுத்தரார்ச்சிகம் என்றவாறும்.

தேவதைகள்:—1, 3, 8, 10, 15, 19, சோமம். 4, 20, 21, அக்கினி. 5, மித்திரவருணர்கள். 6, 11, 13, 14, 22, 23, இந்திரன். 7, இந்திராக்கினி. 12, சர்வதேவதைகள்.

சந்தங்கள்:— 1, 8, 12, 15, 21, காயத்திரி. 9, 11, 13, 14, 20, பிருகதி. 10, திருஷ்டுப். 16, 12, 13, ககுப். 17, உஷ்ணிக். 18, அநுஷ்டுப் 19, சகதி,

(சுரங்கள்):— 1, 8, 12, 15, 21, ஷட்சம். 9, 11, 13, 14, 20, மத்தியமம். 10, தைவதம். 16, 17, 22, 23, ரிஷபம். 18, காந்தாரம். நிஷாதம். இருடிகள் ஆங்காங்குக் கூறப்படுவார்கள்,

முதலாவது கண்டம்.

ஒன்பது மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१२ ३ १२ ३१२
651. उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे ।
३२ ३ १ २२
अभि देवाꣳ इयक्षते ॥ १ ॥

உவாஸ்மை காயதா நரஃ பவமாநாயேந்தவே ।
அபி தேவாꣳ இயக்ஷதே ॥

அந்வயம்.

हे नरः !, देवान्, अभि, इयक्षते, पवमानाय, अस्मै इन्दवे, उपगायत ॥

பதவுரை.

हे नरः !	ஹெ நரஃ !	வேட்போர்காள் ! நீவிர்,
देवान्	தெவாந்	தேவர்களைக் குறித்து
अभि	அபி	ஒரு முகமாய்
इयक्षते	இயக்ஷதெ	ஆராதிக்க விரும்புகின்றதும்,
पवमानाय	பவமாநாய	பவித்திரமாய் ஒழுகுகின்றதுமாகிய
अस्मै इन्दवे	அஸ்மை இந்தவெ	இச் சோமத்தின் பொருட்டு
उपगायत	உபகாயத	இனிய தோத்திரத்தைப் பாடுவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

முதலத்தியாயத்தின் முதற் கண்டத்திலுள்ள சூக்தத்தில் மும்மையில் (என்னும் யாதொரு) முதலாவது மந்திரமுண்டோ, அதுவே ஈண்டுக் கூறப்படுகின்றது :— அசிதர், அல்லது, தேவலர் ரிஷி. வேள்வியாற்றுவோர்களே ! நீவிர், வேள்வியின் சம்பந்தமான இந்திரன் முதலிய தேவர்களை ஆராதிக்க விரும்புவதும், பிழிந்தெடுக்கப்பெற்று ஒழுகிக்கொண்டிருப்பதுமாகிய இச் சோமத்தின் பொருட்டு ஒருமையுடன் இனிய தோத்திரத்தைப் பாடுவீர்களாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

३ २ ३ १ २ ३ १ २र
652. **अभि ते मधुना पयोऽथर्वाणो अशिश्रयुः ।**
३२ ३ १२ ३२
देवं देवाय देवयु ॥ २ ॥

அபி தெ மதுநா பயொऽதர்வாணொ அஶிஶ்ரயுஃ ॥
தெவம் தெவாய தெவயு ॥

அந்வயம்.

हे सोम !, देवं, देवयु, ते, देवाय, मधुना पयः, अथर्वाणः, अभ्यशिश्रयुः ॥

பதவுரை.

हे सोम!	ஹெ ஸோம !	சோமமே !
देवं	தெவம்	போற்றத் தக்கதும்
देवयु	தெவயு	தேவர்க ளிச்சிக்கின்றதுமாகிய
ते	தெ	உனது இரசத்தை,

देवाय	தெவாய	இந்திர தேவதையின் பொருட்டு
मधुना पयः	மதுநா பயஃ	இன்சுவையுடைய ஆவின்பாலோடு
अथर्वाणः	அதர்வாணஃ	இருடிகள்
अभ्यशिश्रयुः	அஹ்யஶிஶ்ரயுஃ	கலந்துள்ளார்கள்.

சாயணபாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2. கசியபர், மாரிசர், ரிஷிகள்.

சோமமே! போற்றத் தக்கதும் தேவர்கள் விரும்புதற் குரியதுமாகிய உனது இரசத்தை, இந்திரன் பொருட்டு, ஆவின்பாலோடு இருடிகள் கலந்துக்கொண்டிருக்கின்றார்கள் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

१ २ ३ २उ ३ १ २र३ १२र
653. स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते ।
१ २ ३ १२
शꣳ राजन्नोषधीभ्यः ॥ ३ ॥

இருக்கு 9-11-3.

ஸ நஃ பவஸ்வ ஶம் ஗வெ ஶம் ஜநாய ஶமர்வதெ ।
ஶம் ராஜந்நொஷதீப்யஃ ॥

அந்வயம்.

हे राजन्!, सः, नः, गवे, शं, जनाय, शं, अर्वते, शं, ओषधीभ्यः, शं, पवस्व ॥

பதவுரை.

हे राजन्!	ஹெ ராஜந்!	ஒளிர்கின்ற சோமமே!
सः	ஸஃ	கீர்த்தியுள்ள அத்தகைய நீ
नः	நஃ	எங்களுடைய
गवे	஗வெ	ஆவின் பொருட்டுஞ்,
शं	ஶம்	சுகவடிவாய் ஒழுகுவாயாக.
जनाय	ஜநாய	புத்திரன் பொருட்டுஞ்
शं	ஶம்	சுகவடிவாய் ஒழுகுவாயாக.
अर्वते	அர்வதெ	குதிரையின் பொருட்டுஞ்
शं	ஶம்	சுகவடிவாய் ஒழுகுவாயாக.
ओषधीभ्यः	ஒஷதீப்யஃ	பச்சிலைகட்குஞ்
शं	ஶம்	சுகவடிவாய்ப்
पवस्व	பவஸ்வ	பாத்திரத்தில் ஒழுகுவாயாக.

சாயண பாடியம்

கண்டம்—1. இருக்கு—3. வைகாநசர், ஆங்கிரசர் ரிஷிகள்.

விளங்குகின்ற சோமமே! பிரசித்தியாகிய அத்தகைய நீ, எங்களுடைய ஆக்களின் பொருட்டுஞ் சுகவுருவாய் ஒழுகுவாயாக. புத்திரன் பொருட்டுஞ் சுகவடிவாய் ஒழுகுவாயாக. குதிரைகளின் பொருட்டுஞ் சுகவுருவாய் ஒழுகுவாயாக. கொடி செடிகட்குஞ் சுகமயமாய் ஒழுகுவாயாக என்பதாம்.

மந்திரம் 4.

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
654. **दविद्युतत्या रुचा परिष्टोभन्त्या कृपा ।**
१ २ ३ १ २र
सोमाः शुक्रा गवाशिरः ॥ ४ ॥

தவித்யுதத்யா ரூசா பரிஷ்டொஹந்த்யா க்ருபா ।
ஸொமாஃ ஶுக்ரா கவாஶிரஃ ॥

அந்வயம்.

दविद्युतत्या रुचा, परिष्टोभन्त्या कृपा, शुक्राः, सोमाः, गवाशिरः ॥

பதவுரை.

दविद्युतत्या रुचा	தவித்யுதத்யா ரூசா	மிகச் சொலிக்கின்ற காந்தியைப் பற்றி
परिष्टोभन्त्या कृपा	பரிஷ்டொஹந்த்யா க்ருபா	பலவகையா யொலிக்குந் தாரையுடன் கூடியதும்
शुक्राः	ஶுக்ராஃ	சுத்தமுமாகிய
सोमाः	ஸொமாஃ	சோமரசம்
गवाशिरः	கவாஶிரஃ	ஆவின்பாலுடன் கலக்கப்படுகின்றது.

சாயணபாடியம்.

கண்டம்—I. இருக்கு—4. இது இரண்டாவது பண் கூட்டத்தில் 1. கசியபர் ரிஷி.

முழுப் பிரகாசத்தால் யாண்டு மொலிக்கின்ற தாரையுடன் கூடியதும், சுத்தமுமாகிய சோமரசம், ஆவின் பாலோடு சேர்க்கப்படுகின்றது என்பதாம். (4)

மந்திரம் 5.

३ २ ३ १ २ ३१ २र ३क २र
655. हिन्वानो हेतृभिर्हित आ वाजं वाज्यक्रमीत् ।
१२ ३ १ २
सीदन्तो वनुषो यथा ॥ ५ ॥

ஹிந்வாநொ ஹெதூபிர்ஹித ஆ வாஜம் வாஜ்யக்ரமீத் ।
ஸீதந்தொ வநுஷொ யதா ॥

அந்வயம்.

वनुषः, यथा, सीदन्तः, वाजी, हेतृभिः, हिन्वानः, हितः, वाजं, अक्रमीत् ॥

பதவுரை.

वनुषः	வநுஷஃ	மல்லர்கள்
यथा	யதா	எவ்வாறு
सीदन्तः	ஸீதந்தஃ	போர்க்களத்திற் புகுந்து அதை ஆக்கிரமித்துக் கொள்கின்றார்களோ, (அவ்வாறே.)
वाजी	வாஜீ	ஆற்றலையுடைய சோமம்
हेतृभिः	ஹெதூபிஃ	துதிப்போர்களால்
हिन्वानः	ஹிந்வாநஃ	தோத்திர வாயிலாக நினைக்கப்பட்டதும்
हितः	ஹிதஃ	இனியவைகளைச் செய்வதுமாகிய
वाजं	வாஜம்	வேள்வியைச்
अक्रमीत्	அக்ரமீத்	சூழ்ந்து கொள்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—5-க்கு. (2)

வன்மையுடைய சோமம், துதிப்போர்களால் துதிகள் வாயிலாக ஸ்மரிக்கப்பட்டதாயும், இனியவைகளைச் செய்வதாயு மிருந்து, வேள்வி யென்னும் போரை ஆக்கிரமித்துக் கொள்கின்றது. அதிலுவமை:—மல்யுத்தஞ் செய்வோர்கள், போரிற் புகுந்தபோதே அதைச் சூழ்ந்து பற்றிக் கொள்கின்றார்களன்றோ? அது போன்று என்பதாம். (5)

மந்திரம் 6.

३१ २ ३१२ ३२३१२
656. ऋधक् सोम स्वस्तये सञ्जग्मानो दिवा कवे ।
१२३ १२ ३२
पवस्व सूर्यो दृशे ॥ ६ ॥

இருக்கு—9-9 1-14.

ऽयकꣳ सोम स्वस्तये सञ्जग्मानो दिवा कवे ।
ववस्व सूर्यो दृशे ॥

அன்வயம்.

हे सोम !, कवे !, सूर्यः, ऋधक्, सञ्जग्मानः, स्वस्तये, दृशे, दिवा, पवस्व ॥

பதவுரை.

हे सोम !	ஹெ ஸோம !	சோமமே !
कवे !	கவெ !	எல்லை கடந்த அறிவுடையோய் ! அல்லது, நோக்குள்ளோய் !
सूर्यः	ஸூர்யஃ	சிறந்த வீரனும்
ऋधक्	ऽயகꣳ	மேற்சென்றிருந்து
सञ्जग्मानः	ஸஞ்ஜக்மாநஃ	வருபவனுமாகிய நீ
स्वस्तये	ஸ்வஸ்தயெ	மங்களத்தின் பொருட்டும்
दृशे	த்ருஶெ	தரிசனத்தின் பொருட்டும்
दिवा	திவா	அந்தரிட்சத்தினின்று
पवस्व	பவஸ்வ	துளித்துளியாய் இறங்குவாயாக.

சாயணபாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—6.

சோமமே! பெருநோக்குடையோய் ! சிறந்த வீரனுகிய நீ, மேலேறி நின்றவனுகி மங்களத்தின் பொருட்டும், தரிசனத்தின் பொருட்டும் வானிலிருந்து ஒழுகுவாயாக. திவா, என்னும் மூன்றும் வேற்றுமை 'திவ:' என ஐந்தாம் வேற்றுமையாய் மருவிற்று, அதாவது வானிலிருந்து என்னும் பொருளைத் தந்து நின்றது என்பதாம். (6)

குறிப்பு :—ஈண்டு மூலத்தில் 'ऋधक्' என்றது 'மேலேறி' என்பதாம். யாஸ்க முனிவரும் நிருக்கத்தில், 4, 26.ல் "ருதக் என்றது வேறுந்தன்மையைக் காட்டுஞ் சொல்லாம். அங்ஙனமேனும், ஏறுதலென்னும் பொருளிற் காணப்படுகின்றது" என்று கூறியுள்ளார். வானிலிருந்து—द्यौ: द्यावापृथिवीभ्यां वा दिवो वा (நிருக்தம்) த்யௌ: த்யாவாபிருதிவீப்யாம் வா திவோ வா.

மந்திரம் 7.

१२ ३ ३ १२
657. पवमानस्य ते कवे वाजिन्त्सर्गा असृक्षत ।
१२ ३ १ २३ १२
अर्वन्तो न श्रवस्यवः ॥ ७ ॥

வவஶாநஸ்ய தெ கவெ வாஜிந்ஸர்கா அஸ்ருக்ஷத ।
அர்வந்தோ ந ஶ்ரவஸ்யவஃ ॥

அன்வயம்.

हे कवे !, वाजिन् !, पवमानस्य, श्रवस्यवः, ते, सर्गाः, अर्वन्तः न, असृक्षत ॥

பதவுரை.

हे कवे !	ஹெ கவெ !	முற்று முணர்வோய் !
वाजिन् !	வாஜிந் !	அன்னமுடைய சோமமே !
पवमानस्य	வவஶாநஸ்ய	தசாபவித்திரமென்னும் ஆடை துனியாற் சுத்தம் பண்ணப் பெற்றவனும்
श्रवस्यवः	ஶ்ரவஸ்யவஃ	வேட்போனுக்கு அன்னமளிக்க விரும்புகின்றவனுமாகிய
ते	தெ	உனது
सर्गाः	ஸர்காஃ	தாரைகள்,
अर्वन्तः न	அர்வந்தஃ ந	குதிரைகளைக் கட்டுகின்ற சாலையினின்று அசுவங்கள் புறப்படுவன போல,
असृक्षत	அஸ்ருக்ஷத	வெளிக் கிளம்புகின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—7—க்கு. முதலாவது மூம் மூன்று பண் கூட்டத்தில் 1. வைகாநசர் ரிஷி.

பேரறிவையும், அன்னத்தையுமுடைய சோமமே! தசாபவித்திரமென்னும் ஆடை துனியால் உன்னுடைய தாரைகள் கிளம்புகின்றன. அவை எத்தன்மைத்தானவைகளெனின்? துதிப்பவர்கட்கு அன்னமிட விரும்புவனவாம். அதிலுவமை:—குதிரைகள் தாம் கட்டுஞ் சாலையினின்று கிளம்புகின்றன போன்றெனல். தசாபவித்திரத்தினின்று (வடிக்கும் ஆடை துனியால்) ஒழுகுகின்றன என்பது பொருள். இம்மந்திரம், சோமத்தைச் சுத்தப்படுத்துங்கால் ஓதப்படுவதாம். (7)

மந்திரம் 8.

२ ३ १ २ ३ २३१२३ १२ ३ १२
658. अच्छा कोशं मधुश्चुतमसृग्रं वारे अव्यये ।
१ २ ३१२
अवावशन्त धीतयः ॥ ८ ॥

அச்ஹா கொஶம் மதுஶ்சுதமஸ்ருக்ரம் வாரெ அவ்யெ ।
அவாவஶந்த யீதயஃ ॥

அந்வயம்.

मधुश्चुतं, कोशं, अच्छा, अव्यये वारे, असृग्रं, धीतयः, अवावशन्त ॥

பதவுரை.

मधुश्चुतं	மதுஶ்சுதம்	மதுரரசம் பொங்கி யொழுகுகின்ற
कोशं	கொஶம்	துரோண கலசத்தைக்
अच्छा	அச்ஹா	குறித்து
अव्यये वारे	அவ்யெ வாரெ	பவித்திரமாகிய மயிர்க் கம்பளியில் வடித்து
असृग्रं	அஸ்ருக்ரம்	வேட்போர்கள் சோமரசத்தை எடுக்கின்றார்கள்.
धीतयः	யீதயஃ	விரல்கள்
अवावशन्त	அவாவஶந்த	சோமரசத்தைப் பரிசுத்தப் படுத்த விரும்புகின்றன.

சாயணபாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—8=க்கு. 2.

இம் மந்திரம் சோமரசத்தின் தாரை ஒழுகும்போது கூறப்படுவது:—மதுரச மொழுகுகின்ற துரோண கலசத்தை நோக்கிப், பவித்திரமாகிய மயிர்க் கம்பளியால் வடித்து, வேட்போர்கள் சோமரசத்தைப் புனிதமாக்கி யெடுக்கின்றார்கள். விரல்கள் அச் சோமரசத்தை அடிக்கடி சுத்தஞ் செய்ய விரும்புகின்றன என்பதாம். (8)

மந்திரம் 9.

१ २ ३२उ ३२ ३ २ ३ २ ३१२
659. अच्छा समुद्रमिन्दवोऽस्तं गावो न धेनवः ।
१ २३२ ३ २३ २
अग्मन्नृतस्य योनिमा ॥ ९ ॥

ꣳꣳ ꣳꣳꣳꣳ ꣳꣳ ꣳꣳ ꣳ

இரண்டாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—1. அத்தியாயம்—1. கண்டம்—2.

(3) க்கு, ஒன்பது மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

२३ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २
660. अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
१ २र ३ १ २
निहोता सत्सि बर्हिषि ॥ १ ॥

அக்ந ஆயாஹி வீதயே க்ருணானோ ஹவ்யதாதயே ।
நிஹோதா ஸத்ஸி பர்ஹிஷி ॥

அன்வயம்.

हे अग्ने !, वीतये, हव्यदातये (च), गृणानः, आयाहि, होता, बर्हिषि, निषत्सि ॥

பதவுரை.

हे अग्ने !	ஹெ அக்நே !	செஞ்சுடர்க் கடவுளே !
वीतये	வீதயெ	புரோடாச முதலியவைகளை யருந்துவதற்கும்
हव्यदातये (च)	ஹவ்யதாதயெ (அ)	தேவர்கட்கு அவியைக் கொடுப் பதற்கும்
गृणानः	க்ருணானஃ	எம்மாற் போற்றப்பட்டவனுய்
आयाहि	ஆயாஹி	வருவாயாக. வந்து,
होता	ஹோதா	தேவர்களை யழைப்போனுகித்
बर्हिषि	பர்ஹிஷி	தருப்பையின் மீது
निषत्सि	நிஷத்ஸி	உட்காருவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. முதலாவது மும்முறைப்பண் கூட்டங்களில், 1.

ஒளிமுதலிய குணங்களையுடைய அக்கினியே ! நீ, எமது வேள்வி யைக் குறித்து வருவாயாக. யாது கருதியோ வெனின் ? சரு, புரோடாச முதலிய (கோதுமை மாவருண்டை விசேடம்) அவிகளை (தேவவுணவுகளை)

யுண்ணுதற் பொருட்டு வருவாயாக. எவ் வண்ணத்தனை யிருந்தெனின்? எம்மாற் போற்றப்பட்டவனை யிருந்து என்க. மற்றும், எதன்பொருட் டெனின்? தேவர்கட்கு அவியை இனிது கொடுத்தற் பொருட்டுமாம். வந்து, தேவர்களை யழைப்போனுகி விரித்துள்ள தருப்பை யாசனத்தின் மீது உட்காருவாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

661. தं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि ।
बृहच्छोचा यविष्ठ्य ॥ २ ॥

தம் கூவா ஸமித்பிரங்கிரோ க்⁴ருதேந வர்த⁴யாமஸி ।
ப்³ருஹச்சோசா யவிஷ்ட்²ய ॥

அன்வயம்.

हे अंगिरः !, तं त्वा, समिद्भिः, घृतेन, वर्द्धयामसि, यविष्ठ्य, बृहत्, शोच ॥

பதவுரை.

हे अङ्गिरः !	ஹெ அங்கிரஃ !	அழகிய அக்கினியே !
तं त्वा	தம் கூவா	மேற்கூறிய குணமுடைய உன்னை,
समिद्भिः	ஸமித்பிஃ	சமித்துக்களாலும் (விறகுகள்)
घृतेन	க்⁴ருதேந	நெய்யாலும்
वर्द्धयामसि	வர்த⁴யாமஸி	வளர்க்கின்றோம்.
यविष्ठ्य	யவிஷ்ட்²ய	எப்போதுந் தருணப் பருவத்தையுடைய அக்கினியே ! நீ
बृहत्	ப்³ருஹத்	மிகச்
शोच	சோச	சுடர்விட் டொளிர்வாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

காந்தி முதலிய குணங்களோடுகூடிய அழகிய அக்கினியே ! (அங்கிரசன் புத்திரனுகிய அக்கினியே !) முற்கூறிய குணமுடைய உன்னை, வளர்க்கு நிமித்தங்களால், அதாவது :—சமித்துக்களாலும் நெய்யாலும் வளர்க்கின்றோம். இக்காரணத்தால் எப்போதுந் தருணப்பருவமுடைய அக்கினியே ! நீ, நன்கு ஒளிவிட் டெழுவாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

१ २ ३२ ३२ ३१ २
662. स नः पृथु श्रवाय्यमच्छा देव विवासति ।
३१२ ३१२
बृहदग्ने सुवीर्यम् ॥ ३ ॥

இருக்கு 6-16-10-12.

ஸ நஃ ப்ருது ஶ்ரவாய்யமச்ஹா தெவ விவாஸதி ।
ப்ருஹதக்ந்தெ ஸுவீர்யம் ॥

அந்வயம்.

हे देव अग्ने !, सः, पृथु, श्रवाय्यं, बृहत्, सुवीर्यं, नः, अच्छ विवासति ॥

பதவுரை.

हे देव अग्ने !	ஹெ தெவ அக்ந்தெ !	அக்கினி தேவனே !
सः	ஸஃ	முற்கூறிய குணமுடைய அத்தகைய நீ
पृथु	ப்ருது	விரிந்ததும்
श्रवाय्यं	ஶ்ரவாய்யம்	கீர்த்தி யுடையதும்
बृहत्	ப்ருஹத்	மிகுந்ததும்
सुवीर्यं	ஸுவீர்யம்	அழகிய வீரமுடையதுமாகிய தனத்தை
नः	நஃ	எங்கட்கு
अच्छ विवासति	அச்ஹ விவாஸதி	நன்கு கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

பிரகாசமாகிய அக்கினியே! கூறிப் போந்த குணங்களை யுடைய நீ, விரிந்ததும், போற்றத் தக்கதும், மிகுந்ததும், அழகிய வீரமுடையதுமாகிய தனத்தை எங்கட்கு அடைவிப்பாயாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

१ २ ३१ २र
663. आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ।
२ ३ १२
मध्वा रजांꣳसि सुक्रतू ॥ ४ ॥

ஆ நொ மித்ராவருணா ப்ருதைர்கவ்யூதிமுக்ஷதம் ।
மத்வா ரஜாம்ஸி ஸுக்ரதூ ॥

அந்வயம்.

सुकतू, मित्रावरुणा, नः, गव्यूतिं, घृतैः, आ उक्षतं, मध्वा, रजांसि ॥

பதவுரை.

सुकतू	ஸுக்ரதூ	சிறந்த கருமங்களை யுடைய
मित्रावरुणा	மித்ராவரூணா	மித்திரன், வருணன், என்னுந் தேவதைகளே ! நீவிர்
नः	நஃ	எங்களுடைய
गव्यूतिं	கவ்யூதிம்	கோச் சாலையை
घृतैः	க்⁴ருதைஃ	நெய்க்குச் சாதனங்களான பாலால்
आ उक्षतं	ஆ உக்ஷதம்	நாற்புறமும் நனையச்செய்வீர்களாக. மற்றும்,
मध्वा	மத்⁴வா	(சிறந்த) இரசத்தால்
रजांसि	ரஜாம்ஸி	நாங்கள் வாழும் இவ்வுலக, பரவுலகமென்னு மிடங்களையுந் நனையச் செய்வீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—4. மும்மூன்று பண்மஞ்சரியில்-1. விசுவாமித்திரர் ரிஷி.

நற்கருமங்களை யுடைய மித்திர, வருண தேவதைகளே ! நீவிர் எங்களுடைய பசுக்களின் மார்க்கத்தை, அல்லது, கோ வாழுமிடத்தை, நெய்க்குக் காரணமாகிய பாலால், அல்லது, நீரால் நாற்புறத்தும் நனையுமாறு செய்வீர்களாக. எங்கட்குப் பால் கறக்குங் கோக்களைத் தருவீர்களாக என்பது பொருள். மற்றும், இன்சுவை யிரசத்தால், நாங்கள் வாழும், இவ்வுலக பரவுலக மென்னு மிடங்களையும் நனையச் செய்வீர்களாக. நாங்கள் வாழுமிடத்தை இரசமுடைய பொருள்களால் நிறைப்பீர்களாக என்பதாம்.

மந்திரம் 5.

३ १ २ ३१२ ३ १ २२
664. उरुशंसा नमोवृधा मह्ना दक्षस्य राजथः ।
१२
द्राघिष्ठाभिः शुचिव्रता ॥ ५ ॥

உரூஶம்ஸா நமோவ்ருதா⁴ மஹ்னா தக்ஷஸ்ய ராஜதஃ ।
த்³ராகி⁴ஷ்டா²பிஃ ஶுசிவ்ரதா ॥

அன்வயம்.

शुचिव्रता !, उरुशंसा, नमोवृधा, द्राघिष्ठाभिः, दक्षस्य, मह्ना, राजथः ॥

பதவுரை.

शुचिव्रता !	ஶுசிவ்ரதா !	பவித்திரமாகிய கருமமுடைய, மித்திர வருண தேவதைகளே !
उरुशंसा	உரூஶம்ஸா	பல்லோர்களாற் போற்றத்தக்க
नमोवृधा	நமோவ்ருதா	அவியாகிய அன்னத்தால், அல்லது, தோத்திரத்தால்விருத்தியடையப் பெற்றவர்களும்
द्राघिष्ठाभिः	த்ராகிஷ்டாபிஃ	துதிகளாற் புகழப்படுபவர்களுமான நீங்கள்
दक्षस्य	தக்ஷஸ்ய	தனத்தின், அல்லது, ஆற்றலின்
मह्ना	மஹ்னா	மகத்தாந் தன்மையால்
राजथः	ராஜதஃ	விளங்குகின்றீர்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—5

பரிசுத்தமாகிய கருமமுடைய மித்திர, வருண தேவதைகளே! பல்லோர்களாற் போற்றத் தக்கவர்களும், அல்லது, பிருகத், என்னுஞ் சந்தமுள்ள தோத்திரமாகிய மந்திரங்களாற் புகழப் பெற்றவர்களும், அவியாகிய அன்னத்தால், அல்லது, தோத்திரத்தால் விருத்தி யடைகின்றவர்களும், அரிய பெரிய தோத்திரங்களாற் புகழப்படுபவர்களுமான உங்களுடைய, தனத்தின், அல்லது, ஆற்றலின் மகத்துவத்தால் (பெருந் தன்மையால்) நீங்கள் விளங்குகின்றீர்கள். (5)

மந்திரம் 6.

३ २ ३१२ ३ १ २३१ २
665. गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम् ।
३ १ २२
पातꣳ सोममृता वृधा ॥ ६ ॥

இருக்கு 3-62-61-18.

ஹ்ருணாநா ஜமதக்நிநா யொநாவ்ருதஸ்ய ஸீததம் ।
பாதம் ஸொமம்ருதா வ்ருதா ॥

அன்வயம்.

(हे मित्रावरुणौ !), जमदग्निना, गृणाना, ऋतस्य योनौ, सीदतं, ऋतावृधा, सोमं पातम् ॥

பதவுரை.

(हे मित्रावरुणौ !)	(ஹே மித்ரா [வரு]ணள!)	மித்ர, வருண தேவதைகளே!
जमदग्निना	ஜமத³க்³நி நா	'சமதக்கினி' என்னும் இருடியால், அல்லது, வளர்ந்த தீயினால்
गृणाना	க்³ருணா நா	துதிக்கப்பெற்ற நீவிர்,
ऋतस्य योनौ	ரிதஸ்ய யொநள	உண்மையாகிய வேள்வியாற்றுமிடத்தில்
सीदतं	ஸீத³தம்	விளங்குகின்றீர்கள்.
ऋतावृधा	ரிதாவ்ருதா	கரும பலனை விருத்தி பண்ணுகின்ற நீங்கள்
सोमं पातं	ஸொம³ம் பாதம்	எங்களாற் றேடப்பெற்ற சோமரசத்தை அருந்துவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—6.

மித்திர, வருண தேவதைகளே! சமதக்கினி என்னுந் திருநாம முடைய மகா இருடியால், அல்லது. சுடர் விட்டெழுகின்ற அக்கினியால், விசுவாமித்திரனற் றுதிக்கப்பெற்ற நீங்கள், தேவாராதனை செய்யும் இடத்தில் விளங்குகின்றீர்கள். (அமர்ந்திருக்கின்றீர்கள்.) கரும பலனை விருத்தி பண்ணுகின்றவர்களான நீங்கள், எங்களாற் பிழியப்பெற்ற சோமரசத்தை யருந்துவீர்களாக என்பதாம். (6)

மந்திரம் 7.

१ २ ३ २उ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३२

666. आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम् ।

२उ ३१ २ ३ १

एदं बर्हिः सदो मम ॥ ७ ॥

ஆ யாஹி ஸுஷுமா ஹி த இந்த்³ர ஸொமம் பிபா இமம் ॥

ஏத³ம் பர்ஹிः ஸதோ³ மம ॥

அன்வயம்.

हे इन्द्र!, आयाहि, ते, सुषुमा हि, इमं सोमं, पिब, मम, एदं बर्हिः, आसदः ॥

பதவுரை.

हे इन्द्र!	ஹெ இந்த்ர!	இந்திரனே! நீ
आयाहि	ஆயாஹி	எமது வேள்விக்கு வருவாயாக. யாங்கள்,
ते	தெ	நின் பொருட்டு
सुषुमा हि	ஸுஷுமா ஹி	உறுதியாய்ச் சோமந் தேடிவைத் துள்ளோம்.
इमं सोमं	இமம் ஸோமம்	இச் சோமரசத்தை
पिब	பிப	அருந்துவாயாக. மற்றும்,
मम	மம	என்னுடைய (எங்களுடைய)
एदं बर्हिः	ஏதம் பர்ஹிஃ	வேதிகை (மேடை) யில் விரித் துள்ள தருப்பை யாசனத்தின் மீது
आसदः	ஆஸதஃ	உட்காருவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—மும்மூன்று கொண்ட பண்மஞ்சரியில் 1. இரிமீடி ரிஷி.

இந்திரனே! நீ, எமது வேள்வியைக் குறித்து வருவாயாக. யாங்கள் நின்பொருட்டு நிச்சயமாய்ச் சோமரசம் பிழிந்துள்ளோம். பிழிந்துள்ள அச் சோமரசத்தை நீ அருந்துவாயாக. மற்றும், நின்பொருட்டு வேதிகை யில் விரித்துள்ள எமது தருப்பை யாசனத்தின் மீது உட்காருவாயாக என் பதாம். (7)

மந்திரம் 8.

१ २ ३२ ३ २ ३ १२ ३ १ २

667. आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना ।

२३ १ २

उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥ ८ ॥

ஆ த்வா ப்ரஹ்மயுஜா ஹரீ வஹதாமிந்த்ர கேஶினா ।

உப ப்ரஹ்மாணி நஃ ஶ்ருணு ॥

அன்வயம்.

हे इन्द्र!, ब्रह्मयुजा, केशिना, हरी, त्वा, आवहतां, नः, ब्रह्माणि, उपशृणु ॥

பதவுரை.

हे इन्द्र !	ஹெ இந்த்ர !	இந்திரனே !
ब्रह्मयुजा	ப்ரஹ்மயுஜா	மந்திரத்தால் இரதத்திற் சேர்க்கப்பபட்டவைகளும்
केशिना	கெஶிநா	கேசமுடையவைகளும்
हरी	ஹரீ	பாவத்தைப் போக்குகின்றவைகளுமான குதிரைகள்
त्वा	க்வா	உன்னைக்
आवहतां	ஆவஹதாம்	கொண்டுவந்து சேர்க்குக. நீ எனது வேள்வியில் வந்து
नः	நஃ	எங்களுடைய
ब्रह्माणि	ப்ரஹ்மாணி	தோத்திரங்களை
उपश्रृणु	உபஶ்ருணு	இனிது கேட்டு மனதிற் கொள்வாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

இந்திரனே ! நீ, மந்திரத்தாற் சேர்க்கப்பட்டவைகளும், கேசமுடையவைகளும், பொன்னிறமுடையவைகளும், அல்லது, பாவத்தைப் போக்குபவைகளுமான குதிரைகள் உன்னை இனிது கொண்டுவந்து சேர்க்குக. நீயும், எமது வேள்வியை யடைந்து எங்களுடைய தோத்திரங்களைக் கேட்டு நன்கு மனதிற் கொள்வாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 9.

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
668. *ब्रह्माणस्त्वा युजा वयꣳ सोमपामिन्द्र सोमिनः ।
३ १ २
सुतावन्तो हवामहे ॥ ९ ॥

இருக்கு 9-17-13.

ப்ரஹ்மாணஸ்த்வா யுஜா வயம் ஸொமபாமிந்த்ர ஸொமிநஃ ।
ஸுதாவந்தொ ஹவாமஹெ ॥

அந்வயம்.

हे इन्द्र !, सोमिनः, सुतावन्तः, ब्रह्माणः, वयं, सोमपां, त्वा, युजा, हवामहे ॥

---

* ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा, என்பது பாட பேதம்.

பதவுரை.

हे इन्द्र !	ஹெ ஈந்ர !	இந்திரனே !
सोमिनः	ஸொமிநः	சோம முடையவர்களும்
सुतावन्तः	ஸுதாவந்தः	சோமரச மெடுப்பவர்களும்
ब्रह्माणः	ப்ரஹ்மாண:	பிரம சம்பந்திகளுமான
वयं	வயம்	நாங்கள்
सोमपां	ஸொமபாம்	சோமரச மருந்து பவனுகிய
त्वा	த்வா	உன்னை
युजा	யுஜா	உரித்தாகிய தோத்திரத்தால்
हवामहे	ஹவாமஹே	அழைக்கின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

இந்திரனே ! உன்னை, பிரம சம்பந்திகளான நாங்கள், உரிய தோத்திரத்தால் அழைக்கின்றோம். எவ்வண்ணமாகிய நின்னையெனின் ? சோமரச மருந்துபவனே யென்க. சோமத்தோடு கூடியவர்களும், சோமரசத்தைப் பிழிகின்றவர்களுமான இத்தன்மையு நாங்கள், (நின்னை அழைக்கின்றோம் என்பதனுடன் கூட்டுக.) (3)

மந்திரம் 10.

१ २३ १ २ ३२ ३२उ ३ १२
669. **इन्द्राग्नी आगतꣳ सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम् ।**
३ १ २ ३ ३ ३ २
अस्य पातं धियेषिता ॥ १० ॥

ஈந்ராக்நீ ஆகதம் ஸுதம் கீர்பிர்நபோ வரெண்யம்
அஸ்ய பாதம் தியெஷிதா ॥

அந்வயம்.

இந்த்ராக்நீ !, सुतं, वरेण्यं, गीर्भिः, नभः, आगतं, धिया, इषिता, अस्य, पातम् ॥

பதவுரை.

इन्द्राग्नी !	ஈந்ராக்நீ !	இந்திரன், அக்கினி, என்னுக் தேவதைகளே ! நீவிர்
सुतं	ஸுதம்	சுத்தம் பண்ணப்பெற்றதும்
वरेण्यं	வரெண்யம்	மேம்பட்டதுமாகிய சோமரசத் தின் பொருட்டு

गीर्भिः	கீர்பி:ஃ:	எமது தோத்திர வாக்குகளாற் துதிக்கப் பெற்றவர்களாய்
नभः	நஹ:	சுவர்க்கத்தினின்று
आगतं	ஆகதம்	வருவீர்களாக.
धिया	யியா	எமது பக்தியால்
इषिता	இஷிதா	ஏவப்பட்ட நீங்கள்
अस्य	அஸ்ய	இச் சோமரசத்தை
पातं	பாதம்	அருந்துவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—நாலாவதன் மூன்றுவது பண்ணில் 1. விசுவாமித்திரர் ரிஷி.

இந்திரன், அக்கினி, என்னும் இரண்டு தேவதைகளும், மந்திர பூர்வகமாய்ப் பிழிதன் முதலிய சமற்காரங்களாற் சுத்தம் பண்ணப்பட்டதும், இதுபற்றியே மிகப் போற்றத் தக்கதுமாகிய சோமத்தை முன்னிட்டு, எமது தோத்திர வாக்குகளா லழைக்கப்பட்டவர்களாயிருந்து, சுவர்க்கமென்னுமிடத்தினின்று வருவார்களாக. வந்து, எங்களாற் செய்யப்படுங் கருமத்தா லேவப்பட்ட நீவிர் இருவரும் இச் சோமரசத்தை யருந்துவீர்களாக என்பதாம். (10)

மந்திரம் 11.

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १२
670. इन्द्राग्नी जरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः ।
३ १ २ ३ २ ३ २
अया पातमिमꣳ सुतम् ॥ ११ ॥

இந்ராக்னீ ஜரிதுஃ ஸசா யஜ்ஞோ ஜிகாதி செதநஃ ।
அயா பாதமிமꣳ ஸுதம் ॥

அந்வயம்.

हे इन्द्राग्नी !, जरितुः, सचा, यज्ञः, चेतनः, जिगाति, अया, सुतं, इमं, पातम् ॥

பதவுரை.

हे इन्द्राग्नी !	ஹெ இந்ராக்னீ !	இந்திரன், அக்கினி யென்னுந் தேவதைகளே ! நீங்கள்
जरितुः	ஜரிதுஃ	துதிப்பவர்களுக்கு
सचा	ஸசா	சுவர்க்க முதலியவற்றை யடையும் விஷயத்தில் அநுகூலத்தார்களாயிர்களாக.

यज्ञः	யஜ்ஞः	வேள்விக்குச் சாதனமாகிய
चेतनः	சேதநः	இந்திரியங்கட்குச் சேதனத்தைக் கொடுக்குஞ் சோமமானது
जिगाति	ஜிகாதி	உங்களை யடைகின்றது.
अया	அயா	எங்களுடைய துதியாகிய வாக்கால் அழைக்கப்பட்ட நீவிர்
सुतं	ஸுதம்	சமற்காரம் (சுத்தம்) பண்ணப் பெற்ற
इमं	இமம்	இச் சோமரசத்தை
पातं	பாதம்	அருந்துவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

இந்திரன் அக்கினி, என்னுந் தேவதைகளே! உங்களை தோத்திரஞ் செய்வோன் சுவர்க்க முதலியவற்றை யடையும் விஷயத்தில் அனுகூலமாயுள்ள வேள்விக்குச் சாதனமான இந்திரியங்கட்குச் சேதனத் தன்மையை (உணர்ச்சியை) உண்டாக்கும், இச் சோமம் அடைகின்றது. எமது துதியாகிய இவ் வாக்கால் அழைக்கப்பட்டவர்களான நீங்கள் சுத்தத்தோடு கூடிய இதை யருந்துவீர்களாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 12.

१२३१ २३ १२३१२३ १ २
671. इन्द्रमग्निं कविच्छदा यज्ञस्य जूत्या वृणे ।
१ २२३१ २
ता सोमस्येह तृम्पताम् ॥ १२ ॥

இருக்கு 1-05-2.

ஈந்த்₃ரமக்₃நிம் கவிச்ச₂தா₃ யஜ்ஞஸ்ய ஜூத்யா வ்ருணே ।
தா ஸோமஸ்யேஹ த்ருʼம்பதாம் ॥

அன்வயம்.

यज्ञस्य, जूत्या, कविच्छदा, इन्द्रं अग्निं, वृणे, ताः, इह, सोमस्य, तृम्पताम् ॥

பதவுரை.

यज्ञस्य	யஜ்ஞஸ்ய	வேள்வியின் சாதனமாகிய சோமத்தினுடைய
जूत्या	ஜூத்யா	ஏவலாற் றெழிற்பட்ட யான் (துதிப்போன்)

कविच्छदा	கவிஅ்ஹதா	துதிப்போர்க்குப் பயனைக் கொடுத்து இன்பந் தருகின்ற
इन्द्रं अग्निं	இந்ரம் அஜ்நிம்	இந்திர ! அக்கினி, தேவதைகளை
वृणे	வ்ரணை	வழிபடுகின்றேன்.
ताः	தாஃ	(வந்து அவர்கள்)
इह	இஹ	என்னுடைய இக் கருமத்தின் கண்
सोमस्य	ஸொமஸ்ய	சோம யாகத்தாற்
नृम्पतां	த்ரும்பதாம்	களிப்படைவார்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

வேள்வியின் சாதன வடிவமாகிய சோமத்தின் ஏவலால், ஈண்டு மூலத்தில் 'ஜூத்யா' என்பதற்கு 'ஏவலால், என்பது பொருளாம். சோமம் சாதனமென்பதைக் கண்டு, அதன் சாத்தியமாகிய வேள்வியில் வேள்வித் தலைவன் பிரவிர்த்திக்கின்றான். (தொழிற் படுகின்றான்.) ஆதலின் என்க. இதுவே அதனுடைய ஏவற் றன்மையாம். அத்தன்மைய ஏவலாற் செலுத்தப்பட்ட யான், (துதிப்போன்) தோத்திரஞ் செய்வோர்கட்கு உரிய பயனைக் கொடுப்பதாற் களிப்புண்டாக்கும் இந்திரனையும், அக்கினியையும், இனிது போற்றுகின்றேன். வந்த அவ்விருவரும், என்னுடைய வேள்விக் கருமத்தில் நடக்குஞ் சோம யாகத்தாற் களிப்படைவார்களாக என்பதாம். (7) (3)

இரண்டாவது கண்டம்

முற்றும்.

மூன்றுவது கண்டம்

பிரபாடகம்—1. அத்தியாயம்—1. கண்டம்—3.

மூன்று மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

672. ३ १ २ ३१ २र ३ १ २र
उच्चा ते जातमन्धसो * दिवि सद्भूम्याददे ।
३२उ ३ २ ३ १२
उग्रꣳ शर्म महि श्रवः ॥ १ ॥

உச்சா தெ ஜாதமந்தஸொ திவி ஸத்³பூ⁴ம்யாத³தே³ ।
உக்³ரꣳ ஶர்ம மஹி ஶ்ரவः ॥

அன்வயம்

(हे सोम!,) ते, अन्धसः, जातं, उच्चा, दिवि, सत्, उग्रं, शर्म, महि, श्रवः, भूमि, आददे ॥

பதவுரை.

(हे सोम!)	(ஹே ஸொம!)	சோமக் கொடியே!
ते	தெ	உன்னுடைய
अन्धसः	அந்தஸஃ	இரசத்தினுடைய
जातं	ஜாதம்	உற்பத்தி மற்றும்,
उच्चा	உச்சா	சிறப்பானதாம்.
दिवि	திவி	வானுலகில்
सत्	ஸத்	இருக்கின்றதும்
उग्रं	உக்³ரம்	ஆற்றலுள்ளதும்
शर्म	ஶர்ம	சுகவடிவாயதும்
महि	மஹி	மிகுந்ததுமாகிய (உனது)
श्रवः	ஶ்ரவஃ	அன்னம்
भूमि	பூ⁴மி	தரையின்பாலுள்ள வேள்வித் தலைவனிடத்தினின்று
आददे	ஆத³தே³	கொள்ளப்படுகின்றது.

* दिविषत्, என்பது பாடபேதம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில் 1, ஆங்கிரசர் அமகீயு ரிஷி.

சோமமே! உனது சம்பந்தமாகிய இரசத்திற்கு, பிறப்பு மேலான தாம். மற்றும், வானுலகிலுள்ளதும் வலி மிக்கதும், சுக வடிவும் மகத்துவ மாகிய அன்னம், பூமியின்கண்ணுள்ள வேள்வித் தலைவர்களாற் கொள்ளப் படுகின்றது. (1)

மந்திரம் 2.

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २

673. स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः ।

३ १ २२

वरितोवित्परिस्रव ॥ २ ॥

ஸ ந இந்த்ராய யஜ்யவே வருணாய மருத்³ப்⁴யः ।

வரிதோவித்பரிஸ்ரவ ॥

அன்வயம்

वरितोवित्, (हे सोम!,) सः, नः, यज्यवे, इन्द्राय, वरुणाय, मरुद्भ्यः, परिस्रव ॥

பதவுரை.

वरितोवित्	வரிதோவித்	தனத்தைக் கொடுக்கின்ற
(हे सोम!)	(ஹே ஸோம!)	(சோமமே!)
सः	ஸः	அத்தகைய நீ
नः	நः	எங்கட்கு
यज्यवे	யஜ்யவே	ஆராதித்தற் குரிய
इन्द्राय	இந்த்ராய	இந்திரன் பொருட்டும்
वरुणाय	வருணாய	வருணன் பொருட்டும்
मरुद्भ्यः	மருத்³ப்⁴யः	மருத்துக்க (வாய்வு தேவர்க)ளின் பொருட்டும்
परिस्रव	பரிஸ்ரவ	தாரையாற் பாத்திரத்தில் நிரம்புவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

சோமமே! திரவியத்தை யடையச்செய்வோய்! நீ, எங்கட்கு ஆராதித் தற்குரிய இந்திரன் பொருட்டுத் தாரையால் நிரம்புவாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

३ १ २२ ३२उ ३ २ ३ १२
674. एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम् ।
१ २
सिषासन्तो वनामहे ॥ ३ ॥

இருக்கு 9-61-10-12-11.

வநா விஶ்வாந்யர்ய ஆ த்யும்நாநி மாநுஷாணாம் ।
ஸிஷாஸந்தோ வநாமஹே ॥

அன்வயம்.

(हे सोम !,) मानुषाणां, एना विश्वानि द्युम्नानि, आ अर्य्यः, सिषासन्तः, वनामहे ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹே ஸோம !)	(சோமமே ! நீ)
मानुषाणां	மாநுஷாணாம்	மனிதர்கட்கு, அடைதற்குரிய
एना विश्वानि द्युम्नानि	வநா விஶ்வாநி த்யும்நாநி	வேள்விக் கருவூலமாகிய இவ் வெல்லாத் திரவியங்களையும் (நினது கிருபையால்)
आ अर्य्यः	ஆ அர்யஃ	அடைகின்ற யாங்கள்
सिषासन्तः	ஸிஷாஸந்தஃ	தொண்டு செய்ய விரும்பினவர் களாய்
वनामहे	வநாமஹே	(நின்னை) வழிபடுகின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

சோமமே ! நினது கிருபையால் மனிதர்கள் அடையத்தக்க வேள்வியின் சாதனமான இவ்வெல்லாத் தனங்களையும் ஒரு முகமாக அடைகின்றவர்களான யாங்கள், நின்னை இனிது வழிபட விரும்பினவர்களாய்ப் போற்றுகின்றோம் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

३ ३ २ ३ १२ ३ १ २२
675. पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि ।
१ २३ १ १२२३२ २ ३ १ २ ३ १ २३ १२
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्यु * त्सो देवो हिरण्ययः ॥ ४ ॥

* उत्सो देव, எனவும் பாடம்.

வ॑ஸா॒நஃ ஸோம யாரயாஸ்வோ வஸாநோ ஸுஷ்டுஸி ।
சூ ரத்நயா யோநிஷ்ருதஸ்ய ஸீதஸ்யுத்ஸோ தெவோ ஹிரண்யயஃ ॥

அந்வயம்.

हे सोम !, पुनानः, अपः, वसानः, धारया अर्षसि, रत्नधा, उत्सः, देवः, हिरण्ययः, ऋतस्य योनिं, आसीदसि ॥

பதவுரை.

हे सोम !	ஹெ ஸோம !	சோமமே !
पुनानः	வ॑ஸா॒நஃ	பவித்திரம் பண்ணப்பெற்ற நீ
अपः	ஸுவஃ	நீரை
वसानः	வஸாநஃ	மறைத்துக் கொண்டு
धारया अर्षसि	யாரயா ஸுஷ்டுஸி	தாரையாற் பாத்திரத்தி னிரம்பு கின்றனை.
रत्नधा	ரத்நயா	இரமணீய தனத்தைக் கொடுப் பவனும்
उत्सः	உத்ஸஃ	நீரின் பெருக்கு வடிவனும்
देवः	தெவஃ	பிரகாச வடிவனும்
हिरण्ययः	ஹிரண்யயஃ	பொன் விளைகின்ற இட வடி வனுமாகிய நீ
ऋतस्य योनिं	ரிதஸ்ய யோநிம்	உண்மையாகிய வேள்வியென்னு மிடத்தைக் குறித்து (பாத் திரத்தை நோக்கி)
आसीदसि	ஸுஸீதஸி	விளங்கிக்கொண்டிருக்கின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3, இருக்கு—மூன்றெண்கொண்ட தந்தியில் மந்திரமாய் வரும் 'பிரசாதம்' என்னும் 2-வது மந்திரத்தின்கண் 1.

சோமமே ! பரிசுத்தமாக்கியுள்ள நீ, வசதீவரி என்னும் ஆற்று நீரை மறைத்துக்கொண்டு தாரை வாயிலாகப் பவித்திரமாகிய பாத்திரத்திற் செல் கின்றாய். அதினின்று இரமணீயமான தன (இரத்தின)த்தைக் கொடுப் போனுமாகின்றாய். உண்மையாகிய வேள்வியின் இடத்தைப்பற்றி விளங்கிக் கொண்டிருக்கின்றாய். எத்தன்மையுடையாய் நீ யெனின் ? பெருகி ஓழு குஞ் சீலமுடையவனும், பிரகாசிக்குந் தன்மையனும், பொன் விளைகின்ற இட வடிவனுமாவாய் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

३ १ २र३ १ २र ३ २ ३ २ ३२ ३ १ २
676. दुहान ऊधर्दिव्यं मधु प्रियं प्रत्नꣳ सधस्थमासदत् ।
३ १ २ ३ २ २ ३क २र ३ १ २ ३ १ २३ २
आ पृच्छ्यं धरुणं वाज्यर्षसि * नृभिर्धौतो विचक्षणः ॥ ५ ॥

இருக்கு 9-107-4-5.

தூஹாந ஊத்திவ்யம் மது ப்ரியம் ப்ரத்நம் ஸதஸ்தமாஸதத் ।
ஆ ப்ரஹ்யம் தரூணம் வாஜ்யர்ஷஸி நரூஹிர்தளதோ விசக்ஷணஃ॥

அந்வயம்.

मधु, प्रियं, दिव्यं, ऊधः, दुहानः, प्रत्नं, सधस्थं, आसदत्, वाजी, नृभिः धौतः, विचक्षणः, आपृच्छ्यं, धरुणं, अर्षसि ॥

பதவுரை.

मधु	மது	களிப்புண்டாக்குவதும்
प्रियं	ப்ரியம்	இன்பந் தருவதும்
दिव्यं	திவ்யம்	சுவர்க்கத்திலுள்ளதுமாகிய
ऊधः	ஊதஃ	இரசத்தைப்
दुहानः	தூஹாநஃ	பொழிகின்ற சோமம்
प्रत्नं	ப்ரத்நம்	பழமையாகிய
सधस्थं	ஸதஸ்தம்	வானிடத்தை
आसदत्	ஆஸதத்	அடைகின்றது. அதன் பின்னர்
वाजी	வாஜீ	அன்னமுடையவனும்
नृभिः धौतः	நரூஹிஃ தளதஃ	வேட்போர்களாற் சுத்தம் பண்ணியவனும்
विचक्षणः	விசக்ஷணஃ	அனைத்தையுஞ் சிறப்பாய்க் காண்பவனுமாகிய நீ
आपृच्छ्यं	ஆப்ரஹ்யம்	கரும விஷயத்தில் அறியத்தக்க
धरुणं	தரூணம்	தருமத்தைத் தாங்கும் வேள்வித் தலைவனைக் குறித்து
अर्षसि	ஆர்ஷஸி	அன்னங் கொடுக்க விரும்பிச் செல்கின்றனை.

* नृभिर्धूतः, எனவும் பாடம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

களிப்பைத் தருவதும், இன்புண்டாக்குவதும், சுவர்க்கத்திலுள்ளது மாகிய சோமக்கொடியானது, பிரகாசமுடையதும் பழமையானதுமாகிய அந்தரிக்ஷத்தை யடைந்தது. (பிரத்தியட்சம்) அன்னமுடைய சோமமே! நீ, கருமத்தால் வினாவத்தக்க வேள்வித் தலைவனைக் குறித்து அன்னங் கொடுக்கச் செல்கின்றாய். எத்தன்மையன் நீ யெனின்? கரும நியந்தா வாகிய வேட்போர்களாற் கழுவப்பட்டவன். (சுத்தஞ் செய்யப்பட்டவன்). இதுபற்றியே "அதாம்யக் கிரகத்தில் அவர்களால் நான்கு முறை, அல்லது, ஐந்து முறை, அல்லது, ஆறு முறை பரிசோதிக்கப்பட்டது" என்று ஆபத்தம்பருஞ் சூத்திரமியற்றினர். மற்றும், அனைத்தையும் விசேடமாய்ப் பார்ப்பவன் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

१ २र २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
677. प्र तु द्रव परि कोशं निषीद नृभिः पुनानो अभि वाजमर्षम् ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तोऽच्छा बर्ही रशनाभिर्नयन्ति ॥६॥

ப்ர து த்ரவ பரி கொஶம் நிஷீத நூஹிஃ பூநாநொ அபி
[வாஜமர்ஷம் ।

அஶ்வம் ந த்வா வாஜிநம் மர்ஜயந்தொ ஹ்ஹா ஸர்ஹீ ரஶநாஹிந்
[யந்தி ॥

அந்வயம்.

हे सोम!, तु, प्रद्रव, कोशं, परिनिषीद, नृभिः, पुनानः, वाजं, अभ्यर्षं, वाजिनं, अश्वं न, मर्जयन्तः, बर्हिः अच्छ, रशनाभिः, त्वा, नयन्ति ॥

பதவுரை.

हे सोम!	ஹெ ஸொம!	சோமமே! நீ
तु	து	விரைவில்
प्रद्रव	ப்ர த்ரவ	எமது வேள்விக்கு இனிது வருவாயாக. வந்து
कोशं	கொஶம்	துரோண கலசத்தில்
परिनिषीद	பரிநிஷீத	அமருவாயாக.
नृभिः	நூஹிஃ	வேட்போர்களால்

पुनानः	வ॒நாநः	சுத்தமாக்கப் பெற்ற
वाजं	வாஜம்	அவியாகிய அன்னத்தை
अभ्यर्षं	அஹ்யர்ஷ-ஃம்	அடைவாயாக.
वाजिनं	வாஜி-நம்	ஆற்றலுள்ள
अश्वं न	அஶ்வம் ந	குதிரையைக் கழுவிச் சுத்தப் படுத்துமாறு
मर्जयन्तः	மர்ஜயந்தஃ	சுத்தப்படுத்துகின்ற வேட்போர் கள்
बर्हिः अच्छ	பர்ஹிஃ அச்ச	எனது வேள்வியில்
रशनाभिः	ரஶநாபிஃ	நீண்ட விரல்களால்
त्वा	த்வா	நின்னைக்
नयन्ति	நயந்தி	கொண்டுவந்து சேர்க்கின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—மூன்றுவது மூன்றில்—1. உசனகாவிய ரிஷி.

சோமமே! நீ, விரைவில் எமது வேள்வியைக் குறித்து வருவாயாக. வந்து, துரோண கலசத்தில் நிலைத்திருப்பாயாக. வேட்போர்களாற் சுத்தம் பண்ணப்பெற்றவனு யிருந்து, அவியாகிய அன்னத்தை யடைவாயாக. ஆற்றலுடைய குதிரையைக் கழுவிச் சுத்தப்படுத்துமாறு சுத்தப்படுத்து கின்ற வேட்போர்கள், எமது வேள்வியை முன்னிட்டு நீண்ட விரல்களால் உன்னைக் கொண்டு வருகின்றார்கள் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 7.

३ २ २ ३१ २२ ३ २ ३२ ३ १२

678. स्वायुधः पवते देव इन्दुरशस्तिहा * वृजना रक्षमाणः ।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३१ २ ३ २ १ २ ३१२ ३ २

पिता देवानां जनिता सुदक्षो विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्याः ॥

ஸ்வாயுதஃ பவதே தெவ இந்துரஶஸ்திஹா வ்ருஜநா ரக்ஷமாணஃ ।

பிதா தெவாநாம் ஜநிதா ஸுதக்ஷோ விஷ்டம்஭ோ திவோ தருணஃ ப்ருதிவ்யாஃ ॥

அந்வயம்.

स्वायुधः, अशस्तिहा, वृजना, रक्षमाणः, पिता, देवानां जनिता, सुदक्षः, दिवः विष्टम्भः, पृथिव्याः धरुणः, इन्दुः देवः, पवते ॥

---

* वृजिना, என்பது இருக்கு. वृजन्, எனவும் பாடம்.

பதவுரை.

स्वायुधः	ஸ்வாயுதஃ	சிறந்த ஆயுதமுடையதும்
अशस्तिहा	அசஸ்தீஹா	இராக்கதர்களை யழிப்பதும்
वृजना	வ்ருஜநா	பீடையை நீக்கிக்
रक्षमाणः	ரக்ஷமாணஃ	காப்பாற்றுவதும்
पिता	பிதா	பரிபாலிப்பதும்
देवानां जनिता	தேவாநாம் ஜநிதா	தேவர்களை யுண்டாக்குவதும்
सुदक्षः	ஸுதக்ஷஃ	உயர்ந்த ஆற்றலை யுடையதும்
दिवः विष्टम्भः	திவஃ விஷ்டம்பஃ	வானுலகைச் சூழ்ந்திருப்பதும்
पृथिव्याः धरुणः	ப்ருதிவ்யாஃ தருணஃ	தரையைத் தாங்குவதுமாகிய
इन्दुः देवः	இந்துஃ தேவஃ	சோமதேவதை
पवते	பவதே	பவித்திரமுடைய தாகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

அழகிய படையை யுடையதும், இராக்கதர்களைக் கொல்வதும், உபத்திரவங்களை நீக்கிக் காப்பாற்றுவதும். ஈண்டு உபத்திரவங்களை நீக்கி என்பது எஞ்சி நின்றது. பரிபாலிப்பதும், தேவர்களை யுண்டாக்குவதும், நல்ல வலி வுடையதும், வானுலகை நன்கு சூழ்ந்திருப்பதும், பூமியையுந் தாங்குவது மாகிய சோம தேவதை பவித்திரமாக்கப்படுகின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 8.

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र३ २ ३ १ २

679. ऋषिर्विप्रः पुर एता जनानामृभुर्धीर उशना काव्येन ।

१ २ ३१२३ १ २ ३ २ २३ २ ३ १ २

स चिद्विवेद निहितं यदा सामपीच्यं३ गुह्यं नाम गोनाम् ॥ ८ ॥

இருக்கு 9-87-1-3.

ऋषिर्विप्रः पुर एता जनानामृभुर्धीर उशना काव्येन ।
स चिद्विवेद निहितं यदा सामपीच्यं गुह्यं नाम गोनाम् ॥

அந்வயம்.

विप्रः, पुरः एता, जनानां ऋभुः, धीरः, उशना ऋषिः, सः चित्, आसां गोनां, अपीच्यं निहितं, यत्, गुह्यं, नाम, काव्येन, विवेद ॥

பதவுரை.

विप्रः	விப்ரஃ	நுண்ணறிவாளரும்
पुरः एता	பூரஃ ஏதா	மனிதர்களுள் முதன்மையாகிய வரும்
जनानां ऋभुः	ஜநாநாம் ஜபூஃ	மனிதர்களுட் பிரகாச மிகுந்த வரும்
धीरः	தீரஃ	மேலாகிய வுணர்வுடையவருமாகிய
उशना ऋषिः	உஶநா ஜஷிஃ	உசனா, என்னும் இருடியானவர்
सः चित्	ஸஃ சித்	அத்தகையதேயான
आसां गोनां	சூஸாம் கொநாம்	இக் கோக்களின்
आपीच्यं निहितं	சூபீச்யம் நிஹிதம்	உள்ளிலிருக்கின்ற
यत्	யத்	யாதொரு
गुह्यं	கூஹ்யம்	மறைக்கத் தக்க
नाम	நாம	பாலாகிய நீருண்டோ, அதை,
काव्येन	காவ்யேந	தோத்திரத்தால்
विवेद	விவேத	இனிது அடைந்தனர்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3. அதீந்திரிய திருஷ்டா ரிஷி.

கூரிய மதியுடையவரும், முன் செல்பவரும், மநுடர்கட்கு விளக்கமானவரும், திரமாகிய உணர்வுடையவருமாகிய 'உசனா' என்னும் பெயர் பூண்ட ரிஷியானவர், அத்தகைய அதையே துதியாற் பெற்றனர். எதை யெனின்? அது கூறப்படுகின்றது:—கோக்களின் சம்பந்தமுடைய உள்ளுக்குள்ளிருக்கும் பால் வடிவ நீரைப் பெற்றனர் என்க. அது எத்தன்மைய தெனின்? மறைக்கத் தக்கது என்பதாம். இச் சோமரசத்தைக் கண்டு பிடித்தவர் இந்த ரிஷியே யென்று தெரிகின்றது. (3)

மூன்றாவது கண்டம்.

முற்றும்

நான்காவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—1. அத்தியாயம் 1. கண்டம்—4.

ஒன்பது மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३ १ २ ३ १ २ ३ १२
680. अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः ।
१ २ ३ १ २र ३२ ३ १ २ ३
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः ॥ १ ॥

அபி த்வா ஶூர நொநுமொஉதுக்தா இவ தெநவஃ ।
ஈஶாநமஸ்ய ஜகதஃ ஸ்வர்த்ருஶமீஶாநமிந்த்ர தஸ்துஷஃ ॥

அந்வயம்.

हे शूर इन्द्र !, अदुग्धाः, धेनवः इव, अस्य जगतः, ईशानं, तस्थुषः, ईशानं, स्वर्दृशं, त्वा, अभिनोनुमः ॥

பதவுரை

हे शूर इन्द्र !	ஹெ ஶூர இந்த்ர !	பராக்கிரமமுடைய இந்திரனே !
अदुग्धाः	அதுக்தாஃ	பால் கறக்காத
धेनवः इव	தெநவஃ இவ	பசுக்கள் போல
अस्य जगतः	அஸ்ய ஜகதஃ	இச் சங்கம வுலகத்திற்கு
ईशानं	ஈஶாநம்	இறைவனும்,
तस्थुषः	தஸ்துஷஃ	தாபர வுலகிற்கு
ईशानं	ஈஶாநம்	இறைவனும்,
स्वर्दृशं	ஸ்வர்த்ருஶம்	எல்லா முணர்ந்தவனுமாகிய
त्वा	த்வா	உன்னைப்
अभिनोनुमः	அபிநொநுமஃ	பன்முறை வணங்குகின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—முதலாவது சூக்தத்தில் மந்திரம் 1. வசிட்டர் ரிஷி.

எல்லையிலாக் கீர்த்தியையுடைய இந்திரனே ! உன்னை, நாங்கள் பன்முறை வணங்குகின்றோம். அதிலுவமை :—பால் கறவாது (பால் மடியில் நிறைந்துள்ள) கோக்கள், கன்றுகளைக் குறித்துக் கதறுவது போன்றெனல். அது போன்று நாங்களுன்னைப் போற்றுகின்றோம் எனக் கூட்டுக. எத்தன்மைத்தாய நின்னை யெனின் ? இச்சங்கம உலகிற்கு இறைவனும், தாபர வுலகிற்கு மிறைவனும், எல்லா முணர்ந்தவனுமாகிய இந்திரனென்னும் நின்னைப் போற்றுகின்றோம் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१ २र ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २र
681. न त्वावाꣳ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे ॥ २ ॥

இருக்கு 7-32-22-26.

ந க்வாவாம் சுந்யோ தி வ்யோ ந பார்தி வோ ந ஜாதோ ந [ஜநிஷ்யதே ।
சுஶ்வாயந்தோ மவ்வந்நிந்த்ர வாஜிநோ மவ்யந்தஸ்வா ஹவாமஹே ॥

அந்வயம்.

मघवन्, हे इन्द्र !, त्वावान्, दिव्यः, अन्यः, न, पार्थिवः, न, न जातः, न जनिष्यते, इन्द्र !, अश्वायन्तः, वाजिनः, गव्यन्तः, त्वा, हवामहे ॥

பதவுரை.

मघवन्	மவ்வந்	தனமலிந்த
हे इन्द्र !	ஹே இந்த்ர !	இந்திரனே !
त्वावान्	க்வாவாந்	நினக் கொப்புடையவர்
दिव्यः	தி வ்யஃ	சுவர்க்கத்துள்ள
अन्यः	சுந்யஃ	பிறர்
न	ந	ஆகார்.
पार्थिवः	பார்தி வஃ	தரையில் வாழ்வாரும்
न	ந	ஒப்பாகார்.
न जातः	ந ஜாதஃ	ஒப்புடையராய் உண்டாயினாரு மிலர்.
न जनिष्यते	ந ஜநிஷ்யதே	உண்டாகவு மாட்டார்.
इन्द्र !	இந்த்ர !	இந்திரனே !
अश्वायन्तः	சுஶ்வாயந்தஃ	குதிரை வேண்டுமென்னு மிச்சை கொண்டும்
वाजिनः	வாஜிநஃ	அன்னம் வேண்டு மென்னும் இச்சை பற்றியும்
गव्यन्तः	மவ்யந்தஃ	கோ வேண்டுமென்னும் வேட்கையை யடைந்தும்
त्वा	க்வா	உன்னை
हवामहे	ஹவாமஹே	(யாங்கள்) அழைக்கின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

தன மிக்குடைய இந்திரனே! வானுலகிற் பிறந்தாரில் நின்னைப் போன்றார் பிறர் யாருமிலர். தரையிற்றோன்றினார்களிலும் நின்னைப் போன்றார் யாருமிலர். வானிலும், மண்ணிலும், நினைப் போன்றார் உண்டானாரிலர், உண்டாகுவாருமிலர். இரண்டுலகிலும் முக்காலத்தும் நினைப் போன்றார் வேறொருவரும் இலர். (அனைவரிலும்) நீயே வல்லுநனாகின்றாய் என்பது பொருள். குதிரை வேண்டுமென்னும் விருப்பை யடைந்தும், அன்னத்தை யிச்சித்தும், அல்லது, கோக்களை விரும்பியும், அவிகளைக் கொண்டவர்களாய் இந்திரனே! உன்னை நாங்கள் யழைக்கின்றோம் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १२३ १ २
682. कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा ।
२ ३ १ २ ३ २
कया शचिष्टया वृता ॥ ३ ॥

கயா நஶ்சித்ர ஆ ஭ுவதூதீ ஸதாவ்ருத: ஸவா ।
கயா ஶசிஷ்டயா வ்ருதா ॥

அந்வயம்.

सदावृधः, चित्रः, सखा, कया ऊती?, शचिष्टया कया वृता?, नः आभुवत् ॥

பதவுரை.

सदावृधः	ஸதாவ்ருத:	எப்போதும் வளர்பவனும்
चित्रः	சித்ர:	விசித்திர பராக்கிரமமுடையவனும்
सखा	ஸவா	மித்திரனுமாகிய இந்திரன்,
कया ऊती?	கயா ஊதீ?	திருப்தியைக் கொடுக்கும் எப்பொருளால்?
शचिष्टया कया वृता?	ஶசிஷ்டயா கயா வ்ருதா?	நுண்ணறிவுடன் கூடிய அநுட்டானஞ் செய்த எக் கருமத்தினால்?
नः आभुवत्?	ந: ஆ ஭ுவத்?	எங்கள் (மேல்) நோக்குடையானாகுவன்?

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில் 1. வாமதேவர் ரிஷி.

எப்போதும் வளர்கின்றவனும், விசித்திரமாகிய பராக்கிரமமுடையவனும், போற்றத் தக்கவனும், மித்திர வடிவனுமாகிய இந்திரன், திருப்தியைத் தரும் எப்பொருளினுல் எங்களைக் குறித்து நோக்குடையோனுவன் ? கூரிய மதியோடு கூடி அநுட்டானஞ் செய்த எக் கருமத்தால் எம்பால் நோக்குடையானுவன் ? (3)

மந்திரம் 4.

१ २ ३ १ २२ ३ १ २ ३१ २
683. कस्त्वा सत्यो मदानां मꣳहिष्ठो मत्सदन्धसः ।
३ १ २ ३२३ १२
दृढाचिदारुजे वसु ॥ ४ ॥

கஸ்வா ஸத்யோ மதா³நாம் மꣳஹிஷ்ட²ோ மத்ஸத³ந்த⁴ஸ꣡꣡꣡

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. மந்திரம்—2.

பூசிக்கத்தக்கதும், சத்தியவடிவானதும், களிப்பைத் தருவனவற்றுள் மேலாகிய மதத்தைத் தருவதும் யாதோ? அத்தகைய சோமரசம் வலுவான தாயினும் சத்துருவின் திரவியத்தை எல்லா வகையானுங் கெடுக்கின்றது. (அத்தன்மைய சோமரசம்,) இந்திரனே! உனக்குக் களிப்புண்டாக்குக. என இயைத்துக்கொள்க. (4)

மந்திரம் 5.

३२उ ३ १२ ३२ २३२
684. अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम् ।
३१२ ३१२
शतं भवास्यूतये ॥ ५ ॥

இருக்கு 4-31-1-3.

அபீ ஷு ணஃ ஸகீ நாமவிதா ஜரிதॄணாம் ।
ஶதம் பவாஸ்யூதயே ॥

அந்வயம்.

हे इन्द्र!, सखीनां, जरितॄणां, अविता, नः, शतं ऊतये, सु अभिभवासि ॥

பதவுரை.

हे इन्द्र!	ஹெ இந்ர!	இந்திரனே!
सखीनां	ஸகீ நாம்	நண்பர்களான
जरितॄणां	ஜரிதॄணாம்	துதியாளர்களைக்
अविता	அவிதா	காப்பாற்றுவோனாகிய நீ,
नः	நஃ	எங்களை
शतं ऊतये	ஶதம் ஊதயே	நூற்றுக்கணக்கான நல்வகையாற் காப்பாற்றுதற் பொருட்டு
सु अभिभवासि	ஸு அபிபவாஸி	இனிய நோக்குடையோனாகுவை.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—3.

இந்திரனே! ஒத்த வறிவுடைய தோத்திரம் பண்ணுவோர்களைப் பாதுகாக்கின்ற நீ, நூற்றுக் கணக்கான வகையால் எங்களைப் பாதுகாத்தற் பொருட்டு நல்ல நோக்குடையவனாகுவாய் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 6.

१ २ ३ १२ ३२३ १ २ ३ १ २र
685. तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः ।
३ २ ३ १ २र ३२३ १ २ ३ १ २
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ॥ ६ ॥

தம் வொ தஸ்மமூதீஷஹம் வஸோர்மந்தாநமந்ஸஸ: ।
அபி வத்ஸம் ந ஸ்வஸரேஷு தெநவ இந்த்ரம் ஸீர்பிர்நவாமஹே ॥

அந்வயம்.

स्वसरेषु, वत्सं, धेनवः न, दस्मं, ऋतीषहं, वसोः, अन्धसः, मन्दानं, वः, तं इन्द्रं अभि, गीर्भिः, नवामहे ॥

பதவுரை.

स्वसरेषु	ஸ்வஸரேஷு	கோச் சாலைகளில்
वत्सं	வத்ஸம்	கன்றைக் குறித்து
धेनवः न	தெநவ: ந	பாற் பசுக்கள் கதறுவன போல
दस्मं	தஸ்மம்	தரிசித்தற் குரியவனும்
ऋतीषहं	ஊதீஷஹம்	சத்துருக்களை யிழிவுபடுத்து வோனும்
वसोः	வஸோ:	துன்பத்தை நீக்குவோனும்
अन्धसः	அந்ஸஸ:	சோமரச மருந்தியதாற்
मन्दानं	மந்தாநம்	களிப்படைந்தவனும்
वः	வ:	உங்கள் சம்பந்தியுமாகிய
तं इन्द्रं अभि	தம் இந்த்ரம் அபி	அவ் விந்திரனைக் குறித்து,
गीर्भिः	ஸீர்பி:	துதிவாக்குகளால்
नवामहे	நவாமஹே	தோத்திரம் பண்ணுகின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—பிரகாதவடிவ மூன்றாவது சூக்தத்தில் 1, நோதா ரிஷி.

நோதா, என்னும் இருடியானவர் இந்திரனைத் துதிக்கின்றார்:—வேட் போர்காள்! வேள்வித் தலைவர்காள்! யாம் இந்திரனைத் துதிக்கின்றோம். அவன் எத்தன்மைய னெனின்? தரிசித்தற் குரியானும், சத்துருக்களை யடக்குவோனு மாவன். மற்றும், எத்தன்மைய னெனின்? துன்பத்தைப் போக்குவோனும், அல்லது, பாத்திரத்திலிருக்கப்பட்ட சோமரசத்தை யருந்தியதாற் களிப்படைந்தவனும், ஆராதிக்குந் தன்மையால் உங்களு

டைய சம்பந்தமுடையானுமாவன். அவ் விந்திரனே, துதியாகிய வாக்குகளால் தோத்திரம் பண்ணுகின்றோம் என்பதாம். எப்போதிலெனின்? இரவியா னியமிக்கப்பட்ட பகல்களிலென்க. ஈண்டுத், தோத்திரம் பண்ணுதல் பதைபதைத்தலாம். அதிலுவமை:—புதிதா யீன்ற பசுக்கள் கோச் சாலைகளில் கன்றைக் குறித்துக் கதறுமாறு தோத்திரித். தழுகின்றோம் என் பதாம். ஈண்டு மூலத்தில், சுவசரேழு, என்பது கோச் சாலைகளில் எனவும், பகல்களில், எனவும் பொருட்படும். "சுவ சராணி பகல்கள்" என்றார் யாஸ்க முனிவரும் ஆதலின் என்க. (6)

மந்திரம் 7.

३२ ३२३ १२ ३ १२ ३ १ २र ३१ २

686. द्युक्षꣳ सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसम् ।

३२३ १२ ३ १२ ३ १ २ ३१ २र

क्षुमन्तं वाजꣳ शतिनꣳ सहस्रिणां मक्षू गोमन्त मीमहे ॥ ७ ॥

இருக்கு 8-88-1-2.

द्यु॒क्षꣳ सु॒दा॒नु॒ं त॒विषी॒भि॒रा॒वृ॒तं गि॒रिं न व॑रु॒
[ह्मो३ व्वे ।

क्षु॒म॒न्तं वाजं श॒ति॒नं स॒ह॒स्रि॒णां म॒क्षू गो॑म॒न्त ई॑महे
[ई३ह्म ॥

அன்வயம்.

द्युक्षं, सुदानुं, गिरिं. न, तविषीभिः, आवृतं, पुरुभोजसं, क्षुमन्तं, शतिनं, सहस्रिणां, गोमन्तं, वाजं, मक्षु, ईमहे ॥

பதவுரை.

द्युक्ष	द्यु॒क्षं	வானுலகில் வசிப்போனும்
सुदानुं	सु॒दा॒नु॒ं	சிறந்த ஈகையுடையானும்
गिरिं न	गि॒रिं न	மலையைப் போன்று
तविषीभिः	त॒विषी॒भिः	ஆற்றல்களாற்
आवृतं	आ॒वृ॒तं	சூழப்பட்டவனும்
पुरुभोजसं	पु॒रु॒भो॒ज॒सं	அளிகொடுத்த அனைவரையும் உண்பிக்கச் செய்வோனும், அல்லது, அநேகரைப் பரிபாலிப்போனுமாகிய இந்திரனிடத்தில்,
क्षुमन्तं	क्षु॒म॒न्तं	புத்திர பௌத்திர கோலாகலத்தோடு கூடியதும்

शतिनं	ஶதி நம்	நூற்றுக் கணக்கானதும்
सहस्रिणां	ஸஹஸ்ரிணாம்	ஆயிரக் கணக்கானதுமாகிய திரவியங்களோடு கூடியதும்
गोमन्तं	கொமந்தம்	கோக்களோடு கூடியதுமாகிய
वाजं	வாஜம்	அன்னத்தை,
मक्षु	மக்ஷு	சீக்கிரமாய்
ईमहे	ஈமஹெ	(யான்) இரக்கின்றோம்.

சாணய பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

மிகுந்த வொளியுடைய இடத்தில் வாழ்பவனும், அல்லது, வானுலகில் வாழ்வோனும், அழகிய ஈகை (கொடை) யுடையானும், ஆற்றல் மலியப் பெற்றவனும், அவி கொடுத்தலால் அநேகம் வேள்வித் தலைவர்களால் உண்பிக்கப்பெற்றோனும், அல்லது, பல்லோரைப் பரிபாலிப்போனுமாகிய இந்திரனிடத்தில்; கோலாகல சத்தங்களையுடைய புத்திரன் முதலியோர்களுடன் கூடியதும், தோத்திர முதலிய முழக்கங்களுடன் கூடிய தென்பதுமது. நூறு, அல்லது, ஆயிரக் கணக்கான தனங்களோடு கூடியதும், கோக்கள் முதலியவைகளோடு கூடியதுமாகிய அன்னத்தை விரைவில் யாசிக்கின்றோம். அல்லது, மிகப் பிரகாசிப்பதும், அழகிய ஈகைக்குரியதும், ஆற்றல்களோடு கூடியதும், அநேக புத்திர பௌத்திரர்கள் உண்ணுங் காலத்திலெழுங் கோலாகல இரைச்சலுடன் கூடியதுமாகிய அன்னத்தை இந்திரன்பால் இரக்கின்றோம், என இம் மந்திரத்தின் முற்பாதியை அன்னத்திற்கே விசேடணமாக்கிக் கொள்க என்பதாம். (2)

மந்திரம் 8.

१२ ३ १२३ १२३ १२ ३१२
687. तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रꣳ सबाध ऊतये ।
३१ २र ३१२ ३२३२उ३ २ ३१२
बृहद्गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम् ॥ ८ ॥

தரொபிர்வொ விதத்வஸுமிந்த்ரம் ஸபாத ஊதயே ।
ப்ருஹத்ஹாயந்தஃ ஸுதஸொமெ அத்வரெ ஹுவெ ஹரம் ந
[காரிணம் ॥

அந்வயம்.

(हे ऋत्विजः !,) वः, सुतसोमे, अध्वरे, तरोभिः, विदद्वसुं, इन्द्रं, सबाधः, ऊतये, बृहत् गायन्तः, भरं न कारिणं, हुवे ॥

பதவுரை.

(हे ऋत्विजः !)	(ஹே ரிக்விஜः !)	வேட்போர்களே !
वः	வः	நீங்கள்
सुतसोमे	ஸுதஸோமே	சோமரசம் பிழிந்துள்ள
अध्वरे	அத்வரே	வேள்வியி (சோம யாகத்தி) ல்
तरोभिः	தரோபிः	வேகமுள்ள குதிரைகளுடன்
विदद्वसुं	விதத்வஸும்	தனத்தையுங் கொடுக்கின்ற
इन्द्रं	இந்த்ரம்	இந்திரனை,
सधाधः	ஸதாயः	(நமக்கு) கேடு வருமிடத்துக்
ऊतये	ஊதயே	காப்பாற்றுதற் பொருட்டு
बृहत् गायन्तः	பரு ஹத் கா யந்தः	'பிருகத் சாமம்' என்னும் சங்கீதத்தைப் பாடி ஆராதிப்பீர்களாக.
भरं न कारिणं	ஹவம் ந கா ரிணம்	தம்மைப் போஷிப்பவனை புத்திரன் முதலியோர்கள் அன்போடழைக்குமாறு
हुवे	ஹுவே	துதிப்போனுகிய யானும், தனக்கினியதைச் செய்யும் அவ்விந்திரனை யழைக்கின்றேன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—1. பிரகாதத்தில் (பெருங்கீதத்தில்) 1. கலிரிஷி.

வேட்போர்காள் ! நீங்கள், வேகமுள்ள குதிரைகளுடன், அல்லது, வேகத்துடன் தனத்தைக் கொடுக்கும் இந்திரனை, பீடைகளினின்று (நம்மைப்) பாதுகாத்தற் பொருட்டு, 'பிருகத், என்னும் பாடலைப் பாடுவோர்களாய் (வழிபடுவீர்களாக). ஈண்டு வழிபடுவீர்களாக என்பது எஞ்சி நின்றது.' எவ் விடத்தினின்? அது கூறப்படுகின்றது :—சோமரசம் பிழிந்துள்ள வேள்வியின்கண் (சோமயாகத்தில்) என்க. துதிப்போனுகிய யானும் உங்கட்காக அவனை அழைக்கின்றேன். எதைப் போலெனின்? குடும்பத்தைப் பரிபாலிப்போனை, (தமக்கினியவைகளைச் செய்வோனை) தமக்கினியவைகளைச் செய்யுமாறு புத்திரன் முதலியோர்கள் அழைப்பதைப் போன்றென்க. அத்தன்மையனுகிய இந்திரனை யழைக்கின்றேன் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 9.

२उ ३ १ २र३ २ ३ २उ ३ १.२ ३ १ २र
688. न यं दुध्रा वरन्ते न स्थिरा मुरो मदे षु शिप्रमन्धसः ।
२ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३क २र
य आदृत्या शशमानाय सुन्वते दाता जरित्र उक्थ्यम् ॥ ९ ॥

இருக்கு 8-66-1-2.

ந யம் துத்ரா வரந்தே ந ஸ்தீராமுரோ மதேஷு ஶிப்ரமந்ஸஸ:।
ய ஆதூத்யா ஶஶமாநாய ஸுந்வதே தாதா ஜரித்ர உக்த்யம் ॥

அந்வயம்.

सुशिप्रं, यं, दुध्राः, न वरन्ते, स्थिराः न, मुरः, यः अन्धसः, मदे, आदृत्य, शशमानाय, सुन्वते, जरित्रे, उक्थ्यं, दाता ॥

பதவுரை.

सुशिप्रं	ஸுஶிப்ரம்.	அழகிய முகத்தினமைப்பை, அல்லது, அழகிய மூக்கையுடையவனாகிய
यं	யம்	எவ் விந்திரனை,
दुध्राः	துத்ராஃ	அடக்க முடியாத அசுரர்கள்
न वरन्ते	ந வரந்தே	கடக்க முடியாதவர்களானார்களோ,
स्थिराः न	ஸ்தீராஃ ந	நிலையான தேவர்களும் நிவிர்த்திக்கக் கூடாதவர்களானார்களோ,
मुरः	முரஃ	இறப்பையுடைய மனிதர்கள் தள்ள முடியாதவர்களானார்களோ,
यः अन्धसः	யஃ அந்ஸஸஃ	யாதொரு சோமமாகிய அன்னத்தை,
मदे	மதே	களிப்பின் பொருட்டு
आदृत्य	ஆதூத்ய	அன்புகூர்ந்து
शशमानाय	ஶஶமாநாய	துதிக்கின்றவனும்
सुन्वते	ஸுந்வதே	சோமரசத்தைச் சமற்காரம் பண்ணுபவனும் ஆகிய
जरित्रे	ஜரித்ரே	துதிப்போன் பொருட்டு
उक्थ्यं दाता	உக்த்யம் தாதா	எவன் சிறந்த தனத்தைக் கொடுக்கின்றவனோ, அவ்விந்திரனை வேண்டுகின்றேன் என முடித்துக்கொள்க,

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—9.

அழகிய முகத்தின் அமைப்பை, அல்லது, மூக்கையுடைய எவ்விந்திரனை, பிறரால் அடக்கமுடியாத அசுரர்கள் போரில் தீக்கற் கொவ்வாதவர்களானார்களோ, வலிவுள்ள தேவர்களும் போரில் நிவர்த்திக்க முடியாதவர்களானார்களோ, மற்றும், இறப்புத் தன்மை வாய்ந்த மனிதர்கள் போரில் ஒதுக்க முடியாதவர்களானார்களோ, யாதொரு இந்திரன், சோமரச மாகிய அன்னத்திலுண்டாகிய களிப்பின் பொருட்டு, சோமரச மருந்தலாலுண்டாகிய களிப்பின் பொருட் டென்பதுமது. அன்பு கூர்ந்து சோம ரசம் பிழிந்தெடுப்பவனுக்கும், தோத்திரம் பண்ணுவோனுக்கும் கொடையாளி யாகின்றனை, எக்கொடை யெனின்! போற்றத்தக்க திரவியத்தையீதலென்க. அவ் விந்திரனை அழைக்கின்றேன் என முன்னுள்ளதோடு கூட்டுக. (9)

குறிப்பு—ஈண்டு, 'சிப்ரம்' என்னும் மூலபதத்திற்கு, மூக்கு, என்பது பொருள் "சிப்ரே அதநாசிகேவா" என யாஸ்கமுனிவரும் நிகண்டிற் கூறியுள்ளார் ஆதலின் என்க.

நான்காவது கண்டம்.

முடிந்தது.

ஐந்தாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—1. அத்தியாயம்—1. கண்டம்—5.

நான்கு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१२ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २

689. स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया ।

१ २३ १२ ३२

इन्द्राय पातवे सुतः ॥ १ ॥

ஸ்வாதிஷ்டயா மதிஷ்டயா பவஸ்வ ஸோம தாரயா ।

இந்த்ராய பாதவே ஸுதः ॥

அன்வயம்.

हे सोम!, इन्द्राय पातवे, सुतः, स्वादिष्ठया, मदिष्ठया, धारया, पवस्व ॥

பதவுரை.

हे सोम!	ஹெ ஸொம!	சோமமே!
इन्द्राय पातवे	ஈந்த்³ராய வாதவெ	இந்திரன் அருந்துதற் பொருட்டு
सुतः	ஸுதः	பிழிதல் முதலிய சமற்காரம் பண்ணப்பெற்ற நீ
स्वादिष्ठया	ஸ்வாதி³ஷ்ட²யா	இன்சுவை யுடையதும்
मदिष्ठया	மதி³ஷ்ட²யா	பெருங் களிப்பைக்கொடுப்பது மாகிய
धारया	தா⁴ரயா	தாரையால்
पवस्व	பவஸ்வ	(பாத்திரத்தில்) நிரம்புவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில் 1. விசுவாமித்திரரின் புத்திரராகிய மதுச்சந்தர் ரிஷி.

சோமரசமே! இந்திரன் அருந்துதற் பொருட்டுப் பிழியப்பெற்ற நீ, மிகுந்த இன்சுவையுடையதும், பெருங்களிப்பைத் தருவதுமாகிய தாரையால் (பாண்டத்தில்) நிரம்புவாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २

690. **रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते ।**

१ २ ३२ ३ १२

द्रोणे सधस्थमासदत् ॥ २ ॥

ரக்ஷோஹா விஶ்வசர்ஷணிரபி⁴ யோநிமயோஹதே ।

த்³ரோணே ஸத⁴ஸ்த²மாஸத³த் ॥

அன்வயம்.

रक्षोहा, विश्वचर्षणिः, अयोहते, द्रोणे, सधस्थं, योनिं, अभ्यासदत् ॥

பதவுரை.

रक्षोहा	ரக்ஷோஹா	இராக்கதர்களை யழிப்பதும்
विश्वचर्षणिः	விஶ்வசர்ஷணிः	உலகத்தைக் காண்பதுமாகிய சோமரசம்
अयोहते	அயோஹதே	பொன்னற் பிழியப்பெற்று,
द्रोणे	த்³ரோணே	துரோண கலசத்தில்

सधस्थं	ஸயஸ்தம்	ஒன்றுபட்டு இருத்தற் பொருட்டு
योनिं	யொநிம்	சமற்காரம் பண்ணுமிடத்தைக் குறித்து
अभ्यासदत्	அப்யாஸதத்	ஒரு நோக்காய்ச் செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

இராக்கதர்களைக் கொல்வதும், உலகத்தைக் காண்பதுமாகிய சோமரசம், பொன்னாலடிக்கப்பட்டு (பிழியப்பட்டு) அவ்வாறே "பொன்னையுடைய கையன் பிழிகின்றான்" என மறையுங் கூறுகின்றது. துரோண கலசத்தோடு, அல்லது, பிழிகின்ற இரண்டு பலகைகளோடுகூட யோனியாகிய பிழியுமிடத்தை நோக்கிச் சென்று கொண்டிருக்கின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

३ १२ ३ १ २ ३१२
691. वरिवोधातमो * भुवो मꣳहिष्ठो वृत्रहन्तमः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
पर्षिराधो मघोनाम् ॥ ३ ॥

இருக்கு 9-1-1-3.

வரிவொயாதமொ ஸுவொ மஹிஷ்டொ வ்ருத்ரஹந்தமஃ ।
பர்ஷிராயொ மவொநாம் ॥

அந்வயம்.

(हे सोम !,) वरिवोधातमः, मंहिष्ठः, वृत्रहन्तमः, भुवः, मघोनां, राधः, पर्षि ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	(சோமமே ! நீ)
वरिवोधातमः	வரிவொயாதமஃ	தனத்திற்கு வள்ளலாயும்
मंहिष्ठः	மஹிஷ்டஃ	மற்றையவைகட்குத் தலை வள்ளலாகவும்
वृत्रहन्तमः	வ்ருத்ரஹந்தமஃ	சத்துருக்களை முழுது மழிக்கின்றவனாகவும்
भुवः	ஸுவஃ	இருக்கின்றனை.
मघोनां	மவொநாம்	தனமுடைய சத்துருக்களின்
राधः	ராயஃ	தனத்தையும்
पर्षि	பர்ஷி	எமக்குக் கொடுப்பாயாக.

* भवः எனவும் பாடம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

சோமமே! நீ, தனத்திற்குப் பெருங் கொடையாளி யாகின்றாய். ஈண்டு மூலத்தில் (வரிவ:) என்பது தனமாம். "வேத: வரிவ:" என நிகண்டில் இது திரவியம் எனக் கூறப்பட்டிருத்தலின் என்க. வரைவிலாது கொடுப்போனாயு மாகின்றாய். இஃது அனைத்திற்கும் வள்ளற் றன்மை யாதலின் கூறியது கூறலென்னுங் குற்றமாகா. சத்துருக்களை முழுதும் அழிப்போனுமாகின்றாய். அன்றியும், தனமுடைய சத்துருக்களின் தனத்தையும் எங்கட்குக் கொடுப்பாயாக. (3)

மந்திரம் 4.

१ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
692. **पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः ।**
१ २ ३ १२ ३ १२
महि द्युक्षतमो मदः ॥ ४ ॥

வவஸ்வ மதுமத்தம இந்த்ராய ஸோம க்ரதுவித்தமோ மதஃ ।
மஹி த்யுக்ஷதமோ மதஃ ॥

அந்வயம்.

हे सोम!, मधुमत्तमः, क्रतुवित्तमः, महि, द्युक्षतमः, मदः, इन्द्राय, मदः, पवस्व ॥

பதவுரை.

हे सोम!	ஹெ ஸோம!	சோமனே!
मधुमत्तमः	மதுமத்தமஃ	இன்சுவை மலிந்தவனும்
क्रतुवित्तमः	க்ரதுவித்தமஃ	புத்தியை, அல்லது, கரும பயனைத் தருபவனும்
महि	மஹி	போற்றத்தக்கவனும்
द्युक्षतमः	த்யுக்ஷதமஃ	பேரொளியை யுடையவனும்
मदः	மதஃ	களிப்பைத் தருபவனுமாகிய நீ,
इन्द्राय	இந்த்ராய	இந்திரன் பொருட்டுக்
मदः	மதஃ	களிப்பை யுண்டாக்குபவனாய்ப்
पवस्व	வவஸ்வ	பாத்திரத்தில் நிரம்புவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்து—பிரகாதமாகிய இரண்டாஞ் சூக்தத்தில்—1. கௌரி வீதி ரிஷி.

சோமனே! மிகுந்த மதுரத் தன்மையுடைய நீ, இந்திரன் பொருட்டுக் களிப்பைக் கொடுப்பவனும் நிறைவாயாக. எத்தன்மையன் நீ யெனின்? நற் கருமத்தையேனும், உணர்வையேனுங் கொடுப்பவனும், பூரித்தற் குரியானும், மிக விளங்குபவனும், களிப்பிற்குக் காரணனுமாவாய் என் பதாம். (4)

மந்திரம் 5.

१ २ ३ १ २३ १ २ ३२३ ३ ३ २ ३१२

693. यस्य ते पीत्वा वृषभो वृषायतेऽस्य पीत्वा स्वर्विदः ।

२ ३१२ ३क२र ३२उ ३ २ ३ १२

स सुप्रकेतो अभ्यक्रमीदिषोऽच्छा वाजं नैतशः ॥ ५ ॥

யஸ்ய தெ வீக்வா வ்ருஷஹொ வ்ருஷாயதெ2ஸ்ய வீக்வா ஸ்வர்விதஃ।
ஸ ஸுஹ்ரகெதொ அப்யக்ரமீதிஷொ2ச்சா வாஜம் நைதஸஃ ॥

அந்வயம்.

(हे सोम!,) वृषभः, यस्य ते पीत्वा, वृषायते, स्वर्विदः, अस्य पीत्वा, सुप्रकेतः, सः, एतशः, वाजं अच्छ न, इषः, अभ्यक्रमीत् ॥

பதவுரை.

(हे सोम!)	(ஹெ ஸொம!)	(சோமமே!)
वृषभः	வ்ருஷஹஃ	மனவேட்கையை மாரியாய்ப் பெய்கின்ற இந்திரன்
यस्य ते पीत्वा	யஸ்ய தெ வீக்வா	எத்தன்மைய வுன்னை யருந்தி
वृषायते	வ்ருஷாயதெ	இடபம் போல் நடக்கின்றானோ,
स्वर्विदः	ஸ்வர்விதஃ	எல்லா முணர்ந்த
अस्य पीत्वा	அஸ்ய வீக்வா	அத்தன்மைய உன்னை யருந்தி,
सुप्रकेतः	ஸுப்ரகெதஃ	சிறந்த அறிவுடையவனாகிய
सः	ஸஃ	அவ் விந்திரன்
एतशः	ஏதஸஃ	குதிரை
वाजं अच्छ न	வாஜம் அச்ச ந	போரை ஆக்கிரமித்துக்கொள் வது போல
इषः	இஷஃ	சத்துருவின் அன்னத்தை
अभ्यक्रमीत्	அப்யக்ரமீத்	வசப்படுத்திக் கொள்கின்றான்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

சோமமே! மன விருப்பைப் பொழியும் இந்திரன், உன்னை யருந்தி, இடபத்தைப் போல் நடக்கின்றான். மற்றும், எல்லா முணர்ந்த அத்தன்மைய உன்னை யருந்தியதனாலுண்டாகிய மிக நுண்ணறிவை யுடைய இடபம் போன்ற அவ் விந்திரன், சத்துருக்களுடைய அன்னங்களை ஆக்கிரமித்துக் கொள்கின்றான். அதிலுவமை:—குதிரை, போரை யடைந்து ஆக்கிரமித்துக் கொள்ளுமா றெனல். ஈண்டு, 'ஏதச:' என்பது குதிரை என நிகண்டு கூறுகின்றது. (5)

மந்திரம் 6.

२ ३१ २ ३ २ ३१ २र ३ १२
694. इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः ।
३२ ३२ ३ १ २ ३ १२
श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥ ६ ॥

இந்த்ரமச்ச ஸுதா இமெ வ்ருஷணம் யந்து ஹரயஃ ।
ஶ்ருஷ்டெ ஜாதாஸ இந்தவஃ ஸ்வர்விதஃ ॥

அந்வயம்.

श्रुष्टे, जातासः, इन्दवः, स्वर्विदः, हरयः, सुताः, इमे, वृषणं, इन्द्रं, अच्छ यन्तु ॥

பதவுரை.

श्रुष्टे	ஶ்ருஷ்டெ	துரிதமாய்
जातासः	ஜாதாஸஃ	உண்டாகியதும்
इन्दवः	இந்தவஃ	பாத்திரத்தில் ஒழுகுகின்றதும்
स्वर्विदः	ஸ்வர்விதஃ	எல்லா முணர்ந்ததும்
हरयः	ஹரயஃ	பசுமை நிறமுடையதும்
सुताः	ஸுதாஃ	சமற்காரம் பண்ணப்பட்டதுமாகிய
इमे	இமெ	இச் சோமரசம்
वृषणं	வ்ருஷணம்	விரும்பியதைப் பொழியும்
इन्द्रं	இந்த்ரம்	இந்திரனை
अच्छ यन्तु	அச்ச யந்து	இனிது அடைவதாகுக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—மும்மை கொண்ட மூன்றுஞ் சூக்தத்தில் 1. அக் கினி ரிஷி.

ஈண்டு மூலத்தில், 'சிருஷ்டே' என்பது விரைவுப் பொருள் கொண் டது. 'சிரஷ்டி' என்பது துரிதத்தின் பெயராம், என்பது நிகண்டுவாக்காம். விரைவில் உண்டாகியதும், பாத்திரங்களில் ஓழுகுகின்றதும், எல்லா முணர்ந்ததும், பசுமை நிறமுடையதும், பிழிதன் முதலிய சமற்காரம் பண் ணப்பெற்றது மாகிய இச் சோமரசம், விரும்பியவற்றை மாரியாய்ப் பெய்யும் இந்திரனே யடைவதாகுக. (6)

மந்திரம் 7.

३ १ २र ३ १ २र ३ २
695. अयं भराय सानसिरिन्द्राय पवते सुतः ।
२ ३ १२ ३ १२ ३२
सोमो जैत्रस्य चेतति यथाविदे ॥ ७ ॥

ஈயம் ஹராய ஸாநஸிரிந்த்ராய வவதெ ஸுதஃ ।
ஸொஸொ ஜைத்ரஸ்ய செததி யதாவிதெ ॥

அந்வயம்.

भराय, सानसिः, सुतः, अयं सोमः, इन्द्राय, पवते, जैत्रस्य, चेतति, यथाविदे॥

பதவுரை.

भराय	ஹராய	உயுத்தத்தின் பொருட்டுச்
सानसिः	ஸாநஸிஃ	சேவிக்கத் தக்கதும், (அருந்தத் தக்கதும்)
सुतः	ஸுதஃ	சமற்காரம் பண்ணப் பெற்றது மாகிய
अयं सोमः	ஈயம் ஸொமஃ	இச் சோமரசம்,
इन्द्राय	இந்த்ராய	இந்திரன் பொருட்டுப்
पवते	வவதெ	பாத்திரத்தில் நிரம்புகின்றது.
जैत्रस्य	ஜைத்ரஸ்ய	வெற்றி கொள்ளும் இந்திரனை
चेतति	செததி	அறிகின்றது.
यथाविदे	யதாவிதெ	(அவன்) உலகத்தாலறியப்படு மாறு எண்க.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—7.

போரின் நிமித்தமாய் ஏற்றுக் கொள்ளத் தக்கதும், பிழிந்தெடுக்கப் பட்டதுமாகிய இச்சோமரசம், இந்திரன் பொருட்டுப் பாத்திரங்களில் (தன திடங்களில்) நிரம்புகின்றது. பின்னர், இச் சோமம், வெற்றிச் சீலமுடைய இந்திரனை யறிகின்றது. மூலத்தில் ஜைத்திரனை, என்பதற்கு உரியவினை கொள்ளற் பாலதாம் என்னுந் தன்மை பற்றி 'வெற்றிச்சீலன்' எனப் பொருள் கொள்ளப்பட்டது. உலகத்தால் இந்திரன் எவ்வாறு அறியப் படுகின்றானோ, அவ்வாறே (சோமரசம் அவனை) அறிகின்றது என்பதாம்.

மந்திரம் 8.

३ २उ ३ २३ २ ३ १ २ ३ २
696. अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ग्राभं *गृभ्णाति सानसिम् ।
१ २ ३ १२ ३ १२ ३ २
वज्रञ्च वृषणं भरत्समप्सुजित् ॥ ६ ॥

இருக்கு 9-16-1-3.

அஸ்யேதிந்த்ரோ மதேஷ்வா ஸ்ராபம் ஸ்ருஹ்ணாதி ஸாநஸிம் ।
வஜ்ரஞ்ச வ்ருஷணம் ஸரத்ஸமப்ஸுஜித் ॥

அந்வயம்.

अप्सुजित्, इन्द्रः, अस्य इत्, मदेषु, सानसिं, ग्राभं, गृभ्णाति, वृषणं, वज्रं च, संभरत् ॥

பதவுரை.

अप्सुजित्	அப்ஸுஜித்	நீரின் பொருட்டு விருத்திரா சுரனை வென்ற
इन्द्रः	இந்த்ரஃ	இந்திரன்
अस्य इत्	அஸ்ய இத்	இச் சோமரசத்தினுடைய
मदेषु	மதேஷு	களிப்புண்டாகியபோதே
सानसिं	ஸாநஸிம்	எல்லாரும் போற்றத் தக்கதும்
ग्राभं	ஸ்ராபம்	கொள்ளற்பாலதுமாகிய தநுவை
गृभ्णाति	ஸ்ருஹ்ணாதி	எடுக்கின்றான்.
वृषणं	வ்ருஷணம்	விரும்பியதை முடிக்கும்
वज्रं च	வஜ்ரம் அ	தனது வச்சிராயுதத்தையும்
संभरत्	ஸம்ஹரத்	இனிது தாங்குகின்றான்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—8.

இச்சோமரசத்தினுடைய களிப்புண்டாகிய போதே, அனைவராலும் போற்றத் தக்கதும், கொள்ளற் பாலதுமாகிய தநுவை இந்திரன் ஏந்திக் கொள்கின்றான். மற்றும், மழையின் பொருட்டு விருத்திராசுரனை வென்ற, அல்லது அப்பு, என்பது "அந்தரிட்சத்திற்கோர் பெயராம்" என நிகண்டிற் கூறியபடி அந்தரிக்ஷமாம் (ஆகாயமாம்) அதில் 'அகி' என்பவனை வென்ற இந்திரன், இச்சித்ததை முடிக்கும் வச்சிராயுதத்தையும் இனிது தாங்கிக்கொள்கின்றான் என்பதாம். (8)

மந்திரம் 9.

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
697. पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे ।
२३ १ २ ३ १ २ ३क २र
अपश्वानꣳ श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्व्यम् ॥ १ ॥

ப॒ரொஜி॒தீ வொ அ॒ந்த॒ஸஃ ஸு॒தாய மா॒தயி॒த்ந॒வெ ।
அ॒ப॒ஶ்வா॒நம் ஶ்ந॒யிஷ்ட॒ந ஸ॒வா॒யொ தீ॒ர்஘ஜி॒ஹ்வ்ய॑ம் ॥

அந்வயம்.

हे सखायः !, वः, पुरोजितीः, अन्धसः, सुताय, मादयित्नवे, दीर्घजिह्व्यं श्वानं, अपश्नथिष्टन ॥

பதவுரை.

हे सखायः !	ஹெ ஸவாயஃ !	நண்பர்களான துதிப்போர்காள் !
वः	வஃ	நீவிர்
पुरोजितीः	ப॒ரொஜி॒தீஃ	வெற்றிக்கு முன் னிற்பதும் (எப்போதும் வெற்றியைத் தருவதும்)
अन्धसः	அ॒ந்த॒ஸஃ	அருந்தற் குரியதும்
सुताय	ஸு॒தாய	சோமக் கொடிகளினின்று பிழியப்பட்டதும்.
मादयित्नवे	மா॒தயி॒த்ந॒வெ	மிகக் களிப்பைக் கொடுப்பதுமாகிய இரசத்தின் பொருட்டு
दीर्घजिह्व्यं श्वानं	தீ॒ர்஘ஜி॒ஹ்வ்ய॑ம் ஶ்வா॒நம்	நீண்ட நாவுள்ள நாயைத்
अपश्नथिष्टन	அ॒ப॒ஶ்ந॒யிஷ்ட॒ந	தூரத்தில் ஓட்டுவீர்களாக. (சுவைக்காவாறு செய்வீர்களாக என்பதாம்.)

சாயணபாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—நான்காஞ் சூக்தத்தில் 1. சியாவாசுவ ரிஷி.

நண்பர்காள்! அல்லது, ஒத்த நடையையுடையவர்களான துதிப்போர்களே! நீங்கள், வெற்றியைத் தருவதும், அருந்துதற் குரியதும், பெருங்களிப்பைக் கொடுப்பதும், சோமக் கொடிகளைப் பிழிந்தெடுத்தது மாகிய இரசத்தின் பொருட்டு, நீளமாகிய நாக்குள்ள நாயைத் தூரத்தி லோட்டுவீர்களாக. அத்தன்மைய நாய் சுவைக்காவண்ணஞ் செய்வீர்களாக என்பதாம். ஈண்டு, நாய்=இராக்கதன் (1)

மந்திரம் 10.

१ २र ३१२ ३ १ २ ३२
698. **यो धारया पावकया परि प्रस्यन्दते सुतः ।**
२ ३२ ३ १ २ १
इन्दुरश्वो न कृत्व्यः ॥ २ ॥

யொ தாரயா பாவகயா பரி ப்ரஸ்யந்தெ ஸுதஃ ।
இந்துரஶ்வோ ந க்ருத்வ்யஃ ॥

அந்வயம்.

सुतः, कृत्व्यः, यः, इन्दुः, पावकया, धारया, अश्वः न, परि प्रस्यन्दते ॥

பதவுரை.

सुतः	ஸுதஃ	சமற்காரம் பண்ணப்பெற்றதும்
कृत्व्यः	க்ருத்வ்யஃ	கருமத்திற்குச் சாதனமுமாகிய
यः	யஃ	யாதொரு
इन्दुः	இந்துஃ	சோமரசமுண்டோ, அது
पावकया	பாவகயா	பாவத்தைச் சுத்தம் பண்ணுகின்ற
धारया	தாரயா	தாரையால்,
अश्वः न	அஶ்வஃ ந	குதிரை விரைவிற் செல்லுமாறு
परि प्रस्यन्दते	பரி ப்ரஸ்யந்தெ	நாற்புறமும் பாய்கின்றது.

சாயணபாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—10.

பிழியப்பட்டதும், கருமத்திற்குச் சாதனமாந்தன்மையால் வல்லுநத்தன்மையையுடையதுமாகிய சோமரசம், ஈண்டு "கிருத்வி" என்பது கருமத்தின் பெயர் "கிருத்துவி என்பது கருமத்தின் பெயர்" என நிகண்டு கூறுதலின் என்க. பாவத்தைச் சுத்தப்படுத்துந் தாரையால் நாற்புறமும் பெருகுகின்றது. எவ்வாறெனின்? குதிரை வேகமாய் ஓடுவது போன்று என்பதாம். (2)

மந்திரம் 11.

२ ३ १ २ ३ २ र ३ १ २ ३ ३ २ ३ २
699. तं दुरोषमभी नरः सोमं विश्वाच्या धिया ।
३ १ २ ३ १ २
यज्ञाय सन्त्वद्रयः ॥ ३–१८ ॥

இருக்கு 9-101-1-3.

தம் துரோஷமபீ நரஃ ஸோமம் விஶ்வாச்யா தியா ।
யஜ்ஞாய ஸந்த்வத்ரயஃ ॥

அன்வயம்.

नरः, दुरोषं, तं सोमं अभि, विश्वाच्या, धिया, यज्ञाय, अद्रयः सन्तु ॥

பதவுரை.

नरः	நரஃ	வேட்போர்கள்,
दुरोषं	துரோஷம்	வெப்பந்தராத, அல்லது, பாவத்தைச் சுடுகின்ற
तं सोमं अभि	தம் ஸோமம் அபி	அச்சோமத்தைக் குறித்து
विश्वाच्या	விஶ்வாச்யா	எல்லா விருப்பங்களையும் நிறைவாக்கும்
धिया	தியா	புத்தியால்
यज्ञाय	யஜ்ஞாய	வேள்வியின் பொருட்டு
अद्रयः सन्तु	அத்ரயஃ ஸந்து	அன்புடையார்களாகுக.

சாயண பாடியம்

கண்டம்—5. இருக்கு—1.

வேள்விக் கருமத்தின் தலைவர்களான வேட்போர்கள், தாபத்தைக் கொடுக்காத, அல்லது, பாவத்தைக் காய்கின்ற சோமத்தைக் குறித்து எல்லா மனவேட்கைகளையு மடைவிக்கும் புத்தி கொண்டு வேள்வியின் பொருட்டு அன்புடையார்களாகுக. (3)

மந்திரம் 12.

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ उ ३ २ ३ १ २
700. अभिप्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते ।
१ २ र ३ २ ३ २ उ ३ २ ३ १ २ ३ २
आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधिरथं विष्वञ्चमरुहद्विचक्षणः ॥ १ ॥

சுஹிப்ரியாணி பவதெ சநொஹிதொ நாமாநி யஹ்வொ சுதி
[யெஷு வத்ததெ |
சூ ஸூர்யஸ்ய ப்ருஹதொ ப்ருஹஜதிரதம் விஷ்வஞ்சமாரு ஹ
[ஸ்விசக்ஷணஃ ||

அந்வயம்.

येषु, यह्वः अधिवर्धते, चनोहितः, प्रियाणि, नामानि, अभि पवते, बृहत्, विष्वञ्चं, बृहतः, सूर्यस्य, अधिरथं, विचक्षणः, आरुहत् ॥

பதவுரை.

येषु	யெஷு	எந்த நீரில்
यह्वः अधिवर्धते	யஹ்வஃ சுதிவத்ததெ	அந்தரிக்ஷத்திலுள்ள, இந்த மகத்தாகிய சோமம் மிக வளர்கின்றதோ,
चनोहितः	சநொஹிதஃ	இனியவை செய்யும் அன்னமாகிய சோமம்
प्रियाणि	ப்ரியாணி	உலகத்திற்குத் திருப்தியை யுண்டாக்கும்
नामानि	நாமாநி	அந்நீரை,
अभि पवते	சுஹி பவதெ	எல்லா வகையானும் பவித்திரப் படுத்துகின்றது.
बृहत्	ப்ருஹத்	மகத்தாகிய அச்சோமமே,
विष्वञ्चं	விஷ்வஞ்சம்	எங்குஞ் செல்கின்றதும்
बृहतः	ப்ருஹதஃ	போற்றத் தக்கதுமாகிய
सूर्यस्य	ஸூர்யஸ்ய	சூரியனுடைய
अधिरथं	சுதிரதம்	இரதத்தின் மேல்
विचक्षणः	விசக்ஷணஃ	எல்லாவற்றையுங் காண்பதாய்
आरुहत्	சூருஹத்	ஏறுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—ஐந்தாஞ் சூக்தத்தில், 1. கவி ரிஷி.

அன்னத்தின்பொருட்டு இனியதாகிய, அல்லது, இனியதாகிய அன்னம் என்னுஞ் சோமம், உலகத்திற்குப் பிரியமான தண்ணீரைச் சுத்தப் படுத்துகின்றது. அந்தரிக்ஷத்திலுள்ள நீரில் மகத்தாகிய இச் சோமம் வளர்கின்றது. உண்மையாய்த் தண்ணீரின் நடுவில் சோமமிருக்கின்றது என்க. பின்னர், மகத்தாகிய அச் சோமம், மிகப் போற்றுகின்றதும், யாண்டுஞ்

செல்கின்றதுமாகிய இரசத்தின்மீது எல்லாவற்றையுங் காண்பதாகி ஏறு கின்றது. "நன்கு தீபிலிட்ட ஆகுதி இரவியை யினிதடைகின்றது" என்றும் மதுவும் எல்பதாம். (1)

குறிப்பு.—மூலத்தில் 'சந' என்பது அன்னத்தின் பெயர்.

மந்திரம் 13.

३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ १ १२र३ २ ३ १ २र

701. ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं वक्ता पतिर्धियो अस्या अदाभ्यः ।

१ २ ३ २ ३ १२३ २ १ २ ३ २३१ २ ३ २ ३ २

दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्या३न्नाम तृतीयम* धि रोचनं दिवः ॥ २ ।

ऽतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं वक्ता पतिर्धियो अस्या अदाभ्यः ।

दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यान्नाम तृतीयमधि रोचनं दिवः ॥

அன்வயம்.

ऋतस्य, जिह्वा, वक्ता, प्रियं, मधु, पवते, अस्याः धियः, पतिः, अदाभ्यः, पुत्रः, पित्रोः अपीच्यं, दिवः रोचनं, तृतीयं नाम, अधिदधाति ॥

பதவுரை.

ऋतस्य	ऽतस्य	சத்தியமாகிய வேள்வியின்
जिह्वा	जिह्वा	முக்கியமாந் தன்மையால் நாக் கெனப்படுவதும்
वक्ता	वक्ता	ஒலிக்கின்றதுமாகிய சோமம்,
प्रियं	प्रियं	அன்பு தருவதும்
मधु	मधु	களிப்பை யுண்டாக்குவதுமாகிய இரசத்தை
पवते	पवते	ஒழுகச் செய்கின்றது.
अस्याः धियः	अस्याः धियः	இக் கருமத்தைப்
पतिः	पतिः	பாதுகாப்பானும்
अदाभ्यः	अदाभ्यः	அசுரர்களாற் றுன்புறுத்தப்படாதோனுமாகிய
पुत्रः	पुत्रः	வேள்வித் தலைவன்,
पित्रोः अपीच्यं	पित्रोः अपीच्यं	நாமமிடுங்கால் தாய் தந்தையர் கூட யறியாது

* अधिरोचने, என்பது இருக்கு.

दिवः रोचनं	தீவः ரொசநம்	வானுலகை விளக்குவது, என்று,
तृतीयं नाम	தரு தீயம் நாம	சோம சமற்காரமான பின் மூன்றுவதாகிய இப் பெயரை
अधिदधाति	அயிதயாதி	இனிது பெறுகின்றன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

சத்தியமாகிய வேள்விக்கு முக்கியமானதால் நாக்கெனப்படுவது சோமமாம். பிரியந் தருவதும், களிப்பை யுண்டாக்குவதுமாகிய அத்தகைய சோமரசம் ஒழுகுகின்றது. எத்தன்மைய இரசமெனின்? ஒலிசெய்வதும், அல்லது, 'துதிப்போர்களாற் செய்யப்படுங் துதிகள் சாதித்தற் குரியது என, மீண்டுங் கேட்கச் செய்கின்றதும், இக் கருமத்தைப் பரிபாலிப்பதும் மாதா பிதாக்களா லறியப்படாததும், நாமமிடுங்கால் தனக்குள் விருந்தமையின் அவர்களா லறியப்பட்டதும், வானுலகிற் பிரகாசிப்பதுமாகிய மூன்றுவது திருநாமத்தை, சோமரசம் பிழிந்தவிடத்து வேள்வித் தலைவனுக்கு இனிது சூட்டுவதுமாம். அங்ஙனமே, ரகஸ்யத்திர நாமம், வியவகார நாமம், என்னும் இரண்டையு மடைந்து சோம யாகஞ் செய்வோன் மூன்றுவது நாமத்தை யுடையவனுகின்றன்" என, பகவான் போதாயனராலுங் கூறப்பட்டிருக்கின்றது என்ப துணர்க. (2)

மந்திரம். 14.

१२ ३२ ३१२ ३१२ ३२उ
702. अव द्युतानः कलशाँ अचिक्रदन्नृभि * र्येमाणः

३ १ २३१२
कोश आ हिरण्यये ।

३२ ३१२ ३१२ ३१२ ३२
†अभी ऋतस्य दोहना अनूषताधि त्रिपृष्ठ

१२
उपसो ‡ विराजसि ॥ ३–१६ ॥

இருக்கு 9-75-1-3.

அவ த்யூதாநஃ கலஶாம் அசிக்ரதந்ந்ருபி ர்யேமாணஃ கோஶ ஆ
[ஹிரண்யயே ।
அபீ ஋தஸ்ய தொஹநா அநூஷதாதி த்ரிப்ருஷ்ட உஷஸோ
[விராஜஸி ॥

---

* अभीमृतस्य, † येमोनः, ‡ विराजति, என்பன இருக்கு.

அந்வயம்.

द्युतानः, नृभिः, हिरण्यये, कोशे, येमानः, कलशान्, अवाचिक्रदत्, ऋतस्य, दोहनाः, अभ्यनूषत, त्रिपृष्ठः, उषसः अधि, विराजसि ॥

பதவுரை.

द्युतानः	த்யூதாநஃ	விளங்குகின்ற சோமரசம்
नृभिः	நூபிஃ	வேட்போர்களால்
हिरण्यये	ஹிரண்யயெ	சமற்காரம் பண்ணிய பொன்மயமாகிய
कोशे	கொசெ	பாத்திரத்தில்
येमानः	யெமாநஃ	நியமனம் பண்ணப்பட்டு
कलशान्	கலசாந்	துரோண கலசங்களைக் குறித்து
अवाचिक्रदत्	அவாசிக்ரதத்	பிரதித்தொனி செய்கின்றது. பின்னர்,
ऋतस्य	ஜதஸ்ய	சத்தியமாகிய வேள்வியை,
दोहनाः	தொஹநாஃ	முடிக்கின்ற வேட்போர்கள்
अभ्यनूषत	அப்யநூஷத	இச் சோமத்தைத் துதிக்கின்றார்கள்.
त्रिपृष्ठः !	த்ரிவ்ருஷ்ஃ !	மூன்று சவனங்களைக் கொண்ட சோமமே! நீ
उषसः अधि	உஷஸஃ அதி	வேள்வித் தினங்களை
विराजसि	விராஜஸி	விளக்குகின்றனை.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—5.

கருமத்திற்குத் தலைவர்களான பிரகாசமுடைய வேட்போர்களால், பொன் மயமாகிய கோசத்தில், அதற்குப் பொன்மயமாந் தன்மையோ? பொன் மோதிரக் கையாற் பிழியப்படுதலின் என்க. நியமிக்கப்பட்ட பொன் சம்பந்தமுடைய சோமம், துரோணமென்னுங் கலசங்களைப் பற்றி ஒலியிடுகின்றது. பின்னர், சத்தியமாகிய இவ்வேள்வியை முடிவுறச் செய்கின்ற வேட்போர்கள், இச்சோமத்தைத் துதிக்கின்றார்கள். ஈண்டு மூலத்தில் இவ்வேள்வியை முடிக்கின்ற, என்னும் பொருள் கொண்ட 'வேள்வியைக் கறக்கின்றது' என்றது போலவே "துதிப்போர்களான வேட்போர்கள் கறக்கின்றார்கள்" (வேள்வியை முடிக்கின்றார்கள்) என,

தைத்திரீயப் பிராமணத்திலும் வேட்போர்கள் கறக்கின்றார்களெனக் கூறப் பட்டிருக்கின்றது. மற்றும், சவனங்கள் என்னும் மூன்று பின்புறங்களை யுடையது. முக்கால வேள்வி நீராடன் முதலிய மூன்று ஒமத்தின் கண் ணேயே சோம மிருத்தலின் என்க. அத்தன்மைய சோமமே! நீ, பகல் களில் நன்கு விளங்குகின்றாய். அல்லது, பகல்களை விளக்குகின்றாய் என் பதுமாம். (5)

ஐந்தாவது கண்டம்

முற்றும்.

ஆறுவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—1. அத்தியாயம்—1. கண்டம்—6.

ஒன்பது மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
703. यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।
१ २ २ ३ ३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ २
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् ॥ १ ॥

யஜ்ஞாயஜ்ஞா வொ அக்3னயே கி3ராகி3ரா ச த3க்ஷஸே ।
ப்ரப்ர வயமம்ருதம் ஜாதவேத3ஸம் ப்ரியம் மித்ரம் ந ஶம்ஸிஷம் ॥

அன்வயம்.

(हे स्तोतारः !,) वः, यज्ञायज्ञा, दक्षसे, अग्नये, गिरागिरा, (स्तोत्रं कुरुत,) वयं च, जातवेदसं, अमृतं, मित्रं न, प्रियं, (तं), प्रप्र शंसिषम् ॥

பதவுரை.

(हे स्तोतारः !)	(ஹே ஸ்தோதாரஃ !)	(துதிப்போர்காள் !)
वः	வஃ	நீங்கள்
यज्ञायज्ञा	யஜ்ஞாயஜ்ஞா	(ஒவ்வொரு) வேள்விகளிலும்
दक्षसे	த3க்ஷஸே	வளர்கின்ற
अग्नये	அக்3னயே	அக்கினியின் பொருட்டு
गिरागिरा	கி3ராகி3ரா	ஒவ்வொரு தோத்திரமாகிய வாக்காலும்

(स्तोत्रं कुरुत)	(ஸ்தோத்ரம் கு॰ரு॰த)	(துதிப்பீர்களாக.)
वयं च	வயம் அ	நாங்களும்
जातवेदसं	ஜாதவெதஸம்	தோன்றிய உணர்வை, அல்லது, திரவியங்களை யுடையதும்
अमृतं	அம்ரு॰தம்	இறவாததும்
मित्रं न	மித்ரம் ந	நண்பனைப் போன்றதும்
प्रियं	ப்ரியம்	அநுகூலமுமாகிய
(तं)	(தம்)	(அவ் வக்கினியை)
प्रप्र शंसिषं	ப்ரப்ர ஶம்ஸிஷம்	இனிது போற்றுகின்றேம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—முதற் சூக்தமாகிய பிரகாதத்தில்—1. திருண பாணி சம்பு ரிஷி.

ஏத்துவோர்களே! நீங்கள், வேள்விகளனைத்திலும் வளர்ந்த அக்கினியின் பொருட்டுத் துதியாகியவாக்கியத்தால் துதி செய்வீர்களாக. ஈண்டுத் துதி செய்வீர்களாக என்றது எஞ்சி நின்றது. 'गिराच' என்பதிலுள்ள சகாரம் (உம்மை) முறை மாற்று. அதாவது:—வ:, நாங்கள் என்பதனோடு கூட்டத்தக்கதாயிற்று என்பதாம். இவ்வாறுய வழி நாங்களும், என்றுயிற் றென்க. ஆகுங்கால் நீங்களுந் தோத்திரம் பண்ணுவீர்களாக நாங்களும் அவ் வக்கினியைப் போற்றுகின்றேம் என முடிந்தது. எவ்விதமாகிய அக்கினியை யெனின்? சாதலற்றதும், தோன்றும் பொருளை யுணர்வதும், அல்லது, தோன்றிய தனமுடையதும், மற்றும், மித்திரனைப் போன்றதும், அநுகூலமுமாகியதைப் போற்றுகின்றேம் என்பதனோடு மேற்கூட்டிக் கொள்க. ஈண்டுப் 'பிர' என்னுஞ் சொல் வடமொழியி லிரட்டித்தது அசையாம். 'शंसिषं' என்னும் ஒருமை திரிந்து प्रशंसाम: எனப் பன்மையாயிற்று. அதாவது, துதிக்கின்றேன் என்பது துதிக்கின்றேம் எனவாயிற்று என்பதாம். அல்லது, நீ என்றது நாங்கள் என்றுயிற் றெனினுமாம். என்னை? அக்கினியைப் பயநிலையாக்கி வினையாய்க்கொண்டு, வளர்தற் பொருட்டு என்பதை வளரை வினையாக்கிச் செயப்படு பொருள் குன்றிய தெனக்கொண்டு, உம், என்பதை ஏல் என்னும் அசையாக்கிக் கொள்ளுங்கால், துதிப்போய்! நீ, வேள்வியின்கண் இவ் வக்கினியைத் தோத்திரத்தால் வளர்ப்பாயெனில்? நாங்களும் இறவாத தன்மைமுதலிய குணம் வாய்ந்த அவ் வக்கினியைப் போற்றுகின்றேம் என்பது பெற்றும். இஃதும் அதற் கொவ்வுமென்ப துணர்க. (1)

மந்திரம் 2.

३ १ २र २ ३ २र३ १ २र ३ १ २
704. ऊर्जो नपातꣳ स हिनायमस्मयुर्दाशेम हव्यदातये ।
२ ३ १ २ ३ १ २र ३२ ३ २ ३ २ ३१ २
भुवद्वाजेष्वविता भुवद्वृध उत त्राता तनूनाम् ॥ २० ॥

இருக்கு 6-48-1-2.

ஊர்ஜோ நபாதம் ஸ ஹிநாயஸ்மயுர்தாஶேம ஹவ்யதாதயே ।
஭ுவத்வாஜேஷ்வவிதா ஭ுவத்வ்ருத உத த்ராதா தநூநாம் ॥

அந்வயம்.

ऊर्जः, नपातं, हिना, सः, अयं, अस्मयुः, हव्यदातये, दाशेम, वाजेषु, अविता, वृधः, भुवत्, उत, तनूनां, त्राता, भुवत् ॥

பதவுரை.

ऊर्जः	ஊர்ஜஃ	அன்னத்தினுடைய, அல்லது ஆற்றலினுடைய
नपातं	நபாதம்	புத்திரனென்னும் அக்கினியைப் புகழ்கின்றேன்.
हिना	ஹிநா	உண்மையாய்
सः	ஸஃ	அத்தகைய
अयं	அயம்	இவ்வக்கினி
अस्मयुः	அஸ்மயுஃ	எம்மை விரும்புகின்றது.
हव्यदातये	ஹவ்யதாதயே	தேவர்கட்கு அவியைச் சேர்ப்பிக்கும் அவ்வக்கினியின் பொருட்டு
दाशेम	தாஶேம	அவி கொடுக்கின்றோம். அவ்வக்கினி,
वाजेषु	வாஜேஷு	போர்களில்
अविता	அவிதா	(எம்மை) பாது காப்பாற்றுவதும்
वृधः	வ்ருதஃ	விருத்தி பண்ணுவதும்
भुवत्	஭ுவத்	ஆகுக.
उत	உத	மற்றும்,
तनूनां	தநூநாம்	எமது புத்திரர்களைப்
त्राता	த்ராதா	பாதுகாப்பதும்
भुवत्	஭ுவத்	ஆகுக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

ஆற்றலினுடைய, அல்லது. அன்னத்தினுடைய புத்திரன் போன்ற அக்கினியைத் துதித்கின்றோம். ஈண்டு அக்கினியைப் புகழ்கின்றோம் என அந்வயப்படலால், துதிக்கின்றோம் என்பது பொருளாயிற்று. மூலத்தில் ஹி, ந, என்னும் இரண்டு அசைச்சொற்கள் சேர்ந்தமை 'ஹி' என்பதன் பொருள் மேற்றாம். அதாவது எதனால் என்பதேயாம். உண்மையில் அவ் வக்கினி எங்களை எதனால் இச்சிக்கின்றதோ, அதனால் நாங்களும், தேவர் கட்கு அவிகளைக் கொடுக்கின்ற அவ் வக்கினிக்கு அவிகளைக் கொடுக்கின் றோம். அவ் வக்கினி, உயுத்தங்களில் எங்களைக் காப்பாற்றுவதும், விருத்தி பண்ணுவதுமாகுக. மற்றும், எங்களுடைய புத்திரர்களைக் காப்பாற்று வது மாகுக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १२ ३ १ २
705. एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः
३ १ २ ३ १ २
एभिर्वर्द्धास इन्दुभिः ॥ १ ॥

ஸஹ்யூ ஷு ப்ரவாணி தெ஽க்ந இக்ஷேதரா கிரஃ ।
ஸஹிவ்ருத்தாஸ இந்துபிஃ ॥

அந்வயம்.

हे अग्ने!, एहि, ते, गिरः, इत्था, सुब्रवाणि, ऊ, इतराः, एभिः इन्दुभिः, वर्द्धासे ॥

பதவுரை.

हे अग्ने!	ஹெ அக்ந!	அக்கினியே! நீ
एहि	ஸஹி	வருவாயாக.
ते	தெ	நின் பொருட்டுத்
गिरः	கிரஃ	துதிகளை
इत्था	இத்தா	இவ்வாறு
सुब्रवाणि	ஸுப்ரவாணி	இனிதாய்ச் சொல்கின்றேன். (அதைக் கேட்பாயாக.)

ऊ	ஊ	மற்றும்,
इतराः	ஈதராஃ	ஏனைய துதிகளையுங் கேட்பாயாக.
एभिः इन्दुभिः	ஏபிஃ ஈந்துபிஃ	இச் சோமரசத்தால்
वर्द्धसे	வர்தஸே	வளர்வாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—மூன்று துதிகள்கொண்ட இரண்டாஞ் சூக்கத்தில் 1.

அக்கினியே! நீ வருவாயாக. நின்பொருட்டு இவ்வாறு இனிதாய்த் துதி சொல்வதாக விருப்பமுற்றுள்ளேன்; அத் துதிகளைக் கேட்பாயாக. வடமொழியிலுள்ள உகாரம் அசை நிலை. அசுரர்களாற் செய்யப்பட்ட ஏனைய தோத்திரங்களையுங் கேட்பாயாக. அவ்வாறே பிராமணம் என்னும் மறையும் "அக்கினியே! இவ்வாறு மற்றைய அசுர்களாற் செய்யப்பட்ட துதிகள் ஏனைய தோத்திரங்கள்" எனக் கூறுகின்றது. மற்றும், வந்த நீ, இச் சோமரசத்தால் வளர்வாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 4.

२३क २२ २ २ ३ १ २ २ ३ १२

706. यत्र क्व च ते मनो दक्षं दधस उत्तरम् ।
तत्र योनिं कृणवसे ॥ २ ॥

யத்ர க்வ ச தெ மநோ தக்ஷம் தாதஸ உத்தரம்
தத்ர யொநிம் க்ருணவஸை ॥

அன்வயம்.

ते, मनः, यत्र, क्व च, तत्र, उत्तरं, दक्षं, दधसे, योनिं कृणवसे ॥

பதவுரை.

ते	தெ	(அக்கினியே) உன்னுடைய
मनः	மநஃ	அநுக்கிரகமாகிய மனம்
यत्र	யத்ர	எவ்விடத்தில்
क्व च	க்வ சா	எவ் வேள்வித் தலைவன்கண் இருக்கின்றதோ,
तत्र	தத்ர	அவ் வேள்வித் தலைவனுக்கு அங்கே
उत्तरं	உத்தரம்	மேம்பட்ட

दक्षं	தக்ஷம்	ஆற்றலைத் தரும் அன்னத்தை
दधसे	தயஸெ	நிலைக்கச் செய்கின்றாய்.
योनिं कृणवसे	யொநிம் கூணவஸெ	இடத்தையுஞ் செய்கின்றனை.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

அக்கினியே! உன்னுடைய அனுக்கிரகமாகிய அந்தக்கரணம் எவ்விடத்தில் எவ் வேள்வித்தலைவன்பால் இருக்கின்றதோ, அங்கு அவ் வேள்வித் தலைவனிடத்தில் மிகச் சிறந்த ஆற்றலை, அல்லது, ஆற்றலைத்தரும் அன்னத்தை நிலைநிறுத்துகின்றாய். அவ்வாறே, அவ் வேள்வித் தலைவன்பால் தனக்கும் இடஞ்செய்து கொள்கின்றாய். (2)

மந்திரம் 5.

१ २र ३ १२ ३ १ २र
707. न हि ते पूर्त्तमक्षिपद्भुवन्नेमानां पते ।
२ ३ १ २
अथा दुवो वनवसे ॥ ३–२१ ॥

இருக்கு 6-16-16-18.

ந ஹி தெ பூர்த்தமக்ஷிபத்ஸுவந்நெமாநாம் பதெ ।
அதா துவொ வநவஸெ ॥

அந்வயம்.

(हे अग्ने!,) ते, पूर्त्तं, अक्षिपत्, नहि भुवत्, नेमानां पते!, अथ, दुवः, वनवसे ॥

பதவுரை.

(हे अग्ने!)	(ஹெ அக்ஷ்நெ!)	(அக்கினியே!)
ते	தெ	உன்னுடைய
पूर्त्तं	பூர்த்தம்	பிரகாசம்
अक्षिपत्	அக்ஷிபத்	கண்ணொளியைக்
नहि भुवत्	நஹி ஸுவத்	கெடுக்காதிருக்குக. உன்னையே தரிசிக்கு மாற்றலைக் கொடுக்குக என்பதாம்.

नेमानां पते !	நேமாநாம் பதே !	அக்கினியே ! நீ, மனித வர்க்கங் களிற் சில வேள்வித் தலைவ ரைக் காப்பாற்றுவோனுயிருக் கின்றுய்.
अथ	அத²	இக் காரணத்தால்
द्रुवः	த்⁻ருவ:	என்னுல் வேள்வித் தலைவனுக் குச் செய்யப்பட்ட வழி பாட்டை
वनवसे	வநவஸே	ஏற்றுக்கொள்வாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

அக்கினியே ! உன்னுடைய ஒளியானது கண்களுக்கு இடையூறு செய் யாதிருக்குக. எப்போதும் எங்கட்குத் தரிசனஞ் செய்யத்தக்க ஆற்றலைச் செய்க. (என்பதாம்.) மனுடர்களுட் சிலருக் (வேள்வித் தலைவர்கட்)கு இறைவனே ! (பரிபாலிப்போய் !) ஈண்டு, மூலத்திய 'நேம' என்பதற்கு 'சிறிது' என்பது பொருளாமாதலின் சிலர் எனக் கொள்ளப்பட்டது. இதனுல் வேள்வித் தலைவர்களாற் செய்யப்பட்ட வழிபாட்டை யேற்றுக் கொள்வாயாக என்பதாம். (வேள்விக் கிரியையைக் குறைவுபாடிலாது காப் பாற்றுவாயாக என்பது பொருள்.) (3)

மந்திரம் 6.

३२३ १२ ३२उ ३१२ ३१२
708. वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कचिद्भरन्तोऽवस्यवः ।
१२३१
वज्रिञ्चित्रं हवामहे ॥ १ ॥

வயஉ த்வாஅபூர்வ்ய ஸ்தூரம் ந கசித்³ப⁻ரந்தோ(அ)வஸ்யவ: ।
வஜ்ரிஞ்சித்ரம் ஹவாமஹே ॥

அந்வயம்.

अपूर्व्य, वज्रिन्!, भरन्तः वयं, कचित् स्थूरं न, चित्रं, त्वां उ, अवस्यवः, हवामहे ॥

பதவுரை.

अपूर्व्य	அபூர்வ்ய-ஃ	மூன்று ஓமங்களிலும் வெளிப் பட்டிருத்தலின் புதியோனு கியவனும்
वज्रिन्!	வஜ்ரிந்!	வச்சிராந் தாங்கியவனுமாகிய இந் திரனே!
भरन्तः वयं	ஹரந்தஃ வயம்	சோமத்தா லுண்ணப் போஷிக் கின்ற நாங்கள்
कच्चित् स्थूरं न	கச்சித் ஸ்தூரம் ந	வீட்டில் தானியங்கள் நிறையக் கொட்டி வைப்பதற்கு, குண மிகுந்துள்ள ஒருவனை யழைப் பது போலப்
चित्रं	சித்ரம்	போற்றத்தக்க
त्वां उ	த்வாம் உ	உன்னையே
अवस्यवः	அவஸ்யவஃ	தமது பாதுகாப்பை விரும்பி
हवामहे	ஹவாமஹெ	அழைக்கின்றோம்.

சாயணபாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—மூன்றாவது சூக்தமாகிய பிரகாகத்தில் (பெருங் கீதத்தில்) 1. சௌபரி ரிஷி.

மூன்று ஓமங்களிலும் இனிது தோன்றலின் புதியோனே! வச்சிராயுதந் தாங்கினோய்! இந்திர! சோமமென்னும் அன்னத்தால் உண்ணப் போஷிக் கின்ற நாங்கள், எம்மைக் காப்பாற்றிக்கொள்ள விருப்புடையராய்ப் பூசிக் கத்தக்க, அல்லது, பல்வகை உருவங்களையுடைய உன்னையே அழைக்கின் றோம். அதிலுவமை:—நெல் முதலியவைகளைக்கொண்டு வீட்டை நிறைக் கின்ற குண மிகுந்த ஒருவனை, சனங்களழைக்கின்றது போன்றனல். (1)

மந்திரம் 7.

१२ ३ १२ ३२३ २ ३ २३१२ ३ ३२

709. उप त्वा कर्मन्नूतये स नो युवोग्रश्चक्राम यो धृषत् ।

१ २२३ १२ ३२ ३ १२ ३ २

त्वामिध्यवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम् ॥ २–२२ ॥

இருச்சு 8-12-1-2.

உப த்வா கர்உஊதயெ ஸ நொ யுவொ ஃஉக்ரஃ யொ தூஷத்।

த்வாமித்யவிதாரம் வவ்ருமஹெ ஸகாய இந்த்ர ஸானஸிம் ॥

அன்வயம்.

हे इन्द्र!, कर्मन्, ऊतये, त्वा, (उपगच्छामः,) यः, धृषत्, युवा, उग्रः सः, नः, चक्राम, सखायः, सानसिं, अवितारं, त्वामित्, वृमहे हि ॥

பதவுரை.

हे इन्द्र!	ஹெ இந்த்ர!	இந்திரனே!
कर्मन्	கர்மந்	அக்கினிட்டோம முதலிய கருமத்தில்
ऊतये	ஊதயெ	(எம்மைமக்) காப்பாற்றுதற் பொருட்டு
त्वा	த்வா	உன்னைச்
(उपगच्छामः)	(உபகச்சாமஃ)	(யாம் சரணடைகின்றோம்.) (பரோட்சம்)
यः	யஃ	யாதொரு இந்திரன்
धृषत्	த்ருஷத்	பகைஞரை யச்சமுறுத்துகின்றவனும்,
युवा	யுவா	தருணப்பருவத்தையும்
उग्रः सः	உக்ரஃ ஸஃ	உக்கிரத் தன்மையை யுடையனுமாவனே அவன்,
नः	நஃ	எங்கட் கருகில்
चक्राम	சக்ராம	வருவானுக. அல்லது, எங்களை யுற்சாகப்படுத்துவானுக.
सखायः	ஸகாயஃ	(அபரோட்சம்) சுற்றத்தார்களான யாங்கள்,
सानसिं	ஸாநஸிம்	தொண்டு பண்ணுதற்குரியவனும்
अवितारं	அவிதாரம்	அனைத்தையுங் காப்பாற்றுவோனுமாகிய
त्वामित्	த்வாமித்	உன்னையே
वृमहे	வ்ருமஹெ	ஆராதிக்கின்றோம்.
हि	ஹி	இது பிரசித்தியாம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2. மந்திரத்தின் முதற் பாதம் பிரத்தியட்சமாய்ப் பண்ணப்பட்டது.

இந்திரனே! உன்னை, அக்கினிட்டோம முதலிய வேள்விக் கருமங்களிற் காப்பாற்றுதற் பொருட்டு, கதியென்று அடைகின்றோம். மந்திரத்தின் இரண்டாம் பாதம் பரோட்சமாய்ச் செய்யப்பட்டது. யாதொரு இந்திரன்,

விரோதிகளை வெருளச் செய்கின்றவனும், தருணப்பருவத்தினனும் உக்கிர முடையானுமாவனோ, அவன், எங்களை முன்னிட்டு வருவானாக. அல்லது, எங்களைச் சந்தோடமுடையார்களாய்ச் செய்கின்றானோ, அவன் வருவானாக எனக் கூட்டுக. பிற்பாதியிற் பாதி மந்திரம் பிரத்தியட்சமாய்ச் சொல்லப்பட்டது. ஒத்த உணர்வுடையோர்களான, அல்லது, சுற்றத்தார்களான நாங்கள், எல்லாவற்றையும் பரிபாலிக்கும் உன்னையே போற்றுகின்றோம், இது வெளிப்படையாமென்க. (2)

மந்திரம் 8.

२३क२र ३ १२ ३ १ २ ३१२ ३ १२
710. अधाहीन्द्रा गिर्वण उप त्वा *काम ईमहे ससृग्महे ।
३२३ १ २ ३१ २
उदेवग्मन्त उदभिः ॥ १ ॥

அதாஹீந்த்ரா கிர்வண உப த்வா காம ஈம்மஹெ ஸஸ்ருக்மஹெ ।
உதெவக்மந்த உதபிஃ ॥

அந்வயம்.

गिर्वणः, इन्द्र !, अधाहि, त्वा, कामे, ईमहे, उदेवग्मन्तः, उदभिः, उपससृग्महे ॥

பதவுரை.

गिर्वणः	கிர்வணஃ	வாக்காற் போற்றுதற்குரிய
इन्द्र !	இந்த்ர !	இந்திரனே ! யாம்,
अधाहि	அதாஹி	இச் சமயமே
त्वा	த்வா	உன்னை (நின்பால்)
कामे	காமெ	விரும்பிய பொருளை
ईमहे	ஈம்மஹெ	இரக்கின்றோம்.
उदेवग्मन्तः	உதெவக்மந்தஃ	நீர் கொண்டுசெல்வோன்
उदभिः	உதபிஃ	விளையாட்டாக நீரைக் கையால் வாரி யிறைத்து மற்றொருவன் பாற் சேர்தல் போல,
उपससृग्महे	உபஸஸ்ருக்மஹெ	நின்னைச் சேர்கின்றோம்.

* कामान्मह ससृजमहे, எனவும் பாடம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—நான்காவது மூன்றில், 1. நிருமேத ரிஷி.

வாக்கால் வாழ்த்துதற்குரிய இந்திரனே! உன்னை, (நின்பால்) இப்போதே விரும்பிய பொருளை யிரக்கின்றேன். அல்லது, நீ விரும்பிய பொருளை நினக்குச் சேர்ப்பிக்கின்றேன் என்பது பொருள். அதிலுவமை கூறப்படுகின்றது :—நீர் கொண்டு செல்கின்றவர்கள் விளையாட்டின் பொருட்டு, கைகளால் எடுத்திறைக்கும் நீரால் அருகிலுள்ளாரை யடைவது போன்றெனல்.

மந்திரம் 9.

१ २र ३ २ ३ १२ ३ १ २
711. वार्णं त्वा यव्याभिर्वर्द्धन्ति शूर ब्रह्माणि ।
३ १ २ ३ १ २
वावृध्वाꣳसं चिदद्रिवो दिवे दिवे ॥ २ ॥

வாண்ணம் க்வா யவ்யாபிர்வர்த்தந்தி ஶூர ப்ரஹ்மாணி ।
வாவ்ருத்வாம்ஸம் சிதத்ரிவோ திவே திவே ॥

அந்வயம்.

अद्रिवः, शूर !, वार्णं, यव्याभिः, वावृध्वांसं चित्, त्वा, ब्रह्माणि, दिवे दिवे वर्द्धन्ति ॥

பதவுரை.

अद्रिवः	அத்ரிவஃ	வச்சிராயுதத்தைத் தாங்கிய
शूर !	ஶூர !	வீரனே !
वार्णं	வாண்ணம்	பெரிய கடலை,
यव्याभिः	யவ்யாபிஃ	நதிகள் தமது நீராற் பெருக்குவன போன்று
वावृध्वांसं चित्	வாவ்ருத்வாம்ஸம் சித்	வளர்ந்துள்ள
त्वा	க்வா	நின்னையே
ब्रह्माणि	ப்ரஹ்மாணி	தோத்திரங்களால்
दिवे दिवे वर्द्धन्ति	திவே திவே வர்த்தந்தி	ஒவ்வொரு நாளும் வளர்க்கின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

வச்சிராயுத மேந்திய சூரனுகிய இந்திர! மகத்தாகிய சலநிதியை (கடலை) ஆறுகள் விருத்தி பண்ணுகின்றன போன்று, நீரின்றிய விடம் நீரால் விருத்தியாவது போன்றலாது, விருத்தியாகிய நின்னையே துதிப் போர்கள் தோத்திரங்களால் ஒவ்வொரு தினத்திலும் விருத்தி பண்ணு கின்றார்கள் என்பதாம். (2)

ஈண்டு மூலத்திய (யவ்யாः) என்றது ஆற்றிற் கோர் பெயராம். "अवनयः यव्याः" என நிகண்டில் ஆற்றின் பெயர்க்குட் படிக்கப்பட் டிருத்தலின் என்க.

மந்திரம் 10.

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २

712. युञ्जन्ति हरी इषिरस्य गाथयोरौ रथ उरुयुगे वचोयुजा ।

३ १ २ ३ १ २

* इन्द्रवाहा स्वर्विदा ॥ ३–२३ ॥

இருக்கு. 8-98-7-9.

युञ्जन्ति हरी इषिरस्य गाथयोरौ रथ उरुयुगे वचोयुजा ।

इन्द्रवाहा स्वर्विदा ॥

அன்வயம்.

इषिरस्य, उरुयुगे, उरौ रथे, इन्द्रवाहा, वचोयुजा, स्वर्विदा, हरी, गाथया, युञ्जन्ति ॥

பதவுரை.

इषिरस्य	இஷிரஸ்ய	செல்லுந் தன்மையுள்ளதும்
उरुयुगे	உருயுகே	பெரிய தட்டை யுடையதும்
उरौ रथे	உரௌ ரதே	மகத்தாகியதுமாகிய இந்திர னுடைய இரதத்தின்கண்
इन्द्रवाहा	இந்த்ரவாஹா	இந்திரனுடைய குதிரைகள்
वचोयुजा	வசோயுஜா	(மந்திரத்தால்) சொல் மாத்திரத் தானே பூட்டிக் கொள்கின்ற வைகளாம்.
स्वर्विदा	ஸ்வர்விதா	அவனுடைய இடமாகிய சுவர்க் கத்திற்குப் போகின்ற

* इन्द्रस्य वाहा स्वर्विदा, எனவும். इन्द्रवाहा वचोयुजा, எனவும் பாடம்.

हरी	ஹரீ	அரி என்னும் அக்குதிரைகளை,
गाथया	காயயா	தோத்திரத்தால்
युञ्जन्ति	யுஞ்ஜந்தி	துதிப்போர்கள், இரதத்திற் பூட்டுகின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

செல்வமியற்கையை யுடையதும், பெருந் தட்டுகளை யுடையதுமாகிய இரதத்தில், இந்திரனுடைய வாகனமானவைகளும், சொன்ன மாத்திரத்திலே பூட்டிக்கொள்பவைகளும், சுவர்க்கம் என்னும் இந்திரனுடைய இடத்திற்குப் போகின்றவைகளும், அரி என்னும் பெயருடையவைகளுமான குதிரைகளை, துதிப்போர்கள் தோத்திரத்தாற் இரதத்திற் பூட்டுகின்றார்கள் என்பதாம். (2)

வித்தியாதீர்த்த மகேசுரர், வேதப்பொருளை விளக்குவதால்
உள்ளத்திருளை யோதுக்கிப் புருடார்த்தங்கள்
நான்கையுங் கோடுப்பாராக.

சுப்ரமண்யோம்! சுப்ரமண்யோம்!! சுப்ரமண்யோம்!!!

முதலாவது அத்தியாயம்

முற்றும்.

இரண்டாவது அத்தியாயம்.

தேவதைகள் :—1, 12, இந்திரன். 23, 16, அக்கினி. 14, உஷா. 15, அசுவினிகள். 17-22, சோமம்.

சந்தங்கள் :—1, 11, 16, 19, 21, காயத்திரி. 12, உஷ்ணிக். 13, 15, 20, பிருகதி. 22, முதலிரண்டு மந்திரங்கள், உஷ்ணிக். மூன்றாவது மந்திரம், அநுஷ்டுப்.

சுரங்கள் :—1, 11, 16, 19, 21, 22, ஷட்சம். 12, ரிஷபம். 13, 15, 20, மத்தியமம். இருடிகள் ஆங்காங்குக் கூறப் பெறுவர்.

முதலாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—1-ல் பிற்பாதி. அத்தியாயம்—2. கண்டம்—1.

பதினொரு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
713. पान्तमा वो अन्धस इन्द्रमभि प्रगायत ।
३ १२ ३१२३ १ २ ३ २
विश्वासाहꣳ शतक्रतुं मꣳहिष्ठं चर्षणीनाम् ॥ १ ॥

பாந்தமா வொ அந்ஸஸ இந்த்ரமபி ப்ரகாயத ।
விஶ்வாஸாஹம் ஶதக்ரதும் மம்ஹிஷ்ம் சர்ஷணீநாம் ॥

அந்வயம்.

(हे ऋत्विजः !,) वः, अन्धसः, आपान्तं, इन्द्रं, अभि प्रगायत, विश्वासाहं, शतक्रतुं, चर्षणीनां, मंहिष्ठम् ॥

பதவுரை.

(हे ऋत्विजः !)	(ஹெ ஃக்விஜஃ !)	வேட்போர்காள் !
वः	வஃ	உங்களுடைய
अन्धसः	அந்ஸஸஃ	சோமமாகிய அன்னத்தை
आपान्तं	ஆபாந்தம்	ஒருநோக்கா யருந்துகின்ற
इन्द्रं	இந்த்ரம்	இந்திரனை,

अभि प्रगायत	அபி ப்ரகாயத	இனிது துதிப்பீர்களாக. (அவ்விந்திரன் எவ் வண்ணத்தனெனின்?)
विश्वासाहं	விஶ்வாஸாஹம்	சத்துருக்களை யடக்குபவனும்
शतक्रतुं	ஶதக்ரதும்	நூற்றுக்கணக்கான கருமங்களைச் செய்வோனும்
चर्षणीनां	அஷ்ணீநாம்	மனிதர்கட்கு
मंहिष्ठं	மம்ஹிஷ்ம்	போற்றத் தக்கானுமாவன்.

சாயண பாடியம்.

வேதத்தை வெளியாக்கி அவ்வேதங்களினின்று வியனுலகத்தை யுண்டாக்கிய வித்தியாதீர்த்த மகேசுரனை வணங்குகின்றேன்.

கண்டம்—1. இருக்கு—மூன்று துதி கொண்ட முதற் சூக்தத்தில் மந்திரம் 1. சுருதகக்ஷ ரிஷி.

வேட்போர்களே! உங்களுடைய சோமரசமென்னும் அன்னத்தை ஒருமுகப்பட்டு அருந்துகின்ற இந்திரனை நன்கு துதிப்பீர்களாக. ஈண்டு மூலத்தில் 'பாந்தம்' என்னும் வினைச்சொல். பா - என்பது, அருந்து என்னும் பகுதி கொண்டு முடிந்தது. எத்தன்மைய இந்திரனை யெனின்? பகைஞர்களனைவரையும், அல்லது, பூத சமுதாய (கூட்ட) ங்களைத் தம்பாலடக்கிக் கொண்டு நிற்போனும், இதனானே பலவகை யுணர்வுடையானும், அல்லது, பலவிதமான கரும முடையானும், இன்னும், மனிதர்கட்குப் பெருங் கொடையாளனும், அல்லது, வேள்வித் தலைவர்கட்கு ஆராதிக்குந் தன்மை பற்றி போற்றத் தக்கானுமானவனை, நன்கு துதிப்பீர்களாக எனக் கூட்டுக. (1)

மந்திரம் 2.

३ १ २ ३१ २ ३ २ १ २
714. पुरुहूतं पुरुष्टुतं * गाथान्या ३ ꣳ सनश्रुतम् ।
२ ३ १ ३
इन्द्र इति ब्रवीतन ॥ २ ॥

பூரூஹூதம் பூரூஷ்டுதம் காதாந்யாம் ஸநஶ்ரூதம் ।
இந்த்ர இதி ப்ரவீதந ॥

அந்வயம்.

(हे ऋत्विजः! यजमानाः!,) पुरुहूतं, पुरुष्टुतं, गाथान्यां, सनश्रुतं, इन्द्रः इति, ब्रवीतन ॥

---

* गाथान्यं, என்பது இருக்கு.

பதவுரை.

(हे ऋत्विजः !)	(ஹே ரித்விஜஃ !)	(வேட்போர்காள் !)
(यजमानाः !)	(யஜமானாஃ !)	(வேள்வித் தலைவர்காள் ! நீவிர்)
पुरुहूतं	வுருஹூதம்	வேள்வியிற் பலராலழைக்கப் பெறுவோனும்,
पुरुष्टुतं	வுருஷ்டுதம்	பலரால் தோத்திர மந்திரங்களாக் கொண்டு துதிக்கப் பெறுவோனும்,
गाथान्यां	காயாந்யாம்	பாடுவதற்குரியானும்
सनश्रुतं	ஸநஸ்ருதம்	பெருங் கீர்த்தியுடையானுமாகிய வனை
इन्द्रः इति	இந்த்ரஃ இதி	இந்திரன் என்னும் பெயரால்
ब्रवीतन	ப்ரவீதந	(புகழ்) சொல்வீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. பிற்பாதி. இருக்கு—2.

வேட்போர்காள் ! வேள்வித் தலைவர்காள் ! நீவிர், வேள்வியிற் பல லோரா லழைக்கப் பெற்றவனும், அநேகர்களால் துதி மந்திர முதலியவை களைக்கொண்டு துதிக்கப்படுவோனும், இதனுனே கீதம் பாடுதற்குரியானும், பண்டைக் காலத்திலிருந்து கீர்த்தியுள்ளானுமாகிய தேவனை, நீங்கள் இந்திரன், என்னும் பெயராற் சொல்வீர் (புகழ்வீர்) களாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २२ ३ २
715. इन्द्र इन्नो * महोनां दाता वाजानां नृतुः ।
३ १ ३ १ २ २
महाꣳ अभिज्ञ्वायमत् ॥ ३–१ ॥

இருக்கு 8-92-1-3.

இந்த்ர இந்நோ மஹோநாம் தாதா வாஜாநாம் நூதுஃ ।
மஹாꣳ அபிஜ்ஞ்வாயமத் ॥
வ

அன்வயம்.

नृतुः, इन्द्र इत्, नः, महोनां, वाजानां, दाता, महान्, अभिज्ञु, आयमत् ॥

* मघोनां, எனவும் பாடம்.

பதவுரை.

नृतुः	நூ தூ:	துதிப்போர்க்குக், கோக்கள் முதலியவைகளைக் கொடுக்கின்ற
इन्द्र इत्	இந்த்ர இத்	இந்திர னொருவனே
नः	ந:	எங்கட்குப்
महोनां	மஹோ நாம்	பசு முதலிய தனங்களோடு
वाजानां	வாஜா நாம்	அன்னங்களையுங்
दाता	தா தா	கொடுக்கின்றோ னாவன்.
महान्	மஹாந்	எல்லோரினும் பெரியோனாகிய அவ் விந்திரன்
अभिज्ञु	அபிஜ்ஞு	எமக்கெதிரில் வந்து
आयमत्	ஆயமத்	அன்னம், தனம் முதலியவைகளைக் கொடுப்பானாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

கூறிப்போந்த இலக்கணமுடைய இந்திர னொருவனே, எங்கட்குப் பசு முதலிய தனங்களோடு அன்னத்தைக் கொடுப்போனாவன். (அவன்) எத்தன்மைய இந்திரனெனின்? எல்லாவற்றையு மாட்டி வைப்போன். அல்லது, துதிப்போர்கட்குப் பசு முதலியவைகளை நியமிப்போன் என்க. இதனானே பெரியோன் என்பது பெற்றாம். அவ் விந்திரன் எங்கட்கு எதிர் தோன்றி அவைகளைக் கொடுப்பானாக. அல்லது, அவ் விந்திரன் எங்கட் கெதிரில் வந்து இருகைகளாலும் தனத்தை யெடுத்து எங்கட்குக் கொடுப்பானாக என்பது பொருள். (3)

மந்திரம் 4.

२ ३ १ २ ३ १२ ३ १२
716. प्र व इन्द्राय मादनꣳ हर्यश्वाय गायत ।
१ २ ३ १ २
सखायः सोमपाव्ने ॥ १ ॥

ப்ர வ இந்த்ராய மாதநம் ஹர்யஶ்வாய காயத ।
ஸவாய: ஸோமபாவ்நே ॥

அந்வயம்.

हे सखायः !, वः, हर्यश्वाय, सोमपाव्ने, इन्द्राय, मादनं, प्रगायत ॥

பதவுரை.

हे सखायः !	ஹெ ஸவாய !	நண்பர்களான துதிப்போர்களே!
वः	வः	நீங்கள்
हर्यश्वाय	ஹர்யஶ்வாய	அரி யென்னுங் குதிரைகளை யுடையவனும்
सोमपाव्ने	ஸொமபாவ்நெ	சோமரசத்தை அருந்துவோனு மாகிய
इन्द्राय	இந்த்ராய	இந்திரன் பொருட்டுக்
मादनं	மாதநம்	களிப்புண்டாக்குதற்குரிய தோத் திரத்தைப்
प्रगायत	ப்ரகாயத	இனிது பாடுவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில் 1. வசிட்ட ரிஷி.

துதிப்போர்களே ! நீங்கள், அரியென்னுங் குதிரைகளை யுடையானும், சோமரசத்தை அருந்துவோனுமாகிய இந்திரன் பொருட்டுக் களிப்பைக் கொடுக்கத்தக்க தோத்திரத்தைப் பாடுவீர்களாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

२उ ३ २ ३ १ २ ३२ ३२उ ३ १२

717. शꣳसेदुक्थꣳ सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः ।

३ २ ३ १ २

चकृमा सत्यराधसे ॥ २ ॥

ஶꣳஸெதுக்²தꣳ ஸுதா³நவ உத த்³யுக்ஷம் யதா² நரः ।
சக்ருமா ஸத்யராத⁴ஸே ॥

அன்வயம்.

उत, सुदानवे, सत्यराधसे, नरः, द्युक्षं यथा, उक्थं, शंस, इत्, चकृम ॥

பதவுரை.

उत	உத	மற்றும், துதிப்போர்களே ! நீவிர்
सुदानवे	ஸுதா³நவெ	பெருங் கொடையானும்
सत्यराधसे	ஸத்யராத⁴ஸெ	உண்மையுள்ள தனமுடையானு மாகிய இந்திரன் பொருட்டுத்
नरः	நரः	ஏனைய துதிப்போர்கள்
द्युक्षं यथा	த்³யுக்ஷம் யதா²	பிரகாசத்திற்குக் காரணமாகிய தோத்திரத்தைச் செய்வது போல்

उक्थं	உக்ஶம்	தோத்திர மஞ்சரியைக்கொண்டு
शंस	ஶம்ஸ	நீங்களும், துதிப்பீர்களாக.
इत्	இத்	யாமும்
चकृम	அக்ரும	(அவ்வாறே) துதிக்கின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

அன்றியும், துதிப்போர்களே! நீவிர், மிகக் கொடை கொடுப்பானும், உண்மையாகிய தனமுடையானுமாகிய இந்திரன் பொருட்டு, மற்றைய துதியாளர்கள் விளக்கத்திற்குச் சாதனமாகிய தோத்திரங்களைச் சொல்வதுபோல, நீங்களுந் துதி செய்வீர்களாக. (அங்ஙனமே) யாமுந் துதிக்கின்றோம் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

१ २ ३२उ ३ १ २
718. त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं गव्युः शतक्रतो ।
१ २ ३१ २
त्वꣳ हिरण्ययुर्वसो ॥ ३–२ ॥

இருக்கு 7-31-1-3.

க்வம் ந இந்த்ர வாஜயுஸ்த்வம் ஶவ்யுஃ ஶதக்ரதோ ।
க்வம் ஹிரண்யயுர்வஸோ ॥

அந்வயம்.

हे इन्द्र !, त्वं, नः, वाजयुः, शतक्रतो !, त्वं, गव्युः, वसो !, त्वं, हिरण्ययुः ॥

பதவுரை.

हे इन्द्र !	ஹெ இந்த்ர !	இந்திரனே !
त्वं	க்வம்	நீ
नः	நஃ	எங்களுக்கு
वाजयुः	வாஜயுஃ	அன்னத்தை யளிக்க விரும்புவோனாகுதி.
शतक्रतो !	ஶதக்ரதோ !	எண்ணிலாக் கருமமுடையோய் !
त्वं	க்வம்	நீ
गव्युः	ஶவ்யுஃ	எங்களுக்கு கோக்களைக் கொடுக்க விரும்புவோனாகுதி.
वसो !	வஸோ !	வியாபகனாகிய இந்திர !
त्वं	க்வம்	நீ
हिरण्ययुः	ஹிரண்யயுஃ	எங்களுக்குப் பொன்களைக் கொடுக்க விரும்புவோனாவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

இந்திரனே! நீ, எங்கள் நிமித்தம் அன்னத்தை யளிக்க விரும்புவோனாகுதி. அளவிலாக் கருமமுடையோய்! நீ, எங்கணிமித்தங் கோக்களைக் கொடுக்க விரும்புவோனாகுதி. வியாபகனாகிய இந்திரனே! நீ, எங்கணிமித்தம் பொன்னையு மளிக்க விரும்புவோனாகுதி என்பதாம். (3)

மந்திரம் 7.

३१२ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
719. **वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः ।**
१ २ ३ १ २
कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते ॥ १ ॥

வயமு க்வா ததிதர்த்தா இந்த்ர க்வாயந்தஃ ஸவாயஃ ।
கண்வா உக்ஹேபிஜ்ஜரந்தே ॥

அந்வயம்.

हे इन्द्र!, त्वायन्तः, सखायः, तदिदर्थाः वयं, त्वा, उ, कण्वाः, उक्थेभिः, जरन्ते ॥

பதவுரை.

हे इन्द्र!	ஹெ இந்த்ர!	இந்திரனே!
त्वायन्तः	க்வாயந்தஃ	உன்னைத் தம்மவனாகச் செய்ய விரும்புகின்றவர்களும்
सखायः	ஸவாயஃ	நண்பர்களும்
तदिदर्थाः वयं	ததிதர்த்தாஃ வயம்	நின்னைத் துதிப்பதே பயனாகக் கொண்டவர்களுமான யாங்கள்
त्वा	க்வா	நின்னைத் துதிக்கின்றோம்.
उ	உ	மற்றும்,
कण्वाः	கண்வாஃ	கண்ணுவ கோத்திரத்தினர்களான எமது புத்திரன் முதலியோர்களும்
उक्थेभिः	உக்ஹேபிஃ	தோத்திரமாகிய மந்திரங்களால்
जरन्ते	ஜரந்தே	(நின்னைத்) துதிக்கின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு மூன்றாவது மூன்றில் 1. மேதாதிதி ரிஷி.

இந்திரனே! உன்னைத் தம்மவனாக்க விரும்பின நண்பர்களான யாங்கள், துதிப்பதுவே பயனெனக் கொண்டவர்களாய் உன்னைத் துதிக்கின்றோம். மூலத்திய 'உகாரம்' அசைச்சொல். கண்ணுவ கோத்திரத்திற் றோன்றின எமது புத்திரர்களும், தோத்திர மென்னும் மந்திரங்களால் நின்னைத் துதிக்கின்றார்கள் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

१२३ १ २र ३ १ २ ३२ ३ १२
720. **नघेमन्यदापपन वज्रिन्नपसो नविष्टौ ।**
२ ३ १२
तवेदु स्तोमैश्चिकेत ॥ २ ॥

நவெஉந்யதாபபந வஜ்ரி ஹபஸொ நவிஷ்டள ।
தவெது ஸ்தொமைஶ்சிகெத ॥

அந்வயம்.

हे वज्रिन्!, अपसः, तव, नविष्टौ, अन्यत्, नघें आपपन, तव इत् उ, स्तोमैः, चिकेत ॥

பதவுரை.

हे वज्रिन्!	ஹெ வஜ்ரிந்ய!	வச்சிராயுத மேந்திய இந்திர!
अपसः	அபஸஃ	கருமங்கட்கு அதிஷ்டாதாவாகிய
तव	தவ	உன்னுடைய
नविष्टौ	நவிஷ்டள	மிகப் புதிய வேள்வியின்பாலுள்ள யாம்
अन्यत्	அந்யத்	அதை யொழிந்த வேறு தோத்திரத்தை
नघें आपपन	நவெம் ஆபபந	அடைகின்றோம் அல்லோம். மற்றோ,
तवेदु	தவெது	உன்னையே
स्तोमैः	ஸ்தொமைஃ	தோத்திரங்களாற் றுதிக்க
चिकेत	சிகெத	உணர்கின்றோம். (இடையறாது உன்னையே போற்றுகின்றோம் என்பதாம்.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

வச்சிராயுத மேந்திய இந்திரனே! கருமங்கட்குத் தலைவனாகிய உன்னுடைய (உனது சம்பந்தமாகிய) வேள்வியிலிருக்கின்ற யாம், அவ் விடயமாகிய தோத்திரத்தைத் தவிர்த்து ஏனைய தோத்திரங்களைச் செய்யோம். உன்னுடைய தோத்திரத்தை செய்வதற்கே யுணர்கின்றோம். இடைவிடாது உன்னையே போற்றுகின்றோம் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 9.

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
721. इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति ।
१ २ ३ २ ३१२
यन्ति प्रमादमतन्द्राः ॥ ३–३ ॥

இருக்கு 8-2-16-18.

இச்ஹந்தி தெவாஃ ஸுந்வந்தம் ந ஸ்வப்நாய ஸ்ப்ருஹயந்தி ।
யந்தி ப்ரமாதமதந்த்ராஃ ॥

அந்வயம்.

सुन्वन्तं, देवाः, इच्छन्ति, स्वप्नाय, न स्पृहयन्ति, प्रमादं, अतन्द्राः, यन्ति ॥

பதவுரை.

सुन्वन्तं	ஸுந்வந்தம்	சோமரசத்தைப் பிழிதல் முதயலி சமற்காரத்தைப் பண்ணுகின்ற வேள்வித் தலைவனை,
देवाः	தெவாஃ	தேவர்கள்
इच्छन्ति	இச்ஹந்தி	பாதுகாப்பாற்ற விரும்புகின்றார்கள்.
स्वप्नाय	ஸ்வப்நாய	(அவன்) தூங்குஞ் சமயத்தை
न स्पृहयन्ति	ந ஸ்ப்ருஹயந்தி	விரும்பிலர்கள், (எப்போதும் விழித்திருக்குமாறு வைத்திருப்பதால்)
प्रमादं	ப்ரமாதம்	பேரானந்தத்தைத் தருகின்ற சோமரசத்தை
अतन्द्राः	அதந்த்ராஃ	சோம்பலற்ற தேவர்கள்
यन्ति	யந்தி	விரைவி லடைகின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

சோமரசத்தைப் பிழிந்தெடுக்கின்ற வேள்வித் தலைவனை, இந்திரன் முதலிய தேவர்களனைவருங் காப்பாற்ற விரும்புகின்றார்கள். அவர்கள் அத்தலைவன் நித்திரையை யடைய விரும்பிலர்கள். (விழித்துக்கொண்டிருப்போனாகவே செய்கின்றார்கள் என்பது பொருள்.) இவ்வாறானமையின் சோம்பலற்றவர்களான தேவர்கள், பெருங் களிப்பைக் கொடுக்கும் அத்தலைவனுடைய சோமரசத்தை யடைகின்றார்கள் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 10.

१ २ ३ १ २ ३ २ २र ३ १ २
722. इन्द्राय मद्वने सुतं परिष्टोभन्तु नो गिरः ।
३ १ २ ३१२
अर्कमर्चन्तु कारवः ॥ २ ॥

இந்த்ராய மத்வநெ ஸுதம் பரிஷ்டோபந்து நொ கிரஃ ।
அர்க்கமர்ச்சந்து காரவஃ ॥

அந்வயம்.

मद्वने, इन्द्राय, सुतं, नः, गिरः, परिष्टोभन्तु, कारवः, अर्कं, (सोमं,) अर्चन्तु ॥

பதவுரை.

मद्वने	மத்வநெ	சோமரசத்தின் ஆனந்தத்தை விரும்புகின்ற
इन्द्राय	இந்த்ராய	இந்திரன் பொருட்டுப்,
सुतं	ஸுதம்	பிழியப்பெற்ற சோமரசத்தை,
नः	நஃ	எங்களுடைய வாக்குகள்
परिष्टोभन्तु	பரிஷ்டோபந்து	துதிப்பவைகளாகுக. பின்னர்,
कारवः	காரவஃ	தோத்திரஞ் செய்கின்றவர்கள்
अर्कं	அர்க்கம்	ஆராதித்தற்குரிய
(सोमं)	(ஸொமம்)	(சோமரசத்தை)
अर्चन्तु	அர்ச்சந்து	ஆராதிப்பார்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—நான்காவது மூன்றில் 1. சுருதகக்ஷ ரிஷி.

இந்திரன் பொருட்டுப் பிழிந்திருக்கின்றதும், களிக்குந் தன்மையுள்ளதுமாகிய சோமரசத்தை எங்களுடைய வாக்குகள் துதிக்கத்தக்கனவாகுக. பின்னர், துதிப்போர்களும் அனைவராலும் ஆராதித்தற்குரிய சோமரசத்தை ஆராதிப்பார்களாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 11.

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १२ ३२ ३ १२
723. यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त सꣳसदः ।
१२ ३ २ २
इन्द्रꣳ सुते हवामहे ॥ २ ॥

யஸ்மிந் விஶ்வா அதி ஶ்ரியோ ரணந்தி ஸப்த ஸꣳஸதः ।
இந்த்ரꣳ ஸுதே ஹவாமஹே ॥

அன்வயம்

यस्मिन्, विश्वाः, श्रियः, अधि, संसदः, सप्त, रणन्ति, इन्द्रं, सुते, हवामहे ॥

பதவுரை.

यस्मिन्	யஸ்மிந்	எவ்விந்திரனிடத்தில்
विश्वाः	விஶ்வாஃ	எல்லாப்
श्रियः	ஶ்ரியஃ	புகழ்களும்
अधि	அதி	மிகுதியாயுள்ளனவோ, மற்றும்,
संसदः	ஸꣳஸதஃ	ஓமம் பண்ணுவோர்களான
सप्त	ஸப்த	எழுவர்கள்
रणन्ति	ரணந்தி	அவி கொடுத்தற் பொருட்டுப் பற்பல மந்திரங்களை முழங்குகின்றார்களோ,
इन्द्रं	இந்த்ரꣳ	அவ் விந்திரனை,
सुते	ஸுதே	சோமரசத்தைப் பிழிந்தெடுத்த விடத்து (சமற்காரம் பண்ணியபோது)
हवामहे	ஹவாமஹே	(யாம்) அழைக்கின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

எவ்விந்திரனிடத்திற் கீர்த்திகளனைத்தும் மிக விளங்குகின்றனவோ, (பெருந் தேசுடையான் என்பது பொருள்) மற்றும், ஏழென்னு மெண் கொண்டவர்களான, வேள்வியில் ஓமம் பண்ணுகின்றவர்கள், (எவனுக்குச்) சோமரசங் கொடுத்தற் பொருட்டுக் களிப்புற்றிருக்கின்றார்களோ, அல்லது, தோத்திரங்களை முழங்குகின்றார்களோ, அத்தன்மைய அவ்விந்திரனைச், சோமரசம் பிழிந்தெடுத்தபோது யாங்கள் அழைக்கின்றோம் என்பதாம்.

மந்திரம் 12.

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
724. त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत ।
१२र ३ १ २
तमिद्वर्द्धन्तु नो गिरः ॥ ३–४ ॥

இருக்கு 8-92-19-21.

த்ரிகத்ருகேஷு சேதநம் தேவாஸோ யஜ்ஞமத்நத ।
தமிஅர்ஜ்ஜந்து நோ கிரஃ ॥

அந்வயம்.

देवासः, त्रिकद्रुकेषु, चेतनं, अत्नत, तं यज्ञं इत्, नः, गिरः, वर्द्धन्तु ॥

பதவுரை.

देवासः	தேவாஸஃ	தேவர்கள்,
त्रिकद्रुकेषु	த்ரிகத்ருகேஷு	சோதி, கோ, ஆயுள், என்னும் மூன்றனுள்
चेतनं	சேதநம்	சுவர்க்க முதலியவைகளை யுணர்வதற்குச் சாதனமானமை கொண்டு
अत्नत	அத்நத	தமது கருமங்களாலும், பாதுகாத்து வளர்த்துவந்த
तं यज्ञं इत्	தம் யஜ்ஞம் உத்	அவ் வேள்வியையே
नः	நஃ	எங்களுடைய
गिरः	கிரஃ	துதிகள்
वर्द्धन्तु	வர்ஜ்ஜந்து	விருத்தி செய்வனவாகுச.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

இந்திரன் முதலிய தேவர்கள், ஒளி, கோ, ஆயுள், என்னும் மூன்றின் கண், சுவர்க்க முதலியவைகளே யுணருவதற்குக் கருவியாகிய எவ்வேள்வியை வளர்த்து வந்தார்களோ, அவ்வேள்வியையே எங்களுடைய தோத்திரமாகியவாக்குகள் விருத்தி செய்வனவாகுக என்பதாம். (3)

முதலாவது கண்டம்.

முற்றும்.

இரண்டாவது கண்டம்

பிரபாடகம்—1. அத்தியாயம்—2. கண்டம்—2.

பதினேரு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

725. अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि ।

१ २ ३ २उ ३ १ २

एहीमस्य द्रवा पिब ॥ १ ॥

அயம் த இந்ர ஸொமொ நிபூதொ அதி பர்ஹிஷி ।

ஏஹீமஸ்ய த்ரவா பிப ॥

அந்வயம்.

हे इन्द्र !, ते, अयं सोमः, बर्हिषि अधि, निपूतः, ईम्, अस्य, एहि, द्रव, पिब ॥

பதவுரை.

हे इन्द्र !	ஹெ இந்ர !	இந்திரனே !
ते	தெ	நின்பொருட்டு
अयं सोमः	அயம் ஸொமஃ	இச் சோமரசம்

बर्हिषि अधि	ஃபர்ஹிஷி அதி	வேதிகையின்மீது விரித்துள்ள தருப்பை யாதனத்தில்
निपूतः	நிஷூதஃ	தசா பவித்திரத்தால் (ஆடை நூனியால்) பவித்திரம் பண்ணப்பட்டுள்ளது.
ईम्	ஈம்	இச்சமயம்
अस्य	அஸ்ய	இச் சோமத்தைக் குறித்து
एहि	ஏஹி	வருவாயாக. வந்து,
द्रव	த்ரவ	ஓமம் பண்ணுமிடத்தை விரைவி லடைவாயாக. பின்னர்,
पिब	பிப	அதை அருந்துவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில் 1. இரிமீடி ரிஷி.

இந்திரனே! நின்பொருட்டு, வேதிகையில் விரித்துள்ள தருப்பையின் மீது தசாபவித்திர மென்னும் ஆடைநூனியால் (வடித்தல்) பிழிதல் முதலிய சமற்காரங்களாற் பவித்திரம் பண்ணப்பட்டுள்ளது இச் சோமரசம் என்பது பொருள். இப்போது இச் சோமரசத்தை முன்னிட்டு நீ வருவாயாக. வந்து, ஓமம் பண்ணுமிடத்தை விரைவி லடைவாயாக; அடைந்து சோமரசத்தை யருந்துவாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१ २ ३ १ २ ३१ २२ ३
726. शाचिगो शाचिपूजनायꣳ रणाय ते सुतः ।
१ २ ३ १२
आखण्डल प्रहूयसे ॥ २ ॥

ஶாசிகோ ஶாசிவ-பூஜநாயꣳ ரணாய தெ ஸுதஃ ।
ஆகண்டல ப்ரஹூயஸெ ॥

அன்வயம்.

शाचिगः, शाचिपूजन!, ते रणाय, अयं, सुतः, आखण्डल!, प्रहूयसे ॥

பதவுரை.

शाचिगः	ஶாசிகஃ	ஆற்றலே, அல்லது, பிரகித்தியா கிய காந்தியை யுடையோனும்,
शाचिपूजन!	ஶாசிவ-பூஜந!	கீர்த்திவாய்ந்த ஆராதனையை யுடையோனுமாகிய இந்திர!

ते रणाय	தெ ரணாய	உனக்குக் களிப்பை யுண்டாக்கு தற் பொருட்டு
अयं	அயம்	இச் சோமரசம்
सुतः	ஸுதः	பிழியப்பட்டுச் சுத்தமாயிருக் கின்றது. (ஆதலின்),
आखण्डल !	ஆகண்டல !	சத்துருக்களின் மானத்தைக் கெடுக்கும் இந்திரனே ! நீ,
प्रहूयसे	ப்ரஹூயஸெ	மேம்பட்ட துதிகளால் அழைக் கப்படுகின்றாய். (வந்து, சோம ரசத்தை யருந்துவாயாக.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

ஆற்றல் மலிந்த ஒளியையுடையானும், அல்லது, பிரசித்தியாகிய ஒளி யையுள்ளானும், கீர்த்திவாய்ந்த ஆராதனையையுடையானுமாகிய இந்திரனே ! உனக்கு இன்பமுண்டாக்குதற் பொருட்டு, இச் சோமரசம், பிழிதல் முதலிய சமற்காரம் பண்ணப்பட்டிருக்கின்றது. இதனால், சத்துருக்களைக் கடிகின்ற இந்திரனே ! நீ, மேம்பட்ட தோத்திரங்களால் அழைக்கப்படுகின்றாய். (ஆதலின் வந்துசோமரசத்தை யருந்துவாயாக என்பதாம்.) (2)

மந்திரம் 3.

१ २ ३ १ २ ३ १ २

727. यस्ते शृङ्गवृषो णपात् प्रणपात् कुण्डपाय्यः ।

२र ३ १ २र

न्यस्मिन् दध्र आ मनः ॥ ३–५ ॥

இருக்கு—8-17-13-13.

யஸ்தெ ஶ்ருங்கவ்ருஷொ ணபாத் ப்ரணபாத் குண்டபாய்யஃ ।

ந்யஸ்மின் தத்⁴ர ஆ மனஃ ॥

அன்வயம்.

शृङ्गवृषः, नपात्, ते, प्रणपात्, कुण्डपाय्यः, यः, अस्मिन्, मनः, आ निदध्रे ॥

பதவுரை.

शृङ्गवृषः	ஶ்ரூ ஹ்ருஷஃ	சிருங்க விருஷ ரிஷியின், அல்லது, ஒளியைப் பரப்பும் இரவியின்
नपात्	நபாத்	புத்திரனாகி இந்திரனே !
ते	தெ	உன்னுடைய
प्रणपात्	ப்ரணபாத்	பாதுகாப்பு முழுதையுமுடையதும்
कुण्डपाय्यः	கூண்டபாய்யஃ	குடத்துடன் சோமரச மருந்துவதற்கிடமுமாகிய
यः	யஃ	யாதொரு வேள்வியுண்டோ,
अस्मिन्	அஸ்மிந்	அத்தகைய இவ் வேள்வியில்
मनः	மநஃ	இருடிகள், தமது அந்தக்கரணத்தை
आ निदध्रे	ஆ நிதத்ரெ	நிறுத்தி விட்டனர்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

ஈண்டு 'சிருங்க விருஷர்' என்னும் ஒரு இருடி யிருந்தனர். இந்திரனே அவருக்குப் புத்திரனாய்த் தோன்றினன் என்பதோர் கதையாம். மூலத்தில் 'நபாத்' என்றது புத்திரன் பெயர். ஆதலின் சிருங்க விருஷரின் புத்திரனே ! அல்லது, ஒளியைப் பரப்புகின்ற சூரியனைத் தனது இடத்தில் நிலை நாட்டுகின்ற இந்திரனே ! நன்கு பரிபாலிப்பதும், குடத்துடன் சோமரசங் குடித்தற்கு இடமும், வேள்வி விசேடமுமாகிய உனது யாகத்தின்கண், குண்ட பாயினர், என்னும் பெயர் பூண்ட இருடிகள் மனத்தை நிறுத்தினார்கள். அதாவது, நின்னையே தேவதையாகக் கொண்ட வேள்வியை நன்கு அனுட்டித்தார்கள் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
728. **आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभꣳ संगृभाय ।**
३ १ २र
महाहस्ती दक्षिणेन ॥ १ ॥

ஆ தூ ந இந்த்ர க்ஷுமந்தம் சித்ரம் க்ராபம் ஸம்க்ருபாய ।
மஹாஹஸ்தீ தக்ஷிணெந ॥

அன்வயம்.

हे इन्द्र !, महाहस्ती, नः, क्षुमन्तं, चित्रं, ग्राभं, दक्षिणेन, तू, आ संगृभाय ॥

பதவுரை.

हे इन्द्र !	ஹெ ஈந்ர !	இந்திரனே !
महाहस्ती	ஈஹாஹஸ்தீ	பெரிய கைகளையுடைய நீ
नः	நஃ	எங்கட்குக் கொடுத்தற்பொருட்டு
क्षुमन्तं	க்ஷுமந்தம்	துதிக்கத் தக்கதும்,
चित्रं	சித்ரம்	வியப்பானதும்,
ग्राभं	க்ராஹம்	கொள்ளற்பாலதுமாகிய தனத்தை
दक्षिणेन	தக்ஷிணேந	வலது கையால்
तू	தூ	துரிதமாய்
आ संगृभाय	ஆ ஸம்க்ருஹாய	இனிது எடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில்—1.

இந்திரனே ! பெரிய கைகளையுடைய நீ, போற்றத் தக்கதும், விசித்திரமாகியதும், ஏற்றுக்கொள்ளற்குரியதுமாகிய தனத்தை, எங்களுக்குறித்து வலது கையால் இனிது எடுப்பாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २

729. विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं तुविदेष्णं तुवीमघम् ।

३ १ २र

तुविमात्रमवोभिः ॥ २ ॥

வித்மா ஹி த்வா தூவிகூர்மிம் தூவிதேஷ்ணம் தூவீமகம் ।

தூவிமாத்ரமவோபிஃ ॥

அன்வயம்.

(हे इन्द्र !,) त्वा, तुविकूर्मिं, तुविदेष्णं, तुवीमघं, तुविमात्रं, अवोभिः, विद्म हि ॥

பதவுரை.

(हे इन्द्र !)	(ஹெ இந்த்ர !)	(இந்திரனே !)
त्वा	க்வா	உன்னை,
तुविकूर्मिं	தூவிகூர்மிம்	பெரும் பராக்கிரமமுடையானெனவும்,
तुविदेष्णं	தூவிதெஷ்ணம்	கொடுக்கத்தக்க பெருஞ் சம்பத்துக்களை யுடையானெனவும்,
तुवीमघं	தூவீமஹம்	மிகுந்த தனமுடையானெனவும்,
तुविमात्रं	தூவிமாத்ரம்	பெரிய உருவமுடையானெனவும்,
अवोभिः	அவொபிஃ	பாதுகாக்குங் கருவிகளை யுடையானெனவும்,
विद्म हि	வித்ம ஹி	(யாம்) அறிகின்றோம்.

சாயண பாடியம்

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

இந்திரனே! உன்னை, உண்மையா யுணர்கின்றோம். எவ்வாறெனின்? மிகுந்த கருமங்களையும், கொடுக்கத்தக்க பொருள்களையும், பெருந் தனங்களையும், மகத்தாகிய ஆகிருதியையும், பாதுகாப்பாற்றுஞ் சாமக்கிரியைகளையும் உடையானென்று உணர்கின்றோம் என்க. (2)

மந்திரம் 6.

१ २ ३ १ २र ३ १ २
730. न हि त्वा शूर देवा न मर्त्तासो दित्सन्तम् ।
३ २उ ३ १ २
भीमं न गां वारयन्ते ॥ ३–६ ॥

இருக்கு 8-81-13.

ந ஹி க்வா ஶூர தெவா ந மர்த்தாஸொ தித்ஸந்தம் ।
ஸீமம் ந மாம் வாரயந்தெ ॥

அந்வயம்.

हे शूर !, दित्सन्तं, त्वा, देवाः, न वारयन्ते, न मर्त्तासः, हि, भीमं गां, न वारयन्ते ॥

பதவுரை.

हे शूर!	ஹெ ஶூர!	சூரனே!
दित्सन्तं	தித்ஸந்தம்	கொடுக்க விரும்புகின்ற
त्वा	த்வா	உன்னைத்
देवाः	தெவாஃ	தேவர்களுந்
न वारयन्ते	ந வாரயந்தெ	தடுக்கார்கள்;
न मर्त्तासः	ந மர்த்தாஸஃ	மனிதர்களுந் தடுக்கார்கள்;
हि	ஹி	இஃதுண்மையாம்.
भीमं गां	பீமம் மாம்	புல்லருந்துமிடத்துப் பயமுறுத்தும் இடபத்தைத்
न वारयन्ते	ந வாரயந்தெ	தடுக்கார்களன்றோ? அதுபோலென்க.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

சூரனே! கொடுக்க விரும்பிய நின்னை, உண்மையாய்த் தேவர்களுந் தடுக்கார்கள். அவ்வாறே, மனிதர்களுந் தடுக்கார்கள். இஃது உண்மையாம். புல்லருந்துமிடத்து வலி மிகுந்த இடபத்தை எவர்களுந் தடுக்காவாறு நின்னைத் தடுக்கார்கள் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 7.

३ १ २ ३२ ३१ २ ३१२

731. अभि त्वा वृषभा सुते सुतꣳ सृजामि पीतये ।

३ १ २ ३ १२

तृम्पा व्यश्नुही मदम् ॥ १ ॥

அஹி த்வா வ்ருஷபா ஸுதெ ஸுதம் ஸ்ருஜாமி பீதயெ ।

த்ருப்பா வ்யஶ்நுஹீ மதம் ॥

அன்வயம்.

हे वृषभ!, त्वा, सुते, सुतं पीतये, अभिसृजामि, तृम्प, मदं, व्यश्नुहि ॥

பதவுரை.

हे वृषभ!	ஹெ வ்ருஷபா!	மனவேட்கையை நிறையச் செய்யும் இந்திரனே!
त्वा	த்வா	உன்னை,
सुते	ஸுதெ	சோமரசம் பிழிந்தெடுத்தபோது

सुतं पीतये	ஸுதம் பீதயெ	பிழிந்ததை அருந்துதற் பொருட்டு
अभिसृजामि	அபிஸ்ருஜாமி	யான் அழைக்கின்றேன்.
तृम्प	த்ரும்ப	(அதை யருந்தி) திருப்தி யடைவாயாக.
मदं	மதம்	களிப்பைக் கொடுக்குஞ் சோமரசத்தை
व्यश्नुहि	வ்யஶ்நுஹி	நிறைத்துக்கொள்வா (அருந்துவா) யாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—மூன்றாவது மூன்றில்—1.

விரும்பியதைப் பூரணமாக்குகின்ற இந்திரனே! சோமரசத்தைப் பிழிந்தெடுத்தபோது பிழிந்த சோமரசத்தை அருந்துமாறு உன்னை, அழைக்கின்றேன். (அதனால்) திருப்தியடைவாயாக. களிப்பைக் கொடுக்குஞ் சோமத்தை நிறைத்துக் கொள்வாயாக. அதாவது நிறைய அருந்துவாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
732. मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आदभन् ।
१ २ ३ १ २
माकीं *ब्रह्मद्विषं वनः ॥ २ ॥

மா க்வா மூரா அவிஷ்யவோ மோபஹஸ்வாந ஆதபந் ।
மாகீம் ப்ரஹ்மதிஷம் வநஃ ॥

அந்வயம்.

हे इन्द्र!, त्वा, मूराः, अविष्यवः, मा आदभन्, उपहस्वानः मा, ब्रह्मद्विषं, माकीं वनः ॥

பதவுரை.

हे इन्द्र!	ஹெ இந்த்ர!	இந்திரனே!
त्वा	க்வா	உன்னை
मूराः	மூராஃ	மூடர்கள்,
अविष्यवः	அவிஷ்யவஃ	தம்மைப் பாதுகாக்க வேண்டுமென விரும்பினவர்களாய்த்

* ब्रह्मद्विषो, என்பது இருக்கு.

मादभन्	ஸாதஹந	துன்புறுத்தாதார்களாகுக.
उपहवानः मा	உவஹவ்ஸாநஃ ஸா	நகையாதார்களுமாகுக.
ब्रह्मद्विषं	ப்ரஹ்மத்விஷம்	பிரமத்தைத் துவேஷிப்போனைச்
माकीं वनः	ஸாகீம் வநஃ	சேவை செய்யாதோர்களுமாகுக.

சாணய பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

இந்திரனே! உன்னை, மூட மனிதர்கள் தம்மைப் பாதுகாக்கவேண்டு மென்னும் வேட்கையால் துன்புறுத்தாதோர்களாகுக. நகைப்பை மேற் கொண்டவர்களும் ஆகாதோர்களாகுக. பிரமத்தைத் துவேஷிப்போனை வழிபடாதோர்களுமாகுக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 9.

१२ ३ १ २ ३१ ३ १२
733. **इह त्वा गो * परीणसं महे मदन्तु राधसे ।**
१ २ ३ १ २र
सरो गौरो यथा पिब ॥ ३–७ ॥

இருக்கு 8-45-22-24.

ஈஹ க்வா மொவரீணஸம் மஹே மதந்து ராயஸே ।
ஸரோ கௌரோ யதா பிப ॥

அந்வயம்.

(हे इन्द्र !,) त्वा, इह, गोपरीणसं, महे, राधसे, मदन्तु, गौरः, यथा, सरः, पिब ॥

பதவுரை.

(हे इन्द्र !)	(ஹே இந்த்ர !)	(இந்திரனே !)
त्वा	க்வா	உன்னை,
इह	ஈஹ	இவ்வேள்வியில்
गोपरीणसं	மொவரீணஸம்	ஆவின் பால் முதலியவைகளுடன் கலந்த சோமத்தை,
महे	மஹே	மிகுந்த
राधसे	ராயஸே	தனத்தின் பொருட்டு,
मदन्तु	மதந்து	மனிதர் கொடுத்துக், களிப்புறுத்துவார்களாக.
गौरः	கௌரஃ	மான்
यथा सरः	யதா ஸரஃ	ஏரி நீரைக் குடிப்பதுபோன்று
पिब	பிப	(நீயும்) அருந்துவாயாக.

* परीणसा, எனவும் பாடம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

இந்திரனே ! உன்னை, இவ்வேள்வியில் ஆவின் பாலுடன் கலந்த சோம ரசம், மிகுந்த தனத்தின் பொருட்டு மனிதர்களாற் கொடுக்கப் பெற்றுக் களிப்புண்டாக்குவதாகுக. மானது, தடாக நீரை யருந்துமாறு நீயும், அச்சோமரசத்தை அருந்துவாயாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 10.

३१ २ ३२२ ३ २ ३ १२ ३१२
734. इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम् ।
१२ ३१२
अनाभयित्ररिमा ते ॥ १ ॥

ஈதம் வஸொ ஸுதமந்தஃ பிபா ஸுபூர்ணமுதரம் ।
அநாபயித்ரரிமா தெ ॥

அந்வயம்.

हे वसो !, इदं सुतं, अन्धः, उदरं सुपूर्णं, पिब, अनाभयिन् !, ते, ररिम ॥

பதவுரை.

हे वसो !	ஹெ வஸொ !	இடத்தைக் கொடுக்கின்ற இந்திர ! நீ
इदं सुतं	ஈதம் ஸுதம்	சமற்காரம் பண்ணிய
अन्धः	அந்தஃ	இச் சோமரசத்தை,
उदरं सुपूर्णं	உதரம் ஸுபூர்ணம்	வயிறு நிறையுமாறு
पिब	பிப	அருந்துவாயாக.
अनाभयिन् !	அநாபயிந் !	ஒருவருக்கும் பயப்படாத இந்திர !
ते	தெ	நினக்குச்
ररिम	ரரிம	சோமரசத்தை அர்ப்பிக்கின்றேன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—நான்காவது மூன்றில் 1. மேதாதிதி, அல்லது, பிரிய மேதர் ரிஷி.

வியாபகனாகிய இந்திரனே ! நீ, முன்னிலிருக்கப்பட்டதும், பிழியப் பெற்றதுமாகிய சோமரசமென்னும் அன்னத்தை அருந்துவாயாக. நினது

வயிறு நிறையும் வண்ணமருந்துவாயாக என்பது பொருள். ஒருவராலேனும் பயமடையாத இந்திர! கூறிப்போந்த இலட்சணமுள்ள சோமரசத்தை நினக்கு அர்ப்பிக்கின்றேன் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 11.

१ २ ३२ ३२उ ३२ ३ २३ १२
735. नृभिर्धौतः सुतो अश्नैरव्या वारैः परिपूतः ।
२ ३ २ ३ २ ३ १२
अश्वो न निक्तो नदीषु ॥ २ ॥

நூ௰ிர்ய௴ளதஃ ஸுதோ அஶ்நைரவ்யா வாரைஃ வரிவூதஃ ।
அஶ்வோ ந நிக்தோ நதீஷு ॥

அந்வயம்.

नृभिः, धौतः, अश्नैः, सुतः, अव्या वारैः, परिपूतः, नदीषु, अश्वः न, निक्तः ॥

பதவுரை.

नृभिः	நூ௰ிஃ	வேட்போர்களால்
धौतः	ய௴ளதஃ	தூசு முதலியவைகளை யொதுக்கிச் சுத்தம் பண்ணப்பெற்றதும்
अश्नैः	அஶ்நைஃ	கற்களால்
सुतः	ஸுதஃ	இடித்துப் பிழியப்பட்டதும்,
अव्या वारैः	அவ்யா வாரைஃ	ஆட்டின் மயிர்களால்
परिपूतः	வரிவூதஃ	வடித்ததுமாகிய சோமரசம்
नदीषु अश्वः न	நதீஷு அஶ்வஃ ந	ஆற்றின் நீரிற் கழுவிய குதிரை போன்று
निक्तः	நிக்தஃ	பவித்திரம் பண்ணப்பட்டிருக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

வேள்வியை நியமிப்போர்களால், தூசு முதலியவைகளைக் களைந்து பரிசோதித்ததும், அல்லது, முதலில் நீராற் கழுவிப், பின்னர், கற்பலகைகளைக் கொண்டு வேட்போர்களாற் பிழியப்பட்டுப், பின்னர், ஆட்டின் மயிர்களாற் செய்த கம்பளமாகிய வடிக்கட்டு கருவியால் வடித்து, சோமரசம் பவித்திரஞ் செய்யப்பட்டிருக்கின்றது. அதுபற்றியே, "வெள்ளைக் கம்பளியோடு

சேர்ந்த தசா பவித்திரமென்னும் ஆடை நனியாற் சோமம் பரிசுத்தஞ் செய்யப்படுகின்றது" என்றார் பகவான் ஆபத்தம்பரும். ஆற்று நீரிற் கழுவிய குதிரை பரிசுத்தமாகியது போன்று, வசதீவரி என்னும் ஆற்று நீரால் நிரு மலமாகிய சோமரசம் இனிது (புதிதமாய்) விளங்குகின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 12.

२ ३ २३ १ २ ३ १२ ३१ २
736. तं ते यवं यथा गोभिः स्वादुमकर्म श्रीणन्तः ।
१ २ ३ १ २ ३ १२
इन्द्र त्वास्मिन्सधमादे ॥ ३–८ ॥

இருக்கு 8-2-1-3.

தம் தெ யவம் யதா மொஹிः ஷ்வாதூமகர்ம ஸ்ரீணந்தः ।
இந்த்ர த்வாஸ்மின்ஸதமாதெ ॥

அன்வயம்.

हे इन्द्र !, तं, ते, यवं यथा, गोभिः, श्रीणन्तः, स्वादुं, अकर्म, हे इन्द्र !, त्वा, अस्मिन् सधमादे ॥

பதவுரை.

हे इन्द्र !	ஹெ இந்த்ர !	இந்திரனே !
तं	தம்	பரிசுத்தப்படுத்திய அச்சோம ரசத்தை
यवं यथा	யவம் யதா	கோதுமை மாவின் உருண்டையைப்போன்று
ते	தெ	உன்பொருட்டு
गोभिः	மொஹிः	ஆவின்பால் முதலியவைகளுடன்
श्रीणन्तः	ஸ்ரீணந்தः	கலந்து
स्वादुं	ஷ்வாதூம்	சுவைக்கத்தக்கதாய்ச்
अकर्म	அகர்ம	செய்கின்றோம். (ஆதலின்),
हे इन्द्र !	ஹெ இந்த்ர !	இந்திரனே !
त्वा	த்வா	(அதை யருந்துமாறு) உன்னை,
अस्मिन् सधमादे	அஸ்மிந் ஸதமாதெ	இவ் வேள்வியின்கண் அழைக்கின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

இந்திர ! நின் பொருட்டு முற்கூறிய சோமரசத்தை ஓமத்திற்குரிய புரோடாசத்தைப்போன்று, ஆவின் பரிணமமான பால் முதலியதுடன் கலந்து வைத்திருக்கின்றோம். அது இனிது சுவைக்கத் தக்கதாய் இருக்கின்றது ; ஆதலின், இந்திர ! அத்தன்மைய சோமரசத்தை யருந்துதற் பொருட்டு இவ் வேள்வியின்கண் உன்னை யழைக்கின்றோம். ஈண்டு அழைக்கின்றோம் என்பது எஞ்சி நின்றது. (3)

இரண்டாவது கண்டம்.

முற்றும்.

மூன்றுவது கண்டம்

பிரபாடகம்—1. அத்தியாயம்—2. கண்டம்—3.

பன்னிரண்டு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३१ २२ ३१ २
737. इदꣳ ह्यन्वोजसा सुतꣳ राधानां पते ।
२३ २ १२
पिबा त्वा३स्य गिर्वणः ॥ १ ॥

ஈதம் ஹ்யந்வோஜஸா ஸுதம் ராதா நாம் பதே ।
பிபா த்வாஸ்ய கிர்வணஃ ॥

அன்வயம்.

राधानां पते, गिर्वणः, (हे इन्द्र !,) ओजसा, इदं अनु, सुतं, अस्य, तु, पिब ॥

பதவுரை.

राधानां पते !	ராதா நாம் பதே !	தனங்களுக்கிறைவ !
गिर्वणः !	கிர்வணஃ !	தோத்திரத்தாற் போற்றத்தக்கோய் !
(हे इन्द्र !)	(ஹே இந்ர !)	(இந்திரனே !)

ओजसा	ஓஜஸா	வலியுடைய நீ,
इदं अनु	ஈதூ₃ம் அநு²	இவ்வாறு
सुतं	ஸு²தம்	பரிசுத்தஞ் செய்த
अस्य	அஸ்ய	இச் சோமரசத்தை
तु	து²	விரைவாய்
पिब	பிப	அருந்துவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில் மந்திரம் 1. விசுவாமித்திரர் ரிஷி.

தனங்களுக்குத் தலைவனும், துதிகளாற் போற்றப்படுபவனுமாகிய இந்திரனே! ஆற்றலுடைய நீ, கூறிய முறையாகப் பிழிந்தெடுக்கப்பெற்ற இச் சோமரசத்தை விரைவில் அருந்துவாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

२ ३ १२ ३ १ २२ ३१ २२ ३क२२

738. यस्ते अनु स्वधामसत्सुते नियच्छ तन्वम् ।
१ २
स त्वा ममत्तु सोम्य ॥ २ ॥

யஸ்தே அநு² ஸ்வதா₄மஸத்ஸுதே நியச்ச² தன்வ₂ம் ।
ஸ த்வா மமத்து ஸோம்ய ॥

அந்வயம்.

(हे इन्द्र !,) ते, यः, स्वधां अनु, असत्, सुते, तन्वं, नियच्छ, हे सोम्य !, सः, त्वा, ममत्तु ॥

பதவுரை.

(हे इन्द्र !)	(ஹே இந்த்³ர !)	இந்திரனே!
ते	தே	நின் பொருட்டு
यः	யஃ	யாதொரு சோமம்
स्वधां अनु	ஸ்வதா₄ம் அநு²	அன்னத்தைப்பற்றி, கல்லில் பரிசுத்தப்பட்டதாய்
असत्	அஸத்	ஆகின்றதோ,
सुते	ஸு²தே	அச் சோமரசம் பிழியப்பெற்ற போது
तन्वं	தன்வ₂ம்	நினது உடம்பை
नियच्छ	நியச்ச²	ஏவுவாயாக.

हे सोम्य !	ஹெ ஸொஉம்ய !	சோமத்திற்குரியோய் !
सः	ஸஃ	அச் சோமரசம்
त्वा	த்வா	உன்னை (நினக்குக்)
ममत्तु	மமத்து	களிப்புண்டாக்குக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

இந்திரனே ! நின் பொருட்டு யாதொரு சோமரசம் அன்னத்தைப் பின்பற்றி, கற்களாற் பிழிந்தெடுத்தானதோ, பிழிந்துள்ள அச் சோமரசத்தின் பொருட்டு உன்னுடைய தேகத்தைச் செலுத்துவாயாக. (அதாவது அதையருந்த முயல்வாயாக) சோமத்திற்குரியோய் ! அச் சோமரசம் உன்னை (உனக்கு)க் களிப்புண்டாக்குக. (2)

மந்திரம் 3.

१ २ ३ २उ ३ १२ ३ १२

739, प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः प्रेन्द्र ब्रह्मणा शिरः ।

२ ३१ २ ३ १ २

प्र बाहू शूर राधसा ॥ ३–९ ॥

இருக்கு 3-51-10-12

ப்ர தெ அஷ்நோது குக்ஷ்யோஃ ப்ரேந்த்ர ப்ரஹ்மணா ஶிரஃ ।

ப்ர பாஹூ ஶூர ராதஸா ॥

அந்வயம்.

हे इन्द्र !, सः, ते, कुक्ष्योः, प्राश्नोतु, ब्रह्मणा, शिरः, शूर !, राधसा, बाहू ॥

பதவுரை.

हे इन्द्र !	ஹெ இந்த்ர !	இந்திரனே !
सः	ஸஃ	அச் சோமரசம்,
ते	தெ	உன்னுடைய
कुक्ष्योः	குக்ஷ்யோஃ	வயிற்றின் இரு பக்கத்திலும்
प्राश्नोतु	ப்ராஷ்நோது	நிறைந்து பரவுக. அவ்வாறே,
ब्रह्मणा	ப்ரஹ்மணா	துதிக்கப்பட்ட அச் சோமம்
शिरः	ஶிரஃ	தலை முதலான உனது உடம்பை யடைக.
शूर !	ஶூர !	சூரனே ! மற்றும்,
राधसा	ராதஸா	தனத்தை யளிப்பதற்கு நிமித்தமான
बाहू	பாஹூ	உனது தோள்களையும் அடைகுக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. மந்திரம்—3.

(இந்திர!) அச் சோமரசம், உனது வயிற்றின் இரு பக்கங்களிலும் நன்கு நிரம்புக. அங்ஙனமே, துதித்தற்குரிய அச் சோமரசம், தலையால் (உபலக் கணத்தால்) உணர்த்தப்பட்ட உனது உடம்பை நன்கடைக. வீரனே! தனத்திற்கு நிமித்தமான உன்னுடைய தோள்களையும் இனிதடைக. (3)

மந்திரம் 4.

२उ ३ १ २३१ २ ३ १ २र
740. आ त्वेता निषीदतेन्द्रमभिप्रगायत ।
१ २३ १२
सखाय स्तोमवाहसः ॥ १ ॥

ஆ த்வேதா நிஷீதேந்த்ரமபிப்ரகாயத ।
ஸகாய ஸ்தோமவாஹஸ: ॥

அந்வயம்.

स्तोमवाहसः, सखायः, तु, आ इत, निषीदत, इन्द्रं, अभिप्रगायत ॥

பதவுரை.

स्तोमवाहसः	ஸ்தோமவாஹஸ:	மூன்று, பதினைந்து, முதலான தோத்திர மஞ்சரிகளைச் சேர்க்கின்றவர்களான
सखायः !	ஸகாய: !	வேட்போர்களே ! வீர்,
तु	து	விரைவாக
आ इत	ஆ இத	இவ்வேள்விக் கருமத்திற்கு வருவீர்களாக.
निषीदत	நிஷீதத	வந்து அமர்வீர்களாக.
इन्द्रं	இந்த்ரம்	அமர்ந்து, இந்திரனைக் குறித்துச்
अभिप्रगायत	அபிப்ரகாயத	சாம மறையைப் பாடுவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு இரண்டாவது மூன்றில்—1. மதுச்சந்தர் ரிஷி.

ஈண்டு 'து' என்றது, விரைவுப் பொருளைத் தந்து நின்றது. ஆ, இத, என்னும் இரண்டசைசளாலும் 'வருவீர்களாக,' என்பதை யிரட்டித்துக்

கொள்க. வேட்போர்களே! நீவிர் விரைவாக இக்கிரியைக்கு வருவீர்களாக. வருவீர்களாக. வந்து அமர்வீர்களாக. அமர்ந்து, இந்திரனை எல்லாவகையானும் துதிப்பீர்களாக. நீவிர் எத்தன்மையரான வேட்போர்களெனின்? மூன்று, பதினைந்து முதலிய தோத்திரமஞ்சரிகளை இக்கருமத்திற் சேர்ப்பிக்கத் தக்கவர்கள் என்க. (அதாவது ஓதுகின்றவர்கள் என்பதாம்.) (1)

மந்திரம் 5.

३ १२ ३ १ २२३ १ २
741. पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम् ।
२ ३ २ ३ १ २ ३ २
इन्द्रꣳ सोमे सचा सुते ॥ २ ॥

வுரூதமம் வுரூணாமீஶாநம் வார்யாணாம் ।
இந்த்ரꣳ ஸோமே ஸசா ஸுதே ॥

அன்வயம்.

(हे सखायः !,) सचा, सुते सोमे, पुरूतमं, पुरूणां, वार्याणां, ईशानं, इन्द्रं (अभिप्रगायत) ॥

பதவுரை.

(हे सखायः !)	(ஹே ஸகாயः !)	(வேட்போர்களே!)
सचा	ஸசா	நீவிர், ஒன்றுகூடி
सुते सोमे	ஸுதே ஸோமே	சோமரசத்தைப் பிழிந்தபோது,
पुरूतमं	புரூதமம்	அநேகம் பகைவர்களை யடக்குபவனும்,
पुरूणां	புரூணாம்	மிகுந்த
वार्याणां	வார்யாணாம்	தனங்களுக்கு
ईशानं	ஈஶாநம்	இறைவனுமாகிய
इन्द्रं (अभिप्रगायत)	இந்த்ரம் (அபிப்ரகாயத)	(இந்திரனைத் துதிப்பீர்களாக)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

வேட்போர்களே துதிப்பீர்களாக, என்னும் இரண்டு பதங்களும் இதில் வருவிக்கப்பட்டன. வேட்போர்களே! நீவிரனைவரும் ஒன்றுகூடிச் சோமரசம் பிழியுங்கால் இந்திரனைத் துதிப்பீர்களாக. எத்தன்மைய இந்திரனெனின்? அநேகம் பகைஞர்களை யடக்குபவனும், மிகுந்த தனங்களுக்கு இறைவனுமானவனைத், துதிப்பீர்களாக என முடித்துக்கொள்க. (2)

மந்திரம் 6.

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३१ २र
742. स घा नो योग आ भुवत्स राये स पुरन्ध्या ।
२३ १ २ ३ १ २र
गमद्वाजेभिरा स नः ॥ ३–१० ॥

இருக்கு 1-5-1-3.

ஸ ஸா நொ யொ௨ ஆ ஹுவத்ஸ ராயெ ஸ பு௨ரந்ய்யா ।
௨௧ஆஜெஹிரா ஸ நஃ ॥

அந்வயம்.

स घ, नः, योगे, आ भुवत्, सः, राये, सः, पुरन्ध्या, सः, वाजेभिः, नः आगमत् ॥

பதவுரை.

सः घ	ஸ : ஸ	அவ் விந்திர னொருவனே,
नः	நஃ	எங்களுடைய
योगे	யொகெ	புருடார்த்த விஷயத்தில்
आ भुवत्	ஆ ஹுவத்	ஒருமுகப்படுவோனாவன்.
सः	ஸஃ	அவனே
राये	ராயெ	எங்களுடைய தனப் பிராப்தியிலும் ஒருமுகப்படுவோனாவன்.
सः	ஸஃ	அவன் :
पुरन्ध्या	பு௨ரந்ய்யா	எங்களுக்கு மாதர் கிடைக்கும் விஷயத்திலும், அல்லது, புத்தி கிடைக்கும் விஷயத்திலும் ஒருமுகப்படுவோனாவன்.
सः	ஸஃ	அவன் :
वाजेभिः	வாஜெஹிஃ	கொடுத்தற்குரிய அன்னத்துடன்
नः आगमत्	நஃ ஆ௨௧ஆத்	எங்களுக்குமுன், தோன்றுவானாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

மந்திரத்திலுள்ள (ஸ) தேற்றம் 'அவன்' என்னுஞ் சொற்களனைத்தினும் அந்வயப்படுகின்றது. ஆதலின், முன் மந்திரத்திற் கூறிய குணமுடைய அவ் விந்திரனொருவனே, முன்னடையாத புருடார்த்தத்தை யடை

யும் விஷயத்தில் எங்களுக்கு ஒருமுகப்பட்டவனுவன். அதாவது, புருடார்த்தத்தை யடையுமாற்றை நிறைவேற்றுவோனுவன் என்பதாம். அவனொரு வனே, தனத்தின் பொருட்டு நன்மனத்தனுமாவன். எங்களுக்குப் பெண்பால் கிடைக்கும் விஷயத்திலும் ஒருமுகப்படுவோனுவன். அல்லது, பலவிதமான புத்தியுண்டாகும் விஷயத்திலும் ஒருமுகப்படுவோனுவான். 'புரந்தி' என்பது 'அநேக புத்தி' என்றார் யாஸ்க முனிவரும் (நிருக்தம்). மற்றும், அவ்விந்திரன் கொடுக்கத்தக்க அன்னத்துடன் எங்களைக் குறித்துத் தோன்றுவானுக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 7.

१ २ ३१ २३ १२
743. योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे ।
१२ ३ १ २३१२
सखाय इन्द्रमूतये ॥ १ ॥

யொகெ யொகெ தவஸ்தரம் வாஜெ வாஜெ ஹவாமஹெ ।
ஸகாய இந்த்ரமூதயெ ॥

அன்வயம்.

सखायः, योगे योगे, वाजे वाजे, ऊतये, तवस्तरं, इन्द्रं, हवामहे ॥

பதவுரை.

सखायः	ஸகாயஃ	நண்பர்களைப்போன்று அன்புடைய யாங்கள்
योगे योगे	யொகெ யொகெ	ஒவ்வொரு கருமத்தொடக்கத்திலும்,
वाजे वाजे	வாஜெ வாஜெ	கருமத்தைத் தடை செய்பவர்களுடன் செய்யும் ஒவ்வொரு போரிலும்,
ऊतये	ஊதயெ	பாதுகாப்பாற்றுதற் பொருட்டுப்
तवस्तरं	தவஸ்தரம்	பேராற்றலுடைய
इन्द्रं	இந்த்ரம்	இந்திரனை
हवामहे	ஹவாமஹெ	அழைக்கின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—மூன்றுவது மூன்றில்—1.

ஒவ்வொரு கருமங்களைத் தொடங்குங் காலத்திலும் அக்கருமத்திற்குப் பாதகமாய்வரும் ஒவ்வொரு போரிலும், எம்மைப் பாதுகாப்பாற்றுதற் பொருட்டு நண்பர்கள்போல் அன்புமிக்குடைய யாங்கள், வியக்கத்தக்க ஆற்றலுடைய இந்திரனை அழைக்கின்றோம். (1)

மந்திரம் 8.

१२ ३१ २२ ३१ २३ १ २२
744. अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम् ॥
२ ३ १२ ३ २ ३२
यं ते पूर्व पिता हुवे ॥ २ ॥

கநு ப்ரத்நஸ்யௌகஸோ ஹுவே துவிப்ரதிம் நரம் ।
யம் தெ பூர்வ பிதா ஹுவே ॥

அந்வயம்.

यं ते, पिता, पूर्वं, हुवे, प्रत्नस्य, ओकसः, तुविप्रतिं, नरं, अनु हुवे ॥

பதவுரை.

यं ते	யம் தெ	எவ் விந்திரனை
पिता	பிதா	எனது பிதாவானவர்
पूर्वं	பூர்வம்	முன்னர், தமது கருமானுட்டான காலத்தில்
हुवे	ஹுவே	அழைத்தாரோ,
प्रत्नस्य	ப்ரத்நஸ்ய	அனுதியாகிய
ओकसः	ஒகஸஃ	சுவர்க்கத்தினின்று
तुविप्रतिं	துவிப்ரதிம்	வேள்வித் தலைவர்களை அருகில் கொண்டுவருகின்ற
नरं	நரம்	அவ் விந்திரனைக்,
अनु हुवे	கநு ஹுவே	(யானும்) கருமத்திற்கு முறையாய் அழைக்கின்றேன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

அனுதியாகிய சுவர்க்கத்திலிருந்து, அநேகம் வேள்வித் தலைவர்களை அருகாய்க் கொண்டுவருகின்ற இந்திரனை, கருமத்தில் (கருமத்திற்கு) முறையாய் அழைக்கின்றேன். எவ் விந்திரனை, எனது பிதா முன்னர், தமது கருமானுட்டான காலத்தில் அழைத்தாரோ, அவ் விந்திரனை அழைக்கின்றேன் என மேற்கூட்டுக. (2)

மந்திரம் 9.

१ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
745. आघा गमद्यदिश्रवत्सहस्रिणीभिरूतिभिः ।
१२ ३ १२ ३ १२
वाजेभिरुप नो हवम् ॥ ३–११ ॥

இருக்கு 1-30-7-9-8.

சூஹா ஹஹ்யதிஶ்ரவத்ஸஹஸ்ரிணீபிரூதிபிஃ ।
வாஜெபிரூப நொ ஹவம் ॥

அந்வயம்.

नः, हवं, यदि श्रवत्, सहस्रिणीभिः, ऊतिभिः वाजेभिः, उप, आघ, आगमत् ॥

பதவுரை.

नः	நஃ	இந்திரன்,
हवं	ஹவம்	நாங்கள் அழைக்கின்றதைக்
यदि श्रवत्	யதி ஶ்ரவத்	கேட்பானேல்,
सहस्रिणीभिः	ஸஹஸ்ரிணீபிஃ	ஆயிரக்கணக்கான
ऊतिभिः	ஊதிபிஃ	பாதுகாப்பாற்றத்தக்க சாதனங்களோடும்
वाजेभिः	வாஜெபிஃ	அன்னங்களோடும்
उप	உப	எமக்கருகில்
आघ	சூஹ	ஒருதலையாய்த்
आगमत्	சூஹஹத்	தானாகவே வருவான்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

இவ் விந்திரன், நாம் அழைப்பதைக் கேட்பானேல், அப்போது, எம்மைப் காப்பாற்றத் தக்க ஆயிரக்கணக்கான சாதனங்களுடனும், அன்னங்களுடனும் எனக்குச் சமீபத்தில் ஒருதலையாகத் தானே வருவான் என்பதாம்.

மந்திரம் 10.

१२ ३२ ३ १२ ३ १ २ २ ३उ २र
746. इन्द्र सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीष उक्थ्यम् ।
३ २ ३२ ३ १२ ३ २
विदे वृधस्य दक्षस्य महाꣳ हि षः ॥ १ ॥

இந்த்ர ஸுதெஷு ஸொமெஷு க்ரதும் புநீஷ உக்ம்யம் ।
விதெ வ்ருதஸ்ய தக்ஷஸ்ய மஹாம் ஹி ஷஃ ॥

அன்வயம்.

हे इन्द्र !, सोमेषु सुतेषु, वृधस्य, दक्षस्य, विदे, क्रतुं, उक्थ्यं, पुनीषे, सः, महान् हि ॥

பதவுரை.

हे इन्द्र !	ஹெ ஊந்ர !	இந்திரனே ! நீ
सोमेषु सुतेषु	ஸொமெஷு ஸுதெஷு	சோமரசத்தைப் பிழிந்தபோது, (அதை அருந்தி)
वृधस्य दक्षस्य विदे	வ்ருத்⁴யஸ்ய தக்ஷஸ்ய விதே³	விருத்தியாகும் ஆற்றலை யடைதற் பொருட்டுக்
क्रतुं	க்ரதும்	கருமஞ் செய்வோனையும்,
उक्थ्यं	உக்த்²யம்	துதிப்போனையும்,
पुनीषे	புநீஷே	புனிதமாக்குகின்றாய்.
सः	ஸஃ	அத்தன்மையனை நீ
महान् हि	மஹாந் ஹி	போற்றத்தக்கவனே யாகின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—நான்காவது மூன்றில்—1. நாதர் ரிஷி.

இந்திரனே ! நீ, சோமரசம் பிழிந்த விடத்து, அதை யருந்தி, வேள்வித் தலைவனையும், துதிப்போனையும் பரிசுத்தர்களாகச் செய்கின்றாய். அல்லது, சோமரசம் பிழிந்தவிடத்து, 'உக்தியம்' என்னும் வேள்வியை அச் சோமத்தாற் புனிதமாக்குகின்றாய். அதாவது, வேள்வித் தலைவர்களாற் புனிதமாக்குவிக்கின்றாய் என்பதாம். எதன் பொருட்டெனின் ? விருத்தி யாகும் ஆற்றலை யடைதற் பொருட்டென்க. அத்தன்மைய நீ, பெரியோனா யிருக்கின்றாய் ; ஆகலின், இவ்வாறு நீ செய்தல் கூடும் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 11.

१ २३१ २ ३ २ ३ १ २ ३२
747. स प्रथमे व्योमनि देवानाꣳ सदने वृधः ।
३ २ ३ १ २३ १ २ ३ २
सुपारः सुश्रवस्तमः समप्सुजित् ॥ २ ॥

ஸ ப்ரத²மே வ்யோமநி தே³வாநாꣳ ஸத³நே வ்ருத⁴꞉ ।
ஸுபா⁴ர꞉ ஸுஶ்ரவஸ்தம꞉ ஸமப்ஸுஜித் ॥

அன்வயம்.

सः, प्रथमे, व्योमनि, देवानां सदने, वृधः, सुपारः, सुश्रवस्तमः, समप्सुजित् ॥

பதவுரை.

सः	ஸஃ	அவ்விந்திரன்,
प्रथमे	வ்யுஷெ	விரிந்ததும், அல்லது, சிறந்ததும்,
व्योमनि	வ்யோமநி	விசேடமாய்க் காப்பாற்றுவதும்,
देवानां सदने	தெவாநாம் ஸதநெ	தேவர்களுக்கிடமுமாகிய சுவர்க்கத்தில், இருந்துகொண்டு
वृधः	வ்ருதஃ	வேள்வித் தலைவனை விருத்தி செய்கின்றவனும்,
सुपारः	ஸுபாரஃ	அழகுடன் பிராரத்த கருமத்தை முடிக்கின்றவனும்,
सुश्रवस्तमः	ஸுச்ரவஸ்தமஃ	மிகச் சிறந்த அன்னமுடையவனும்,
समप्सुजित्	ஸமப்ஸுஜித்	அடையத்தக்க நீரைத் தடுக்கின்ற விருத்திராசுரனை வெற்றி கொள்கின்றவனுமாகின்றான், அத்தகைய இந்திரனை யழைக்கின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

அவ்விந்திரன், பரந்த, அல்லது, சிறந்த பாதுகாப்புடைய தேவர்களின் நிலயத்தில் இருக்கின்றவனும், வேள்வித் தலைவர்களைப் பாதுகாக்கின்றவனுமாகின்றான். அவ்வாறே, இனிது பிராரத்த கருமத்தை முடிக்கின்றவனும், மிகச் சிறந்த அன்னமுடையவனுமாகின்றான். அவன், நீர் கிடைப்பதற்குத் தடை செய்கின்ற விருத்திராசுரனை, அல்லது, அந்தரிட்சத்தி (வானி) லுள்ள அசுரர்களை வெற்றிகொள்கின்றவனுமாகின்றான். அத்தகைய இந்திரனை யழைக்கின்றோம் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 12.

१२ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

748. **तमु * हुवे वाजसातय इन्द्रं भराय शुष्मिणम् ।**

१ २ ३१ २२३ १ २ ३२

भवा नः सुम्न अन्तमः सखा वृधे ॥ ३–१२ ॥

இருக்கு 8-13-1-3

தஉ ஹுவெ வாஜஸாதய இந்த்ரம் ப⁴ராய ஶுஷ்மிணம் ।

ப⁴வா நஃ ஸும்ன அந்தமஃ ஸகா² வ்ருதே⁴ ॥

---

* ஹு, என்பது இருக்கு.

அன்வயம்.

शुष्मिणं, तमु इन्द्रं, वाजसातये, भराय, हुवे, सुम्ने, नः अन्तमः, भव, वृधे, सखा ॥

பதவுரை.

शुष्मिणं	ஶுஷ்மிணம்	ஆற்றலுடைய
तमु इन्द्रं	தமு இந்த்₃ரம்	அவ்விந்திரனே,
वाजसातये	வாஜஸாதயெ	அன்னங் கிடைத்தற்குரிய
भराय	஭ராய	வேள்வியின் பொருட்டு
हुवे	ஹுவெ	அழைக்கின்றேன். இந்திரனே! நீ,
सुम्ने	ஸும்நெ	சுகத்தை, அல்லது, தனத்தை யடைய விருப்புற்றபோது
नः अन्तमः	நஃ அந்தமஃ	எனக்கருகில்
भव	஭வ	தோன்றுவாயாக.
वृधे	வ்ருதெ	(எனது) விருத்தியின் பொருட்டும்
सखा	ஸகா	நண்பனுகுவாய்.

சாயணபாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

முற்கூறிய குணங்களை யுடையவனும், ஆற்றலுடையவனுமாகிய அவ்விந்திரனையே, ஆற்றலை, அல்லது, அன்னத்தை அடையத்தக்க போரில், அல்லது, வேள்வியில், அழைக்கின்றேன். பெரும்பான்மையும் 'போர்' என்னும் பெயர் வேள்விக்கே காணப்படுகின்றதாமாதலின் என்க. வேள்வியின் பொருட்டு அழைக்கின்றேன் என்பது பொருள்.

(ஆதலின்), இந்திரனே! நீ, சுகத்தில், அல்லது, தனத்தில் விருப்புற்றவர்களான எங்களுக்கு மிக அருகிலுள்ள நண்பனுவாய் என்பதாம்.

மூன்றுவது கண்டம்

முற்றும்.

நான்காவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—1. அத்தியாயம்—2. கண்டம்—4.

ஆறு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३ १ २ ३ १२र ३ १ २र ३ १ २
749. एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमाहुवे ।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३२ ३१२
प्रियं चेतिष्ठमरतिꣳ स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम् ॥ १ ॥

ஏனா வொ அக்3நிம் நமஸோர்ஜோ நபாதமாஹுவே ।
ப்ரியம் செதிஷ்ட2மரதிம் ஸ்வத்4வரம் விஸ்வஸ்ய தூ3தமம்ருதம் ॥

அன்வயம்.

(हे ऋत्विजः ! यजमानाः !,) वः, एना नमसा, ऊर्जः, नपातं, प्रियं, चेतिष्ठं, अरतिं, स्वध्वरं, विश्वस्य, दूतं, अमृतं, अग्निं, आहुवे ॥

பதவுரை.

(हे ऋत्विजः !)	(ஹே ரித்விஜஃ !)	(வேட்போர்காள் !)
(यजमानाः !)	(யஜமானாஃ !)	(வேள்வித் தலைவர்காள் !)
वः	வஃ	உங்கள் நிமித்தமாய்
एना नमसा	ஏனா நமஸா	மந்திரமாகிய இத்துதியால்,
ऊर्जः	ஊர்ஜ-ஃ	ஆற்றலின்
नपातं	நபாதம்	புத்திர வடிவமுடன்
प्रियं	ப்ரியம்	எமக்கு அனுகூலமுடையதும்,
चेतिष्ठं	செதிஷ்ட2ம்	சிறந்த உணர்வைத் தருவதுப்,
अरतिं	அரதிம்	தலைமையானதும்,
स्वध्वरं	ஸ்வத்4வரம்	சிறந்த வேள்வியை யுடையதும்,
विश्वस्य	விஸ்வஸ்ய	வேள்வித் தலைவர்கள் ஆனவரின் பொருட்டுத்
दूतं	தூ3தம்	தூது போவதும்,
अमृतं	அம்ருதம்	நித்தியமுமாகிய
अग्निं	அக்3நிம்	அக்கினியை
आहुवे	ஆஹுவே	(யான்) அழைக்கின்றேன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. பெருங் கீதமாகிய சூக்தத்தில் மந்திரம்—1. வசிஷ்டர் ரிஷி.

மூலத்தில் 'நபாத்' என்பது புத்திரன். "நபாத் என்பது புதல்வன் பெயர்" என நிகண்டு கூறுகின்றது. ஆற்றலின் புத்திரனும், பிரியனும், எங்கட்கு மிக்குணர்வைத் தருபவனும், அல்லது, நல்லுணர்வை யுடையவனும், செல்வோனும், அல்லது, தலைமையோனும், அழகிய வேள்வியை யுடையவனும், வேள்வித் தலைவர்கள் அனைவருக்குந் தூது செல்பவனும், நித்தியனுமாகிய அக்கினி தேவனை இத்தோத்திரத்தால் வேட்போர்களே! வேள்வித் தலைவர்களே! உங்களுக்காக, யான் அழைக்கின்றேன் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २३क २र
750. स योजते अरुषा विश्वभोजसा स दुद्रवत् स्वाहुतः ।
३१ २ ३ २ ३ २ ३ १२ ३२उ ३ १ २
सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनां देवꣳ राधो जनानाम् ॥ २–१३ ॥

இருக்கு 10-9-5, யசுர் 3-5.

ஸ யொஜதெ சுரூஷா விஶ்வபொஜஸா ஸ தூத்ரவத் ஸ்வாஹுதஃ।
ஸுப்ரஹ்மா யஜ்ஞஃ ஸுஶமீ வஸூநாம் தெவம் ராதொ ஜநாநாம்॥

அந்வயம்.

सः, अरुषा, विश्वभोजसा, योजते, सुब्रह्मा, यज्ञः, सुशमी, स्वाहुतः, दुद्रवत्, वसूनां जनानां, राधः, देवम् ॥

பதவுரை.

सः	ஸஃ	அவ் வக்கினிதேவன்,
उरुषा	சுரூஷா	விளங்குகின்றவைகளும்
विश्वभोजसा	விஶ்வபொஜஸா	உலகத்தைக் காக்கின்றவைகளுமான குதிரைகளை
योजते	யொஜதெ	தனது இரதத்திற் பூட்டுவானாக. பின்னர்,
सुब्रह्मा	ஸுப்ரஹ்மா	சிறந்த அன்னமுடையவனும்,
यज्ञः	யஜ்ஞஃ	வேட்பதற்குரியவனும்
सुशमी	ஸுஶமீ	மேம்பட்ட கருமமுடையவனுமாகிய அவ்வக்கினிதேவன்

स्वाहुतः	ஸ்வாஹுதः	நன்கு ஓமம் பண்ணினவர்களான
दुद्रवत्	தூ உ்ரவக்	தேவர்களை யழைத்துவர, விரைவிற் செல்வானாக. பின்னர்,
वसूनां जनानां	வஸூநாம் ஜநாநாம்	வேள்வித் தலைவர்களின்
राधः	ராயः	அவியாகிய தனம்
देवं	தெவம்	அக்கினிதேவனை யடைவதாகுக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4 இருக்கு—3.

அவ்வக்கினிதேவன், விளங்குகின்றவைகளும், உலகைக் காப்பாற்றுபவைகளுமான குதிரைகளைத் தனது இரதத்திற் பூட்டுவானாக. அல்லது, உலகைப் பாதுகாக்கின்ற பிரகாசத்தாற் பூட்டுவானாக. பின்னர், தோத்திரம் பண்ணுவோர்களால் இனிது அழைக்கப்பட்டவனாயுள்ள அக்கினிதேவன், அடிக்கடி தேவர்களை யழைத்துக்கொண்டு வருவதற்கு விரைவிற் செல்வானாக. எத்தன்மைய அக்கினிதேவனெனின்? அழகிய தோத்திரமுடையவனும், அல்லது, சிறந்த தேவ உணவையுடையவனும், வேட்கத்தக்கவனும், அழகிய கருமமுடையவனுமாவன். ஆதலின், வேள்வித் தலைவர்களின் அவியாகிய தனம், பிரகாசமாகிய அக்கினிதேவனை யடைக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

१ २ ३ २ ३ २
751. प्रत्यु अदर्श्यायत्यू३च्छन्ती दुहिता दिवः ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अपो मही वृणुते चक्षुषा तमोज्योतिष्कृणोति सूनरी ॥ १ ॥

ப்ரத்யு அதர்ச்யாயத்யூ ஊச்ஹந்தீ தூஹிதா திவஃ ।
அபொ மஹீ வ்ருணுதெ சக்ஷுஷா தமொஜ்யொதிஷ்க்ருணொ
[தி ஸூநரீ ॥

அந்வயம்.

आयती, उच्छन्ती, दिवः, दुहिता, (उषा) प्रति अदर्शि, उ, मही, तमः, चक्षुषा, अप उ वृणुते, सूनरी, ज्योतिः, कृणोति ॥

பதவுரை.

आयती	ஆயதீ	உதிக்கும்போதே
उच्छन्ती	உச்ஹந்தீ	இருளை யொதுக்குவதாகி
दिवः	திவஃ	வானுலகின்

दुहिता	दुहिता	புத்திரியாகிய
(उषा)	(उषा)	(உஷத் காலம்)
प्रति अदर्शि	वयो सदृशि	யாவர்களாலும் காணப்படுகின்றது.
उ	उ	மற்றும், அது
मही	महि	பெரிய (மிகுந்த)
तमः	तमः	இருளை,
चक्षुषा	अक्षा	(தனது) பார்வையால்
अप उ वृणुते	अप उ वृणोति	நீக்குகின்றது. மற்றும்,
सूनरी	सूनरी	உயிர்களை யேவும் உஷத் காலம்
ज्योतिः	ज्योतिः	பிரகாசத்தைச்
कृणोति	कृणोति	செய்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இரண்டாவது கீதத்தில் இருக்கு—2. வசிஷ்டர் ரிஷி.

(உஷா) எழும்போதே இருளை யொழிக்கின்றது. வானுலகின், அல்லது, சூரியனுடைய புத்திரியாகிய உஷத் காலம் யாவர்களாலும் பார்க்கப்படுகின்றது. அது தனது பார்வையாற் பேரிருளை நீக்குகின்றது. உயிர்களின் நேத்திரமாகிய உஷத் காலம் இவ்வாறு செய்துகொண்டு, பிரகாசத்தை யுண்டாக்குகின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 4.

२३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ र ३ २

752. उदुस्रियाः सृजते सूर्यः सचा उद्यन्नक्षत्रमर्चिवत् ।

१२र३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च सं भक्तेन गमेमहि ॥ २-२४ ॥

இருக்கு 7-81-1-2.

उदुस्रियाः सृजते सूर्यः सचा उद्यन्नक्षत्रमर्चिवत् ।

तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च सं भक्तेन गमेमहि ॥

அந்வயம்.

सूर्यः, उस्रियाः, सचा, उत्सृजते, उद्यत्, नक्षत्रं, अर्चिवत्, उषः तव, सूर्यस्य च, व्युषि, भक्तेन, सङ्गमेमहि इत् ॥

பதவுரை.

सूर्यः	ஸூர்யஃ	எல்லாவற்றையுஞ் செலுத்துகின்ற சூரியன்
उस्रियाः	உஸ்ரியாஃ	(உஷாவினது) கிரணங்களுடன்
सचा	ஸசா	ஒன்று கூடிப்
उत्सृजते	உத்ஸ்ருஜதெ	பிரகாசிக்கின்றான். மற்றும்,
उद्यत्	உத்யத்	உதயமானவுடனே
नक्षत्रं	நக்ஷத்ரம்	வானிலுள்ள நக்ஷத்திர முதலியவைகளை
अर्चिवत्	அர்சிவத்	விளக்குகின்றான்.
उषः !	உஷஃ !	உஷா தேவதையே !
तव	தவ	உனது சம்பந்தியாகிய
सूर्यस्य च	ஸூர்யஸ்ய ச	சூரியனையும்
व्युषि	வ்யுஷி	விளக்கிய பின்னர், யாங்கள்
भक्तेन	஭க்தெந	அன்னத்துடன்
सङ्गमेमहि इत्	ஸங்கமேமஹி உத்	உறுதியாய்க் கூடுகின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

அனைத்தையுஞ் செலுத்துகின்ற சூரியன், கிரணங்களுடன் உதயமாகின்றான். அவ்வாறு உதித்தவுடனே வானிற் காணப்படும் நக்ஷத்திரம் என்பது முதலியவைகளை விளக்குகின்றான். சூரியனுடைய ஒளியாலேயே இரவிலும் சந்திரன் நட்சத்திரம் முதலியவைகளும் விளங்குகின்றன என்க. "சூரிய கிரணங்கள் சந்திரன் கந்தருவன்" என்னும் மற்றொரு மறையின் வாக்கியமும் ஈண்டு உணரற்பாலது. இவ்வாறுய விடத்து, உஷத்கால தேவதையென்னும் உனது சம்பந்தியாகிய சூரியனையும் நீ பிரகாசிக்கச் செய்த போது, அன்னத்துடன் நாங்கள் சேருகின்றோம் என்பதாம். ஈண்டுச் சூரியனையும் என்ற வும்மையால் சந்திரனையுங் கொள்ளப்பட்டது. (2)

மந்திரம் 5.

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

753. इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना ।

३ १ २३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र

अयं वामह्वेऽवसे शचीवसू विशं विशꣳ हि गच्छथः ॥ १ ॥

ஈமா உ வாம் திவிஷ்டய உஸ்ரா ஹவந்தெ அஸ்வினா ।

அயம் வாமஹ்வேऽவஸெ ஸசீவஸூ விஶம் விஶꣳ ஹி கச்ச²தஃ ॥

அந்வயம்.

इमाः दिविष्टयः, उ, अश्विना!, उस्रा, वां, हवन्ते, शचीवसू! अयं, अवसे, वां, अह्वे, विशं विशं हि गच्छथः ॥

பதவுரை.

इमाः दिविष्टयः	ஊராः திவிஷ்டயः	சுவர்க்கத்தை விரும்புகின்ற இவர்களும்,
उ	உ	வேட்போர்களும்,
अश्विना!	அச்வினா!	அசுவினி குமாரர்களே!
उस्रा	உஸ்ரா	வியாபகர்களான
वां	வாம்	உங்களிருவரையும்,
हवन्ते	ஹவந்தே	அழைக்கின்றார்கள்.
शचीवसू!	சசீவஸூ!	கருமத்தைத் தனமாகவுடையோர்களே!
अयं	அயம்	துதிப்போனுகிய யானும்,
अवसे	அவஸே	என்னைப் பாதுகாத்தற்பொருட்டு
वां	வாம்	உங்களிருவரையும்
अह्वे	அஹ்வே	அழைக்கின்றேன்.
विशं विशं हि गच्छथः	விசம் விசம் ஹி கச்சதः	போற்றுவோர்கள் ஒவ்வொருவரின்பொருட்டும் நீவிர் செல்லாநின்றீர்கள் (ஆதலின் என்க.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—மூன்றுங் கீதத்தில்—1. வசிட்டர் ரிஷி.

வானுலகை விரும்புகின்ற இச்சனங்களும், வேட்போர்களும், அசுவினி குமாரர்களே! வியாபகர்களான உங்களையே அழைக்கின்றார்கள். கருமத்தையே தனமாகக் கொண்டோர்களே! என்னைக் காப்பாற்றுதற்பொருட்டு, அல்லது, உங்களுடைய திருப்தியின் பொருட்டு, (துதிப்போனுகிய) யானும் உங்களை அழைக்கின்றேன். இவ்வாறு, பிரசைகளும், இவனும், பிரியங் கூறல் எதன் பொருட்டெனின்? அது கூறப்படுகின்றது:—நீங்களிருவரும் துதிக்கின்ற பிரசைகளிடத்திற்கு உறுதியாகச் செல்கின்றீர்களாதலின் என்க. (1)

மந்திரம் 6.

३२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

754. युवं चित्रं ददथुर्भोजनं नरा चोदेथाꣳ सूनृतावते ।

२२उ ३ १२ ३ १२ ३ २ ३ १ २२

अर्वाग्रथꣳ समनसा नियच्छतं पिबतꣳ सोम्यं मधु ॥ २-१५ ॥

இருக்கு 7-74-1-2.

யூவம் சித்ரம் ஆஜோஹூஜாதம் நரா சோதேயாம் ஸஜோஷஸா
[வதை ।
ரதம் ஹவிஷ்மதோ நியுத்தம் விபதம் சோம்யம் மது ॥

அந்வயம்.

नरा, युवं, चित्रं, भोजनं, ददथुः, सूनृतावते, चोदेथां, समनसा, रथं, अर्वाक्, नियच्छतं, सोम्यं, मधु, पिबतम् ॥

பதவுரை.

नरा!	நரா !	அசுவினி குமாரர்களே !
युवं	யூவம்	நீங்களிருவரும்
चित्रं	சித்ரம்	விசித்திரமாகிய
भोजनं	போஜநம்	தனத்தைத்
ददथुः	தததுஃ	தாங்குகின்றீர்கள். (அத் தனத்தை)
सूनृतावते	ஸூநுதாவதே	துதிப்பவருக்கு
चोदेथां	சோதேயாம்	ஏவுவீர்களாக. (கொடுப்பீர்களாக. இதன் பொருட்டு)
समनसा	ஸமநஸா	ஒரு மனதாய்
रथं	ரதம்	உங்களுடைய இரதத்தை,
अर्वाक्	அர்வாக்	எமக்கெதிரில்
नियच्छतं	நியச்சதம்	நிறுத்துவீர்களாக. மற்றும்,
सोम्यं	சோம்யம்	சோமத்தின்
मधु	மது	மதுர ரசத்தை
पिबतं	பிபதம்	அருந்துவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

நியமிப்போர்களான அசுவினி குமாரர்களே ! நீங்களிருவரும், வியப்பாகிய தனத்தைத் தாங்கிக்கொண்டிருக்கின்றீர்கள். தோத்திரஞ் செய்வோனுக்கு அந்தத் தனத்தைச் சேர்ப்பீர்களாக. அதன் பொருட்டு, ஒரு மனதாய் உங்களுடைய இரதத்தை எனக்கு முன்னல் நிறுத்துவீர்களாக. அவ்வாறு செய்துகொண்டு சோமக்கொடியின் இரசத்தையும் அருந்துவீர்களாக என்பதாம். (2)

நான்காவது கண்டம்.

முற்றும்.

ஐந்தாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—1. அத்தியாயம்—2. கண்டம்—5.

ஒன்பது மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३ २ ३ २उ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
755. अस्य प्रत्नामनुद्युतꣳ शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः ।
१ २ ३ १२र
पयः सहस्रसामृषिम् ॥ १ ॥

ஈஹஸ்ய வ்ரத்நாமநுத்யுதꣳ ஸுக்ரம் தூதுஹ்ரே அஹ்ரயः ।
வயः ஸஹஸ்ரஸாம்ருஷிம் ॥

அன்வயம்.

प्रत्नां, द्युतं, अनु, शुक्रं, सहस्रसां, ऋषिं, अस्य, पयः, अह्रयः, दुदुह्रे ॥

பதவுரை.

प्रत्नां	வ்ரத்நாம்	பழமையாய்
द्युतं	த்யுதம்	விளங்குகின்ற தேகத்தைக்
अनु	அநு	குறித்துப்,
शुक्रं	ஸுக்ரம்	பிரகாசிக்கின்றதும்
सहस्रसां	ஸஹஸ்ரஸாம்	விரும்பின ஆயிரக் கணக்கான பயன்களைத் தருவதும்
ऋषिं	ருஷிம்	கட்புலப்படாத கரும பயனைப் பார்ப்பதுமாகிய
अस्य	அஸ்ய	இச் சோமத்தினுடைய
पयः	பயः	இரசத்தை
अह्रयः	அஹ்ரயः	அறிஞர்கள்
दुदुह्रे	தூதுஹ்ரே	கறக்கின்றார்கள். (சோமரசத்தைப் பிழிகின்றார்கள்.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—ஒன்பதுகொண்ட சூக்தத்தில்—1. அவத்சாரர் ரிஷி.

பண்டைய பிரகாசமுள்ள உடம்பில் விளங்குவதும், விரும்பிய பயனைக் கணக்கிலாது கொடுப்பதும், புலப்படாத கருமத்தின் பயனைப் பார்ப்பதும், அருந்துதற்குரியதுமாகிய இச் சோமக்கொடியின் இரசத்தை, கவிகள் கறக்கின்றார்கள். (பிழிகின்றார்கள் என்பதாம்.) (1)

மந்திரம் 2.

३ १ २र ३२३१ २र
756. अयꣳ सूर्य इवोपदृगयꣳ सराꣳसि धावति ।
३ २३२३ १ २र
सप्तप्रवत आदिवम् ॥ २ ॥

அயம் ஸூர்ய இவோபத்ரகயம் ஸராம்ஸி தாவதி ।
ஸப்தப்ரவத ஆதிவம் ॥

அந்வயம்.

अयं, सूर्य इव, उपदृक्, अयं, सरांसि, धावति, आदिवं, सप्तप्रवते ॥

பதவுரை.

अयं	அயம்	இச் சோமம்
सूर्य इव	ஸூர்ய உவ	சூரியன் எல்லாவற்றையும் (அறிவது போன்று)
उपदृक्	உபத்ரக்	கருமங்களைப் பார்க்கின்றது. (அறிகின்றது). மற்றும்,
अयं	அயம்	இச் சோமம்
सरांसि	ஸராம்ஸி	(முப்பது) பாத்திரங்களை, அல்லது, (முப்பது) இரவு பகல்களை
धावति	தாவதி	கடந்து செல்கின்றது. மற்றும்,
आदिवं	ஆதிவம்	வானுலகிலுள்ள
सप्तप्रवते	ஸப்தப்ரவதெ	ஏழு பிரவாகத்தைச் சேருகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

உலகை நோக்கும் இரவியைப்போன்று, இச்சோமரசம் கருமங்களைக் காண்கின்றது. (அறிகின்றது.) மற்றும், இச்சோமம் 'சராம்சி' என்னும் முப்பது பாத்திரங்களை, அல்லது, முப்பது அகோராத்திரிகளை யடைகின்றது. ஈண்டு, 'சராம்சி' என்றது முப்பது பாத்திரமென்று சிலர் கொள்வர். சிலரோ? முப்பது அகோராத்திரமென்று கொள்வர். அவ்வாறே, யாஸ்க முனிவரும் "வேட்போர்கள் முப்பது பாத்திரங்களென்று உணர்கின்றார்கள். உச்சிப்போதைய ஓமத்தில் அவைகள் ஒரு காலத்தில் அருந்தப்படுகின்றன. அவைகள் ஈண்டுச் சராம்சி எனப்படுகின்றன என்றும், முப்பது உத்தரபட்சத்தினுடைய அகோராத்திரம் முப்பது பூர்வபட்சத்தினுடைய என்பார் நிருத்திக்காரர்கள்" என்றுங் கூறியுள்ளார். மற்றும், இச்சோமரசம், வானுலகின் கண்ணுள்ள ஏழு நதிகளையும் அடைகின்றது என்பதாம்.

மந்திரம் 3.

३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
757. अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि ।
१ २ ३ १ २र
सोमो देवो न सूर्यः ॥ ३ ॥

அயம் விஶ்வாநி திஷ்ட்தி வுநாநொ ஹுவநொபரி ।
ஸொமொ தெவொ ந ஸூர்யஃ ॥

அந்வயம்.

पुनानः, अयं सोमः, देवो न सूर्यः, विश्वानि भुवनाः, उपरि तिष्ठति ॥

பதவுரை.

पुनानः	வுநாநஃ	பவித்திரம் பண்ணப்பெற்ற
अयं सोमः	அயம் ஸொமஃ	இச் சோமரசம்,
देवो न सूर्यः	தெவொ ந ஸூர்யஃ	சூரியன் எல்லாவற்றினும் மேலாய் விளங்குவதுபோன்று
विश्वानि भुवनाः	விஶ்வாநி ஹுவநாஃ	புவனங்களனைத்திற்கும்,
उपरि तिष्ठति	உபரி திஷ்ட்தி	மேலாய் விளங்குகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

புனிதமாக்கிய இச் சோமரசம், எல்லாப் புவனங்களுக்கும் மேலாய் விளங்குகின்றது. அதிலுவமை:—சூரியன் எல்லாப் புவனங்களுக்கும் மேலாய் விளங்குகின்றனன்றே? அதைப்போன்று இச் சோமமும் விளங்குகின்றது என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

३२ ३ २३ १ २ ३ १ ३१ २ ३२
758. एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः ।
१२ ३१२
हरिः पवित्रे अर्षति ॥ १ ॥

ஏஷ ப்ரத்நேந ஜந்மநா தேவோ தேவேப்⁴ய: ஸுத: ।
ஹரி: பவித்ரே அர்ஷதி ॥

அன்வயம்.

हरिः देवः, एषः, प्रत्नेन, जन्मना, देवेभ्यः, सुतः, पवित्रे, अर्षति ॥

பதவுரை.

हरिः	ஹரி:	பசுமை நிறமுடையதும்,
देवः	தேவ:	விளங்குவதுமாகிய
एषः	ஏஷ:	இச் சோமரசம்,
प्रत्नेन	ப்ரத்நேந	பழைமையாகிய
जन्मना	ஜந்மநா	உற்பத்தியால்
देवेभ्यः	தேவேப்⁴ய:	தேவதைகளின் பொருட்டுப்
सुतः	ஸுத:	பிழியப்பெற்றுப்
पवित्रे	பவித்ரே	பவித்திரமாகிய பாத்திரத்திற்
अर्षति	அர்ஷதி	பிரகாசிக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—4. சுனச்சேபர் ரிஷி.

பசுமை நிறமுடையதும், பிரகாசமுடையதுமாகிய இச் சோமம், பழைமையாகிய உற்பத்தியால், தேவர்களின் பொருட்டுப் பிழியப்பெற்றுப் பவித்திரமாகிய பாத்திரத்தில் விளங்குகின்றது. (4)

மந்திரம் 5.

३२ ३ २३ १२ ३२ ३२ ३१२
759. एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि ।
३१ २२
कविर्विप्रेण वावृधे ॥ २ ॥

வஷ வ்ருத்நேந உந்மநா தெவோ தெவேப்யஸ்பரி
கவிர்விப்ரேண வாவ்ருதே ॥

அன்வயம்.

प्रत्नेन, मन्मना, देवः, एषः, देवेभ्यः, कविः, विप्रेण, परिवावृधे ॥

பதவுரை.

प्रत्नेन	வ்ருத்நேந	பழமையாகிய
मन्मना	உந்மநா	துதியென்னுஞ் சாதனத்தால்
देवः	தெவஃ	விளங்குகின்ற
एषः	வஷஃ	இச் சோமம்,
देवेभ्यः	தெவேப்யஃ	தேவதைகளின் பொருட்டு
कविः	கவிஃ	மிக்க வறிவுடையதாய்
विप्रेण	விப்ரேண	அறிவுடைய வேள்வித் தலைவனாலும், வேட்போனாலும்
परिवावृधे	பரிவாவ்ருதே	விருத்தியா (வளர்) கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—5.

பண்டைய சாதனமாகிய தோத்திரத்தோடு கூடியதும், பிரகாசமானதுமாகிய இச் சோமம், தேவதைகளின் பொருட்டு அறிவு மிக்குடையதாகி, பேரறிவாளராகிய வேட்போர்களாலும், தலைவர்கள் வாயிலாகவும், இனிது வளர்கின்றது என்பதாம். (5)

மந்திரம் 6.

३ २ ३१ २२ ३२३ १२
760. दुहानः प्रत्नमित्पयः पवित्रे परिषिच्यसे ।
१२ ३१ २
क्रन्दन् देवाꣳ * अजीजनः ॥ ३–२७ ॥

இருக்கு 9-42-2.

தூஹாநஃ ப்ரத்நமித்பயஃ பவித்ரே பரிஷிச்யஸே ।
க்ரந்தந் தெவாꣳ அஜீஜநத் ॥

---

* अजीजनत्, என்பது இருக்கு.

அந்வயம்.

प्रत्नमित्, पयः, दुहानः, (हे सोम! त्वं,) पवित्रे, परिषिच्यसे, क्रन्दन्, देवान्, अजीजनः ॥

பதவுரை.

प्रत्नमित्	ப்ரத்நமித்	பழைமையாகிய
पयः	பயஃ	இரசத்தைப்
दुहानः	தூஹாநஃ	பாத்திரத்தில் நிரப்புகின்ற
(हे सोम! त्वं)	(ஹே ஸோம! த்வம்)	(சோமமே! நீ,)
पवित्रे	பவித்ரே	பவித்திரமாகிய பாத்திரத்தில்
परिषिच्यसे	பரிஷிச்யஸே	வழிகின்றாய். மற்றும்,
क्रन्दन्	க்ரந்தந்	ஒலித்துக்கொண்டு
देवान्	தேவாந்	தேவர்களைத்
अजीजनः	அஜீஜநஃ	தம்மிடத்தினின்று வெளிப்படுத்துகின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—6.

பண்டைக் காலத்திய இரசத்தையே ஒழுகச் செய்கின்ற சோமமே! நீ, பவித்திரமென்னும் பாத்திரத்தில் வழிகின்றனை. மற்றும், ஒலித்துக் கொண்டு இந்திரன் முதலிய தேவர்களைத் தனக்கருகில் தோற்றுவிக்கின்றனை. அதாவது சோமம் பிழியுமிடத்தின்கண் தேவர்கள் நியதமாக வெளிப்படுகின்றார்கள் என்பது பொருள். (6)

மந்திரம் 7.

१२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२

761. **उपशिक्षापतस्थुषो भियसमा धेहि शत्रवे ।**

१२ ३ २ ३ २

पवमान विदा रयिम् ॥ १ ॥

இருக்கு. 9-19-9-21.

உவசிக்ஷாவதஸ்தூஷோ பியஸமா தெஹி சத்ரவே ।

பவமாந விதா ரயிம் ॥

அந்வயம்.

हे पवमान!, अपतस्थुषः, उपशिक्षा, शत्रवे, भियसं आधेहि, रयिं, विदाः ॥

பதவுரை.

हे पवमान!	ஹெ வவமாந!	பவித்திரமாகிய சோமமே! நீ,
अपतस्थुषः	அவதஸ்ஸுஷஃ	யான் விரும்பிய பொருள்களை
उपशिक्षा	உவஶிக்ஷா	என்னிடஞ் சேர்ப்பாயாக.
शत्रवे	ஶத்ரவெ	விரோதிகளுக்குப்
भियसं आधेहि	ஹியஸம் ஆதெஹி	பயத்தை யுண்டாக்குவாயாக.
रयिं	ரயிம்	சத்துருவின், தனத்தை
विदाः	விதாஃ	எனக்குக் கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—7.

அசிதர், அல்லது, தேவலர் இருடி. சோமமே! நீ, என்பாற் சேர்ப்பாயாக. எவைகளை யெனின்? யான் விரும்பியவைகளை யென்க. சத்துருக்களுக்குப் பயத்தை யுண்டாக்குவாயாக. அதாவது வெல்வாயாக என்பதாம். அன்றியும், சத்துருக்களுடைய தனத்தையும் எமக்குக் கொடுப்பாயாக என்பது பொருள். (7)

மந்திரம் 8.

२ ३ २ ३२३ २३ १ २ ३ १ २र
762. उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम् ।
१ २ ३ १ २
इन्दुं देवा अयासिषुः ॥ २ ॥

இருக்கு 9-61-13.

உவொ ஷு ஜாதமப்துரம் கொஹிர்ஹுஜ்ஜம் வரிஷ்க்ருதம் ।
இந்தும் தெவா அயாஸிஷுஃ ॥

அந்வயம்.

सुजातं, अप्तुरं, भङ्गं, गोभिः, परिष्कृतं, इन्दुं, देवाः, उप अयासिषुः ॥

பதவுரை.

सुजातं	ஸுஜாதம்	இனிது தோன்றியதும்
अप्तुरं	அப்துரம்	'வசதீவரி' என்னும் நீரைச் செலுத்துவதும்
भङ्गं	ஹஜ்ஜம்	பகைவரை யழிப்பதும்
गोभिः	கொஹிஃ	ஆவின் பால் முதலியவற்றாற்
परिष्कृतं	வரிஷ்க்ருதம்	சுத்தம் பண்ணப்பெற்றதுமாகிய
इन्दुं	இந்தும்	சோமரசத்தைத்
देवाः	தெவாஃ	தேவர்கள்
उप अयासिषुः	உவ அயாஸிஷுஃ	அடைகின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—8.

நன்கு உண்டாகியதும், 'வசதீவரி' என்னும் ஆற்று நீரால்வப்பட்டதும், சத்துருவை யச்சப்படுத்துவதும், ஆவின் பால் முதலியவற்றுற் சுத்தம் பண்ணப்பட்டதுமாகிய சோமரசத்தைத் தேவர்களடைகின்றார்கள் என்பதாம். (8)

மந்திரம் 9.

१२ ३ १२ ३१२
763. उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे ।
३२३१ २२
अभि देवाꣳ इयक्षते ॥ ३-१८ ॥

இருக்கு 9-11-1.

உவாஸ்மை கா யதா நரஃ பவமாநாயேந்தவே ।
அபி தேவாꣳ இயக்ஷதே ॥

அந்வயம்.

नरः, देवान्, अभि इयक्षते, पवमानाय, अस्मै इन्दवे, उपगायत ॥

பதவுரை.

नरः	நரஃ	வேள்வித் தலைவர்கள்,
देवान्	தேவாந்	இந்திரன் முதலிய தேவர்களை
अभि इयक्षते	அபி இயக்ஷதே	ஒருமுகமாய் ஆராதிக்க விரும்புகின்றார்கள்.
पवमानाय	பவமாநாய	சமற்காரஞ் செய்துள்ள
अस्मै इन्दवे	அஸ்மை இந்தவே	இச் சோமத்தின் பொருட்டுச்
उपगायत	உபகாயத	சாம மறையைப் பாடுவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—9.

வேள்வியை நியமிப்போர்கள். வேள்வியில் ஒருமுகப்பட்டு இந்திரன் முதலிய தேவர்களை ஆராதிக்க விரும்புகின்றார்கள். வேள்வித் தலைவன் பொருட்டுப் பிழிந்துள்ள இச் சோமரசத்தைக் குறித்து இனிய சாம மறையைப் பாடுவீர்களாக. (9)

ஐந்தாவது கண்டம்

முற்றும்.

ஆறுவது கண்டம்

பிரபாடகம்—1. அத்தியாயம்—2. கண்டம்—6.

பதினெரு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

764. १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
प्र सोमासो विपश्चितोऽ * पो नयन्त ऊर्मयः ।
१ २ ३ १ २
वनानि महिषा इव ॥ १ ॥

ப்ர ஸொமாஸொ விபஶ்சிதொ(அ)பொ நயந்த ஊர்மயஃ
வநாநி மஹிஷா இவ ॥

அன்வயம்.

विपश्चितः, ऊर्मयः, सोमासः, वनानि, महिषा इव, अपः, प्र नयन्ते ॥

பதவுரை.

विपश्चितः	விபஶ்சிதஃ	அறிவு மிகுந்ததும்
ऊर्मयः	ஊர்மயஃ	விருத்தி யடைந்ததுமாகிய
सोमासः	ஸொமாஸஃ	சோமரசம்,
वनानि	வநாநி	வனங்களைப்
महिषा इव	மஹிஷா இவ	பெரிய மிருகங்களடைவன போன்று,
अपः	அபஃ	வசதீவரி, என்னும் நீரை
प्र नयन्ते	ப்ர நயந்தே	அடைகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—முதலாம் மூன்றில்—1. ஆப்கியர், அல்லது, திரிதர் இருடி.

பேரறிவை யுடையதும், மிக வளர்ந்ததுமாகிய சோமரசம், 'வசதீவரி' என்னும் நீரை யடைகின்றது. அதிலுவமை :—பெரிய விலங்குகள் வனங்களை யடைவன போன்றென்பதாம்.

---

* अपां नयन्नूर्मयः, என்பது இருக்கு.

மந்திரம் 2.

३ १ २ ३१२ ३२ ३२ ३ १२
765. अभि द्रोणानि बभ्रवः शुक्रा ऋतस्य धारया ।
२३ १२
वाजं गोमन्तमक्षरन् ॥ २ ॥

சுஹி த்ரோணாநி வப்ரவ: ஶுக்ரா ரிதஸ்ய தாரயா ।
வாஜம் கோமந்தமக்ஷரந் ॥

அந்வயம்.

बभ्रवः, शुक्राः, गोमन्तं, वाजं, ऋतस्य, धारया, द्रोणानि, अभ्यक्षरन् ॥

பதவுரை.

बभ्रवः	பப்ரவ:	சாம்பல் நிறமுடையதாய்
शुक्राः	ஶுக்ரா:	விளங்குகின்ற சோமரசம்,
गोमन्तं	கோமந்தம்	ஆவுடன்
वाजं	வாஜம்	அன்னத்தையும் கொடுத்துக் கொண்டு
ऋतस्य	ரிதஸ்ய	அமுதத்தின்
धारया	தாரயா	தாரைவடிவால்
द्रोणानि	த்ரோணாநி	த்ரோணம் என்பது முதலிய பாத்திரங்களில்
अभ्यक्षरन्	அப்யக்ஷரந்	நிறைகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

மூலத்தில் 'சுஹி' என்பதுடன் 'சுஷாந்தி' என்பதையுஞ் சேர்த்து, நிறைகின்றது எனப், பொருள் கொள்ளப்பட்டது. எவைகளில் நிறைகின்றது எனின்? த்ரோண கலச மென்பது முதலிய பாத்திரங்களிலென்க. த்ரோண கலசம்—ஒன்றேயாமாயினும், அதை முக்கியமாய்க்கொண்டு ஏனையவற்றையும் பாத்திரங்களென்றமையின் பன்மையாயிற்று. அல்லது, அன்பின் பொருட்டு ஒன்றே அநேக மெனப்பட்டதென்க. எது நிறைகின்றதெனின்? சாம்பல் நிறமுடையதாய் விளங்குஞ் சோமமா மென்க. எவ்வாறெனின்? அநேக ஆக்களுடன் அன்னத்தையும் கொடுப்பதாய் அமுத தாரையாற் ஒழுகுகின்றதென்க. அல்லது, ஒரு வாக்கியமாய்க்கொள்க. கூறியவாறே யாகிய சோமம், த்ரோண கலசங்களைக் குறித்துத் தாரையால் நிரம்புகின்றது. என்ன செய்துகொண் டெனின்? ஆவுடன் அன்னத்தையுங் கொடுத்துக்கொண்டு நிறைகின்றதென்பது பொருள். (2)

மந்திரம் 3.

३ १ २र ३२३ १२ ३१२
766. सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः ।
१२ ३ १२
सोमा * अर्षन्तु विष्णवे ॥ ३–१९ ॥

இருக்கு 9-33-1-3

ஸு॒தா இ॒ந்த்³ராய வாயவே வரு॒ணாய ம॒ரு॒த்³ப்⁴யः ।
ஸோமா॑ அர்ஷந்து விஷ்ணவே ॥

அந்வயம்

सुताः, सोमाः, इन्द्राय, वायवे, वरुणाय, मरुद्भ्यः, विष्णवे, अर्षन्तु ॥

பதவுரை.

सुताः	ஸு॒தாः	சுத்தம்பண்ணப்பெற்ற
सोमाः	ஸோமாஃ	சோமரசம்,
इन्द्राय	இ॒ந்த்³ராய	இந்திரனுக்கும்,
वायवे	வாயவே	வாயுவிற்கும்,
वरुणाय	வரு॒ணாய	வருணனுக்கும்,
मरुद्भ्यः	ம॒ரு॒த்³ப்⁴யஃ	மருத்துக்களுக்கும்,
विष्णवे	விஷ்ணவே	விட்டுணுவிற்கும்
अर्षन्तु	அர்ஷந்து	பிராப்தியாகுக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

பிழிந்தெடுக்கப்பெற்ற சோமரசம், இந்திரன் முதலிய தேவர்களை யடைகுக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

१ २ ३१ २ ३ २ ३१ २ ३ १२
767. प्र सोम देववीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा ।
३ १ २र ३ १ २२३२ ३ १२ ३ १२
अꣳशो पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम् ॥ १ ॥

ப்ர ஸோம தே³வவீ॒தயே ஸிந்து⁴ர்ந பி॑ப்யே அர்ணஸா ।
அꣳஶோ பயஸா மதி³ரோ ந ஜாக்³ரு॒விர॑ச்சா கோ॒ஶம் மது⁴ஶ்சுதம் ॥

* अर्षन्ति, என்பது இருக்கு.

அந்வயம்.

हे सोम !, देववीतये, सिन्धुः न, अर्णसा, पिप्ये, मदिरः न, जागृविः, अंशोः, मधुश्चुतं, पयसा, कोशं अच्छ ॥

பதவுரை.

हे सोम !	ஹெ ஸொம !	சோமமே ! நீ,
देववीतये	தெவவீதயெ	தேவர்க ளருந்துதற் பொருட்டு,
सिन्धुः न	ஸிந்துஃ ந	கடலானது நீரால் நிறைவது போன்று
अर्णसा	அர்ணஸா	வசதீவரி, என்னும் ஆற்றுநீரால்,
पिप्ये	பிப்யெ	நிறைகின்றாய்.
मदिरः न	மதிரஃ ந	மயக்கந்தரும் பொருளைப் போன்று
जागृविः	ஜாகூவிஃ	விழித்துக் கொண்டிருக்கின்ற நீ,
अंशोः	அம்ஶொஃ	கொடியின் துண்டுகளி னின்று ஒழுகும்
मधुश्चुतं	மதுஶ்சுதம்	மதுரச் சுவைமலிந்த
पयसा	பயஸா	இரசத்தால்
कोशं अच्छ	கொஶம் அச்ஹ	துரோண கலசத்தை யடைகின்றனை.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—1. பெருங் கானத்தின் இரண்டாவதில்—1. விசுவாமித்திரர் ரிஷி.

சோமமே ! நீ, தேவர்க ளருந்துவதின் பொருட்டு, வசதீவரி, என்னும் நீரால் நிறைகின்றனை. அதிலுவமை :—கடலானது நீரால் நிறைவது போன்றெனல். அத்தன்மைய நீ, மயக்கந்தரும், கள் முதலியன போன்று விழித்திருக்குந் தன்மையனாகின்றாய். அல்லது, இப்போது மதத்தைக் கொடுக்குஞ் சாக்கிரசீலனாகின்றாய். சோமக்கொடித் துண்டினின்று ஒழுகும் மதுர இரசத்தால் துரோண கலசத்தை யடைகின்றனை என்பதாம்.

மந்திரம் 5.

१ २३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
768. आ हर्यतो अर्जुनो अत्क अव्यत प्रियः सूनुर्न मर्ज्यः ।
१ २ ३२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
तमीꣳ हिन्वन्त्यपसो यथा रथं नदीष्वा गभस्त्योः ॥ २-२० ॥

இருக்கு 9-107-12-13.

சூ ஹர்யதோ சுஜுநோ சுத்க சுவ்யத ப்ரியஃ ஸூநுர்ந
[மர்ஜ்யஃ ।
தமீம் ஹிந்வந்த்யபஸோ யதா ரதம் நதீஷ்வா ஹஸ்தயோஃ ॥

அந்வயம்.

हर्यतः, प्रियः सूनुः न, मर्ज्यः, अर्जुनः, अत्के, आ अव्यत, तं, ईं, नदीषु, गभस्त्योः, अपसः रथं यथा, आहिन्वन्ति ॥

பதவுரை.

हर्यतः	ஹர்யதஃ	விரும்புதற் குரிய
प्रियः सूनुः न	ப்ரியஃ ஸூநுஃ ந	புதல்வனைப் போன்று
मर्ज्यः	மர்ஜ்யஃ	சமற்காரஞ் செய்யப்பெற்றதும்
अर्जुनः	சுஜுநஃ	வெண்மை நிறமுடையதுமாகிய சோமம்
अत्के	சுத்க	அழகிய வடிவு பெற்றவிடத்து
आ अव्यत	சூ சுவ்யத	வியாபிக்கின்றது. (நிறைகின்றது.)
तं	தம்	அத்தகைய
ईम्	ஈம்	இச் சோமத்தை
नदीषु	நதீஷு	'வசதீவரி' என்னும் நீரில்
गभस्त्योः	ஹஸ்தயோஃ	கைகளின் விரல்கள்
अपसः रथं यथा	சுபஸஃ ரதம் யதா	வீரன் துரிதமாய்ப் போரில் தேரைச் செலுத்துவது போல்
आहिन्वन्ति	சூ ஹிந்வந்தி	ஒருமுகமாய்ச் செலுத்துகின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

விரும்புதற்குரிய புதல்வன்போன்று விரும்பத்தக்கதும், சுத்தம் பண்ணப்பட்டதும், வெண்மை நிறமுடையதுமாகிய சோமம், அழகு பொருந்திய வடிவுடையதாய் வியாபிக்கின்றது; (நிறைகின்றது.) அத்தன்மைய

இச் சோமரசத்தை, 'வசதீவரி' என்னும் ஆற்று நீரில், கைகளின் விரல்கள் ஒருமைப்பட்டுச் செலுத்துகின்றன. அதிலுவமை:—வீரன் துரிதமாய்த் தேரைப் போரிற் செலுத்துவது போன்றென்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

१ २र ३ २ ३ १२ ३ १२
769. प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो * मघोनाम् ।
३ २ ३ १ २
सुता विदथे अक्रमुः ॥ १ ॥

ப்ர ஸொமாஸொ மதச்யுதஃ ஶ்ரவஸெ நொ மஹொநாம் ।
ஸுதா விததெ அக்ரமுஃ ॥

அந்வயம்.

मदच्युतः, सोमासः, सुताः, मघोनां, नः, श्रवसे, विदथे, प्र अक्रमुः ॥

பதவுரை.

मदच्युतः	மதச்யுதஃ	களிப்பைப் பெருக்குஞ்
सोमासः	ஸொமாஸஃ	சோமம்,
सुताः	ஸுதாஃ	சமற்காரம் பண்ணப்பெற்றதாய்
मघोनां	மஹொநாம்	அவிகளையுடைய
नः	நஃ	எமது
श्रवसे	ஶ்ரவஸெ	அன்னத்தின் பொருட்டு, அல்லது, கீர்த்தியின் பொருட்டு
विदथे	விததெ	வேள்வியின்கண்
प्र अक्रमुः	ப்ர அக்ரமுஃ	பிராப்தியாகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—மூன்றாவது மூன்றில், 1. சியாசுவர் ரிஷி.

மதத்தைப் பெருக்குவதும், பிழியப்பட்டதுமாகிய சோமம், அவிகளையுடைய நாங்கள் வேண்டிக்கொண்ட அன்னத்தின் பொருட்டும், கீர்த்தியின் பொருட்டும் வேள்வியின்கண் பிராப்தியாகின்றது. (1)

மந்திரம் 7.

१२ २ १ ३२ ३१ २ ३२
770. आदीꣳ हꣳसो यथा गणं विश्वस्यावीवशन्मतिम् ।
२ ३ १ २२
अत्यो न गोभिरज्यते ॥ २ ॥

ஆதீꣳ ஹꣳஸோ யதா கணம் விஶ்வஸ்யாவீவஶந்மதிம் ।
அத்யோ ந கோபிரஜ்யதே ॥

அந்வயம்.

आत्, ईम्, हंसः, गणं यथा, विश्वस्य, मतिं, अवीवशत्, अत्यः न, गोभिः, अज्यते ॥

பதவுரை.

आत्	ஆத்	மற்றும்,
ईम्	ஈம்	இச் சோமம்,
हंसः	ஹꣳஸः	அன்னப்பட்சி,
गणं यथा	கணம் யதா	சனக்கூட்டத்தில், தனது நடையுடன், அல்லது, ஒலியுடன் புகுகின்றது போன்று
विश्वस्य	விஶ்வஸ்ய	துதிப்போர்க ளனைவரின்
मतिं	மதிம்	துதியை, அல்லது, புத்தியை (அவரிடத்திற் புகுந்து)
अवीवशत्	அவீவஶத்	தன்வயப்படுத்துகின்றது. அத் தன்மைய சோமரசம்
अत्यः न	அத்யஃ ந	குதிரையைப் போன்று
गोभिः	கோபிஃ	ஆவின்பால் முதலியவற்றால்
अज्यते	அஜ்யதே	மேனியுடையதாகச் செய்யப்படுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

மற்றும், இச் சோமரசம், அன்னமானது தனது நடையின் சிறப்பால், அல்லது, ஒலியின் சிறப்பால் சனக்கூட்டத்திற் புகுவது போன்று, தோத்

திரம் பண்ணுகின்ற அனேவரின் துதியை, அல்லது, புத்தியை, (அங்குச் சென்று) தன்வயப்படுத்துகின்றது. அச் சோமம், குதிரையைப் போல ஆவின்பால் முதலியவற்றால், அல்லது, கீரால் நல்ல மேனியுடையதாகச் செய்யப்படுகின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 8.

१२ ३२३ १२३ १२ ३ १२
771. आदीं त्रितस्य योषणो हरिꣳ हिन्वन्त्यद्रिभिः ।
२३१ २ ३१२
इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥ ३–२१ ॥

இருக்கு 10-32-1-3-2.

ஆதீம் த்ரிதஸ்ய யோஷணோ ஹரிம் ஹிந்வந்த்யத்³ரிபி⁴꞉ ।
இந்த்³ரா²ய பீதயே ॥

அன்வயம்.

आत्, हरिं, ईं इन्दुं, त्रितस्य, योषणः, इन्द्राय पीतये, अद्रिभिः, हिन्वन्ति ॥

பதவுரை.

आत्	ஆத்	மற்றும்,
हरिं	ஹரிம்	பச்சை நிறமுடைய
ईम् इन्दुं	ஈம் இந்து³ம்	இச் சோமத்தை,
त्रितस्य	த்ரிதஸ்ய	திரித ரிஷியின்
योषणः	யோஷணः	விரல்கள்,
इन्द्राय पीतये	இந்த்³ராய பீதயே	இந்திரன் அருந்துதற் பொருட்டுக்
अद्रिभिः	அத்³ரிபி⁴꞉	கற்களால்
हिन्वन्ति	ஹிந்வந்தி	இடிக்கின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

அன்றியும், பசுமை நிறமுடைய இச் சோமத்தை, திரிதரிஷியின் விரல்கள் கற்களைக்கொண்டு இடிக்கின்றன. எதன் பொருட் டெனின்? இந்திரன் அருந்துதற் பொருட்டென்க. (3)

மந்திரம் 9.

३ १ २ ३ १ २र ३ २३ १२ ३ १२
772. *अया पवस्व देवयू रेभन् पवित्रं पर्येषि विश्वतः ।
२ ३ १२
मधोर्धारा असृक्षत ॥ १ ॥

இருக்கு 9-106-14.

சுயா வவஸ்வ தெவயூ ரெஹந் வவித்ரம் வயெஷி விஶ்வதஃ।
உயொர்தாரா அஸ்ருக்ஷத ॥

அன்வயம்.

(हे सोम!,) देवयुः, अया, पवस्व, रेभन्, पवित्रं विश्वतः पर्येषि, मधोः, धाराः, असृक्षत ॥

பதவுரை.

(हे सोम!)	(ஹே ஸோம!)	(சோமமே!)
देवयुः	தெவயூஃ	தேவர்களை விரும்புகின்ற நீ,
अया	சுயா	இத்தாரையால்
पवस्व	வவஸ்வ	ஒழுகுவாயாக. பின்னர்,
रेभन्	ரெஹந்	ஒலித்துக்கொண்டு
पवित्रं विश्वतः पर्येषि	வவித்ரம் விஶ்வதஃ வயெஷி	தசாபவித்திரமென்னும் ஆடை நுனிவழியாய்ச் செல்கின்றாய். பின்னர்,
मधोः	உயொஃ	களிப்பைத்தரும் உனது
धाराः	யாராஃ	தாரைகள்
असृक्षत	அஸ்ருக்ஷத	உண்டாகின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. முதலாவது மூன்றின், நாலாவது சூக்தத்தில்—1. அக்கினி ரிஷி.

சோமமே! தேவர்களை விரும்புகின்ற நீ, இத்தாரையா யொழுகுவா யாக. பின்னர், ஒலித்துக்கொண்டு பவித்திரமுடைய பாத்திரத்தில் எல்லா வகையானுஞ் செல்கின்றனை. பின்னர், களிப்பைக் கொடுக்கும் உன்னு டைய தாரைகள் உண்டாகின்றன. (ஒழுகுகின்றன.) (1)

* இருக்கு வேதத்தில் இரண்டாவது மூன்றுவது பாதங்கள் மாறுபடு கின்றன.

மந்திரம் 10.

१२ ३ १३२३ १२ ३ १ २
773. पवते हर्यतो हरिरतिह्वराꣳसि रꣳह्या ।
३क २र३ १२ ३२ ३१ २
अभ्यर्षंस्तोतृभ्यो वीरवद्यशः ॥ २ ॥

இருக்கு 9-106-13.

பவதெ ஹய்ஹதொ ஹரிரதிஹ்வராஂஸி ரஂஹ்யா ।
அஹ்யஷ்ஷஂஸ்தொதுஹ்யொ வீரவத்யஶஃ ॥

அந்வயம்.

हर्यतः, हरिः, स्तोतृभ्यः, वीरवत्, यशः, अभ्यर्षन्, रंह्या, ह्वरांसि, अतिपवते ॥

பதவுரை.

हर्यतः	ஹய்ஹதஃ	விரும்புதற்குரியதும்
हरिः	ஹரிஃ	பசுமை நிறத்தை யுடையதுமாகிய சோமம்,
स्तोतृभ्यः	ஸ்தொதுஹ்யஃ	துதிப்போர்கட்குப்
वीरवत्	வீரவத்	புதல்வனுடன்
यशः	யஶஃ	கீர்த்தியையும்
अभ्यर्षन्	அஹ்யஷ்ஷந்	கொடுக்குமாறு செய்து
रंह्या	ரஂஹ்யா	மிக விரைவுடன்
ह्वरांसि	ஹ்வராஂஸி	சுழற்சியுடையதாய்த்
अतिपवते	அதிபவதெ	ஒழுகிச் செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—முதலாவது சூக்தமாகிய ஐந்தில்—1.

விரும்புதற்குரிய பசுமை நிறமுடைய சோமரசம், இனிய வேகத்தாற் சுழற்சியுடையதாய்ப் பவித்திரத்தையுடைய பாத்திரத்தின்கண் செல்கின்றது. என்ன செய்துகொண்டு செல்கின்றதெனின்? புதல்வனுடன் கீர்த்தியையுங் கொடுத்துவிட்டுச் செல்கின்றதென்க. (1)

மந்திரம் 11.

१ २ ३ १ २र३ २ ३ १ २ ३ १२र
774. प्र सुन्वानायान्धसो मर्त्तो न वष्ट तद्वचः ।
३ १२ ३१३ ३ २ ३ १ २र
अप श्वानमराधसꣳ हता मखन्न भृगवः ॥ ३–२२ ॥

இருக்கு 9-101-13.

ஒர் ஹ்வா நாயாந்ஹொ உதூ நவஷ்ட அஹஃ।
சுவ ஷ்வா நரராயஸம் ஹதா வஜ ஹ்ரமவஃ ॥

அன்வயம்.

सुन्वानाय, अन्धसः, तत्, वचः, मर्त्तः, न प्रवष्ट, (हे स्तोतारः !,) अराधसं, श्वानं, भृगवः मखं न, अपहत ॥

பதவுரை.

सुन्वानाय	ஸுன்வானாய	பிழியப்பெற்ற
अन्धसः	அந்ஸஃ	சோமத்தினுடைய
तत्	தத்	கீர்த்தி வாய்ந்த
वचः	வசஃ	ஒலியை,
मर्त्तः	மர்த்தாஃ	கருமத்திற்குத் தடை செய்கின்ற பிராணிகள்
न प्रवष्ट	ந ப்ரவஷ்ட	கேளா தொழியுமாறு
(हे स्तोतारः !)	(ஹே ஸ்தோதாரஃ !)	(துதிப்போர்காள் ! நீவிர்)
अराधसं	அராதஸம்	அநுகூலச் செய்கையற்ற
श्वानं	ஷ்வானம்	நாயை,
भृगवः मखं न	ப்ருகவஃ மகம் ந	தோடமுடைய வேள்வியை, பிருகுரிஷி முன்னர் நீக்கியது போன்று
अपहत	அபஹத	ஓட்டுவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—முதலாமாறில்—1.

கீர்த்தியுள்ளதும், பிழியப்பெற்றதுமாகிய சோமரசத்தின் ஒலியை, கருமத்திற் கிடையூறு செய்கின்ற (உயிர்கள்) கேட்காதவண்ணம், துதிப் போர்காள் ! நீவிர், அநுகூலச் செய்கை யின்றிய நாயை ஓட்டுவீர்களாக. அதிலுவமை :—முன்னர், குற்றமுடைய வேள்வியை, பிருகுரிஷி சம்பந்த மானவர்கள் விலக்கியது போன்றென்பதாம். (1)

ஆறுவது கண்டம்.

முற்றும்.

சாமவேத உத்தரார்ச்சிகத்தின்

இரண்டாமத்தியாயமும்

முற்றியது.

மூன்றுவது அத்தியாயம்.

இவ் வத்தியாயத்திலுள்ள மந்திரங்கட்குத் தேவதைகள்: —1, 5, 10, 15, 17, பவமானம். (சோமம்.) 6, அக்கினி. 7, மித்திர வருணர்கள். 8, 12, 14, 18, 19, இந்திரன். 9, இந்திரன். அக்கினி.

சந்தங்கள் :—1, 10, 15, 18, காயத்திரி. 11, திருஷ்டுப். 12, 14, பிரகாதம். 13, 18, அனுஷ்டுப். 17. சகதி.

சுவரங்கள் :—1, 10, 15, 18, ஷட்சம். 11, தைவதம். 12. 14. மத்திய மம். 16, 18, காந்தாரம். 17, நிஷாதம்.

முதலாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—2. முதற்பாதி. அத்தியாயம்—3. கண்டம்—1.

பதினேந்து மந்திரங்களாலானது.

யாரிடத்திலிருந்து வேதங்களுண்டாயினவோ, வேதங்களினின்று எவர் உலகனைத்தையு முண்டாக்கினரோ, அவ் வித்தியாதீர்த்த மகேசுரரை வணங்குகின்றேன்.

மந்திரம் 1.

१२ ३ १ २ ३ १ २२ ३ १ २ ३ १ २

775. **पवस्व वाचो अग्रियः सोम चित्राभिरूतिभिः ।**

३ १ २२ ३ १ २

अभि विश्वानि काव्या ॥ १ ॥

பவஸ்வ வாசோ அக்ரியஃ ஸொம சித்ராபிரூதிபிஃ ।
அபி விஶ்வானி காவ்யா ॥

அந்வயம்.

हे सोम !, अग्रियः, चित्राभिः, ऊतिभिः, वाचः, पवस्व, विश्वानि, काव्या, अभि पवस्व ॥

பதவுரை.

हे सोम !	ஹே ஸொம !	சோமமே !
अग्रियः	அக்ரியஃ	முதன்மையாகிய நீ,
चित्राभिः	சித்ராபிஃ	போற்றத்தக்க அநேக

ऊतिभिः	ஊதிபிஃ	பாதுகாப்புக் (உதவி) களுடன்
वाचः	வாஅஃ	எனது துதியை
पवस्व	பவஸ்வ	ஏற்றுக்கொள்வாயாக.
विश्वानि	விஸ்வாநி	எல்லாத்
काव्या	காவ்யா	துதிவாக்கியங்களையும்
अभि पवस्व	அபி பவஸ்வ	ஏற்றுக்கொள்வாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—ஐந்தாவது மூன்றனுள் முதல் மூன்றில்—1. சமதக்கினி ரிஷி.

சோமமே! முக்கியனாகிய நீ, போற்றத்தக்க பாதுகாப்புக்களுடன் (உதவிகளைச் செய்வதோடு) என்னுடைய தோத்திரத்தை யேற்றுக்கொள் வாயாக. பிற்பாதியிற் கூறிய பொருளே விரிக்கப்படுகின்றது:— தோத்திர மாகிய வாக்கியங்களனைத்தையும் பெற்றுக்கொள்வாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१ २३ १ २ ३ २ ३ १ २२ ३१२

776. **त्वꣳ समुद्रिया अपोऽग्रियो वाच ईरयन् ।**

२३

पवस्व * विश्वचर्षणे ॥ २ ॥

சுவம் ஸமுத்ரியா அபொஃக்ரியொ வாச ஈரயந் ।

பவஸ்வ விஸ்வசர்ஷணே ॥

அந்வயம்.

विश्वचर्षणे, अग्रियः त्वं, वाचः, ईरयन्, समुद्रियाः, अपः, पवस्व ॥

பதவுரை.

हे विश्वचर्षणे!	ஹெ விஸ்வசர்ஷணே!	எல்லாவற்றையுங் காண்போய்!
अग्रियः त्वं	அக்ரியஃ சுவம்	முதன்மையாகிய சோமமே! நீ,
वाचः	வாசஃ	வாக்கை
ईरयन्	ஈரயந்	மேலே செலுத்துவோனாகி
समुद्रियाः	ஸமுத்ரியாஃ	(வானின்) அந்தரிட்சத்திலுள்ள
अपः	அபஃ	நீரைப்
पवस्व	பவஸ்வ	பெய்விப்பாயாக.

* विश्वमेजय, என்பது இருக்கு.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

அனைத்தையுங் காண்போய்! சோமமே! தலைமையாகிய நீ, மேலே வாக்கைச் செலுத்துவோனாய் அந்தரிட்சத்திலுள்ள நீரை, தாரையாற் பெய்விப்பாயாக. (2)

மந்திரம் 3.

२ ३ १ २र ३ १ २
777. तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे ।
१ २ ३ १२
* तुभ्यं धावन्ति धेनवः ॥ ३–१॥

இருக்கு 9-62-25-27.

துஹ்யேமா ஹுவநா கவெ மஹிம்நெ ஸொம தஸ்திரெ ।
துஹ்யம் யாவந்தி யெநவ: ॥

அந்வயம்.

हे कवे सोम!, तुभ्यं, महिम्ने, इमा भुवना, तस्थिरे, धेनवः, तुभ्यं, धावन्ति ॥

பதவுரை.

हे कवे सोम!	ஹெ கவெ ஸொம!	எண்ணிலாக் கருமங்கட்குத் தலைமையாகிய சோமமே!
तुभ्यं	துஹ்யம்	நினது
महिम्ने	மஹிம்நெ	மகிமையின் பொருட்டு
इमा भुवना	உமா ஹுவநா	இப் புவனம்
तस्थिरे	தஸ்திரெ	நிலைத்திருக்கின்றது.
धेनवः	யெநவ:	அவிகொடுத்துத் தேவர்களைக் களிப்புறச் செய்யும் ஆக்களும்
तुभ्यं	துஹ்யம்	நின்பொருட்டே
धावन्ति	யாவந்தி	ஓடி வருகின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

எல்லையற்ற கருமங்கட்குத் தலைமையாகிய சோமமே! நினது மகிமையின் பொருட்டு இப் புவனங்கள் நிலைத்திருக்கின்றன. உன்னைப்பற்றியே

* तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः, என்பது இருக்கு.

நிற்கின்றன என்பது பொருள். மற்றும், புதிதாயீன்ற கன்றுகளையுடையன வும், தேவர்களை அவிகொடுப்பதாற் பிரியப்படுத்துவனவுமான ஆக்கள் "எங் களை வழிபடுவாயாக" என, நின்னைக்குறித்து ஓடிவருகின்றன என்பதாம்.

மந்திரம் 4.

१२ ३ १२ ३२ ३ १ २ ३२३ १२
778. पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने ।
२ ३ २३ १ २
विश्वा अप द्विषो जहि ॥ १ ॥

வவஸ்வேந்தோ வ்ருஷா ஸுதः க்ருதீ நோ யஸஸோ ஜநே
விஸ்வா அப த்விஷோ ஜஹி ॥

அந்வயம்.

हे इन्दो!, सुतः, वृषा, पवस्व, जने, नः, यशसः, कृधि, विश्वा द्विषः, अपजहि ॥

பதவுரை.

हे इन्दो!	ஹே இந்தோ!	சோமனே!
सुतः	ஸுதः	பிழியப் பெற்றவனும்
वृषा	வ்ருஷா	விரும்பியவற்றைப் பொழிபவனு மாகிய நீ,
पवस्व	வவஸ்வ	தாரையா யொழுகுவாயாக.
जने	ஜநே	சனங்களுக்குள்
नः	நः	எங்களைக்,
यशसः	யஸஸः	கீர்த்திமான்களாகச்
कृधि	க்ருதி	செய்வாயாக.
विश्वा द्विषः	விஸ்வா த்விஷः	பகைவர்க ளனைவரையும்
अपजहि	அபஜஹி	கொல்வாயாக.

சாயண பாடியம்

கண்டம்—1. இருக்கு—இரண்டாம் மூன்றில் 1. அமகீயு ரிஷி.

சோமனே! பிழிதல் முதலிய சமற்காரத்தைப் பண்ணப்பெற்றவனும், விருப்பத்தைப் பொழிகின்றவனுமாகிய நீ, தாரையாற் பெருகுவாயாக. சனக்கூட்டத்துள் எங்களைப் பெருமைவாய்ந்தவர்களாகச் செய்வாயாக. மற் றும், சத்துருக்களனைவரையும் கொல்வாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

१ २ ३ २ ३१ २ ३ १ २ ३२
779. यस्य ते सख्ये वयꣳ सासह्याम पृतन्यतः ।
१२ ३ १ २ ३२
तवेन्दो द्युम्न उत्तमे ॥ २ ॥

யஸ்ய தெ ஸக்²யெ வயம் ஸாஸஹ்யாம ப்ருதன்யதः ।
தவெந்தோ த்³யு²ம்ன உத்தமெ ॥

அன்வயம்.

இன்தோ!, யஸ்ய தே, ஸக்²யே வயம், தவ, உத்தமே, த்³யு²ம்னே, ப்ருதன்யதः, ஸாஸஹ்யாம ॥

பதவுரை.

इन्दो!	உந்தோ!	சோமமே!
यस्य ते	யஸ்ய தெ	உன்னுடைய
सख्ये वयं	ஸக்²யெ வயம்	நண்பர்களானபோதே, (துதிப் போர்களான யாங்கள்,)
तव	தவ	உன்னுடைய
उत्तमे	உத்தமெ	சிறந்த
द्युम्ने	த்³யு²ம்னெ	அன்னத்தில் திருப்தி யடைந் தோம்.
पृतन्यतः	ப்ருதன்யதः	உயுத்தத்தை விரும்புகின்ற சத் துருக்களையும்
सासह्याम	ஸாஸஹ்யாம	பழித்து அடக்கிவிடுவோம்

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

சோமமே! இவ் வேள்வியிலிருக்கப்பெற்ற உனது நண்பனுந் தன்மையை யடைந்தபோது, தோத்திரம் பண்ணுவோர்களான நாங்கள், உன்னுடைய சிறந்த அன்னத்தில் திருப்தியடைந்தவர்களாவோம். 'த்யும்நம்' என்பது அன்னமென நிருத்தங் கூறுகின்றது. மற்றும், போரை விரும்பின சத்துருக்களையும் நாங்க ளடக்கிவிடுவோ மென்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २
780. *या ते भीमान्यायुधा तिग्मानि सन्ति धूर्वणे ।
१ २ ३२
रक्षा समस्य नो निदः ॥ ३—२ ॥

இருக்கு 9-61-28-30.

* இருக்கில் இரண்டாவது மூன்றுவது பாதத்தில் மாற்றம்.

ꣳ தெ ஸோஅ ந்ராயꣳயா தி꣡஗்மாநி ஸஞ்ஜி ꣳ ஏவ꣡ஂணை ।
ரக்ஷா ஸஉஸ்ய நொ நிஉ꣡꣫꣫꣫

அந்வயம்.

हे सोम !, वृषा, द्युमान्, असि, देव !, वृषा, वृषव्रतः, वृषा, धर्माणि, दध्रिषे ॥

பதவுரை.

हे सोम !	ஹெ ஸொம !	சோமமே !
वृषा	வ்ருஷா	விரும்பியதைப் பொழிகின்ற நீ,
द्युमान्	த்யூமாந்	கீர்த்தி யுடையவனாய்
असि	அஸி	இருக்கின்றாய்.
देव !	தெவ !	சோமத்தை யதிட்டிக்குந் தேவனே !
वृषा	வ்ருஷா	இச்சையை நிறையச் செய்கின்ற நீ,
वृषव्रतः	வ்ருஷவ்ரதஃ	விரும்பியதை நிறைவேற்றுதற் பொருட்டு விரதங் கொண்டனை.
वृषा	வ்ருஷா	விரும்பியவைகளை நிறைக்கின்ற நீ,
धर्माणि	தர்மாணி	தேவ, மநுடர்களின் நற் கருமங்களைத்
दध्रिषे	தத்ரிஷெ	தாங்கிக்கொண்டிருக்கின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—மூன்றாம் மூன்றில்—1.

சோமமே ! இச்சித்தவைகளைப் பொழிகின்ற நீ, பிரகாசமுடையவனாயிருக்கின்றாய். மற்றும், ஒளியுடையவனே ! வேண்டியதை யளிக்கும் நீ, விரும்பியதைக் கொடுக்குங் கருமமுடையோனாயு மிருக்கின்றாய். அன்றியும், சோமமே ! அத் தன்மையனாகிய நீ, தேவர்களுக்கும், மனிதர்களுக்கும் இனியவைகளான கருமங்களைத் தாங்கிக்கொண் டிருக்கின்றனை என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ ३ २ ३ २
782. वृष्णस्ते वृष्ण्यꣳ शवो वृषा वनं *वृषा सुतः ।
१ २र १ २र
†स त्वं वृषन् वृषेदसि ॥ २ ॥

வ்ருஷ்ணஸ்தெ வ்ருஷ்ண்யம் ஶவொ வ்ருஷா வநம் வ்ருஷா ஸுதஃ ।
ஸ ஸ்வம் வ்ருஷந் வ்ருஷெதஸி ॥

---

* वृषा मदः, † सत्य, என்பன இருக்கு.

அந்வயம்.

हे वृषन्!, वृष्णः, ते, शवः, वृष्ण्यं, वनं, वृषा, सुतः, वृषा, सः त्वं, वृषेत् असि ॥

பதவுரை.

हे वृषन्!	ஹெ வ்ருஷந்!	விரும்பியதைப் பொழிவோய்!
वृष्णः	வ்ருஷ்ணஃ	வரம்பின்றிக் கொடுக்கின்றவனுகிய
ते	தெ	உன்னுடைய
शवः	ஶவஃ	ஆற்றல்,
वृष्ण्यं	வ்ருஷ்ண்யம்	விரும்பியவற்றைக் கொடுப்பதாம்.
वनं	வநம்	உனது வழிபாடும்
वृषा	வ்ருஷா	விரும்பியவற்றைக் கொடுப்பதேயாம்.
सुतः	ஸுதஃ	உனது இரசமும்
वृषा	வ்ருஷா	விரும்பியவற்றைக் கொடுக்கத் தக்கதேயாம்.
सः त्वं	ஸஃ த்வம்	அத்தன்மைய நீ,
वृषेत् असि	வ்ருஷேத் அஸி	விரும்பியவற்றை யெல்லாம் பொழிகின்றவனுகவே யிருக்கின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

விரும்பியவற்றைப் பொழிகின்ற சோமமே! உன்னுடைய ஆற்றல், வேண்டியவற்றைக் கொடுக்கின்ற சீலமுடையதேயாம். உன்னுடைய வழிபாடும் விரும்பியவற்றைக் கொடுப்பதுவேயாம். பிழியப்பெற்ற உனது இரசமும் விரும்பியவற்றைக் கொடுக்குஞ் சீலமுடையதேயாம். அத்தன்மைய நீ, விரும்பியவற்றை யெல்லாங் கொடுக்குஞ் சீலமுடையவனுகவே யிருக்கின்றாய் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 9.

१ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १२र

783. अश्वो न चक्रदो वृषा सङ्गा इन्दो समर्वतः ।

१ २ ३१ २र

वि नो राये दुरो वृधि ॥ ३–३ ॥

இருக்கு 9-64-1-3.

சுஷ்வா ந சக்ரஷோ வ்ருஷா வஜ்ரா ஊஷோ வஸவ்யதஃ
வி நோ ராயே துரோ வ்ருதி ॥

அன்வயம்.

इन्दो!, वृषा, अश्वः न, सञ्चक्रदः, गाः, अर्वतः, संप्रयच्छसि, नः, राये, दुरः, विवृधि ॥

பதவுரை.

इन्दो!	உந்தோ!	சோமமே!
वृषा	வ்ருஷா	விரும்பியவற்றைப் பொழிகின்ற நீ,
अश्वः न	அச்வஃ ந	குதிரை போன்று
सञ्चक्रदः	ஸஞ்சக்ரதஃ	ஒலிக்கின்றனை. மற்றும்,
गाः	காஃ	பசுக்களையும்
अर्वतः	அர்வதஃ	குதிரைகளையும்
संप्रयच्छसि	ஸம்ப்ரயச்சஸி	எங்களுக்குக் கொடுப்பாயாக. மற்றும்,
नः	நஃ	எங்களுக்கு
राये	ராயே	தனத்தின் பொருட்டு
दुरः	துராஃ	(அதன்) வருவாயையுந்
विवृधि	விவ்ருதி	திறந்துவிடுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

சோமமே! விரும்பியதைப் பொழியும் நீ, குதிரைபோன்று கத்துகின்றனை. மற்றும், நீ, ஆக்களையும் அசுவங்களையும் எங்கட்குக் கொடுப்பாயாக. அஃதன்றியும், எங்களுக்கு (தனங்கிடைத்தற்குரிய) வருவாயையுந் திறந்துவிடுவாயாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 10.

२ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २
784, वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे ।
१२ ३ १२
पवमान स्वर्दृशम् ॥ १ ॥

வ்ருஷா ஹ்யஸி பானுநா த்யுமந்தம் த்வா ஹவாமஹே ।
பவமான ஸ்வர்த்ருசம் ॥

அன்வயம்.

(हे सोम !,) हि, वृषा असि, पवमान !, स्वर्दृशं, भानुना, द्युमन्तं, त्वा, हवामहे ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹே ஸோம !)	(சோமமே ! நீ,)
हि	ஹி	உறுதியாக
वृषा असि	வ்ருஷா அஸி	விரும்பிய பயன்களைப் பொழிகின்றவனுகின்றாய். (ஆதலின்)
पवमान !	பவமான !	சோமமே !
स्वर्दृशं	ஸ்வர்-த்ருஶம்	எல்லாத் தேவதைகளாலும் பார்த்தற்குரிய
भानुना	பா-நு-நா	ஒளியால்
द्युमन्तं	த்யு-மந்தம்	பிரகாசிக்கின்ற
त्वा	த்வா	உன்னை
हवामहे	ஹவாமஹே	வேள்விக்கு அழைக்கின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—நான்காம் மூன்றில்—1. சமதக்கினி ரிஷி.

சோமமே ! நீ, உண்மையாய் விரும்பிய பயனைப் பொழிபவனுகின்றனை. ஆதலின், புனிதமாகிய சோமமே ! நீ, சூரியனாலும், அல்லது, எல்லாத் தேவர்களாலும் பார்த்தற்குரிய ஒளியால் வியப்புடன் விளங்குகின்றனை. அல்லது, தோத்திரமுடைய உன்னை, வேள்விகளுக்கு நாங்கள் அழைக்கின்றோம் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 11.

२३ १ २३ १२ ३ १२ ३१२

785. यदद्भिः परिषिच्यसे * मर्मृज्यमान आयुभिः ।
१२३१२
द्रोणे सधस्थमश्नुषे ॥ ३ ॥

யத³த்³பி⁴꞉ பரிஷிச்யஸே மர்ம்ருஜ்யமான ஆயுபி⁴꞉ ।
த்³ரோணே ஸத⁴ஸ்த²மஶ்னுஷே ॥

அன்வயம்.

(हे सोम ! त्वं,) आयुभिः, मर्मृज्यमानः, अद्भिः, यद्, परिषिच्यसे, द्रोणे, सधस्थं, अश्नुषे ॥

---

* मृज्यमानो गभस्त्यो वृषा, என்பது இருக்கு.

பதவுரை.

(हे सोम! त्वं)	(ஹே ஸோம! த்வம்)	(சோமமே! நீ)
आयुभिः	ஆயுபி4:	வேட்போர்களால்
मर्मृज्यमानः	மர்ம்ருஜ்யமாந:	முழுதுஞ் சுத்தம் பண்ணப்பட்டு
अद्भिः	அத்3பி4:	வசதீவரி நீரால்
यद्	யத்	எப்போது
परिषिच्यसे	பரிஷிச்யஸே	பலவாற்றலுங் தெளிக்கப்படுகின்றனையோ, அப்போது
द्रोणे	த்3ரோணே	துரோண கலசத்தினின் றெடுக்கப்பெற்று
सधस्थं	ஸத4ஸ்த2ம்	அகப்பை முதலியவைகளை
अश्नुषे	அச்நுஷே	அடைகின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

சோமமே! நீ, வேட்போர்களால் நன்கு சுத்தம்பண்ணப்பட்டு 'வசதீவரி' என்னும் ஆற்று நீரால் எப்போது நாற்புறமும் நனைக்கபடுகின்றனையோ, அப்போது, சோமரசம் வைக்கும் துரோண கலசத்திற் கொள்ளப்பட்டவனுப், அகப்பை முதலியவைகளைப் பற்றிக்கொள்கின்றனை என்பதாம். (2)

மந்திரம் 12.

१ २ ३२ ३ १ २
786. आ पवस्व सुवीर्यं मन्दमानः स्वायुध ।
३ १ २ ३ १ २
इहोष्विन्दवागहि ॥ ३–४ ॥

இருக்கு 9-65-4-6-5.

ஆ பவஸ்வ ஸுவீர்யம் மந்த3மாந: ஸ்வாயுத4 ।
இஹோஷ்விந்த3வாக3ஹி ॥

அந்வயம்.

स्वायुध, (हे सोम! त्वं,) मन्दमानः, सुवीर्यं, आपवस्व, इन्दो!, इह उ, सु आगहि ॥

பதவுரை.

स्वायुध	ஸ்வாயுத4	நல்ல ஆயுதங்களை யுடைய
(हे सोम! त्वं)	(ஹே ஸோம! த்வம்)	(சோமமே! நீ,)

मन्दमानः	ஸந்தமாநஃ	தேவர்களுக்குக் களிப்புண்டாக்குவோனும்,
सुवीर्यं	ஸுவீர்யம்	சிறந்த வீரமுடையவனுமிருக்கும் புத்திரன் முதலானவர்களை
आ पवस्व	ஆ பவஸ்வ	எனக்கு அளிப்பாயாக. மற்றும்,
इन्दो!	இந்தோ!	சோமமே!
इह उ	இஹ உ	என்னுடைய இவ் வேள்வியின் கண்
सु आगहि	ஸு ஆகஹி	நன்கு வருவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

வேள்வியிலுள்ளவைகள், கத்தி, கபாலம், என்பது முதலிய பத்து ஆயுதங்களெனப்படுகின்றன. அவ் வாயுதங்களைத் தாங்கிய அத்தகைய சோமமே! நீ, தேவர்களைக் களிப்படையுமாறு செய்து, மிகுந்த வீரமுடைய புதல்வன் முதலியோர்களை எங்களுக்குக் கொடுப்பாயாக. மற்றும், சோமமே! அகப்பை முதலியவைகளில் ஓழுகுந் தன்மையுடைய நீ, ஈண்டு எமது வேள்விக்கு நன்கு வருவாயாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 13.

१२ ३२ ३१२ ३२
787. **पवमानस्य ते वयं पवित्र मभ्युन्दतः ।**
३ १ २२
सखित्वमा वृणीमहे ॥ १ ॥

பவமாநஸ்ய தெ வயம் பவித்ர மப்யுந்தஃ ।
ஸகித்வமா வ்ருணீமஹெ ॥

அன்வயம்.

(हे सोम!,) वयं, पवित्रं अभ्युन्दतः, पवमानस्य, ते, सखित्वं, आवृणीमहे ॥

பதவுரை.

(हे सोम!)	(ஹெ ஸோம!)	(சோமமே!)
वयं	வயம்	நாங்கள்
पवित्रं अभ्युन्दतः	பவித்ரம் அப்யுந்தஃ	பாத்திரத்தை ஈரமாய்ச் செய்து கொண்டு

पवमानस्य	வவஸாநஸ்ய	தாரையாலொழுகுகின்றவனுகிய
ते	தெ	உனது
सख्यं	ஸக்யம்	நட்பை
आवृणीमहे	ஆவ்ருணீமஹெ	வேண்டுகின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—ஐந்தாவது மூன்றில்—1. அமகீயு ரிஷி.

சோமமே! பவித்திரமாகிய பாத்திரத்தில் ஈரமாயொழுகும் உன்னுடைய நட்பை அமகீயுவின் சம்பந்தமுள்ள ஆங்கிரசர்களான நாங்கள் (துதிப்போர்கள்) வேண்டுகின்றோம் என்பதாம். (1)

மந்திரம். 14.

१ २ ३ १ ३ ३ १ ३ ३ १ ३ १२

788. **ये ते पवित्रमूर्मयोऽभिक्षरन्ति धारया ।**

१ २

तेभिर्नः सोम मृडय ॥ २ ॥

யெ தெ வவித்ரமூர்மயோऽபிக்ஷரந்தி தாரயா ।

தெபிர்நஃ ஸோம ம்ருடய ॥

அன்வயம்.

हे सोम!, ते, ये ऊर्मयः, धारया, पवित्रं अभिक्षरन्ति, तेभिः, नः, मृडय ॥

பதவுரை.

हे सोम!	ஹெ ஸோம!	சோமமே!
ते	தெ	உன்னுடைய
ये ऊर्मयः	யெ ஊர்மயஃ	எந்த அலைகள்
धारया	தாரயா	தாரையால்
पवित्रं अभिक्षरन्ति	வவித்ரம் அபி க்ஷரந்தி	பவித்திரமாகிய பாத்திரத்தில் துளித் துளியாய் ஒழுகுகின்றனவோ,
तेभिः	தெபிஃ	அந்த அலைகளால்
नः	நஃ	எங்களுக்குச்
मृडय	ம்ருடய	சுகங் கொடுப்பாயாக,

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

சோமமே! உன்னுடைய எவ் வலிகள் பவித்திரமென்னும் பாத்திரத்தில் தாரையாய் வழிந்தோடுகின்றனவோ, அவ் வலிகளால் எங்களைச் சுகப்படுத்துவாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 15.

१ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

789. स नः पुनान आभर रयिं वीरवतीमिषम् ।

१ २ ३ १२

ईशानः सोम विश्वतः ॥ ३–५ ॥

இருக்கு 9-61-4-6.

ஸ நஃ வ॑ஸ்நாந ஆ॒ஹர ர॒யிம் வீ॑ரவ॒தீமிஷ॑ம் ।

ஈ॑ஶாநஃ ஸோம விஶ்வ॒தஃ ॥

அன்வயம்.

हे सोम!, विश्वतः, ईशानः, सः, अभिषुतः, पुनानः, नः, वीरवतीं, रयिं, इषं, आभर ॥

பதவுரை.

हे सोम!	ஹெ ஸோம!	சோமமே!
विश्वतः	விஶ்வ॒தஃ	உலகனைத்திற்கும்
ईशानः	ஈ॑ஶாநஃ	இறைவனுகிய
सः	ஸஃ	அத்தன்மைய நீ,
अभिषुतः	அஹிஷ்॑ஸ்துதஃ	சமற்காரம் பண்ணப்பெற்றுப்
पुनानः	வ॑ஸ்நாநஃ	புனிதமாகியவனுய்
नः	நஃ	எங்களுக்கு
वीरवतीं	வீ॑ரவ॒தீம்	புத்திரனுடன்,
रयिं	ர॒யிம்	தனத்தையும்,
इषं	இஷ॑ம்	அன்னத்தையுங்
आभर	ஆ॒ஹர	கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

சோமமே! நீ, உலகனைத்திற்கும் இறைவனுகின்றனை. சமற்காரம் பண்ணப்பட்டுப் பவித்திரமாகிய அத்தன்மைய நீ, எங்களுக்குப் புதல்வனுடன், தனத்தையும், அன்னத்தையுங் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (3)

முதலாவது கண்டம்
முற்றும்.

இரண்டாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—2. அத்தியாயம்— 3. கண்டம்—2.

பதின்மூன்று மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १२
790. अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।
३ २ ३१ २ ३ १२
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ १ ॥

ꣳꣳ ऽग्निं ऽऽदूतं व्ऱृणीऽहे ऽहोऽतारं ऽविꣳऽवेऽदसं । ऽअꣳऽस्य यज्ञꣳऽस्य ऽसुऽक्रऽतुं ॥

அந்வயம்.

होतारं, विश्ववेदसं, अस्य यज्ञस्य, सुक्रतुं, दूतं, अग्निं, वृणीमहे ॥

பதவுரை.

होतारं	ஹொதாரம்	தேவதைகளை யழைப்பதும்,
विश्ववेदसं	விஶ்வவெதஸம்	தனங்களனைத்துடன் கூடியதும்,
अस्य यज्ञस्य	அஸ்ய யஜ்ஞஸ்ய	இவ் வேள்வியின் முதற் காரணமானதால்
सुक्रतुं	ஸுக்ரதும்	நற் கருமமுடையதும்,
दूतं	தூதம்	அவியைச் சேர்ப்பிப்பதுமாகிய
अग्निं	அக்நிம்	அக்கினியை,
वृणीमहे	வ்ருணீமஹே	இக் கருமத்தில் வழிபடுகின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—முதல் மூன்றில்—1.

அக்கினியைத் தூதுவன் என்பது இம் மந்திரத்தின் உரையில் "அக்கினி தேவன் தேவதைகளின் தூதனு யிருக்கின்றான்" என, தைத்திரீயப் பிராமணங் கூறுகின்றது. அத்தன்மைய தூதனுகிய அக்கினிதேவனை இக் கருமத்தில் வழிபடுகின்றோம். மற்றும், எத்தன்மைய அக்கினி தேவனை யெனின்? தேவர்களை யழைப்பவனும், தனங்களனைத்துடன் கூடியவனும்,

தொடங்கிய இவ் வேள்விக் கருமத்திற்கு முதற் காரணமானதால் நற் கருமமுடையானுமானவனே யென்க. அல்லது, நல்லறிவை யுடையவனே, வழிபடுகின்றோம் என முடித்துக்கொள்க. (1)

மந்திரம் 2.

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
791. अग्निमग्निꣳ हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम् ।
३ १ २ ३ २
हव्यवाहं पुरुप्रियम् ॥ २ ॥

ꣳꣳꣳ

போர்கள் அழைக்கின்றார்கள். எவ்விதமாகிய அக்கினியை யெனின்? நீ கைகளை, அல்லது வேட்போர்களைக் காப்பாற்றுகின்றதை யென்க. (மற்றும்) வேள்வித் தலைவன் கொடுத்த தேவ வுணவை, தேவர்களுக்குக் கொண்டுபோகப்பட்டதை யென்க. இதனுனே, அநேக தேவர்களுக்குப் பிரியமானதை அழைக்கின்றார்கள் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

१२३२ ३११ ३२३१२
792. अग्ने देवाँ इहावह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे ।
२३ १२३१२
असि होता न ईड्यः ॥ ३–६ ॥

இருக்கு 1-12-1-3.

அகுனெ தெவாம் இஹாவஹ ஜஜ்ஞாநொ வ்ருக்தவர்ஹிஷெ ।
அஸி ஹொதா ந ஈட்யஃ ॥

அந்வயம்.

हे अग्ने !, जज्ञानः, वृक्तबर्हिषे, इह, देवान्, आवह, नः, होता, ईड्यः असि ॥

பதவுரை.

हे अग्ने !	ஹெ அகுனெ !	அக்கினி தேவனே !
जज्ञानः	ஜஜ்ஞாநஃ	தீக்கடைக்கோலா லுண்டாகிய நீ,
वृक्तबर्हिषे	வ்ருக்தவர்ஹிஷெ	விரிப்பதற்குக் கொய்த தருப்பையுடன் கூடிய வேள்வித் தலைவனுக்கு அருள் செய்வதன் பொருட்டு
इह	இஹ	இக் கருமத்தில்
देवान्	தெவாந்	அவியுண்ணுந் தேவர்களை
आवह	ஆவஹ	அழைப்பாயாக.
नः	நஃ	எங்கட்காகத்
होता	ஹொதா	தேவர்களை யழைக்கும் நீ
ईड्यः असि	ஈட்யஃ அஸி	போற்றத் தக்கோனு யிருக்கின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

அக்கினியே! அரணிக்கட்டையிலிருந் துண்டாகிய நீ, விரிப்பதற்கு நறுக்கிய தருப்பையைக் கைக்கொண்ட வேள்வித் தலைவனுக்கு அதுக்கிர

கித்தற் பொருட்டு இவ் வேள்விக் கருமத்தில் அவியுண்ணுந் தேவர்களை அழைப்பாயாக. எங்களிடத்தமாய்த் தேவர்களை யழைக்கின்ற நீ போற்றத் தக்கோனு யிருக்கின்றாய் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

३ २ ३ १ ३ ३ १२ ३ १ २
793. मित्रं वयꣳ हवामहे वरुणꣳ सोमपीतये ।
२ ३ २ ३१२
या जाता पूतदक्षसा ॥ १ ॥

மித்ரம் வயம் ஹவாமஹே வருணம் ஸோமபீதயே ।
யா ஜாதா பூததக்ஷஸா ॥

அன்வயம்.

वयं, सोमपीतये, या, जाता, पूतदक्षसा, मित्रं, वरुणं, हवामहे ॥

பதவுரை.

वयं	வயம்	நாங்கள்
सोमपीतये	ஸோமபீதயே	{ சோமரசம் அருந்துதற் பொருட்டு,
या	யா	எவர்கள்
जाता	ஜாதா	வேள்வியில் வெளிப்பட்டனரோ,
पूतदक्षसा	பூததக்ஷஸா	புனிதமாகிய ஆற்றலுள்ள
मित्रं	மித்ரம்	அம் மித்திர தேவதையையும்,
वरुणं	வருணம்	வருண தேவதையையும்
हवामहे	ஹவாமஹே	அழைக்கின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில்—1. மேதாதிதி ரிஷி.

அநுட்டானஞ் செய்கின்ற யாங்கள் சோமரசம் அருந்துவதற்கு மித்திர தேவதையையும், வருண தேவதையையும் அழைக்கின்றோம். அவர்கள் எத் தன்மையர்களெனின்? வேள்வி யென்னு மிடத்தில் வெளிப் பட்டவர்கள். மற்றும், புனிதமாகிய ஆற்றலுடையார்க ளென்க. (1)

மந்திரம் 5.

३२३ १२ ३२ २३२३ १२३१२
794. ऋतेन यावृतावृधावृतस्य ज्योतिषस्पती ।
२ ३ २ २र
ता मित्रावरुणा हुवे ॥ २ ॥

ऽतेन यावृतावृधावृतस्य ज्योतिषस्पती ।
ता मित्रावरुणा हुवे ॥

அன்வயம்.

यौ, ऋतेन, ऋतावृधौ, ऋतस्य, ज्योतिषः, पती, ता मित्रावरुणा, हुवे ॥

பதவுரை.

यौ	यள	எவ்விருவர்கள்
ऋतेन	ऽतेन	உண்மை வாக்கால்
ऋतावृधौ	ऽतावृधள	{ கருமபயனை வளர்க்கின்றவர்களோ,
ऋतस्य	ऽतஸ்ய	சத்தியமாகிய
ज्योतिषः	ஜ்யோதிஷः	ஒளிக்கு
पती	வதீ	இறைவர்களோ,
ता मित्रावरुणा	தா மித்ராவருணா	அம் மித்திர வருணர்களை
हुवे	ஹுவே	(யான்) அழைக்கின்றேன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

எந்த மித்திர வருணர்கள் வேள்வித் தலைவனுக்கு அநுக்கிரகஞ் செய்கின்ற உண்மை வாக்கால் ஒருதலையாகத் தோன்றுங் கருமபயனை வளர்ப்பவர்களோ, மற்றும், பிரகாசத்தைப் பாதுகாப்பவர்களோ, ஈண்டு ஏனைய சுருதிகளில் "மித்திர வருணர்கள் அதிதி புத்திரர்க" ளெனக் கூறப்பட்டிருத்தலின் பன்னிரு ஆதித்தர்களில் அடங்குமாதலின், பிரகாசத்தைப் பாதுகாப்பாற்றுந் தன்மை பொருந்துமாறுணர்க. பிற சுருதிகளிலும், "எட்டுப் புத்திரர்களிவர்கள் அதிதிக்கு" என்று தொடங்கி மித்திரனும், வருணனும், என்பது முதலியவற்றுற் கூறப்பட்டுள்ளது. அம் மித்திர வருணர்களை அழைக்கின்றேன் என இயைத்துக்கொள்க. (3)

மந்திரம் 6.

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
795. वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः ।
१२ ३ २३
करतां नः सुराधसः ॥ ३–७ ॥

இருக்கு. 1-23-4-5.

வரு॒ணः॑ ப்ரா॒விதா॒ ப॒வ॒ந்மித்ரோ॒ விஶ்வா॒பிரூ॒திபிः॑ ।
க॒ர॒தாம் ந॒ः ஸு॒ராத॒ஸः॑ ।

அந்வயம்.

वरुणः, विश्वाभिः, ऊतिभिः, मित्रः, प्राविता भुवत्, नः, सुराधसः, करताम् ॥

பதவுரை.

वरुणः	வரு॒ணः॑	வருணன்
विश्वाभिः	விஶ்வா॒பிः॑	எல்லாவகையாலும்
ऊतिभिः	ஊ॒திபிः॑	(எம்மைப்) பாதுகாப்பதுடன்
मित्रः	மித்ரோ॒	மித்திரனும்
प्राविता भुवत्	ப்ரா॒விதா॒ ப॒வ॒க்	எங்களை நன்கு காப்பாற்றுவோனாகுக. மற்றும், அவ்விருவரும்
नः	ந॒ः	எங்களை
सुराधसः	ஸு॒ராத॒ஸः॑	மிகுந்த தனமுடையவர்களாகச்
करतां	க॒ர॒தாம்	செய்வார்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

இவ் வருணன் எங்களை இனிது காப்பாற்றுவோனாகுக. மித்திரனும், எல்லாவகையானும் பாதுகாப்பாற்றுவதுடன் ஆள்வோனுமாகுக. அவ் விருவரும், எங்களை மிகுந்த தனமுடையவர்களாகச் செய்வார்களாக என்பதாம்.

மந்திரம் 7.

२ ३ २ ३ १ २ ३१ २र ३१ २ ३ १ २
796. इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः ।
२ ३ १ २
इन्द्रं वाणीरनूषत ॥ १ ॥

ஹந்த்ரிஷ்டாயிநோ ப்ரஹதிந்த்ரகேஷிநாகிணாஃ ।
ஹந்த்ரம் வாணீரநூஷத ॥

அன்வயம்.

गाथिनः, इन्द्रमित्, बृहत्, अनूषत, अर्किणः, अर्केभिः, इन्द्रं, (अध्वर्यवः), वाणीः, इन्द्रम् ॥

பதவுரை.

गाथिनः	மாயிநஃ	சாமவேதம் பாடுவோர்கள்
इन्द्रमित्	ஹந்த்ரிஷ்கி	இந்திரனையே
बृहत्	ப்ரஹதி	பெருங் கீதத்தால்
अनूषत	அநூஷத	துதிப்பார்களாக.
अर्किणः	அர்கிணஃ	ஆராதனைக்குரிய மந்திரமாகிய இருக்குவேதம் படிப்போரும்,
अर्केभिः	அர்கேபிஃ	தோத்திர மந்திரங்களால்
इन्द्रं	ஹந்த்ரம்	இந்திரனையே துதிப்பார்களாக,
(अध्वर्यवः)	(அத்வர்யவஃ)	யஜுர்வேதம் படிப்போரும்,
वाणीः	வாணீஃ	எசுர்வேத வாணிகளால்
इन्द्रं	ஹந்த்ரம்	இந்திரனையே துதிப்பார்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—நான்காவது மூன்றில்—1. விசுவாமித்திரர், அல்லது, மதுச்சந்தர் ரிஷி.

சாமவேதம் பாடுகின்ற உத்காதா என்பவர்கள், "நின்னையே அழைக்கின்றோம்" என்னும் மந்திரத்தாலுண்டாகிய பெருங்கீத மென்னும் பெயருடைய சாம மந்திரத்தால் இந்திரனையே பாடுவார்களாக. அருச்சனைக்குரிய மந்திரங்களோ யோதும் ஓதா, என்னும் இருக்கு வேத மோதுவோருந் தோத்திர மந்திரங்களால் இந்திரனையே பாடுவார்களாக. எஞ்சிய எசுர் வேதம் படிக்கின்ற 'அத்துவரியு' என்பவர்களும் எசுர்வேத மந்திரவாக்குகளால் இந்திரனையே பாடுவார்களாக. "அர்க்கம் மந்திரம், எதனால் அருச்சிக்கின்றனரோ" என்றார் யாஸ்க முனிவர் (நிருத்தம்) ஆதலின், ஈண்டு அர்க்க மென்றது மந்திரமாம்.

(1)

மந்திரம் 8.

२ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ १ २
797. इन्द्र इद्धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा ।
१ २ ३ १ २३ १ २
इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥ २ ॥

இந்ர இஇயெ்₁ாஃ ஸசா ஸம்ஶிஷ்ல ஆ வசொயுஜா ।
இந்ரோ வஜ்ரீ ஹிரண்யயஃ ॥

அன்வயம்.

वज्री, हिरण्ययः, इन्द्र इत्, वचोयुजा, हर्योः, सचा, आ संमिश्लः ॥

பதவுரை.

वज्री	வஜ்ரீ	வச்சிராயுத முடையவனும்
हिरण्ययः	ஹிரண்யயஃ	பொன்னுற் செய்த பூஷணத்தை யுடையவனுமாகிய,
इन्द्र इत्	இந்ர உ	இந்திர னொருவனே
वचोयुजा	வசொயுஜா	சொன்ன மாத்திரத்தானே இரதத்திற் பூட்டிக்கொள்கின்ற
हर्योः	ஹரெ்₁ாஃ	அரிகளென்னுங் குதிரைகளை
सचा	ஸசா	ஒருங்கு சேர்த்து
आ संमिश्लः	ஆ ஸம்ஶிஷ்லஃ	எல்லாவகையானும் பூட்டுபவனு கின்றான்.

சாயணபாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

இந்திர னொருவனே, அரி யென்னும் பெயருடைய குதிரைகளை ஒரே சமயத்தில் எல்லாவகையானும் இனிது பூட்டுகின்றவன் ஆகின்றான். எவ்விதமான குதிரைக ளெனின்? இந்திரனுடைய சொல்மாத்திரத்தானே இரதத்திற் பூட்டப்பெறுபவைகள் என்க. இனிது பழக்கப்பட்டன என்பது பொருள். இவ் விந்திரனும் வச்சிராயுத முடையவனும், பொன்மயமாகிய பூஷணங்களை யுடையவனு மாவன் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 9.

१ २ १ २ ३ १ २
798. इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च ।
३ १ ३ १ २ ३ १ २
उग्र उग्राभिरूतिभिः ॥ ३ ॥

ஊஷு வாஜேஷ்வ நோऽவ ஸஹஸ்ரப்ரதனேஷ்வ ச ।
உக்ர உக்ராபிரூதிபிஃ ॥

அன்வயம்.

हे इन्द्र, उग्रः, उग्राभिः, ऊतिभिः, वाजेषु, सहस्रप्रधनेषु च, नः, अव ॥

பதவுரை.

हे इन्द्र !	ஹெ இந்த்ர !	இந்திரனே !
उग्रः	உக்ரஃ	பகைவர்களாற் பயமுறுத்தப் படாத நீ,
उग्राभिः	உக்ராபிஃ	பராக்கிரமமுள்ள
ऊतिभिः	ஊதிபிஃ	பாதுகாப்பாற்றல்களால்,
वाजेषु	வாஜேஷு	போர்களிலும்,
सहस्रप्रधनेषु च	ஸஹஸ்ரப்ரதனேஷு ச	ஆயிரக்கணக்கான யானை குதிரைகளோடு கூடின உயுத்தங்களிலும்
नः	நஃ	எங்களைப்
अव	அவ	பாதுகாப்பாற்றுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

இந்திரனே ! சத்துருக்களாற் பயமுறுத்தப்படாத நீ, போர்களில், எங்களைப் பாதுகாப்பாற்றுவாயாக. அவ்வாறே, ஆயிரக்கணக்கான யானை, குதிரை முதலியவற்றின் இராபமுடைய பெரும் போர்களிலும் பாதுகாப்பாயாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 10.

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
799. इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आसूर्यꣳ रोहयद्दिवि ।
२ ३ १ २
विगोभि रद्रि मैरयत् ॥ ४–८ ॥

இருக்கு 1-7-1-2-1-3.

இந்த்ரோ தீர்காய சக்ஷஸ ஆஸூர்யம் ரோஹயத்திவி ।
விகோபி ரத்ரி மைரயத் ॥

அன்வயம்.

इन्द्रः, दीर्घाय, चक्षसे, दिवि, सूर्यं, आरोहयत्, गोभिः, अद्रिं, व्यैरयत् ॥

பதவுரை.

इन्द्रः	இந்த்ரஃ	இந்திரன்
दीर्घाय	தீர்ஷாய	இடையறாது
चक्षसे	அக்ஷஸெ	தரிசனத்தின் பொருட்டு,
दिवि	திவி	விண்ணுலகிற்
सूर्यं	ஸூர்யம்	சூரியனை
आरोहयत्	ஆரொஹயத்	நிலை நிறுத்தினன். (அச்சூரியன்)
गोभिः	கொபிஃ	தனது கிரணங்களால்,
अद्रिं	அத்ரிம்	மேகத்தைச்
व्यैरयत्	வ்யைரயத்	செலுத்துகின்றான்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—4.

இவ் விந்திரன் எப்போதுந் தரிசனஞ் செய்தற் பொருட்டு, அதாவது, விருத்திராசுரனால் உண்டாக்கிய இருளை யொதுக்குவதனால், உலகிலுள்ள பிராணிகளுக்குப் பார்வையுண்டாமாறு சூரியனை வானுலகில் நிலை நிறுத்தினன் என்பதாம். அச் சூரியன் தனது கிரணங்களால், மேகத்தைச் சிறப்பாய்த் தரிசித்தற் பொருட்டுப் பிரகாசிப்பித்தனன் என்றவாறு. அல்லது, இந்திரனே, நீராகிய நிமித்தத்தால் மேகத்தைச் செலுத்தினன் என்பதுமாம். ஈண்டு, 'गावः' 'காவஃ' என்றது கிரணம். (10)

மந்திரம் 11.

१ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २
800. इन्द्रे अग्ना नमो बृहत् सुवृक्तिमेरयामहे ।
३ १ २ ३ १२
धिया धेना अवस्यवः ॥ १ ॥

இந்த்ரெ அக்நா நமொ ப்ருஹத் ஸுவ்ருக்திமெரயாமஹெ ।
தியா தெநா அவஸ்யவஃ ॥

அந்வயம்.

अवस्यवः, इन्द्रे, अग्ना, बृहत्, नमः, सुवृक्तिं, आ ईरयामहे, धिया, धेनाः ॥

பதவுரை.

अवस्यवः	அவஸ்யவः	பாதுகாப்பாற்றிக்கொள்ள வேண்டுமென விரும்பின யாங்கள்,
इन्द्रे	உந்த்ரே	இந்திர தேவதையின் விடயத்திலும்,
अग्ना	அக்நா	அக்கினியின் விஷயத்திலும்,
बृहत्	ப்ருஹத்	விருத்தி செய்கின்ற
नमः	நமஃ	அவியாகிய அன்னத்தையும்,
सुवृक्ति	ஸுவ்ருக்தி	அழகிய துதிகளையும்,
आ ईरयामहे	ஆ ஈரயாமஹே	ஏவுகின்றோம்.
धिया	தியா	கருமத்துடன் கூடிய
धेनाः	தேநாஃ	தோத்திர வடிவ வாக்குகளையுஞ் சொல்கின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—நான்காவது மூன்றில்—1. மைத்திராவருணர், அல்லது, வசிட்டர் ரிஷி.

பாதுகாப்பை விரும்பின யாங்கள், இந்திர தேவதையிடத்தும் அக்கினியினிடத்தும், (அவர்களை) வளரச் செய்யத்தக்க அவியாகிய அன்னத்தையுந், தோத்திரத்தையுஞ் செலுத்துகின்றோம். அவ்வாறே, கருமத்துடன் கூடின துதியாகிய வாக்குகளையுஞ் சொல்கின்றோம். ஈண்டு, 'धेनाः' என்பது வாக்காம். அங்ஙனமே கூறுகின்றது நிகண்டும். (1)

மந்திரம் 12.

१ २२ ३ १२ ३ १ २२ ३१२
801. ता हि शश्वन्त ईडत इत्था विप्रास ऊतये ।
३ २ ३ १ २
सबाधो वाजसातये ॥ २ ॥

தா ஹி ஶஶ்வந்த ஈடத இத்தா விப்ராஸ ஊதயே ।
ஸபாதோ வாஜஸாதயே ॥

அந்வயம்.

ता हि, ऊतये, विप्रासः, शश्वन्तः इत्था, ईडते, सबाधः, वाजसातये ॥

பதவுரை.

ता हि	தா ஹி	இந்திரன், அக்கினி, என்னும் அவ்விருவர்களையே
ऊतये	ஊதயே	(தம்மைப்) பாதுகாப்பாற்றிக் கொள்ளுதற் பொருட்டு

विप्रासः	விப்ராஸஃ	அறிவுடையார்கள்
शश्वन्तः	ஶஶ்வந்தஃ	பலவகையாக
इत्था	இத்தா	இவ்வாறு
ईडते	ஈடதெ	துதிக்கின்றார்கள். அங்ஙனமே,
सबाधः	ஸபாயஃ	ஒருவர்க் கொருவர் பீடையுற்ற வர்களாய்
वाजसातये	வாஜஸாதயெ	அன்னத்தை யடைதற் பொருட் டுந் துதிக்கின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

இந்திரன் அக்கினி, என்னுமவர்களையே, அறிஞர்களான சனங்கள் உண்மையாய்ப் பாதுகாப்பின் பொருட்டு இவ்வாறு துதிக்கின்றார்கள். அங்ஙனமே, ஒருவர்க் கொருவர் பீடையுற்றவர்களான சனங்களும் அன்ன லாபத்தின் பொருட்டு அவ்விந்திராக்கினிகளையே துதிக்கின்றார்கள். அல்லது, 'வாஜசாதி' என்பது உயுத்தமாம். நிகண்டு மவ்வாறே கூறுகின்றதா மாதலின், உயுத்தத்தின் பொருட்டுத் துதிக்கின்றார்கள் என்பதுமா மென்க.

மந்திரம் 13.

१ २ ३ १२३ २३ १२
802. ता वां गीर्भिर्विपन्युवः प्रयस्वन्तो हवामहे ।
३१२ ३ १२
मेघसाता सनिष्यवः ॥ ३-९ ॥

இருக்கு 7-94-4-6.

தா வாம் கீர்பிர்விபந்யவஃ ப்ரயஸ்வந்தோ ஹவாமஹெ ।
மெகஸாதா ஸநிஷ்யவஃ ॥

அந்வயம்.

विपन्युवः, प्रयस्वन्तः, सनिष्यवः, मेघसाता, ता, वां, गीर्भिः, हवामहे ॥

பதவுரை.

विपन्युवः	விபந்யவஃ	துதிசெய்ய விரும்பினவர்களும்,
प्रयस्वन्तः	ப்ரயஸ்வந்தஃ	அவியாகிய அன்ன முடையவர் களும்,
सनिष्यवः	ஸநிஷ்யவஃ	தமக்குத் தனம் வேண்டுமென் னும் வேட்கை யுடையவர்களு மான யாங்கள்,

मेघसाता	மெஸ்ஸாதா	வேள்வி யநுட்டானத்தின் நிமித்தமாய்
ता	தா	இந்திராக்கினிக ளென்னும் அத்தன்மைய
वां	வாம்	உங்களைத்
गीर्भिः	ஸீஸ்ரிஃ	துதிகளால்
हवामहे	ஹவாமஹெ	அழைக்கின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

துதிசெய்ய விரும்பியவர்களும், அவியென்னும் அன்னத்துடன் கூடியவர்களும், தமக்குத் தனத்தை யிச்சித்தவர்களுமான யாங்கள், வேள்வி செய்யும் நிமித்தமாய்; இந்திராக்கினி தேவதைகளே! அத்தகைய உங்களைத் துதிகளால் அழைக்கின்றோம் என்பதாம். (3)

இரண்டாவது கண்டம்

முற்றும்.

மூன்றாவது கண்டம்

பிரபாடகம்—2. அத்தியாயம்—3. கண்டம்—3.

ஆறு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१ २ ३ १२ ३१ २ ३२
803. वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
विश्वा दधान ओजसा ॥ १ ॥

வ்ருஷா பவஸ்வ தாரயா மருத்வதே ச மத்ஸரஃ ।
விஶ்வா ததாந ஒஜஸா ॥

அந்வயம்.

(हे सोम!,) वृषा, धारया, पवस्व, विश्वा च, ओजसा, दधानः, मरुत्वते, मत्सरः ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹே ஸோம !)	சோமமே ! நீ
वृषा	வ்ருஷா	துதிப்போர்கள் விரும்பிய பயனை யளிப்பதாய்,
धारया	யாரயா	தனது தாரையால்
पवस्व	வவஸ்வ	துரோண கலசத்திற்கு வருவாயாக. வந்த நின்னை, இந்திரனுக்கு அருப்பிக்குங்கால்,
विश्वा च	விஸ்வா அ	தனங்களனைத்தையும்
ओजसा	ஓஜஸா	தனது ஆற்றலால்
दधानः	தயானஃ	துதிப்போர்களுக்குக் கொடுத்து
मरुत्वते	மரூத்வதே	மருத்துவைச் சகாயமாயுடைய இந்திரன் பொருட்டுக்
मत्सरः	மத்ஸரஃ	களிப்பைக் கொடுப்பவனுமாகுதி.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1. வாருணி, அல்லது, பிருகு ரிஷி.

சோமமே! நீ, துதிப்போர்கள் விரும்பிய பயனைக் கொடுப்போனாயிருந்து, உன்னுடைய தாரையால் துரோண கலசத்திற்கு வருவாயாக. வந்த நீ, யாங்கள் இந்திரனுக்கு உன்னை அர்ப்பணஞ் செய்யும்போது, மருத்தைச் சகாயமாயுடைய இந்திரன் பொருட்டுக் களிப்பைக் கொடுப்பவனுமாவாயாக. நீ எத்தன்மைய னெனின்? ஆற்றலுடையோனாய் நின்று நிறைந்த, அல்லது, எல்லாத் தனங்களையும், களிப்பையுந் துதிப்போர்கட்குக் கொடுப்பவனாகின்றாய் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१ २ ३ १२ ३ २ १२ ३१२
804. तं त्वा धर्त्तारमोण्योः३ः पवमान स्वर्दृशम् ।
३ १ २२ ३ १ २
हिन्वे वाजेषु वाजिनम् ॥ २ ॥

தம் ஸ்வா ய-தூ-ரமொணியோஃ வவமான ஸ்வர்-த்ருஸம் ।
ஹிந்வே வாஜெஷு வாஜி-நம் ।

அந்வயம்.

हे पवमान !, ओण्योः, धर्त्तारं, स्वर्दृशं, वाजिनं, तं त्वा, वाजेषु, हिन्वे, वाजिनम् ॥

பதவுரை.

हे पवमान !	ஹெ வவமாந!	சுத்தமாகிய சோமமே!
द्यावापृथिवी	த்யாவாபிருதிவீ	வானையும் மண்ணையுந்
धर्त्तारं	தர்த்தாரம்	தாங்கப்பட்டவனும்,
स्वर्दृशं	ஸ்வர்த்ருசம்	அனைத்தையுங் காணத்தக்கவனும்,
वाजिनं	வாஜிநம்	ஆற்றலுடையவனுமாகிய
तं त्वा	தம் த்வா	அத்தகைய நின்னையே,
वाजेषु	வாஜேஷு	போர்களிற்
हिन्वे	ஹிந்வே	செலுத்துகின்றேன்.
वाजिनं	வாஜிநம்	நீ அன்ன முதலியவற்றைக் கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

பரிசுத்தமாகிய சோமமே! 'ஓணிகள்' வான், தரைகள், என நிகண்டுக் கூறுகின்றது. (ஆதலின்) வானையும் மண்ணையும், தாங்கப் பட்டவனும், இதனினை எல்லாவற்றையுங் காண்பவனும், அல்லது, அனைவராலும் பார்க்கத்தக்கவனும், ஆற்றலுடையவனுமாகிய கூறிப்போந்த குணமுடைய கீர்த்தி மிகுந்த உன்னைப் போர்களிற் செலுத்துகின்றேன். அல்லது, விடயங்களிற் செலுத்துகின்றேன். ஆதலின், அன்னம் முதலிய வற்றை எனக்குக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

३ २ ३ २ ३२उ ३ १२ ३ १२

805. अया चितो विपानया हरिः पवस्व धारया ।

२ ३ १ २

युजं वाजेषु चोदय ॥ ३–१० ॥

இருக்கு 9-65-10.

அயா சிதோ விபாநயா ஹரிः பவஸ்வ தாரயா ।

யுஜம் வாஜேஷு சோதய ॥

அன்வயம்.

हे सोम!, अया विपानया, चितः, हरिः, धारया, पवस्व, युजं, वाजेषु, चोदय ॥

பதவுரை.

हे सोम !	ஹெ ஸொம !	சோமமே !
अया विपानया	அயா விபாநயா	என்னுடைய இவ் விரல்களாற்
चितः	சிதஃ	பிழியப் பெற்றதும்,
हरिः	ஹரிஃ	பசுமை நிறமுடையதுமாகிய நீ,
धारया	தாரயா	இடைவிடாத தாரையால்
पवस्व	பவஸ்வ	துரோண கலசத்தை யடைவாயாக. மற்றும்,
युजं	யுஜம்	நண்பனாகிய இந்திரனைப்
वाजेषु	வாஜெஷு	போர்களிற்
चोदय	சொதய	செலுத்துவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

பரிசுத்தமாகிய சோமமே! அசைகின்ற எனது விரல்களால், ஈண்டு 'விபா' என்பது விரலாம். சாதி யொருமை, அல்லது, தனித்தனியாய்க் கொள்ளுங் கருத்தால் ஒருமை. பிழியப்பட்டதும், பசுமை நிறமுடையது மாகிய நீ, இடையறாத தாரையால் துரோண கலசத்தையும், கிரகத்தையு மடைவாயாக. மற்றும், சிநேகிதனாகிய இந்திரனை உயுத்தங்களிற் செலுத்துவாயாக. மற்றும் நாங்கள், இந்திரனுக்குச் சோமத்தைக் கொடுக்கும்போது இந்திரன் இத்துதியாற் களிப்புற்றவனாய்ச் சத்துருக்களைக் கொல்வானாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३१२ ३ २ ३२
806. वृषा शोणो अभिकनिक्रदद्गा * नदयन्नेषि पृथिवीमुत द्याम् ।
१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ ३ ३ २
इन्द्रस्येव वग्नुरा शृण्व आजौ † प्रचोदयन्नर्षसि वाचमेमाम् ॥

வ்ருஷா ஶொணொ அபிகநிக்ரதத்ஸா நதயந்நெஷி ப்ருதிவீ
[முத த்யாம் ।
இந்த்ரஸ்யேவ வக்நுரா ஶ்ருண்வ ஆஜௌ ப்ரசொதயந்நர்ஷஸி
[வாசமெமாம் ॥

नदयन्नेषि, † प्रचोदयन्नर्षति, என்பன இருக்கு.

அந்வயம்.

शोणः, वृषा, गाः, अभिकनिक्रदत्, नदयन्, (हे सोम! त्वं,) पृथिवीं, उत, द्यां, एषि, आजौ, इन्द्रस्य, वग्नुः इव, आ शृण्वे, प्रचोदयन्, इमां वाचं, अर्षसि ॥

பதவுரை.

शोणः	ஶோணஃ	செங்கிறமுடைய
वृषा	வ்ருஷா	ஒரு ரிஷபம்,
गाः	கா:	பசுக்களைக் குறித்துக்
अभिकनिक्रदत्	அபிகநிக்ரதத்	கத்துகின்றது போன்று, தோத்திரமாகிய பசுவைக் குறித்துச்
नदयन्	நதயந்	சத்தத்தை யுண்டாக்குகின்ற
(हे सोम!) त्वं	(ஹே ஸோம!) த்வம்	சோமமே! நீ,
पृथिवीं	ப்ருதிவீம்	தரையையும்,
उत	உத	மற்றும்,
द्यां	த்யாம்	வானையும்,
एषि	ஏஷி	அடைகின்றாய்.
आजौ	ஆஜௌ	உயுத்தத்தில்
इन्द्रस्य	இந்த்ரஸ்ய	இந்திரனுடைய
वग्नुः इव	வக்நுஃ இவ	சத்தத்தைப் போல
आ शृण्वे	ஆ ஶ்ருண்வே	அனைவராலுங் கேட்கப்படுகின்றது,
प्रचोदयन्	ப்ரசோதயந்	பின்னர், தனது வடிவை யாவருக்குந் தெரிவித்துக் கொண்டு
इमां वाचं	இமாம் வாசம்	இவ்வாக்கை
अर्षसि	அர்ஷஸி	அடைகின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம் - 3. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில்—1. உபமன்னியு ரிஷி.

செங்கிறமுடைய ஒரு காளையானது, பசுக்களை நோக்கிக் கத்துகின்றது போன்று, தோத்திரத்தைக் குறித்துச் சத்தமிடுகின்ற சோமமே! நீ, வானையும் மண்ணையும் அடைகின்றாய். மற்றும், (அவ்வொழி) உயுத்தத்தில் இந்திரனுடைய சத்தம் போன்று அனைவராலுங் கேட்கப்படுகின்றது. பின்னர், தன்னை யாவருக்குந் தெரிவித்துக் கொண்டு இவ்வாக்கை யடைகின்றனை. அதாவது, பேரொலி செய்கின்றாய் என்பது பொருள். (1)

மந்திரம் 5.

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २

807. रसाय्यः पयसा पिन्वमान ईरयन्नेषि मधुमन्तमंशुम् ।

१ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ र ३ १ २

पवमान सन्तनिमेषि कृण्वन्निन्द्राय सोम परिषिच्यमानः ॥ २ ॥

ரஸாய்யஃ பயஸா பிந்வமான ஈரயன்னேஷி மதுமன்தமம்ஶும் ।

பவமான ஸன்தனிமேஷி க்ருண்வன்னிந்த்ராய ஸோம பரிஷிச்யமானஃ ॥

அன்வயம்.

हे सोम!, रसाय्यः, पयसा, पिन्वमानः, मधुमन्तं, अंशुं, ईरयन्, एषि, परिषिच्यमानः, पवमानः, सन्तनिं, कृण्वन्, इन्द्राय, एषि ॥

பதவுரை.

हे सोम!	ஹே ஸோம!	சோமமே! நீ,
रसाय्यः	ரஸாய்யஃ	சுவைத்தற் குரிய
पयसा	பயஸா	ஆவின் பாலுடன்
पिन्वमानः	பிந்வமானஃ	கூடியதாயும்,
मधुमन्तं	மதுமன்தம்	இன்சுவையுடைய
अंशुं	அம்ஶும்	இரசத் தன்மையைச்
ईरयन्	ஈரயன்	செலுத்துவதாயும்,
एषि	ஏஷி	அடைகின்றாய். மற்றும்,
परिषिच्यमानः	பரிஷிச்யமானஃ	நீரால் தெளிக்கப்பட்டுப்
पवमानः	பவமானஃ	பவித்திரமாகிய பாத்திரத்தில் சுத்தம் பண்ணப்பெற்றுத்
सन्तनिं	ஸன்தனிம்	தாரையை
कृण्वन्	க்ருண்வன்	உண்டாகச் செய்வதாய்
इन्द्राय	இந்த்ராய	இந்திரன் பொருட்டு
एषि	ஏஷி	அடைகின்றனை.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

சோமமே! நீ, சுவைத்தற்குரிய பாலுடன் கூடிய நீ, இரசத்தைச் செலுத்துவதாய், மதுரமாகிய இரசத் தன்மையை யடைகின்றாய். 'அம்சு' என்பது சோமரசமெனக் கூறுகின்றது நிகண்டு. மற்றும், சோமமே! நீராற்

றெளிக்கப்பட்ட நீ, பவித்திரமென்னும் பாத்திரத்திற் பரிசுத்தமாய் மிகுந்த தாரையை யுண்டாக்கிக் கொண்டு இந்திரன் பொருட்டுச் செல்கின்றனை யென்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

३ १ २ ३१ २र ३ १ २ ३१ २ ३ २
808. एवा पवस्व मदिरो मदायोदग्राभस्य * नमयन् वधस्नुम् ।
२३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ २
परि वर्णं भरमाणो रुशन्तं गव्युर्नो अर्ष परि सोमसिक्तः ॥ ३-११ ॥

இருக்கு 9-97-13-15.

ஸவா பவஸ்வ மதிரோ மதாயோதக்ராபஸ்ய நமயந் வதஸ்நும் ।
பரி வர்ணம் பரமாணோ ருசந்தம் கவ்யுர்நோ அர்ஷ பரி
[ஸொமஸிக்தஃ ॥

அந்வயம்.

हे सोम!, मदिरः, वधस्नुं, उदग्राभस्य, नमयन्, मदाय एव, पवस्व, रुशन्तं, वर्णं, परि भरमाणः, सिक्तः, नः गव्युः, परि अर्ष ॥

பதவுரை.

हे सोम!	ஹெ ஸொம!	சோமமே!
मदिरः	மதிரஃ	களிப்பைக் கொடுக்கின்ற நீ,
वधस्नुं	வதஸ்நும்	விருத்திராசுரனை வதைத்ததால்
उदग्राभस्य	உதக்ராபஸ்ய	நீரைத் தருகின்ற மேகத்தை
नमयन्	நமயந்	மழையின் பொருட்டு வணங்கச் செய்துகொண்டு
मदाय एव	மதாய ஸவ	களிப்பின் நிமித்தமாகவே
पवस्व	பவஸ்வ	பாத்திரத்தை யடைவாயாக. மற்றும்,
रुशन्तं	ருசந்தம்	வெண்மையாகிய
वर्णं	வர்ணம்	நிறத்தை,
परि भरमाणः	பரி பரமாணஃ	எல்லா வகையானுந் தாங்கிக் கொண்டு
सिक्तः	ஸிக்தஃ	பவித்திரமாகிய பாத்திரத்தில் வார்க்கப்பெற்ற நீ
नः गव्युः	நஃ கவ்யுஃ	எம் பொருட்டுப் பசுக்களில் இச்சை யுடையவனாய்ப்
परि अर्ष	பரி அர்ஷ	பாத்திரத்திற் சேர்வாயாக.

* नमयन् बधत्रैः என்பது இருக்கு.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

சோமமே! களிப்பைக் கொடுக்கும் நீ, நீரைக் கொடுக்கும் மேகத்தை மழையின் பொருட்டு வணங்கச் செய்துகொண்டு களிப்பின் நிமித்தம் பாத்திரத்திற் சேர்வாயாக. எவ்விதமாகிய மேகத்தை யெனின்? விருத்திராசுரனை வதைத்ததால் மழையைப் பொழிகின்ற மேகத்தை யென்க. மற்றும், விளங்குகின்ற வெண்மை நிறத்தைப் பலவகையாலு மடைந்து பாத்திரத்தில் வார்க்கப்பட்ட நீ, எங்களுக்குப் பசுக்களை விரும்பிச் செல்வாயாக என்பதாம். (3)

மூன்றாவது கண்டம்.

முற்றும்.

நான்காவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—2. அத்தியாயம்—3. கண்டம்—4.

நான்கு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१ २र ३ १ २र ३१२
809. त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः ।
२ ३१ २ ३ १२३ २३ २उ ३ १२
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्टास्वर्वतः ॥ १ ॥

ஸ்வாமிஜி ஹவாமஹெ ஸாதள வாஜஸ்ய காரவஃ ।
ஸ்வாம் வ்ருத்ரெஷ்விந்த்ர ஸத்பதிம் நரஸ்ஸ்வாம் காஷ்டாஸ்வர்வதஃ ॥

அந்வயம்.

हे इन्द्र!, कारवः, वाजस्य, सातौ, त्वां इत् हि, हवामहे, सत्पतिं त्वां, नरः, वृत्रेषु, हवन्ते, अर्वतः, काष्टासु, त्वाम् ॥

பதவுரை.

हे इन्द्र!	ஹெ இந்த்ர!	இந்திரனே!
कारवः	காரவஃ	தோத்திரஞ் யாங்கள் செய்யப்பெற்ற

वाजस्य	வாஜஸ்ய	அன்னத்
सातौ	ஸாதௌ	கிடைக்கும் விஷயத்தில்
त्वां इत् हि	த்வாம் உத் ஹி	உன்னையே
हवामहे	ஹவாமஹே	அழைக்கின்றோம். மற்றும், இந்திரனே !
सत्पतिं त्वां	ஸத்பதிம் த்வாம்	நல்லார்களைக் காப்பாற்றுகின்ற உன்னை,
नरः	நரஃ	ஏனைய மனிதர்களும்
वृत्रेषु	வ்ருத்ரேஷு	சத்துருக்கள் உண்டானபோது,
हवन्ते	ஹவந்தே	அழைக்கின்றார்கள். மற்றும்,
अर्वतः	அர்வதஃ	குதிரைகள் கட்டுகின்ற
काष्ठासु	காஷ்டாஸு	கட்டுத் தறிகளில் (போரை விரும்பியவர்களும்)
त्वां	த்வாம்	உன்னையே அழைக்கின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—பெரிய கீதம் முதலாவது சூக்தத்தில்—1. பரத்துவாச ரிஷி.

தோத்திரஞ் செய்கின்ற யாங்கள், அன்னத்தை யடையும் நிமித்தமாய் இந்திரனே ! உன்னையே அழைக்கின்றோம். இந்திர ! நல்லோர்களைப் பாதுகாக்கின்ற உன்னை, ஏனைய மனிதர்களும் சத்துருக்க ளிருக்கில் அவர்களை வெல்லுமாறு அழைக்கின்றார்கள். மற்றும், குதிரைகள் கட்டும் (குதிரைகள் நிற்குமாறு பிணிக்கும்) தறிகளுள்ள விடங்களில், அதாவது, உயுத்தங்களில் விருப்புடையவர்களும் உன்னையே அழைக்கின்றார்கள். இதனால், நாங்களும் உன்னையே அழைக்கின்றோம் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१ २र ३ १ ३१ २ ३ १ २

810. **स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया महः स्तवानो अद्रिवः ।**

१ २उ ३ १ २ ३२उ ३ २ ३ १२

गामश्वं रथ्यमिन्द्र संकिर सत्रा वाजं न जिग्युषे ॥ २–१२ ॥

இருக்கு 6-46-1-2.

ஸகும் நஶ்சித்ர வஜ்ரஹஸ்த த்ருஷ்ணயா மஹஃ ஸ்துவாநோ அத்ரிவஃ ।
காமஶ்வம் ரத்யமிந்த்ர ஸம்கிர ஸத்ரா வாஜம் ந ஜிக்யுஷே ॥

அன்வயம்.

चित्र !, वज्रहस्त !, अद्रिवः इन्द्र !, धृष्णुया, महः, जिग्युषे, सत्रा, वाजं न, नः, स्तवानः स त्वं, गां, रथ्यं अश्वं च, संकिर ॥

பதவுரை.

चित्र !	ஶித்ர !	அழகிய வடிவை யுடையோய் !
वज्रहस्त !	வஜ்ரஹஸ்த !	வச்சிரந் தாங்கிய கையனே !
अद्रिवः इन्द्र !	அத்ரிவஃ இந்த்ர !	மின்னலாகிய இந்திர !
धृष्णुया	ஶ்ருஷ்ணுயா	சத்துருக்கட்குப் பயமுண்டாக்கு தற்குரிய
महः	மஹஃ	பெரியோனாகிய நீ,
जिग्युषे	ஜிக்ரிஷே	வெற்றி கொள்பவரின் போகத்தின் பொருட்டு,
सत्रा	ஸத்ரா	மிகுதியாய்க்
वाजं न	வாஜம் ந	குதிரை முதலிய பல பொருள்களைக் கொடுப்பது போன்று,
नः	நஃ	எங்களால்
स्तवानः सत्वं	ஸ்தவாநஃ ஸக்வம்	துதிக்கப்பெற்றவனாய்ப்
गां	கா	(எங்கட்கு) பசுவையும்,
रथ्यं अश्वं च	ரத்ரம் அஶ்வம் அ	தேர்க் குதிரையையும்,
संकिर	ஸம்கிர	நன்கு கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4 இருக்கு—2.

அழகுடையவனும், வச்சிரத்தைத் தாங்கிய கையனும், மின்னலை யுடையவனு மாகிய இந்திரனே! பகைவர்களை யச்சமுறுத்தற்குரிய பெரியோனாகிய அத்தன்மைய நீ, எங்களாற் றுதிக்கப்பெற்றவனாகி, பசுவையும், இரதமிழுக்கத் தக்க குதிரையையும் இனிது கொடுப்பாயாக. வெற்றி கொண்டவனது (சத்துருக்களைச் செயித்தவனுக்கு) போகத்தின் பொருட்டு அநேகத்தைக் கொடுக்கின்றா யன்றோ? அதுபோல், இவ் வனைத்தையும் எங்கட்குக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २३ १ २ ३ २
811. अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथाविदे ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
यो जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति ॥ ३ ॥

அபி ப்ர வஃ ஸுராதஸமிந்த்ரமர்ச யதாவிதே ।
யோ ஜரித்ருப்யோ மஹவா புரூவஸுஃ ஸஹஸ்ரேணேவ
[ஶிக்ஷதி ॥

அந்வயம்.

पुरूवसुः, मघवा, यः, जरितृभ्यः, सहस्रेणेव, शिक्षति, यथाविदे, वः, सुराधसं, इन्द्रं, अभिप्र अर्च ॥

பதவுரை.

पुरूवसुः	ப்ரூவஸுஃ	பசு முதலிய அநேக தனங்களை யுடைய
मघवा	மஹவா	தனிகனாகிய
यः	யஃ	யாதொரு இந்திரன் உளனோ, அவன்,
जरितृभ्यः	ஜரிதூப்யஃ	தோத்திரஞ் செய்கின்ற எங்கட்கு
सहस्रेणेव	ஸஹஸ்ரெணெவ	ஆயிரக்கணக்கான தனங்களைக்
शिक्षति	ஶிக்ஷதி	கொடுக்கின்றான். அவன்,
यथाविदे	யதாவிதெ	எங்களால் எவ்வாற்றால் அறியப்படுகின்றானோ, அவ்வாறே, வேட்போர்காள்!
वः	வஃ	நீங்கள்
सुराधसं	ஸுராதஸம்	அழகிய தனங்களை யுடையவனும்,
इन्द्रं	இந்த்ரம்	ஐசுவரிய முள்ளவனுமாகிய இந்திரனை
अभि प्रार्च	அபி ப்ரார்ச	ஒருமையுடன் நன்கு பூசிப்பீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—இரண்டாவது பெருங் கீதத்தில்—1. பிரஸ்கண்ணுவ ரிஷி.

பசு முதலிய அநேக தனங்களை யுடைய, அல்லது, வேள்விகள் அநேக மாதலின், பல விடத்தி லிருக்கின்ற யாதொரு இந்திர னுளனோ, அவன், தோத்திரஞ் செய்பவர்களான எங்கட்கு, ஆயிரக் கணக்கான பசு முதலிய தனங்களைக் கொடுக்கின்றான். மற்றும், எங்களால் எவ்வாறு அறியப்படுகின்றானோ, அவ்வாறே, வேட்போர்காள்! நீவிரும், அழகிய தனமுள்ளவனும், ஐசுவரிய முடையவனுமாகிய இந்திர னென்னுந் தேவனை ஒருமையுடன் நன்கு வழிபடுவீர்களாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 4.

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १२ ३ १२

812. शतानीकेव प्रजिगाति धृष्णुया हन्ति वृत्राणि दाशुषे ।

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २

गिरेरिव प्र रसा अस्य पिन्विरे दत्राणि पुरुभोजसः ॥ २–१३ ॥

இருக்கு 8-49-1-2.

शतानीकेव प्रजिगाति धृष्णुया हन्ति वृत्राणि दाशुषे ।
गिरेरिव प्र रसा अस्य पिन्विरे दत्राणि पुरुभोजसः ॥

அன்வயம்.

धृष्णुया, शतानीक इव, प्रजिगाति, दाशुषे, वृत्राणि, हन्ति, पुरुभोजसः, अस्य, दत्राणि, गिरेः, रसाः इव, प्रपिन्विरे ॥

பதவுரை.

धृष्णुया	धृष्णुया	(இந்திரன்) பகைவரை அச்சமுறுத்துவது போலும்,
शतानीक इव	शतानीक इव	நூற்றுக் கணக்கான சத்துருக்களின் சேனைகளில்
प्रजिगाति	प्रजिगाति	மேலேறிச் செல்கின்றது போன்றும்,
दाशुषे	दाशुषे	வேள்வித் தலைவன் பொருட்டு,
वृत्राणि	वृत्राणि	வேள்விக் கிடையூறான பகைவரின் மேல் ஏறிச்செல்கின்றான். மற்றும்,
हन्ति	हन्ति	அவர்களைக் கொல்கின்றான். அங்ஙனமே,
पुरुभोजसः	पुरुभोजसः	மிகுந்த தனமுடைய
अस्य	अस्य	இவ் விந்திரனுக்கு,
दत्राणि	दत्राणि	கொடுக்கத் தக்க தனங்கள்
गिरेः	गिरेः	மலையில்
रसाः इव	रसाः इव	நீரிருக்கின்றது போன்று,
प्रपिन्विरे	प्रपिन्विरे	வேள்வித் தலைவன் பொருட்டு மிகுதியாயிருக்கின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

பகைவரைப் பயமுறுத்துஞ் சீலமுடைய இந்திரன், நூற்றுக்கணக்கான சத்துருக்களின் சேனைகளின் மேல் வெற்றியின் பொருட்டு, முன்

னேறிச் செல்வது போன்று, வேள்வித்தலைவன் பொருட்டு, வேள்விக்கிடையூறான சத்துருக்களைக் குறித்து மேலேறிச் செல்கின்றான். அவர்களையுங் கொல்கின்றான். மற்றும், வேள்வித் தலைவர்கட்குக் கொடுக்கத்தக்க தனங்கள், இவ் விந்திரன் சம்பந்தமாய் மிகுதியா யிருக்கின்றன. அதிலுவமை :—மலையிலிருந்து ஒழுகி வரும் நீரைப்போன்று என்பதாம். (2)

மந்திரம் 5.

२ ३ १ २२ ३ १ २
813. त्वामिदा ह्यो नरोऽपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः ।
१ २ ३ १ २ ३२ ३ २ ३ १ २३ १ २
स इन्द्र स्तोमवाहस इह श्रुध्युप स्वसरमागहि ॥ १ ॥

க்வாமிதா ஹ்யோ நரோऽபீப்யந் வஜ்ரிந் பூர்ணயஃ ।
ஸ இந்த்ர ஸ்தோமவாஹஸ இஹ ஶ்ருத்யுப ஸ்வஸரமாகஹி ॥

அன்வயம்.

वज्रिन् इन्द्र !, त्वां, भूर्णयः, नरः, इदा, ह्यः, अपीप्यन्, सः, स्तोमवाहसः, इह, श्रुधि, स्वसरं, उपागहि ॥

பதவுரை.

वज्रिन् इन्द्र !	வஜ்ரிந இந்த்ர !	வச்சிராயுதந் தாங்கிய இந்திர !
त्वां	க்வாம்	உன்னை,
भूर्णयः	பூர்ணயஃ	அவி கொடுக்கின்ற
नरः	நரஃ	வேள்வித் தலைவன்,
इदा	இதா	இக்காலத்திலும்
ह्यः	ஹ்யஃ	முன் தினத்திலும்,
अपीप्यन्	அபீப்யந்	சோமரத்தை யருந்தச் செய்தனன்,
सः	ஸஃ	அத்தன்மைய இந்திர னெனினும் நீ,
स्तोमवाहसः	ஸ்தோமவாஹஸஃ	துதிப்போனுகிய என்னுடைய தோத்திரத்தை
इह	இஹ	இவ் வேள்வியிற்
श्रुधि	ஶ்ருத்யி	கேட்பாயாக.
स्वसरं	ஸ்வஸரம்	எனது வீட்டையும்
उपागहि	உபாகஹி	அடைவாயாக,

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—மூன்றுவது பெருங் கீதத்தில்—1.

வச்சிராயுதத்தையேந்திய இந்திரனே! எத்தகைய உன்னை, அவி கொடுக்கின்ற வேள்வித் தலைவர்கள், இப்போதும், முன் தினத்தும், சோமரசத்தை யருந்தச் செய்தனரோ, அத்தகைய நீ, துதிப்போனுகிய எனது துதியை இவ் வேள்வியிற் கேட்பாயாக. எனது வீட்டிற்கும் வருவாயாக என்பதாம்.

மந்திரம் 6.

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२

814. मत्स्वा * सुशिप्रिन् हरिवस्तमीमहे त्वया भूषन्ति वेधसः ।

२३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

तव श्रवाꣳस्युपमान्युक्थ्य सुतेष्विन्द्र गिर्वणः ॥ २–१४ ॥

இருக்கு 8-99-1-2.

உ॒ ஷ்வ ஷு॒ ஶி॒வி॒ஶ்ரி॒ந்னு ஹ॒ரி॒வ॒ஸ்ஸீ॒ஹெ கூ॒யா ஶ॒ச்ஷ॒ஞ்ஜி வெ॒஧ஸ꞉ ।
தவ ஶ்ரு॒வாꣳஸ்யு॒ப॒மா॒ந்யு॒க்ஂ॒ய ஸு॒தெ॒ஷ்விந்த்ர கி॒ர்வ॒ண꞉ ॥

அன்வயம்.

हे सुशिप्रिन्!, हरिवः!, गिर्वणः!, इन्द्र!, त्वया, वेधसः, आ भूषन्ति, तं (त्वा,) (वयं,) (ईमहे,) मत्स्व, उक्थ्य!, सुतेषु, उपमानी, तव, श्रवांसि ॥

பதவுரை.

हे सुशिप्रिन्!	ஹெ ஸு॒ஶி॒வி॒ந்!	அழகிய முகமுடையோய்!
हरिवः!	ஹ॒ரி॒வ꞉!	அரி, என்னுங் குதிரைகளுடையோய்!
गिर्वण!	கி॒ர்வ॒ண꞉!	வாக்கால் துதிக்கத் தக்கோய்!
इन्द्र!	இ॒ந்த்ர!	இந்திரனே!
त्वया	கூ॒யா	நின்னிடத்துப்
वेधसः	வெ॒஧ஸ꞉	பணிவிடை செய்யத் தக்கார்கள்
आ भूषन्ति	ஆ ஶ॒ச்ஷ॒ஞ்ஜி	(பலர்கள்) வெளிப்படுகின்றார்கள்.
तं (त्वा)	தம் (கூ॒யா)	அத்தகைய வுன்னை
(वयं)	(வயம்)	(நாங்கள்)
ईमहे	ஈ॒ம்ஹெ	வேண்டுகின்றோம்.
मत्स्व	உ॒ த்ஸ்வ	(நீ) தன்னைக் களிப்படைவித்துக் கொள்வாயாக.

* सुशिप्र, என்பது இருக்கு.

उक्थ्य !	உக்஥ !	போற்றத் தக்கோய் !
सुतेषु	ஸுதேஷு	சோமரசம் பிழிந்த விடத்து
उपमानी	உபமானீ	உனக்கொப்பான
तव	தவ	உன்னுடைய
श्रवांसि	ஶ்ரவாꣳஸி	அன்னங்கள் கிடைக்குக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

அழகிய வதனத்தோய் ! 'அரி' பென்னும் பெயருடைய குதிரை யுடையோய் ! வாக்கால் துதிக்கத் தக்கோய் ! எனது விஷயத்தில் தொண்டு செய்பவர்கள் (அதிகர்கள்) தோன்றுகின்றார்கள். சோமரசத்தால் தன்னைக் களிப்படைவித்துக் கொள்வாயாக. மற்றும், உன்னை ஒன்றிரக்கின்றோம், அஃது என்னை யெனின் ? போற்றத் தக்கோய் ! சோமரசம் பிழிந்தபோது, உன்னுடைய உவமை வடிவ அன்னங்கள், உனது அநுக்கிரகத்தால் உண் டாக வேண்டு மென்பதையாம். (2)

நான்காவது கண்டம்

முற்றும்.

ஐந்தாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—2. அத்தியாயம்—3. கண்டம்—5.

ஒன்பது மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

२ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २

815. यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा ।

३ १२ ३ २

देवावीरघशꣳसहा ॥ १ ॥

யஸ்தே மதோ வரேண்யஸ்தேநா பவஸ்வாந்தஸா ।

தேவாவீரகஶꣳஸஹா ॥

அன்வயம்.

(हे सोम !,) देवावीः, अघशंसहा, वरेण्यः, मदः, ते, यः, तेन, अन्धसा, पवस्व ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	(சோமமே !)
देवावीः	தெவாவீஃ	தேவர்கள் விரும்புவதும்,
अवशंसहा	அவஶம்ஸஹா	இராக்கதர்களை யழிப்பதும்,
वरेण्यः	வரெண்யஃ	மேம்பட்டதும்,
मदः	மதஃ	களிப்பைக்கொடுப்பதுமாகிய
ते	தெ	உன்னுடைய
यः	யஃ	யாதொரு இரசமுண்டோ,
तेन	தெந	அந்த
अन्धसा	அந்ஸா	இரசத்துடன்
पवस्व	பவஸ்வ	ஒழுகுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1.

சோமமே! தேவர்கள் விரும்புவதும், இராக்கதர்களைக் கொல்வதும், எல்லாவற்றினுஞ் சிறந்ததும், களிப்பைத் தருவதுமாகிய யாதொரு உனது இரசமுண்டோ, அருந்தற்குரிய அந்த இரசத்துடன் பாத்திரத்தில் நிறைவாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१ २ ३१२ ३ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २

816. जघ्निर्वृत्रममित्रियꣳ सस्निर्वाजं दिवे दिवे ।

१ २ ३ १ २

* गोषातिरश्वसा असि ॥ २ ॥

ஜக்நிர்வ்ரு-த்ரமமித்ரியꣳ ஸஸ்நிர்வாஜம் திவெ திவெ ।

கோஷாதிரஶ்வஸா அஸி ॥

அன்வயம்.

(हे सोम !,) अमित्रियं, वृत्रं, जघ्निः असि, दिवे दिवे, वाजं, सस्निः, गोषातिः, अश्वसा ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	(சோமமே ! நீ,)
अमित्रियं	அமித்ரியம்	மித்திரனுகாத (பகைவனுகிய)

* गोत्रा 'उ अश्वसा,' என்பது இருக்கு.

वृत्रं	வ்ருத்ரம்	விருத்திராசுர னென்னுஞ் சத்துருவைக்
जघ्निः असि	ஜஹ்நிஃ அஸி	கொல்கின்றவ னாகின்றாய். மற்றும்,
दिवे दिवे	தி வெ தி வெ	நாடோறும்
वाजं	வாஜம்	உயுத்தத்தைச்
सस्निः	ஸஸ்நிஃ	செய்கின்றாய். மற்றும்,
गोषातिः	கொஷாதிஃ	பசுக்களைக் கொடுப்போனா யிருக்கின்றாய்.
अश्वसा	அஶ்வஸா	குதிரைகளையுங் கொடுப்போனா யிருக்கின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

சோமமே! நீ, நண்பனாகாத விருத்திர னென்னுஞ் சத்துருவைக் கொல்கின்றவ னாகின்றாய். மற்றும், நாடோறும் போர்செய்கின்றனை, அன்றியும், பசுக்களைக் கொடுப்போ னாகின்றனை. குதிரைகளைக் கொடுப்போனு மாகின்றனை யென்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

१ २ ३ २ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
817. सम्मिश्लो अरुषो भुवः सूपस्थाभिर्न धेनुभिः ।
१ २ ३२उ ३ २
सीदञ्छ्येनो न योनिमा ॥ ३–१५ ॥

இருக்கு 9-61-19-21.

ஸம்மிஶ்லோ அரூஷோ பூவஃ ஸூபஸ்தாபிர்ந தெநூபிஃ ।
ஸீதஞ்ஜ்யெநோ ந யொநிமா ॥

அந்வயம்.

(हे सोम !,) सूपस्थाभिः, धेनुभिः, सम्मिश्लः, श्येनः न, न, योनिं, आसीदन्, अरुषः भुवः ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	(சோமமே! நீ)
सूपस्थाभिः	ஸூபஸ்தாபிஃ	அழகிற் சிறந்த
धेनुभिः	தெநூபிஃ	பசுக்களின் பாலுடன்
संमिश्लः	ஸம்மிஶ்லஃ	கலக்கப்பட்டு

श्येनः न	ஶ்யேநஃ ந	பருந்து, தனதிடத்தில் வந்து உட்காருவதுபோல்,
न	ந	இச்சமயம்
योनिं	யொநிம்	தனதிடத்தை
आसीदन्	ஆஸீதந்	அடைந்து
अरुषः भुवः	அரூஷஃ ஹுவஃ	விளங்குவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

சோமமே! நீ, மிக அழகிய ஆவின் பாலுடன் நன்கு கலக்கப்பெற்று, பருந்து விரைவில் வந்து தனதிடத்தில் அமர்வதுபோல், தன்னுடைய இடத்தை யடைகின்றாய். அடைந்து, இப்போது விளங்குகின்றனை யென்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

३२ ३ २ ३२उ ३ २ ३ ३ १ २
818. अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३क र ३ १२ ३ १
पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद्रोदसी उभे ॥ १ ॥

அயம் பூஷா ரயிர்ஹ்ஹஃ ஸொமஃ பூநாநொ அர்ஷதி ।
பதிர்விஶ்வஸ்ய ஹூமநொ வ்யக்யத்ரோதஸீ உபெ ॥

அந்வயம்.

पूषा, भगः, रयिः, अयं, पुनानः, अर्षति, विश्वस्य, भूमनः, पतिः, सोमः, उभे रोदसी, व्यख्यत् ॥

பதவுரை.

पूषा	பூஷா	பரிபாலிப்பதும்,
भगः	ஹ்ஹஃ	ஆராதிக்கத் தக்கதும்,
रयिः	ரயிஃ	தனத்திற்குக் காரணமுமாகிய
अयं	அயம்	இச் சோமரசம்
पुनानः	பூநாநஃ	தசாபவித்திர மென்னும் ஆடை நுனியாற் சுத்தமாகிக்
अर्षति	அர்ஷதி	கலசத்தை யடைகின்றது. அவ்வாறே,
विश्वस्य	விஶ்வஸ்ய	எல்லாப்

भूमनः	ஹூமநஃ	பிராணிகளையும்
पतिः	வதிஃ	பாதுகாக்கின்ற
सोमः	ஸொமஃ	சோம ரசம்
उभे रोदसी	உஹே ரொதஸீ	வான், மண் இரண்டையுங்
व्यख्यत्	வ்யக்யத்	தனது ஒளியால் விளக்குகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில்—1.

காப்பாற்றுவதும், அனைவராலும் போற்றத் தக்கதும், தனத்திற்கு நிமித்தமுமாகிய இச் சோமரசம், தசாபவித்திரமாகிய ஆடை நூலியாற் சுத்தஞ் செய்யப்பட்டுக் கலசத்தை யடைகின்றது. அங்ஙனமே, பிராணிகளெல்லாவற்றையும் பரிபாலிக்கின்ற சோம ரசம், வானையும், மண்ணையுந் தனது ஒளியாற் பிரகாசிப்பிக்கின்றது. இதனால், இது இரண்டுலகத்திலு மிருக்கின்றதென்பது குறிக்கப்பட்டதென்க. (1)

மந்திரம் 5.

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २३ १ २

819. समु प्रिया अनूषत गावो मदाय घृष्वयः ।

१ २ ३१ २२ ३ १ २

सोमासः कृण्वते पथः पवमानास इन्दवः ॥ २ ॥

ஸமு ப்ரியா அநூஷத காவொ மதாய க்ருஷ்வயஃ ।

ஸொமாஸஃ க்ருண்வதே பதஃ பவமாநாஸ இந்தவஃ ॥

அன்வயம்.

प्रियाः, घृष्वयः, गावः, मदाय, समनूषत, उ, पवमानासः, इन्दवः, सोमासः, पथः, कृण्वते ॥

பதவுரை.

प्रियाः	ப்ரியாஃ	மிகுந்த பிரிய முள்ளவைகளும்
घृष्वयः	க்ருஷ்வயஃ	மிக விளங்குகின்றவைகளும் அல்லது, நான் முன்னர்த் துதிப்பேன், நான் முன்னர்த் துதிப்பேன் என ஒன்றற் கொன்று கலகஞ் செய்கின்ற வைகளுமான
गावः	காவஃ	தோத்திர மாகிய வாக்குகள்,

मदाय	ஸதாய	சோமத்தினுடைய களிப்பின் பொருட்டு,
समनूषत	ஸஅநூஷத	இனிது துதிக்கின்றன.
उ	உ	இது வெளிப்படையாம். மற்றும்,
पवमानासः	பவஸாநாஸஃ	சுத்தம் பண்ணப்பட்டதும்
इन्दवः	இந்தவஃ	விளக்க முடையதுமாகிய
सोमासः	ஸொஸாஸஃ	சோம ரசம்
पथः	பதஃ	பால் கறக்கும் (விரும்பிய தடையும்) வழியைச்
कृण्वते	க்ருண்வதே	செய்கின்றது,

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

பேரன்புடையவைகளும், மிக விளக்க மானவைகளும், அல்லது, யானே முன்னர்ப் போற்றுவேன், 'யானே முன்னர்ப் போற்றுவேன்' என முன் வந்து நிற்பவைகளுமான, தோத்திரமென்னும் வாக்குகள், சோமத்தினது மதத்தின் பொருட்டு இனிது போற்றுகின்றன. இது பிரசித்தியாம். அல்லது, பால்தரும் பசுக்கள் சோமத்தி னுடைய களிப்பின் பொருட்டுக் கத்துகின்றன வென்பதுமாம். ஆதலால், பரிசுத்தமான சோமரசம் விளக்க மிகுந்ததாகிய மார்க்கத்தைச் செய்கின்றது. அதாவது பால்கறக்கும் வழியைத் தேடுகின்றது என்பதாம். (வேண்டியவற்றைக் கொடுக்கத்தக்க நெறியை யுண்டாக்குகின்றது என்பது கருத்து.) (2)

மந்திரம் 6.

१ २र३१ २र३१२ ३२२

820. **य ओजिष्ठस्तमाभर पवमान श्रवाय्यम् ।**

१ २र ३ २३२ ३२उ ३१२

यः पञ्चचर्षणीरभि रयिं येन वनामहे ॥ ३-१६ ॥

இருக்கு. 9-101-7-9.

ய ஒஜிஷ்ஷ்டஸ்தமாபர பவமான ஸ்ரவாய்யம் ।

யஃ பஞ்சசர்ஷணீரபி ரயிம் யேந வநாமஹை ॥

அன்வயம்.

पवमान!, यः, ओजिष्ठः, श्रवाय्यं, यः, पञ्चचर्षणीः, (अभितिष्ठति,) येन, रयिं, वनामहे, तं आभर ॥

பதவுரை.

पवमान!	வவஶாந!	சோமமே! நீ,
यः	யः	யாதொரு ரசம், மூன்றுவதும்
ओजिष्ठः	ஒஜிஷ்஠ः	வலியுடையதும்
श्रवायं	ஶ்ரவாயயம்	பால் முதலியவற்றுடன் கலப்பதற்கு உரியதுமாமோ, மற்றும்,
यः	யः	யாதொரு ரசம்
पञ्च चर्षणीः	வஞ்ச அஷ்டணீः	ஐவகை மனிதர்களை
(अभितिष्ठति)	(அபி திஷ்ட தி)	(அடைகின்றதோ,)
येन	யெந	எந்த ரசத்தால், யாங்கள்
रयिं	ரயிம்	தனத்தை யடையவேண்டுமென
वनामहे	வநாமஹெ	இரக்கின்றோமோ,
तं आभर	தம் ஆஹர	அந்த ரசத்தைக் கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

பேராற்ற லுள்ளதும், மூன்றுவது மாகிய யாதொரு ரசமுண்டோ, கூட்டத்தக்க அந்த இரசத்தை எங்கட்குத் தருவாயாக. மற்றும், எந்த ரசம் நிஷாத சென்பாரை ஈறுகவுடைய ஐவகைச் சனங்களையு மடைகின்றதோ, அஃதன்றியும், எந்த ரசத்தால் நாங்கள் தனத்தையும் அடைகின்றோமோ, அல்லது, எதனால், நின்பால் தனம் வேண்டுமென்றிரக்கின்றோமோ, அத்தன்மைத் தாகிய ரசத்தைக் கொடுப்பாயாக என முடித்துக் கொள்க. (3)

மந்திரம் 7.

१२ ३ १ २ ३२उ ३ १२ ३ १ २र ३ २
821. वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नां प्रतरीतोषसां दिवः ।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्राणा सिन्धूनां कलशाँ अचिक्रददिन्द्रस्य हार्द्याविशन् मनीषिभिः ॥

வ்ருஷா உதீநாம் வவதெ விசக்ஷணஃ ஸொமொ அஹ்நாம் ப்ரதரீ
[தொஷஸாம் திவஃ ।
ப்ராணா ஸிந்தூநாம் கலஶாம் அசிக்ரதத் இந்த்ரஸ்ய ஹார்த்யா விஶந் மநீஷிபிஃ ॥

அன்வயம்.

मतीनां वृषा, विचक्षणः, अह्नां, उषसां, दिवः, प्रतरीता, सिन्धूनां, प्राणा, मनीषिभिः, सोमः पवते, इन्द्रस्य, हार्दि, आविशन्, कलशान्, अचिक्रदत्॥

பதவுரை.

मतीनां वृषा	உதீநாம் வ்ருஷா	துதிப்போர்களின் மனோ விருப்பை நிறையச் செய்வதும்,
विचक्षणः	விசக்ஷணः	சிறப்பாய் உணர்வதும்,
अह्नां	அஹ்நாம்	பகல்களையும்
उषसां	உஷஸாம்	உழாக்காலங்களையும்
दिवः	திவः	விண்ணுலகங்களையும்
प्रतरीता	ப்ரதரீதா	வளர்க்கின்றதும்,
सिन्धूनां	ஸிந்ஔநாம்	ஓடும் நீர்களுக்கு
प्राणा	ப்ராணா	உயிர் கொடுப்பதும், அல்லது, விருத்தியைச் செய்வதும்,
मनीषिभिः	மநீஷிபிஃ	தோத்திரங்களாற் புகழத்தக்கதுமாகிய
सोमः पवते	ஸொமஃ பவதெ	சோமம், ஒழுகுகின்றது. அது,
इन्द्रस्य	இந்த்ரஸ்ய	இந்திரனுடைய
हार्दि	ஹார்தி	உள்ளத்திற்
आविशन्	ஆவிசந்	புகுவதற்கு விரும்பிக்
कलशान्	கலசான்	கலசங்களைப் பற்றிக்கொண்டு
अचिक्रदत्	அசிக்ரதத்	ஒலிக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—மூன்றுவது மூன்றில்—1. பார்க்கவ ரிஷி.

இச் சோமரசம் பிழியப் படுகின்றது. எவ் வண்ணமாகிய சோமரசமெனின்? துதிப்போர்களுக்கு விரும்பியவற்றைப் பொழிவதும், நன்கு உணர்வதும், பகல், உழாக்காலம், விண்ணுலகம், அல்லது, இரவி, என்னுமிவைகளை விருத்தி செய்வதும், மற்றும், ஓடுகின்ற நீர்களுக்குப் பிராணனைக் கொடுப்பதுமாம். (அத்தன்மைய சோமம்) கலசங்களிற் செல்வதற்கு ஒலிக்கின்றது. என்ன செய்து கொண்டெனின்? இந்திரனுடைய இருதயத்திற் புகுந்துகொண்டும், துதிகளாற் பிழியப் பெற்றுக்கொண்டுமென்க. ஈண்டு, பிழியப்பெற்றுக் கொண்டும், என்பது எஞ்சி நின்றது. 'துதிகளால்' என்னுஞ் சொல்லைப் பிழிதல் என்பதுடன் இயைத்தமை காண்க. (1)

மந்திரம் 8.

३ १ २ ३ २ ३ १ २र३२र ३ १ २
822. मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नृभिर्यतः परि कोशाꣳ असिष्यदत् ।
३ २ ३ १२ ३२ ३ २३ २३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३१२
त्रितस्य नाम जनयन् मधु क्षरन्निन्द्रस्य वायुꣳ सख्याय वर्धयन् ॥२॥

உநீஷிஹிஃ பவதெ பூர்வ்யஃ கவிர்நூஹிர்யதஃ பரி
[கொஶாம் அஸிஷ்யதத் ।
த்ரிதஸ்ய நாம ஜநயந் மது க்ஷரந்த்ரஸ்ய வாயும்
[ஸவ்யாய வர்யயந் ॥

அந்வயம்.

पूर्व्यः, कविः, मनीषिभिः, पवते, नृभिः, यतः, कोशान्, पर्यसिष्यदत्, त्रितस्य, इन्द्रस्य, नाम, जनयन्, मधु, इन्द्रस्य, सख्याय, वायुं, वर्द्धयन्, क्षरन् ॥

பதவுரை.

पूर्व्यः	பூர்வ்யஃ	பண்டைக் காலத்ததும்,
कविः	கவிஃ	கவியுமாகிய சோமரசம்,
मनीषिभिः	உநீஷிஹிஃ	அறிவு மிகுந்த வேட்போர்களாற்
पवते	பவதெ	புநிதமாக்கப்படுகின்றது. மற்றும்,
नृभिः	நூஹிஃ	வேட்போர் முதலியோர்களால்
यतः	யதஃ	நியமிக்கப்பட்ட சோமம்,
कोशान्	கொஶாந்	கலசங்களை யடைவதற்கு
पर्यसिष्यदत्	பர்யஸிஷ்யதத்	நாற்புறமும் வழிகின்றது.
त्रितस्य	த்ரிதஸ்ய	மூன்றுலகின்கண்ணும் விரிந்ததும்,
इन्द्रस्य	இந்த்ரஸ்ய	இந்திர சம்பந்தமுடையதுமாகிய
नाम	நாம	நீரை
जनयन्	ஜநயந்	உண்டாக்கி,
मधु	மது	மதுர ரசத்தை
इन्द्रस्य	இந்த்ரஸ்ய	இந்திரனுடைய
सख्याय	ஸவ்யாய	நண்பனாதற்கு
वायुं	வாயும்	வாயுவையும்
वर्द्धयन्	வர்யயந்	விருத்தி செய்துகொண்டு
क्षरन्	க்ஷரந்	பாத்திரத்திற் செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

இச் சோமரசம், பேரறிவாளர்களாற் பவித்திரஞ் செய்யப்படுகின்றது. அல்லது, இச் சோமரசம் பேரறிவாளர்கள் வாயிலாகப் பிழியப்படுகின்றது. எவ்வண்ண மாகியது இச் சோமரச மெனின்! பழமையானதும், மிகுந்த அறிவுடையதும், வேட்போர் முதலியோர்களாற் செலுத்தப்பட்டுக் கலசங்களை யடைந்து வழிகின்றதும், மூன்றுலகத்தும் பரவிய இந்திரனுடைய (தலைவனுடைய) நீரை உண்டாக்கி மதுர ரசத்தைப் பொங்குமாறு செய்கின்றதுமாம் என்க. என்ன செய்து கொண்டெனின்? இந்திரனுடைய சிநேகிதத்தின் பொருட்டு வாயுவை விருத்தி செய்துகொண்டு ஒழுகுகின்றதென முடித்துக்கொள்க. (2)

மந்திரம் 9.

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
823. अयं पुनान उषसो अरोचयदयꣳ सिन्धुभ्यो अभवदु लोककृत् ।
३ २ ३१ २३ २ १ २ ३१ २ ३ १ २ ३२
अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरꣳ सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः ॥

॥ ३–१७ ॥ இருக்கு 9-86-20-22.

அயம் பூநாந உஷஸோ அரோசயதயம் ஸிந்துப்யோ
[அபவது லொககூத் ।
அயம் த்ரிஃ ஸப்த துதுஹாந ஆசிரம் ஸோமோ ஹ்ருதே
[பவதே சாரு மத்ஸரஃ ॥

அந்வயம்.

लोककृत्, अयं सोमः, पुनानः, उषसः, अरोचयत्, सिन्धुभ्यः, अभवत्, अयं, हृदे, त्रिः सप्त, आशिरं, दुदुहानः, मत्सरः, चारु, पवते ॥

பதவுரை.

लोककृत्	லொககூத்	மழை பெய்விப்பதுபற்றி, வீரியத்தை நிலை நிறுத்துவதாமாதலின், உலகத்திற்குத் தலைமையாயுள்ள
अयं सोमः	அயம் ஸோமஃ	இச் சோமம்,

पुनानः	வ-நா-நஃ	சமற்காரம் பண்ணப்பெற்று
उषसः	உஷஸஃ	உழாக் காலங்களை
अरोचयत्	அரொஅயக்	விளக்குவதாய்
सिन्धुभ्यः	ஸிந்து-ப்யஃ	ஓடுகின்ற ஆற்று நீருடன்
अभवत्	அபவக்	ஒன்றானது. மற்றும்,
अयं	அயம்	இச் சோமம்,
हृदे	ஹ்ருதெ	(இந்திரனுடைய) இருதயத்திற் செல்லுதற் பொருட்டு,
त्रिः सप्त	த்ரிஃ ஸப்த	இருபத்தொரு பசுக்களை
आशिरं	ஆஶிரம்	சோமத்துடன் கூட்டத்தக்க
दुदुहानः	த-த-ஹா-நஃ	பால் கறப்பதாகவும்,
मत्सरः	மத்ஸரஃ	களிப்பைக் கொடுப்பதாகவும்,
चारु	சாரு	அழகுடையதாகவும்
पवते	பவதெ	ஒழுகுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

இச் சோமரசம், பவித்திரஞ் செய்யப்பட்டு உழாக் காலங்களைப் பிரகாசிப்பிக்கின்றது. மற்றும், இச் சோமரசம் 'வசதீவரி' என்னும் ஆற்று நீருடன் நிரம்புகின்றது. மற்றும், இச் சோமரசம் எத்தன்மைய தெனின்? உலகத்திற்குத் தலைமையானதாம். மழையைப் பெய்தலாலும், வீரியத்தைக் கட்டுப்படுத்தலாலும், இது உலகிற்குத் தலைமையாயிற்றென்க. இச் சோமரசம் இருபத்தொரு பசுக்களைப் பால் கறக்குமாறு செய்கின்றது. பால் கறப்பதற்குக் காரணமா யிருத்தலின், இதுவே பால்கறக்கின்றதென உபசாரமாய்க் கூறப்பட்டது. அஃதன்றியும், களிப்பை யுண்டாக்குவதும், அழகுடையதும், ஒழுகுகின்றதுமாம் என்க. (3)

ஐந்தாவது கண்டம்

முற்றும்.

ஆறுவது கண்டம்

பிரபாடகம்—2. அத்தியாயம்—3. கண்டம்—6.

ஆறு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३ १ २र ३२३१ २उ ३२ ३ २
824. एवा ह्यसि वीरयुरेव शूर उत स्थिरः ।
३ २ ३ २ ३ १२
एवा ते राध्यं मनः ॥ १ ॥

வவா ஹ்யஸி வீரயுரேவ ஶூர உத ஸ்தி²ரः ।
வவா தே ராத்⁴யம் மனः ॥

அன்வயம்.

(हे इन्द्र !), वीरयुः एव, असि, शूरः एव, उत, स्थिरः, ते, मनः, राध्यं एव ॥

பதவுரை.

(हे इन्द्र !)	(ஹே இந்த்³ர !)	(இந்திரனே ! நீ,)
वीरयुः एव	வீரயுஃ வவ	பகைவரைக் கொல்லவேண்டுமென்னும் இச்சையுடையவனாகவே
असि	அஸி	இருக்கின்றாய்.
हि	ஹி	எதனாலெனின் ? நீ,
शूर एव	ஶூர வவ	சூரனே யாகின்றாய். (ஆதலினென்க.)
उत	உத	மற்றும்,
स्थिरः	ஸ்தி²ரः	நிலைத்திருப்பவனாகின்றாய். (ஆதலின்)
ते	தே	உன்னுடைய
मनः	மனஃ	மனமானது
राध्यं एव	ராத்⁴யம் வவ	போற்றத் தக்கதேயாம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1.

இந்திரனே! நீ, உண்மையாய், போரில் வல்லுநர்களைக் கொல்லவேண்டுமென்னும் இச்சையுடையவனாகவே யிருக்கின்றனை. ஆதலின், நீ, வல்லுநனேயாகின்றாய். மற்றும், போரில் உறுதியுடையவனுமாகின்றாய். ஓரிடத்திலிருந்து கொண்டே சத்துருக்களை நாசஞ் செய்கின்றாய் என்பதாம். இங்ஙனமாகுமிடத்து, உனது மனம், துதியாற் போற்றத் தக்கதேயாம் என்க. நீ, மனதினாலேயே, சத்துருவைக் கெடுத்தல், நிலையாய் நிற்றல் முதலியவைகளைச் செய்தலின், உனது மனமானது வழிபடத் தக்கதேயாம் என்பது பொருள். (1)

மந்திரம் 2.

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
825. एवा रातिस्तुवीमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः ।
१ २ ३ १ २
अधा चिदिन्द्र नः सचा ॥ २ ॥

ஸவா ராதிஸ்துவீமஹ விஶ்வேபிர்தாயி தாத்ருபிஃ ।
அதா சிதிந்த்ர நஃ ஸசா ॥

அந்வயம்.

तुवीमघ, इन्द्र! विश्वेभिः, धातृभिः, रातिः, धायि एव, अध चित्, हे इन्द्र!, नः, सचा ॥

பதவுரை.

तुवीमघ	துவீமஹ	மிகுந்த தனமுடைய
इन्द्र!	இந்த்ர!	இந்திரனே!
विश्वेभिः	விஶ்வேபிஃ	எல்லாத்
धातृभिः	தாத்ருபிஃ	தேவதைகளையும் போஷிக்கின்ற வேள்வித் தலைவர்களால்,
रातिः	ராதிஃ	நீ கொடுத்த, பசு, குதிரை முதலிய தனங்கள்
धायि एव	தாயி ஸவ	காப்பாற்றவே படுகின்றன.
अध चित्	அத சித்	மற்றும், இந்திரனே! அத்தன்மையனாகிய நீ,
नः	நஃ	வேள்வி செய்கின்றவர்களான எங்களுக்குத்
सचा	ஸசா	தனமுதலிய வற்றைக் கொடுத்துக் கருமத்திற்கு, உதவி செய்வாயாக,

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

(இந்திர!) மூலத்தில், 'துவீ' என்பது தனம் என நிகண்டுங் கூறுகின்றது. கருமங்களைக் காப்பாற்றுகின்ற அரணவராலும், அல்லது, அவிகொடுக்கின்றதால் தேவர்களைப் போஷிக்கின்ற வேட்போர்களால், உன்னுடைய பசு, குதிரை முதலிய தனங்கள் (நின்னுற் கொடுப்பட்டவைகள்) காப்பாற்றப்படுகின்றன. மற்றும், அத்தன்மைய நீ, எங்களுக்குத் தன முதலியவற்றைக் கொடுப்பதாற் கருமத்திற்கு அநுகூலஞ் செய்வாயாக என்பதாம்.

மந்திரம் 3.

२उ ३ १२ ३१ २र
826. मोषु ब्रह्मेव तन्द्रयुर्भुवो वाजानां पते ।
१ २ ३२ ३ १२
मत्स्वा सुतस्य गोमतः ॥ ३–१८ ॥

இருக்கு 9-18-28-30.

மொஷூ ஷு ப்ரஹ்மேவ தந்த்ரயுர்பூவோ வாஜாநாம் பதே ।
உதா ஸுதஸ்ய மொஉதஃ ॥

அந்வயம்.

वाजानां पते!, तन्द्रयुः, ब्रह्मा इव, मा उषु भुवः, सुतस्य, गोमतः, मत्स्व ॥

பதவுரை.

वाजानां पते!	வாஜாநாம் பதே!	அன்னங்கட்கு, அல்லது, ஆற்றல்களுக்குத் தலைவனுகிய இந்திர!
तन्द्रयुः	தந்த்ரயுஃ	கருமத்திற் சோம்பலையடைந்த
ब्रह्मा इव	ப்ரஹ்மா இவ	அந்தணன் போன்று
मा उषु भुवः	மா உஷு பூவஃ	சோம்ப லுடையோன் ஆகாதே (எனது கருமத்தில் அன்புடையனுகுதி.)
सुतस्य	ஸுதஸ்ய	பிழியப் பெற்றதும்
गोमतः	மொஉதஃ	பசுவின் பால் முதலியவற்றுடன் கலந்ததுமாகிய, பாத்திரத்திலுள்ள சோமத்திற்
मत्स्व	உத	களிப்படைவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

ஆற்றல், அல்லது, அன்னத்திற்குத் தலைவனே! இந்திர! காரணமின்றிக் கருமத்தை விட்டதாற் சோம்பலுடையவனாகிய அந்தணன் போன்று, நீ (எனது வேள்வியின் கண்) அன்பிலானாகாதே. மற்றோ, கருமத்திற் பிரியமுடையோனாவாய் என்பது வேண்டுகோளாம். சமஸ்காரஞ் செய்யப்பட்டதும், ஆவின் பால் முதலியவைகளுடன் கலக்கப்பட்டதுமாகிய, பாத்திரத்திலுள்ள சோமரசத்தினாற் களிப்படைவாயாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
827. इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः ।
३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
रथीतमꣳ रथीनां वाजानाꣳ सत्पतिं पतिम् ॥ १ ॥

இந்த்ரம் விஶ்வா அவீவ்ருதன்ஸமுத்ரவ்யசஸம் கிரஃ ।
ரதீதமம் ரதீநாம் வாஜாநாம் ஸத்பதிம் பதிம் ॥

அந்வயம்.

विश्वा गिरः, समुद्रव्यचसं, रथीनां, रथीतमं, वाजानां, पतिं, सत्पतिं, इन्द्रं, अवीवृधत् ॥

பதவுரை.

विश्वा गिरः	விஶ்வா கிரஃ	துதியாகிய எல்லா வாக்குகளும்,
समुद्रव्यचसं	ஸமுத்ரவ்யசஸம்	கடல் போல் நிறைந்தவனும்
रथीनां	ரதீநாம்	தேருடைய போர்வீரர்களுட்
रथीतमं	ரதீதமம்	சிறந்த தேருடையவனும்
वाजानां	வாஜாநாம்	அன்னங்கட்கு
पतिं	பதிம்	இறைவனும்,
सत्पतिं	ஸத்பதிம்	நல்லோர்களைக் காப்பாற்றுவோனுமாகிய
इन्द्रं	இந்த்ரம்	இந்திரனை
अवीवृधत्	அவீவ்ருதன்	விருத்தி செய்கின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில்—1. மதுச் சந்தர் ரிஷி.

என்னுடைய தோத்திரங்கள், இந்திரனை விருத்தி செய்கின்றன. எவ்வண்ணனாகிய இந்திரனை யெனின்? கடல்போல் நிறைவுடையவனும், போர்

வீரர்களுள் வியப்பாகிய இரதமுடையவனும், அன்னங்கட்கு இறைவனும், நல்லோர்களைப் பாது காப்பவனுமாகிய இந்திரனை, வளர்க்கின்றன எனக் கூட்டுக.

மந்திரம் 5.

३ १ २ ३ २ ३ १ २
828. सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते ।
२३ १ २र ३ १ २३१२
त्वामभि प्र नोनुमो जेतारमपराजितम् ॥ २ ॥

ஸவ்யெ த இந்த்ர வாஜிநொ மா ஹெம ஶவஸஸ்பதெ ।
க்வாமபி ப்ர நொநுமொ ஜெதாரமபராஜிதம் ॥

அந்வயம்.

शवसस्पते !, इन्द्र !, ते, सख्ये, वाजिनः, मा भेम, जेतारं, अपराजितं, त्वां, अभिप्रनोनुमः ॥

பதவுரை.

शवसस्पते !	ஶவஸஸ்பதெ !	ஆற்றலைப் பாதுகாப்போய் !
इन्द्र !	இந்த்ர !	இந்திரனே ! (நாங்கள்)
ते	தெ	உன்னுடைய
सख्ये	ஸவ்யெ	நண்பனாயிருக்குமிடத்து
वाजिनः	வாஜிநः	அன்னமுடையோர்களாய்ப்
मा भेम	மா ஹெம	பகைவர்கட்குப் பயமடையோம். மற்றும்,
जेतारं	ஜெதாரம்	போரில் வெற்றி கொள்வோனும்
अपराजितं	அபராஜிதம்	பிறரால் வெல்லப்படாதோனுமாகிய
त्वां	க்வாம்	உன்னைப்
अभि प्र नोनुमः	அபி ப்ர நொநுமஃ	பலவகையாலும் வணங்குகின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

வலியைக் காப்பாற்றும் இந்திரனே ! உன்னுடைய அநுக்கிரகத்தைப் பெறும் நினது நண்பனாந்தன்மையை யடைந்துள்ள யாங்கள், அன்னமுடையோர்களாய்ச் சத்துருக்களினின்றும் பயத்தை யடைந்தவர்களாகமாட்

டோம். ஆதலின் உன்னை, எல்லாவகையானும் வணங்குகின்றோம் என்க. எத் தன்மையனுகிய உன்னை யெனின்? போர்களில் வெற்றிச் சீலமுடையவனும் பிறரால் வெல்லமுடியாதவனுமாகிய நின்னை, வணங்குகின்றோம் என்பதாம்.

மந்திரம் 6.

३१ २र ३२३ १ २र ३१२
829. पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो न विदस्यन्त्यूतयः ।
३१ २र३ १२ ३२ ३ १ २३२
यदा वाजस्य गोमतः स्तोतृभ्यो मंहते मघम् ॥ ३–१९ ॥

இருக்கு 1-11-1-3.

வகுவீபூரிந்த்ரஸ்ய ராதயோ ந விதஸ்யந்த்யூதயஃ ।
யதா வாஜஸ்ய கோமதஃ ஸ்தோத்ருப்யோ மம்ஹதே மகவ் ॥

அந்வயம்.

ऊतयः, इन्द्रस्य, रातयः, पूर्वीः, स्तोतृभ्यः, गोमतः, वाजस्य, मघं, यदा, मंहते, न विदस्यन्ति ॥

பதவுரை.

ऊतयः	ஊதயஃ	பாதுகாப்பாற்றத்தக்க
इन्द्रस्य	இந்த்ரஸ்ய	இந்திரனுடைய
रातयः	ராதயஃ	ஈகைகள்
पूर्वीः	பூர்வீஃ	அநாதியாயுள்ளனவாம். (இக்காலத்திய வேள்வித் தலைவன்)
स्तोतृभ्यः	ஸ்தோத்ருப்யஃ	வேட்போர்களுக்குப்
गोमतः	கோமதஃ	பசுக்களுடன்
वाजस्य	வாஜஸ்ய	அன்னத்தையும்,
मघं	மகம்	தனத்தையும்,
यदा	யதா	எப்போது
मंहते	மம்ஹதே	கொடுக்கின்றனை, (அப்போதும்)
न विदस्यन्ति	ந விதஸ்யந்தி	(இந்திரனுடைய ஈகைகள்) குறையாதனவாம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

இந்திரன் செய்கின்ற பொன் தானங்கள். அநாதிகாலமாயுள்ளன என் பது துணிபாம். இவ் விந்திரன் எப்போதும் வேட்போர்களுக்குப் பொன்

தானஞ் செய்தலேயே இயற்கையாயுடையான் என்பது பொருள். இவ்வாறுயபோது, இக்காலத்திய வேள்வித் தலைவனும் வேட்போர்களுக்கு, ஆக்களுடன் அன்னத்தையும், மற்றும், வேண்டிய தனத்தையும் தட்சிணையாகக் கொடுக்குங்காலும், அதாவது மிகுந்த தனமுதலியவற்றைக் கொடுத்தபோதிலும், இந்திரனுடைய பாதுகாப்புகள் குறைவுபடாதனவாம் என்பதாம். (6)

ஈண்டு, 'உவம' 'மகம்' என்பது 'தனம்' என நிகண்டு கூறுகின்றது.

வித்தியாதீர்த்த மகேசுரர் மறைப்பொருளை விளக்குவதால்
மாவிருளின் துன்பொழித்துப் புருடார்த்தங்கள்
நான்கையுங் கொடுப்பாராக.

ஆறுவது கண்டம்.

முற்றும்.

சாமவேத உத்தரார்ச்சிகம்

மூன்றுமத்தியாயமும்

முற்றும்.

சுப்ரமண்யோம்! சுப்ரமண்யோம்!! சுப்ரமண்யோம்!!!

நான்காவது அத்தியாயம்.

தேவதைகள் :—3, 4, 9, 10, 14, 16, பவமானன். சோமன். 5, 17, அக்கினி. 6, மித்திரா வருணர்கள். 7, மருத்துக்களும், இந்திரர்களும். 8. இந்திராக்கினிகள். 11, 13, 18, 19, இந்திரன்.

சந்தங்கள் :—1, 8, 14, காயத்திரி. 9, பிருகதி. 15, 19, அநுஷ்டுப். 16, சகதி. 17, முறையாய் ககுப் சதோபிருகதிகளுமாம். 18, உஷ்ணிக்.

சுரங்கள் :—1, 8, 14, ஷட்கம் 9, 11, 13, மத்தியமம். 10, தெய்வதம். 15, 19, காந்தாரம். 16, நிஷாதம். 17, 18, ரிஷபம். ரிஷிகளை ஆங்காங்குக் கூறுவாம்.

ககுப்பிரமம் துணை.

எவரிடத்திலிருந்து வேதங்கள் உண்டாயினவோ, எவர், வேதங்களிலிருந்து உலகனைத்தையு முண்டாக்கினாரோ, அந்த வித்தியாதீர்த்த மகேசுரரை வணங்குகின்றேன்.

பிரபாடகம்—2. அத்தியாயம்—4. கண்டம்—1.

பதினென்கு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३१ २ ३१ २ ३२ ३१२३१२
830. एत असृग्रमिन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः ।
१ २ ३१ २२
विश्वान्यभि सौभगा ॥ १ ॥

ஏத அஸ்ருக்ரமிந்தவஸ்திரஃ பவித்ரமாசவஃ ।
விஸ்வான்யபி ஸௌபகா ॥

அந்வயம்.

तिरः पवित्रं, आशवः, एते इन्दवः, विश्वानि, सौभगा, अभि, असृग्रम् ॥

பதவுரை.

तिरः पवित्रं	திரஃ பவித்ரம்	தசா பவித்திரமென்னும் ஆடை நூனியைப் பற்றிக்கொண்டு, (கீழிறங்கி)
आशवः	சுபவஃ	விரைவிற் செல்கின்ற

एते इन्दवः	ஏதெ இந்வவः	இச் சோமரசம்,
विश्वानि	விஶ்வானி	எல்லா
सौभगा	ஸௌபகா	நலங்களையுங் கொடுக்குந் தனத்தைத்
अभि	அபி	குறியாய்க்கொண்டு
असृग्रं	அஸ்ருக்ரம்	வேட்போர்களாற் றேடப்படுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1. சமதக்கினி ரிஷி.

தசாபவித்திர மென்னும் ஆடைநுனியாற் கீழிறங்கி, புனிதமாகிய பாத்திரத்தை யுத்தேசித்து விரைவாய்ச் செல்கின்ற இச் சோமரசம், எல்லா நலங்களையுங் கொடுக்கத்தக்க தனத்தைக் குறியாகக்கொண்டு வேட்போர்களாற் பிழிந்தெடுக்கப்படுகின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २

831. विघ्नन्तो दुरिता पुरु सुगा तोकाय वाजिनः ।

१ २ ३ २ ३ १२

त्मना कृण्वन्तो अर्वतः ॥ २ ॥

விவ்நந்தோ து³ரிதா பு³ரு³ ஸு²கா³ தோகாய வாஜிநஃ ।

த்மநா கு³ர்வந்தோ அர்வதஃ ॥

அந்வயம்.

वाजिनः, पुरु, दुरिता, विघ्नन्तः, तोकाय, सुगा, अर्वतः, त्मना, कृण्वन्तः ॥

பதவுரை.

वाजिनः	வாஜிநஃ	அன்னத்தை, அல்லது, வலியைக் கொடுக்குஞ் சோமரசம்
पुरु	பு³ரு³	மிகுந்த
दुरिता	து³ரிதா	பாவங்களைக்
विघ्नन्तः	விவ்நந்தஃ	கெடுப்பதாய்,
तोकाय	தோகாய	எங்களுடைய புதல்வன் பொருட்டு
सुगा	ஸு²கா³	இன்பமாகிய தனத்தையும்,
अर्वतः	அர்வதஃ	குதிரையையும்,
त्मना	த்மநா	தானேகவே
कृण्वन्तः	கு³ர்வந்தஃ	கொடுக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

ஆற்றலுடைய சோமரசம், மிகுந்த பாவங்களை நாசஞ் செய்வதாய், எங்களுடைய புத்திரனின் பொருட்டு, மிகுந்த இன்பமாகிய தனத்தையும், குதிரைகளையும் தானாகவே கொடுக்கின்றது. அத்தன்மைய சோமரசத்தை, வேட்போர்கள் பிழிந்துவுண்டாக்குகின்றார்கள். என, முன் மந்திரத்துடன் சேர்த்துக் கொள்க. (2)

மந்திரம் 3.

३ २ ३ १२ ३ २ ३क २र ३२
832. कृण्वन्तो वरिवो गवेऽभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम् ।
१२३ १ २ ३१२
इडामस्मभ्यꣳ संयतम् ॥ ३–१ ॥

இருக்கு 9-62-1-3.

க்ருண்வந்தோ வரிவோ கவெ஽ப்யர்ஷந்தி ஸுஷ்டுதிம் ।
இஜாமஸ்மப்யம் ஸம்யதம் ॥

அந்வயம்.

सोमाः, गवे, अस्मभ्यं, संयतं, वरिवः, इडां, कृण्वन्तः, सुष्टुतिं, अभ्यर्षन्ति ॥

பதவுரை.

सोमाः	ஸொமாஃ	சோமரசம்
गवे	கவெ	எங்களுடைய பசுவின் பொருட்டும்,
अस्मभ्यं	அஸ்மப்யம்	எங்கள் நிமித்தமும்,
संयतं	ஸம்யதம்	உறுதியாகிய
वरिवः	வரிவஃ	தனத்தையும்,
इडां	இஜாம்	அன்னத்தையும்,
कृण्वन्तः	க்ருண்வந்தஃ	உண்டாகச் செய்வதாகி,
सुष्टुतिं	ஸுஷ்டுதிம்	எமது அழகிய துதியையும்
अभ्यर्षन्ति	அப்யர்ஷந்தி	ஒருமுகமாய் அடைகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

சோமரசம், எங்களுடைய பசு நிமித்தம், வலிவுள்ள தனத்தையும், அன்னத்தையும், உண்டாகச் செய்வதாய், (கொடுப்பதாய்) எங்களுடைய அழகிய துதியையும் ஒருமையுடன் பெற்றுக்கொள்கின்றது என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

१ २ ३ १ २ १२ ३ १ २र
833. राजा मेधाभिरीयते पवमानो मनावधि ।
३ १ २ ३ १२
अन्तरिक्षेण यातवे ॥ १ ॥

ராஜா மெதாபிரீயதெ பவமாநொ மநாவதி ।
அந்தரிக்ஷேண யாதவெ ॥

அந்வயம்.

मनौ अधि, पवमानः, राजा, मेधाभिः, अन्तरिक्षेण, यातवे, ईयते ॥

பதவுரை.

मनौ अधि	மநள அதி	மனிதர் வேள்வி செய்யுமிடத்தில்
पवमानः	பவமாநஃ	பவிரத்திரமாகிய சோமம்
राजा	ராஜா	அரசனாயிருக்கின்றது. (அது)
मेधाभिः	மெதாபிஃ	தோத்திரங்களுடன்
अन्तरिक्षेण	அந்தரிக்ஷேண	வான்வழியாய்த் துரோண கலசத்தை
यातवे	யாதவெ	அடைவதின் பொருட்டுச்
ईयते	ஈயதெ	செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில்—1. சமதக்கினி ரிஷி.

மனிதர் செய்கின்ற வேள்வியில், அல்லது, மனனஞ் செய்யத்தக்க வேள்வியில் மிகப் பவித்திரமாகிய, அல்லது, அரசனாகிய சோமரசம், ஈண்டுச் சோமம் அரசனாதல். "சோமத்தை அரசனாய்ச் செய்து" எனக் கூறப்பட்டிருத்தலின் என்க. தோத்திரங்களுடன் செல்கின்றது. யாண்டெனின்? வான் வழியாய்த் துரோண கலசத்தை யடைதற் பொருட்டென்க. துரோண கலசத்திற் செல்லும்போதே துதிப்போர்களால் சோமம் உண்மையிற் றுதிக்கப்படுகின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

३ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २र
834. आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर ।
३ २ ३१ २
सुष्वाणो देववीतये ॥ २ ॥

சூ நஃ ஸொஉ ஸஹோ ஜுவொ ரூபம் ந வர்ச்சஸெ ஹர |
ஸுஷ்வாணொ தெவவீதயெ ||

அந்வயம்.

सोम!, देववीतये, सुष्वाणः, सहः, जुवः, वर्चसे रूपं न, नः, आभर ||

பதவுரை.

हे सोम!	ஹெ ஸொஉ!	சோமமே!
देववीतये	தெவவீதயெ	தேவதைகள் அருந்துதற் பொருட்டுச்
सुष्वाणः	ஸுஷ்வாணஃ	சமற்காரம் பண்ணப்பெற்ற நீ,
सहः	ஸஹஃ	சத்துருவை யடக்கத்தக்க வலியையும்
जुवः	ஜுவஃ	வேகத்தை எங்கும் பரவச் செய்யத்தக்க (ஆற்றலையும்)
वर्चसे रूपं न	வர்ச்சஸெ ரூபம் ந	எங்கும் விளங்குதற் பொருட்டாகிய வடிவையும்,
नः	நஃ	எங்கட்குக்
आभर	சூஹர	கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

சோமமே! தேவர்கள் அருந்துதற் பொருட்டு, அல்லது, விரும்புதற் பொருட்டு, பிழியப்பெற்ற, அல்லது, சமற்காரம்பண்ணப்பட்ட நீ, சத்துருக்களை யடக்கத்தக்க, அதாவது பகைவரைக் குறித்து விரைவிற் செல்லத்தக்க, அல்லது, எங்குஞ் செல்லத் தக்க ஆற்றலையும், எங்கும் விளங்கத்தக்க அழகையும் எங்கட்குக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
835. आ न इन्दो शातग्विनं गवां पोषꣳ स्वश्व्यम् ।
२ ३ १ २ ३ १ २
वहा भगत्तिमूतये ॥ ३-२ ॥

இருக்கு 9-65-16-18-17.

சூ ந ஊந்தொ ஶாதக்ரிநம் கவாம் பொஷம் ஸ்வஶ்வ்யம் |
வஹா ஹகத்திமூதயெ ||

அந்வயம்.

इन्दो !, शातग्विनं, गवां पोषं, स्वश्व्यं, भगत्तिं, ऊतये, नः, आवह ॥

பதவுரை.

इन्दो !	இந்தோ !	பிரகாசிக்கின்ற சோமமே !
शातग्विनं	ஶாதஶ்வி நம்	நூற்றுக்கணக்கான பசுக்களுடன் கூடியதும்
गवां पोषं	ஶவாம் பொஷம்	பசுக்களுக்கு வலிவைக் கொடுப்பதும்,
स्वश्व्यं	ஸ்வஶ்வ்யம்	அழகிய குதிரைக் கூட்டங்களையுடையதுமாகிய
भगत्तिं	ஹஶத்திம்	செல்வத்தின் உயர்ந்த நிலையை,
ऊतये	ஊதயெ	பாதுகாப்பின் பொருட்டு
नः	நஃ	எங்கட்குச்
आवह	ஆவஹ	சேர்ப்பிப்பாயாக. (கொடுப்பாயாக.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

பாத்திரத்தில் ஒழுகுகின்ற சோமமே ! நூறாயிரக் கணக்கான பசுக்களுடனும், பசுக்களைப் போஷிக்கு மாற்றலுடனும், குதிரைக் கூட்டத்துடனுங் கூடியதாய்ப் போற்றத்தக்க தனத்தை எங்களைப் பாதுகாத்தற் பொருட்டுக் கொடுப்பாயாக. பசுக்களையுங் கொடுத்து அவைகள் விருத்தி யடையுமாறுஞ் செய்வாயாக என்பது பொருள். (3)

மந்திரம் 7.

१ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २ ३ २ ३ २
836. तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतꣳ सधस्थेषु महोदिवः ।
१ २ ३ १२
चारुꣳ सुकृत्ययेमहे ॥ १ ॥

தம் க்வா நூ ஜ்ணாநி ஸிப்ரதம் ஸதஸ்தேஷு மஹோதிவஃ ।
சாரும் ஸுக்ருத்யயெமஹெ ॥

அந்வயம்.

महोदिवः, सधस्थेषु, नृम्णानि, बिभ्रतं, चारुं, तं, त्वा, सुकृत्यया, ईमहे ॥

பதவுரை.

महोदिवः	மஹோதிவஃ	பெரிய வானுலகின் சம்பந்தமாகிய
सधस्थेषु	ஸதஸ்தேஷு	இடங்களில்
नृम्णानि	நூம்ணாநி	(எம்பொருட்டுத்) தனங்களைத்
बिभ्रतं	஬ிப்ரதம்	தாங்கப்பட்டவனும்
चारुं	சாரும்	மங்கள வடிவனுமாகிய
तं	தம்	அத்தகைய
त्वा	த்வா	உன்னை
सुकृत्यया	ஸுக்ருத்யயா	நல்ல அநுட்டான வாயிலாக
ईमहे	ஈமஹே	(தனம் வேண்டுமென) இரக்கின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—ஐந்தாம் மூன்றில்—1. கவி—ரிஷி.

மகத்தாகிய வானுலகிலுள்ள இடங்களில் இருக்கப்பட்ட தனங்களை, எம்பொருட்டுத் தாங்கிக் கொண்டிருக்கின்றவனும், மங்கள வடிவனுமாகிய சோமனே! அத்தகைய பவித்திரனாகிய உன்னை, அழகிய வேள்விக் கருமத்தைக்கொண்டு, தனங்கள் வேண்டுமென யிரக்கின்றோம் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

१ २ ३क २र ३ १ २ ३ १२
837. संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यं महामहिव्रतं मदम् ।
३१ २र ३१ २
शतं पुरो रुरुक्षणिम् ॥ २ ॥

ஸம்வ்ருக்தத்ருஷ்ணுமுக்த்யம் மஹாமஹிவ்ரதம் மதம் ।
ஶதம் புரோ ருருக்ஷணிம் ॥

அந்வயம்.

संवृक्तधृष्णुं, उक्थ्यं, महामहिव्रतं, मदं, शतं, पुरः, रुरुक्षणिं ॥

பதவுரை.

संवृक्तधृष्णुं	ஸம்வ்ருக்தத்ருஷ்ணும்	பகைவரை நாசஞ்செய்யத் தக்கவனும்,
उक्थ्यं	உக்த்யம்	போற்றத் தக்கவனும்,
महामहिव्रतं	மஹாமஹிவ்ரதம்	மிகப் பெருங் கருமமுடையவனும்,

मदं	ஜதம்	களிப்பைக் கொடுப்பவனும்,
शतं	ஶதம்	நூற்றுக்கணக்கான
पुरः	பூரः	சத்துருக்களின் நகரங்களை
रुरुक्षणिं	ரூரூக்ஷணிம்	நாசஞ் செய்கின்றவனுமாகிய உன்னை, (தனம் வேண்டுமென இரக்கின்றோம் என முன்னே கூட்டுக)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

பயங் கொடுக்குஞ் சத்துருக்களை யொழிப்பவனும், போற்றத் தக்கவனும், மிக மகத்தான கருமங்களை யுடையவனும், களிப்பைக் கொடுப்பவனும், நூற்றுக்கணக்கான சத்துருக்களின் நகரங்களை நாசஞ் செய்கின்றவனுமாகிய நின்னைக் குறித்துத் தனம் வேண்டுமென்று இரக்கின்றோம் என, மேலே கூட்டிக்கொள்க. (2)

மந்திரம் 9.

१२ ३ २ ३क२र १२ ३२
838. अतस्त्वा रयिरभ्ययद्राजानꣳ सुक्रतो दिवः ।
३ १ २ ३ १ २
सुपर्णो अव्यथी भरत् ॥ ३ ॥

ஸுதஸ்த்வா ரயிரப்யயத்ராஜாநꣳ ஸுக்ரதோ திவः ।
ஸுபர்ணோ அவ்யதீ ஭ரத் ॥

அந்வயம்.

सुक्रतो !, रयिः अभि अयत्, राजानं, त्वा, अतः दिवः, अव्यथी, सुपर्णः, आभरत् ॥

பதவுரை.

सुक्रतो !	ஸுக்ரதோ !	சிறந்த கருமமுடைய சோமமே!
रयिः अभि अयत्	ரயிः அபி அயத்	தனத்திற் கருகிற் சேர்ப்பவனும்
राजानं	ராஜாநம்	பிரகாசிக்கின்றவனுமாகிய
त्वा	த்வா	உன்னை,
अतः दिवः	அதः திவः	இவ் வானுலகிலிருந்து
अव्यथी	அவ்யதீ	பீடையற்ற
सुपर्णः	ஸுபர்ணः	கருடப் பறவை
आभरत्	ஆபரத்	கொண்டுவந்தது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

நற்கருமமுடைய சோமமே! தனத்தின்பாற் சேர்க்கின்றவனும், விளங்குகின்றவனுமாகிய உன்னை, வானுலகிலிருந்து கருடப்பறவை, பிடையற்றதாய்க் கொண்டுவந்தது. அங்ஙனமே, "சோமத்தைக் கருடன் கொண்டு வந்தனன்" என்று கூறுகின்றது ஏனைய சுருதியு மென்க. (3)

மந்திரம் 10.

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २

839. अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्वमानशे ।

३ १ २र

अभिष्टिकृद्विचर्षणिः ॥ ४ ॥

சுயா ஹி₂ நா₂ ந ஊ₁ர்₂யம் ஜ்யாயொ மஹி₂க்வா₂ நஶே ।

சுஹி₂ஷ்டி₂க்ரு₂ விசர்ஷணிஃ ॥

அன்வயம்.

अधा, विचर्षणिः, अभिष्टिकृत्, इन्द्रियं, हिन्वानः, ज्यायः, महित्वं, आनशे ॥

பதவுரை.

अधा	சுயா	மற்றும்,
विचर्षणिः	விசர்ஷணிஃ	கருமங்களை நன்குகாண்பதும்
अभिष्टिकृत्	சுஹி₂ஷ்டி₂க்ரு₂த்	வேள்வித் தலைவன் விரும்பிய பயனைக் கொடுப்பதுமாகிய சோமம்,
इन्द्रियं	ஊ₁ர்₂யம்	தன்னுடைய ஆற்றலைச்
हिन्वानः	ஹி₂ன்வா₂நஃ	செலுத்துவதாகி,
ज्यायः	ஜ்யாயஃ	மிகச் சிறந்த
महित्वं	மஹி₂க்வம்	(தனது) மகிமையைப்
आनशे	ஆ₂நஶே	பெற்றுக்கொள்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—4.

இன்னும், கருமங்களை நன்குகாண்பதும், வேள்வித் தலைவனுக்கு விரும்பிய பலனைக் கொடுப்பதுமாகிய சோமம், தனது வலியைப் பரவச் செய்வதாய் மிகச் சிறந்த மகிமையை யடைகின்றது என்பதாம். (4)

மந்திரம் 11.

१ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
840. विश्वस्मा इत्स्वर्दृशे साधारणꣳ रजस्तुरम्
३ २ ३२ ३ १ २
गोपामृतस्य विर्भरत् ॥ ५–३ ॥

இருக்கு 9-48-1-5.

விஶ்வஸ்மா இத்ஸ்வர்தூஶெ ஸாதாரணம் ரஜஸ்துரம் ।
கொபாமூதஸ்ய விர்ப்பரத் ॥

அந்வயம்.

रजस्तुरं, ऋतस्य, गोपां, विश्वस्मै, स्वर्दृशे, साधारणं इत्, विः, भरत्, ॥

பதவுரை.

रजस्तुरं	ரஜஸ்துரம்	நீரைச் செலுத்துவதும்,
ऋतस्य	ஊதஸ்ய	வேள்வியைப்
गोपाम्	கொபாம்	பாதுகாப்பதும்
विश्वस्मै	விஶ்வஸ்மை	எல்லாத்
स्वर्दृशे	ஸ்வர்தூஶெ	தேவதைகளின் பொருட்டு
साधारणं इत्	ஸாதாரணம் உத்	சமபாவனையாலேயே சேருவது மாகிய சோமத்தை,
विः	விः	கருடப்புள்
भरत्	ஸரத்	கொண்டுவந்தது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—5.

நீரை யேவுகின்றதும், வேள்வியைப் பரிபாலிப்பதும், எல்லாத் தேவர்களையும் சமபாவனையாலேயே அடைகின்றதுமாகிய சோமரசத்தைக் கருடப்பட்சி சுவர்க்கத்திலிருந்து கொண்டு வந்தது என்பதாம். (5)

மந்திரம் 12.

३१ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
841. इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः ।
१ २ ३ १ २र
इन्दो रुचाभि गा इहि ॥ १ ॥

இஷெ பவஸ்வ தாரயா மூஜ்யமானொ மநீஷிபிஃ ।
இந்தொ ரூசாபி கா இஹி ॥

அன்வயம்.

इन्दो, मनीषिभिः, मृज्यमानः, इषे, धारया, पवस्व, रुचा, गाः अभीहि ॥

பதவுரை.

इन्दो !	ஈந்தோ !	சோமமே !
मनीषिभिः	மநீஷிபிஃ	அறிவு மிகுந்த வேட்போர்களாற்
मृज्यमानः	ம்ருஜ்யமாநஃ	சுத்தம் பண்ணப்பெற்ற நீ,
इषे	ஈஷே	எங்களுடைய அன்னத்தின் பொருட்டுத்
धारया	தாரயா	தாரையாற்
पवस्व	பவஸ்வ	பாத்திரத்தை யடைவாயாக.
रुचा	ருசா	பிரகாசிக்கின்ற அன்னவடிவத் தாற்
गाः	காஃ	பசுக்களையும்
अभीहि	அபீஹி	அடைவாயாக,

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—நான்காவது மூன்றில்—1.

சோமமே! வேட்போர்களாற் பரிசுத்தஞ் செய்யப்பட்ட நீ, எங்கள் நிமித்தமாய் அன்னத்தின் பொருட்டுத் தாரையாற் பாத்திரத்தை யடைவாயாக. மற்றும், பிரகாசிக்கின்ற அன்னத்தாற் பசுக்களையுஞ் சேர்வாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 13.

३ १ २२ ३ २३ १ २
842. पुनानो वरिवस्कृध्यूर्जं जनाय गिर्वणः ।
१२ ३२ ३ १२
हरे सृजान आशिरम् ॥ २ ॥

பாநாஸோ வரிவஸ்க்ருத்யூர்ஜம் ஜநாய கிர்வணஃ ।
ஹரே ஸ்ருஜாந ஆஸிரம் ॥

அன்வயம்.

गिर्वणः, हरे !, आशिरं सृजानः, पुनानः, जनाय, वरिवः, ऊर्जं, कृधि ॥

பதவுரை.

गिर्वणः !	மிவ_ணஃ !	வாக்காற் புகிக்கத்தக்கோய் !
आशिरं सृजानः	சூஶிரஂ ஸ்ரு_ஜா_நஃ	பாலுடன் கலந்ததும்
पुनानः	வ_ஈ_நா_நஃ	சுத்தம் பண்ணப்பட்டதும்
हरे !	ஹரெ !	பசுமை நிறத்தை யுடையதுமாகிய சோமமே ! நீ
जनाय	ஜ_நாய	வேள்வித் தலைவன் பொருட்டுத்
वरिवः	வரீவஃ	தனத்தையும்
ऊर्जं	ஊர்ஜ_ஂ	அன்னத்தையுங்
कृधि	க்ருʼயி	கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

வாக்கால் வாழ்த்துதற் குரியோய்! பசுமை நிறமுடையதும் பாலுடன் சேர்க்கப் பெற்றதும், பவித்திரம் பண்ணப்பட்டதுமாகிய சோமமே! நீ, சனங்களின் பொருட்டுத் தனத்தையும், அன்னத்தையுங் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 14.

३ २ ३१२ ३१२ ३२

843. पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम् ।

३ २ ३१२३२

द्युतानो वाजिभिर्हितः ॥ ३–४ ॥

இருக்கு. 9-64-13-15.

வ_ஈநாநொ தெவவீதய இந்த்ரஸ்ய யாஹி நிஷ்க்ருʼதம் ।

த்யு_ஈதாநொ வாஜிபிர்ஹிதஃ ॥

அன்வயம்.

(हे सोम !,) वाजिभिः, देववीतये, पुनानः, द्युतानः, हितः, इन्द्रस्य, निष्कृतं, याहि ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	(சோமமே !)
वाजिभिः	வாஜிபிஃ	அவிசலையுடையவர்சளான வேள்விக் தலைவர்களால்

देववीतये	தெவவீ தயெ	வேள்வியின் பொருட்டு
पुनानः	வ ூநாநஃ	சுத்தம் பண்ணப்பெற்று
द्युतानः	த்யூ ூதாநஃ	விளங்குகின்றதும்
हितः	ஹிதஃ	இனியவைகளைச் செய்கின்றது மாகிய நீ
इन्द्रस्य	இந்த்ரஸ்ய	இந்திரனுடைய
निष्कृतं	நிஷ்க்ருதம்	இடத்தை
याहि	யாஹி	அடைவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

சோமமே! தேவவணவுகளை யுடைய வேள்வித் தலைவர்களுடன் விளங்குகின்றவனாய், வேள்வியின் பொருட்டுச் சுத்தம் பண்ணப்பட்டு இனியவைகளைச் செய்கின்ற நீ, இந்திரனது இடத்திற்குச் செல்வாயாக என்பதாம். (3)

முதலாவது கண்டம்

முற்றும்.

இரண்டாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—2. அத்தியாயம்—4. கண்டம்—2.

பன்னிரண்டு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १२ ३ १ २

844. **अग्निनाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा ।**

३ २ ३क २र

हव्यवाड् जुह्वास्यः ॥ १ ॥

அூநிநாநிஃ ஸமித்யதெ கவிர்க்ருஹபதிர்யுவா ।
ஹவ்யவாட் ஜுஹ்வாஸ்யஃ ॥

அன்வயம்.

कविः, गृहपतिः, युवा, हव्यवाट्, जुह्वास्यः, अग्निः, अग्निना, समिध्यते ॥

பதவுரை.

कविः	கவிஃ	நுண்ணறிவுடையதும்
गृहपतिः	க்ருஹபதிஃ	வேள்வித் தலைவன் வீட்டைக் காப்பதும்
युवा	யுவா	சுட்டிளமை யுடையதும்
हव्यवाट्	ஹவ்யவாட்	அவியைச் சேர்ப்பிப்பதும்
जुह्वास्यः	ஜுஹ்வாஸ்யஃ	அகப்பை விசேடத்தை வாயாக வுடையதுமாகிய
अग्निः	அக்நிஃ	ஆகவநீய அக்கினியானது,
अग्निना	அக்நிநா	கடைந்தெடுத்த தீயுடன் கூடி
समिध्यते	ஸமித்யதே	நன்கு பிரகாசிக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1.

ஆகவநீயாக்கினியானது, அதில் வைத்துள்ள அக்கினியுடன், அல்லது, கடைந்தெடுத்த அக்கினியுடன் கூடி நன்கு பிரகாசிக்கின்றது. எவ் வண்ண மாகிய அக்கினி யெனின்? நுண்ணறிவுடையதும், வேள்வித் தலைவன் வீட்டைக் காப்பதும், என்று மிளமையோடிருப்பதும், அவியைக் கொண்டு போய்ச் சேர்ப்பதும், முருக்கை மரத்தாற் செய்த பிறைபொத்த அகப்பை விசேட்த்தை வாயாகவுடையதுமா மென்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१ २र ३ १ २ ३१ २ ३१२

845. यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूतं देव सपर्यति ।

१ २ ३१ २

तस्य स्म प्राविता भव ॥ २ ॥

யஸ்த்வாமக்நே ஹவிஷ்பதிர்தூதம் தெவ ஸபர்யதி ।

தஸ்ய ஸ்ம ப்ராவிதா பவ ॥

அந்வயம்.

अग्ने देव!, दूतं, त्वां, हविष्पतिः, यः, सपर्यति, तस्य, प्राविता, भव स्म ॥

பதவுரை.

अग्ने देव!	அக்நெ தெவ!	அக்கினி தேவனே!
दूतं	தூதம்	தேவர்களுக்கு அவியைக்கொடுக்கின்ற
त्वां	த்வாம்	உன்னை

हविष्पतिः	ஹவிஷ்பதிஃ	அவிகளுக்கு முதல்வனுகிய
यः	யஃ	யாதொரு வேள்வித் தலைவன்
सपर्यति	ஸபர்யதி	ஆராதிக்கின்றானே,
तस्य	தஸ்ய	அவனை,
प्रविता	ப்ராவிதா	முழுதுங் காப்பாற்றுவோனுக
भव स्म	ஹவ ஸ்ம	ஆகுதி.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

அக்கினிதேவதையே! தூதனுகிய உன்னை, வேள்வித் தலைவன் வழிபடுகின்றன். (ஆதலின் நீ) அவ் வேள்வித் தலைவனை முழுதும் பாதுகாப்பாற்றுவோனுகுதி என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

२ ३ २ ३१ २१ ३ १ २ ३ १ २

846. यो अग्निं देववीतये हविष्माꣳ आविवासति ।

१ २

तस्मै पावक मृडय ॥ ३–५ ॥

இருக்கு 1-12-6-8-9.

யொ அக்நிம் தெவவீதயெ ஹவிஷ்மாꣳ ஆவிவாஸதி ।
தஸ்மை பாவக மூடய ॥

அன்வயம்.

पावक !, यः हविष्मान्, देववीतये, अग्निं, आविवासति, तस्मै, मृडय ॥

பதவுரை.

पावक !	பாவக !	புனிதமாக்குகின்ற அக்கினியே! நீ
यः हविष्मान्	யஃ ஹவிஷ்மாந்	அவி யுடையவனுகிய யாதொரு தலைவன்
देववीतये	தெவவீதயெ	தேவர்களை ஆராதித்தற் பொ பொருட்டு
अग्निं	அக்நிம்	அக்கினியை
आविवासति	ஆவிவாஸதி	அண்மையில் மிக வழிபடுகின்றானே,
तस्मै	தஸ்மை	அவனுக்குச்
मृडय	மூடய	சுகத்தைக் கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

அவிகளையுடைய வேள்வித் தலைவன், தேவர்களுக்கு உணவளித்தலாகிய வேள்வியின் பொருட்டு, அக்கினி பின்பால் வந்து அதை நன்கு வழிபடுகின்றன். (ஆதலின்) அக்கினியே! நீ, அவ் வேள்வித் தலைவனைச் சுகப்படுத்துவாயாக. ஈண்டுத் தேவவீதியே, என்பதிலுள்ள 'வீ' என்னும் வடமொழிப் பகுதி, 'உண்,' என்னும் பொருள்கொண்டு நின்றது. ஆதலின் தேவர்கள் உண்ணுமாறு உணவளிக்கும் வேள்வியே கொள்ளப்பட்டதென்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

३१ २ ३१२३ १२ ३ १२
847. मित्रꣳ हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् ।
१२ ३ २ ३ १२
धियं घृताचीꣳ साधन्ता ॥ १ ॥

மித்ரꣳ ஹுவே பூததக்ஷம் வருணம் ச ரிஶாதஸம் ।
தியம் க்⁻ருதாசீம் ஸாதந்தா ॥

அன்வயம்.

पूतदक्षं, मित्रं, रिशादसं, वरुणंच, हुवे, घृताचीं, धियं, साधन्ता ॥

பதவுரை.

पूतदक्षं	பூததக்ஷம்	புனிதமானவர்களும், ஆற்றலுள்ளவர்களுமான,
मित्रं	மித்ரம்	மித்திர தேவதையையும்
रिशादसं	ரிஶாதஸம்	சத்துருக்களைக் கொல்கின்ற
वरुणं च	வருணம் அ	வருணனையும்,
हुवे	ஹுவே	அழைக்கின்றேன். (அவர்கள்)
घृताचीं	க்⁻ருதாசீம்	மண்ணிடத்திற்கு மழையைக் கொடுக்கத்தக்க
धियं	தியம்	கருமத்தைச் (செய்து)
साधन्ता	ஸாதந்தா	முடிக்கின்றவர்களாகுக.

சாயண பாடியம்

கண்டம்—2. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில்—1. மதுச்சந்தர் ரிஷி.

யான், இக் கருமத்தில் அவிகொடுத்தற் பொருட்டு, பவித்திரமானதும், வலியுடையதுமாகிய மித்திர தேவதையை அழைக்கின்றேன். அவ்வாறே,

துன்புறுத்துவோர்களைக் கொல்கின்ற வருணனையும் அழைக்கின்றேன். அவர்கள் எவ்விதமானவர்களெனின்? பூமியில் நீர் கிடைக்குமாறு செய்யத்தக்க கருமத்தைச் செய்து முடிக்கத்தக்கோர்கள் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

३ १ २
848. ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा ।
१२ ३ १ २
क्रतुं बृहन्तमाशाथे ॥ २ ॥

ஜதெந மித்ராவரு ணாவ்ருதாவ்ருதாவ்ருதஸ்ப்ருசா ।
க்ரதுஂ ப்ருஹந்தமாசாதெ ॥

அந்வயம்.

मित्रावरुणौ, ऋतावृधौ, ऋतस्पृशा, बृहन्तं, क्रतुं, ऋतेन, आशाथे ॥

பதவுரை.

मित्रावरुणौ	மித்ராவரு ணள	மித்திர வருணர்களே! நீவிர்,
ऋतावृधौ	ஜதாவ்ருதள	சத்தியமாகிய வேள்விகளை விருத்தி செய்கின்றவர்களும்
ऋतस्पृशा	ஜதஸ்ப்ருசா	உண்மையைக் கைக்கொண்டவர்களுமாவீர்கள். ஆதலின்,
बृहन्तं	ப்ருஹந்தம்	அங்கம் உபாங்கம் என்பதுடன் கூடிய
क्रतुं	க்ரதுஂ	இச் சோமயாகத்தை,
ऋतेन	ஜதெந	உண்மையாகிய பயனுடன்
आशाथे	ஆசாதெ	கூடியதாய்ச் செய்வீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

மித்திரன், வருணன் என்னுந் தேவர்களே! நீவிர், இச் சோமயாகத்தை எமக்கு உண்மையாகிய பலன் கொடுக்குமாறு செய்வீர்களாக. நீங்கள் எவ்விதமானவர்களெனின்? உண்மையை, அல்லது, நீரை விருத்தி செய்கின்றவர்களும் 'ருதம்' என்பது சத்தியம் நீர், என்கின்றது நிகண்டு. இதனானே, நீர் முதலியவைகளைப் பற்றினவர்களுமாவீர்கள். (ஆதலின்) அங்கோபாங்கங்களால் நிறையப்பெற்ற சோமயாகத்தைப் பலனுடையதாய்ச் செய்வீர்களாக எனக் கூட்டுக. (2)

மந்திரம் 6.

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २३ १ २
849. कवी नो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया ।
१ २ ३ १२
दक्षं दधाते अपसम् ॥ ३–६ ॥

இருக்கு 1-2-7-9.

கவீ நொ மித்ராவருணா துவிஜாதா உருக்ஷயா ।
தக்ஷம் தயாதெ சுவஸம் ॥

அந்வயம்.

कवी, तुविजाता, उरुक्षया, मित्रावरुणा, नः, दक्षं, अपसं, दधाते ॥

பதவுரை.

कवी	கவீ	நுண்ணறிவாளர்களும்
तुविजाता	துவிஜாதா	பலவகையான உபகாரங்களைச் செய்யும் பொருட்டுத் தோன்றியவர்களும்,
उरुक्षया	உருக்ஷயா	பல்லோரிடத்தில் வசிப்பவர்களுமான
मित्रावरुणा	மித்ராவருணா	மித்திரன், வருணன் என்னும் தேவர்கள்
नः	நஃ	எங்களுடைய
दक्षं	தக்ஷம்	ஆற்றலையும்,
अपसं	சுவஸம்	கருமத்தையும்,
दधाते	தயாதெ	வலியுறுத்துகின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

இம் மித்திர வருணர்கள், எங்களுடைய வலியையும், கருமத்தையும் உறுதிப்படுத்துகின்றார்கள். அவர்கள் எவ்விதமானவர்களெனின்? கூரிய அறிவுடையவர்களும், பலர்களுக்கு உபகாரியாய்ப் பிறந்தவர்களும், பல விடத்தில் வாழ்பவர்களுமாவார்கள் என்பதாம். இப்பொருள் இலக்கண நூன்முறையாலும் பெறப்பட்டதென் றுணர்க என்பதாம். (2)

மந்திரம் 7.

१ २ ३ १ २२ ३ १ २
850. इन्द्रेण सꣳहि दृक्षसे संजग्मानो अविभ्युषा ।
३ १ २ ३१ १ २
मन्दू समानवर्चसा ॥ १ ॥

இந்த்ரேண ஸꣳஹி த்ருக்ஷஸே ஸꣳஜக்³மானோ அவிப்⁴யுஷா
மந்தூ³ ஸமானவர்சஸா ॥

அன்வயம்.

मन्दू, समानवर्चसा, अविभ्युषा, इन्द्रेण, संजग्मानः, संदृक्षसे हि ॥

பதவுரை.

मन्दू	மந்தூ³	{ என்றுங் களிப்பையுடையவர்களும்,
समानवर्चसा	ஸமானவர்சஸா	{ ஒத்தவொளியுடையவர்களுமான மருத்துக்கணங்கள்,
अविभ्युषा	அவிப்⁴யுஷா	பயமற்ற
इन्द्रेण	இந்த்ரேண	இந்திரனுடன்
संजग्मानः	ஸꣳஜக்³மானஃ	கூடவே இருப்பவர்களாய்
संदृक्षसे हि	ஸꣳத்ருக்ஷஸே ஹி	நன்கு தரிசனந் தருவார்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—மூன்றாவது மூன்றில்—1. மதுச்சந்தர் ரிஷி.

மருத்கணங்களே! நீங்கள், இந்திரனுடன் கூடினவர்களாய் உண்மையில் நன்கு தரிசனந் தருவீர்களாக. எவ்விதமுடைய இந்திரனுடனெனின்? பயமற்றவனுடன் என்க. எவ்விதமான மருத்கணங்களெனிலோ? எப்போதுங் களிப்புடையவர்களும், ஒத்தவொளியுடையவர்களுமானவர்கள் என்பதாம்.

ஈண்டு, முன்னொருபோது விருத்திராசுரனைக் கொல்லுங்கால் இந்திரனுக்கு உதவியாயிருந்த தேவர்களனைவரும், விருத்திராசுரனுடைய பெரு மூச்சால் எடுத்தெறியப்பட்டார்கள். அப்போது விருத்திரனை வெற்றி கொள்ளுவான் இந்திரனுடைய சேனைகள் மருத்துக்கணங்களுடன் கூடிற்று. என்னுமிச்சரிதஞ் சுருக்கிக் கூறப்பட்டிருக்கின்றது. மற்றும், "இந்திரன் விருத்திரனைக் கொன்று" என்றற் றொடக்கத்து மந்திரம், பிராமணம் என்னும் மறையின் வாக்கியங்களும் இதையே கூறுகின்றன. மற்றும், யாஸ்க முனிவரும் இம்மந்திரத்திற்கு இவ்வாறே பொருள் கூறியுள்ளார். அஃதன்றியும், வடமொழி இலக்கண நூல் முறையானும் இப்பொருள் பெறப்படுகின்றது என்பதறிக. (1)

மந்திரம் 8.

१ २र ३ २उ३ १२ ३ १ २ ३२
851. आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
दधाना नाम यज्ञियम् ॥ २ ॥

ஆதஹ ஸ்வயாமநு புநர்ஹ்ஹத்வமெரிரெ ।
தயாநா நாம யஜ்ஞியம் ॥

அந்வயம்.

आत् अह, स्वधामनु, यज्ञियं नाम दधानः, (मरुतः), पुनः गर्भत्वं, ईरिरे ॥

பதவுரை.

आत् अह	ஆத் அஹ	கார்காலத்தின் பின்னரேயே
स्वधामनु	ஸ்வயாமநு	மேலுண்டாகத்தக்க, மழை, அன்னம் முதலியவைகளை,
यज्ञियं नाम दधानः	யஜ்ஞியம் நாம தயாநஃ	வேள்வியென்னும் பெயர் பூண்ட
(मरुतः)	(மரூதஃ)	(மருத்துக்களென்னுந் தேவர்கள்)
पुनः गर्भत्वं	பூநஃ ஹர்ஹ்ஹத்வம்	மீண்டும், மேகத்தில் மழை முதலிய கருப்பம் உண்டாகுமாறு
ईरिरे	ஈரிரெ	ஏவுகின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

மூலத்திலுள்ள 'அஹ' என்னுஞ் சொல் தேற்றப் பொருளினின்றது. ஆதலின், மழைக்காலத்தின் பின்னரேயே மேலுண்டாகத்தக்க அன்னத்தை, அல்லது, மழையைக் குறித்து மகத்தான தேவர்கள் மீண்டும் மேகத்தில் நடுவில் கருப்பத்தை உண்டாக்குகின்றார்கள். கருப்ப வடிவத்தை ஒவ்வொருவரிடமும் இவ்வாறே செய்கின்றார்கள் என்றறிவித்தற் பொருட்டு மறித்தும் எனக் கூறப்பட்டது. எவ்விதமான மருத்துக்க ளெனின்? வேள்விக்குரிய பெயர் பூண்டுள்ளவர்கள் என்க.

எழுவகைக் கணத்துள் மருத்கணங்கட்கு வேள்விக்குரிய பெயர்கள் பிறநூலிலுங் கூறப்பட்டுள்ளனவாம். நிகண்டிலும் இவ்வாறே கூறப்பட்டிருக்கின்றன என்க. (2)

மந்திரம் 9.

३१२ ३२३१२ ३१२
852. वीडुचिदारुजन्नुभिर्गुहाचिदिन्द्र वह्निभिः ।
१२ ३२३१२
अविन्द उस्रिया अनु ॥ ३–७ ॥

இருக்கு 1-6-7-4-5.

வீடுசிதாருஜன்னுபிர்குஹாசிதிந்த்ர வஹ்னிபிஃ ।
அவிந்த உஸ்ரியா அநு ॥

அன்வயம்.

हे इन्द्र !, वीडुचित्, आरुजन्नुभिः, वह्निभिः, मरुद्भिः, गुहाचित्, उस्रियाः, अन्वविन्दः ॥

பதவுரை.

हे इन्द्र !	ஹெ இந்த்ர !	இந்திரனே ! நீ,
वीडुचित्	வீடுசித்	மிகுந்த மடுமுதலிய இடங்களையும்
आरुजन्नुभिः	ஆருஜன்னுபிஃ	கெடுக்கத் தக்கவர்களும்
वह्निभिः	வஹ்னிபிஃ	வேறிடத்திற்குக் கொண்டுபோகு மாற்றலுடையவர்களுமான
मरुद्भिः	மருத்பிஃ	மருத்துக்களுடன் கூடி
गुहाचित्	குஹாசித்	குகையில் வைக்கப்பட்டிருந்த
उस्रियाः	உஸ்ரியாஃ	பசுக்களையும்
अन्वविन्दः	அந்வவிந்தஃ	பெற்றுக்கொண்டனை.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

ஈண்டோர் காதையுண்டு. அஃதென்னை யெனிலோ ? முன்னொருகால், சர்ப்பங்களால் தேவலோகத்திலிருந்து பசுக்கள் கொண்டுவந்து இருளில் மறைத்துவைக்கப்பட்டன. அப்பசுக்களை, இந்திரன் மருத்துக்களுடன் சேர்ந்து வெற்றியுடன் கொண்டுவந்தனன் என்பதாம். இஃது பெரிய மந்திர அட்டவணையிலும், "சர்ப்பங்களான அசுரர்களாற் பசுக்கள் மறைக்கப்பட்டன, என்றற் றொடக்கத்து மந்திரத்திற கூறப்பட்டுள்ளது. மற்றும், வேறிய மந்திரத்திலும் "நீர் கட்டப்பட்டது, சர்ப்பத்தாற் பசுப்போன்று" என உதாரணமாகவும் எடுத்துக் காட்டப்பட்டிருக்கின்றது. அதைக் கருத்தாகக்கொண்டே இம் மந்திரங் கூறுகின்ற தென்பதாம்.

மந்திரப் பொருள் :—இந்திரனே! நீ, உறுதியான மடு முதலியவைகளை யுங் கெடுக்கத் தக்கவைகளும், வேறிடத்திற்குக் கொண்டு செல்லும் ஆற்றலுடையவைகளுமான மருத்துக்களுடன்கூடி, குகையில் மறைக்கப் பட்ட பசுக்களையும் பெற்றுக்கொண்டனை என்பதாம். (3)

மந்திரம் 10.

१ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २र ३ २ ३२
853. ता हुवे ययोरिदं पप्ने विश्वं पुराकृतम् ।
३ १ २र
इन्द्राग्नी न मर्द्धतः ॥ १ ॥

தா ஹுவெ யயொரிதம் பப்நெ விஶ்வம் புராக்ருதம் ।
இந்த்ராக்ஷீ ந மர்ஜ்ஜதஃ ॥

அந்வயம்.

ययोः, कृतं विश्वं, इदं, पुरा, पप्ने, ता इन्द्राग्नी, हुवे, न मर्द्धतः ॥

பதவுரை.

ययोः	யயொஃ	எந்த இந்திராக்கினிகளின்
कृतं विश्वं	க்ருதம் விஶ்வம்	எல்லா வுலகையுஞ் செய்யப் பட்ட வலியையும்
इदं	உதம்	பூர்வ மந்திரங்களாற் போற்றப் பட்ட இப்பராக்கிரமத்தையும்
पुरा	புரா	முன்காலத்தில்
पप्ने	பப்நெ	இருடிகள் துதித்திருக்கின்றார் களோ,
ता इन्द्राग्नी	தா இந்த்ராக்ஷீ	இந்திரன், அக்கினி என்னுமவர் களை
हुवे	ஹுவெ	அழைக்கின்றேன். அவர்கள் துதிப்பவர்களைத்
न मर्द्धतः	ந மர்ஜ்ஜதஃ	துன்புறுத்தார்கள். ஆதலின் எனது வேள்வியைக் காப் பாற்றுவார்களாக என்பதாம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—நான்காவது மூன்றில்—1.

இந்திரன், அக்கினி என்னுமவர்களை யழைக்கின்றேன். எத்தன்மையர் களை யெனின்? முன் காலத்தில் எல்லா மந்திரங்களிலும் இருடிகள் எவர்களு

டைய பராக்கிரமத்தைப் புகழ்ந்து துதித்திருக்கின்றார்களோ, அவ் விந்திராக்கினிகளை யழைக்கின்றேன் எனக்கூட்டுக. அவ் விந்திராக்கினிகள், தம்மைத் துதிக்கின்றோர்களைத் துன்புறுத்தார்கள். இதனால், எங்களையும், ஆகுதிகளையும் பாதுகாப்பாற்றுவார்கள் என்பது பெறப்பட்டமை காண்க என்பதாம்.

மந்திரம் 11.

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
854. उग्रा विघनिता मृध इन्द्राग्नी हवामहे ।
१ २ ३१२
ता नो मृडात ईदृशे ॥ २ ॥

உ௱ா விஹநிதா ௴ஶ இந்த்ராஶ்ந ஹவாஹெ ।
தா நொ ௴ஶாத ஈஂத்ருஶெ ॥

அந்வயம்.

उग्रा, मृधः विघनिता, इन्द्राग्नी, हवामहे, ता ईदृशे, नः, मृडातः ॥

பதவுரை.

उग्रा	உ௱ா	பேராற்றலுடையவர்களும்
मृधः विघनिता	௴ஶः விஹநிதா	பகைவரைத் தொலைப்பவர்களுமான
इन्द्राग्नी	இந்த்ராஶ்ந	இந்திரன், அக்கினி, என்பவர்களை
हवामहे	ஹவாஹெ	அழைக்கின்றோம்.
ता ईदृशे	தா ஈஂத்ருஶெ	அவர்கள் இப்போரில்
नः	நः	எங்களுக்குச்
मृडातः	௴ஶாதः	சுகங் கொடுப்பார்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

மிகுந்த வலியுடையவர்களும், இதனானே நன்கு சத்துருக்களைக் கொல்பவர்களுமான, இந்திரன், அக்கினி என்பவர்களை அழைக்கின்றோம். அவர்கள் இந்த உயுத்தத்தில் எங்கட்குச் சுகங் கொடுப்பார்களாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 12.

२ ३ ३ १ २र ३ १ २र
855. *हथो वृत्राण्यार्या हथो दासानि सत्पती ।
३ २उ २ ३ १ २
हथो विश्वा अप द्विषः ॥ ३–८ ॥

இருக்கு 6-60-5-6.

ஹயோ வ்ரு த்ராண்யார்யா ஹயோ தாஸாநி ஸத்பதீ ।
ஹயோ விஶ்வா அப த்விஷः ॥

அந்வயம்.

(हे इन्द्राग्नी !,) आर्या, वृत्राणि, हथः, सत्पती, दासानि हथः, विश्वाः द्विषः, अपहथः ॥

பதவுரை.

(हे इन्द्राग्नी !)	(ஹெ இந்த்³ராக்³நீ !)	இந்திராக்கினிகளே ! நீவிர்,
आर्या	ஆர்யா	கருமாநுட்டானஞ் செய்பவர் கட்கு உண்டான
वृत्राणि	வ்ரு த்ராணி	துன்பங்களைப்
हथः	ஹயதः	போக்குகின்றீர்கள்.
सत्पती	ஸத்பதீ	நல்லார்களைப் பாதுகாப்போர்க ளாய்க்
दासानि हथः	தாஸாநி ஹயதः	கருமாநுட்டான மில்லார்கள் செய் யும் உபத்திரவங்களையும் நீக்கு கின்றீர்கள்.
विश्वाः द्विषः	விஶ்வாः த்விஷः	துவேஷம் பண்ணுகின்ற எல்லாச் சத்துருக்களையும்
अपहथः	அப ஹயதः	நாசஞ் செய்கின்றீர்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

இந்திராக்கினிகளே ! நீங்கள், கருமாநுட்டானஞ் செய்பவர்கட்கு உண் டான இடுக்கண்களனைத்தையும் போக்குகின்றீர்கள். நல்லோர்களைப் பாது காப்பவர்களாயிருந்து, கருமங்களை விட்ட பகைஞர்களின் இம்சைகளையும் நீக்குகின்றீர்கள். மற்றும், துவேஷம் பண்ணுகின்ற சத்துருக்களனைவரை யும் நாசஞ் செய்கின்றீர்கள் ஆதலின் எங்கட்கும் இவ்வாறு செய்வீர்களாக என்பது கருத்து. (3)

இரண்டாவது கண்டம்
முற்றும்.

---

* हतो, என்பது இருக்கு.

மூன்றாவது கண்டம்

பிரபாடகம்—2. அத்தியாயம்—4. கண்டம்—3.

ஏழு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३ १ २र ३२३ १२ ३ २ ३ १२
856. अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम् ।
३ १ २र३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
समुद्रस्याधिविष्टपे मनीषिणो * मत्सरासो मदच्युतः ॥ १ ॥

ꣳहि ꣳहोꣳहꣳ ꣳयवꣳ वꣳवꣳञ्जे ꣳ२ꣳं ꣳ२ꣳ४ ।
ꣳवꣳ२ꣳ४ꣳ२ꣳयीꣳविꣳष्ट꣡ꣳवे ꣳउꣳनीꣳषिꣳणो ꣳउꣳ३ꣳꣳꣳहꣳो ꣳ२ꣳयु꣡ꣳतः ॥

அந்வயம்.

आयवः, मनीषिणः, मत्सरासः, मदच्युतः, सोमासः समुद्रस्य, अधिविष्टपे, मद्यं, मदं, अभिपवन्ते ॥

பதவுரை.

आयवः	ꣳयवꣳ	செல்லுஞ் சீலமுடையதும்,
मनीषिणः	ꣳउꣳनीꣳषिꣳणः	மனதிற்குத் தலைமையானதும்,
मत्सरासः	ꣳउꣳ३ꣳꣳꣳहꣳाꣳः	களிப்பைக் கொடுப்பதும்
मदच्युतः	ꣳ२ꣳउ ꣳयु꣡ꣳतः	தனது இரசத்தை யொழுகச் செய்வதுமாகிய
सोमासः	ꣳहोꣳहꣳः	சோமம்,
समुद्रस्य	ꣳवꣳ२ꣳ४ꣳ२ꣳयु	கலசத்தினுடைய
अधिविष्टपे	ꣳयीꣳविꣳष्ट꣡ꣳवे	புனிதமாகிய மேலிடத்தில்,
मद्यं	ꣳ२ꣳयꣳं	களிப்பைக் கொடுக்கின்ற
मदं	ꣳ२ꣳ४	தனது இரசத்தை
अभिपवन्ते	ꣳहिꣳवꣳवꣳञ्जे	எல்லாவகையாலும் வெளியாக்குகின்றது.

---

* मत्सरासः स्वर्विदः, என்பது இருக்கு.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1. விசுவாமித்திரர் ரிஷி.

செல்லுஞ்சீலமுள்ள சோமம், களிப்பை யுண்டாக்குகின்ற தனது இரசத்தை நாற்புறமும் வெளிப்படுத்துகின்றது. எங்கே யெனிற் ? கூறப்படுகின்றது :—அந்தரிட்சத்தின் (வானின்) மிக வுயர்ந்த பாத்திரத்தில், அல்லது, நெகிழ்ச்சிக்குக் காரணமாகிய இரசத்தினுடைய பவித்திரமாகிய கலசத்தின் மேற் பக்கத்திலிருந்து விழுகின்றது என்க. எவ்விதமான ரசமெனின் ? மனிதர்களுக்கு நலமையானதும், களிப்பைக் கொடுப்பதும், மதமொழுகுகின்றதுமா மென்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

12 31 22 3 2 3 1 2 3 2 32 32
857. तरत्समुद्रं पवमान ऊर्मिणा राजा देव ऋतं बृहत् ।
1 2 3 2 3 12 3 12 2 1 2 3 3 2 32
* अर्षा मित्रस्य वरुणस्य धर्मणा प्र हिन्वान ऋतं बृहत् ॥ २ ॥

தரத்ஸமுத்₃ரம்ʼ பவமான ஊர்மிணா ராஜா தே₃வ ரு₃தம்ʼ ப்₃ருஹத் ।
ரு₃ஷிர்ʼ விஶ்வவ்ʼ வரு₂ணவ்ʼ யஜ்ஞா வர்ʼ ஹிந்வான ரு₃தம்ʼ
[ப்₃ருஹத் ॥

அன்வயம்.

पवमानः, देवः, बृहत्, ऋतं, राजा, ऊर्मिणा, समुद्रं, तरत्, हिन्वानः, ऋतं बृहत्, मित्रस्य वरुणस्य, धर्मणा, प्र अर्षा ॥

பதவுரை.

पवमानः	பவமானः	சுத்தம் பண்ணப்பெற்றதும்
देवः	தே₃வः	பிரகாசமுடையதும்,
बृहत्	ப்₃ருஹத்	மிக
ऋतं	ரு₃தம்	உண்மையானதுமாகிய
राजा	ராஜா	சோமரசம்,
ऊर्मिणा	ஊர்மிணா	தாரையாற்
समुद्रं	ஸமுத்₃ரம்	கலசத்தை
तरत्	தரத்	அடைகின்றது. மற்றும்,
हिन्वानः	ஹிந்வானः	செலுத்தப்பட்டதும்,

* अर्षन् मित्रस्य, प्रहिन्वान, என்பது இருக்கு.

ऋतं बृहत्	ஃதம் ப்ருஹத்	மிக வுண்மையுமாகிய சோமரசம்,
मित्रस्य वरुणस्य	மித்ரஸ்ய வரு-ணஸ்ய	மித்திர வருணர்களைத்
धर्मणा	யஜ்ஜ்ணா	தாங்குதற் பொருட்டு
प्र अर्षा	ப்ர அஷ்ஷா	நன்கு வருகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

புநிதமாகியதும், பிரகாசிப்பதும், மிக உண்மையானதுமாகிய சோமம், தாரையால், அந்தரிட்சத்தை, அல்லது, கலசத்தை அடைகின்றது. செலுத்துவதும், மிக உண்மையானதுமாகிய அச்சோமரசம், மித்திர வருணர்களைத் தாங்குதற் பொருட்டு நன்கு ஒழுகுகின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २र ३१ २३क२र
858. नृभिर्येमाणो हर्यतो विचक्षणो राजा देवः * समुद्र्यः ॥ ४–९ ॥

இருக்கு 9-107-14-13.

ந்ருபிர்யெமாணொ ஹர்யதொ விசக்ஷணொ ராஜா தெவஃ
[ஸமுத்ர்யஃ ॥

அந்வயம்.

नृभिः, येमानः, हर्यतः, विचक्षणः, देवः, समुद्र्यः, राजा ॥

பதவுரை.

नृभिः	ந்ருபிஃ	வேட்போர்களால்
येमानः	யெமாநஃ	நியமிக்கப்பட்டதும்,
हर्यतः	ஹர்யதஃ	விரும்பத் தக்கதும்,
विचक्षणः	விசக்ஷணஃ	நன்கு பார்க்கின்றதும்,
देवः	தெவஃ	பிரகாசிக்கின்றதும்,
समुद्र्यः	ஸமுத்ர்யஃ	அந்தரிட்சத்திற் றோன்றியதும்
राजा	ராஜா	அரசனுமாகிய சோமரசம் பவித்திரமாகின்றது.

* समुद्रियः, என்பது இருக்கு.

சாயணபாடியம்.

கருமங்கட்குத் தலைவர்களால் நியமிக்கப்பட்டதும், விரும்பத்தக்கதும், நுண்ணிய பார்வையுடையதும், பிரகாசிப்பதும், அந்தரிட்சத்திற் சென்றியதுமாகிய சோமரசம், இந்திரன் பொருட்டுப் பிழியப்படுகின்றது. ஈண்டு, இந்திரன் பொருட்டு என்பது எஞ்சி நின்றது. (2)

மந்திரம் 4.

३ १ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ २

859. तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निः ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम् ।

१ २ ३ १२ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २

गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः ॥२॥

தி஖்ரா வாச ஈரயதி ப்ர வஹ்நிஃ ஃதஸ்ய தீதிம் ப்ர ஹ்மணோ
[ஃநீஷாம் ।

மாவொ யந்தி மொவதிம் ப்ருச்ச்ஹமாநாஃ ஸொமம் யந்தி மதயொ வாவ
[ஶாநாஃ ॥

அன்வயம்.

वह्निः, तिस्रः वाचः, प्रेरयति, ऋतस्य, धीतिं, ब्रह्मणः, मनीषां, गावः, गोपतिं, पृच्छमानाः, सोमं, यन्ति, वावशानाः, मतयः यन्ति ॥

பதவுரை.

वह्निः	வஹ்நிஃ	வேள்வித் தலைவன்
तिस्रः वाचः	தி஖்ரஃ வாசஃ	மூன்று வேதங்களான வாக்குகளைச்
प्रेरयति	ப்ரெரயதி	சொல்கின்றான்.
ऋतस्य	ஃதஸ்ய	வேள்வியைத்
धीतिं	தீதிம்	தாங்குகின்ற
ब्रह्मणः	ப்ரஹ்மணஃ	சோமத்தினுடைய
मनीषां	மநீஷாம்	மங்கள வாக்கையுஞ் சொல்கின்றான், என மேற் கூட்டுக
गावः	காவஃ	பசுக்கள்,
गोपतिं	கொபதிம்	ரிஷ (இட) பத்தை யடையுமாறு
पृच्छमानाः	ப்ருச்ச்ஹமாநாஃ	கூப்பிட்டுக்கொண்டு (தமது) பாலுடன் கலத்தற்பொருட்டுச்
सोमं	ஸொமம்	சோமரசத்தை

यन्ति	யந்தி	அடைகின்றன.
वावशानाः	வாவஶாநாஃ	அன்புடையவர்களான
मतयः यन्ति	மதயஃ யந்தி	துதிப்போர்களும் அடைகின்றார்கள்;

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—மூன்றாவது மூன்றனுள்—1. பராசரர் ரிஷி.

வேள்வித் தலைவன், இருக்கு, எசுர், சாமம் என்னும் வாக்குகளைச் சொல்கின்றான். அங்ஙனமே, வேள்வியைத் தாங்கும் சோமரசத்தினுடைய மங்கள வாக்கையுஞ் சொல்கின்றான். மற்றும், ரிஷபத்தைப் பசுக்கள் அடையுமாறு, பசுக்களுக்கெல்லாம் இறையாகிய சோமத்தைப், பசுக்கள் கேட்பனவாய்ச் சென்று அடைகின்றன. எதன் பொருட் டெனின்? அதைத் தமது பாலுடன் கலந்துகொள்ளற் கென்க. அவ்வாறே, விருப்புற்ற துதிப்போர்களும் சோமத்தைத் துதிப்பதற்கு அடைகின்றார்கள் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

२३ १२३१२ ३२उ ३१२३१२ ३१२
860. सोमं गावो धेनवो वावशानाः सोमं विप्रा मतिभिः पृच्छमानाः ।
१२ ३१२ ३१२३ १२३२३ १२
सोमः सुत ऋच्यते पूयमानः सोमे अर्कास्त्रिष्टुभः संनवन्ते ॥२॥

ஸொஅம் கா3வொ தே4நவொ வாவஶாநாஃ ஸொஅம் விப்ரா மதிபி4ஃ
[ப்ருச்ச2மாநாஃ ।
ஸொமஃ ஸுத ருச்யதே பூயமாநஃ ஸொமே அர்காஸ்த்ரிஷ்டு3பா4ஃ ஸம்நவந்தே
[ஸம்நவந்தே ॥

அன்வயம்.

धेनवः, गावः, सोमं, वावशानाः, विप्राः, सोमं, मतिभिः, पृच्छमानाः, सुतः, सोमः, पूयमानः, ऋच्यते, त्रिष्टुभः, अर्काः, सोमे, संनवन्ते ॥

பதவுரை.

धेनवः	தே4நவஃ	களிப்பைக்கொடுக்கின்ற
गावः	கா3வஃ	பசுக்கள்,
सोमं	ஸொமம்	சோமத்தை
वावशानाः	வாவஶாநாஃ	விரும்பிக் கொண்டிருக்கின்றன.
विप्राः	விப்ராஃ	தோத்திரஞ் செய்கின்றவர்கள்

सोमं	ஸொமம்	சோமத்தைத்
मतिभिः	மதிபிஃ	துதிகளாற்
पृच्छमानाः	ப்ருச்சமானாஃ	கேட்கின்றார்கள்.
सुतः	ஸுதஃ	சமற்காரம் பண்ணப்பெற்ற
सोमः	ஸொமஃ	சோமரசம்,
पूयमानः	பவ்யமானஃ	வேட்போர்களாற் சுத்தம் பண்ணப்பட்டுப்
ऋच्यते	ஊச்யதெ	பாத்திரத்தில் ஒழுகுகின்றது.
त्रिष्टुभः	த்ரிஷ்டுபஃ	'திருஷ்டுப்' என்னுஞ் சந்தங்களையுடைய
अर्काः	அர்காஃ	யான் கூறின மந்திரங்கள்
सोमे	ஸொமெ	சோமத்தில்
संनवन्ते	ஸம்நவந்தெ	இனிது பொருந்துகின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

அன்பைக் கொடுக்கின்ற பசுக்கள், சோமத்தை விரும்புகின்றன. அறிவு மிகுந்த துதிப்போர்களுந் தோத்திரங்களாற் சோமத்தைக் கேட்போர்களாகின்றார்கள். வேட்போர்களாற் பவித்திரம் பண்ணப்பட்டு, சோமரசம் பாத்திரத்தில் ஒழுகுகின்றது. யாஞ்ஞெதுகின்ற 'திருஷ்டுப்' சந்தமுடைய மந்திரங்கள் சோமத்திற் பொருந்துகின்றன என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

३ १ २ ३१२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २

861. एवा नः सोम परिषिच्यमान आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति ।

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १२ ३२ ३ १२

इन्द्रमा विश बृहता *मदेन वर्द्धया वाचं जनया पुरन्धिम् ॥ ३-१० ॥

இருக்கு 9-97-34-64.

ஏவா நஃ ஸொம பரிஷிச்யமான ஆ பவஸ்வ பவ்யமானஃ ஸ்வஸ்தி ।

இந்த்ரமா விஸ ப்ருஹதா மதெந வர்த்தயா வாசம் ஜநயா புரந்திம் ॥

---

* रवेण, என்பது இருக்கு.

அந்வயம்.

हे सोम !, परिषिच्यमानः, पूयमानः, नः स्वस्ति एव, पवस्व, बृहता, मदेन, इन्द्रं, आविश, वाचं, वर्द्धया, पुरन्धिं, जनया ॥

பதவுரை.

हे सोम !	ஹெ ஸொம !	சோமமே !
परिषिच्यमानः	வரிஷிஷ்யமாநः	எல்லாவகையாலும் பாத்திரத்தில் வார்க்கப்படுகின்றதும்
पूयमानः	வபூயமாநः	புனிதமடைந்ததுமாகிய நீ,
नः	நः	எங்களுக்கு
स्वस्ति एव	ஸ்வஸ்தி ஏவ	சுகத்தையும், மங்களத்தையுமே
पवस्व	பவஸ்வ	கொடுப்பாயாக. மற்றும்,
बृहता	பிரஹதா	மிகுந்த
मदेन	மதேந	களிப்பைக் கொடுக்கின்ற தன்மையால்
इन्द्रं	இந்த்ரம்	இந்திரனுடைய ஆன்மாவிற்
आविश	ஆவிச	சேர்வாயாக. அவ்வாறே,
वाचं	வாசம்	துதியாகிய வாக்கை
वर्द्धया	வர்த்தயா	வெளிப்படுத்துவாயாக.
पुरन्धिं	புரந்திம்	பலவகைக் கருமஞானத்தை
जनया	ஜநயா	எங்கட்கு உண்டாக்குவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

பாத்திரங்களில் வார்க்கப்பட்டுப் பவித்திரமாகிய சோமமே ! எங்களுக்கு மங்களத்தையே கொடுப்பாயாக. மற்றும், மிகக் களிப்பைக் கொடுக்கின்ற இரசத்தால் இந்திரனுகிய எம்மை யடைவாயாக. தோத்திரமாகிய வாக்கை வெளிப்படுத்துவாயாக. மற்றும், பேரறிவையும் எங்கட்குத் தோற்றுவிப்பாயாக என்பதாம். (3)

மூன்றுவது கண்டம்.

முற்றும்.

நான்காவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—2. அத்தியாயம்—4. கண்டம்—4.

ஏழு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

862. यद्याव इन्द्र ते शतꣳ शतं भूमीरुतास्युः ।
न त्वा वज्रिन्त्सहस्रꣳ सूर्या अनु न जातमष्टरोदसी ॥ १ ॥

யத்³யாவ இந்த்³ர தே ஸ²தம் ஸ²தம் ப்⁴ஹூமீருதாஸ்யு: ।
ந த்வா வஜ்ரிந்ஸஹஸ்ரꣳ ஸூர்யா அனு ந ஜாதமஷ்டரோத³ஸீ ॥

அன்வயம்.

(हे) इन्द्र !, ते, द्यावः, यत् शतंस्युः न, उत, भूमीः, ते, शतं, न, वज्रिन्, त्वा, सहस्रं, सूर्याः, न अनु, जातं, नाष्ट, रोदसी न ॥

பதவுரை.

(हे) इन्द्र !	(ஹெ) இந்த்³ர !	இந்திரனே !
ते	தே	உனக்குச் சமமென்பதற்கு
द्यावः	த்³யாவ:	வானுலகங்கள்
यत् शतंस्युः न	யத் ஸ²தம்ஸ்யு: ந	நூற்றுக்கணக்கா யிருக்கினும் மூடியாதனவாம்.
उत	உத	மற்றும்,
भूमीः	ப்⁴ஹூமீ:	பூமிகள்
ते	தே	உனது வடிவம் பிரதிபலிப்பதற்கு
शतं	ஸ²தம்	நூற்றுக்கணக்கா யிருக்கினும்
न	ந	சமமென்பதற்கு மூடியாதனவாம்.
वज्रिन्	வஜ்ரிந் !	வச்சிரத்தைத் தாங்கினோய் !
त्वा	த்வா	உன்னை,
सहस्रं	ஸஹஸ்ரம்	ஆயிரக்கணக்கான
सूर्या	ஸூர்யா:	சூரியர்களும்

न अनु	ந அநு	விளக்கமாட்டார்கள்.
जातं	ஜாதம்	தோன்றின பொருளனைத்தும்
नाष्ट	நாஷ்	உனக்கொப்பாகாதவைகளேயாம்.
रोदसी न	ரொதஸீ ந	வானுலகும் மண்ணுலகும் உன்னைத் தொடுதற்கும் முடியாதனவாம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—பெருங்கீதத்தின் முதலாவது சூக்தத்தில்—1. புருஹன்மர் ரிஷி.

இந்திரனே! உனக்கொப்பிடுவதற்கு நூற்றுக்கணக்கான வானுலகங்கள் தோன்றினும் ஒப்பாகாதனவாம். மற்றும், உன்னுடைய வடிவம் பிரதி பலிப்பதற்கு நூற்றுக்கணக்கான பூமிகளிருப்பினும் போராதனவாம். வச்சிரத்தைத் தாங்கினோய்! எண்ணிறந்த சூரியர்கள் தோன்றினர்களேனும். உன்னைப் பிரகாசிப்பிக்கமாட்டாதவர்களே யாவர்கள். "ஆண்டு இரவி விளக்கமில்லை" என்று கூறுகின்றது முண்டக சுருதியும். விரிப்பதிலென? முன்னர்த் தோன்றிய வனைத்தும், உனக்குச் சமமாய்ச் சொல்ல முடியாதனவே யாமென்க. அவ்வாறே, வானுலக மண்ணுலகங்களும் உன்னை யடையாதனவாம். இவ்வாற்றால் எல்லாவற்றினும் மேலாயிருக்கின்றாய் என்பது பெறப்பட்டது. "பூமியினும் மேம்பட்டவன் அந்தரிட்சத்தினும் மேம்பட்டவன் வானிலும் மேம்பட்டவன், இவ் வுலகங்களினின்று மேம்பட்டவன்" எனப், பிருகதாரணிய வுபநிடதமும் கூறுகின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१ २ ३ १ २२ ३ १ २ १ १२

863. आ पप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन्विश्वा शविष्ट शवसा ।

३ १ २ ३ १२ ३१ २२ ३ १ २ ३ १ २

अस्माꣳ अव मघवन् गोमति व्रजे वज्रिन् चित्राभिरूतिभिः॥ २-११ ॥

இருக்கு 8-70-5-3.

आ वव्राथ महिना वृष्ण्या वृषन्विश्वा शविष्ट शवसा ।
अस्माꣳ अव मघवन् गोमति व्रजे वज्रिन् चित्राभिरूतिभिः ॥

அந்வயம்.

वृषन्!, वृष्ण्या, महिना शवसा, विश्वा, आपप्राथ, शविष्ट!, मघवन्!, वज्रिन्!, गोमति, व्रजे, चित्राभिः, ऊतिभिः, अस्मान्, अव ॥

பதவுரை.

वृषन्!	வ்ருஷந்!	விருப்பத்தைப் பொழிகின்ற இந்திரனே! நீ,
वृण्या	வ்ருண்யா	வேண்டிய பயனைக் கொடுக்கின்ற
महिना शवसा	மஹிநா ஶவஸா	தனது மிகுந்த வலியால்
विश्वा	விஶ்வா	என்னுடைய ஆற்றல்களனைத்தையும்,
आपप्राथ	ஆபப்ராத²	நிறையச் செய்கின்றாய். (செய்து)
शविष्ठ!	ஶவிஷ்ட²!	ஆற்றல் மிக்கோய்!
मघवन्!	மக⁴வந்!	தன மிக்கோய்!
वज्रिन्!	வஜ்ரிந்!	வச்சிரத்தைத் தாங்கினோய்! இந்திர!
गोमति	கோ³மதி	பசுக்கள் நிறைந்த
व्रजे	வ்ரஜே	கோசாலையில், (பகைவர் வருமிடத்துப்)
चित्राभिः	சித்ராபி⁴:	பலவகையான
ऊतिभिः	ஊதிபி⁴:	பாதுகாப்புக்குரிய சாதனங்களால்
अस्मान्	அஸ்மாந்	எங்களைப்
अव	அவ	பாதுகாப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

வேண்டுவன வற்றைக் கொடுக்கின்ற இந்திர! நீ, நிறைந்திருக்கின்றாய். எவைகளிலெனின்? விரும்பியவற்றை யளிக்கின்ற எல்லாச் சத்துருக்களின் ஆற்றல்களிலுமென்க. எந்தச் சாதனத்தாலெனின்? தன்னுடைய பேராற்றலால், அல்லது விரும்பியவற்றைப் பொழிகின்ற பேராற்றலாலென்க. அல்லது, எங்களுடைய ஆற்றல்களை வியாபித்திருக்கின்றாய் எனினுமாம். வலிமிக்கோய்! நீ, அவ்வாறு செய்துகொண்டு பசுக்கள் நிறைந்த கோட்டத்தில் சத்துருக்கள் நிமித்தமாய் (வருந்துன்பை யொதுக்கி) எங்களைப் பாதுகாப்பாயாக. தனமிக்கோய்! வச்சிரத்தைத் தாங்கினோய்! இந்திர! எவ்வாறு பாதுகாப்பாயெனின்? பலவகையான பாதுகாப்புக்குரிய கருவிகளைக் கொண்டென்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

३१ २ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १२

864. वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः ।

३ १ २ ३ १२ १ ३ १ २ ३ १२

पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन्परिस्तोतार आसते ॥ ३ ॥

வயம் வ க்வா ஸுதாவந்த சூபொ ந வ்ருக்தபர்ஹிஷ: ।
பவித்ரஸ்ய ப்ரஸ்ரவணேஷு வ்ருத்ரஹந்பரிஸ்தோதார சூஸதே॥

அந்வயம்.

वृत्रहन्!, सुतावन्तः, आपः न, त्वा, वयं घ, पवित्रस्य, प्रस्रवणेषु, वृक्तबर्हिषः, स्तोतारः, पर्यासते ॥

பதவுரை.

वृत्रहन्!	வ்ருத்ரஹந் !	விருத்திரனைக் கொன்ற இந்திர!
सुतावन्तः	ஸுதாவந்த:	பிழிகின்ற சோமசரத்தை
आप न	சூப: ந	நீரானது அடைவது போன்று
त्वा	க்வா	உன்னை
वयं घ	வயம் வ	நாங்கள் அடைகின்றோம்.
पवित्रस्य	பவித்ரஸ்ய	சோமரசமானது
प्रस्रवणेषु	ப்ரஸ்ரவணேஷு	ஒழுகும்போது
वृक्तबर्हिषः	வ்ருக்தபர்ஹிஷ:	தருப்பையை விரிக்கின்றவர்களான
स्तोतारः	ஸ்தோதார:	துதிப்போர்கள்
पर्यासते	பர்யாஸதே	உன்னை வழிபடுகின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றனுள்—1. மேதாதிதி ரிஷி.

விருத்திரனைக் கொன்ற இந்திரனே! நீர்த்துளிகள், சோமத்தை யடைவது போன்று நாங்கள் உண்மையாய் உன்னை யடைகின்றோம். சோமரசம் பிழிந்தவுடன், தருப்பை யாசனத்தை விரிக்கின்ற துதிப்போர்களும் உன்னை வழிபடுகின்றார்கள் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

१२ ३२र ३ १ २ ३ २ १ २
865. स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः ।
३ २ ३१ २ ३२उ ३ १ २ ३ २ ३१ १ २
कदा सुतं तृषाण ओक आगमदिन्द्र स्वब्दीव वꣳसगः ॥ २ ॥

ஸ்வரந்தி க்வா ஸுதே நரோ வஸோ நிரேக உக்஥ிந: ।
கதா ஸுதம் த்ருஷாண ஓக ஆகமதிந்த்ர ஸ்வஸ்தீவ வம்ஸக: ॥

அன்வயம்.

वसो इन्द्र !, सुते, निरेके, उक्थिनः, नरः, त्वा, स्वरन्ति, सुतं, तृषाणः, वंसगः, स्वर्दी, इव, कदा, ओकः, आगमत् ॥

பதவுரை.

वसो इन्द्र !	வஸொ இந்ர !	வியாபகனுகிய இந்திர !
सुते	ஸுதெ	பிழியப்பட்ட சோமரசம்
निरेके	நிரெகெ	உண்டானபோது
उक्थिनः	உக்தி நஃ	துதியாளர்களான
नरः	நரஃ	வேட்போர்கள்
त्वा	த்வா	உன்னைக் குறித்து
स्वरन्ति	ஸ்வரந்தி	மிக வொலியுடன் மந்திர மோதுகின்றார்கள்.
सुतं	ஸுதம்	சோமத்தை
तृषाणः	த்ருஷாணஃ	விரும்பியவனும்,
वंसगः	வம்ஸகஃ	அழகிய நடையுடையவனும்,
स्वर्दी, इव	ஸ்வர்தீ, இவ	களிப்பைக் கொடுக்கின்ற சத்தமுடையவனுமாகி
कदा	கதா	எப்போது
ओकः	ஒகஃ	அவ்விடத்திற்கு
आगमत्	ஆகமத்	வருவையோ ? (அறியேம்).

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

நிறைந்திருக்கின்ற இந்திரனே ! நீ, சோமரசம் பிழிந்தெடுத்த விடத்து வேட்போர்கள் மிகுந்த ஒலியுடன் நினக்கு மந்திர மோதுகின்றார்கள். (ஆதலின்) சோமத்தில் விருப்புடையவனும், மங்களத்தைக் கொடுக்கும் ஒலியுடையவனும், அழகிய நடையுடையவனுமாகி, எப்போது அவ்விடத்திற்கு வருவையோ ? (அறியேம்.) (4)

மந்திரம் 5.

१ २ ३२ ३१ २र ३ १२

866. कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद्वाजं दर्षि सहस्रिणम् ।

३ १२ ३ १ २र

पिशङ्गरूपं मघवन्विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे ॥ ३–१३ ॥

இருக்கு 8-33-1-3.

கண்வேஹியூஷவா யூஷபாஜம் ஏஷிடு மஹஹஸ்தி ணடி ।
விசர்ஷணவம் ஸவவ.க்ரிபஷுணை சக்ஷஸ்வ மொஹஸ்ஸஹை ॥

அன்வயம்.

धृष्णो !, कण्वेभिः, सहस्रिणं, वाजं, आदर्षि, मघवन् !, विचर्षणे !, धृषत्, पिशंगरूपं गोमन्तं, वाजं, मक्षू, ईमहे ॥

பதவுரை.

धृष्णो !	யூஸ்ணை !	சத்துருவைப் பயப்படுத்தத்தக்க இந்திர !
कण्वेभिः	கண்வேஹிஃ	கண்ணுவகுலத்தரான கூரிய மதியுடைய வேட்போர்கள் வாயிலாக
सहस्रिणं	ஸஹஸ்ரிணம்	ஆயிரம் வகையான
वाजं	வாஜம்	அன்னங்களேயும், அல்லது, வலிகளேயும், அல்லது, தனங்களேயும்
आदर्षि	ஆதர்ஷி	கொடுக்கின்றனை.
मघवन् !	மகவன் !	தனமுடையோய் !
विचर्षणे !	விசர்ஷணே !	இனிது காண்போய் ! இந்திரனே !
धृषत्	யூஷத்	வலியுள்ளவைகளும்
पिशंगरूपं गोमन्तं	பிசங்கரூபம் மொமந்தம்	பொன் போற் காந்தியுடையவைகளுமாகிய பசுக்களுடன் கூடிய
वाजं	வாஜம்	தனத்தையும்
मक्षू	மக்ஷூ	சீக்கிரம்
ईमहे	ஈமஹே	(நின்பால்) இரக்கின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—3.

பகைவர்களுக்குப் பயங்கொடுக்கத்தக்க இந்திர ! அறிவு மிக்க வேட்போர்களுக்கு ஆயிரக்கணக்கான அன்னங்களே, அல்லது, வலிகளேக் கொடுக்கின்றாய். தனமுடையோய் ! நுண்ணிய பார்வையையுடையோய் ! இந்திர ! பொன்னுடன் பசுக்களேயும் உன்னிடத்தில் விரைவில் இரக்கின்றோம் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 6.

३२ ३१ २ ३ २३ १२ ३ २
867. तरणिरित्सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा ।
२ ३१२ ३१२ ३२ ३१ २२ ३१२
आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रुवम् ॥ १ ॥

தரணிரித்ஸிஷாஸதி வாஜம் வுரந்ய்யா யுஜா ।
ஆ வ இந்த்ரம் புருஹூதம் நமெ கிரா நெமிம் தஷ்டெவ ஸுத்ருவம் [ரூவழி॥

அன்வயம்.

तरणिरित्, युजा, पुरन्ध्या, वाजं, सिषासति, वः, गिरा, पुरुहूतं, इन्द्रं, तष्टा, सुद्रुवं, नेमिं इव, आनमे ॥

பதவுரை.

तरणिरित्	தரணிரித்	மிகத் துரிதமாய்ப் போரிற் புகுந்தவன்
युजा	யுஜா	(தனக்கு) அநுகூலமாகிய
पुरन्ध्या	புரந்ய்யா	போதிவால், அல்லது, அநுகூலமாகிய மிகுந்த கருமாதுட்டானத்தால்,
वाजं	வாஜம்	அன்னத்தை
सिषासति	ஸிஷாஸதி	அடைகின்றன். (வேட்போர்காள்!)
वः	வः	உங்கணிமித்தம், (யான்)
गिरा	கிரா	தோத்திரத்தைக் கொண்டு
पुरुहूतं	புருஹூதம்	பலரா லழைக்கப் பெற்ற
इन्द्रं	இந்த்ரம்	இந்திரனை,
तष्टा	தஷ்டா	தச்சன்
सुद्रुवं	ஸுத்ருவம்	நல்ல மரச் சக்கரத்தைக் குறித்து
नेमिं इव	நெமிம் இவ	இரும்புப் பட்டையை வளைக்கின்றதுபோல்
आनमे	ஆநமெ	வழிப்படுத்துகின்றேன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—பெருங் கீதமாகிய மூன்றுவது சூக்தத்தில்—1.

போர் முதலியவைகளில் விரைவாகவே சென்ற ஒருவன், பெரும் புத்தியால், அல்லது, அநுகூலமாகிய செய்கையால், அன்னத்தை யடைந்துய்கின்றான். வேள்வித் தலைவர்காள்! உங்களிடத்தம், யான் தோத்திரமாகிய வாக்கைக்கொண்டு பல்லோர்களாலும் அழைக்கப் பெற்ற இந்திரனை, ஒருமைப்படுத்துகின்றேன். அதிலுவமை:—தச்சன் மரச்சக்கரத்திற்கு இரும்புப் பட்டையை வலியமாய்ச் செய்வது போன்று என்பதாம். (1)

மந்திரம் 7.

१२ ३१२ ३१२ ३ १ २र ३१२

868. न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते न स्रेधन्तꣳ रयिर्नशत् ।

३२ ३१ २३ २ ३ १२ ३१ २र ३२

सुशक्तिरिन्मघवन् तुभ्यं मावते देष्णं यत्पार्य्ये दिवि ॥ २-१३ ॥

இருக்கு 7-32-20-21.

ந ஊஷ்டுதிர்த்³ரவிணோதே³ஷு ஶஸ்யதே ந ஸ்ரேத⁴ந்தꣳ ரயி
[ந்நꣳஶத் ।

ஸுஶக்திரின்மக⁴வன் துப்⁴யம் மாவதே தே³ஷ்ணம் யத்பார்ய்யே தி³வி ॥

அந்வயம்.

द्रविणोदेषु, दुष्टुतिः, न शस्यते, स्रेधन्तं, रयिः, न नशत्, मघवन्!, पार्ये दिवि, मावते, देष्णं, यत्, तुभ्यं, सुशक्तिरित् ॥

பதவுரை.

द्रविणोदेषु	த்³ரவிணோதே³ஷு	தனங் கொடுப்பவர்களிடத்து,
दुष्टुतिः	து³ஷ்டு²திः	தகுதியற்ற துதி
न शस्यते	ந ஶஸ்யதே	சொல்லக்கூடாததாம்.
स्रेधन्तं	ஸ்ரேத⁴ந்தம்	தனங்கொடுப்பவரைப் போற்றுதவர்களுக்கு
रयिः	ரயிः	தனமும்
न नशत्	ந நꣳஶத்	கிடைக்காது.
मघवन्!	மக⁴வன்!	தனமுடைய இந்திர!
पार्ये दिवि	பார்ய்யே தி³வி	சோமத்தைச் சமஸ்காரம் பண்ணும் நாளில்

मावते	ஊவதெ	{எனைப் போன்ற துதியாளர் களுக்குக்
देष्णं	தெஷ்ணம்	கொடுக்கத்தக்க
यत्	யத்	யாதொரு தனமுண்டோ, அதை
तुभ्यं	துப்⁻யம்	நின்னிடத்திலிருந்து
सुशक्तिरित्	ஸு⁻ஶக்திரித்	{அழகிய துதிசெய்வோர் அடை கின்றனர்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

தனங்கொடுக்கின்றவர்களிடத்து, கலமலாத தோத்திரம் சொல்லத்தகாததாம், மற்றும், தனங் கொடுப்போர்களுக்குத் துதி முதலியவற்றைச் செய்யாதவர்களுக்குத் தனத்தைக் கொடுக்கார்கள். தனமுடைய இந்திர! சோமாசம் சம்ஸ்காரஞ் செய்கின்ற தினத்தில், என்னைப் போன்றோர்க்குக் கொடுக்கத்தக்க யாதொரு தனமுண்டோ, அதை, உன்னிடத்தினின்று, அழகிய தோத்திரஞ்செய்கின்றவனே யடைகின்றான். ஈண்டு அடைகின்றான் என்பது எஞ்சி நின்றது என்பதாம். (2)

நான்காவது கண்டம்

முற்றும்.

ஐந்தாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—2. அத்தியாயம்—4. கண்டம்—5.

ஒன்பது மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३२ऊ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
869. तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः ।
१ २३ १ २
हरिरेति कनिक्रदत् ॥ १ ॥

திஸ்ரோ வாவ உதீரதெ காவோ மிமந்தி தெனவஃ ।
ஹரிரெதி கநிக்ரதத் ॥

அன்வயம்.

तिस्रः वाचः, उदीरते, धेनवः, गावः, मिमन्ति, हरिः, कनिक्रदत्, एति ॥

பதவுரை.

तिस्रः वाचः	திஸ்ரஃ வாசஃ	இருக்கு, எசுர், சாமம், என்னும் மூன்று வாக்குகளையும்
उदीरते	உதீரதெ	வேட்போர்கள் ஓதுகின்றார்கள்.
धेनवः	தெநவஃ	பாலினைப் களிப்புண்டாக்குகின்ற
गावः	காவஃ	பசுக்கள் (பால் கறப்பதற்குக்)
मिमन्ति	மிமந்தி	கத்துகின்றதைப் போன்று,
हरिः	ஹரிஃ	பசுமை நிறமுடைய சோமம்,
कनिक्रदत्	கநிக்ரதத்	ஒலித்துக் கொண்டு
एति	ஏதி	துரோண கலசத்தை யடைகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1.

இருக்கு முதலிய பேதத்தால் மூன்றுகிய வாக்குகளை வேட்போர்கள் ஓதுகின்றார்கள். (அன்றியும்) பால் முதலியவைகளாற் பிரியத்தைக் கொடுக்கின்ற பசுக்கள், பால் கறத்தற் பொருட்டுக் கதறுகின்றன போன்று, பசுமை நிறமுடைய சோமமும் ஒலித்துக் கொண்டு துரோண கலசத்தை யடைகின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

३ १ २१ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

870. **अभि ब्रह्वीरनूषत यह्वीर्ऋतस्य मातरः ।**

३ १ २ ३ १ २१

*** मर्जयन्तीर्दिवः शिशुम् ॥ २ ॥**

அபி ப்ரஹ்வீரநூஷத யஹ்வீர்ருதஸ்ய மாதரஃ ।
மர்ஜயந்தீர்திவஃ சிசும் ॥

அந்வயம்.

ब्रह्वीः, यह्वीः, ऋतस्य, मातरः, दिवः, शिशुं, मर्जयन्तीः, अभ्यनूषत ॥

---

* मर्मृज्यन्ते, என்பது இருக்கு.

பதவுரை.

ब्रह्मीः	ப்ரஹ்மீஃ	அந்தணர்களால் ஏவப்பட்டவைகளும்,
यह्वीः	யஹ்வீஃ	பெரியவைகளும்,
ऋतस्य	ரிதஸ்ய	வேள்வியை
मातरः	மாதரஃ	உண்டாக்குகின்றவைகளுமான துதிகள்
दिवः	திவஃ	வானுலகிற்றோன்றிய
शिशुं	ஶிஶும்	குழந்தையாகிய சோமத்தைப்
मर्जयन्तीः	மர்ஜயந்தீஃ	பவித்திரஞ் செய்வனவாய்ப்
अभ्यनूषत	அப்⁴யனூஷத	புகழ்கின்றன.

சாயண் பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

அந்தணர்களாற் செலுத்தப்பட்டவைகளும், மகத்துக்களும், வேள்விகட்கு மாதாக்களுமான தோத்திரங்கள், வானுலகினுற்பத்தி குழந்தையெனப்படுஞ் சோமத்தைப் பவித்திரம் பண்ணுகின்றனவாய்த் தோத்திரஞ் செய்கின்றன. (புகழ்கின்றன.) "மூன்றுவதற்கு அளக்கமுடியாத வானில் சோமம் இருக்கின்றது" என்னுஞ் சுருதியால், சோமத்திற்குக் குழந்தையாந் தன்மை பொருந்துமாறறிக. ஈண்டு, மூலத்திலுள்ள 'யஹ்வஃ' என்பது மகத்து, எனப் பொருள் படுகின்றது. நிகண்டின் 3-2-13-ம் சூத்திரமும் அவ்வாறே கூறுகின்றதென்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

३१ २ ३ २ ३ २ ३ १२ ३ २१
871. रायः समुद्राँश्चतुरोऽस्मभ्यँ सोम विश्वतः ।
१२ ३ १ २
आ पवस्व सहस्रिणः ॥ ३—१४ ॥

இருக்கு 9-33-4-6.

ராயஃ ஸமுத்³ராꣳஶ்சதுரோঽஸ்மப்⁴யꣳ ஸோம விஶ்வதஃ ।
ஆ பவஸ்வ ஸஹஸ்ரிணஃ ॥

அன்வயம்.

सोम !, रायः, चतुरः समुद्रान्, अस्मभ्यं, विश्वतः, आपवस्व, सहस्रिणः ॥

பதவுரை.

सोम !	ஸொம !	சோமமே ! நீ,
रायः	ராயः	தனமுள்ள
चतुरः समुद्रान्	அதுரஃ ஸமுத்ராந்	நான்கு கடல்களையும்
अस्मभ्यं	அஸ்மப்⁴யம்	எங்கட்கு
विश्वतः	விஶ்வதஃ	எல்லாவகையானுங்
आपवस्व	ஆபவஸ்வ	கொடுப்பாயாக.
सहस्रिणः	ஸஹஸ்ரிணஃ	ஆயிரக் கணக்கான விருப்பங்களை (சம்பத்தை)யுங் கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்,

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

தனசம்பந்தமுடையன நான்கு கடல்களுமாம், அதாவது வயிரங்கள், முத்துக்கள் முதலிய எல்லாத் தனங்களையு முடையனவென்பது பொருள். அவ் வியல்பிற்றாய கடல்களை எங்கட்கு, சோமமே ! நீ, தனத்தின் பொருட்டு எல்லாவகையானுங் கொடுப்பாயாக. அவ்வாறே, எல்லாபற்ற விருப்பங்களையு (சம்பத்துக்களையு) ந் தருவாயாக. கடலிலுள்ள நிதிகள், கடல்களுக்கு நடுவிலுள்ள தரையையாளுந்தன்மைபின்றெனிற் பொருந்தாதாதலின் கடல்சூழ்ந்த பூமண்டலத்திற்கு வேந்தனுந்தன்மையை வேள்வித்தலைவன் விருப்புற்றனன் என்பது பொருள். (3)

மந்திரம் 4.

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

872. सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

पवित्रवन्तो अक्षरन् देवान् गच्छन्तु वो मदाः ॥ १ ॥

ஸுதாஸொ மது⁴மத்தமாஃ ஸொமா இந்த்³ராய மந்தி³நஃ ।

வவித்ரவந்தொ அக்ஷரந் தே³வாந் க³ச்ச²ந்து வொ மதா³ஃ ॥

அந்வயம்.

मधुमत्तमाः, मन्दिनः, सुतासः, पवित्रवन्तः, इन्द्राय, अक्षरन्, सोमाः, वः, मदाः, देवान्, गच्छन्तु ॥

பதவுரை.

मधुमत्तमाः	மதுமத்தமாஃ	மிகுந்த சுவையுள்ளதும்
मन्दिनः	மந்திநஃ	களிப்பைக் கொடுப்பதும்
सुतासः	ஸுதாஸஃ	சமற்காரம் பண்ணப்பட்டதும்
पवित्रवन्तः	பவித்ரவந்தஃ	தசா பவித்திரமாகிய ஆடை நுனியிலுள்ளதுமாகி
इन्द्राय	இந்த்ராய	இந்திரன் பொருட்டு
अक्षरन्	அக்ஷரந்	(துளித் துளியாய் விழுந்து) பாத்திரத்தை யடைகின்றது.
सोमाः!	ஸொமாஃ!	சோமமே!
वः	வஃ	உனது
मदाः	மதாஃ	களிப்பைக் கொடுக்கின்ற ரசம்,
देवान्	தெவாந்	இந்திரன் முதலிய தேவர்களை
गच्छन्तु	கச்ஹந்து	அடைவதாகுக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில்—1.

சிறந்த மதுரத் தன்மையை யுடையதும், இதனானே களிப்பைக் கொடுப்பதும், மற்றும், சமற்காரத்துடன் பிழியப்பட்டதுமாகிய சோம ரசம், தசா பவித்திரமென்னும் ஆடைநுனியில் இருப்பதாய் இந்திரன் பொருட்டுப் பாத்திரத்தை யடைகின்றது. இனி பிரத்தியட்சமாகிய துதி, சோமமே! களிப்பிற்குக் காரணமாகிய உனது இரசம் இந்திரன் முதலிய தேவர்களை யடைவதாகுக என்பதாம். (வடமொழியிலுள்ள பன்மை தென்மொழியைத் தழுவி ஒருமையாயிற்று.) (1)

மந்திரம் 5.

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
873. इन्दुरिन्द्राय पवत इति देवासो अब्रुवन् ।
३१ २र ३ २ ३ १ २३ १ २
वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्ये * शान ओजसः ॥ २ ॥

இந்துரிந்த்ராய பவத இதி தெவாஸொ அப்ருவந் ।
வாசஸ்பதிர்மகஸ்யதெ விஶ்வஸ்யெஶாந ஒஜஸஃ ॥

அந்வயம்.

इन्दुः, इन्द्राय, पवते, इति, देवासः, अब्रुवन्, वाचः, पतिः, ओजसः, विश्वस्य, ईशानः, मखस्यते ॥

[1] ईशान ओजसा, என்பது இருக்கு.

பதவுரை.

इन्दुः	ஈந்துஃ	சோமரசமானது
इन्द्राय	ஈந்த்ராய	இந்திரன் பொருட்டுக்
पवते	வவதெ	கலசத்திற் செல்கின்றது.
इति	ஈதி	எனத்
देवासः	தெவாஸஃ	துதிக்கின்றவர்கள்
अब्रुवन्	அப்ருவந்	சொல்கின்றார்கள்.
वाचः	வாசஃ	தோத்திரத்தைப்
पतिः	பதிஃ	பாதுகாப்பதும்
ओजसः	ஒஜஸஃ	ஆற்றலுடையதும்
विश्वस्य	விஸ்வஸ்ய	உலகிற்கு
ईशानः	ஈஶாநஃ	இறையுமாகிய சோமரசம்
मखस्यते	மகஸ்யதெ	தோத்திரத்தாற் பூசை செய்ய வேண்டுமென விரும்புகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

சோமமானது, இந்திரன் பொருட்டுக் கலசத்தில் ஒழுகுகின்ற தெனத், துதிப்போர்கள் கூறுகின்றார்கள். துதிப்போர்கள் எப்போது இவ்வண்ணங் கூறுகின்றார்களோ, அப்போது தோத்திரத்தைப் பாதுகாக்கின்றது. அல்லது, சத்தத்திற்குத் தலைமையாகின்றது, அதாவது பேரொலி செய்கின்றது என்பது பொருள். அத்தன்மைய சோமரசம், தோத்திரங்களால் தனக்குப் பூசை செய்யவேண்டுமென விரும்புகின்றது. எத்தன்மைய சோமரசமெனின்? ஆற்றலுடையதும், உலகனைத்திற்கும் இறையாயுள்ளதும் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

३१२ ३१२३२
874. सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीङ्खयः ।
२३१२ ३१ २२ ३१२
सोमस्पती रयीणाꣳ सखेन्द्रस्य दिवेदिवे ॥ ३–१५ ॥

இருக்கு 9-104-4-6.

सहस्रधाराः पवते समुद्रो वाचमीङ्खयः ।
सोमस्पती रयीणाꣳ सखेन्द्राय दिवेदिवे ॥

அன்வயம்.

समुद्रः, वाचं ईङ्खयः, रयीणां, पतिः, दिवे दिवे, इन्द्रस्य, सखा, सहस्रधारः, सोमः, पवते ॥

பதவுரை.

समुद्रः	ஸமுத்ரஃ	சுவைமலிந்த
वाचं ईङ्खयः	வாசமம் ஈங்கயஃ	துதிகளை யேவுவதும்,
रयीणां	ரயீணாம்	தனங்களுக்குத்
पतिः	பதிஃ	தலைமையையும்
दिवे दिवे	திவெ திவெ	ஒவ்வொருநாளும்
इन्द्रस्य	இந்த்ரஸ்ய	இந்திரனுடைய
सखा	ஸகா	நட்பையும்,
सहस्रधारः	ஸஹஸ்ரதாராஃ	ஆயிரக்கணக்கான தாரைகளையு முடையதாகிய
सोमः	ஸோமஃ	சோமரசம்,
पवते	பவதே	கலசத்தில் ஒழுகுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

எண்ணிறந்த தாரைகளோடுகூடிய சோமரசம் ஒழுகுகின்றது. எவ்வண்ணமாகிய தெனின்? மிகுந்த சுவையாகிய துதிகளைச் செலுத்துவதும், தனங்களுக்குத் தலைமையும், அல்லது, அவிகொடுக்கின்ற வேள்வித் தலைவர்களைப் பாதுகாப்பதும், நாடோறும் இந்திரனுக்கு நட்பானதுமாமென்க இத்தன்மைய சோமரசம் பாத்திரத்தில் ஒழுகுகின்றதெனக் கூட்டுக. (3)

மந்திரம் 7.

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

875. पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः ।

१ २ ३ २ र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ र ३ १ २ र

अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तः सं तदाशत ॥ १ ॥

பவித்ரம் தெ விததம் ப்ரஹ்மணஸ்பதெ ப்ரபுர்காத்ராணி பர்யேஷி விஶ்வதஃ ।

அதப்ததநூர்ந ததாமோ அஶ்நுதெ ஶ்ருதாஸ இத்வஹந்தஃ ஸம் ததாஶத ॥

அந்வயம்.

ब्रह्मणस्पते!, ते पवित्रं, विततं, प्रभुः, गात्राणि, पर्येषि, विश्वतः, तत्, अतप्ततनूः, आमः, न अश्नुते, वहन्तः, श्रुतासः इत्, तत्, समाशत ॥

பதவுரை.

ब्रह्मणस्पते!	ப்ரஹ்மணஸ்பதே!	மந்திரங்களுக்கு இறைவனுகிய சோமமே!
ते पवित्रं	தே பவித்ரம்	சோதனை செய்கின்ற உனது அம்சங்கள். (சத்திகள்)
विततं	விததம்	எங்கும் பரவியிருக்கின்றன.
प्रभुः	ப்ரபூஃ	(மற்றும்) வல்லுனுகிய நீ
गात्राणि	காத்ராணி	அருந்துபவர்களின் அங்கங்களை
पर्येषि	பரியேஷி	அடைகின்றுய்.
विश्वतः	விஸ்வதஃ	எல்லாவகையானும்
तत्	தத்	அவ்வம்சம்
अतप्ततनूः	அதப்ததநூஃ	பயோவிரத முதலியவைகளால் வாடாதவுடம்பை,
आमः	ஆமஃ	பரிபக்குவமின்றி
न अश्नुते	ந அஸ்நுதே	வியாபிக்கின்றதில்லை.
वहन्तः	வஹந்தஃ	வேள்வியைத் தாங்கிக்கொண்டு
श्रुतासः इत्	ஸ்ருதாஸஃ இத்	பரிபக்குவமாகியே
तत्	தத்	தபோபவித்திர மென்னும் அந்த ஆடைதனியை
समाशत	ஸமாஸத	இனிது அடைகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—மூன்றுவது மூன்றில்—1.

மந்திரத்திற்கு இறைவனுகிய சோமமே! சோதகமாகிய உனது அங்கம் (அம்சம்) எங்கும் பரவுகின்றது. தலைமையாகிய அத்தகைய நீ, அருந்துவோர்களின் அங்கங்களை யடைகின்றுய், எல்லாவகையானும் உன்னுடைய அப் பவித்திராம்சம், பயோ விரத முதலியவைகளால் தாபமடையாத அங்கத்தைப், பரிபக்குவமின்றியதால் வியாபிக்கின்றதில்லை. ஒழுகுகின்றதும் வேள்வியைத் தாங்குகின்றதுமாகிய சோமரசம் பரிபக்குவமாகியே வியாபிக்கின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३१ २ ३ १ २ ३उ २र
876. तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदेऽर्चन्तो अस्य तन्तवो व्यथिरन् ।
१ २ ३ १२ ३१ २ ३ २ ३१ २र ३ १ २
अवन्त्यस्य पवितारमाशवो दिवः पृष्ठमधिरोहन्ति तेजसा ॥ २ ॥

தவொஷ்பவித்ரம் விததம் திவஸ்பதெ஽ர்ச்சந்தோ அஸ்ய தந்தவொ
[வ்யதிரந் ।
அவந்த்யஸ்ய பவிதாரமாசவொ திவஃ பூஷ்ணமதிரொஹந்தி
[தெஜஸா ॥

அந்வயம்.

तपोः, पवित्रं, दिवस्पदे, विततं, अस्य, तन्तवः, अर्चन्तः, व्यथिरन्, अस्य, आशवः, पवितारं, अवन्ति, दिवः, पृष्ठं, तेजसा, अधिरोहन्ति ॥

பதவுரை.

तपोः	தவொஃ	சத்துருக்களைத் தாபமடையச் செய்கின்றதும்
पवित्रं	பவித்ரம்	சோதனை செய்கின்றது மாகிய சோமத்தினுடைய அம்சம்
दिवस्पदे	திவஸ்பதெ	வானுலகின் மேற்
विततं	விததம்	பரவுகின்றது.
अस्य	அஸ்ய	இதனுடைய
तन्तवः	தந்தவஃ	கிரணங்கள்
अर्चन्तः	அர்ச்சந்தஃ	விளங்குவனவாய்ப்
व्यथिरन्	வ்யதிரந்	பலவகையா யிருக்கின்றன.
अस्य	அஸ்ய	இச் சோமத்தின்
आशवः	ஆசவஃ	விரைவிற் செல்லும் இரசம்
पवितारं	பவிதாரம்	சமற்காரம் பண்ணப்பெற்ற வேள்வித் தலைவனைப்
अवन्ति	அவந்தி	பாதுகாக்கின்றது.
दिवः	திவஃ	வானுலகின்
पृष्ठं	பூஷ்ணம்	இடத்தைக் குறித்து
तेजसा	தெஜஸா	தனது ஒளியுடன்
अधिरोहन्ति	அதிரொஹந்தி	மேலே செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

சத்துருக்களைத் தபிக்கச் செய்கின்றதும், சோதனை செய்கின்றதுமாகிய சோமத்தின் அங்கம், (அம்சம்), உயர்ந்த வானிடத்தில் விரிகின்றது. "மூன்றுவதின் எல்லையற்றதின் வானில் சோமம் இருந்தது" என்று கூறுகின்றது மறையும். இதனுடைய கிரணங்கள், பிரகாசிப்பனவாகிப் பல வகையாயிருக்கின்றன. பூமியில், அல்லது, அவிகொடுக்குமிடத்தில், விரைவிற் செல்கின்ற இச் சோமத்தின் ரசம் சமற்காரம் பண்ணுகின்ற வேள்வித் தலைவனைப் பாதுகாப்பாற்றுகின்றது. ஓமஞ்செய்யும் வாயிலாக மேல்வரும், வானுலகின் உயர்ந்த இடத்தைப்பற்றிச் சுயம் பிரகாசத்துடன் மேற்செல்கின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 9.

·१२ ३२३ ११ २३ ३१ २ ३ १२ ३२

877. अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा मिमेति भुवनेषु वाजयुः ।

३ १ २ ३१२ ३१२ ३२३ २३१२

मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमादधुः ॥

இருக்கு 9-83-1-3.

அரூருசதுஷஸ: ப்ருஷ்நிரக்ரிய உக்ஷா மிமேதி புவனேஷு

[வாஜயுஃ ।

மாயாவினோ மமிரே அஸ்ய மாயயா நூசக்ஷஸ: பிதரோ

[கர்பமாததுஃ ॥

அந்வயம்.

उषसः, पृश्निः, अग्रियः, अरूरुचत्, उक्षा, भुवनेषु, मिमेति, वाजयुः, मायाविनः, अस्य, मायया, ममिरे, अस्य, नृचक्षसः, पितरः, गर्भं, आदधुः ॥

பதவுரை.

उषसः	உஷஸ:	உஷாக் காலத்திலுள்ள
पृश्निः	ப்ருஷ்நி:	சூரியன்,
अग्रियः	அக்ரிய:	சிறந்த வடிவனுய்ப்
अरूरुचत्	அரூருசத்	பிரகாசிக்கின்றன்.
उक्षा	உக்ஷா	மழையைப் பெய்விக்கின்றவனுகிய அவன்
भुवनेषु	புவனேஷு	எல்லா வுலகங்களிலும்

मिमेति	மிமெதி	நீரைப் பொழிவிக்கின்றன.
वाजयुः	வாஜயுஃ	உலகனைத்திற்கும் அன்னத்தை விரும்புகின்றவைகளும்
मायाविनः	மாயாவிநஃ	உண்டாக்கு மாற்றலை யுடையவை களுமான தேவதைகள்,
अस्य	அஸ்ய	இச் சோமத்தின்
मायया	மாயயா	வலியால்
ममिरे	மமிரே	தனது தொழில் கொண்டு உல கைப் படைக்கின்றன. அவ் வாறே,
अस्य	அஸ்ய	இச் சோமத்தின் ஆற்றலால்
नृचक्षसः	நிருசக்ஷஸஃ	மக்களைப் பார்க்கின்றவைகளும்,
पितरः	பிதரஃ	பாதுகாக்கின்றவை களுமான, 'பிதா' என்னுந் தேவதைகள், பச்சிலைகளை,
गर्भं	கர்ப்பம்	கருப்பத்தைத்
आदधुः	ஆதது:	தாங்குமாறு செய்கின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

உஷாக்கால சம்பந்தமுடைய இரவி "பிருஸ்நி என்றது இரவி" எனக் கூறுகின்றது நிருத்தம். முக்கியமாகிய அவ் விரவி, இனிது விளங்குகின்றது. அது நீரைப் பொழிவிக்கின்றது, எல்லாப் பூதங்களுக்கும் நீரை வார்க்கின்ற தென்பதுபொருள். அவைகளுக்கு அன்னத்தை விரும்பின, மாயை யென்னும் நுண்ணறிவையுடைய தேவதைகள், இச் சோமத்தின் தெள்ளிய மதியால் (உலகைப்) படைக்கின்றன. சோமத்தின் ஒருசிறிது கூறை யருந்தியதால் ஆற்றலுடைய அக்கினி முதலியவைகள் தமது தொழிலால் உலகைப் படைக்கின்றன என்பது பொருள். அவ்வாறே, இதனுடைய மாயையால் மக்களைப் பார்க்கின்ற பிதாக்கள், (பாலன தேவ தைகள்) அல்லது, ஆங்கிரசர்கள், பச்சிலைகளிலும் கருப்பத்தைத் தரிக்கச் செய்கின்றார்கள். ஈண்டுச் சோமரசம் சூரியனைத் துதிக்கப்படுகின்றது. சூரிய கிரணங்களிற் றொடர்ந்திருத்தலினும், புத்தியை விருத்தி செய்வ தனனும், இந்திரனுடைய இவ் வுஷாக்காலத்திலுள்ள ஆதித்தன் விளங்கு கின்றான், அல்லது, விளக்குகின்றான். பொதுவாக எஞ்சிய அனைத்தை யும், அதன் சம்பந்தமான மக்களையும் பார்க்கின்ற உலகத்தைப் பரிபாலிக் கின்ற கிரணங்கள், மழையின் பொருட்டுக் கருப்பத்தைத் தாங்குகின்றன என்பதாம். (3)

ஐந்தாவது கண்டம்

முற்றும்.

ஆறாவது கண்டம்

பிரபாடகம்—2. அத்தியாயம்—4. கண்டம்—6.

எட்டு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१ २र ३ २ २ ३ २ ३ १ २
878. प्र मꣳहिष्ठाय गायत ऋताब्ने बृहते शुक्रशोचिषे ।
३ १ २ ३१२
उपस्तुतासो अग्नये ॥ १ ॥

ப்ர மம்ஹிஷ்டாய காயத ஜீதாப்நே ப்ருஹதே ஶுக்ரஶோசிஷே ।
உபஸ்துதாஸோ அக்நயே ॥

அந்வயம்.

हे उपस्तुतासः !, मंहिष्ठाय, ऋताब्ने, बृहते, शुक्रशोचिषे, अग्नये, प्रगायत ॥

பதவுரை.

हे उपस्तुतासः !	ஹே உபஸ்துதாஸஃ !	உறுதியாய்த் துதிப்பவர்காள் ! நீவிர்,
मंहिष्ठाय	மம்ஹிஷ்டாய	மிகக் கொடுப்பவனும்
ऋताब्ने	ஜீதாப்நே	வேள்வியை யுடையவனும்
बृहते	ப்ருஹதே	பெரியோனும்
शुक्रशोचिषे	ஶுக்ரஶோசிஷே	பேரொளியையுடையோனுமாகிய
अग्नये	அக்நயே	அக்கினிதேவன் பொருட்டு
प्रगायत	ப்ரகாயத	இனிது தோத்திரஞ் செய்வீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—முதற்சூக்தமாகிய பெருங்கீதத்தில்—1.

நிலையாய்த் துதிக்கின்றவர்களே ! நீங்கள், எல்லையற்றுக் கொடுப்பதும், வேள்வியை யுடையதும், அல்லது, சத்தியத்தை யுடையதும், பெரும் பிரகாசத்தை யுடையதுமாகிய அக்கினியின் பொருட்டுத் துதி செய்வீர்களாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१ २ ३१२ ३२३२ ३ १२ ३ १२
879. आ वꣳसते मघवा वीरवद्यशः समिद्धो द्युम्न्याहुतः ।
३ १ २ ३ १ २र३ २ ३ १ २ ३ १२
कुविन्नो अस्य सुमतिर्भवीयस्यच्छा वाजेभिरागमत् ॥ २-१७ ॥

இருக்கு 8-173-8-9.

ஆ வம்ஸதெ ம஘வா வீரவத்யஶஃ ஸமிஜ்ஜோ த்யும்ந்யாஹுதஃ ।
கு விந்நோ அஸ்ய ஸுமதிர்ப்பவீயஸ்யச்ஹா வாஜெபிராகமத் ॥

அந்வயம்.

मघवा, द्युम्नी, समिद्धः, आहुतः, वीरवत्, यशः, आवंसते, अस्य, भवीयसी, सुमतिः, नः अच्छ, वाजेभिः, कुवित्, आगमत् ॥

பதவுரை.

मघवा	ம஘வா	தனமுடையதும்
द्युम्नी	த்யும்ந்ய	அன்னமுடையதும், அல்லது, புகழுடையதும்,
समिद्धः	ஸமிஜ்ஜஃ	பெருஞ் சோதியுடையதும்
आहुतः	ஆஹுதஃ	ஒருமையுடன் ஓமஞ் செய்யப் பெற்றதுமாகிய அக்கினி,
वीरवत्	வீரவத்	புத்திரனுடன்
यशः	யஶஃ	புகழையுங் கொடுக்கின்ற அன்னத்தை
आवंसते	ஆவம்ஸதெ	வேள்வித் தலைவனுக்குக் கொடுக்கின்றது.
अस्य	அஸ்ய	இவ் வக்கினிக்கு,
भवीयसी	஭வீயஸீ	எங்களிடத் துண்டாகத்தக்க
सुमतिः	ஸுமதிஃ	அநுக்கிரக புத்தியானது,
नः अच्छ	நஃ அச்ஹ	எங்கணிமித்தமாய்
वाजेभिः	வாஜெபிஃ	அன்னங்களுடன்
कुवित्	கு வித்	பலமுறை
आगमत्	ஆகமத்	வருவதாகுக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

தனமுடையதும், அன்னமுடையதும், அல்லது, புகழுடையதும், ஈண்டு, "த்யும்நம்" என்றது "விளங்குகின்ற புகழ், அல்லது அன்னம்" என நிகண்டு கூறுகின்றது. ஓமத்தால் இனிது ளெர்ந்த பெருஞ்சோதி

யையுடையதுமாகிய அக்கினி, புதல்வனுடன் புகழையுங் கொடுக்கின்ற அன்னத்தை, வேள்வித் தலைவர்களுக்குக் கொடுக்கின்றது. இவ்வக்கினிக்கு எங்களிடத்து இனிது உண்டாகத்தக்க நல்ல அறுக்கிற புத்தியானது எங்கள் நிமித்தமாய் அன்னங்களுடன் பலமுறை யுண்டாவதாகுக. ஈண்டு, "குவித் அநேகத்தின் பெயர்" என்று கூறுகின்றது நிகண்டு. ஆதலின் பலமுறை யெனப் பொருள் கொள்ளப்பட்டது. (2)

மந்திரம் 3.

२ ३ १२ ३ १२ ३ १ २३ २
880. तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृक्षु सासहिम् ।
३ १२ ३ १ २
उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम् ॥ १ ॥

தம் தெ மதம் ஹ்ருணீமஸி வ்ருஷணம் வ்ருக்ஷு ஸாஸஹிம் ।
உ லொகக்ருத்நுமத்ரிவொ ஹரிஶ்ரியம் ॥

அந்வயம்.

அத்ரிவः !, वृषणं, पृक्षु, सासहिं, लोककृत्नुं, उ, हरिश्रियं, ते तं मदं, गृणीमसि ॥

பதவுரை.

अद्रिवः !	அத்ரிவः !	வச்சிரத்தைதாங்கிய இந்திரனே!
वृषणं	வ்ருஷணம்	மனவிருப்பை நிறைவிக்கின்றதும்
पृक्षु	வ்ருக்ஷு	உயுத்தங்களில்
सासहिं	ஸாஸஹிம்	பகைவரை யடக்குகின்றதும்,
लोककृत्नुं	லொகக்ருத்நும்	உலகத்திற்கு இறையும்,
उ	உ	மற்றும்,
हरिश्रियं	ஹரிஶ்ரியம்	அரியென்னும் குதிரையால் வழிபடத்தக்கதும்
ते तं मदं	தெ தம் மதம்	சோமரசத்தாலுண்டாகியதுமாகிய உனது அக்களிப்பைப்
गृणीमसि	ஹ்ருணீமஸி	போற்றுகின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில்—1. கோவுக்தர், அல்லது, அசுவ சூக்தர் ரிஷி.

வச்சிராயுதத்தைத் தாங்கிய இந்திரனே! சோமரச மருந்தியதாலுண்டாகிய உனது களிப்பைப் போற்றுகின்றோம். எவ்விதமாகிய களிப்பை

யெனின்? விரும்பியவற்றை நிறையக் கொடுப்பதும், போர்களிற் சத்துருக்களை யடக்குவதும், உலகிற் கிறையும், அரியென்னும் அசுவங்களாற் சேவிக்கத் தக்கதுமாகியதைப், போற்றுகின்றேம் என்பதுடன் கூட்டுக. உகாரம் அசைச்சொல்.

மந்திரம் 4.

२३ १ २ ३२३१ २ ३१२
881. येन ज्योतीꣳष्यायवे मनवे च विवेदिथ ।
३ २३ २ ३२ ३ १ २
मन्दानो अस्य बर्हिषो विराजसि ॥ २ ॥

யெந ஜ்யோதீꣳஷ்யாயவெ மநவெ ச விவெதிꣳ ।
மந்தாநோ அஸ்ய பர்ஹிஷோ விராஜஸி ॥

அந்வயம்.

(हे इन्द्र!,) येन, आयवे, मनवे च, ज्योतींषि, विवेदिथ, मन्दानः, अस्य बर्हिषः, विराजसि ॥

பதவுரை.

(हे इन्द्र!)	(ஹெ இந்த்ர!)	(இந்திரனே!)
येन	யெந	எந்த மதத்தால்
आयवे	ஆயவெ	ஔருவசி என்னும் மநுவிற்கும்
मनवे च	மநவெ அ	வைவசுவதமநுவின் பொருட்டும்
ज्योतींषि	ஜ்யோதீꣳஷி	{இரவி முதலிய ஒளிகளின் தத்துவத்தை
विवेदिथ	விவெதிꣳ	விளக்குவித்தனையோ,
मन्दानः	மந்தாநஃ	அம்மதத்தாற் களிப்படைந்த நீ,
अस्य बर्हिषः	அஸ்ய பர்ஹிஷஃ	{இவ்வேள்வியில், அல்லது, இதனாற் பேரானந்தமடைந்து
विराजसि	விராஜஸி	அழகுடன் விளங்குகின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

இந்திரனே! தனது களிப்பா (மதத்தா) ல் ஔருவசியென்னும் மநுவிற்கும், வைவசுவத மநுவின்பொருட்டும், விருத்திரன் முதலியோர்களால் மறைக்கப்பட்டிருந்த பேரொளிகளைக் கொடுத்து (அதனுண்மையை) அவர்களுக்கு அறிவுறுத்தினையோ, (விளக்குவித்தனையோ,) அத்தகைய மத

(மாந்த)த்தாற் களிப்படைந்த நீ, வளர்க்கின்ற இவ்வேள்வியில் நன்கு விளங்குகின்றாய். அல்லது, அஸ்ய, என்னும் ஆறாம் வேற்றுமைக்கு மூன்றாம் வேற்றுமைப் பொருளெனக்கொண்டு, கரையற்றெழுந்த களிப்பால் அழகுடன் விளங்குகின்றாய் எனினுமொவ்வு மென்பதாம். (2)

மந்திரம் 5.

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
882. तदद्याचित्त उक्थिनोऽनुष्टुवन्ति पूर्वथा ।
१२ ३ १ २ ३ १ २
वृषपत्नीरपो जया दिवे दिवे ॥ ३–१८ ॥

இருக்கு 8-15-4-6.

தத்த்யாசித்த உக்஥ிநொ௨நுஷ்டுவந்தி பூர்வதா ।
வ்ருஷபத்நீரபோ ஜயா தி௰வெ தி௰வெ ॥

அந்வயம்.

(हे इन्द्र !,) ते, तत्, अद्याचित्, पूर्वथा, उक्थिनः, अनुष्टुवन्ति, वृषपत्नीः, अपः, दिवे दिवे, जय ॥

பதவுரை.

(हे इन्द्र !)	(ஹெ இந்த்ர !)	(இந்திரனே !)
ते	தெ	உன்னுடைய
तत्	தத்	புகழ்பெற்ற ஆற்றலை,
अद्याचित्	அத்யாசித்	இப்போது
पूर्वथा	பூர்வதா	முற்காலத்தைப் போன்று
उक्थिनः	உக்஥ிநஃ	மந்திர முணர்ந்தவர்கள்
अनुष्टुवन्ति	அநுஷ்டுவந்தி	முறையாய்ப்போற்றுகின்றார்கள். அத்தன்மைய நீ,
वृषपत्नीः	வ்ருஷபத்நீஃ	மேகத்தைத் தலைமையாகவுடைய
अपः	அபஃ	நீரை
दिवे दिवे	தி௰வெ தி௰வெ	நாடோறும்
जय	ஜய	வசப்படுத்துவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

இந்திரனே ! உனது பேராற்றலை, முற்காலத்திற் போற்றியதுபோன்று இப்போதும் துதிப்போர்கள் முறையாய்ப் புகழ்ந்து வருகின்றார்கள்.

அத்தன்மைய நீ, மேகத்தைத் தலைமையாய்க்கொண்ட நீரைத், தினந்தோறும் தனது வசஞ் செய்துக்கொள்வாயாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 6.

३ १ २र ३२उ ३ १ २ ३१ २
883. श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति ।
३ १२ १ १ २ ३१ २ ३ १ २
सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धिमहाꣳ असि ॥ १ ॥

ஶ்ரு॒தீ ஹவம் திரஶ்ச்யா இந்த்ர யஸ்த்வா ஸபர்யதி ।
ஸு॒வீர்யஸ்ய கொ॑மதோ ராயஸ்பூ॒ர்தி॒மஹாம் அஸி ॥

அந்வயம்.

यः, त्वा, सपर्यति, तिरश्च्याः, हवं, इन्द्र !, श्रुधि, सुवीर्यस्य, गोमतः, रायः, पूर्द्धि, महान्, असि ॥

பதவுரை.

यः	யः	யாவனொருவன்
त्वा	த்வா	உன்னை
सपर्यति	ஸபர்யதி	ஆராதிக்கின்றானோ,
तिरश्च्याः	திரஶ்ச்யாः	அத்தன்மைய 'திரச்சி' ரிஷியாகிய யான்
हवं	ஹவம்	அழைப்பதை
इन्द्र !	இந்த்ர !	இந்திரனே ! நீ
श्रुधि	ஶ்ரு॒தி	கேட்பாயாக.
सुवीर्यस्य	ஸு॒வீர்யஸ்ய	நற்புத்திரனுடனும்
गोमतः	கொ॑மதः	பசுக்கள் முதலியவைகளுடனும்
रायः	ராயः	தனத்தை
पूर्द्धि	பூ॒ர்தி॒	எங்களுக்கு நிறையக் கொடுப்பாயாக. ஏனெனில்? நீ,
महान्	மஹாந்	எல்லாரினும் பெரியோனாய்
असि	அஸி	இருக்கின்றாய். (ஆதலினென்க.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—மூன்றாவது மூன்றில்—1.

இந்திரனே ! யாவனொருவன் உன்னை அவிவாயிலாக ஆராதிக்கின்றானோ, அத்தன்மையனாகிய 'திரச்சிரிஷி' யென்னும் யான், அவிகளால்

அழைக்கின்றேன் அதைக் கேட்பாயாக. கேட்டு, இந்திரனே! நீ, சிறந்த வீரியத்துடன், அல்லது, அழகிய புதல்வனுடன், பசுக்கள் முதலியவற்றோடுங்கூடிய தனத்தை எங்களுக்கு நிறையக் கொடுப்பாயாக. (நினக்கு) இத்தன்மைய ஆற்றல் எவ்வாற்றாலெனின்? நீ, குணக்குன்றினையானும், சிறந்தவனுமாயிருக்கின்றாயாதலின், கொடுப்பா யென இயைத்துக் கொள்க. (1)

மந்திரம் 7.

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
884. यस्त इन्द्र नवीयसीं गिरं मन्द्रामजीजनत् ।
२ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
चिकित्विन्मनसं धियं प्रत्नामृतस्य पिप्युषीम् ॥ २ ॥

யஸ்த இந்த்ர நவீயஸீம் கிரம் மந்த்ராமஜீஜனத் ।
சிகித்விந்மனஸம் தியம் ப்ரத்நாம்ருதஸ்ய பிப்யுஷீம் ॥

அன்வயம்.

इन्द्र !, यः, नवीयसीं, मन्द्रां, गिरं, ते, अजीजनत्, प्रत्नां, ऋतस्य पिप्युषीं, चिकित्विन्मनसं, धियम् ॥

பதவுரை.

इन्द्र !	இந்த்ர !	இந்திரனே !
यः	யஃ	எவ் வேள்வித்தலைவன்
नवीयसीं	நவீயஸீம்	மீண்டும் மீண்டுஞ் செய்தலின், மிகப்புதியதும்
मन्द्रां	மந்த்ராம்	களிப்பைக் கொடுக்கத்தக்கது மாகிய
गिरं	கிரம்	தோத்திரமென்னும் வாக்கை,
ते	தெ	நின்பொருட்டு
अजीजनत्	அஜீஜனத்	இனிது சொல்கின்றனே, துதிக்கின்ற அவனுக்கு, நீ,
प्रत्नां	ப்ரத்நாம்	பழமையாகியதும்
ऋतस्य पिप्युषीं	஋தஸ்ய பிப்யுஷீம்	சத்தியத்தை வளர்ப்பதும்
चिकित्विन्मनसं	சிகித்விந்மனஸம்	இந்திரியத்தால் உணரத்தகாததைக் காட்டுவதுமாகிய
धियं	தியம்	புத்தியைக் கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

இந்திரனே! எவ் வேள்வித்தலைவன், அடிக்கடி செய்வதால் மிகப் புதிதாகியதும், களிப்பைத் தருவதுமாகிய வாக்கென்னுந் தோத்திரத்தை நினக்குச் செய்கின்றானோ, (அதாவது நின்னைத் துதிக்கின்றானோ,) அவனுக்கு, மிகப்பழமையானதும், சத்திய சம்பந்தமுடையதும், அல்லது, ஆறும் வேற்றுமை மூன்றும் வேற்றுமைப் பொருளில் நின்றதாதலின், சத்தியத்தால் வளர்கின்றதும், அனைவருடைய புத்தியைச் செலுத்துவதும், இந்திரியத்தா லறியப்படாததை யுணர்த்துவதுமாகிய புத்தியைக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 8.

१ २ ३ २उ ३ १ २३ १ २ ३२
885. तमु ष्टवाम यं गिर इन्द्रमुक्थ्यानि वावृधुः ।
३१ २ ३ २ ३ १ २
पुरूण्यस्य पौंस्या सिषासन्तो वनामहे ॥ ३–१९ ॥

இருக்கு 8-95-4-6.

தமு ஷ்டவாம யம் கிர இந்த்ரமுக்த்யாநி வாவ்ருதுஃ ।
பூரூண்யஸ்ய பௌம்ஸ்யா ஸிஷாஸந்தோ வநாமஹே ॥

அந்வயம்.

यं, गिरः, उक्थ्यानि, वावृधुः, तं उ, इन्द्रं स्तवामः, अस्य, पुरूणि, पौंस्या, सिषासन्तः, वनामहे ॥

பதவுரை.

यं	யம்	எவ்விந்திரனை,
गिरः	கிரஃ	எனது துதிகளும்
उक्थ्यानि	உக்த்யாநி	மந்திரங்களும்
वावृधुः	வாவ்ருதுஃ	விருத்தி செய்தனவோ,
तं उ	தம் உ	கூறிய இயல்பையுடைய அத்தன்மைய
इन्द्रं स्तवामः	இந்த்ரம் ஸ்தவாமஃ	இந்திரனையே துதிக்கின்றோம்.

अस्य	ஸ்ய	இதனுல் இவ்விந்திரனுடைய
पुरूणि	பூரூணி	பலவகையான
पौंस्या	பௌம்ஸ்யா	பராக்கிரமங்களை
सिषासन्तः	ஸிஷாஸந்தஃ	ஆராதிக்க விரும்பினவர்களாகி
वनामहे	வநாமஹை	(யாம்) வேண்டுகின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

எவ்விந்திரனை எங்களுடைய துதிகளும், சஸ்த்ர மந்திரங்களும், விருத்திபண்ணினவோ, இருடிகள் ஒவ்வொருவரும் அழைக்கின்ற முற்கூறிய இலக்கணமுடைய அவ்விந்திரனையே துதிக்கின்றோம். இதனுல் இவ்விந்திரனுடைய பராக்கிரமங்களை வழிபட விரும்பினவர்களாய் தோத்திரங்களால் வேண்டுகின்றோம் என்பதாம். (3)

ஆறுவது கண்டம்.

முற்றும்.

சாமவேத பாடியம்.

நான்காவது அத்தியாயமும்.

முற்றிற்று.

ஐந்தாவது அத்தியாயம்.

வித்தியாதீர்த்த மகேசுவர், வேதப் பொருளை விளக்குவதால் உள்ளத் தினிருளைப் போக்கிப் புருடார்த்தங்கள் நான்கையுங் கொடுப்பாராக.

மந்திரங்களின் இருடிகள்:—1. ஆகிருஷ்டமாஷார். 2, அமகீயர். 3, மேத்தியாதிதிர். 4, 12, பிருகன்மதிர். 5, பிருகு, வாருணி சமதக்கினி. 6, சுதய்பசர், ஆத்ரேயர். 7, கிருத் சமதர். 8, 21, கோதமோரா கூபணர் 9, 13, வசிஷ்டர். 10, திருச்யுதர். ஆகஸ்த்யர். 11, சப்தரிஷிகள். 14, இரேபர், காசியபர், 15, புருஹன்மா. 16, அசிதர், அல்லது, தேவலர், அல்லது, காசியபர். 17, முறையாய்ச் சத்தி, ருருச்சர். 18, அக்கினி. 19, பிரதர்த்தனை தேவோதாசி. 20, பிரயோகோ பார்க்கவர். அல்லது, அக்கினி.

தேவதைகள்:—1, 5. 10, 12, 16, 19, பவமான சோமன். 6, 20, அக்கினி. 7, மித்திரா வருணன். 8, 13, 15, 21, இந்திரன். 9, இந்திராக் கினி.

சந்தங்கள்:—1, 6, சகதி. 2, 5, 7, 10, 12, 16, 20, காயத்திரி. 11, முறையாய் பிருகதியும், சதோ பிருகதியும். 13. விராட். 14, அதிசகதி. 15, பிராகாதம். 17, முறையாய் ககுப்பும், சதோ பிருகதியும். 18, உஷ்ணிக். 19, திருஷ்டுப். 21, அநுஷ்டுப்.

சுவரங்கள்:—1, 6, 14, நிஷாதம். 2, 5, 7, 10, 12, 13, 20, ஷட்ஜம். 11, 13, 15, 17, மத்தியமம். 18, ரிஷபம். 19, தைவதம். 21, காந்தாரம்.

முதலாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—3. அத்தியாயம்—5. கண்டம்—1.

பன்னிரண்டு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

२ ३ १ २ ३१२ ३ १ २३ १२३ १२

886. प्र त आश्विनीः पवमान * धेनवो दिव्या असृग्रन् पयसा धरीमणि।

१ २२३ १२ ३१ ३ ३१ २ ३१२

† प्रान्तरिक्षात्स्थाविरीस्ते असृक्षत ये त्वा मृजन्त्यृषिषाण वेधसः ॥

* धीजूवो, † प्रान्त ऋषयः स्थादरीरसृक्षत, என்பன இருக்கு.

ஹ்ர த சூஷ்ணீ: வவஶாந யெநவொ திவ்யா சஹஸ்ரதாரு வயஸா
[யஸீஷணீ ।
ஹ்ராஜர்ஷிக்ஷா தாவிரீர்ஹ்ரு சஹஸ்ரக்ஷித யெ க்வா ஊஜஜ்ஞிரே
[ஷாண வெயஸ: ॥

அன்வயம்.

पवमान !, आश्विनीः, धेनवः, दिव्याः, ते, पयसा, धरीमणि, प्र असृग्रन्, ऋषिषाणः !, ये वेधसः, त्वा, सृजन्ति, ते, स्थाविरीः, अन्तरिक्षात्, प्र असृक्षत ॥

பதவுரை.

पवमान !	வவஶாந !	பவித்திரமாகிய சோமமே !
आश्विनीः	சூஷ்ணீ:	வியாப்தமானவைகளும்
धेनवः	யெநவ:	பிரியங் கொடுப்பவைகளும்
दिव्याः	திவ்யா:	அந்தரிட்சத்தில் விருத்தியாகின்றவைகளுமான
ते	தெ	உனது தாரைகள்
पयसा	வபஸா	பாலுடன் கலக்கப் பெற்றனவாகித்
धरीमणि	யஸீஷணி	துரோண கலசத்திற்
प्र असृग्रन्	ப்ர சஹஸ்ரதாரு	சேர்கின்றன.
ऋषिषाणः !	ஈஷிஷாண: !	இருடிகளாற் சேவிக்கத்தக்க சோமமே !
ये वेधसः	யெ வெயஸ:	எவ் வேட்போர்கள்
त्वा	க்வா	உன்னைச்
सृजन्ति	ஊஜஜ்ஞி	சுத்தஞ் செய்கின்றார்களோ,
ते	தெ	அவ் வேட்போர்கள்,
स्थाविरीः	ஸ்தாவிரீ:	(அத்) தாரைகளை
अन्तरिक्षात्	கந்தரிக்ஷாத்	அந்தரிட்சத்தினின்றும்
प्र असृक्षत	ப்ர சஹஸ்ரக்ஷித	பாத்திரத்திற் சேர்க்கின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—மூன்றனுள் முதல் சூக்தம்—1.

சோமமே ! வியாப்தமானவைகளும், அன்பைக் கொடுப்பவைகளும், ஆகாயத்திலிருந்து விழுகின்றவைகளுமான உனது துளிகளின் தாரைகள். பாலுடன் கூடியவைகளாய்த் துரோண கலசத்திற் செல்கின்றன. எவ்

வேட்போர்கள், இருடிகளாற் சேவிக்கப்பட்ட உண்மைப் பிழிந்தெடுக்கின்றார்களோ, அவ் வேட்போர்கள், துளிகளின் தாரைகளே ஆகாசத்தினின்றும் பாத்திரத்திற் சேர்க்கின்றார்கள் என்பதாம். (பாத்திரத்தில் விழுமாறு செய்கின்றார்கள் என்பது கருத்து.) (1)

மந்திரம் 2.

३ २ ३ १३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

887. उभयतः पवमानस्य रश्मयो ध्रुवस्य सतः परियन्ति केतवः ।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३

यदी पवित्रे अधिमृज्यते हरिः सत्ता नि योनौ कलशेषु सीदति ॥२॥

உஹயதஃ வவஹாநஸ்ய ரஶ்மயோ த்ருவஸ்ய ஸதஃ வரியந்தி [கெதவஃ ।

யதீ வவித்ரே அதிம்ருஜ்யதே ஹரிஃ ஸத்தா நி யொநள கலஶேஷு [ஸீததி ॥

அன்வயம்.

पवमानस्य, ध्रुवस्य, सतः, केतवः रश्मयः, उभयतः, परियन्ति, हरिः, पवित्रे, यदि अधिमृज्यते, सत्ता, योनौ कलशेषु, निषीदति ॥

பதவுரை.

पवमानस्य	வவஹாநஸ்ய	சமற்காரம் பண்ணியதும்
ध्रुवस्य	த்ருவஸ்ய	நிலையுள்ளதும்,
सतः	ஸதஃ	உண்மையுமாகிய சோமத்தின்
केतवः रश्मयः	கெதவஃ ரஶ்மயஃ	குறிகாட்டுகின்ற கிரணங்கள்,
उभयतः	உஹயதஃ	இங்குமங்கும்
परियन्ति	வரியந்தி	அசைகின்றன.
हरिः	ஹரிஃ	பசுமை நிறமுடைய சோமம்,
पवित्रे	வவித்ரே	தசா பவித்திரமென்னும் ஆடை நூனியிற்
यदि अधिमृज्यते	யதீ அதிம்ருஜ்யதே	சுத்தஞ் செய்யப்படுங்கால்
सत्ता	ஸத்தா	நிலைத்ததாய்ப்
योनौ कलशेषु	யொநள கலஶேஷு	பாத்திரமாகிய கலசங்களில்
निषीदति	நிஷீததி	இருக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

பவித்திரமானதும், நிலையாய் இருப்பதுமாகிய சோமத்தின் குறிகளான கிரணங்கள், இங்குமங்கும் அசைகின்றன. அதாவது பிழியுங்கால் இவ்வாறாகின்றன என்பது பொருள். பசுமை நிறமுடைய இச்சோமம், தசா பவித்திரமாகிய ஆடைநுனியால் வடிக்கப்படுங்கால் நிலைத்துள்ளதாய்த் துரோணகலச முதலிய பாத்திரங்களில் இருக்கின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २र ३१२
888. विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋभ्वसः प्रभोष्टे सतः परियन्ति केतवः ।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३१२ ३ १२
*व्यानशी पवसे सोम †धर्मणा पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि ॥

இருக்கு 9-96-4-6-5.

விஶ்வா யாஶாநி விஶ்வசக்ஷ ஊஶ்வஸஃ ப்ரஹொஷ்டெ ஸதஃ பரியந்தி
[கெதவஃ ।
வ்யாநஶீ பவஸெ ஸொம யர்ஜுணா பதிர்விஶ்வஸ்ய ஸுவநஸ்ய
[ராஜஸி ॥

அந்வயம்.

विश्वचक्षः, प्रभोः, सतः, ते, ऋभ्वसः, केतवः, विश्वा, धामानि, परियन्ति, सोम !, व्यानशी, धर्मणा, पवसे, विश्वस्य भुवनस्य, पतिः, राजसि ॥

பதவுரை.

विश्वचक्षः	விஶ்வசக்ஷஃ	அனைத்தையுங் காண்கின்ற சோமமே !
प्रभोः	ப்ரஹொஃ	ஆற்றலுடையதும்
सतः	ஸதஃ	உண்மையான
ते	தெ	உன்னுடைய
ऋभ्वसः	ஊஶ்வஸஃ	பெரிய
केतवः	கெதவஃ	கிரணங்கள்
विश्वा	விஶ்வா	எல்லா
धामानि	யாஶாநி	ஒளிகளையுமுடைய தேவ சரீரங்களை

* व्यानसिः, † धर्मभिः என்பன இருக்கு.

परियन्ति	வரியஞ்தி	{ எல்லாவகையாலும் விளக்குகின்றன.
सोम !	ஸொம !	சோமமே !
व्यानशी	வ்யாநசீ	நிறைவுடைய நீ,
धर्मणा	யஉணா	இரசம் பிழிந்ததால்
पवसे	வவஸெ	ஒழுகுகின்றனை.
विश्वस्य भुवनस्य	விஶ்வஸ்ய ஹுவநஸ்ய	எல்லாப் புவனங்களுக்கும்
पतिः	வதிः	இறைவனுகிய நீ,
राजसि	ராஜஸி	{ பிரகாசித்துக்கொண்டிருக்கின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

அனைத்தையும் காண்கின்ற சோமமே ! அண்ணலாகிய உனது உண்மையான கிரணங்கள், ஒளிக்கிடமான தேவ சரீரங்களை முழுதும் பிரகாசிப்பிக்கின்றன. சோமமே ! நிறைவாகிய நீ, இரசம் பிழிந்தெடுப்பதாற் பவித்திரமாகின்றாய். மற்றும், எல்லாப் புவனங்களுக்கும் இறைவனுகிய நீ, ஈசுரனுயிருக்கின்றாய் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

१२ ३२३१ २२३२
889. **पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तन्यतुम् ।**
१२ ३२ ३२
ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत् ॥ १ ॥

வவமாநொ அஜீஜநத்திவஶ்சித்ரம் ந தந்யதும் ।
ஜ்யோதிர்வைஶ்வாநரம் ப்ருஹத் ॥

அந்வயம்.

पवमानः, वैश्वानरं, बृहत्, ज्योतिः, दिवः, चित्रं, तन्यतुं न, अजीजनत् ॥

பதவுரை.

पवमानः	வவமாநஃ	பவித்திரஞ் செய்கின்ற சோமம்,
वैश्वानरं	வைஶ்வாநரம்	வைசுவாநரமென்னும்
बृहत्	ப்ருஹத்	பெரிய
ज्योतिः	ஜ்யோதிஃ	சோதியாய்
दिवः	திவஃ	வானுலகின்

चित्रं	சித்ரம்	விசித்திரமாகிய
तन्यतुं न	தந்யதும் ந	மின்னலைப் போன்று
अजीजनत्	அஜீஜநத்	உண்டானது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில்—1.

பரிசுத்தமாக்குகின்ற சோமம், மகத்தாகிய வைசுவாநரமென்னும் சோதியாய், வானுலகின் அழகிய வச்சிராயுதம் (மின்னல்) போன்று உண்டானது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

१ २३ २३ २३ १ २ ३२
890. **पवमान रसस्तव मदो राजन्नदुच्छुनः ।**
२उ ३१ २
वि वारमव्यमर्षति ॥ २ ॥

வவமாந ரஸஸ்தவ மதோ ராஜந்நதுச்சுநஃ ।
வி வாரமவ்யமர்ஷதி ॥

அந்வயம்.

राजन्, पवमान !, मदः, अदुच्छुनः, तव, रसः, अव्यं वारं, वि अर्षति ॥

பதவுரை.

राजन्	ராஜந்	பிரகாசிக்கின்றதும்
पवमान !	வவமாந !	பவித்திரமுமாகிய சோமமே !
मदः	மதஃ	களிப்பைக் கொடுக்கின்றதும்
अदुच्छुनः	அதுச்சுநஃ	இராக்கதர்கட் கொவ்வாததுமாகிய
तव	தவ	உனது
रसः	ரஸஃ	இரசம்,
अव्यं वारं	அவ்யம் வாரம்	ஆட்டின் மயிர்களாலாய கம்பளியை யடைந்து
वि अर्षति	வி அர்ஷதி	பாத்திரத்திற் சேர்கின்றது.

சாயண பாடியம்

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

பிரகாசிப்பதும், பரிசுத்தப் படுத்துவதுமாகிய சோமமே! களிப்பைக் கொடுக்கின்றதும், இராக்கதர்களின் சப்பந்த மற்றதுமாகிய உனது இரசம்,

ஆட்டின் மயிர்களாலாயதும், தசாபவித்திரமென்னும் ஆடைநுனியிற் சேர்ந்துள்ளதுமாகிய கம்பளி வாயிலாகப் பாத்திரத்தையடைகின்றது என்பதாம்.

மந்திரம். 6.

१२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ ३ २

891. *पवमानस्य ते रसो दक्षो विराजति द्युमान् ।

२ ३ २ ३ क २ र ३ २

ज्योतिर्विश्वं स्वर्दृशे ॥ ३–२ ॥

இருக்கு 99-51-16-18.

வவமாநஸ்ய தெ ரஸோ தக்ஷோ விராஜதி த்யுமாந் ।
ஜ்யோதிர்விச்வம் ஸ்வர்த்ருசே ॥

அந்வயம்.

(हे सोम!,) पवमानस्य, दक्षः, द्युमान्, ते, रसः, विराजति, विश्वं, स्वः, ज्योतिः, दृशे ॥

பதவுரை.

(हे सोम!)	(ஹே ஸோம!)	(சோமமே!)
पवमानस्य	வவமாநஸ்ய	சமஸ்காரம் பண்ணப்பெற்றதும்
दक्षः	தக்ஷஃ	வலியைக் கொடுப்பதும்
द्युमान्	த்யுமாந்	பிரகாசமுடையதுமாகிய
ते	தெ	உனது
रसः	ரஸஃ	இரசம்
विराजति	விராஜதி	விளங்குகின்றது. மற்றும்,
विश्वं	விச்வம்	வியாப்தமாகிய
स्वः	ஸ்வஃ	எல்லா
ज्योतिः	ஜ்யோதிஃ	ஒளிகளையும்
दृशे	த்ருசே	பார்க்கத்தக்கதாகவுஞ் செய்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

சோமமே! பவித்திரமாகிய உன்னுடைய இரசம், வலியுடையதாயும், பிரகாசமுடையதாயும் விளங்குகின்றது. தான்மாத்திரம் விளங்குகின்ற

*पवमानस्य ते रसः என்பது, पवमानरसस्त्व, என்று, இருக்கில் மாறுபட்டிருக்கின்றது.

தன்று, மற்றோ, உலகத்தைச் சூழ்ந்திருக்கின்ற எல்லா ஒளிகளையும் பார்க்கத்தக்க வாற்றையுஞ் செய்கின்றது என்பதாம். (3)

மந்திரம் 7.

२उ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २
892. प्र यद्गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः ।
१ २ ३ २उ ३ १२
घ्नन्तः कृष्णामपत्वचम् ॥ १ ॥

ப்ர யத்ஸாவோ ந ஹூர்ணயஸ்வேஷா அயாஸோ அக்ரமுஃ ।
ஹ்நந்தஃ க்ருஷ்ணாமபத்வசம் ॥

அந்வயம்.

गावः न, भूर्णयः, त्वेषाः, अयासः, कृष्णां, अपत्वचं, अपघ्नन्तः, यत्, प्र अक्रमुः ॥

பதவுரை.

गावः न	ஸாவஃ ந	நீரைப்போன்று
भूर्णयः	ஹூர்ணயஃ	விரைவாய்ச் செல்கின்றதும்
त्वेषाः	த்வேஷாஃ	பிரகாசிக்கின்றதும்
अयासः	அயாஸஃ	செல்லுஞ் சீலமுடையதும்
कृष्णां	க்ருஷ்ணாம்	கருமை நிறமுடையதும்,
अपत्वचं	அபத்வசம்	தாழ்ந்த வேரின்பட்டைகள்
अपघ्नन्तः	அபஹ்நந்தஃ	முழுதும் நீங்கியதுமாகிய
यत्	யத்	யாதொரு சோமரசம்
प्र अक्रमुः	ப்ர அக்ரமுஃ	பாத்திரத்தை யடைகின்றதோ, (அதைத் துதிக்கின்றோம்.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—ஆறும் மூன்றில்—1. மேதாதிதி ரிஷி.

பிழியப்பட்ட யாதொரு சோமரசம், நீர் போன்று, அதாவது விரைவில் நீர் கீழ்விழுமாறு, அல்லது, மூலத்திலுள்ள 'ஸாவஃ' என்னுஞ் சொல்லால் பசுக்களே உவமையாய்க் கொள்ளற் பாலனவாம். (ஆதலின்) பசுக்கள் தங்களுடைய சாலைக்கு விரைவிற் செல்லுமாறு என்பதுமாம். அல்லது, 'ஸாவஃ' என்பது தோத்திரமாம், அதாவது துதிக்கின்றவர்க்கு விரைவிற் கிடைப்பது போன்று, விரைவிற் செல்லுஞ் சீலமுடையதும், பிரகாசமுடையதும், நல மற்ற, மேல்புரணி நீங்கப்பெற்றதுமாகிய இத்தன்மைய சோமரசத்தைத் துதிக்கின்றோம் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

३ १ २ ३२ ३ १२ ३क २र
893. सुवितस्य * वनामहेऽतिसेतुं † दुराय्यम् ।
३ २ ३ १ २ ३३२
‡ साह्याम दस्युमव्रतम् ॥ २ ॥

ஸுவிதஸ்ய வநாமஹேऽதிஸேதும் தூராய்யம் ।
ஸாஹ்யாம தஸ்யுமவ்ரதம் ॥

அன்வயம்.

सुवितस्य, दुराय्यं, अतिसेतुं, वनामहे, अव्रतं, दस्युं, साह्याम ॥

பதவுரை.

सुवितस्य	ஸுவிதஸ்ய	அழகுடன் அடையப் பெற்ற சோமம்,
दुराय्यं	தூராய்யம்	கிடைத்தற்கரிய
अतिसेतुं	அதிஸேதும்	இராக்கதர்களைத் தடுத்தலைப்
वनामहे	வநாமஹே	போற்றுகின்றோம். மற்றும்,
अव्रतं	அவ்ரதம்	வேள்வி முதலிய கருமங்களற்ற
दस्युं	தஸ்யும்	சத்துருக்களை
साह्याम	ஸாஹ்யாம	யாம், அடக்கு மாற்றையும் வேண்டுகின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—1.

அழகாயடையப்பெற்ற சோமமானது, இராக்கதர்களைத் தடைப்படுத்துகின்றதை வேண்டுகின்றோம். அல்லது, சோமம் இராக்கதர்களை கட்டுப்படுத்துமாறு பிரார்த்திக்கின்றோம் என்பதாம். எத்தன்மைய கட்டுப்பாடெனின்? எம்மால் அடைதற்கரியதாம் என்க. மற்றும், வேள்வி முதலிய கருமங்களற்ற சத்துருவையும், யாம் அடக்க வேண்டுமென்பதையும் வேண்டுகின்றோமென்பது கருத்து. (1)

* मनामहे † दुराय्यं ‡ साह्वांसो, என்பன இருக்கு.

மந்திரம் 9.

३ २ ३ १२ ३१ २र ३ १ २
894. शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः ।
१ २ ३ १ २ ३ २
चरन्ति विद्युतो दिवि ॥ ३ ॥

ஶ்ரண்வே வ்ரஷ்டேரிவ ஸ்வநः பவமாநஸ்ய ஶுஷ்மிணः ।
சரந்தி வித்³யுதோ தி³வி ॥

அன்வயம்.

वृष्टेः, स्वनः इव, पवमानस्य, शृण्वे, शुष्मिणः, विद्युतः, दिवि, चरन्ति ॥

பதவுரை.

वृष्टेः	வ்ரஷ்டேः	மழை பெய்கின்ற
स्वनः इव	ஸ்வநः இவ	சத்தத்தைப் போன்று,
पवमानस्य	பவமாநஸ்ய	இரசம் பிழியுங்கால், சோமத்தின் ஒலி
शृण्वे	ஶ்ரண்வே	கேட்கப்படுகின்றது.
शुष्मिणः	ஶுஷ்மிணः	ஆற்றலுள்ள அச் சோமத்தின்
विद्युतः	வித்³யுதः	கிரணங்கள்
दिवि	தி³வி	அந்தரிட்சத்திற்
चरन्ति	சரந்தி	பரவுகின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

கேட்கப்படுகின்றது, எவ் வொலி? எதைப்போல் எனின்? மழையின் சத்தத்தைப் போன்று அதனுடைய பேரொலி, கேட்குமாறு கேட்கப்படுகின்றதென்க. மகத்தாகிய இரசம், பிழியும்போது, கேட்கப்படுகின்றது என்பதாம். எதனுடைய ஒலியெனிலோ? ஆற்றலுடைய சோமத்தின் ஒலியென்க. மற்றும், அதனுடைய கிரணங்களே வானில் பரவித் திரிகின்றன என்பதாம். (3)

மந்திரம் 10.

१ २ ३२उ ३ १२ ३ १२
895. * आ पवस्व महीमिषं गोमदिन्दो हिरण्यवत् ।
१ २ ३१२
† अश्ववत्सोम वीरवत् ॥ ४ ॥

ஆ வவஸ்வ மஹீமிஷம் மொமதிந்தோ ஹிரண்யவத் ।
அஸ்வவதொம வீரவத் ॥

அந்வயம்.

इन्दो सोम !, गोमत्, हिरण्यवत्, अश्ववत्, वीरवत्, महीं इषं, आ पवस्व ॥

பதவுரை.

इन्दो सोम !	இந்தோ ஸோம !	பாத்திரத்தில் ஒழுகுகின்ற சோமமே ! நீ
गोमत्	மொமத்	பசுக்களுடன்
हिरण्यवत्	ஹிரண்யவத்	பொன்னுடன்
अश्ववत्	அஸ்வவத்	குதிரைகளுடன்
वीरवत्	வீரவத்	புத்திரனுடன்
महीं इषं	மஹீம் இஷம்	மிகுந்த அன்னத்தையும்
आ पवस्व	ஆ வவஸ்வ	கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—4.

ஒழுகுகின்ற சோமமே ! பிழிந்தெடுக்கப்பட்ட நீ, மிகுந்த அன்னத்தைக் கொடுப்பாயாக. எவ்விதமாகிய அன்னமெனின் ? பசுக்களுடன் கூடியதும், பொன்னுடன் கூடியதும், குதிரைகளுடன் கூடியதும், புத்திரனுடன் கூடியதுமா மென்பதாம். (4)

மந்திரம் 11.

१२ ३ २ ३ १ २र
896. पवस्व विश्वचर्षण आ महीरोदसी पृण ।
३२उ ३ २ ३ १ २
उषाः सूर्यो न रश्मिभिः ॥ ५ ॥

---

* स पवस्व विचर्षणे † अश्ववद् वाजवत्सुतः, என்பன இருக்கு.

பவஸ்வ விஶ்வசர்ஷணை சூ ஸூரோதஸீ ப்ரண ।
உஷாஃ ஸூர்யோ ந ரஶ்மிபிஃ ॥

அந்வயம்.

विश्वचर्षणे !, पवस्व, सूर्यः, रश्मिभिः, उषाः न, महीरोदसी, आपृण ॥

பதவுரை.

विश्वचर्षणे !	விஶ்வசர்ஷணை !	உலகைக் காண்கின்ற சோமமே! நீ
पवस्व	பவஸ்வ	இரசத்தை ஒழுகச் செய்வாயாக. அந்த இரசத்தால்,
सूर्यः	ஸூர்யஃ	சூரியன்
रश्मिभिः	ரஶ்மிபிஃ	கிரணங்களால்
उषाः न	உஷாஃ ந	பகற்காலத்தை நிறைப்பது போல்.
महीरोदसी	மஹீரோதஸீ	வானையும் மண்ணையும்
आपृण	சூப்ரண	நிறைப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

உலகைப் பார்க்கின்ற சோமமே! அத்தன்மையனாகிய நீ, இரசத்தை ஒழுகுமாறு செய்வாயாக. செய்து அவ் விரசத்தால் மகத்தான வானையும், மண்ணையும் நிறையச் செய்வாயாக. பகலின் ஒரு பகுதியாகிய உஷா என்றதால் பகலுங் கொள்ளப்படுகின்றது. அது முக்கியமா மாதலின் என்க. இரவி, பகலைத் தனது கிரணங்களாற் பிரகாசிப்பது போன்று பிரகாசிப்பாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 12.

१२ ३२ ३ १२ ३१२
897. परि नः शर्मयन्त्या धारया सोम विश्वतः ।
१ २ ३ १२ ३ १२
सरा रसेव विष्टपम् ॥ ६–३ ॥

இருக்கு. 9-41-1-6.

பரி நஃ ஶர்மயந்த்யா தாரயா ஸோம விஶ்வதஃ ।
ஸரா ரஸேவ விஷ்டபம் ॥

அந்வயம்.

सोम !, नः, शर्मयन्त्या, धारया, रसा, इव, विश्वतः, विष्टपं, परिसर ॥

பதவுரை.

सोम !	ஸொம !	சோமமே ! நீ,
नः	நः	எங்கட்கு
शर्मयन्त्या	ஶர்மயந்த்யா	இன்பங் கொடுக்கின்ற
धारया	தாரயா	துளிகளாய் ஒழுகுவதால்
रसा, इव	ரஸா, இவ	இரசம் போன்று
विश्वतः	விஶ்வதஃ	எல்லாவகையாலும்
विष्टपं	விஷ்டபம்	பூவுலகைப்
परिसर	பரிஸர	பரவுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—6.

சோமமே ! நீ, எங்கட்குச் சுகத்தைக் கொடுக்கின்ற தாரையால், நீர் போன்று எல்லாவகையானும் பூவுலகில் நிறைவாயாக என்பதாம். (6)

முதலாவது கண்டம்

முற்றும்.

இரண்டாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—3. அத்தியாயம்—5. கண்டம்—2.

ஒன்பது மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३ १२ ३ १ २ ३२३ १ २
898. आशुर्ष बृहन्मते परि प्रियेण धाम्ना ।
१ २ ३ २उ ३ १२
यत्रा देवा इति ब्रुवन् ॥ १ ॥

சூஶுரர்ஷ்ய ப்ருஹந்மதெ பரி ப்ரியெண யாஹ்நா ।
யத்ரா தெவா ஊதி ப்ரூவந்து ॥

அந்வயம்.

बृहन्मते, प्रियेण, धाम्ना, यत्र !, देवाः, इति, ब्रुवन्, आशुः, पर्यर्ष ॥

பதவுரை.

बृहन्मते	ப்ருஹந்மதெ	பெரும்புத்தியையுடைய சோமமே ! நீ
प्रियेण	ப்ரியெண	தேவதைகட்குப் பிரியமாகியதும்
धाम्ना	யாஹ்நா	தனது தேகமுமாகிய தாரையால்
यत्र !	யத்ர !	எங்கே !
देवाः	தெவாः	தேவர்கள்
इति	ஊதி	என்று
ब्रुवन्	ப்ரூவந்து	சொல்லிக் கொண்டு
आशुः	சூஶுஃ	விரைவில்
पर्यर्ष	பர்யர்ஷ்ய	வருவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—ஆறும் மூன்றின் முதற் சூக்தத்தில்—1.

மகத்தாகிய மதியையுடைய சோமமே! நீ, தேவர்களுக்கு மிகப் பிரியமும், சரீரவடிவமுமாகிய தாரையால் விரைவாய் வருவாயாக. (எவ்வாறெனின் ?) 'எங்கே இந்திரன் முதலிய தேவர்களிருக்கின்றார்களோ, அவ்விடஞ் செல்கின்றேன்' என்று சொல்லிக் கொண்டு வருவாயாக என்பதாம்.

மந்திரம் 2.

३ २ २र ३ १ २ ३ २३ १२
899. परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं जनाय यातयन्निषः ।
३ २ ३ १ २र
वृष्टिं दिवः परिस्रव ॥ २ ॥

பரிஷ்க்ருண்வந்நிஷ்க்ருதம் ஜநாய யாதயந்நிஷஃ ।
வ்ருஷ்டிம் திவஃ பரிஸ்ரவ ॥

அந்வயம்.

अनिष्कृतं, परिष्कृण्वन्, जनाय, इषः, यातयन्, दिवः, वृष्टिं, परिस्रव ॥

பதவுரை.

अनिष्कृतं	அநிஷ்க்ருதம்	சமஸ்காரமற்ற வேள்வித் தலைவனை, அல்லது, இடத்தைச்
परिष्कृण्वन्	பரிஷ்க்ருண்வந்	சமஸ்காரஞ் செய்துவைத்து
जनाय	ஜநாய	வேள்வித் தலைவனுக்கு
इषः	இஷः	அன்னத்தையும்
यातयन्	யாதயந்	அடைவித்து,
दिवः	திவः	வானிலிருந்து
वृष्टिं	வ்ருஷ்டிம்	மழையையும்
परिस्रव	பரிஸ்ரவ	பெய்விப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

சமஸ்காரமற்ற வேள்வித் தலைவனை, அல்லது, இடத்தைச் சமஸ்காரஞ் செய்வித்தும், வேள்வித் தலைவன் பொருட்டு அன்னங்களை அடைவித்துக்கொண்டும், வானிலிருந்து மழையைப் பெய்விப்பாயாக என்பதாம்.

மந்திரம் 3.

३२उ ३१ २र३ १२३२३ २
900. अयꣳ स यो दिवस्परि रघुयामा पवित्र आ ।
१ २३१ २र
सिन्धोरूर्मा व्यक्षरत् ॥ ३ ॥

அயம் ஸ யோ திவஸ்பரி ரகுயாமா பவித்ர ஆ ।
ஸிந்தோரூர்மா வ்யக்ஷரத் ॥

அந்வயம்.

यः, दिवस्परि, रघुयामा, सः, अयं, पवित्रे, आ, सिन्धोः, ऊर्मा, वि अक्षरत् ॥

பதவுரை.

यः	யः	யாதொன்று
दिवस्परि	திவஸ்பரி	வானுலகின் மேல்
रघुयामा	ரகுயாமா	(தேவர்கள் கிடைத்துவிட்டதால்) மெல்ல நடக்கின்றதோ,
सः अयं	ஸः அயம்	அத்தன்மைய இச் சோமரசம்,
पवित्रे	பவித்ரே	தசா பவித்திரமென்னும் ஆடை தூனியையுடைய பூத்திரத்தில்

आ	சூ	வார்க்கப்பட்டு
सिन्धोः	ஸிந்தோः	நீரின்
ऊर्मा	ஊர்மா	அலைகளாய்
वि अक्षरत्	வி அக்ஷரத்	ஒழுகுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

அத்தன்மைய இது பவித்திரமென்னும் ஆடைநுனியை யுடைய பாத்திரத்தில் வார்க்கப்பட்டு நீரின் அலைகளாய்ப் பலவிதமாய் ஒழுகுகின்றது. ஈண்டு இது எனப்பட்டது யாதெனின்? தேவர்கள் கிடைக்குமிடத்து வானுலகின் மேலே மெல்லச் செல்கின்ற அச் சோமரசம் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

३१२ ३१२ २उ ३१२३ १२

901. सुत एति पवित्र आत्विषिं दधान ओजसा ।

३१२ ३१२

विचक्षाणो विरोचयन् ॥ ४ ॥

ஸுத ஏதி பவித்ர ஆத்விஷிம் தயாந ஓஜஸா ।

விசக்ஷாணோ விரோசயந் ॥

அன்வயம்.

सुतः, त्विषिं, दधानः, विचक्षाणः, विरोचयन्, पवित्रे, आ ओजसा, (शीघ्रं,) एति ॥

பதவுரை.

सुतः	ஸுதः	சமஸ்காரம் பண்ணப் பெற்ற சோமம்
त्विषिं	ஷ்விஷிம்	பிரகாசத்தைத்
दधानः	தயாநः	தாங்குவதாயும்,
विचक्षाणः	விசக்ஷாணः	அறிதலையும் பார்ப்பதாயும்,
विरोचयन्	விரோசயந்	தேவர்களைப் பிரகாசிப்பதாயும்,
पवित्रे	பவித்ரே	தசாபவித்திரமாகிய ஆடைநுனியில்
आ ओजसा	ஆ ஓஜஸா	நிறைந்த வலியால்
(शीघ्रं)	(ஸீக்ரம்)	(விரைவாய்ச்)
एति	ஏதி	செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—4.

பிழியப்பெற்ற சோமரசம், தசாபவித்திரமென்னும் ஆடையையுடைய பாத்திரத்தில் ஆற்றலுடன் விரைவாகச் செல்கின்றது. எவ்விதமாயிருந்து கொண்டெனின்? பிரகாசத்தை யேற்றுக் கொண்டும், அன்னத்தையும் பார்த்துக்கொண்டும், தேவர்களைப் பிரகாசிப்பித்துக் கொண்டுமென்க. ஈண்டுத் தேவர்களை என்றது எஞ்சி நின்றது. பாத்திரத்திற் செல்கின்றது என மேலே கூட்டுக. (4)

மந்திரம் 5.

३ १ २ ३२ ३ १ २ ३१२ ३२

902. आ विवासन् परावतो अथो अर्वावतः सुतः ।

१ २ ३ १ २

इन्द्राय सिच्यते मधु ॥ ५ ॥

ஆ விவாஸந பராவதோ அதோ அர்வாவதஃ ஸுதஃ ।

இந்த்ராய ஸிச்யதே மது ॥

அன்வயம்.

सुतः, परावतः, अथो, अर्वावतः, आ विवासन्, इन्द्राय, मधु, सिच्यते ॥

பதவுரை.

सुतः	ஸுதஃ	பிழியப்பெற்ற சோமரசம், தேவதைகட்குத்
परावतः	பராவதஃ	தூரத்திலும்,
अथो	அதோ	மற்றும்,
अर्वावतः	அர்வாவதஃ	சமீபத்திலும்,
आ विवासन्	ஆ விவாஸந	இரசவாயிலாக வழிபடுவதாய்,
इन्द्राय	இந்த்ராய	இந்திரன் பொருட்டு
मधु	மது	மதுவைப் போன்று
सिच्यते	ஸிச்யதே	வார்க்கப்படுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—5.

பிழியப்பெற்ற சோமரசம், தூரத்திலும், சமீபத்திலுமிருக்கின்ற தேவர்களை, இரசத்தாற் பாதுகாத்தற்கு மதுபோன்ற இரசத்தை இந்திரன் பொருட்டு வார்க்கின்றது. (தெளிக்கின்றது) என்பதாம். (5)

மந்திரம் 6.

३ १ २ ३ १२ ३ १२
903. समीचीना अनूषत हरिꣳ हिन्वन्त्यद्रिभिः ।
२३१ २ ३१२
इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥ ६–४ ॥

இருக்கு 9-39-1-6.

ஸமீசீநா அநூஷத ஹரிம் ஹிந்வந்த்யத்³ரிபி⁴꞉ ।
இந்தூ³மிந்த்³ராய பீதயே ॥

அந்வயம்.

समीचीनाः, अनूषत, इन्द्राय पीतये, हरिं इन्दुं, अद्रिभिः, हिन्वन्ति ॥

பதவுரை.

समीचीनाः	ஸமீசீநாः	நல்லவகையிலுள்ள துதிப்போர்கள் (சோமத்தைத்)
अनूषत	அநூஷத	தோத்திரஞ் செய்கின்றார்கள். மற்றும்,
इन्द्राय पीतये	இந்த்³ராய பீதயே	இந்திரன் அருந்துதற்பொருட்டுப்
हरिं इन्दुं	ஹரிம் இந்தூ³ம்	பசுமை நிறமுடைய சோமத்தைக்
अद्रिभिः	அத்³ரிபி⁴꞉	கற்களால்
हिन्वन्ति	ஹிந்வந்தி	இடிக்கின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—6.

நற் றுதியாளர்கள் (சோமத்தைத்) தோத்திரஞ் செய்கின்றார்கள். மற்றும், பசுமை நிறமுடைய சோமத்தைக் கற்களால் இடிக்கின்றார்கள். எதன் பொருட்டெனின்? இந்திரன் சோமரசத்தை யருந்துதற் பொருட்டு என்பதாம். (6)

மந்திரம் 7.

३ २ ३ २३ १२ ३ १ २ ३२ ३ १२
904. हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वसारो जामयस्पतिम् ।
३ १ २र ३ १२
महामिन्दुं मही युवः ॥ १ ॥

ஹிந்வந்தி ஸுஷ்டுதிமாஸ்யவோ வஸவாநோ ஜாமயஸ்பதிம் ।
மஹாமிந்த்ரம் மஹீ யுவம் ॥

அந்வயம்.

उस्रयः, जामयः, स्वसारः, मही युवः, सूरं, पतिं, महां, इन्दुं, हिन्वन्ति ॥

பதவுரை.

उस्रयः	உஸ்ரியஃ	கருமத்தின் பொருட்டு யாண்டுஞ் செல்கின்றவைகளும்,
जामयः	ஜாமயஃ	ஒன்றற் கொன்று பந்துக்களாயுள்ளவைகளுமான
स्वसारः	ஸ்வஸாரஃ	விரல்கள்,
मही युवः	மஹீ யுவஃ	சோமத்தைச் சமஸ்காரஞ்செய்ய விரும்பியவைகளாய்
सूरं	ஸூரம்	மிக வீரமுடையதும்
पतिं	பதிம்	தாபச சங்கமங்கட்குத் தலைமையும்,
महां	மஹாம்	போற்றத் தக்கதும்
इन्दुं	இந்தும்	பாத்திரத்தில் ஓழுகுகின்றதுமாகிய அச் சோமத்தைச்
हिन्वन्ति	ஹிந்வந்தி	செலுத்துகின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—மூன்றுவது சூக்தத்தில்—1. சமதக்கினி, அல்லது, பிருகு ரிஷி.

கருமத்தின் பொருட்டு எங்குஞ் செல்கின்றவைகளும், ஓரே யிடத்திலுண்டானமையின் ஒன்றற்கொன்று பந்துக்களாயுள்ளவைகளுமான விரல்கள், ஈண்டு மூலத்தில் 'சுவசார' என்பது விரல்கள். அவ்வாறே "சுவசாரம் விரலின் பெயர்" என நிகண்டுங் கூறுகின்றது. சோமரசத்தைப் பிழிந்தெடுக்க விரும்பியவைகளாய், சோமத்தை யருந்துவதுகொண்டு வீரமுண்டாவதால் மிக்க வீரத்திற்குக் காரணமானதும், அல்லது, எல்லாக் கருமங்களையுஞ் செலுத்துவதும், சலிக்கும் பொருட்கும், சலிக்காப் பொருள்கட்குந் தலைமையும், தேவர்களுக்குக் கொடுத்தற் குரியதானதால் மகத்தானதும், அல்லது, போற்றத் தக்கதும், பாத்திரத்தில் ஓழுகுகின்றதுமாகிய சோமத்தைச் செலுத்துகின்றன என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

१२ ३ १ २ ३ ३ १ ३१ २ ३२
905. पवमान रुचारुचा *देव देवेभ्यः सुतः ।
२ ३ २३ १ २
विश्वा वसून्याविश ॥ २ ॥

பவமாந ரூசாரூசா தெவ தெவெஹ்யஃ ஸுதஃ ।
விஶ்வா வஸூந்யாவிஶ ॥

அந்வயம்.

रुचारुचा, देव !, पवमान !, देवेभ्यः, सुतः, विश्वा, वसूनि, आविश ॥

பதவுரை.

रुचारुचा	ரூசாரூசா	முழுப் பிரகாசத்தால்
देव !	தெவ !	விளங்குகின்றோய் !
पवमान !	பவமாந !	பவித்திரமாகிய சோமமே !
देवेभ्यः	தெவெஹ்யஃ	தேவதைகளின் பொருட்டுச்
सुतः	ஸுதஃ	சமஸ்காரஞ் செய்யப்பட்ட நீ,
विश्वा	விஶ்வா	பலவகையான
वसूनि	வஸூநி	தனங்களைக்
आविश	ஆவிஶ	(எமக்குக்) கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

தசா பவித்திரமென்னும் ஆடைநுனியால் ஒழுகுகின்ற, அல்லது, பரிசுத்தமாகிய சோமமே! மற்றும், நிறைந்த பேரொளியால் விளங்குகின்றோய்! தேவர்களின் பொருட்டுப் பிழிந்தெடுக்கப்பட்ட நீ, தனங்களனைத்தையும் எங்கட்குக் கொடுப்பாயாக. அல்லது, வாழத்தக்க வீடு முதலியவற்றைக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (2)

---

* देव देवेभ्यस्परि, என்பது இருக்கு.

மந்திரம் 9.

१ २ ३ २ ३ २ ३२१ ३ १ २
906. आ पवमान सुष्टुतिं वृष्टिं देवेभ्यो दुवः ।
३१ २ ३१२
इषे पवस्व संयतम् ॥ ३–५ ॥

இருக்கு 9-65-1-3.

ஆ வவமான ஸுஷ்டுதிம் வ்ருஷ்டிம் தெவெப்⁴யோ தூ³வ: ।
இஷெ வவஸ்வ ஸம்யதம் ॥

அந்வயம்.

பவமான!, ஸுஷ்டுதிம், வ்ருஷ்டிம், தேவேப்⁴ய:, தூ³வ:, ஆ பவஸ்வ, இஷே, ஸம்யதம் ॥

பதவுரை.

पवमान!	வவமான!	பவித்திரமாகிய சோமமே!
सुष्टुतिं	ஸுஷ்டுதிம்	அழகிய துதியையுடைய
वृष्टिं	வ்ருஷ்டிம்	மழையை,
देवेभ्यः	தெவெப்⁴ய:	தேவதைகளின் பொருட்டுச்
दुवः	தூ³வ:	சேவை நிமித்தமாய்ப்
आ पवस्व	ஆ வவஸ்வ	பெய்விப்பாயாக.
इषे	இஷெ	எங்களுடைய அன்னத்தின் பொருட்டும்
संयतं	ஸம்யதம்	நன்கு மழையைப் பெய்விப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

ஒழுகுகின்ற, அல்லது, பரிசுத்தமாகிய சோமமே! நீ, அழகிய துதியோடு கூடிய மழையைத் தேவர்களின் பொருட்டுச் சேவையின் நிமித்தமாய்ப் பெய்விப்பாயாக. அதாவது எமது துதியால் மழை யுண்டாகும் வண்ணஞ் செய்வாயாக என்பது பொருள். மற்றும், எங்களுடைய அன்னத்தின் பொருட்டும், இனிய மழையைப் பெய்விப்பாயாக. அல்லது, சேவையை நோக்கிச் செய்யப்பட்ட அழகிய துதியாகிய மழையை (மிகுந்த துதியை) தேவர்களுக்குச் சேர்ப்பிப்பாயாக என்பதுமாம். (3)

இரண்டாவது கண்டம்

முற்றும்.

மூன்றாவது கண்டம்

பிரபாடகம்—3. அத்தியாயம்—5. கண்டம்—3.

பன்னிரண்டு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

907. ஜனஸ்ய கோபா அஜனிஷ்ட ஜாக்ருவிரக்னிஃ ஸுதக்ஷஃ ஸுவிதாய நவ்யஸே ।
க்ருதப்ரதீகோ ப்ருஹதா திவிஸ்ப்ருசா த்யுமத்விபாதி பரதேப்யஃ ஶுசிஃ ॥

ஜநஸ்ய கோபா அஜநிஷ்ட ஜாக்ருவிரக்னிஃ ஸுதக்ஷஃ ஸுவிதாய நவ்யஸே ।
க்ருதப்ரதீகோ ப்ருஹதா திவிஸ்ப்ருசா த்யுமத்விபாதி பரதேப்யஃ ஶுசிஃ ॥

அன்வயம்.

ஜனஸ்ய, கோபாஃ, ஜாக்ருவிஃ, ஸுதக்ஷஃ, அக்னிஃ, நவ்யஸே, ஸுவிதாய, அஜனிஷ்ட, க்ருதப்ரதீகஃ, ப்ருஹதா, திவிஸ்ப்ருசா, ஶுசிஃ, பரதேப்யஃ, த்யுமத், விபாதி ॥

பதவுரை.

ஜனஸ்ய	ஜநஸ்ய	வேள்வித் தலைவனைப்
கோபாஃ	கோபாஃ	பாதுகாப்பாற்றுவதும்,
ஜாக்ருவிஃ	ஜாக்ருவிஃ	நனவுடனிருப்பதும்,
ஸுதக்ஷஃ	ஸுதக்ஷஃ	சிறப்புடையதுமாகிய
அக்னிஃ	அக்னிஃ	அக்கினி தேவதை,
நவ்யஸே	நவ்யஸே	மிகப்புதிய
ஸுவிதாய	ஸுவிதாய	உலகமங்களத்தின் பொருட்டு
அஜனிஷ்ட	அஜநிஷ்ட	வெளிப்பட்டது. பின்னர்,
க்ருதப்ரதீகஃ	க்ருதப்ரதீகஃ	நெய்யால் வளர்ந்த வுருவமுடையதும்
ப்ருஹதா	ப்ருஹதா	பெரியதும்
திவிஸ்ப்ருசா	திவிஸ்ப்ருசா	வானுலகிற் செல்லுகின்ற ஒளியையுடையதும்
ஶுசிஃ	ஶுசிஃ	பரிசுத்தமுமாகிய அவ் வக்கினி

भरतेभ्यः	ஹரதெஹ்யஃ	வேட்போர்களின் பொருட்டுப்
द्युमत्	த்யுமத்	பிரகாசமுடையதாய்
विभाति	விபாதி	விளங்குகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1. சதம்பரர் ரிஷி.

மக்களைக் காப்பாற்றுவதும், எப்போதும் விழித்துக் கொண்டிருப்பதும், போற்றத்தக்க வலியெலாமுடையதுமாகிய அவ் வக்கினி, மிகப் புதிதாய உலகமங்களத்தின் பொருட்டுத் தோன்றியது. பின்னர், நெய்யால் வளர்ந்தவுருவத்தையுடையதும், வானுலகையளாவுகின்ற பெரிய ஒளியுடன் கூடியதும், பரிசுத்தமுடையதுமாகிய அது, வேட்போர்களின் பொருட்டு, உள்ளவாறு விளங்குகின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१२३ १२ ३ १२ ३ १२र ३१ २र
908. त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहाहितमन्वविन्दञ्छिश्रियाणं वने वने ।
१ २ ३ १ २३ १ २ ३१ २र३ १२ ३१२
स जायसे मथ्यमानः सहो महत्वामाहुः सहसस्पुत्रमङ्गिरः ॥ २ ॥

க்வாஹெந க்ஷ்ரிரஸொ ஹுஹாஹிதஹந்வவிந்தஞ்ஜிஶ்ரியாணம் வநெ [வநெ ।
ஸ ஜாயஸெ மத்யமாநஃ ஸஹொ மஹக்வாமாஹுஃ ஸஹஸஸ்புத்ரமஷ்ரிரஃ ॥

அந்வயம்.

अग्ने !, अङ्गिरसः, गुहाहितं, वने वने, शिश्रियाणं, त्वां, अन्वविन्दन्, महत्, सहः, सः, मथ्यमानः, जायसे, अङ्गिरः !, त्वां, सहसः, पुत्रं, आहुः ॥

பதவுரை.

अग्ने !	அக்நெ !	அக்கினியே !
अङ्गिरसः	அஷ்ரிரஸஃ	'அங்கிரசர்' என்னும் ரிஷியானவர்
गुहाहितं	ஹுஹாஹிதம்	குகையுள்ளிருத்தப்பட்டவனும்
वने वने	வநெ வநெ	வனத்தின் ஒவ்வொரு மரத்தையும்
शिश्रियाणं	ஶிஶ்ரியாணம்	பற்றிக்கொண்டிருப்பவனுமாகிய
त्वां	க்வாம்	உன்னை
अन्वविन्दन्	அந்வவிந்தந்	அடைந்தனர்.

महत्	ஊஹக்	மிகுந்த
सहः	ஸஹஃ	ஆற்றலுடைய
सः	ஸஃ	அவ் வக்கினியாகிய நீ,
मथ्यमानः	மய்யமாநஃ	கடையப்பெற்று
जायसे	ஜாயஸே	வெளிப்படுகின்றாய்.
अङ्गिरः !	அங்கிரஃ !	அங்கிரசர்களின் இயற்கை வடிவோய் !
त्वां	த்வாம்	உன்னை
सहसः	ஸஹஸஃ	வலியின்
पुत्रं	புத்ரம்	புத்திரனென்று
आहुः	ஆஹுஃ	சொல்கின்றனர்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

அக்கினியே! 'ஆங்கிரசர்' என்னும் ரிஷியானவர், குகையில் மறைக்கப் பட்டவனும், ஒவ்வொரு மரங்களைப் பற்றிக்கொண்டிருக்கின்றவனுமாகிய உன்னை யடைந்தனர். போராற்றலோடுகூடிய அத்தன்மைய அக்கினியாகிய நீ, (தீக்கடைக்கோலால்) கடையப்பட்டு வெளிப்படுகின்றாய். அங்கிரசர்களின் பிருகிருகி வடிவமுடையோய்! உன்னை, ஆற்றலினுடைய புத்திரனென்று சொல்கின்றார்கள் என்பதாம். (ஆற்றலோடு கடையுங்கா லெழுதலின் தீ ஆற்றலுக்கு மகவாயினமை காண்க.) (2)

மந்திரம் 3.

३१ २ ३१ २३२ २१२ ३१ २ ३१ २२

909. यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं नरस्त्रिषधस्थे * समिन्धते ।

१२ ३२ ३२३ २३२३ २३१ २२३१२ ३१२

इन्द्रेण देवैः सरथꣳ सबर्हिषि सीदन्ति होता यजथाय सुक्रतुः ॥

இருக்கு 5-11-1-6-2.

யஜ்ஞஸ்ய கெதும் ப்ரதமம் புரோஹிதமக்நிம் நரஸ்த்ரிஷதஸ்தே ஸமிந்ததெ ।

இந்த்ரேண தெவைஃ ஸரதꣳ ஸபர்ஹிஷி ஸீதந்தி ஹொதா யஜதாய ஸுக்ரதுஃ ॥

அன்வயம்.

नरः, यज्ञस्य, केतुं, पुरोहितं, देवैः सरथं, अग्निं, त्रिषधस्थे, प्रथमं, समिन्धते, सुक्रतुः, होता, सः, यजथाय, बर्हिषि, निषीदन्ति ॥

---

* समीधिरे, என்பது இருக்கு.

பதவுரை.

नरः	நரஃ	கருமத்தைச் செய்கின்ற வேட்போர்கள்
यज्ञस्य	யஜ்ஞஸ்ய	வேள்வியினுடைய
केतुं	கேதும்	அறிகுறியும்,
पुरोहितं	புரோஹிதம்	வேள்வித் தலைவனால் முன்னர்ச் செய்யப்பட்டதும்,
देवैः सरथं	தெவைஃ ஸரத்யம்	தேவர்களுக்குச் சமமாகிய தேருடையதுமாகிய
अग्निं	அக்நிம்	அக்கினியை,
त्रिषधस्थे	த்ரிஷதஸ்தெ	மூன்றிடங்களில்
प्रथमं	ப்ரதமம்	முன்னர்
समिन्धते	ஸமிந்ததெ	நன்கு வளர்க்கின்றார்கள். பின்னர்,
सुक्रतुः	ஸுக்ரதுஃ	சிறந்த கருமமுடையதும்
होता	ஹோதா	தேவர்களை யழைப்பதுமாகிய
सः	ஸஃ	அவ் வக்கினி
यजथाय	யஜதாய	வேள்வியின் பொருட்டுத்
बर्हिषि	பர்ஹிஷி	தருப்பைகளில்
निषीदन्ति	நிஷீதந்தி	நிலை நிறுத்தப்பட்டிருக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

கருமங்களை நியமிக்கின்ற வேட்போர்கள், வேள்வியின் அறிகுறியாகியதும், வேள்வித் தலைவர்களால் முன் வைக்கப்பட்டதும், இந்திரனுல் தேவர்கட்குச் சமமாகிய தேருடையதென எண்ணப்பட்டதுமாகிய அக்கினியை, வலஞ் செய்யத்தக்க மூன்றிடங்களில் முன்னர் நன்கு வளர்க்கின்றார்கள். அதினின்றும், அழகிய கருமமுடையதும், தேவர்களை யழைப்பதுமாகிய அவ் வக்கினி, தருப்பையுடன் கூடிய இடத்தில் வேள்வியின் பொருட்டுத் தாபிக்கப்பட்டிருக்கின்றது என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

३ १ २ ३ १ २र
910. अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा ।
२उ ३१ २३ १२
ममेदिह श्रुतꣳ हवम् ॥ १ ॥

ꣳயꣳ வாꣳ மித்ராவꣳருணா ꣳसोꣳम ऊतावृधा ।
उꣳहꣳव ꣳश्रुꣳतꣳ ꣳहꣳव ॥

அந்வயம்.

ऋतावृधा, मित्रावरुणा !, वां, अयं सोमः, सुतः, इह, ममेत् हवं, श्रुतम् ॥

பதவுரை.

ऋतावृधा	ऊतावृधा	உண்மையை வளர்க்கின்ற
मित्रावरुणा !	मित्रावꣳरुणा !	மித்திர வருணர்களே !
वां	वाꣳ	உங்கள் நிமித்தம்
अयं सोमः	ꣳयꣳ ꣳसोꣳमः	இச் சோமம்
सुतः	ꣳसुꣳतः	பிழியப்பட்டிருக்கின்றது. ஆதலின்.
इह	उꣳह	இவ் வேள்வியில்
ममेत् हवं	उꣳमꣳम ꣳहꣳव	யான் அழைப்பதைக்
श्रुतं	ꣳश्रुꣳतꣳ	(நீவிர்) கேட்பீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம் —2. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில்—1.

வேள்வியை, அல்லது, சத்தியத்தை வளர்க்கின்ற மித்திரர் வருணர்களே ! உங்கணிமித்தம் இச் சோமம் பிழியப்பட்டிருக்கின்றது. ஆதலால், இவ் வேள்வியில் யான் அழைப்பதை ஒருதலையாகக் கேட்பீர்களாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

१ २ ३ १२ ३ १ ११ २ ३ २

911. राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे ।
३ १ २
सहस्रस्थूण आशाते ॥ २ ॥

ꣳराꣳजाꣳनावꣳनꣳभिꣳद्रुꣳहा ꣳध्रुꣳवे ꣳसꣳदꣳस्यꣳउꣳत्तꣳमे ।
ꣳसꣳहꣳस्रꣳस्थꣳणꣳ ꣳआꣳशाꣳते ॥

அந்வயம்.

राजानौ, अनभिद्रुहा, ध्रुवे, उत्तमे, सहस्रस्थूणे, सदसि, आशाते ॥

பதவுரை.

राजानौ	ராஜாநள	பிரகாசமுடையவர்களும்
अनभिद्रुहा	அநபித்ருஹா	வஞ்சனை செய்யாதவர்களுமான மித்திரர் வருணர்களே! நீவிர்,
ध्रुवे	த்ருவே	நிலைத்ததும்
उत्तमे	உத்தமே	சிறந்ததும்
सहस्रस्थूणे	ஸஹஸ்ரஸ்தூணே	ஆயிரந் தூண்களை யுடையது மாகிய
सदसि	ஸதஸி	சபையின் கண்
आशाते	ஆஸாதே	வருவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

ஈசுரர்களும், அல்லது, பிரகாசிக்கின்றவர்களும், கபடம் பண்ணுதவர்களுமான, மித்திர வருண தேவதைகாள்! நீவிர், நிலைத்ததும், சிறந்ததும், ஆயிரக்கணக்கான தூண்களையுடையமாகிய சபையின் கண் வருவீர்களாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

२ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २२३ १ २

912. **ता सम्राजा घृतासुती आदित्या दानुनस्पती ।**

१२३ १२

सचेते अनह्वरम् ॥ ३–७ ॥

இருக்கு 2-41-4-6.

தா ஸம்ராஜா க்ருதாஸுதீ ஆதித்யா தாநுநஸ்பதீ ।
ஸசெதே அநஹ்வரம் ॥

அந்வயம்.

सम्राजा, घृतासुती, आदित्या, दानुनस्पती, ता, अनह्वरं, सचेते ॥

பதவுரை.

सम्राजा	ஸம்ராஜா	ஆணையிலுலேயே அனேத்தையுஞ் செலுத்துகின்றவர்களும்
घृतासुती	க்ருதாஸுதீ	நெய்யையே அன்னமாகவுடையவர்களும்
आदित्या	ஆதித்யா	அதிதியின் புத்திரர்களும்

दानुनस्पती	தா நு நஷ்பதீ	தனத்திற்கு இறைவர்களுமான
ता	தா	அம் மித்திரா வருணர்கள்,
अनह्वरं	அ நஹ்வரம்	இனிய இயற்கையுள்ள வேள்வித்தலைவனை
सचेते	ஸசெதெ	அவியருந்துதற் பொருட்டுச் சேவிக்கின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

ஆனையால் அனைவரையுஞ் செலுத்துகின்றவர்களும், நெய்யை அன்னமாக வுடையவர்களும், "அஃதுடையவற்றின் மகிமை நெய்யன்னம்" என்று பிறமந்திரங்களுங் கூறுதலின் என்க. அதிதியின் புத்திரர்களும், தனம், அல்லது, தேவர்கட்கு இறைவர்களுமான அம் மித்திரவருணர்கள், அவியை யருந்துதற் பொருட்டு, கபடமற்ற வேள்வித் தலைவனை வழிபடுகின்றார்கள் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 7.

१२ ३२ ३१२३१ २र
913. इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः ।
३१२ ३१२र
जघान नवतीर्नव ॥ १ ॥

ஈந்த்ரோ தீசோ அஸ்தபிர்வ்ருத்ராண்யப்ரதிஷ்குதஃ ।
ஜகான நவதீர்நவ ॥

அன்வயம்.

अप्रतिष्कुतः, इन्द्रः, दधीचः, अस्थभिः, नवतीः, नव, वृत्राणि, जघान ॥

பதவுரை.

अप्रतिष्कुतः	அப்ரதிஷ்குதஃ	வேட்போர்களிடத்து, மாறு கூறுத
इन्द्रः	ஈந்த்ரஃ	இந்திரன்,
दधीचः	தீசஃ	ததீசி ரிஷியின்
अस्थभिः	அஸ்தபிஃ	எலும்புகளால்
नवतीः	நவதீஃ	தொண்ணூறு முறையாகிய
नव	நவ	தொண்ணூறு (810)
वृत्राणि	வ்ருத்ராணி	அசுரர்களின் மாயா வடிவங்களைக்
जघान	ஜகான	கொன்றனன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—மூன்றுவது மூன்றில்—1.

இதில் சாட்டியாயனியின் இதிகாசங் கூறப்படுகின்றது. அதர்வண மறையோதும் ததீசி ரிஷியின் பார்வையால் அசுரர்கள் தோல்வியடைந்து வந்தனர். அவர் சுவர்க்கத்தை யடைந்தவிடத்து இப்பூமி அசுரர் களாற் சூழப்பட்டது. பின்னர், இந்திரன் அவ் வசுரர்களுடன் போர் செய்யமுடியாதவனுய் அந்த ரிஷிபைத் தேடிக்கொண்டு செல்லுங்கால் அவர் சுவர்க்கத்தை யடைந்தனர் எனக் கேட்டனன். அதைக்கேட்டு, அங்குள் ளார்களை நோக்கி ஐய! அவருடைய எலும்புகளுள் ஏதேனுஞ் சிறிது எஞ்சியிருக்கின்றதோ? என்று வினவினன். அதற்கவர்கள், அசுவினி களுக்கு மதுவித்தையைப் போதித்த குதிரையின் தலையிருக்கின்றது அது எங்கே யுள்ளதோவெனின்? அது தெரிந்திலோம் என்றனர். மறித் தும், இந்திரன் அதைத் தேடுவீர்களாக என்றனன். பின், அதைத் தேடும் விருப்புடையவனுய் "சர்யணுவதி" என்னும் நதியில் அவ் வெலும் பைக்கண்டனன். சர்யணுவதி யென்பது குருக்ஷேத்திரத்தில் ஓடுகின்ற ஒரு நதியாம். அங்குக்கிடைத்த அத் தலை யெலும்புகளால் இந்திரன் அசுரர்களைக் கொன்றனன் என்பதாம். அல்லது, பிறர்களிடத்து மாறுபேசாத இந்திரன், ததீசி யென்னும் ரிஷியினது தலையின் எலும்புகளால் எண்ணூற்றுப்பத்து விருத்திரர்களைக் கொன்றனன். அஃதாமாறு:—மூவுலகிலுள்ள தேவர்களை வெற்றி கொள்ளுதற்பொருட்டு ஏற்றுக்கொண்ட மாயை, மூவகைப் படு கின்றது. அவைகளும் முக்காலங்களைப் பற்றி மூவகையாகின்றன. மற் றும், நிகழ்காலத்திலுள்ள தேவர்களை வெல்வதற்கு மறித்தும் ஒவ்வொன் றும் ஒன்பது வகைத்தாகின்றது. மறித்தும், உற்சாக முதலிய ஆற்றல் வடிவங்களால் மூக்குணமாகிய விடத்து இருபத்தேழு வகையா கின்றது. மீண்டும், சாத்துவிக முதலிய மூக்குணங்களின் வேறுபாட்டால் மூக்குணமாந் தன்மை யடையுங்கால் தொண்ணூற் றொன்றுகின்றது. இவ்வாறு நான்கு மூக்குணங்களைப் பெருக்குவதால் பத்துத் திக்கிலும் ஒவ்வொன்றும் நிலைக்குமிடத்து எண்ணூற்றுப் பத்தாகின்றன. இத் தன்மைய மாயையின் உருவங்களாப் மறைக்கின்ற விருத்திராசுரர்களை இந்திரன் கொன்றனன் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

३ १ २र ३ २ऊ ३ १२३ १२
914. इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम् ।
१२ ३ २२
तद्विदच्छर्यणावति ॥ २ ॥

ஊஹ்ஹஸ்வஸ்ய யஹ்ஹிரஃ பவ்ருதெஷ்வபஶ்ரிதம் ।
தஹிஹ்ஹயுணாவதி ॥

அந்வயம்.

पर्वतेषु, अपश्रितं, अश्वस्य, यत्, शिरः, तत्, इच्छन्, शर्यणावति, विदत् ॥

பதவுரை.

पर्वतेषु	பவ்ருதெஷு	மலைகளிற்
अपश्रितं	அபஶ்ரிதம்	கொண்டுபோய் வைக்கப்பட்ட
अश्वस्य	அஶ்வஸ்ய	குதிரை சம்பந்தமாகிய
यत्	யத்	யாதொரு
शिरः	ஶிரஃ	ததீசியின் தலையுண்டோ,
तत्	தத்	அதை
इच्छन्	ஊஹ்ஹந்	இந்திரன் விரும்பிச்
शर्यणावति	ஶர்யுணாவதி	சர்யணா, என்னும் நதியில்
विदत्	விதத்	பெற்றுக்கொண்டனன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

மலைகளுக்குட் கொண்டுபோய் வைக்கப்பட்ட குதிரையின் சம்பந்தமாகிய, ததீசியின் தலையை விரும்பிச் 'சர்யணா' நதியில் தேடி அதைக் கண்டு பிடித்து, அவ்வெலும்புகளால் விருத்திரர்களைக் கொன்றனன் என்பது முன் மந்திரங்களின் சம்பந்தமாம். ததீசி ரிஷி கவசவித்தையை, பிறருக்கு உபதேசித்ததால் தலைசிதறிவிட, அதற்குப் பதிலாக அவருக்குக் குதிரையின் தலை வைக்கப்பட்டுள்ளது என்பது இதிற் காண்க. (2)

மந்திரம் 9.

२उ३ २ ३ २ ३ १ २३क २र
915. अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम् ।
३ २ ३ १ २ ३२
इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥ ३–८ ॥

இருக்கு 1-84-13-15.

அத்ராஹ கொரமந்வத நாம த்வஷ்டுரபீச்யம் ।
இத்ஸா சந்த்ரமஸொ கூஹெ ॥

அந்வயம்.

गोः, चन्द्रमसः, गृहे, अत्राह, अपीच्यं, त्वष्टुः, नाम, इत्था, अमन्वत ॥

பதவுரை.

गोः	மொஃ	எப்போதுஞ் செல்கின்ற
चन्द्रमसः	அந்த்³ரமஸஃ	சந்திரனுடைய
गृहे	க்³ருʼஹே	மண்டலமென்னும்
अवाह	அவாஹ	இதன் கண்ணே (விளங்குகின்றது)
अपीच्यं	அபீ⁴ச்யம்	இரவில் மறைந்து போகின்ற
त्वष्टुः	த்வஷ்டுஃ	துவஷ்டா என்னும்
नाम	நாம	அச்சூரியனுடைய கிரணமே.
इत्था	இத்தா	(என்று) இவ்வாறு
अमन्वत	அமந்வத	இந்திரனறிந்தனன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

செல்கின்ற சந்திரனுடைய இம் மண்டலத்தின்கண் பிரகாசிக்கின்றவைகள், இரவில் மறைந்து போகின்ற சூரியனுடைய கிரணங்களே யென்று இந்திரன் உணர்ந்தனன். ஈண்டு, நீர்மயமாகிய தெளிந்த சந்திர மண்டலத்தில் சூரியனுடைய கிரணங்கள் பிரதிபலிக்கின்றன. அக்கிரணங்கள் இரவியின் கண் எவ்வாறு பெயர் பெற்றிருக்கின்றனவோ, அவ்வாறே சந்திரனிடத்தமிருக்கின்றன. இதனால் இரவில் மறைந்துபோகின்ற சூரியனுடைய வொளியானது சந்திரமண்டலத்திற் புகுந்து பகலைப் போல் இரவிலுள்ள இருட்டைப் போக்கி அனைத்தையும் விளக்குகின்றது என்பதாம். இத்தன்மைய ஒளியுடன் கூடிய சூரியன், இந்திரனே யாவன் என்க. பன்னிரண்டு சூரியர்களுக்குள், இந்திரனையும் ஒருவனாய்க் கொண்டிருத்தலின் இந்திரனையே சூரியனுக்கு கூறப்பட்டது. இதனால், "இரவு பகல்களே விளக்குகின்றவன் இந்திரனே யாவன்" என, இந்திரனுடைய தோத்திரங் காணப்படுதலின், (இம்மந்திரத்திற்கு) இந்திரனே தேவதையாவன் என்பதும் பொருந்துமாறுணர்க. இவ்வாறே நிருத்தமும் கூறுகின்றது என்பதாம். (3)

மந்திரம் 10.

३१२ १३ १ २२ ३ १ २ ३ १ २

916. इयं वामस्य मन्मन इन्द्राग्नी पूर्व्यस्तुतिः ।

३ २ ३ ३ १ २

अभ्राद् वृष्टिरिवाजनि ॥ १ ॥

ஊயம் வாமஸ்ய ஸுந்ந ஊஹ்யா ஸூ வக்வ்யுஷ்டீஃ ।
ஸுஹ்யாத வ்ருஷ்டிரிவாஜனி ॥

அன்வயம்.

इन्द्राग्नी !, वां, इयं, पूर्व्यस्तुतिः, अस्य मन्मनः, अभ्रात्, वृष्टिः इव, अजनि ॥

பதவுரை.

इन्द्राग्नी !	ஊஹ்யாக்நீ !	இந்திரன், அக்கினி, என்னுந் தேவர்களே !
वां	வாம்	உங்களிடத்தமாய்
इयं	ஊயம்	இந்த
पूर्व्यस्तुतिः	வக்வ்யுஷ்டீஃ	முக்கியமான தோத்திரம்
अस्य मन्मनः	ஸுஸ்ய ஊந்நஃ	துதிப்போர்களான இவர்களிடத்திலிருந்து
अभ्रात्	ஸுஹ்யாத்	மேகத்தினின்று
वृष्टिः इव	வ்ருஷ்டிஃ ஊவ	மழை (பெய்வது) போன்று
अजनि	ஸுஜனி	உண்டானது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—நான்காவது மூன்றில்—1. வசிட்டர் ரிஷி.

இந்திராக்கினி தேவதைகளே!, மீவிர், முக்கியமாக இத்தோத்திரத்தைக் கேட்பீர்களாக. யாருடையதினின்? துதிப்போனிய வசிட்டன் என்னும் என்னிடத்திலிருந்து உங்களிடத்தமாய், மேகத்திலிருந்து மழையுண்டாவதுபோல் உண்டானது என்க. அதைக் கேட்பீர்களாக என மேற்கூட்டுக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 11.

३ १ २३२उ ३ १ २ ३ १२३ १२
917. शृणुतं जरितुर्हवमिन्द्राग्नी वनतं गिरः ।
३ १ २ ३ १२
ईशाना पिप्यतं धियः ॥ २ ॥

ஸுணுதம் ஜரிதுர்ஹவமிந்த்ராக்நீ வநதம் கிரஃ ।
ஈஶாநா பிப்யதம் தியஃ ॥

அன்வயம்.

हे इन्द्राग्नी !, जरितुः, हवं, शृणुतं, गिरः, वनतं, ईशाना, धियः, पिप्यतं ॥

பதவுரை.

हे इन्द्राग्नी!	ஹெ இந்த்ராஸ்ரீ!	இந்திரன், அக்கினி யென்னுந் தேவர்களே! நீவிர்,
जरितुः	ஜரிதுஃ	துதிப்போர்கள்
हवं	ஹவம்	அழைக்கின்றதைக்
शृणुतं	ஶ்ருணுதம்	கேட்பீர்களாக. மற்றும்,
गिरः	கிரஃ	அவர்களுடைய துதிகளையும்
वनतं	வநதம்	நன்கு பெற்றுக்கொள்வீர்களாக.
ईशाना	ஈஶாநா	இறைவர்களான நீவிர்,
धियः	யியஃ	கருமங்களைப்
पिप्यतं	பிப்யதம்	பயனுடையனவாகச் செய்வீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

இந்திராக்கினிகளே! நீவிர், துதிப்போர்கள் அழைக்கின்றதைக் கேட்பீர்களாக. கேட்டு, அவர்களுடைய தோத்திரத்தை ஏற்றுக்கொள்வீர்களாக. அவ்வாறே, இறைவர்களான நீங்கள் (யாம்) அநுட்டிக்கின்ற கருமங்களை அவ்வப்பயன்களுடன் நிறையச் செய்வீர்களாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 12.

१ २३ १२ ३१ २३ १ २र
918. मा पापत्वाय नो नरेन्द्राग्नी माभिशस्तये ।
१ २ ३२
मा नो रीरधतं निदे ॥ ३–९ ॥

இருக்கு 7-94-1-3.

மா பாபத்வாய நொ நரெந்த்ராஸ்ரீ மாபிஶஸ்தயெ ।
மா நொ ரீரதம் நிதெ ॥

அந்வயம்.

नरा, इन्द्राग्नी!, नः, पापत्वाय, मारीरधतं, अभिशस्तये, मा, नः, निदे, मा ॥

பதவுரை.

नरा	நரா	கருமங்களைச் செலுத்துகின்ற
इन्द्राग्नी!	இந்த்ராஸ்ரீ!	இந்திரன் அக்கினி என்னுந் தேவர்களே! நீவிர்,
नः	நஃ	எங்களைப்

पापत्वाय	வாவக்ஷாய	பாவத்தின் (இழிவு)
मारीरधतं	ஸாரீரயதம்	வசமாக்காதீர்கள்.
अभिशस्तये	அஹிஸஷ்டயெ	சத்துருவின் தூஷணையின்
मा	ஸா	வசமு மாக்காதீர்கள்
नः	நஃ	(மற்றும்,) எங்களை
निदे	நிதெ	நிந்தையின்
मा	ஸா	வசமுமாக்காதீர்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

கருமத்தை நியமிப்போர்களான இந்திர அக்கினிகளே! நீவிர், எங்களை, தாழ்ந்த பாவங்களின் வசப்படுத்தாதீர்கள். அவ்வாறே, பகைவர்களாற் செய்யப்பட்ட நிந்தையின் வசமும் ஆக்காதீர்கள். மற்றும், துன்பத்திற்கும் உட்படுத்தாதீர்கள் என்பதாம். (3)

மூன்றுவது கண்டம்

முற்றும்.

நான்காவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—3. அத்தியாயம்—5. கண்டம்—4.

எட்டு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१२ ३ १२ ३१ २ ३१२
919. पवस्व दक्षसाधनो * देवेभ्यः पीतये हरे ।
३ १२ ३ २ ३ १२
मरुभ्यो वायवे मदः ॥ १ ॥

பவஸ்வ உக்ஷஸாயதொ ஜெவெப்யஃ பீதயெ ஹரே ।
மருத்ப்யோ வாயவெ மதஃ ॥

---

* த்ரஹாதேவ வீதயே, என்பது இருக்கு.

அன்வயம்.

हरे !, दक्षसाधनः, मदः, देवेभ्यः, मरुद्भ्यः, वायवे, पीतये, पवस्व ॥

பதவுரை.

हरे !	ஹரே !	பாவத்தைப் போக்குகின்ற சோமமே !
दक्षसाधनः	தக்ஷஸாதநः	ஆற்றலுக்கு சாதனனும்,
मदः	மதः	களிப்பைக் கொடுக்கின்றவனுமாகிய நீ,
देवेभ्यः	தேவேப்⁴யः	தேவர்களும்,
मरुद्भ्यः	மருத்³ப்⁴யः	மருத்துக் கணங்களும்,
वायवे	வாயவே	வாயுவும்,
पीतये	பீ தயே	அருந்துதற் பொருட்டுப்
पवस्व	பவஸ்வ	பாத்திரத்தில் ஒழுகுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1.

பசுமை நிறமுடைய, அல்லது, பாவத்தைப் போக்குகின்ற சோமமே ! ஆற்றலுக்குச் சாதனனும், மதத்தைக் கொடுக்கின்றவனுமாகிய நீ, பாத்திரத்தில் ஒழுகுவாயாக. எதன் பொருட் டெனின் ? இந்திரன் முதலிய தேவர்கள் அருந்துதற் பொருட் டென்க. அவ்வாறே, மருத்துக் கணங்களும், வாயுவும், அருந்துதற் பொருட்டும் ஒழுகுவாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

२ ३१ २ ३ १२ ३२उ ३१२
920. सं देवैः शोभते वृषा कविर्योनावधि प्रियः ।
१ २ ३ १ २
पवमानो अदाभ्यः ॥ २ ॥

ஸம் தெவைஃ ஶோபதே வ்ருஷா கவிர்யோநாவதி ப்ரியஃ ।
பவமாநோ அதா³ப்⁴யஃ ॥

அன்வயம்.

वृषा, कविः, योनौ अधि, प्रियः, पवमानः, अदाभ्यः, देवैः, संशोभते ॥

பதவுரை.

वृषा	வ௱ஷா	விருப்பைப் பொழிவதும்
कविः	கவிஃ	அனைத்தையு முணர்வதும்
योनौ अधि	யொநள அதி	தனது இடத்தில் நிலைத்திருப்பதும்
प्रियः	ப்ரியஃ	எல்லாவற்றையுந் திருப்தி செய்வதும்
पवमानः	பவமாநஃ	சுத்தம் பண்ணப்பட்டதும்
अदाभ्यः	அதாப்யஃ	ஒருவராலுந் துன்புறுத்தப்படாததுமாகிய சோமம்,
देवैः	தெவைஃ	தேவர்களுடன்
संशोभते	ஸம்ஶொபதெ	நன்கு விளங்குகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

இச் சோமம் விளங்குகின்றது. எத்தன்மைய சோமமெனின்? விரும்பியதைப் பொழிவதும், முற்றுங் காண்பதும், தனது இடத்தில் இருப்பதும், யாவர்க்கும் பிரியவடிவானதும், அல்லது, பிரியமுண்டாக்குவதும், பவித்திரமானதும், ஒருவராலுந் துன்புறுத்தப்படாததுமாம் என்க. இதனானே, நன்கு விளங்குகின்றது என்பது பெற்றாம். (2)

மந்திரம் 3.

१२ ३ २ ३ २ २उ ३ १ २
921. पवमान धिया हितो३ऽभियोनिं कनिक्रदत् ।
१ २ ३१ २र
धर्मणा वायुमारुहः ॥ ३–१० ॥

இருக்கு 9-25-1-3-2.

பவமாந தியா ஹிதொஉபியொநிம் கநிக்ரதத் |
தர்மணா வாயுமாருஹஃ ||

அந்வயம்.

पवमान!, धिया, हितः, कनिक्रदत्, योनिं अभि आरुहः, धर्मणा, वायुं आरुहः ॥

பதவுரை.

पवमान !	பவமாந !	பவித்திரமாகிய சோமமே !
धिया	தியா	எனது செய்கையால், அல்லது, விரலால்,
हितः	ஹிதஃ	தாங்கப்பட்டதும்,
कनिक्रदत्	கநிக்ரதத்	ஒலிக்கின்றதுமாகித்
योनिं अभि आरुहः	யொநிம் அபி ஆரூஹஃ	துரோணகலசத்தி லொருமையுடன் செல்வாயாக.
धर्मणा	தர்மணா	கருமவாயிலாக
वायुं आरुहः	வாயும் ஆரூஹஃ	வாயுவின் பாத்திரத்திலும் புகுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—3.

பவித்திரமாகிய சோமமே ! நீ, எனது கருமத்தால், அல்லது, விரலால் தாங்கப்பட்டுச் சப்தித்துக் கொண்டு, தனதிடமாகிய துரோண கலசத்தையடைவாயாக. மீண்டும் அதுவே கூறப்படுகின்றது:—கருமவாயிலாக வாயுவின் சம்பந்தமாகிய பாத்திரத்திற் செல்வாயாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

२ ३१ २ ३ १ २ २१ २
922. **तवाहꣳ सोम रारण *सख्य इन्दो दिवे दिवे ।**
३१२ ३ १ २ ३ १ २र ३२उ ३ १ २
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधीꣳ रतिताꣳ इहि ॥ १ ॥

தவாஹம் ஸொம ராரண ஸக்ய இந்தொ திவெ திவெ ।
பூரூணி பப்ரொ நி சரந்தி மாமவ பரிதீம் ரதிதாம் இஹி ॥

அந்வயம்.

इन्दो सोम !, तव सख्ये, अहं, दिवे दिवे, रारण, बभ्रो !, पुरूणि, मां, नि अवचरन्ति, तान् परिधीन्, अति इहि ॥

பதவுரை.

इन्दो सोम !	இந்தொ ஸொம !	ஒழுகுகின்ற சோமமே !
तव सख्ये	தவ ஸக்யெ	நினக்கு நண்பனாயிருக்கின்ற கருமத்தில்,
अहं	அஹம்	யான்

* सख्याय बभ्र, என்பது இருக்கு.

दिवे दिवे	திவெ திவெ	ஒவ்வொரு நாளும்
रारण	ரரண	இரமிக்கின்றேன்.
बभ्रो !	பஹ்ரோ !	பழுப்பு நிறமுடைய சோமமே !
पुरूणि	புரூணி	அநேக இராட்சசர்கள்,
मां	மாம்	நினக்கு நண்பனுகிய, என்னைப்
नि अवचरन्ति	நி அவசரந்தி	பீடிக்கின்றார்கள்.
तान् परिधीन्	தாந் பரிதீந்	அச் சத்துருக்களை
अति इहि	அதி இஹி	அழிப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—பெருங்கீதத்தின் இரண்டாவது சூக்கத்தில்—1. மைத்திராவருணர் வசிட்டர் ரிஷிகள்.

ஒழுகுகின்ற சோமமே! நினக்குப் பிரியமாகிய கருமத்தின்கண், யான் நாடோறும் இரமிக்கின்றேன். (நினது கட்பை விரும்புகின்றேன் என்பது பொருள்.) பழுப்பு நிறமுடைய சோமமே! நீ, அநேக அரக்கர்கள், நினக்கு நண்பனுகிய என்னைத் துன்புறுத்துகின்றார்கள். அச் சத்துருக்களை நாசப்படுத்துவாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

२ ३१ २२ ३१ २ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २

923. तवाहं नक्तमुत सोम ते दिवा दुहानो बभ्र ऊधनि ।

३ १ २२ ३२ ३१ २ ३१ २ ३ १२

घृणा तपन्तमतिसूर्यं परः शकुना इव पप्तिम ॥ २–११ ॥

இருக்கு 9-107-19-20.

தவாஹம் நக்தமுத ஸோம தே திவா துஹானோ பப்ரு ஊதனி।
க்⁴ருணா தபந்தமதிஸூர்யம் பர: ஸகுனா இவ பப்திம ॥

அந்வயம்.

बभ्रो सोम !, नक्तं, उत, दिवा, तव, ऊधनि, दुहानः, अहं (रमे), ते, घृणा, तपन्तं, परः, सूर्यं, शकुना इव, अतिपप्तिम ॥

பதவுரை.

बभ्रो सोम !	பஹ்ரோ ஸோம !	பழுப்பு நிறமுடைய சோமமே !
नक्तं	நக்தம்	இரவிலும்
उत	உத	மற்றும்,

दिवा	திவா	{பகலிலும், நினது கட்பின் பொருட்டு,
तव	தவ	உனக்கு
ऊधनि	ஊயநி	{அருகாய் இரகசியமாகிய இடத்தில்
दुहानः	தூஹாநஃ	சுவையை யடைந்தவனுப்
अहं (रमे)	அஹம் (ரமெ)	{இரமித்துக் கொண்டிருக்கின்றேன்.
ते	தெ	(அத்தகைய) யாம்
घृणा	க்ருணா	ஒளியால்
तपन्तं	தபந்தம்	விளங்குகின்றவனும்
परः	பரஃ	மேம்பட்ட இடத்திலுள்ளவனும்
सूर्यं	ஸூர்யம்	சூரியவடிவனுமாகிய உன்னை,
शकुना इव	ஸகுநா இவ	கருடப் பறவைகள் போன்று
अतिपप्तिम	அதிபப்திம	அடைவோமாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

பழுப்பு நிறமுடைய சோமமே! இரவும் பகலும், நட்பின் பொருட்டு நினக்கருகிலேயே இரமிக்கின்றேன். ஈண்டு இரமிக்கின்றேன் என்பது எஞ்சிநின்றது. சோதியால் விளங்குகின்றவனும், மேலாகிய இடத்தில் விளங்குகின்றவனும் சூரியவடிவனுமாகிய நின்னை, யான், அடைய விருப்புற்றேன். எவ்வாற்றாலெனின்? கருடப் பறவைகள் நின்னை அடைகின்றதைப் போன்று என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

924. ३ १ २ ३२उ ३ २ ३ १२
पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः ॥ १ ॥

வுநாநொ அக்ரமீதபி விஷ்வா ம்ருதொ விசர்ஷணிஃ ।
ஸும்ப்ஹந்தி விப்ரம் தீதிபிஃ ॥

அந்வயம்.

पुनानः, विचर्षणिः, विश्वा मृधः, अभि अक्रमीत्, विप्रं, धीतिभिः, शुम्भन्ति ॥

பதவுரை.

पुनानः	வுநாநஃ	சுத்தஞ் செய்யப்பட்டதும்
विचर्षणिः	விசுஷணிஃ	சிறந்த நோக்குடையதுமாகிய சோமம்,
विश्वा मृधः	விஶ்வா ஶுதஃ	துன்புறுத்துகின்ற எல்லாச் சத்துருக்களையும்
अभि अक्रमीत्	அபி அக்ரமீத்	வென்றது.
विप्रं	விப்ரம்	நுண்ணறிவுடைய அச் சோமத்தைத்
धीतिभिः	தீதிபிஃ	தோத்திரங்களாற்
शुम्भन्ति	ஶும்ஹந்தி	புகழ்கின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—மூன்றாவது மூன்றில்—1 பிருகன்மதி ரிஷி.

பவித்திரமானதும் சிறந்த பார்வையுடையதுமாகிய சோமம், பீடிக்கின்ற சத்துருக்களனைவரையுங் கடந்தது. நுண்ணறிவுடைய அச் சோமத்தை, பிழிதன் முதலியவைகளால், அல்லது, கருமங்களால் அழகுறச் செய்கின்றார்கள் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 7.

१ २र ३ १ २३ ३ ३२ ३ १ २ ३ २
925. आ योनिमरुणो रुहद्गमदिन्द्रो वृषा सुतम् ।
३१ २र
ध्रुवे सदसि सीदतु ॥ २ ॥

ஆ யொநிமரு ணொ ரு ஹத்ம மதிந்த்ரோ வ்ருஷா ஸுதம்
த்ருவே ஸதஸி ஸீதது ॥

அந்வயம்.

अरुणः, योनिं आरुहत्, वृषा, इन्द्रः, सुतं, गमत्, ध्रुवे सदसि, सीदति ॥

பதவுரை.

अरुणः	அரு ணஃ	செந்நிறமுடைய சோமம்
योनिं आरुहत्	யொநிம் ஆரு ஹத்	துரோண கலசத்திற் செல்கின்றது. பின்னர்,
वृषा	வ்ருஷா	விருப்பைப் பொழிகின்ற

* गमदिन्द्रं वृषा सुतः என்பது இருக்கு.

इन्द्रः	இந்த்ரஃ	இந்திரன்,
सुतं	ஸுதம்	சுத்தஞ் செய்த சோமத்தை
गमत्	மஜக்	அடைகின்றான். மற்றும்,
ध्रुवे सदसि	ய்ருவெ ஸதஸி	வானுலக மென்னும் நிலையாகிய இடத்தில்
सीदति	ஸீததி	இருக்கின்றான்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

சிவந்த நிறமுடைய இச் சோமம், துரோண கலசத்தை யடைகின்றது. அதன் பின்னர், விரும்பியவற்றைப் பொழிகின்ற இந்திரன், பிழியப்பட்ட அச் சோமத்தை யடைகின்றான். அடைந்து, வானுலகமென்னும், நிலைத்த விடத்தில் வசித்து வருகின்றான் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 8.

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
926. नू नो रयिं महामिन्दोऽस्मभ्यꣳ सोम विश्वतः ।
१ २ ३ १ २
आ पवस्व सहस्रिणम् ॥ ३–१२ ॥

இருக்கு. 9-40-1-3.

நகு நொ ரயிம் மஹாமிந்தொஉஸ்மப்யம் ஸொம விஶ்வதஃ ।
ஆ பவஸ்வ ஸஹஸ்ரிணம் ॥

அந்வயம்.

इन्दो !, सोम !, नः, नु, सहस्रिणं, महां, रयिं, विश्वतः, अस्मभ्यं आ पवस्व ॥

பதவுரை.

इन्दो !	இந்தொ !	பாத்திரத்தில் ஒழுகுகின்றோய் !
सोम !	ஸொம !	சோமமே ! நீ,
नः	நஃ	எங்கட்கு (உரியதாய்)
नु	நு	விரைவில்
सहस्रिणं	ஸஹஸ்ரிணம்	ஆயிரக்கணக்காய்
महां	மஹாம்	மிகுதிப்படுந்
रयिं	ரயிம்	தனங்களை
विश्वतः	விஶ்வதஃ	எல்லாவகையானும்
अस्मभ्यं	அஸ்மப்யம்	எமக்குக்
आ पवस्व	ஆ பவஸ்வ	கொடுப்பாயாக,

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

பாத்திரத்தில் ஒழுகுகின்ற சோமமே! நீ, எங்கட்கு விரைவில் ஆயிரக்கணக்காய் மிகுந்த தனங்களை அநேகம் வகையிற் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (3)

நான்காவது கண்டம்

முற்றும்.

ஐந்தாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—3. அத்தியாயம்—5. கண்டம்—5.

எட்டு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

२ ३ १२ ३ १२ ३ १ २ ३ १२ ३ १२

927. पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः ।

३२ ३ २ ३ १२ ३ १२

सोतुर्बाहुभ्याꣳ सुयतो नार्वा ॥ १ ॥

விவா ஸொமஇந்த்ர மந்தது த்வா யம் தெ ஸுஷாவ ஹர்யஶ்வாத்ரிஃ ।
ஸொதுர்பாஹுப்⁴யாꣳ ஸுயதோ நார்வா ॥

அன்வயம்.

इन्द्र!, सोमं पिब, त्वा मन्दतु, हर्यश्व!, ते, सोतुः, बाहुभ्यां, अर्वा न, सुयतः, अद्रिः, यं, सुषाव ॥

பதவுரை.

इन्द्र!	ஈந்த்ர!	இந்திரனே! நீ,
सोमं पिब	ஸொமம் விப	சோமத்தை அருந்துவாயாக.
त्वा मन्दतु	த்வா மந்தது	அச்சோமம், உன்னைக் களிப்படைவிக்குக.

हर्यश्व !	ஹயஃஶ்வ !	{ அரியென்னுங் குதிரையை யுடைய இந்திரனே !
ते	தெ	உனக்குச்
सोतुः	ஸொதுஃ	{ சோமத்தைப் பிழிகின்றவ னுடைய
बाहुभ्यां	பாஹுப்⁴யாம்	இரண்டு கைகளாலும்,
अर्वा न	அர்வா ந	{ கடிவாளத்தை யிழுத்துப் பிடிக் கப்பட்ட குதிரையைப் போல்
सुयतः	ஸுயதஃ	இனிது கொள்ளப்பட்ட
अद्रिः	அத்³ரிஃ	கல்,
यं	யம்	{ எச் சோமத்தை யிடித்துப் பிழிந் ததோ, அது உனக்குக்
सुषाव	ஸுஷாவ	{ களிப்பைக் கொடுக்குக, எனக் கூட்டுக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1. மைத்திராவருணர் வசிட்டர் ரிஷி.

இந்திரனே ! நீ, சோமத்தை யருந்துவாயாக. அச்சோமம், உன்னைக் களிப்படைவிக்குக. அரியென்னுங் குதிரையை யுடையோய் ! உன் பொருட்டுச் சோமரசத்தைப் பிழிகின்றவனுடைய கைகளால், குதிரையின் கடிவாளத்தை யிழுத்துப்பிடிப்பது போன்று, இனிது கொள்ளப்பட்ட கல், எச்சோமத்தைப் பிழிந்ததோ, அந்தச் சோமம், நினக்குக் களிப்புண்டாக்குக எனமேற் கூட்டுக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

२ ३ २ ३ २ ३ २३२ ३ १२ ३१ २ ३१ २

928. य स्ते मदो युज्यश्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि ।

१ २२

स त्वामिन्द्र प्रभूवसो ममत्तु ॥ २ ॥

யஸ்தே மதொ யுஜ்யஶ்சாருரஸ்தி யேந வ்ருத்ராணி ஹயஃஶ்வ [ஹம்ஸி ।

ஸ த்வாமிந்த்³ர ப்ரபூ⁴வஸொ மமத்து ॥

அன்வயம்.

हर्यश्व इन्द्र !, युज्यः, चारुः, मदः, ते, यः, अस्ति, येन, वृत्राणि, हंसि, प्रभूवसो !, सः, त्वां, ममत्तु ॥

பதவுரை.

हर्यश्व इन्द्र !	ஹய-ஶ்வ இந்த்ர !	அரியென்னுங் குதிரையை யுடைய இந்திரனே ! நீ
युज्यः	யுஜ்யஃ	தகுதியுள்ளதும்
चारुः	சாரு-ஃ	அழகியதும்
मदः	மதஃ	களிப்பைக் கொடுக்கின்றது மாகிய
ते	தெ	உனது
यः	யஃ	யாதொரு சோமரசம்
अस्ति	அஸ்தி	இருக்கின்றதோ,
येन	யெந	எச்சோமத்தை யருந்தியதால்
वृत्राणि	வ்ருத்ராணி	இராக்கதர்களை
हंसि	ஹம்ஸி	கொல்கின்றனையோ,
प्रभूवसो !	ப்ரபூவஸொ !	மிகுந்த தனமுடைய இந்திர !
सः	ஸஃ	அச் சோமரசம்,
त्वां	த்வாம்	உன்னைக்
ममत्तु	மமத்து	களிப்படைவிக்குக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

அரியென்னுங் குதிரையை யுடைய இந்திரனே ! தக்கதும், நல்லதும், களிப்பைக் கொடுப்பதுமாகிய உனக்கு யாதொரு சோமரசமுண்டோ, மற்றும், எச்சோமரசத்தை யருந்தியதால் மறைக்கின்ற விருத்திரர் முதலியோர்களைக் கொன்றனையோ, மிகுந்த தனமுடைய இந்திரனே ! அச் சோமரசம், உன்னைக் களிப்பிப்பதாகுக என இயைத்துக்கொள்க. (2)

மந்திரம் 3.

२ ३ १ २ ३२ ३२उ ३ १२३ १२३ १२
929. बोध सु मे मघवन् वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम् ।
३ १ २र ३ १२
इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व ॥ ३–१३ ॥

இருக்கு 7-22-1-3.

ஸொத ஸு மெ மஹவந்ய வாசமெமாம் யாம் தெ வஸிஷ்஠ொ அர்சதி [ப்ரஶஸ்திம் ।
இமா ப்ரஹ்ம ஸதமாதெ ஜுஷஸ்வ ॥

அந்வயம்.

मघवन्!, ते, प्रशस्ति, यां वाचं, वसिष्ठः, अर्चति, इमां, सु आ बोध, इमा ब्रह्म, सधमादे, जुषस्व ॥

பதவுரை.

मघवन्!	ஸவவநு !	இந்திரனே !
ते	தெ	உன்னுடைய
प्रशस्ति	ப்ரஶஸ்தீம்	தோத்திரமாகிய
यां वाचं	யாம் வாசம்	எவ்வாக்கை,
वसिष्ठः	வஸிஷ்டஃ	இந்திரியங்களை யடக்குவதிற் சிறந்தோனுனவன்
अर्चति	அர்சதி	சொல்கின்றானே,
इमां	இமாம்	அத்தகைய, இவ் வசிட்டனுடைய வாக்கை
सु आ बोध	ஸு ஆ பொய	நன்கு ஏற்றுக்கொள்வாயாக.
इमा ब्रह्म	இமா ப்ரஹ்ம	அவியாகிய இவ்வன்னத்தை
सधमादे	ஸ஧மாதெ	வேள்விச் சாலையின்கண்
जुषस्व	ஜுஷஸ்வ	அருந்துவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

இந்திரனே! உனது புகழாகிய வாக்கை, வசிட்டனென்னும் பெயர் பூண்ட ரிஷி சொல்கின்றான். இவ் வசிட்டனது வாக்கை இனிது உணர்ந்து கொள்வாயாக. மற்றும், இந்த அவியாகிய அன்னத்தை, வேள்வியில் ஏற்றுக்கொள்வாயாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

२ ३ १ २ ३ १२३ १२ ३ १ २३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

930. विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरः सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे ।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २

क्रत्वे वरे स्थेमन्यामुरीमुतोग्रमोजिष्ठं तरसं तरस्विनम् ॥ १ ॥

விஶ்வாஃ ப்ருதநா அபிபூதரம் நரஃ ஸஜூஸ்ததக்ஷுரிந்த்ரம் ஜஜநுஶ்ச ராஜஸே ।

க்ரத்வே வரே ஸ்தெமந்யாமுரீமுதோக்ரமோஜிஷ்டம் தரஸம் தரஸ்விநம் ॥

அன்வயம்.

विश्वाः, पृतनाः, अभिभूतरं, इन्द्रं, नरः, सजूः, ततक्षुः, उत च, राजसे, जजनुः, क्रत्वे, वरे, स्थेमनि, आसुरीं, उग्रं, ओजिष्ठं, तरसं, तरस्विनम् ॥

பதவுரை.

विश्वाः	விஶ்வாஃ	எல்லா
पृतनाः	ப்ருதநாஃ	உயுத்தங்களையும், அல்லது, சேனைகளையும்,
अभिभूतरं	அபிபூதரம்	(வெல்கின்ற) தாழ்த்துகின்ற
इन्द्रं	இந்த்ரம்	இந்திரனை,
नरः	நரஃ	துதிப்போர்கள்
सजूः	ஸஜூஃ	ஒன்று கூடித்
ततक्षुः	தத க்ஷுஃ	துதிகளாற் கூர்மைப்படுத்தினர்கள்.
उत च	உத அ	மற்றும்,
राजसे	ராஜஸே	தாம் விளங்குதற்கு நிமித்தமாகிய
जजनुः	ஜஜநுஃ	சூரிய னென்னும் இந்திரனை, தமது துதிகளால் வெளிப்படுத்தினர்.
क्रत्वे	க்ரத்வே	தமது இடையூறுகளை நீக்குங் கருமத்தின் பொருட்டு,
वरे	வரே	சிறந்த
स्थेमनि	ஸ்தேமநி	இடத்திலுள்ளவனும்,
आसुरीं	ஆஸுரீம்	சத்துருக்களைக் கொல்லும்
उग्रं	உக்ரம்	பேராற்றலுடையவனும்
ओजिष्ठं	ஓஜிஷ்டம்	பெருமிடுகுடையவனும்
तरसं	தரஸம்	பெரியவனுமாகிய
तरस्विनं	தரஸ்வி நம்	(வேகம்)வலிமிகுந்த இந்திரனை, தனத்தின் பொருட்டுத் துதிக்கின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில்—1. திரிசோகர், அல்லது, இபேர் ரிஷி.

சைன்யக் கூட்டங்களை யடக்குகின்ற (வெல்கின்ற) இந்திரனை, துதிப்போர்கள் ஆயுத முதலியவைகளாற் கூர்மைப் படுத்தினர்கள். அதாவது,

ஆயுதமுடையவனுகவும், குதிரைகளை யுடையவனுகவுஞ் செய்தனர்கள் என் பதாம். அல்லது, மூலத்திலுள்ள 'பிருதனு' என்பது உயுத்தமென நிகண்டு கூறுகின்றது ஆதலின், எல்லா உயுத்தங்களையும் வெல்கின்ற இந்திரனை, துதிப்போர்கள் ஒன்று கூடித் துதிகளாற் கூர்மைப்படுத்தினர்கள். அல்லது, வேட்போர்கள் தேவயுணவைக் கொடுத்தலால் பராக்கிரமமுடையவனுகச் செய்தனர். மற்றும், துதிப்போர்கள் தமது விளக்கத்தின் பொருட்டுச் சூரி யனுகிய இந்திரனைத், துதியாகிய மந்திரங்களால் தமது வேள்வியின்கண் வெளிப்படுத்தினர். அன்றியும், இவ்வாறு செய்துகொண்டு சத்துருக்களை ஒருமையுடன் கொல்பவனும், வலிமிகுந்தவனும், இதனுனே பெரும் புகழுடையவனும், விருத்தியானவனும், போரில் சத்துருவைக் கொல்லத் தக்க வேகமுடையவனும், அல்லது, ஆற்றலுடையவனுமாகிய இந்திரனைத், தனத்தின் பொருட்டுத் துதிக்கின்றார்கள் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

३ १ २ ३ १ २ ३१ २२ ३२
931. नेमिं नमन्ति चक्षसा मेषं विप्रा अभिस्वरे ।
३ १ २ ३ २ उ ३ १ २ ३ २ ३ २ २२
सुदीतयो वो अद्रुहोऽपि कर्णे तरस्विनः समृक्वभिः ॥ २ ॥

நெமிம் நமந்தி சக்ஷஸா மேஷம் விப்ரா அபிஸ்வரே ।
ஸுதீதயோ வோ அத்ருஹோऽபி கர்ணே தரஸ்வினஃ ஸம்ருக்வபிஃ॥

அன்வயம்.

விப்राः, अभिस्वरे, मेषं, नेमिं, चक्षसा, नमन्ति, सुदीतयः, अद्रुहः, वः अपि, तरस्विनः, कर्णे, ऋक्वभिः, संस्तुतः ॥

பதவுரை.

विप्राः	விப்ராः	வேட்போர்கள்
अभिस्वरे	அபிஸ்வரே	{பிருந்த ஒலியுடன் இந்திரனைத் துதிப்பதற்கு,
मेषं	மேஷம்	ஆட்டு வடிவாகியவனும்,
नेमिं	நெமிம்	வியாபகனுமாகிய இந்திரனைப்
चक्षसा	சக்ஷஸா	பார்த்தவுடனே.
नमन्ति	நமந்தி	{வணங்குகின்றார்கள். (வேள்வித் தலைவர் கூறல்:—துதிப்போர் காள்!)

सुदीतयः	ஸுதீதயஃ	பேரொளி யுடையவர்களும்,
अदुहः	அதுஹஃ	துரோகம் பண்ணுதவர்களுமான
वः अपि	வஃ அபி	நீவிரும்,
तरस्विनः	தரஸ்வினஃ	வேகமுடையவர்களாய்
कर्णे	கர்ணே	இந்திரனுடைய செவிக்கருகில்
ऋकभिः	ரிக்வபிஃ	பூசிக்கத்தக்க மந்திரங்களால்
संस्तुतः	ஸம்ஸ்துதஃ	இனிது போற்றுவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4 இருக்கு—2.

(வண்டியின்) ஆரக்கால்களே, சக்கரமானது சுற்றிக்கொண்டிருப்பது போல், எல்லாவற்றையும் வியாபித்திருக்கின்றவனும், செல்லுஞ் சீலமுடையவனுமாகிய இந்திரனை, அறிவுடையோர்கள் முழுக்கமாய்த் துதிப்பதற்குப் பணிகின்றார்கள். எத்தன்மைய இந்திரனை யெனின்? மேதாதிதியைச் சுவர்க்கத்திற் சேர்ப்பதற்கு ஆட்டி வடிவமானவனை யென்க. இப்போது வேள்விக் கலைவன் தோத்திரஞ் செய்வோர்கட்குக் கூறல்:—மற்றும், துதிப் போர்காள்! அழகிய வொளியுடையவர்களும், ஒருவரையுந் துரோகஞ் செய்யாதவர்களுமான நீங்களும், கருமங்களில், அல்லது, தோத்திரங்களில் வேகமுடையவர்களாய், இந்திரனுடைய செவிக்கருகில் அருச்சிக்கத்தக்க மந்திரங்களால், அல்லது, அநேக மந்திரங்களோடு கூடிய தோத்திரங்களால் இந்திரன் நன்கு கேட்குமாறு துதிப்பீர்களாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

१२ ३ १ २ ३ २ ३२ ३१२
932. समु रेभासो अस्वरन्निन्द्रꣳ सोमस्य पीतये ।
२२ ३१२ ३२ ३१२३ १२३ २३१२
स्वः पतिर्यदी वृधे धृतव्रतो ह्योजसा समूतिभिः ॥ ३–१४ ॥

இருக்கு 8-97-10-12-11.

ஸமு ரெஹாஸொ அஸ்வரந்நிந்த்ரꣳ ஸொமஸ்ய பீதயெ ।
ஸ்வஃ பதிர்யதீ3 வ்ருதே4 த்4ருதவ்ரதொ ஹ்யொஜஸா ஸமூதிபி4ஃ ॥

அந்வயம்.

रेभासः, सोमस्य, पीतये, इन्द्रं उ, समस्वरन्, यदी, स्वः पतिः, वृधे, धृतव्रतः, ओजसा, ऊतिभिः, सम् ॥

பதவுரை.

रेभासः	ரெஹாஸஃ	சத்தமிடுகின்ற துதிப்போர்கள்,
सोमस्य	ஸொமஸ்ய	சோமரசத்தை
पीतये	பீதயெ	அருந்துதற் பொருட்டு
इन्द्रं उ	இந்த்ரம் உ	இந்திரனையே
समस्वरन्	ஸமஸ்வரந்	இனிது துதிக்கின்றார்கள்.
यदी	யதீ	எப்போது
स्वः पतिः	ஸ்வஃ பதிஃ	வானுலகிற் கிறைவனுகிய இந்திரன்
वृधे	வ்ருதெ	வேள்வித் தலைவர் முதலியோர்களை வளர்க்கின்றனனேனு, அப்போது
धृतव्रतः	த்ருதவ்ரதஃ	கருமத்தைத் தாங்கியவனுய்
ओजसा	ஒஜஸா	ஆற்றலுடனும்
ऊतिभिः	ஊதிபிஃ	பாதுகாப்புக்களுடனுங்
सम्	ஸம்	கூடினவனுகின்றன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

ஒலிக்கின்ற துதிப்போர்கள், அல்லது, கசியபருடைய புத்திரர்களான இரே பாக்கள் என்னும் இருடிகள், இந்திரனையே துதிக்கின்றார்கள். எதன் பொருட்டெனின்? சோமரசத்தை யருந்துதற் பொருட்டென்க. எப்போது வானுலகிற்கு இறைவனுகிய, அல்லது, தனத்திற்குத் தலைவனுகிய இந்திரன், வேள்வித் தலைவர் முதலியோர்களைப் பாதுகாப்பவனுகின்றனேனு, அப்போது, கருமத்தைக் கொண்டவனுய், வலியுடனும், பாதுகாப்பாற்றல்களுடனும், அல்லது, மருத்துக்களுடனும் கூடுகின்றன். தோத்திரங்களால் ஆற்றலும், மருத்துக்களால் பாதுகாக்குந் தன்மையும் இந்திரனுக்கு உண்டாகின்ற தென்பது பொருள். (3)

மந்திரம் 7.

१ २र ३ २उ ३ १२ ३ १ २
933. यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः ।
१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २३ २ ३२
विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठं यो वृत्रहा गृणे ॥ १ ॥

யொ ராஜா சஷ்ணீநாம் யாதா ரதெபிரத்ரிகுஃ ।
விஶ்வாஸாம் தரூதா வ்ருதநாநாம் ஜ்யெஷ்டம் யொ வ்ருத்ரஹா
[ருணெ ॥

அந்வயம்.

यः, चर्षणीनां, राजा, रथेभिः, याता, अध्रिगुः, विश्वासां, पृतनानां, तरुता, यः, वृत्रहा, ज्येष्ठं, गृणे ॥

பதவுரை.

यः	யஃ	யாதொரு இந்திரன்,
चर्षणीनां	சஷ்ணீநாம்	மனிதர்களுக்கு
राजा	ராஜா	இறைவனும்,
रथेभिः	ரதெபிஃ	இரதங்களின் வாயிலாகச்
याता	யாதா	செல்கின்றவனும்,—
अध्रिगुः	அத்ரிகுஃ	பிறர்களால் தடுக்கமுடியாத நடையுடையவனும்,
विश्वासां	விஶ்வாஸாம்	எல்லாச்
पृतनानां	வ்ருதநாநாம்	சேனைகளையுங்
तरुता	தரூதா	காப்பாற்றுபவனும்
यः	யஃ	மற்றும், யாதொரு இந்திரன்
वृत्रहा	வ்ருத்ரஹா	விருத்திராசுரனைக் கொன்றவனுமாகின்றானோ,
ज्येष्ठं	ஜ்யெஷ்டம்	சிறந்தோனாகிய அவ் விந்திரனைத்
गृणे	ருணெ	துதிக்கின்றேன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—பெருங்கீத மூன்றாவதில்—1. புருகன்ம ரிஷி.

எவ் விந்திரன் மனிதர்களுக்குத் தலைவனும், இரதங்களில் வருகின்றவனும், தடையற்ற போக்குடையவனும், சேனைகளனைத்தையும் பாதுகாக்கின்றவனும், விருத்திரனைக் கொன்றவனும், குணங்களாற் சிறந்தவனுமாகின்றானோ, அவ் விந்திரனைத் துதிக்கின்றேன் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

२ ३ १ ३ ३ २३ १ २ ३ १ २ ३१२
934. इन्द्रं तꣳ शुम्भ पुरुहन्मन्नवसे यस्य द्विता विधर्तरि ।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
हस्तेन वज्रः प्रतिधायि दर्शतो * महां देवो न सूर्यः ॥ २ ॥

இருக்கு 8-70-1-2.

இந்த்ரம் தம் ஶும்ப புரு ஹந்மந்நவஸெ யஸ்ய ஶிதா விதர்தரி ।
ஹஸ்தெந வஜ்ரஃ ப்ரதிதாயி தர்ஶதொ மஹாம் தெவொ ந ஸூர்யஃ ॥

அந்வயம்.

पुरुहन्मन्!, अवसे, तं इन्द्रं, शुम्भ, यस्य, विधर्तरि, द्विता, दर्शतः, महान्, वज्रः, देवः सूर्यः न, हस्तेन, प्रतिधायि ॥

பதவுரை.

पुरुहन्मन्!	புரு ஹந்மந்!	அநேகம் பகைவரைக் கொல்லுகின்ற இந்திரனை வழிபடும் இருடியே! நீ,
अवसे	அவஸெ	(தன்னைப்) பாதுகாத்துக் கொள்ளுதற் பொருட்டு
तं इन्द्रं	தம் இந்த்ரம்	அவ் விந்திரனையே
शुंभ	ஶும்ப	அவிமுதலியவைகளைக் கொடுத்து அணிபெறச் செய்வாயாக.
यस्य	யஸ்ய	யாவனொருவன் உன்னை
विधर्तरि	விதர்தரி	நன்கு பாதுகாக்கின்றானோ, அவ் விந்திரனிடத்து,
द्विता	ஶிதா	சத்துருக்களிடத்துக் கோரத்தன்மையும், அன்பரிடத்து அநுக்கிரகத் தன்மையுமாய இரண்டு தன்மைகள் இருக்கின்றன.
दर्शतः	தர்ஶதஃ	பார்க்கத்தக்கதும்
महान्	மஹாந்	பெரியதுமாகிய
वज्रः	வஜ்ரஃ	வச்சிரத்தை,
देवः सूर्यः न	தெவஃ ஸூர்யஃ ந	பிரகாசிக்கின்ற சூரியன் போன்று
हस्तेन	ஹஸ்தெந	கையினால்
प्रतिधायि	ப்ரதிதாயி	தாங்குகின்றான். ஆதலின் அழகுறச் செய்வாயாக எனமுடிக்க

* महो दिवे न, என்பது இருக்கு.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

இருடியே! நீ, அவ் விந்திரனே, தேவவுணவைக் கொடுத்தன் முதலிய வைகளால் அலங்கரிப்பாயாக. எதன்பொருட் டெனின்? (தன்னைப்) பாதுகாத்துக்கொள்ளுதற் பொருட்டு என்க. இவ்வாறு தனதான்மா வையே அழைத்துக்கொண்டு கூறப்படுகின்றது:—உன்னைப் பாதுகாப் பவனுகிய இந்திரனிடத்து இரண்டு தன்மைகள் இருக்கின்றன. சத்துருக் களைக் கொல்வதற்கான உக்கிரத் தன்மை யொன்று. உனக்கு அருள் செய்தற் பொருட்டு அநுக்கிரகத் தன்மை யொன்றும். அவற்றுள், உக்கிரத்தன்மை (இதுவெனக்) காட்டப்படுகின்றது:—பார்க்கத்தக்கதும், பெரிதும், ஆற்றலுடையதும், விளங்குகின்ற இரவி போன்றதுமாகிய வச்சிராயுதம், இந்திரனுடைய கையால் தாங்கப்படுகின்றது என்பதாம். (2)

ஐந்தாவது கண்டம்

முற்றிற்று.

ஆறுவது கண்டம்

பிரபாடகம்—3. அத்தியாயம்—5. கண்டம்—6.

பதினேரு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१२३ २ ३२ ३ १ २र ३क २र ३२
935. परिप्रिया दिवः कविर्वयाꣳसि नप्त्योर्हितः ।
३ १ २ ३ १ २
स्वानैर्याति कविक्रतुः ॥ १ ॥

வரிவ்ரியா திவஃ கவிவயாꣳஸி நப்த்யோர்ஹிதஃ ।
ஸ்வாநைர்யாதி கவிக்ரதுஃ ॥

அன்வயம்.

कविः, कविक्रतुः, नप्त्योः, हितः, दिवः, परिप्रिया, वयांसि, स्वानैः, परियाति ॥

பதவுரை.

कविः	கவிஃ	நுண்ணறிவுடையதும்
कविक्रतुः	கவிக்ரதுஃ	கருமத்தை முடிப்பதிற் கீர்த்தி வாய்ந்ததும்,
नप्त्योः	நப்த்யோஃ	பிழிகின்ற பலகைகளின் நடுவில்
हितः	ஹிதஃ	வைக்கப்பட்டதும்
दिवः	திவஃ	வானுலகில்
परिप्रिया	பரிப்ரியா	மிகப் பிரியமுள்ளதும்,
वयांसि	வயாம்ஸி	கற்களால் இடித்துப் பிழிந்தது மாகிய சோமரசம்,
स्वानैः	ஸ்வானைஃ	எசுர்மறை யோதுவோர்களால்
परियाति	பரியாதி	அடையப்படுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. முதலாவது மூன்றில்—1.

சூரிய மதியுடையதும், கருமத் (செய்வ) திற் போறிவுடையதும் இடித்துப் பிழிகின்ற பலகைகளின் மேல் வைக்கப்பட்டதும், வானுலகில் மிகப் பிரியமானதும், கற்களால் ஆனதுமாகிய சோமரசம், வேட்போர் வாயிலாக அடையப்படுகின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१ ३२ ३ २३ १ २ ३ २ ३ १ २

936. **स सूनुर्मातरा शुचिर्जातो जाते अरोचयत् ।**

३ २ ३ १ २ ३ १ २

महान् मही ऋतावृधा ॥ २ ॥

ஸ ஸூநுர்மாதரா ஶுசிர்ஜாதோ ஜாதே அரோசயத் ।

மஹாந் மஹீ ரிதாவ்ருதா ॥

அன்வயம்.

जातः, शुचिः, महान्, सः, सूनुः, मही, ऋतावृधा, जाते, मातरा, अरोचयत् ॥

பதவுரை.

जातः	ஜாதஃ	தோன்றியதும்,
शुचिः	ஶுசிஃ	சுத்தமும்,
महान्	மஹாந்	எல்லா அவிகளிற் சிறந்ததுமாகிய

सः	ஸஃ	அச் சோமமென்னுங்
सूनुः	ஸூநுஃ	குழந்தை
मही	மஹீ	மகத்துக்களும்
ऋतावृधा	ஃதாவ்ரதா	வேள்வியை வளர்ப்பவைகளும்
जाते	ஜாதெ	உலகை யுண்டாக்குபவைகளென்னும்
मातरा	மாதரா	தனது அன்னையும் பிதாவுமானவான், மண் என்பவைகளைப்
अरोचयत्	அரொசயத்	பிரகாசிப்பிக்கின்றது.

சாயண பாடியம்

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

வெளிப்பட்டதும், பெரிதும், தேவவுணவுகளுட் சிறந்ததுமாகிய சோமமென்னும் பெயர் பூண்ட அக் குழந்தை, மகத்துக்களும், வேள்வியை வளர்ப்பவைகளும், உலகத்தை யுண்டாக்குபவைகளுமான வானுலகம் மண்ணுலகம் என்னும் தனது தாய் தந்தையர்களைப் பிரகாசிப்பிக்கின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

२ ३१ २३ १ २ ३ १ २३ १ २ ३ १२
937. प्र प्रक्षयाय पन्यसे जनाय जुष्टो *अद्रुहः ।
३क२र३ १ २
वीत्यर्ष पनिष्टये ॥ ३–१६ ॥

இருக்கு 9-9-1-3-2.

ப்ர ப்ரக்ஷயாய பந்யஸெ ஜநாய ஜுஷ்டோ அத்ருஹஃ ।
வீத்யர்ஷ பநிஷ்டயெ ॥

அந்வயம்.

(हे सोम !,) प्र प्रक्षयाय, अद्रुहः, पन्यसे, जनाय, वीति, जुष्टः, पनिष्टये, अर्ष॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	(சோமமே !)
प्र प्रक्षयाय	ப்ர ப்ரக்ஷயாய	இனிது வாழ்கின்றவரும்,
अद्रुहः	அத்ருஹஃ	தீமை செய்யாதவரும்
पन्यसे	பந்யஸெ	துதிக்கின்றவருமான

* अद्रुहे चनिष्ठया, என்பது இருக்கு.

जनाय	ஜநாய	மனிதரின் பொருட்டு,
वीति	வீதி	உணவாகத்
जुष्टः	ஜுஷ்டஃ	தக்க நீ,
पनिष्टये	பநிஷ்டயெ	தோத்திரஞ் செய்வதற்குக்
अर्ष	அஷ்ஷ	கிடைப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

சோமமே! நீ, நன்கு வாழ்கின்றவர்களும், தீமையற்றவர்களும் துதிக்கின்றவர்களுமான மக்களின் பொருட்டு, உணவாதற் குரியோனாய்த் துதிப்பதற்குக் கிடைப்பாயாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

२ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
938. त्वꣳ ह्यां३ग दैव्य पवमान जनिमानि द्युमत्तमः ।
३ १ २ ३ १ २
अमृतत्वाय घोषयन् ॥ १ ॥

க்வம் ஹ்யாம்ம தைவ்ய பவமாந ஜநிமாநி த்யுமத்தமஃ ।
அமூதக்வாய வொஷயந ॥

அந்வயம்.

दैव्य!, पवमान!, द्युमत्तमः, त्वं हि, घोषयन्, जनिमानि, अमृतत्वाय, अङ्ग, (आगच्छ) ॥

பதவுரை.

दैव्य!	தைவ்ய!	தேவர்கள் சம்பந்தமானோய்!
पवमान!	பவமாந!	புநிதமாகிய சோமமே!
द्युमत्तमः	த்யுமத்தமஃ	பேரொளியையுடைய
त्वं हि	க்வம் ஹி	நீயே,
घोषयन्	வொஷயந	ஒலித்துக்கொண்டும்
जनिमानि	ஜநிமாநி	தேவ சம்பந்தமாகிய பிறப்பைப், பலவகையாய்ச் சிந்தித்துக் கொண்டும்
अमृतत्वाय	அமூதக்வாய	மரணமிலாத் தன்மையை யடைய
अङ्ग	அஙு	விரைவில்
(आगच्छ)	(ஆகஜ்ஜ)	(வருவாயாக.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—பெருங்கீதத்தின் இரண்டாவது சூக்தியில்—1 சத்தி ரிஷி.

தேவசம்பந்தமாகிய சோமமே! வியப்பாகிய ஒளியையுடைய நீயே, இரைந்து கொண்டும் தேவசம்பந்தமாகிய பிறப்பைப் பலவகையாய் நோக்கிக் கொண்டும், மரணமிலாத் தன்மையையடைய விரைவில் வருவாயாக. ஈண்டு வருவாயாக என்பது எஞ்சி நின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

२ ३ १२ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २
939. येना * नवग्वा दध्यङ्ङपोर्णुते येन विप्रास आपिरे ।
३ १ ३ ३ २ ३ १२ ३ २२ ३ २ ३ २ ३ १ २
देवानाꣳ सुम्ने अमृतस्य चारुणा येन श्रवाꣳ † स्याशत ॥

இருக்கு 9-108-3-4.

யெநா நவஶ்வா தத்யஙாபொர்ணுதெ யெந விப்ராஸ ஆபிரெ ।
தெவாநாம் ஸும்நெ சுஶ்ரதஸ்ய சாருணா யெந ஶ்ரவாம்ஸ்யாஶத ॥

அந்வயம்.

नवग्वा, दध्यङ्, येन, द्वारं, अपोर्णुते, विप्रासः, येन, आपिरे, देवानां, सुम्ने, चारुणः, अमृतस्य, श्रवांसि, येन, आशत ॥

பதவுரை.

नवग्वा	நவஶ்வா	சிறந்த நடையுடைய
दध्यङ्	தத்யஙாபொர்ணுதெ	'தத்தியங்' என்னும் ரிஷியானவர்,
येन	யெந	எச் சோமவாயிலாக
द्वारं	சாரம்	வேள்வித் துவாரத்தைத்
अपोर्णुते	சுபொர்ணுதெ	திறந்தனரோ,
विप्रासः	விப்ராஸ:	அவர் முதலிய ஏனைய வேட்போர்கள்
येन	யெந	எச் சோமவாயிலாக
आपिरे	ஆபிரெ	பசுக்களை யடைந்தனரோ,
देवानां	தெவாநாம்	இந்திரன் முதலிய தேவர்கட்கு
सुम्ने	ஸும்நெ	வேள்வி வாயிலாக சுகமுண்டான பின்னர்
चारुणः	சாருண:	சிறந்த
अमृतस्य	சுஶ்ரதஸ்ய	நீரையும்

* येन नवग्वो, † आनशुः, என்பன இருக்கு.

श्रवांसि	ஸ்ரவாம்ஸி	அன்னங்களையும்
येन	யேந	எச் சோமவாயிலாக வேள்வித் தலைவன்
आशत	ஆஸத	அடைகின்றானோ, அச்சோமமே! (நீ வருவாயாக.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

சிறந்த நடையையுடைய, அல்லது, ஒன்பது மாதங்களில் அறுட்டிக் கின்ற 'தத்தியங்கர்' என்னும் பெயர்பூண்ட அங்கீரச ரிஷியானவர், எந்தச் சோமத்தால் சர்ப்பங்களா லடைக்கப்பட்ட வேள்வித் துவாரத்தை திறந் தனரோ, அவர் முதலிய வேட்போர்கள், எச் சோமத்தால் அச் சர்ப்பங் களாற் கொண்டு போகப்பட்ட பசுக்களை அடைந்தார்களோ, தேவர் களுக்கு வேள்விவாயிலாகச் சுகங் கிடைத்தபின்னர், சிறந்த நீரையும் அன்னங் களையும் எந்தச் சோமத்தால் வேள்வித் தலைவன் அடைந்தனனோ, அத் தகைய சோமமே! நீ வருவாயாக என, மூன் மந்திரத்துடன் கூட்டுக. (2)

மந்திரம் 6.

१२ ३२ ३२उ ३ २३ १ १
940. सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं वारं विधावति ।
१२ ३१ ३ १२
अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥ १ ॥

வொஃ: வ॒நா॒ந ஊ॒ர்மி॒ணாவ்யம் வா॒ரம் வி॒யா॒வ॒தி ।
அ॒க்₃ரே॒ வாச॒: வ॒வ॒மா॒ந॒: க॒நி॒க்ர॒த³த் ॥

அன்வயம்.

पुनानः, सोमः, ऊर्मिणा, अव्यं वारं, विधावति, पवमानः, अग्रे, वाचः, कनिक्रदत् ॥

பதவுரை.

पुनानः	வ॒நா॒நः	பிழியப்பெற்ற
सोमः	வொஃ:	சோமரசம்,
ऊर्मिणा	ஊ॒ர்மி॒ணா	தனது, தாரையாற்
अव्यं वारं	அவ்யம் வா॒ரம்	ஆட்டின் மயிர்களாய கம்பளியைப்
विधावति	வியாவ॒தி	பலவழியா யடைகின்றது.
पवमानः	வவமா॒நः	பவித்திரமாகிய (அது)

अग्रे	ஈக்ரே	வேட்போர்கட்கு முன்னர்
वाचः	வாசுஃ	வாக்கை (துதியை)
कनिक्रदत्	கநிக்ரதத்	அடிக்கடி சொல்லிக்கொண்டு செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—மூன்றுவது மூன்றில்—1.

பிழியப்பட்டதும், சுத்தமுமாகிய சோமரசம், தனது தாரையால் ஆட்டின் மயிர்களால் நெய்த கம்பளியிற் பலவகையாகச் செல்கின்றது. எத்தன்மைய சோமரசமெனின்? பவித்திரமானதும், தோத்திரஞ் செய்வதற்கு முன்னர் மீண்டும் மீண்டுஞ் சத்தமிட்டுக்கொண்டு செல்கின்றதுமா மென்பதாம். (1)

மந்திரம் 7.

३ १ २ ३ २ ३ २३ १२ ३ १२

941. धीभिर्मृजन्ति वाजिनं वने क्रीडन्तमत्यविम् ।

३ १ २ ३२ ३२ ३ १२

अभि त्रिपृष्ठं मतयः समस्वरन् ॥ २ ॥

ധീഭിർമൃജന്തി വാജിനം വനെ ക്രീഡന്തമത്യവിം ।

അഭി ത്രിപൃഷ്ഠം മതയഃ സമസ്വരൻ ॥

அங்வயம்.

वाजिनं, वने, क्रीडन्तं, अत्यविं, धीभिः, मृजन्ति, त्रिपृष्ठं, मतयः, अभि समस्वरन् ॥

பதவுரை.

वाजिनं	வாஜிநம்	ஆற்றலுடையதும்
वने	வநெ	வசதீவரி என்னும் ஆற்று நீரில்
क्रीडन्तं	க்ரீடந்தம்	விளையாடுவதும்,
अत्यविं	அத்யவிம்	தசாபவித்திரமென்னும் ஆடை தூனியிலிருந்து வெளிப்படுகின்றதுமாகிய சோமத்தை,
धीभिः	தீபிஃ	விரல்களால், அல்லது, துதிகளால்
मृजन्ति	மிருஜந்தி	வேட்போர்கள் சுத்தப் படுத்துகின்றார்கள்.

त्रिपृष्ठं	திவரூழ்ம்	துரோண கலசம், ஆதவநீயம், பூதபிருத்து, என்னும் மூன்று பாத்திரங்களைப் பற்றி நிற்கின்ற சோமத்தை,
मतयः	உதயः	தோத்திரங்கள்
अभिसमस्वरन्	சுஹிஷ்ஷ்ஷாஷு	பலவகையாய்ப் புகழ்கின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

வலியுடையதும், வசதீவரி, என்னும் ஆற்று நீருடன் விளையாடுவதும், கம்பளியாற் பவித்திரம் பண்ணப்பட்டதுமாகிய சோமரசத்தை, வேட்போர்கள், தோத்திரங்களாற் பரிசுத்தப் படுத்துகின்றார்கள். அல்லது, விரல்களாற் சுத்தஞ் செய்கின்றார்கள். மற்றும், பவித்திரமான துரோண கலசம், ஆதவநீயம், பூதபிருத்து, என்னும் பெயர்களையுடைய பாத்திரங்களை, அல்லது, சவநீயங்களைப் பற்றி நிற்கின்ற அச்சோமத்தைத், தோத்திரங்கள் துதிக்கின்றன என்பதாம். (2)

மந்திரம் 8.

१२ ३१२ ३२ ३२उ ३१ २३२
942. असर्जि कलशाँ अभिमीढ्वांत्ससिर्न वाजयुः ।
३ १ २२ ३१२
पुनानो वाचं जनयन्नसिष्यदत् ॥ ३–१८ ॥

இருக்கு 9-106-10-13.

சுவஸர்ஜி கலஶாம் சுஹீட்வாம்தஸிர்ந வாஜயுஃ ।
வாநாமோ வாசம் ஜநயந்நஸிஷ்யதத் ॥

அந்வயம்.

वाजयुः, मीढ्वान्, कलशान् अभि, असर्जि, ससिः न, पुनानः, वाचं, जनयन्, असिष्यदत् ॥

பதவுரை.

वाजयुः	வாஜயுஃ	வேள்வித் தலைவனுடைய அன்னத்தை விரும்புகின்றதும்,
मीढ्वान्	ஈட்வாந்	தெளிக்கத்தக்கதுமாகிய சோமம்
कलशान् अभि	கலஶாந் சுஹி	கலசங்களை நோக்கி
असर्जि	சுவஸர்ஜி	வார்க்கப்பட்டது.

सप्तिः न	ஸப்திஃ ந	செல்லுங் குதிரையைப் போரிற் செல்கின்றது போல்,
पुनानः	பு நா நஃ	சோமரசமானது
वाचं	வா அம்	ஒலியை
जनयन्	ஜ நயந்	உண்டாக்கிக் கொண்டுப்
असिष्यदत्	அஸிஷ்யதத்	பாத்திரத்திற் செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

வேள்வித் தலைவனுடைய உணவை விரும்பிக்கொண்டு வார்க்கப்படுவதாகிய அச்சோமரசம், கலசங்களைக் குறித்துச் செல்கின்றது. அதிலுவமை:—ஓடுகின்ற குதிரை உயுத்தத்தையடைவதுபோன்றெனல். பின்னர், பவித்திரமாகிய சோமரசம், சத்தமிட்டுக் கொண்டுப் பாத்திரத்தில் ஒழுகுகின்றது என்பதாம். (3)

மந்திரம் 9.

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ ३ २ २ १ २ २ ३ २
943. सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः ।
१ २ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः ॥ १ ॥

ஸொமஃ பவதெ ஜநிதா மதீநாம் ஜநிதா திவொ ஜநிதா
[ப்ருதிவ்யாஃ ।
ஜநிதாக்நெஜ்ஜநிதா ஸூர்யஸ்ய ஜநிதெந்த்ரஸ்ய ஜநிதொத
[விஷ்ணொஃ ॥

அந்வயம்.

मतीनां, जनिता, दिवः, जनिता, पृथिव्याः, जनिता, अग्नेः, जनिता, सूर्यस्य, जनिता, इन्द्रस्य, जनिता, उत, विष्णोः, जनिता, सोमः, पवते ॥

பதவுரை.

मतीनां	மதீநாம்	புத்திகளை
जनिता	ஜநிதா	உண்டாக்குவதும்,
दिवः	திவஃ	வானுலகை

जनिता	ஜநிதா	வெளிப்படுத்துவதும்,
पृथिव्याः	ப்ருதிவ்யாஃ	தரையை
जनिता	ஜநிதா	விருத்தி செய்வதும்,
अग्नेः	அக்நேஃ	அக்கினியை
जनिता	ஜநிதா	விளக்குவிப்பதும்,
सूर्यस्य	ஸூர்யஸ்ய	சூரியனைப்
जनिता	ஜநிதா	பிரகாசிப்பிப்பதும்,
इन्द्रस्य	இந்த்ரஸ்ய	இந்திரனைக்
जनिता	ஜநிதா	களிப்பிப்பதும்,
उत	உத	மற்றும்,
विष्णोः	விஷ்ணோஃ	விட்டுணுவை
जनिता	ஜநிதா	களிப்பிக்கின்றதுமாகிய
सोमः	ஸோமஃ	சோமம்,
पवते	பவதே	பாத்திரத்திலிருந்து கீழே, ஒழுகுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—நான்காவது மூன்றில்—1.

பிழியப்பட்ட சோமரசம் பாத்திரத்தில் ஒழுகுகின்றது. எத்தன்மைய சோமரச மெனின்? புத்திகளை, அல்லது, எண்ணுகின்ற விடயங்களை உண்டாக்குவதென்க. மற்றும், வானுலகைத் தோற்றுவிப்பதும், அவ்வாறே, மண்ணுலகை வளர்ப்பதும், அக்கினியை விளக்குவதும், அனைத்தையும் விளக்குகின்ற இரவியைப் பிரகாசிப்பதும், இந்திரனுக்குக் களிப்பை யுண்டாக்குவதும், விஷ்ணுவைக் களிப்பிப்பதுமாமென்க. இவ்வனைத்தும், சோமரசம் பிழிந்தெடுக்குங்கால் உண்டாகின்றன வென்றுணர்க. (1)

மந்திரம் 10.

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

944. ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम् ।

३ १ २र ३ १ २ २ १ २ ३ १ २ ३ २ ३१ २ ३ १२

श्येनो गृध्राणाꣳ स्वधितिर्वनानाꣳ सोमः पवित्रमत्येति रेभन् ॥

ப்ரஹ்மா தெவாநாம் பதவீஃ கவீநாமृஷிர்விப்ராணாம் மஹிஷோ [ம்ருகாணாம் ।

ஶ்யெநோ க்ருத்ராணாம் ஸ்வதிதிர்வநாநாம் ஸோமஃ பவித்ர [மத்யெதி ரெபந் ॥

அந்வயம்.

देवानां, ब्रह्मा, कवीनां, पदवीः, विप्राणां, ऋषिः, मृगाणां, महिषः, गृध्राणां, श्येनः, वनानां, स्वधितिः, सोमः, रेभन्, पवित्रं अत्येति ॥

பதவுரை.

देवानां	தெவா நாம்	தோத்திரஞ் செய்யும் வேட்போர்களுக்குள்
ब्रह्मा	ப்ரஹ்மா	பிரமன், என்னும் வேட்போனுகவும்
कवीनां	கவீநாம்	கவிகளுக்குள்
पदवीः	பதவீஃ	பதங்களை நன்கு கொண்டு கூட்டுகின்றவனுகவும்
विप्राणां	விப்ராணாம்	விப்பிரர்களுக்குள்
ऋषिः	ரிஷிஃ	முன்னில்லா விடயங்களைப் பார்க்கின்றவனுகவும்
मृगाणां	ம்ருகாணாம்	விலங்குகளுக்குள்
महिषः	மஹிஷஃ	மகிழமென்னும், விலங்கிற் கிறைவனுகவும்
गृध्राणां	க்ருத்ராணாம்	பறவைகளுக்குள்
श्येनः	சியேநஃ	பருந்தென்னும் பட்சிராசனுகவும்
वनानां	வநாநாம்	இம்சை செய்வனவற்றுள்
स्वधितिः	ஸ்வதிதிஃ	சுவதிதி (கத்தி) என்னும் பெயருடையதுமாயுள்ள
सोमः	சொமஃ	சோமரசம்,
रेभन्	ரெபந்	ஒலித்துக் கொண்டு
पवित्रं अत्येति	பவித்ரம் அதெயேதி	தசாபவித்திரமென்னும் ஆடை நூனியிலிருந்து கீழே ஒழுகுகின்றது.

சாயணபாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

சோமரசமானது, தோத்திரஞ் செய்கின்ற வேட்போர்களுக்குள், பிரமன் என்னும் வேட்போனுகவும், அல்லது, விளங்குகின்ற இந்திரன் முதலிய தேவர்களுக்கு அரசனுகவும், கவிகளுக்குள் இன்சொற் றெடுக்கின்றவனுகவும், நுண்ணறிவுடையார்களுக்குட் பரோட்சப் பொருளைக் காண்கின்ற ரிஷியாகவும், "முன்னில்லாப் பொருளைக் காண்போன் ரிஷியாவன்" என்று கூறுகின்றது நிகண்டும். விலங்குகளுக்குள் ஆற்றல் மிகுந்த மகிழ

மென்னும் இராசமிருகமாகவும், பறவைகளுக்குட் போற்றத்தக்க பருந்தாக வும், கொல்லுந் தொழில்களையுடையவைகளுள் 'சுவதிதி' என்னும், கொல் கின்ற வாளாகவுமிருக்கின்றது. இத்தன்மைய பெருமை வாய்ந்த சோமரசம், ஒலித்துக்கொண்டு கம்பளியிலிருந்து ஒழுகுகின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 11.

१ २ ३ २ ३२उ ३२३ २ ३क १२ ३ २
945. प्रा वीविपद्वाच ऊर्मिं न सिन्धुर्गिरस्तोमान् पवमानो मनीषाः ।
३ १ २२ ३२ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २२ ३१
अन्तः पश्यन् वृजनेमावराण्यातिष्ठति वृषभो गोषु जानन् ॥

இருக்கு 9-96-6-6.

வ்ரா வீவிவத்வாச ஊர்மிம் ந ஸிந்ரு்ர்கிரஸ்தோமாந் பவமாநோ மநீஷாஃ [உநீஷாஃ ।
அந்தஃ பஷ்யந் வ்ருஜநேமாவராண்யாதிஷ்டதி வ்ருஷபோ கோஷு ஜாநந் [ஜாநந் ॥

அன்வயம்.

सिन्धुः, वाचः ऊर्मिं न, पवमानः, मनीषाः, गिरस्तोमान्, प्रावीविपत्, वृषभः, अन्तः, पश्यन्, गोषु जानन्, अवराणि, इमा वृजना, आतिष्ठति ॥

பதவுரை.

सिन्धुः	ஸிந்ரு்ர்ஃ	ஓடுகின்ற நதி
वाचः ऊर्मिं न	வாசஃ ஊர்மிம் ந	ஒலித்திரளை யுண்டாக்குவது போன்று,
पवमानः	பவமாநஃ	ஒழுகுகின்ற சோமரசம்,
मनीषाः	மநீஷாஃ	மனத்திற்குப் பிரியமான
गिरस्तोमान्	கிரஸ்தோமாந்	ஒலித் திரள்களை
प्रावीविपत्	ப்ராவீவிபத்	நன்கு உண்டாக்குகின்றது.
वृषभः	வ்ருஷபஃ	விரும்பியவற்றைக் கொடுக்கின்ற அச் சோமரசம்
अन्तः	அந்தஃ	உள்ளிலிருக்கும் பொருளை (பாலின் ஆடையை)
पश्यन्	பஷ்யந்	பார்த்து
गोषु जानन्	கோஷு ஜாநந்	பசுக்களின் வெற்றியை யுணர்ந்து
अवराणि	அவராணி	வலியற்றவர்களால் நீக்கமுடியாத
इमा वृजना	இமா வ்ருஜநா	இவ்வாற்றல்களை
आतिष्ठति	ஆதிஷ்டதி	அடைகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

பவித்திரமாகிய சோமம், ஓடுகின்ற நதி, பெருமிரச்சலையுண்டாக்குகின்றது போன்று. மனத்திற்கு இரம்மியமான சத்தங்களைத் தூண்டுகின்றது. மற்றும், விரும்பியவற்றை அல்லது, நீரைப் பொழிகின்ற சோமம், உள்ளே யிருக்கின்ற பாலின் ஆடைத்திரளைப் (உள்ளிருப்பதை) பார்த்து வலி குறைந்தவர்களால் நீக்க முடியாத இவ்வாற்றல்களை அடைகின்றது. யாது செய்துகொண்டெனின்? பசுக்களின் வெற்றியை யறிந்து கொண்டென்க. இவ்வாறு பிறருடைய வலிகளை யடைகின்றது என்பதாம். (3)

ஆறுவது கண்டம்

முற்றும்.

ஏழாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—3. அத்தியாயம்—5. கண்டம்—7.

ஒன்பது மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३१ २ ३१२ ३१२ ३१२
946. अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम् ।
२ ३ २ ३ १२
अच्छा नप्त्रे सहस्वते ॥ १ ॥

அக்நிம் வொ வ்ருதந்தமத்வராணாம் புரூதமம் ।
அச்சா நப்த்ரே சஹஸ்வதே ॥

அன்வயம்.

(हे ऋत्विजः !,) वः, अध्वराणां, नप्त्रे, सहस्वते, वृधन्तं, पुरूतमं, अग्निं, अच्छ ॥

பதவுரை.

हे ऋत्विजः !	ஹே ரிக்விஜः !	வேட்போர்காள் !
वः	வः	நீவிர்
अध्वराणां	அத்வராணாம்	ஆற்றலுடையார்கட்குச்
नप्त्रे	நப்த்ரே	சுற்றமும்,
सहस्वते	ஸஹஸ்வதே	ஆற்றலுடையதும்,
वृधन्तं	வ்ருதந்தம்	(அவியால்) சுவாலையால் வளர்கின்றதும்
पुरूतमं	புருதமம்	மிகுகின்றதுமாகிய
अग्निं	அக்நிம்	அக்கினியை
अच्छ	அச்ச	அடைவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1. பிரயாகை, அல்லது, அக்கினி ரிஷி.

வேட்போர்களே ! நீங்கள், துன்பஞ் செய்யாத வலியுடையார்கட்குப் பந்துவும், வலியுடையதும், சுவாலைகளால் வளரப்பெற்றதும், மிகுந்த வியப்புடையதுமாகிய அக்கினியை நன்கடைவீர்களாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

३१ २२ ३२३ १२ ३२१ १ २
947. अयं यथा न आ भुवत्त्वष्टा रूपेव तक्ष्या ।
३२उ ३ १२
अस्य क्रत्वा यशस्वतः ॥ २ ॥

அயம் யதா ந ஆ பு⁴வத்த்வஷ்டா ரூபேவ தக்ஷ்யா ।
அஸ்ய க்ரத்வா யஸ்வதः ॥

அன்வயம்.

अयं, त्वष्टा, तक्ष्या रूपा इव, नः, यथा, आ भुवत्, अस्य, क्रत्वा, यशस्वतः ॥

பதவுரை.

अयं	அயம்	இவ் வக்கினியானது,
त्वष्टा	த்வஷ்டா	தச்சன்
तक्ष्या रूपा इव	தக்ஷ்யா ரூபா இவ	உருவமைத்தற்குரிய சட்டையை அடைவது போல்,

नः	நः	எங்கட்குப்
यथा	யதா	எவ்வாறு
आभुवत्	ஆபுவத்	பிராப்தியாகுமோ, (அவ்வாறே, யாங்கள்)
अस्य	அஸ்ய	இவ்வக்கினியை
ऋवा	ரிக்வா	உணர்பவர்களாகவும்
यशस्वतः	யசஸ்வதஃ	புகழ்பவர்களாகவும் ஆவோமாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—2.

தச்சன் நோாதற்குரிய கட்டைகளையடைவது போல், இவ்வக்கினி எங்களை அடைகின்றது. மற்றும், யாங்கள் இவ்வக்கினியின் ஞானமுடையவர்களாகவும், புகழுடைவர்களாகவுமாவோமாக, ஈண்டு ஆவோமாக என்பது எஞ்சி நின்றது. (2)

மந்திரம் 3.

३१ २र ३२उ ३ २३१२
948. अयं विश्वा अभि श्रियोऽग्निर्देवेषु पत्यते ।
२उ ३ १२
आ वाजै रुप नो गमत् ॥ ३–२० ॥

இருக்கு 8-102-7-9.

அயம் விஶ்வா அபி ஶ்ரியோ(அ)க்னிர்தெவேஷு வத்யதெ ।
ஆ வாஜெபி ருப நோ கமத் ॥

அந்வயம்.

देवेषु, अयं अग्निः, श्रियः, विश्वाः, अभि पत्यते, वाजैः, नः, उपागमत् ॥

பதவுரை.

देवेषु	தெவேஷு	எல்லாத் தேவர்களுக்குள்ளும்
अयं अग्निः	அயம் அக்னிஃ	இவ்வக்கினி, மனிதர்களின்
श्रियः	ஶ்ரியஃ	சம்பத்துக்கள்
विश्वाः	விஶ்வாஃ	அனைத்தையும்
अभि पत्यते	அபி வத்யதெ	அடைகின்றது. அத்தகைய அக்கினி,
वाजैः	வாஜைஃ	உணவுகளுடன்
नः	நஃ	எங்கட்குக்
उपागमत्	உபாகமத்	கிடைக்குக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—3.

மனிதர்களின் சம்பத்துக்க ளனைத்தையும் யாதொரு அக்கினி யடைகின்றதோ, அவ் வக்கினி, எங்கட்கு அன்னங்களுடன் கிடைக்குக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

३१२ ३१ २३ २३१२३ १२
949. इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम् ।
३१२ ३क २र ३१२ ३२३ १२
शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन्धारा ऋतस्य सादने ॥ १ ॥

ஊமமிந்த்ர ஸுதம் பிப ஜ்யேஷ்டமமர்த்யம் மதம் ।
ஶுக்ரஸ்ய த்வாஸ்யக்ஷரந்தாரா ஃதஸ்ய ஸாதநெ ॥

அந்வயம்.

इन्द्र !, ज्येष्ठं, मदं, अमर्त्यं, सुतं, इमं, पिब, ऋतस्य, सादने, शुक्रस्य, धाराः, त्वा, अभ्यक्षरन् ॥

பதவுரை.

इन्द्र !	ஊந்த்ர !	இந்திரனே ! நீ,
ज्येष्ठं	ஜ்யேஷ்டம்	மிகச் சிறந்ததும்
मदं	மதம்	களிப்பைக் கொடுப்பதும்,
अमर्त्यं	அமர்த்யம்	மாந்தத்தைக் கொடுக்கின்ற ஏனைய பொருள்கள் போற் கொல்லாததும்,
सुतं	ஸுதம்	சமஸ்காரம் பண்ணப்பட்டதுமாகிய
इमं	ஊமம்	இச் சோமத்தை
पिब	பிப	அருந்துவாயாக.
ऋतस्य	ஃதஸ்ய	வேள்விச்
सादने	ஸாதநெ	சாலையிலிருக்கின்றதும்
शुक्रस्य	ஶுக்ரஸ்ய	பிரகாசமுடையதுமாகிய சோமத்தின்
धाराः	தாராஃ	தாரைகள்
त्वा	த்வா	உன்னை
अभ्यक्षरन्	அஸ்யக்ஷரந்	நோக்குகின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இரண்டாவது—மூன்றில்—1. கோதம ரிஷி.

இந்திரனே! நீ, பிழியப்பெற்ற சோமரசத்தை யருந்துவாயாக. எத்தன்மைய சோமரசமெனின்? மிகச் சிறந்ததும், களிப்பைக் கொடுப்பதும், மாந்தத் தகும்பொருள் போல் கொல்லுந் தன்மையில்லாததும், வேள்விச்சாலையில் வசிப்பதுமாமென்க. (இத்தன்மைய) சோமரசத்தின் தாரைகள், உன்னை யடைதற் பொருட்டுத் தாமாகவே வருகின்றன என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

२ ३ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
950. नकिष्ट्वद्रथीतरो हरी यदिन्द्र यच्छसे ।
२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
नकिष्ट्वानु मज्मना नकिः स्वश्व आनशे ॥ २ ॥

நகிஷ்ட்வத்³ரதீ²தரோ ஹரீ யதி³ந்த்³ர யச்ச²ஸே ।
நகிஷ்ட்வாநு மஜ்மநா நகிः ஸ்வஶ்வ ஆநஶே ॥

அந்வயம்.

इन्द्र!, यत्, हरी, यच्छसे, त्वत्, रथीतरः, नकिः, त्वा अनु, मज्मना, नकिः स्वश्वः, नकिः आनशे ॥

பதவுரை.

इन्द्र!	உந்த்³ர!	இந்திரனே!
यत्	யத்	எதனால், நீ,
हरी	ஹரீ	அரி என்னும், தனது குதிரைகளை
यच्छसे	யச்ச²ஸே	இரதத்திற் பூட்டுகின்றாயோ,
त्वत्	த்வத்	அதனால், உன்னிலும்
रथीतरः	ரதீ²தரः	சிறந்த இரதமுடையவர்
नकिः	நகிः	யாரும் இலர்.
त्वा अनु	த்வா அநு	நின்னைப் போல்,
मज्मना	மஜ்மநா	வலியுடையாரும்
नकिः	நகிः	யாரும் இலர்.
स्वश्वः	ஸ்வஶ்வः	சிறந்த குதிரையுடையவரும்
नकिः आनशे	நகிः ஆநஶே	தினைக் கொப்பானவரிலர்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—2.

இந்திரனே! நீ, எக்காரணத்தால் அரி என்னுங் குதிரைகளை இரதத்திற் பூட்டுகின்றனையோ, அக்காரணத்தால், நின்னிலுஞ் சிறந்த இரதமுடையவர் எவருமிலர் என்பதாம். எனையோர்களுக்கு இத்தன்மைய இரதமின்மையின் என்க. உன்னை நோக்க ஆற்றலில் ஒப்புடையவரும் ஒருவருமிலர். குதிரை யுடையவரும் நினக் கொப்பானவர் எவருமிலர். நின்னுடைய குதிரை மிகச் சிறப்புடையதாமாதலின் என்க. இந்திரனைப் போன்ற வலியுடையானும் குதிரையுடையானும் எவனும் இலன் என்பது பொருள். (2)

மந்திரம் 6.

१२ ३१२ ३ १२
951. **इन्द्राय नूनमर्चतोक्थानि च ब्रवीतन ।**
३२ २ ३१ २ ३ १२ ३ ११
सुता अमत्सुरिन्दवो ज्येष्ठं नमस्यता सहः ॥ ३–२१ ॥

இருக்கு 1-84-4-6-5.

இந்ராய நூநமர்சதோக்தாநி ச ப்ரவீதந ।
ஸுதா அமத்ஸுரிந்தவோ ஜ்யேஷ்ட²ம் நமஸ்யதா ஸஹ: ॥

அந்வயம்.

(हे ऋत्विजः!,) इन्द्राय, नूनं, अर्चत, उक्थानि, ब्रवीतन, सुताः, इन्दवः, अमत्सुः, ज्येष्ठं, सहः, नमस्यत ॥

பதவுரை.

(हे ऋत्विजः!)	(ஹே ரிக்விஜ:!)	(வேட்போர்களே! நீவிர்)
इन्द्राय	இந்ராய	இந்திரனுக்கு
नूनं	நூநம்	விரைவிற்
अर्चत	அர்சத	பூசை செய்வீர்களாக.
उक्थानि	உக்தாநி	மந்திரமாகிய தோத்திரங்களையுஞ்
ब्रवीतन	ப்ரவீதந	சொல்வீர்களாக.
सुताः	ஸுதா:	சமஸ்காரம் பண்ணப்பெற்ற (பிழிந்த)
इन्दवः	இந்தவ:	சோமரசம்,
अमत्सुः	அமத்ஸு:	இங்குவந்த, இந்திரனுக்குக் களிப்பைக் கொடுப்பதாகுக. பின்னர்,

ज्येष्ठं	ஜ்யேஷ்ட²ம்	(நீவிர்) போற்றத் தக்கவனும்
सहः	ஸஹஃ	வலியுடையவனுமாகிய இந்திரனுக்கு
नमस्यत	நமஸ்யத	வணக்கஞ் செய்வீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—3.

வேட்போர்காள்! நீவிர், இந்திரனுக்குப் பூசை செய்வீர்களாக. மீண்டும் இப்பொருளே விளக்கப்படுகின்றது. கீதமிலாத மந்திரங்களாலான 'சஸ்த்திரமென்னுங்' தோத்திரங்களையும் படிப்பீர்களாக. பிழியப்பெற்ற சோமரசம் இங்கு வந்த இந்திரனுக்குக் களிப்பைக் கொடுப்பதாகுக. பின்னர், மிகச் சிறந்தோனும், ஆற்றல் மிக்குடையோனுமாகிய அவ் விந்திரனே வணங்குவீர்களாக என்பதாம் (3)

மந்திரம் 7.

१ २ ३२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

952. इन्द्र जुषस्व प्रवहा याहि शूर हरिह ।

१ २ ३ १ २ ३१ १ ३२र ३ १ २

पिबा सुतस्य मतिर्न मधोश्चकानश्चारु मदाय ॥ १ ॥

இந்ர ஜுஷஸ்வ ப்ரவஹா யாஹி ஶூர ஹரிஹ ।

பிபா ஸுதஸ்ய மதிர்ந மதோ⁴ஶ்சகானஶ்சாரு மதா³ய ॥

அந்வயம்.

हरिह, शूरः, हे इन्द्र!, आयाहि, जुषस्व, प्रवह, चारु, चकानः, मतिः, सुतस्य, मधोः, मदाय, न, पिब ॥

பதவுரை.

हरिह	ஹரிஹ	நீலநிறக் குதிரை யுடையவனும்,
शूरः	ஶூரஃ	பராக்கிரம முடையவனுமாகிய
हे इन्द्र!	ஹே இந்ர!	இந்திரனே! (நீ)
आयाहि	ஆயாஹி	வருவாயாக.
जुषस्व	ஜுஷஸ்வ	வந்து, யான் கொடுத்த தேவ வுணவுகளே ஏற்று
प्रवह	ப்ரவஹ	உண்பாயாக.

चारु	ஆரு	மற்றும், அழகுடைய நீ,
चकानः	அகாநः	விரும்பப்பட்டதும்
मतिः	மதிः	அறிவைக் கொடுக்கின்றதும்
सुतस्य	ஸுதஸ்ய	சமஸ்காரம் பண்ணப்பெற்றதுமாகிய சோமத்தின்
मधोः	மதோः	மதுர இரசத்தை
मदाय	மதாய	களிப்பின் பொருட்டு
न	ந	இப்போது
पिब	பிப	அருந்துவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—மூன்றுவது மூன்றில்—1.

(இந்திர! நீ) என்னுற் கொடுக்கப்பட்ட அவிகளை ஏற்றுக்கொள்வாயாக. வீரியமுடையோய்! நீ வருவாயாக. பச்சைப் புரவியை யுடையோய்! நீ, சோமரசம் நன்கு அருந்துதற் பொருட்டு வருவாயாக என முடித்துக் கொள்க என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

१२ ३२३२ ३ २ ३२ ३ १ २ ३२
953. इन्द्र जठरं नव्यं न पृणस्व मधोर्दिवो न ।
३ २ ३२ ३ २र १२ ३ १२ ३ १ २
अस्य सुतस्य स्वा३र्नोप त्वा मदाः सुवाचो अस्थुः ॥ २ ॥

ஊ॒ர்ஜ ஜ²ஂ²ரம் நவ்யம் ந வ்ருணஷ்வ மதோர்தி³வோ ந ।
ஸுதஸ்ய ஸ்வா³ர்நோப த்வா மதா³: ஸுவாசோ அஸ்து²: ॥

அந்வயம்.

इन्द्र!, सुतस्य, अस्य, मधोः, दिवः न, सुवाचः, मदाः, स्वः न, त्वा उपास्थुः, जठरं, नव्यं न, पृणस्व ॥

பதவுரை.

इन्द्र!	ஊர்ஜ!	இந்திரனே! நீ,
सुतस्य	ஸுதஸ்ய	சமஸ்காரம் பண்ணப்பெற்றதும்,
अस्य मधोः	அஸ்ய மதோः	மதுரமுமாகிய இச் சோமத்திற்கு,
दिवः न	தி³வ: ந	சுவர்க்கத்தினும் சிறந்த

सुवाचः	ஸுவாசஃ	தோத்திரத்துடன் கூடிய
मदाः	மதாஃ	களிப்பு
स्वः न	ஸ்வர் ந	சுவர்க்கம் போன்று
श्वा उपास्थुः	ச்வா உபாஸ்துஃ	நின்பாலிருக்கின்றது.
जठरं	ஜடரம்	நினது வயிற்றை
नव्यं न	நவ்யம் ந	அபூர்வமாய்
पृणस्व	ப்ருணஸ்வ	நிறைத்துக் கொள்வாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7 இருக்கு—3.

இந்திரனே! நீ, வயிற்றை மிகப் புதிதாய் பூரணமாக்கிக் கொள்வாயாக. பிழியப் பெற்றதும், மதுரமுமாகிய இச் சோமரசத்தின், இனிய வாக்குகள் சுவர்க்கத்திருப்பன போன்று நின்னிடத்திலிருக்கின்றன என்பதாம். (3)

மந்திரம் 9.

१ २ ३२ ३ २उ ३ १ २३ २उ२
954, इन्द्रस्तुराषाण्मित्रो न जघान वृत्रं यतिर्न ।
३ १२ ३२उ ३१ २ ३उ ३ २३ १२
बिभेद बलं भृगुर्न ससाहे शत्रून्मदे सोमस्य ॥ ३–२२ ॥

இந்த்ரஸ்துராஷாண்மித்ரோ ந ஜகான வ்ருத்ரம் யதிர்ந ।
பிபேத³ பலம் ப்⁴ருகு³ர்ந ஸஸாஹே ஸத்ரூன்மதே³ ஸோமஸ்ய ॥

அந்வயம்.

तुराषाट्, इन्द्रः, मित्रो न, वृत्रं, जघान, यतिः न बलं, बिभेद, सोमस्य, मदे, भृगुः न शत्रून्, ससाहे ॥

பதவுரை.

तुराषाट्	தூராஷாட்	போரில் தைரியமுடைய
इन्द्रः	இந்த்ரஃ	இந்திரன்,
मित्रो न	மித்ரோ ந	மித்திர தேவதை போன்று,
वृत्रं	வ்ருத்ரம்	சத்துருவைக்
जघान	ஜகான	கொன்றனன்.
यतिः न बलं	யதிர் ந பலம்	பலன், என்னும் தானவனை, பிருகு முனிவர் கொன்றது போன்று

विभेद	விபெத	சின்னபின்னமாக்கினன்.
सोमस्य	ஸொமஸ்ய	சோமத்தின்
मदे	மதெ	மதமுண்டானபோது
भृगुः न शत्रून्	ப்ருகுர்ந சத்ரூன்	பிருகு சத்துருவைக் கொன்றது போன்று,
ससाहे	ஸஸாஹெ	சத்துருவைக் கொன்றனன் என் பதாம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—3.

இந்திரன், மித்திரனைப் போன்று விருத்திராசுரனுகிய சத்துருவைக் கொன்றனன். வீரனைப்போன்று தானவருடைய வலிமைச் சின்னபின்ன மாக்கினன். பிருகுவைப் போன்று, சோமரசத்தின் மதமுண்டாகிய விடத்துச், சத்துருவைக் கொன்றனன் என்பதாம். (3)

வித்தியாதீர்த்த மகேசுரர், மறைப்பொருளை விளக்குவதால்
மாவிருளின் துன்பொழித்துப் புருடார்த்தங்கள்
நான்கையுங் கோடுப்பாராக.

ஏழாவது கண்டம்

முற்றும்.

ஐந்தாவது அத்தியாயமும்

முற்றிற்று.

சுப்ரமண்யோம்! சுப்ரமண்யோம்!! சுப்ரமண்யோம்!!!

ஆறுவது அத்தியாயம்.

இரண்டாம் பாதி.

தேவதைகள் :—1, 6, 11, 13, 16, 20, பவமான சோமம். 7, 21, அக்கினி. மித்திரா வருணர்கள். 6, 14, 15, 22, 23, இந்திரன். 10, இந்திராக்கினிகள்.

சந்தங்கள் :—1, 7, சகதி. 2, 6, 8, 11, 13, 16, காயத்திரி. 2, 12, பிருகதி. 14, 15, 21, பங்தி. 17, ககுப் சதோபிருகதி முறையாய். 18, 22, உஷ்ணிக். 18, 13, அநுஷ்டுப். 20, திரிஷ்டுப்.

சுரங்கள் :—1, 7, ரிஷாதம். 2, 6, 8, 11, 13, 16, ஷட்சம். 12, மத்தியமம். 14, 15, 21, பஞ்சமம். 17, முறையாய் ரிஷபமும் மத்தியமமுமாம். 18, 22, ரிஷபம். 16, 15, 21, பஞ்சமம். 17, ரிஷபம். 18, 22, ரிஷபம். 16, 23, காந்தாரம், 20, தைவதம், இருடிகளே ஆங்காங்குக் கூறுவாம்.

முதலாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—3. அத்தியாயம்—6. கண்டம்—1.

பதின்மூன்று மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३१२ ३ १ २३१ २
955. गोवित्पवस्व वसुविद्भिरण्यविद्रेतोधा इन्दो भुवनेष्वर्पितः ।
२ ३१२ ३२उ ३ २३ १२ ३ १ २र
त्वꣳ सुवीरो असि सोम विश्वविꣳ त्वा नर उप गिरेम आसते ॥

மொவித்பவஸ்வ வஸுவித்பிரண்யவித்ரேதோதா இந்தோ புவனேஷ்வர்பிதஃ।
[ஷவிதஃ।
த்வம் ஸுவீரோ அஸி ஸோம விஶ்வவித்ம் த்வா நர உப கிரேம ஆஸதே ॥
[ஸுவதே ॥

---

* तं त्वा विप्रा, என்பது இருக்கு.

அன்வயம்.

इन्दो !, गोवित्, वसुवित्, हिरण्यवित्, रेतोधाः, भुवनेषु, अर्पितः, सोम ! त्वं, पवस्व, सुवीरः, विश्ववित्, असि, तं, त्वा, इमे नरः, गिरा, उपासते ॥

பதவுரை.

इन्दो !	உந்தோ !	சோமமே ! நீ,
गोवित्	கோவித்	பசுவைக் கொடுப்பவனும்,
वसुवित्	வஸுவித்	தனத்தைக் கொடுப்பவனும்,
हिरण्यवित्	ஹிரண்யவித்	பொன்னைக் கொடுப்பவனும்,
रेतोधाः	ரெதோதாயாஃ	பச்சிலைகளின் உற்பாதக சத்தியைத் தாங்குபவனும்
भुवनेषु	பூவநேஷு	பலவகை நீர்களில்
अर्पितः	அர்பிதஃ	அநேக பீசங்களாக இருக்கப் பட்டவனுமாகின்றாய்.
सोम ! त्वं	ஸோம ! த்வம்	மற்றும், சோமமே ! நீ,
पवस्व	பவஸ்வ	ஓழுகுவாயாக.
सुवीरः	ஸுவீரஃ	(நீ) சிறந்த வீரனுய்
विश्ववित्	விச்வவித்	உலகத்தை யறிந்தவனுக
असि	அஸி	இருக்கின்றனை.
तं	தம்	அத்தகைய
त्वा	த்வா	உன்னை
इमे नरः	இமே நரஃ	இவ் வேட்போர்கள்
गिरा	கிரா	தோத்திரத்தால்
उपासते	உபாஸதே	உபாசிக்கின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

எவருடைய சுவாசத்திலிருந்து வேத முண்டானதோ, எவர் வேதங்களிலிருந்து உலகனைத்தையு முண்டாக்கினரோ, அவ் வித்தியாதீர்த்த மகேசுவரனை வணங்குகின்றேன்.

கண்டம்—2. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1. சிகதர் நிவாரி, பிருசுகந்தி, ஓசர், ரிஷி.

சோமமே ! நீ, ஓழுகுவாயாக. எத்தன்மைய நீ யெனின் ? பசுக்களைக் கொடுப்பவனும், தனத்தைக் கொடுப்பவனும், சுவர்ணத்தைக் கொடுப்பவனும், பச்சிலை முதலியவைகட்கு நீரைக் கொடுப்பவனும், அல்லது, உற்பத்தியாகும் வலியை நீரில் தாங்குபவனு மாகின்றாய். மற்றும், சோமமே ! நீ,

எத்தன்மைய னெனின்? சிறந்த பராக்கிரமமுடையவனும், உலகமனைத்தையும் உணர்ந்தவனுமாகின்றாய். நீ இத்தன்மையனாயிருக்கின்றபடியாலின் இவ் வேட்போர்கள் தோத்திரத்தால் (உன்னை) உபாசிக்கின்றார்கள் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

२ ३ १ २ ३ २ २ १२ ३ १ २२
956. त्वं नृचक्षा असि सोम विश्वतः पवमान वृषभ ता विधावसि ।
१ २ ३ १२३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १२
स नः पवस्व वसुमद्धिरण्यवद्वयꣳ स्याम भुवनेषु जीवसे ॥ २ ॥

ꣳ नृचक्षा असि सोम विश्वतः पवमान वृषभ ता विधावसि ।
[धावसि ।

स नः पवस्व वसुमद्धिरण्यवद्वयꣳ स्याम भुवनेषु जीवसे ॥
[जीवसे ॥

அன்வயம்.

पवमान!, वृषभ!, सोम! त्वं, विश्वतः, नृचक्षा असि, ताः, विधावसि, सः त्वं, नः, पवस्व, वसुमत्, हिरण्यवत्, भुवनेषु, जीवसे, वयं स्याम ॥

பதவுரை.

पवमान!	பவமான!	சமற்காரஞ் செய்யப்பட்டோய்!
वृषभ!	வ்ருஷப!	நீரைப் பொழிவோய்!
सोम! त्वं	சோம! ꣳ	சோமமே! நீ,
विश्वतः	விச்வதः	எல்லாப் புவனங்களிலும் (உள்ள)
नृचक्षा असि	நிருசக்ஷா அஸி	மனிதர்கட்குச் சாட்சியாக இருக்கின்றாய்.
ताः	தாः	அந்நீரை
विधावसि	விதாவஸி	பல தூனிகளாலடைகின்றாய்.
सः त्वं	ஸஃ ꣳ	அத்தன்மைய நீ,
नः	நஃ	எங்களிமித்தமாய்
पवस्व	பவஸ்வ	ஓழுகுவாயாக. (மற்றும்)
वसुमत्	வஸுமத்	பசுக்கள் முதலிய தனத்தையுடையவர்களும்

हिरण्यवत्	ஹிரண்யவக்	சுவர்ணமுடையவர்களுமாய்
भुवनेषु	ஸுவநெஷு	உலகங்களில்
जीवसे	ஜீவஸெ	வாழ்வதற்கு
वयं स्याम	வயம் ஸ்யாம	(யாம்) வலியுடையவர்களாவோமாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

சோமமே! நீ, எல்லா வுலகங்களிலும் மனிதர்களைக் காண்போனாயிருக்கின்றாய். பவித்திரமாகிய சோமமே! மழையைப் பெய்விப்போய்! நீ, நீரில் பலவகையான பீஜவடிவமாய்ச் செல்கின்றாய். அத்தன்மைய நீ, எங்களின் பொருட்டு ஒழுகுவாயாக. மற்றும், அநேக விதமான பசுக்கள் முதலியவைகளுடன் கூடியவர்களாகவும், பலவகை சுவர்ணங்களுடன் கூடியவர்களாகவும் நாங்கள் உலகங்களில் வாழ்வதற்கு ஆற்றலுடையவர்களாவோமாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

३ २ ३ १ २र ३ १२ ३१ २ ३१ २ ३क२र
957. ईशान इमा भुवनानि ईयसे युजान इन्दो हरितः सुपर्ण्यः ।
१ २ ३१२ ३२उ ३ १२ ३२ २ ३ १२
तास्ते क्षरन्तु मधुमद्घृतं पयस्तव व्रते सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः ॥

இருக்கு 86-39-38-37.

ஈஶாந இமா ஸுவநாநி ஈயஸெ யுஜாந இந்தோ ஹரிதஃ
[ஸுபர்ண்யஃ ।
தாஸ்தெ க்ஷரந்து மதுமத்ஸ்ருதம் பயஸ்தவ வ்ரதெ ஸொம திஷ்ஷந்து
[க்ருஷ்டயஃ ॥

அந்வயம்.

इन्दो!, ईशानः, हरितः, सुपर्ण्यः, युजानः, इमाः, भुवनानि, ईयसे, ताः, ते, मधुमत्, घृतं, पयः, क्षरन्तु, सोम!, कृष्टयः, तव, व्रते, तिष्ठन्तु ॥

பதவுரை.

इन्दो !	ஈந்தோ !	சோமமே !
ईशानः	ஈஶாநஃ	அனைத்திற்கு மிறைவனுகிய நீ,
हरितः	ஹரிதஃ	பச்சை நிறமுடையதும்
सुपर्ण्यः	ஸுபர்ண்யஃ	அழகிய நடையுடையதுமாகிய குதிரையை
युजानः	யுஜாநஃ	இந்திரனைத் தனது இரதத்திற் பூட்டுமாறு செய்வித்து,
इमाः	இமாஃ	இந்த
भुवनानि	புவநாநி	உலகங்களை
ईयसे	ஈயஸே	அடைகின்றாய்.
ताः	தாஃ	அத்தகைய
ते	தே	உன்னுடைய,
मधुमत्	மதுமத்	மதுரமுள்ளதும்
घृतं	க்ருதம்	விளங்குவதுமாகிய
पयः	பயஃ	நீரைப்
क्षरन्तु	க்ஷரந்து	பெய்விப்பாயாக.
सोम !	ஸோம !	சோமமே !
कृष्टयः	க்ருஷ்டயஃ	மனிதர்கள்
तव	தவ	உன்னுடைய
व्रते	வ்ரதே	கருமத்தில்
तिष्ठन्तु	திஷ்஠ந்து	இருந்து கொண்டே இருப்பார்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

சோமமே! அனைத்திற்கும் இறைவனுகிய நீ, இவ்வுலகத்திலுள்ள உயிர்களனைத்தையு மடைகின்றாய். யாது செய்து கொண்டெனின் ? பச்சை நிறமுடையதும், அழகிய நடையுடையதுமாகிய இந்திரனுடைய குதிரைகளை இரதத்திற் பூட்டுமாறு செய்வித்துக் கொண்டென்க. மதுரத்தோடு கூடியதும், பிரகாசமுடையதுமாகிய நீரை அவைகள் பொழிவனவாகுக. சோமமே! நினது கருமத்தில், மனிதர்களனைவரும் இருந்து கொண்டே இருப்பார்களாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

१२ ३ २ ३ १ २
958. पवमानस्य विश्ववित् प्र ते सर्गा असृक्षत ।
१२ ३ २ १ १ २
सूर्यस्येव न रश्मयः ॥ १ ॥

வவமாநஸ்ய விஶ்ஶவித் ப்ர தெ ஸர்கா அஸ்ருக்ஷத ।
ஸூர்யஸ்யேவ ந ரஶ்மயஃ ॥

அன்வயம்.

हे विश्ववित्!, पवमानस्य, ते, सर्गाः, सूर्यस्य, रश्मय इव, न, प्रासृक्षत ॥

பதவுரை.

हे विश्ववित्!	ஹெ விஶ்ஶவித்!	முற்றுமுணர்கின்ற சோமமே!
पवमानस्य	வவமாநஸ்ய	சமஸ்காரம் செய்யப்பெற்ற
ते	தெ	உனது
सर्गाः	ஸர்காஃ	தாரைகள்
सूर्यस्य रश्मय इव	ஸூர்யஸ்ய ரஶ்மய இவ	இரவியின் கிரணங்கள் போன்று
न	ந	இப்போது
प्रासृक्षत	ப்ராஸ்ருக்ஷத	பிரகாசிக் (பரவு) கின்றன.

சாயண பாடியம்.

சண்டம்—1. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில்—1. கசியபர் ரிஷி.

உலகனைத்தையு முணர்கின்ற சோமமே! ஒழுகுகின்ற உன்னுடைய தாரைகள், சூரியனுடைய கிரணங்களைப் போன்று இப்போது பிரகாசிக் (விரி) கின்றன என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

३ २ ३२ ३२उ ३ १ २३ १ २
959. केतुं कृण्वं दिवस्परि विश्वारूपाभ्यर्षसि ।
३ १ २
समुद्रः सोम पिन्वसे ॥ २ ॥

கெதும் கிருண்வந் திவஸ்பரி விஶ்வாரூபாப்யர்ஷஸி ।
ஸமுத்ரஃ ஸோம பிந்வஸே ॥

அந்வயம்.

हे सोम !, समुद्रः, केतुं, कृण्वन्, विश्वारूपा, दिवः परि, अभ्यर्षसि, पिन्वसे ॥

பதவுரை.

हे सोम !	ஹெ ஸொம !	சோமமே !
समुद्रः	ஸமுத்ரஃ	இரசமாயொழுகுகின்ற நீ,
केतुं	கெதும்	(எங்கட்கு) அறிவைக்
कृण्वन्	கிருண்வந்	கொடுத்துக்கொண்டு,
विश्वारूपा	விஸ்வாரூபா	பல்வகையான எமது வடிவங்களை
दिवः परि	திவஃ பரி	அந்தரிட்சத்திலிருந்து
अभ्यर्षसि	அப்யர்ஷஸி	புனிதமாக்குகின்றாய்.
पिन्वसे	பின்வஸே	(மற்றும்) எங்கட்குப் பலவகையான தனங்களைக் கொடுக்கின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

சோமமே ! இரசமாயொழுகுகின்ற நீ, எங்கட்கு நல்லறிவை யுண்டாக்கி எங்களுடைய எல்லா வடிவங்களையும் அந்தரிட்சத்திலிருந்து பவித்திரமாக்குகின்றனை. மற்றும், பலவகையான தனங்களையும் எங்கட்குக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

960. ३ १ २र ३ १२ ३ १ २
*जज्ञानो वाचमिष्यसि पवमान विधर्मणि ।
१ २ ३ १ २र
†क्रन्दं देवो न सूर्यः ॥ ३–२ ॥

இருக்கு 9-64-7-9.

ஜஜ்ஞாநொ வாசமிஷ்யஸி பவமாந விதர்மணி ।
க்ரந்தம் தெவொ ந ஸூர்யஃ ॥

அந்வயம்.

पवमान !, देवः, सूर्यः, न जज्ञानः, विधर्मणि, क्रन्दन्, वाचं, इष्यसि ॥

---

* हिन्वानो, † अक्रान्देवो, என்பன இருக்கு.

பதவுரை.

पवमान !	வவஶாந !	சோமமே !
देवः सूर्यः न	தெவः ஸுர்யஃ ந	பிரகாசிக்கின்ற சூரியனைப் போன்று
जज्ञानः	ஜஜ்ஞாநஃ	தோன்றிய நீ,
विधर्मणि	விதரணி	தசாபவித்திர மென்னும் ஆடை தூனியில்
क्रन्दन्	க்ரந்து	ஒலித்துக்கொண்டு,
वाचं	வாசம்	சத்தத்தைச்
इयर्षि	இயர்ஷி	செலுத்துகின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

சோமமே ! விளங்குகின்ற சூரியனைப் போன்று உதித்த நீ, தாங்குகின்ற தசாபவித்திர மென்னும் ஆடையில் ஒலித்துக்கொண்டு, சத்தத்தை யேவுகின்றாய். (ஒலித்துக்கொண்டு தசாபவித்திரமுடைய பாண்டத்திற் செல்கின்றாய் எனினுமாம்.) (3)

மந்திரம் 7.

१ २२ ३ १२ ३ १ २

961. प्र सोमासो अधन्विषुः पवमानास इन्दवः ।

३ २ ३ १ २

श्रीणाना अप्सु * वृजन्ते ॥ १ ॥

ப்ர ஸொஶாஸொ அதந்விஷுஃ பவஶாநாஸ இந்தவஃ ।

ஶ்ரீணாநா அப்ஸு வ்ருஜந்தே ॥

அந்வயம்.

पवमानासः, इन्दवः, सोमासः, प्राधन्विषुः, श्रीणानाः, अप्सु, वृजन्ते ॥

பதவுரை.

पवमानासः	பவஶாநாஸஃ	ஒழுகுகின்றதும்,
इन्दवः	இந்தவஃ	பிரகாசமுடையதுமாகிய
सोमासः	ஸொஶாஸஃ	சோமரசம்,
प्राधन्विषुः	ப்ரதந்விஷுஃ	அடையப்படுகின்றது.

* मृजते, என்பது இருக்கு.

श्रीनानः	ஸ்ரீணா நாः	பசுவின் பால் முதலியவைக ளுடன் கூடியதாய்
अप्सु	அப்ஸு	வசதீவரி என்னும் நீரிற்
वृजन्ते	வ்ருஜந்தே	சேர்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—ஏழாவது மூன்றின் மூன்றுஞ் சூக்தத்தில்—1. தேவலர், அல்லது, அசிதர் ரிஷி.

ஓழுகுகின்றதும், பிரகாசிக்கின்றதுமாகிய சோமரசங் கிடைக்கப் பெற்றது. மூலத்திலுள்ள, 'தன்வதி' 'யந்தி' என்ற பகுதிக்கு, அடைவுப் பொருளாம். நிகண்டும் அவ்வாறே கூறுகின்றது. அன்றியும், பசுவின் பால் முதலியவற்றுடன் கூடியதாய், 'வசதீவரி' ஏன்னும் ஆற்று நீரிற் சேர்கின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

१ २ २र ३ २ ३ २ ३१ २ ३ २
962. अभि गावो अधन्विषुरापो न प्रवता यतीः ।
३ १ २र
पुनाना इन्द्रमाशत ॥ २ ॥

அபி காவோ அதன்விஷுராபோ ந ப்ரவதா யதீஃ ।
புநாநா இந்த்ரமாஷத ॥

அன்வயம்.

गावः, (इन्दवः,) प्रवता, यतीः, आपः न, अभि अधन्विषुः, पुनानाः, इन्द्रं. आशत ॥

பதவுரை.

गावः	காவஃ	செல்கின்ற
(इन्दवः)	(இந்தவஃ)	(சோமம்,)
प्रवता	ப்ரவதா	கீழிடத்திற்குப்
यतीः	யதீஃ	போகின்ற
आपः न	ஆபஃ ந	நீரைப் போல,
अभि अधन्विषुः	அபி அதன்விஷுஃ	தசாபவித்திர மென்னும் ஆடை தூனியினின்று கீழே விழுகின்றது பின்னர்,

पुनानाः	வுநாநாஃ	சமஸ்காரஞ் செய்யப்பெற்று
इन्द्रं	இந்த்ரம்	இந்திரனை
आशत	ஆஶத	அடைகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

செல்லுஞ் சீலமுடைய சோமரசம், தசாபவித்திர மென்னும் ஆடை நுனியை யடைகின்றது. எதைப்போலெனின்? கீழே இறங்குகின்ற நீரைப்போலென்க. பின்னர், களிப்புண்டாக்குதற் பொருட்டு பரிசுத்த மாக்கப்பெற்று இந்திரனை யடைகின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 9.

१ २ ३ १ २र३ १ २
963. प्र पवमान धन्वसि सोमेन्द्राय * मादनः ।
१ २ ३ १ २र
नृभिर्यतो विनीयसे ॥ ३ ॥

ப்ர பவமாந தந்வஸி ஸோமேந்த்ராய மாதநஃ ।
நৃபிர்யதோ விநீயஸே ॥

அந்வயம்.

पवमान !, सोम !, इन्द्राय, मादनः, प्रधन्वसि, नृभिः यतः, विनीयसे ॥

பதவுரை.

पवमान !	பவமாந !	பவித்திரம் பண்ணுவோய் !
सोम !	ஸோம !	சோமரசமே !
इन्द्राय	இந்த்ராய	இந்திரனுக்குக்
मादनः	மாதநஃ	களிப்பைக் கொடுக்கின்ற நீ,
प्रधन्वसि	ப்ரதந்வஸி	தசாபவித்திர மென்னும் ஆடை நுனியை யடைகின்றாய்.
नृभिः यतः	நৃபிஃ யதஃ	வேட்போர்களாற் பிழியப்பட்டு
विनीयसे	விநீயஸே	தேவர்களுக்கு உணவாகக் கொண்டு வரப்படுகின்றாய்.

पातवे, என்பது இருக்கு.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

பவித்திரமாக்குகின்ற சோமமே! இந்திரனுக்குக் களிப்பைக் கொடுக்கின்ற நீ, பவித்திரமென்னும் வடிக்கும் ஆடைதனியை யடைகின்றாய். மீண்டும் அதுவே கூறப்படுகின்றது:— வேட்போர்களாற் பிழியப்பெற்ற நீ, தேவர்கட்கு அவி கொடுத்தல்பற்றிச், கொண்டுவரப்படுகின்றாய் என் பதாம். (3)

மந்திரம் 10.

२ ३ १ २२ ३२ ३१२ ३१२
964. इन्दो यदद्रिभिः सुतः * पवित्रं परिदीयसे ।
२३१२३१२
अरमिन्द्रस्य धाम्ने ॥ ४ ॥

இந்தோ யதத்ரிபிஃ ஸுதஃ பவித்ரம் பரிதீயஸே ।
அரமிந்த்ரஸ்ய தாம்நே ॥

அன்வயம்.

इन्दो !, यद्, अद्रिभिः, सुतः, पवित्रं, परिदीयसे, इन्द्रस्य, धाम्ने, अरम् ॥

பதவுரை.

इन्दो !	இந்தோ !	சோமமே ! நீ,
यद्	யத்	எப்போது
अद्रिभिः	அத்ரிபிஃ	கற்களால்
सुतः	ஸுதஃ	பிழியப்பட்டு,
पवित्रं	பவித்ரம்	தசாபவித்திரமென்னும் வடிக்கும் ஆடைதனியை
परिदीयसे	பரிதீயஸே	அடைகின்றாயோ, அப்போது,
इन्द्रस्य	இந்த்ரஸ்ய	இந்திரனுடைய
धाम्ने	தாம்நே	வயிறாகிய இடத்திற்கு
अरं	அரம்	உரியவனாகின்றாய்.

* पवित्रं परिधावसि, என்பது இருக்கு.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—4.

சோமமே! நீ, கற்களால் இடித்துப் பிழியப்பட்டு, எப்போது தசாபவித்திரமென்னும் ஆடைநுனியை யடைகின்றாயோ, அப்போது, இந்திரனுடைய இடத்திற்கு, அல்லது, ஏற்றுக்கொள்ளும் வயிற்றிற்கு உரியவனாகின்றாய் என்பதாம். (4)

மந்திரம் 11.

१ २ ३ १२३ १२ ३ १२
965. त्वꣳ सोम नृमादनः पवस्व * चर्षणीधृतिः ।
२ ३ १ २३ १२
सस्निर्यो अनुमाद्यः ॥ ५ ॥

க்வம் ஸொம நிருமாதநஃ பவஸ்வ சர்ஷணீத்ருதிஃ ।
ஸஸ்நியொ அநுமாத்யஃ ॥

அந்வயம்.

सोम!, नृमादनः, चर्षणीधृतिः, त्वं, पवस्व, यः सस्निः, अनुमाद्यः ॥

பதவுரை.

सोम!	ஸொம!	சோமரசமே!
नृमादनः	நிருமாதநஃ	மனிதர்களுக்குக் களிப்பைக் கொடுப்பவனும்
चर्षणीधृतिः	சர்ஷணீத்ருதிஃ	வேட்போர்களால், தாங்கப்பட்டவனுமாகிய
त्वं	க்வம்	நீ,
पवस्व	பவஸ்வ	நன்கு ஒழுகுவாயாக.
यः सस்निः	யஃ ஸஸ்நிஃ	எவன் பரிசுத்தனோ, (அவன்)
अनुमाद्यः	அநுமாத்யஃ	(உன்னைத்) துதிக்கத்தக்கவன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—5.

சோமமே! மனிதர்களுக்குக் களிப்பைக் கொடுப்பவனும், வேட்கின்ற சனங்களால் தாங்கப்பட்டவனுமாகிய நீ, புனிதமாய் இனிது வெளிப்

* चर्षणी सहे, என்பது இருக்கு.

படுவாயாக. யாவனொருவன் சுத்தனுய்த் துதித்தற்குரியவனுகின்றனை, அவன், நின்னைத் துதிக்கத்தக்கான் எனக் கூட்டுக. (5)

மந்திரம் 12.

१२ ३१ २ ३ १ २३ १२
966. पवस्व वृत्रहन्तम उक्थेभिरनुमाद्यः ।
१ २ ३ १ २२
शुचिः पावको अद्भुतः ॥ ६ ॥

வவஸ்வ வ்ரஹந்தம உக்தேபிரநுமாத்யஃ ।
ஶுசிஃ பாவகோ அத்புதஃ ॥

அன்வயம்.

हे सोम !, उक्थेभिः, अनुमाद्यः, शुचिः, पावकः, अद्भुतः, वृत्रहन्तमः, पवस्व ॥

பதவுரை.

हे सोम !	ஹே ஸோம !	சோமனே !
उक्थेभिः	உக்தேபிஃ	வைதிக மந்திரங்களால்
अनुमाद्यः	அநுமாத்யஃ	துதித்தற்குரியானும்,
शुचिः	ஶுசிஃ	சுத்தனும்,
पावकः	பாவகஃ	பவித்திரமாக்குவோனும்
अद्भुतः	அத்புதஃ	பெரியோனும்
वृत्रहन्तमः	வ்ரஹந்தமஃ	சத்துருக்களை யழிப்பவனுமாகிய நீ,
पवस्व	பவஸ்வ	ஒழுகுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—6.

சோமனே ! சத்துருக்களைத் தொலைக்கின்றவனுகிய நீ, ஒழுகுவாயாக. நீ எத்தன்மையனெனின் ? வைதிக மந்திரங்களால் துதிக்கத்தக்கவனும், சுத்தனும், பிறரைச் சுத்தப்படுத்துபவனும், பெரியோனுமாவாயென்க. இத்தன்மையனுகிய நீ, இனிது ஒழுகுவாயாக என்பதாம். (6)

---

* सुतस्य मध्वः, என்பது இருக்கு.

மந்திரம் 13.

१२ ३१२ ३ १२ १२ २२
967. शुचिः पावक उच्यते सोमः सुतः स मधुमान् ।
३ १२ ३२
देवावीरघशंसहा ॥ ७–३ ॥

இருக்கு 9-24-1-7.

ஶுசிஃ பாவக உச்யதெ ஸொமஃ ஸுதஃ ஸ மதுமான் ।
தெவாவீரகஶம்ஸஹா ॥

அந்வயம்.

सुतः, मधुमान्, सः, सोमः, शुचिः, पावकः, देवावीः, अघशंसहा, उच्यते ॥

பதவுரை.

सुतः	ஸுதஃ	பிழியப்பட்டதும்,
मधुमान्	மதுமான்	மதுரமுடையதுமாகிய
सः सोमः	ஸஃ ஸொமஃ	அச்சோமம்,
शुचिः	ஶுசிஃ	சுத்தமென்றும்
पावकः	பாவகஃ	சுத்தப்படுத்துவதென்றும்
देवावीः	தெவாவீஃ	தேவர்களை திருப்தி செய்வதென்றும்
अघशंसहा	அகஶம்ஸஹா	பாவிகளாகின்ற அசுரர்களை நாசம் பண்ணுகின்றதென்றும்
उच्यते	உச்யதெ	சொல்லப்படுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—7.

பிழிந்தெடுக்கப்பட்டதும், மதுரமுடையதுமாகிய அச்சோமரசம், பவித்திரமும், பவித்திரஞ் செய்வதும், தேவர்களைப் புஷ்டிப்படுத்துவதும், பாவிகளென்னும் அசுரர்களை நாசமாக்குவதுமாம். என்று சொல்லப்படுகின்றது என்பதாம். (7)

முதலாவது கண்டம்

முற்றும்.

இரண்டாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—3. அத்தியாயம்—6. கண்டம்—2.

ஏட்டு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

२ ३२३१२३२ ३ १२
968. प्र कविर्देववीतयेऽ॑ व्या वारेभिरव्यत ।
३ १ २ ३ १ २२
साह्वान्विश्वा अभिस्पृधः ॥ १ ॥

ப்ர கவிர்தேவவீதயேऽவ்யா வாரேபிரவ்யத ।
ஸாஹ்வாந்விஶ்வா அபிஸ்ப்ருதஃ ॥

அந்வயம்.

कविः, देववीतये, अव्या वारेभिः, अव्यत, साह्वान्, विश्वाः अभिस्पृधः ॥

பதவுரை.

कविः	கவிஃ	நுண்ணறிவுடைய சோமம்
देववीतये	தெவவீதயெ	தேவதைகள் அருந்துதற் பொருட்டுக்
अव्या वारेभिः	அவ்யா வாரெபிஃ	கம்பளி மயிர்களின் வாயிலாக
अव्यत	அவ்யத	ஒழுகுகின்றது. மற்றும்,
साह्वान्	ஸாஹ்வாந்	பகைவர்களை யடக்கிக் கொள்ளுகின்ற சோமம்
विश्वाः अभिस्पृधः	விஶ்வாஃ அபிஸ்ப்ருதஃ	போரில் துன்புறுத்துபவர்களையே வரையுங் கீழ்மையாக்குகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—ஏழாவது மூன்றின் முதற் சூக்தத்தில்—1. அகிதர், தேவர், ரிஷிகள்.

சூரியமதியுடைய சோமம், தேவர்கள் அருந்துதற் பொருட்டுக் கம்பளி வாயிலாக, தசாபவித்திரமென்னும் வடிக்கும் ஆடைநுனியால் ஒழுகுகின்றது. மற்றும், சத்துருக்களை யடக்குகின்ற சோமம், எல்லா உயுத்தங்களையும், அல்லது, துன்புறுத்துவோர்களையுங், கீழ்மைப்படுத்துகின்றது. ஈண்டுக் கீழ்மைப்படுத்துகின்றது என்பது எஞ்சி நின்றது. (1)

* த்வ்யா வாரேபிரர்ஷதி, என்பது இருக்கு.

மந்திரம் 2.

१ २२ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
969. सहिष्मा जरितृभ्य आवाजं गोमन्तमिन्वति ।
१२ ३ १ २
पवमानः सहस्रिणम् ॥ २ ॥

ஸஹிஷ்மா ஜரிதரப்ய ஆவாஜம் கோமந்தமின்வதி ।
பவமாநஃ ஸஹஸ்ரிணம் ॥

அன்வயம்.

பவமானः, सहिष्म, जरितृभ्यः, गोमन्तं, सहस्रिणं, वाजं, आ इन्वति ॥

பதவுரை.

पवमानः	பவமாநஃ	பிழிந்தெடுக்கப்பட்ட
सहिष्म	ஸஹிஷ்ம	அச் சோமம்,
जरितृभ्यः	ஜரிதரப்யஃ	துதிப்போர்கட்கு
गोमन्तं	கோமந்தம்	அநேகம் பசுக்களுடன்
सहस्रिणं	ஸஹஸ்ரிணம்	(ஆயிரக்கணக்கான) எண்ணிறந்த
वाजं	வாஜம்	அன்னத்தை
आ इन्वति	ஆ இன்வதி	அன்புடன் கொடுக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

உண்மையில் அச் சோமமானதே, அநேகம் பசுக்களுடன் ஆயிரக்கணக்கான உணவுகளைத் துதிப்போர்கட்கு நோக்கமாய்க் கொடுக்கின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

२३ १ २ ३ १२ ३ २३ १ २ ३ २
970. परि विश्वानि चेतसा * मृज्यसे पवसे मती ।
२ १ ३ १ २
स नः सोम श्रवो विदः ॥ ३ ॥

பரி விஶ்வாநி சேதஸா ம்ருஜ்யஸே பவஸே மதீ ।
ஸ நஃ ஸோம ஶ்ரவோ விதஃ ॥

* मृससे पवसे, என்பது இருக்கு.

அந்வயம்.

हे सोम !, मती, मृज्यसे, (ततः) परिषवसे, सः, नः, चेतसा, विश्वानि, श्रवः, विदः ॥

பதவுரை.

हे सोम !	ஹெ ஸொம !	சோமமே ! நீ
मती	உதீ	எமது துதியால்,
मृज्यसे	ம்ருஜ்யஸெ	கம்பளி வாயிலாகப் பரிசோதிக்கப்படுகின்றாய்.
(ततः) परिषवसे	(ததஃ) வரிஷவஸெ	பின்னர், இரசத்தை யொழுகச் செய்கின்றனை.
सः	ஸஃ	அத்தன்மைய நீ
नः	நஃ	எங்கட்குப்,
चेतसा	செதஸா	பிரியத்துடன்
विश्वानि	விஸ்வானி	எல்லாத் தனங்களையும்
श्रवः	ஸ்ரவஃ	அன்னத்தையுங்
विदः	விதஃ	கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

சோமமே ! நீ, எனது துதியால், தசாபவித்திரமென்னும் ஆடைதனியாற் பரிசோதிக்கப்படுகின்றாய். பின்னர், இரசமா யொழுகுகின்றாய். இத்தன்மைய நீ, அன்னத்தையும், தனத்தையுங் கொடுப்பாயாக. ஈண்டுக், கொடுப்பாயாக என்பது எஞ்சி நின்றது. (3)

மந்திரம் 4.

३क २र३१ २र ३१२ ३२ ३२
971. अभ्यर्ष बृहद्यशो मघवञ्छो ध्रुवꣳ रयिम् ।
१२ ३२ ३ १ २
इषꣳ स्तोतृभ्य आभर ॥ ४ ॥

அப்யர்ஷ ப்ருஹத்3யஶோ மகவஞ்ஶோ த்4ருவꣳ ரயிம் ।
இஷம் ஸ்தோத்ருப்4ய ஆப4ர ॥

அந்வயம்.

(हे सोम !,) मघवद्भ्यः, स्तोतृभ्यः, बृहत्, यशः, ध्रुवं, रयिं, अभ्यर्ष, इषं, आभर ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹே ஸோம !)	(சோமமே !)
मघवद्भ्यः	மகவத்³ப்⁴யஃ	அவி கொடுக்கின்றவர்களும்,
स्तोतृभ्यः	ஸ்தோ தரு ப்⁴யஃ	துதிக்கின்றவர்களுமான எங்கட்கு,
बृहत्	ப்³ரு ஹத்	பெரிய
यशः	யஶஃ	கீர்த்தியையும்
ध्रुवं	த்⁴ரு வம்	நிலைத்த
रयिं	ரயிம்	தனத்தையுங்
अभ्यर्ष	அப்⁴யர்ஷ	கொடுப்பாயாக. மற்றும்,
इषं	இஷம்	உணவையும்
आभर	ஆ ப⁴ர	நிறையக் கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—4.

சோமமே ! நீ, தேவவுணவுகளைக் கொடுக்கின்ற எங்கட்குப் பெரும் புகழைக் கொடுப்பாயாக. மிகுந்த தனத்தையுங் கொடுப்பாயாக. அன்றியும், அன்னத்தையும் எங்கட்குக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (4)

மந்திரம் 5.

१ २र ३१ २र ३ १ २

972. त्वꣳ राजेव सुव्रतो गिरः सोमा विवेशिथ ।

३ १ २

पुनानो वह्ने अद्भुत ॥ ५ ॥

த்வம் ராஜேவ ஸுவ்ரதோ கிரஃ ஸோமா விவேஶித² ।

புநாநோ வஹ்நே அத்³பு⁴த ॥

அந்வயம்.

वह्ने, अद्भुत, सोम, सुव्रतः, पुनानः त्वं, राजा इव, गिरः, आ विवेशिथ ॥

பதவுரை.

वह्ने !	வஹ்ந !	வேள்வி முதலியவைகளை நடத்துவோய் !
अद्भुत !	அத்பூத !	பெரியோய் !
सोम !	ஸொம !	சோமமே !
सुव्रतः	ஸுவ்ரதஃ	அழகிய கருமமுடையவனும்
पुनानः त्वं	புநாநஃ த்வம்	புனிதனுமாகிய நீ,
राजा इव	ராஜா இவ	அரசன் போன்று
गिरः	கிரஃ	எமது துதிகளை
आ विवेशिथ	ஆ விவேஶித	ஏற்றுக்கொள்கின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—5.

வேள்வி முதலியவைகளைத் தாங்குகின்றதும், வியப்புடையதுமாகிய சோமமே ! நற்கருமமுடையவனும், சமற்காரம் பண்ணப்பட்டவனுமாகிய நீ, அரசனைப்போன்று எங்களுடைய தோத்திரத்தைக் கேட்கின்றாய் என்பதாம். (5)

மந்திரம் 6.

१ २२३ २ ३१२ ३ १ २ ३ १२
973. **स वह्निरप्सु दुष्टरो मृज्यमानो गभस्त्योः ।**
१ २ ३ १२
सोमश्चमूषु सीदति ॥ ६ ॥

ஸ வஹ்நிரப்ஸு தூஷ்டரோ ம்ருஜ்யமாநோ கபஸ்த்யோஃ ।
ஸொமஶ்சமூஷு ஸீததி ॥

அந்வயம்.

वह्निः, सः सोमः, अप्सु, दुष्टरः, गभस्त्योः, मृज्यमानः, चमूषु, सीदति ॥

பதவுரை.

वह्निः	வஹ்நிஃ	வேள்வியை முடிக்கின்ற
सः सोमः	ஸஃ ஸொமஃ	அச்சோமம்,
अप्सु	அப்ஸு	'வசதீவரி' என்னும் நீரில்,
दुष्टरः	தூஷ்டரஃ	கடக்க முடியாததும்
गभस्त्योः	கபஸ்த்யோஃ	இரண்டு கைகளில்

मृज्यमानः	ரஜ்யமாநஃ	சமற்காரஞ் செய்யப் பெற்றது மாய்ப்
चमूषु	அசமூஷு	பாத்திரங்களில்
सीदति	ஸீததி	இருக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—6.

வேள்வியை நிறைவேற்றுகின்ற சோமம், அந்தரிட்சத்தில் இருக்கின்றதும், பிறர்களாற் கடக்க முடியாததும், கைகளில் சமற்காரஞ் செய்யப் பட்டதுமாய்ச், சோமரசம் வைக்கும் பாத்திரங்களில் தங்கியிருக்கின்றது என்பதாம். (6)

மந்திரம் 7.

३ २३ १ २र ३२ ३ १२
974. क्रीडुर्मखो न मंहयुः पवित्रꣳ सोम गच्छसि ।
१२ ३२ ३ १ २
दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥ ७–४ ॥

இருக்கு 9-20-1-7.

க்ரீ³ட³ுர்மகோ² ந மꣳஹயு: பவித்ரꣳ ஸோம கச்ச²ஸி ।
த³த⁴த்ஸ்தோத்ரே ஸு²வீர்யம் ॥

அந்வயம்.

हे सोम !, क्रीडुः, मखः न, मंहयुः, स्तोत्रे, सुवीर्यं, दधत्, पवित्रं, गच्छसि ॥

பதவுரை.

हे सोम !	ஹே ஸோம !	சோமமே !
क्रीडुः	க்ரீ³ட³ுः	விளையாடுகின்றவனும்,
मखः न	மகஃ ந	வேள்வி போன்று
मंहयुः	மꣳஹயுः	தானத்தை விரும்பியவனுமாகிய நீ,
स्तोत्रे	ஸ்தோத்ரே	துதிப்பவருக்கு
सुवीर्यं	ஸு²வீர்யꣳ	அழகிய வீரத்தன்மையைக்
दधत्	த³த⁴த்	கொடுத்துக்கொண்டு
पवित्रं	பவித்ரꣳ	பாத்திரத்தை நோக்கி
गच्छसि	க³ச்ச²ஸி	(கீழே) போய்ச் சேர்கின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—7.

சோமமே! விளையாடுங் குணமுடைய நீ, தானத்தில் விருப்புற்று, வேள்வியைப் போன்று, பவித்திரமாகிய பாத்திரத்தை யடைகின்றாய். யாதுசெய்து கொண்டெனின்? துதிப்போனுக்குப் பராக்கிரமத்தைக் கொடுத்துக் கொண்டென்பதாம். (பாத்திரத்திற் செல்கின்றாய் என முடித்துக் கொள்க.) (7)

மந்திரம் 8.

१२ ३ १ २ ३१ २३ १२ १२
975. यवं यवं नो अन्धसा पुष्टं पुष्टं परिस्रव ।
३ १ २
विश्वा च सोम सौभगा ॥ १ ॥

யவம் யவம் நொ அந்ஸஸா வுஷ்டம் வுஷ்டம் பரிஸ்ரவ ।
விஶ்வா ச ஸொம ஸௌபகா ॥

அந்வயம்.

हे सोम!, नः, पुष्टं पुष्टं, यवं यवं, अन्धसा, परिस्रव, च, विश्वा, सौभगा ॥

பதவுரை.

हे सोम!	ஹெ ஸொம!	சோமமே! நீ,
नः	நஃ	எங்கட்கு,
पुष्टं पुष्टं	வுஷ்டம் வுஷ்டம்	மிகவும் மிகவும்
यवं यवं	யவம் யவம்	அடிக்கடி யுண்டாகின்ற ரசத்தை,
अन्धसा	அந்ஸஸா	வலிய தாரையால்
परिस्रव	பரிஸ்ரவ	ஒழுகச் செய்வாயாக.
च	அ	மற்றும்,
विश्वा	விஶ்வா	எல்லா
सौभगा	ஸௌபகா	நலங்களையுங் கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—நான்காம் மூன்றின், இரண்டாவது சூக்தத்தில்—1.
அவத்சரர் ரிஷி.

சோமமே! நீ, எங்கட்கு மிகவும் மிகவும் மறித்தும் மறித்தும் உண்டாகின்ற ரசத்தை, அன்னமாகிய தாரையால் ஒழுகுவிப்பாயாக. மற்றும், எல்லா நலங்களையும் எங்கட்குக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 9.

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
976. इन्दो यथा तव स्तवो यथा ते जातमन्धसः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
नि बर्हिषि प्रिये सदः ॥ २ ॥

ஊந்தோ யதா தவ ஸ்தவோ யதா தே ஜாதமந்தஸஃ ।
நி பர்ஹிஷி ப்ரியே ஸதஃ ॥

அன்வயம்.

इन्दो!, अन्धसः, ते, स्तवः, तव, यथा, जातं, प्रिये, बर्हिषि, निषदः ॥

பதவுரை.

इन्दो!	ஊந்தோ!	சோமமே!
अन्धसः	அந்தஸஃ	அன்னமாகிய
ते	தே	உன்னுடைய
स्तवः	ஸ்தவஃ	தோத்திரம்,
तव	தவ	நின்பொருட்டு
यथा	யதா	எவ்வாறு
जातं	ஜாதம்	உண்டானதோ, அவ்வாறே,
प्रिये!	ப்ரியே!	திருப்தியைக் கொடுப்போய்!
बर्हिषि	பர்ஹிஷி	எமது வேள்வியில்
निषदः	நிஷதஃ	நீ, நிலைத்திருப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

ஒழுகுகின்ற சோமமே! நின்னுடைய துதி; எவ்வாறு வெளிப்பட்டிருக்கின்றதோ, அவ்வாறே, பிரியங் கொடுப்போய்! எமது வேள்வியில் நீ நிலைப்பாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 10.

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २२ ३ १ २
977. उत नो गोविदश्ववित्पवस्व सोमान्धसा ।
३ १ २ ३ १ २
मक्षुतमेभिरहभिः ॥ ३ ॥

உத நொ ஶொவிதஶ்வவித்வஸ்வ ஸொஶாஸ்வஸா ।
மக்ஷுதமெஹிரஹஹிஃ ॥

அந்வயம்.

उत, सोम !, नः, गोवित्, अश्ववित्, मक्षुतमेभिः, अहभिः, अन्धसा, पवस्व ॥

பதவுரை.

उत	உத	மற்றும்,
सोम !	ஸொம !	சோமமே !
नः	நஃ	எங்கட்குப்
गोवित्	ஶொவித்	பசுக்களைக் கொடுக்கின்றவனும்,
अश्ववित्	அஶ்வவித்	குதிரைகளைக் கொடுக்கின்றவனுமாகிய நீ,
मक्षुतमेभिः अहभिः	மக்ஷுதமெஹிஃ அஹஹிஃ	மிக விரைவாகிய தினங்களால்
अन्धसा	அந்ஸஸா	அன்னமாகிய தாரையுடன்
पवस्व	பவஸ்வ	வடிக்கப்பட்டு ஒழுகுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

அன்றியும், சோமமே! குதிரைகளையும், பசுக்களையும் எங்கட்குக் கொடுக்கின்ற நீ, வியப்புற்றவைகளும், துரிதமுடையவைகளுமான நாட்களென்னும் நிமித்தங்களால், அன்னமாகிய தாரையுடன் ஒழுகுவாயாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 11.

२ २ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
978. यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुमभीत्य ।
१ २
स पवस्व सहस्रजित् ॥ ४–५ ॥

இருக்கு 5-55-1-4.

யொ ஜிநாதி ந ஜீயதெ ஹந்தி ஶத்ரூமபீத்ய ।
ஸ பவஸ்வ ஸஹஸ்ரஜித் ॥

அந்வயம்.

सहस्रजित्, यः, जिनाति, न जीयते, शत्रुं, अभीत्य हन्ति, सः, पवस्व ॥

பதவுரை.

सहस्रजित् !	ஸஹஸ்ரஜித் !	ஆயிரக்கணக்கான பகைவர்களை வெல்கின்ற சோமமே !
यः	யஃ	அத்தன்மைய யாதொரு நீ,
जिनाति	ஜிநாதி	சத்துருவைச் செயிக்கின்றாய்.
न जीयते	ந ஜீயதெ	ஏனைய சத்துருக்களாற் செயிக்கப் படாய். மற்றும்,
शत्रुं	ஶத்ரும்	பகைவரைத்
अभीत्य	அபீத்ய	தாழ்மைப்படுத்திக்
हन्ति	ஹந்தி	கொல்கின்றாய்.
सः	ஸஃ	அத்தகைய நீ
पवस्व	பவஸ்வ	தாரையாய் ஓழுகுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—4.

எண்ணில்லாத சத்துருக்களைக் கொல்லும் சோமமே ! நீ, சத்துருக்களை வெல்கின்றாய். சத்துருக்களால் நீ வெல்லப்படமாட்டாய். மற்றோராற்றல் (மீண்டும்) அதுவே கூறப்படுகின்றது:—சத்துருக்களைக் கீழ்மையாக்கிக் கொல்கின்றாய். ஆனல் அவரால் கொல்லப்படாய். ஈண்டுக், கொல்லப்படாய் என்பது எஞ்சியது. இவ்வாறாய அத்தகைய நீ, தாரையா யொழுகுவாயாக என்பதாம். (4)

மந்திரம் 12.

२ ३ १ २ ३ १ २२ ३१२
979. यास्ते धारा मधुश्चुतोऽसृग्रन्निन्द ऊतये ।
३२ ३२ ३१२
ताभिः पवित्रमासदः ॥ १ ॥

யாஸ்தெ தாரா மதுஶ்சுதொ(அ)ஸ்ருக்ரந்நிந்த ஊதயெ ।
தாபிஃ பவித்ரமாஸதஃ ॥

அன்வயம்.

इन्दो !, ते, मधुश्चुतः, याः धाराः, ऊतये, असृग्रन्, ताभिः, पवित्रं, आसदः ॥

பதவுரை.

इन्दो !	இந்தோ !	சோமமே !
ते	தெ	உனது
मधुश्चुतः	மதுஶ்சுதஃ	மதுரத்தன்மை நிறைந்த
याः धाराः	யாஃ தாராஃ	எந்தத் தாரைகள்
ऊतये	ஊதயெ	பாதுகாத்தற் பொருட்டு
असृग्रन्	அஸ்ருக்ரந்	உண்டாகின்றனவோ,
ताभिः	தாபிஃ	அந்தத் தாரைகளால்
पवित्रं	பவித்ரம்	தசாபவித்திரமென்னும் ஆடை டையுடைய பாத்திரத்தில்
आसदः	ஆஸதஃ	நிலைத்திருக்கின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—மூன்று கொண்ட மூன்றாவது சூக்தத்தில்—1. சமதக்கினி ரிஷி.

ஒழுகுகின்ற சோமமே ! உன்னுடைய மதுரச்சுவை மலிந்துள்ள எந்தத் தாரைக ளூற்பத்தியாகின்றனவோ, அந்தத் தாரைகளால் நீ பவித்திரமுடைய பாத்திரத்திற் றங்குகின்றனை என்பதாம். (1)

மந்திரம் 13.

२ ३१ २ ३१२ ३१ २र३ १ २
980. सो अर्षेन्द्राय पीतये * तिरो वाराण्यव्यया ।
१ २ ३२ २ २ ३ २
सीदन्नृतस्य योनिमा ॥ २ ॥

ஸொ அஷ்டெந்த்ராய பீதயெ திரொ வாராண்யவ்யா ।
ஸீதந்ருதஸ்ய யொநிமா ॥

அந்வயம்.

हे सोम !, सः, अव्यया वाराणि, तिरः, ऋतस्य योनिं, आसीदन्, इन्द्राय, पीतये अर्ष ॥

பதவுரை.

हे सोम !	ஹெ ஸொம !	சோமமே !
सः	ஸஃ	அத்தகைய நீ,
अव्यया वाराणि	அவ்யயா வாராணி	கம்பளியிலுள்ள உரோமங்களை

* तिरो रोमाण्यव्यया सदिन्योतावनेषां, என்பது இருக்கு.

तिरः	திரः	மறைத்துக் கொண்டும்,
ऋतस्य योनिं	ஐதஸ்ய யொநிம்	வேள்வியின் காரணமாகிய பாத்திரத்தை
आसीदन्	சூஸீதந்	நோக்கிச் சென்று கொண்டுமுள்ள நீ,
इन्द्राय	இந்த்ராய	இந்திரன் அருந்துதற் பொருட்டுக்
पीतये अर्ष	பீதயெ சுஷ	களிப்படைவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

சோமமே! பிழியப்பெற்ற அத்தகைய நீ, ஆட்டின் உரோமங்களை அடக்கிக் கொண்டும், வேள்விக்குக் காரணமாகிய தசாபவித்திரமென்னும் ஆடைநுனியை நோக்கிச் சென்றுகொண்டு மிருக்கின்றனை. (ஆதலின்) இந்திரன் அருந்துதற் பொருட்டுக் களிப்படைவாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 14.

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
981. *त्वꣳ सोम परिस्रव स्वादिष्ठो अङ्गिरोभ्यः ।
३ २ ३ १ २र
वरिवोविद् घृतं पयः ॥ ३–६ ॥

இருக்கு 9-62-7-9.

க்வம் ஸொம பரிஸ்ரவ ஸ்வாதிஷ்டொ சுஜ்ஜிரொப்யஃ ।
வரிவொவிதா ஹ்ருதம் பயஃ ॥

அந்வயம்.

हे सोम!, स्वादिष्ठः, वरिवोवित् त्वं, अङ्गिरोभ्यः, पयः, घृतं, परिस्रव ॥

பதவுரை.

हे सोम!	ஹெ ஸொம!	சோமமே!
स्वादिष्ठः	ஸ்வாதிஷ்டஃ	மிகச் சுவையுடையவனும்
वरिवोवित् त्वं	வரிவொவிஸ் க்வம்	விரும்பிய தனத்தைக் கொடுப்பவனுமாகிய நீ,
अङ्गिरोभ्यः	சுஜ்ஜிரொப்யஃ	அங்கிரசர்களின் பொருட்டு,
पयः	பயஃ	பால் போன்று
घृतं	ஹ்ருதம்	விளங்குகின்ற சாரத்தைப்
परिस्रव	பரிஸ்ரவ	பொழிவாயாக.

* त्वमिदौ परी, என்பது இருக்கு.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

சோமமே! மிகக் சுவையுடையவனும், விரும்பின தனங்களைக் கொடுப்பவனுமாகிய நீ, ஆங்கிரசர்களின் பொருட்டு, பாலொத்து விளங்குகின்ற சாரமாகிய ரசத்தைப் பொழிவாயாக என்பதாம். (3)

இரண்டாவது கண்டம்

முற்றும்.

மூன்றாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—3. அத்தியாயம்—6. கண்டம்—3.

பன்னிரண்டு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

२३ १ २ ३क२र ३ २ ३ १ २ ३१ २ ३१२
982. तव श्रियो वर्ष्यस्येव विद्युतोऽग्नेश्चिकित्र *उषसामिवेतयः ।
१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २र३ १ २
यदोषधीरभिसृष्टो वनानि च परि स्वयं चिनुषे †अन्नमासनि ॥१॥

தவ ஶ்ரியொ வஷ்ர்யஸ்யெவ வித்யுதொ ஹ்நெஶ்சிகித்ர உஷஸா
[மிவெதயஃ ।
யதொஷதீரபிஸ்ருஷ்டொ வநாநி ச பரி ஸ்வயம் சிநுஷெ
[ஸ்ஹஸாஸநி ॥

அந்வயம்.

यद्, ओषधीः, च, वनानि, अभिसृष्टः, स्वयं आसनि, अन्नं, परिचिनुषे, अग्नेः, तव, श्रियः, वर्ष्यस्य, विद्युतः इव, उषसां, ईतयः इव, चिकित्रे ॥

---

* उषसां नकेतव, † अन्नमास्ये, என்பன இருக்கு.

பதவுரை.

यद्	யத்	எப்போது, நீ,
ओषधीः	ஓஷதீஃ	நெல் முதலிய அன்னங்களையும்,
च	அ	மற்றும்,
वनानि	வநாநி	வனங்களையும்
अभिसृष्टः	அபிஸ்ருஷ்டஃ	எரிப்பதற்கு வெளிப்பட்டு,
स्वयं आसनि	ஸ்வயம் ஆஸநி	தனது வாயின்கண்
अन्नं	அந்நம்	தாவரசங்கம வடிவ உலகமென்னும் அன்னத்தை
परिचिनुषे	பரிசிநுஷே	உட்கொள்கின்றீரோ, அப்போது,
अग्नेः	அக்நேஃ	அக்கினி யென்னும்
तव	தவ	உன்னுடைய
श्रियः	ஸ்ரியஃ	கிரணமாகிய விபூதிகள்
वर्ष्यस्य	வர்ஷ்யஸ்ய	மழை பெய்விக்கின்ற
विद्युतः इव	வித்யுதஃ இவ	மின்னலைப் போன்றும்,
उषसां	உஷஸாம்	உஷத் காலங்களின்
ईतयः इव	ஈதயஃ இவ	வெளிச்சங்களைப் போன்றும்
चिकित्रे	சிகித்ரே	அறியப்படுகின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. முதலாவது மூன்றில்—1. அருணர் ரிஷி.

அக்கினியே! பிரகாச முதலிய குணங்களோடு கூடிய உனது கிரணமென்னும் விபூதிகள் நன்கறியப்படுகின்றன. அதிலுவமை:—மழை பெய்விக்கும் மேகசம்பந்தமான மின்னல் போன்றும், உஷத்காலத்தின் வெளிச்சங்கள்போன்று மெனல். எப்போதெனின்? எப்போது நீ நெல் முதலிய வைகளையும், அரண்யங்களையும் எரிக்குமாறு வெளிப்பட்டுத் தனது வாயின்கண் தாவரசங்கமவடிவ உலகமென்னும் அன்னத்தை உட்கொள்கின்றீரோ, அக்கால் என்பதாம். (1)

குறிப்பு:—அக்கினியே மின்னலாயும், உஷத்காலப் பிரகாசமாயும் பரிணமிக்கின்றது. வாயில் அன்னத்தைப் போட்டுக் கொள்கின்றது எனப் பொருளுரைப்பாருமுளர்.

மந்திரம் 2.

983. *வாதோபஜூத இஷிதோ வசாꣳ அனு தൃഷு யദന്നാവേവിഷദ്വിതിഷ്ഠസേ ।
ആ തേ യതന്തേ രഥ്യോ3യഥാ പൃഥക് ശധാꣳസ്യഗ്നേ †അജരസ്യ ധക്ഷതഃ ॥

വാതോവജൂത ഇഷിതോ വശാꣳ അനു തൃഷു യദന്നാവേ
[വിഷദ്വി തിഷ്ഠസേ ।
തേ യതന്തേ രഥ്യോ3യഥാ പൃഥക് ശധാꣳസ്യഗ്നേ അജരസ്യ
[ധക്ഷതഃ ॥

அந்வயம்.

அக்னே!, யத், வாதோபஜூதः, வசான் அனு, தൃഷு, இഷிதः, அന്നா, வேவിഷத், விதிஷ்ठसे, அஜரस्य, தக்ஷதः, தே, ശധாംസி, രഥ്യः யथா, പൃഥക், ആயதന്തே ॥

பதவுரை.

அக்னே!	അഗ്നേ!	அக்கினியே! நீ
யத்	യത്	எப்போது
வாதோபஜூதः	വാതോവജൂതഃ	காற்றால் அசைக்கப் பெற்று
வசான் அனு	വശാനു	கொடி செடி முதலிய பச்சிலைகளில்
தൃഷு	തൃഷു	விரைவில்
இஷிதः	ഇഷിതഃ	அநுப்பப்பட்டவனுய்,
அന്നா	അന്നാ	உண்ணத்தக்க தாவரப் பொருள்களில்
வேவிஷத்	വെവിഷത്	வியாபித்து (நிறைந்து)
விதிஷ்ठसे	വിതിഷ്ഠസേ	இங்குமங்குஞ் செல்கின்றனையோ, அப்போது,
அஜரस्य	അജരസ്യ	மூப்பற்றவனும்,
தக்ஷதः	ധക്ഷതഃ	எரிக்க இச்சையுடையவனுமாகிய
தே	തേ	உனது
ശധാംസि	ശധാംസി	தேசுக்சுள்,
രഥ്यः यथा	രഥ്യോ യഥാ	தேருடையான் போன்று
പൃഥക்	പൃഥക്	வியப்பாமாறு (வேறுகக்)
ആயதന്തே	ആയതന്തേ	காணப்படுகின்றன.

*வாஸோஷூத, † அஜரஸ்ய தக்ஷத, என்பன இருக்கு.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

அக்கினியே! நீ, எப்போது காற்றினாற் சலிப்புண்டு, கொடி செடி முதலியவைகளைக் குறித்து, விரைவிலேவப்பட்டவனாயிருந்து, உண்ணத்தக்க அக்கொடி செடி முதலிய தாபரங்களை வியாபித்துக் கொண்டு, இங்கு மங்குஞ் செல்கின்றனையோ, அப்போது, மூப்பற்றவனும் தகிக்கின்றவனுமாகிய உனது தேசுக்கள், இரதமுடையவைகள் போல வேறு பிரித்துக் காணப்படுகின்றன என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

३ २ ३१ २ ३१२ ३ १ २र ३ १२ ३ २
984. मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनमग्निꣳ होतारं *परिभूतरं मतिम् ।
१ २र ३१ २ ३२उ १ ३ २ २ २
† त्वामर्भस्य हविषः समानमित्वां महो वृणुते नान्यं त्वत् ॥

இருக்கு 10-91-5-7-8.

மெயாகாரம் விதயஸ்ய ப்ரஸாயநமக்நிம் ஹொதாரம் பரிபூதரம் [மதிம் ।
த்வாமர்பஸ்ய ஹவிஷ: ஸமாநமித்வாம் மஹொ வ்ருணுதெ நாந்யம் [த்வத் ॥

அந்வயம்.

मेधाकारं, विदथस्य, प्रसाधनं, होतारं, परिभूतरं, मतिं, अग्निं त्वां, हे अग्ने!, महः, अर्भस्य हविषः, समानं, त्वां इत्, वृणुते, त्वत्, अन्यं, न ॥

பதவுரை.

मेधाकारं	மெயாகாரம்	புத்திக்கிறைவனும்
विदथस्य	விதயஸ்ய	வேள்விக்குச்
प्रसाधनं	ப்ரஸாயநம்	சிறந்த சாதனனும்
होतारं	ஹொதாரம்	தேவர்களை யழைப்பவனும்
परिभूतरं	பரிபூதரம்	பகைவர்களை நன்கு அடக்குபவனும்
मतिं	மதிம்	மனத்தைச் செலுத்துபவனுமாகிய

* परिमृत्यं, † तमिदमै हविष्या समान मित्तमिन्महे, என்பன இருக்கு.

अग्निं त्वां	அஜ்நிம் ஸ்வாம்	அக்கினி யென்னும் உன்னைப் போற்றுகின்றோம்.
हे अग्ने !	ஹெ அஜ்நெ !	அக்கினியே !
महः	மஹ:	மிகுந்த அன்னங்களை யுண்ணுதற்கும்
अर्भस्य हविषः	அர்ப்பஸ்ய ஹவிஷ:	அற்பமாகிய வுணவுகளை யருந்துதற்கும்
समानं	ஸமாநம்	யாங்கள் ஒன்று கூடி
त्वां इत्	ஸ்வாம் இத்	உன்னையே
वृणुते	வ்ருணுதெ	வேண்டுகின்றோம்.
त्वत्	ஸ்வத்	நின்னிலும்
अन्यं	அந்யம்	பிற தேவர்களைப்
न	ந	போற்றிலோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

கூரியமதியை யுண்டாக்குபவனும், வேள்விக்கு நல்ல துணைவனும், தேவர்களை யழைப்பவனும், சத்துருக்களை முழுதுங் கீழ்மைப் படுத்துவோனும், புத்தியைச் செலுத்துவோனுமாகிய அக்கினியா முன்னை, வேட்போர்களான யாங்கள் வேண்டுகின்றோம். ஈண்டு வேண்டுகின்றோம் என்பது எஞ்சியது. அக்கினியே! அற்பமாகிய புரோடாச முதலியவற்றை யருந்துதற் பொருட்டும், சோமரசமாகிய பெரிய உணவை யுண்ணுதற் பொருட்டும் உன்னையே வேண்டுகின்றோம் என முடிக்க. நின்னிலும் வேறு தேவர்களைப் போற்றிலோம் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

३ १२ ३ १ २र ३१ २
985. पुरूरुणा चिध्यस्त्यवो नूनं वा वरुण ।
२ ३ १ २ ३२
मित्र वꣳसि वाꣳ सुमतिम् ॥ १ ॥

பூரூரூணா சித்யஸ்த்யவொ நூநம் வா வரூண ।
மித்ர வம்ஸி வாம் ஸுமதிம் ॥

அந்வயம்.

हे मित्र! वरुण!, त्वां, पुरूरुणा, अवः, नूनं, अस्ति, हि, चित्, वरुण!, मित्र!, वां, सुमतिं, वंसि ॥

பதவுரை.

हे मित्र! वरुण!	ஹே மித்ர! வருண!	மித்திரன், வருணன் என்னுந் தேவர்களே!
त्वां	த்வாம்	உங்களிருவரின்
अवः	அவஃ	பாதுகாப்புத்தன்மை
पुरूरुणा	புரூரூணா	மிக மிகவும்
नूनं	நூநம்	உறுதியாக
अस्ति	அஸ்தி	இருக்கின்றது.
हि	ஹி	இது வெளிப்படையாம்.
चित्	சித்	மற்றும்,
वरुण!	வருண!	வருணனே!
मित्र!	மித்ர!	மித்திரனே!
वां	வாம்	உங்களுடைய
सुमतिं	சுமதிம்	அநுக்கிரகத் தன்மையைப்
वंसि	வம்ஸி	போற்றுகின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்து—இரண்டாவது மூன்றில்—1. புருசக்கிரி ரிஷி.

மித்திர வருணர்களே! உங்களாற் பாதுகாப்பாற்றப் பெற்ற தன்மை மிகவும் அதிகமாகவே இருக்கின்றது. (எம்மை நன்கு காத்துவருகின்றது) இது வெளிப்படையாம். மற்றும், மித்திர வருணர்களே! உங்களுடைய அநுக்கிரக புத்தியைப் போற்றுகின்றோம் என்பதாம். புரூருணு, என்னும் மூன்றும் வேற்றுமை முதல் வேற்றுமைப் பொருளில் நின்றது. (1)

மந்திரம் 5.

१ २ ३१२ ३१२ ३ १२
986. ता वाꣳ सम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम * धाम च ।
३ १ २
वयं वां मित्रा स्याम ॥ २ ॥

தா வாம் ஸம்யகத்ருஹ்வாணேஷமஶ்யாம தாம ச ।
வயம் வாம் மித்ரா ஸ்யாம ॥

அன்வயம்.

अद्रुह्वाणा!, ता वां, सम्यक्, वयं, वां, मित्रा, स्याम, इषं, च, धाम, अश्यामः ॥

* धायसे, என்பது இருக்கு.

பதவுரை.

अहूह्वाणा !	அஹூ-ஊஹ்வாணா!	துரோகம் பண்ணு மித்திர, வருணர்களே!
ता वां	தா வாம்	அத்தன்மைய, உங்களிருவரையும்
सम्यक्	ஸம்யக்	நன்கு துதிக்கின்றேம்.
वयं	வயம்	நாங்கள்
वां	வாம்	உங்களுடைய
मित्रा	மித்ரா	நண்பர்களாக
स्याम	ஸ்யாம	ஆவோமாக.
इषं	இஷம்	அன்னத்தையும்
च	அ	மற்றும்,
धाम	யாம	இடத்தையும்
अश्याम:	அஸ்யாம:	அடைவோமாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

மித்திர வருணர்களே! பிழைபாடு செய்யாதவர்களே! பிரகித்திபெற்ற அத்தகைய உங்களிருவரையும் போற்றுகின்றேம். ஈண்டுப் போற்றுகின்றேம் என்பது எஞ்சியது. துதிக்கின்ற நாங்கள், அன்னத்தையும், இடத்தையும் அடைவோமாக. துதிப்போர்களான யாங்கள், பெருஞ் செல்வத்தைப் பெறுவோமாக, ஈண்டுப் பெறுவோமாக என்பது எஞ்சி நின்றது. (2)

மந்திரம் 6.

३१ २ ३१२३१ २ ३२

987. पातं नो * मित्रा पायुभिरुत त्रायेथाꣳ सुत्रात्रा ।

३ २३ १ २ ३१२

† साह्याम दस्यून्तनूभिः ॥ ३–८ ॥

இருக்கு. 5-70-1-3.

வாதம் நொ மித்ரா வாயுபிருத தராயெதாம் ஸுத்ராத்ரா ।

ஸாஹ்யாம தஸ்யூந்தநூபிஃ ॥

அன்வயம்.

मित्रा !, नः, पायुभिः, पातं, उत, सुत्रात्रा, त्रायेथां, तनूभिः दस्यून्, साह्याम ॥

---

* रुद्रा, † तुर्यापदस्यू, என்பன இருக்கு.

பதவுரை.

मित्रा !	மித்ரா !	மித்திர வருணர்களே ! நீவிர்,
नः	நः	எங்களைப்
पायुभिः	பாயுபிஃ	பாதுகாப்பாற்றுகின்ற சாதனங்களாற்
पातं	பாதம்	பாதுகாப்பாற்றுவீர்களாக.
उत	உத	மற்றும்,
सुत्रात्रा	ஸுத்ராத்ரா	பாதுகாப்பிற்குரிய பொருள்களைக் கொடுத்துக்
स्वयेथां	ஸ்வயேயாம்	காப்பாற்றுவீர்களாக. யாங்களும்,
तनूभिः	தநூபிஃ	புத்திரர்களுடன்
दस्यून्	தஸ்யூந்	பகைவர்களை
साह्याम	ஸாஹ்யாம	அடக்குவோமாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3 இருக்கு—3.

மித்திரன், வருணன் என்னுந் தேவர்களே ! நீங்கள், எங்களைக் காப்பாற்றத் தக்கவைகளாற் பாதுகாப்பாற்றுவீர்களாக. மற்றும், வேண்டியவற்றைக் கொடுத்தும், வேண்டாதவற்றை விலக்கியும் காப்பாற்றுவீர்களாக. அதாவது விரும்பியவற்றை யளித்து இரட்சிப்பீர்களாக என்பதாம். நாங்களும், புத்திரர்களுடன், அல்லது, தமது அங்கங்களுடன், சத்துருக்களை யடக்கிவிடுவோமாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 7.

३ २ ३ १२ ३२ १ २ २२
988. उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वा शिप्रे अवेपयः ।
१२ ३ २ ३२
सोममिन्द्र चमू सुतम् ॥ १ ॥

உத்திஷ்ட²ந்நோஜஸா ஸஹ பீத்வா ஸி²ப்ரே அ²வேபயஃ ।
ஸோமமிந்த்³ர சமூ ஸுதம் ॥

அன்வயம்.

इन्द्र !, चमू, सुतं सोमं, पीत्वा, ओजसा सह, उत्तिष्ठन्, शिप्रे, अवेपयः ॥

பதவுரை.

इन्द्र !	ஊந்த்ர !	இந்திரனே ! நீ,
चमू	அமூ	பாத்திரத்தில்
सुतं सोमं	ஸுதம் ஸொமம்	பிழியப்பெற்றிருக்கின்ற சோமத்தை
पीत्वा	பீக்வா	அருந்தி,
ओजसा सह	ஒஜஸா ஸஹ	ஆற்றலுடன்
उत्तिष्ठन्	உத்திஷ்ந	எழுந்து நின்று
शिप्रे	ஶிப்ரெ	தாடி வீசைகளைத்
अवेपयः	அவெபயः	துடிக்கச் செய்வாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—மூன்றாவது மூன்றில்—1. குருமதி ரிஷி.

இந்திரனே ! நீ, அருந்திவிட்டு ஆற்றலுடன் எழுந்து நின்று தாடியைத் துடிக்கச் செய்வாயாக. மாந்த மிகுதிப்பாட்டா லென்பது பொருள். எதை யருந்தி யெனின் ? இரண்டு பலகைகளாற் பிழியப்பெற்ற சோம ரசத்தை என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

१२ ३ १२ ३ १ २
989. अनु त्वा रोदसी उभे *स्पर्धमान मदेताम् ।
२ ३ १२ ३ १ २
इन्द्र यद्दस्युहा भवः ॥ २ ॥

அநு க்வா ரொதஸீ உபெ ஸ்பர்ஶமாந மதெதாம் ।
இந்த்ர யத்தஸ்யுஹா பவஃ ॥

அந்வயம்.

स्पर्धमान, इन्द्र !, त्वा अनु, उभे रोदसी, मदेतां, यद्, दस्युहा, भवः ॥

பதவுரை.

स्पर्धमान	ஸ்பர்ஶமாந	சத்துருக்களிடத்துத் துவேஷமுள்ள
इन्द्र !	ஊந்த்ர !	இந்திரனே !
त्वा अनु	க்வா அநு	உன்னைக் குறித்து

* ऋक्षमाणमकृपेताम्, என்பது இருக்கு.

उभे रोदसी	உஹே ரொதஸீ	வான், மண் என்னும் இரண்டுலகமுங்
मदेतां	மதேதாம்	களிப்படைக.
यद्	யத்	எப்போது நீ
दस्युहा	தஸ்யுஹா	பகைவரைக் கொல்கின்றவன்
भवः	ஹவஃ	ஆகின்றனையோ, அப்போது என்பதாம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

பகைவர்களிடத்துப் பொறுமையுடைய இந்திரனே! நின்னைக் குறித்து வானுலக மண்ணுலக மிரண்டுங் களிப்படைக. எப்போது சத்துருக்களை யழிப்பவனுகின்றனையோ, அப்போது களிப்படைக எனக் கூட்டுக. (2)

மந்திரம் 9.

१२ ३ १२ ३१ २र ३१ २
990. वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्ति * मृतावृधम् ।
२ ३ १२ ३क २र
इन्द्रात्परि तन्वं ममे ॥ ३–९ ॥

இருக்கு 8-76-10-12.

வாசமஷ்டாவதீமஹம் நவஸ்ரக்தி ரூதாவ்ருதம் ।
இந்த்ராத்தரி தன்வம் மமே ॥

அன்வயம்.

अष्टापदीं, नवस्रक्तिं, ऋतावृधं, वाचं, तन्वं, अहं, इन्द्रात्, परिममे ॥

பதவுரை.

अष्टापदीं	அஷ்டாவதீம்	எட்டுத்திசைகளென்னும் பாதங்களையுடையதும்
नवस्रक्तिं	நவஸ்ரக்தீம்	இரவியுடன் ஒன்பது இடங்களில் நிறைந்ததும்
ऋतावृधं	ரீதாவ்ருதம்	வேள்வியை வளர்க்கின்றதுமாயுள்ள
वाचं	வாசம்	(நிறைந்த) துதியை,
तन्वं	தன்வம்	குறைவாக்கிக்கொண்டு

* ऋतास्पृशम, என்பது இருக்கு.

अहं	அஹம்	யான்
इन्द्रात्	உந்த்ராத்	இந்திரனை
परिममे	பரிமமெ	அளவுப் படுத்துகின்றேன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

எட்டுத் திசைகளால் எட்டுப் பாதங்களை யுடையதும், இரவியுடன் ஒன்பது இடங்களையும் (திக்கையும்) வியாபித்ததும், வேள்வியை வளர்ப்பதும், பூரணமுமாகிய திருமேனியின் துதியை, யான் பரிமாணப்படுத்துகின்றேன். அதாவது துதியால் முழுவடிவமும் விடயம்பண்ண முடியாததா மாதலின், வரைவுபடுத்தித் துதிக்கின்றேன் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 10.

१ २ ३ २ ३ २ १ २र
991. इन्द्राग्नी युवामिमे ३ ऽभिस्तोमा अनूषत ।
१ २ ३ २
पिबतꣳ शम्भुवा सुतम् ॥ १ ॥

இந்த்ராக்ஷீ யுவாமிமெ ஸ்தோமா அநூஷத ।
பிபதம் ஶம்ப்ரூவா ஸுதம் ॥

அந்வயம்.

इन्द्राग्नी !, युवां, स्तोमाः इमे, अभ्यनूषत, शम्भुवा !, सुतं, पिबतम् ॥

பதவுரை.

इन्द्राग्नी !	உந்த்ராக்ஷீ !	இந்திரன், அக்கினி என்னுந் தேவர்களே !
युवां	யுவாம்	உங்களை,
स्तोमाः इमे	ஸ்தோமாஃ உமெ	துதிப்போர்களான இவர்கள்
अभ्यनूषत	அப்யநூஷத	புகழ்கின்றார்கள்.
शम्भुवा !	ஶம்ப்ரூவா !	சுகங் கொடுக்கின்ற இந்திராக்கினிகளே ! (நீவிர்)
सुतं	ஸுதம்	சமஸ்காரம் பண்ணப்பெற்ற எமது சோமரசத்தை
पिबतं	பிபதம்	அருந்துவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—நான்காவது மூன்றில்—1. பரத்துவாசர் ரிஷி.

இந்திரன் அக்கினி யென்னுந் தேவர்களே! உங்களை, துதியாளர்களான இவர்கள் போற்றுகின்றார்கள். சுகத்தைப் பாலிக்கச் செய்கின்ற இந்திராக்கினிகளே! நீவிர், பிழியப்பெற்ற ஏமது சோமரசத்தை யருந்துவீர்களாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 11.

२ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १२
992. या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा ।
१ २ ३ २ ३ १२
इन्द्राग्नी ताभिरागमत् ॥ २ ॥

யா வாம் ஸந்தி புரூஸ்ப்ருஹோ நியூதோ தாஸூஷே நரா ।
இந்த்ராக்³நீ தாபிராக³மத் ॥

அன்வயம்.

नरा, इन्द्राग्नी!, पुरुस्पृहः, दाशुषे, याः नियुतः सन्ति, वां, ताभिः, आगमत् ॥

பதவுரை.

नरा	நரா	செலுத்துகின்ற
इन्द्राग्नी!	இந்த்ராக்³நீ!	இந்திரன், அக்கினி யென்னுந் தேவதைகளே! நீங்கள்
पुरुस्पृहः	புரூஸ்ப்ருஹ:	பல்லோர் விரும்புதற் குரியனவும்,
दाशुषे	தாஸூஷே	அவிகொடுக்கின்ற வேள்வித்தலைவன் பொருட்டு உண்டானவைகளுமாய்
याः नियुतः सन्ति	யாஃ நியூதஃ ஸந்தி	எந்தக் குதிரைகள்
वां	வாம்	உங்களுடையதாக இருக்கின்றனவோ,
ताभिः	தாபிஃ	அவைகளின் வாயிலாக
आगमत्	ஆக³மத்	வருவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

ஏவுகின்ற இந்திராக்கினிகளே! அநேகர்களால் விரும்பப்பட்டவை களும், அவிகொடுக்கின்ற வேள்வித் தலைவன் பொருட்டு உண்டானவை களுமான உங்களுடைய குதிரைக ளிருக்கின்றனவன்றே? அக் குதிரை களின்மீது வருவீர்களாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 12.

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ २
993. ताभिरागच्छतं नरोपेदꣳ सवनꣳ सुतम् ।
१ २ ३ १ २
इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥ ३–१० ॥

இருக்கு 6-69-7-9.

தாஹிராகச்சதம் நரோபெதꣳ ஸவநꣳ ஸுதம் ।
இந்த்ராக்நீ ஸோமபீதயே ॥

அன்வயம்.

नरा, इन्द्राग्नी !, इदं सुतं, सवनं उप, सोमपीतये, ताभिः, आगच्छतम् ॥

பதவுரை.

नरा	நரா	செலுத்துகின்ற
इन्द्राग्नी !	இந்த்ராக்நீ !	இந்திரன் அக்கினி யென்னுந் தேவதைகளே !
इदं सुतं	இதꣳ ஸுதம்	சமஸ்காரம் பண்ணப்பெற்ற
सवनं उप	ஸவநம் உப	இந்த, யாகத்திற் கருகில்
सोमपीतये	ஸோமபீதயே	சோமரச மருந்துதற் பொருட்டு
ताभिः	தாபிஃ	அக் குதிரைகளின்மீது
आगच्छतं	ஆகச்சதம்	வருவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

கியமிப்போர்களான இந்திரன், அக்கினி யென்னுந் தேவர்களே! நீவிர், பிழிதன் முதலான சமஸ்காரம் பண்ணப்பெற்ற சோமரத்தை யருந்த

அல்லது, காலைச் சவனத்தில் பிழியப்பட்ட சோமத்தைக் குறித்து, அக் குதிரைகளின் மீது வருவீர்களாக. எதன் பொருட்டெனின்? இச் சோம ரசத்தை யருந்துதற் பொருட்டென்பதாம். (3)

மூன்றாவது கண்டம்

முற்றும்.

நான்காவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—3. அத்தியாயம்—6. கண்டம்—4.

எட்டு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१ २ ३ १ २ ३ २र ३ १२
994. अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत् ।
२३ २ ३ २३ २
*सीदन्योनौ वनेष्वा ॥ १ ॥

அஷ்டா ஸொம த்யுமத்தமொஉபி த்ரோணாநி ரொரு வத் ।
ஸீதந்யோநள வநெஷ்வா ॥

அந்வயம்.

सोम!, द्युमत्तमः, वनेषु, योनौ, आसीदन्, द्रोणानि अभि, रोरुवत्, अर्षा ॥

பதவுரை.

सोम!	ஸொம !	சோமமே !
द्युमत्तमः	த்யுமத்தமஃ	மிகுந்த வொளியுடைய நீ,
वनेषु	வநெஷு	வனங்களிலும்,
योनौ	யொநள	தனது காரணமான மலையிலும்
आसीदन्	ஆஸீதந்	இருந்துக் கொண்டிருப்பினும்
द्रोणानि अभि	த்ரோணாநி அபி	துரோண கலசங்களைக் குறித்து
रोरुवत्	ரொரு வத்	அடிக்கடி ஒலித்துக்கொண்டு
अर्षा	அஷ்டா	பலவகையாய்ச் செல்வாயாக.

---

* सीदन् श्येनो न योनिमा, என்பது இருக்கு.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—மூன்றாவது மூன்றில்—1.

சோமமே! மிக்க வொளியுடைய நீ, வனங்களுக்கு நடுவிலும், தனது காரணமாகிய மலை முதலியவைகளிலும், எல்லாவகையானும் நிலைத்திருக்கின்றவனா யிருப்பினும், துரோண கலசங்களைக் குறித்து அடிக்கடி, அல்லது, மிகுந்த ஒலி செய்துகொண்டு வருவாயாக. தசாபவித்திர மென்னும் ஆடையின் நுனியையுடைய பாத்திரத்தின் நடுவிலுள்ள சோமம், இடையறாத தாரையால் துரோண கலசத்தில் விழுந்தொலிக்கின்றது என்பதாம். (1)

ஈண்டுக் 'கலசங்களை' என்ற பன்மை அநுட்டானவகை பலப்பல வாதல் கொண்டென்க.

மந்திரம் 2.

३ १ २र ३ २३ १२ ३ १२
995. अप्सा इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः ।
१ २ ३ १२
*सोमा अर्षन्तु विष्णवे ॥ २ ॥

அப்ஸா இந்த்ராய வாயவெ வரு ணாய மரு த்ஸ்யஃ ।
ஸொமா அஷ்ந்து விஷ்ணவெ ॥

அந்வயம்.

अप्सा, सोमाः !, इन्द्राय, वायवे, वरुणाय, मरुद्भ्यः, विष्णवे, अर्षन्तु ॥

பதவுரை.

अप्सा	அப்ஸா	நீருடன் கலந்து கொண்டிருக்கின்ற
सोमाः !	ஸொமாஃ !	சோமம் !
इन्द्राय	இந்த்ராய	இந்திரன் பொருட்டும்,
वायवे	வாயவெ	வாயுவின் பொருட்டும்,
वरुणाय	வரு ணாய	வருணன் பொருட்டும்,
मरुद्भ्यः	மரு த்ஸ்யஃ	மருத்துக்களின் பொருட்டும்,
विष्णवे	விஷ்ணவெ	விட்டுணுவின் பொருட்டும்,
अर्षन्तु	அஷ்ந்து	துரோண கலசத்தையடைகுக.

* सोमा अर्षति, என்பது இருக்கு.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

'வசதீவரி' என்னும் ஆற்று நீருடன் கூடியிருக்கின்ற சோமம், துரோணகலசத்தை யடைகுக. எதன் பொருட்டெனின்? இந்திரன் அருந்துதற் பொருட்டென்க. தேவர்களுக்குள் இந்திரன் முதலிற் சோமத்தை யருந்துகின்றன். அதன் பின் வாயுவாம் ஆதலின் வாயுவின் பொருட்டும், அதன்பின் வருணன் சோமத்தை யருந்துகின்றன் ஆதலின் அவன் பொருட்டும், அதன்பின் மருத்துக்கள் அருந்துகின்றார்கள்; ஆதலின் அவர்களின் பொருட்டும், மற்றும், உலக வியாபகமாகிய விஷ்ணுவென்னும் பெயருடைய தேவதையின் பொருட்டும் என்பதாம். (கலசத்தை யடைவாயாக என முடித்துக்கொள்க. (2)

மந்திரம் 3.

१२ ३ १ २ ३ १२३ १ २ ३ १ २

996. इषं तोकाय नो दधदस्मभ्यं सोम विश्वतः ।

१ २ ३ १ २

आ पवस्व सहस्रिणम् ॥ ३–११ ॥

இருக்கு 9-46-19-21.

இஷம் தொகாய நொ தயதஸ்மப்யம் ஸொம விஸ்வதஃ ।

ஆ பவஸ்வ ஸஹஸ்ரிணம் ॥

அன்வயம்.

हे सोम !, नः, तोकाय, इषं, दधत्, सहस्रिणं, विश्वतः, अस्मभ्यं, आ पवस्व ॥

பதவுரை.

हे सोम !	ஹெ ஸொம !	சோமமே !
नः	நஃ	எங்களுடைய
तोकाय	தொகாய	புத்திரன் பொருட்டு
इषं	இஷம்	அன்னத்தைக்
दधत्	தயத்	கொடுப்பாயாக. மற்றும்,
सहस्रिणं	ஸஹஸ்ரிணம்	ஆயிரக்கணக்கான பொன்களை,
विश्वतः	விஸ்வதஃ	எல்லாவகையானும்
अस्मभ्यं	அஸ்மப்யம்	எங்கட்குங்
आ पवस्व	ஆ பவஸ்வ	கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—3.

சோமமே! நீ, எங்களுடைய புத்திரன் பொருட்டு அன்னத்தைக் கொடுப்பதுடன், ஆயிரவகையான தனங்களையும் எல்லாவாற்றாலும் எங்கட்குங் கொடுப்பாயாக. எங்களுடைய புத்திரன் பொருட்டும், அன்னம், தனம் முதலியவைகளைக் கொடுப்பாயாக என்பது பொருள். (3)

மந்திரம் 4.

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
997. सोम उष्वाणः सोतृभिरधिष्णुभिरवीनाम् ।
१ २ ३ १ ३ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया ॥ १ ॥

ஸொம உஷ்வாணஃ ஸொதூ ஸிரதிஷ்ணுஸிரவீநாம் ।
அஶ்வயெவ ஹரிதா யாதி தாரயா மந்த்ரயா யாதி தாரயா ॥

அந்வயம்.

सोतृभिः, स्वानः, सोमः, अवीनां स्नुभिः, अधि याति, उ, अश्वया इव, हरिता धारया, मन्द्रया धारया, याति ॥

பதவுரை.

सोतृभिः	ஸொதூ ஸிஃ	சமஸ்காரம் பண்ணுகின்ற வேட்போர்களாற்
स्वानः	ஸ்வாநஃ	பிழியப்பட்ட
सोमः	ஸொமஃ	சோமரசம்,
अवीनां स्नुभिः	அவீநாம் ஸ்நுஸிஃ	ஆட்டின் மயிர்களின் வாயிலாக
अधि याति	அதி யாதி	மிக விரைவாய்ச் செல்கின்றது.
उ	உ	இது வெளிப்படையாம். மற்றும்
अश्वया इव	அஶ்வயா இவ	குதிரையாற் செல்வது போன்று
हरिता धारया	ஹரிதா தாரயா	பச்சைநிறத் தாரையாலும்,
मन्द्रया धारया	மந்த்ரயா தாரயா	களிப்பைக் கொடுக்கின்ற தாரையாலும்
याति	யாதி	துரோண கலசத்திலுஞ் செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—பெருங்கீதத்தின் இரண்டாவது சூக்தத்தில்—1. காத ரிஷி.

சமஸ்காரம் பண்ணுகின்ற வேட்போர்களாற் பிழியப்பெற்ற சோமம், கம்பளியிலுள்ள ஆட்டின் மயிர்களின் வாயிலாக நன்கு ஒழுகுகின்றது. இது பிரசித்தமாம். மற்றும், குதிரையாற் செல்வது போன்று, பசுமை நிறத்தாரையாலும், களிப்பைக் கொடுக்கின்ற தாரையாலும் துரோண கலசத்தையுமடைகின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

३२उ ३ १२ ३ १२ ३ १२
998. अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः सोमो दुग्धाभिरक्षाः ।
३२उ ३१२ ३ १
समुद्रं न संवरणान्यग्मन्मन्दी मदाय तोशते ॥ २–१२ ॥

இருக்கு 9-107-8-9.

அநூபெ கொமாந் கொபிரக்ஷாஃ ஸொமொ துக்தாபிரக்ஷாஃ ।
ஸமுத்ரம் ந ஸம்வரணாந்யக்ஷந்மந்தீ மதாய தொஶதெ ॥

அந்வயம்.

गोमान्, सोमः, अनूपे, गोभिः, अक्षाः, सोमः, दुग्धाभिः अक्षाः, समुद्रं न, संवरणानि, अग्मन्, मन्दी, मदाय, तोशते ॥

பதவுரை.

गोमान्	கொமாந்	ஆவின்பாலுடன் கூடும்
सोमः	ஸொமஃ	சோமம்,
अनूपे	அநூபெ	துரோண கலசத்தில்
गोभिः	கொபிஃ	பசு நெய் முதலியவைகளுடன்
अक्षाः	அக்ஷாஃ	ஒழுகுகின்றது.
सोमः	ஸொமஃ	மற்றும், சோமம்
दुग्धाभिः अक्षाः	துக்தாபிஃ அக்ஷாஃ	தான் கலக்க வேண்டியதின் பொருட்டுப் பாலுடன் கூடுகின்றது.
समुद्रं न	ஸமுத்ரம் ந	(நீர்) கடலை யடைவது போன்று
संवरणानि	ஸம்வரணாநி	இரசமாகிய அன்னங்கள்
अग्मन्	அக்ஷந்ம	துரோண கலசத்தை யடைகின்றன

मन्दी	ꣳहீ	{ ஆனந்தத்தைக் கொடுக்கின்ற சோமம்,
मदाय	ꣳहாய	களிப்பின் பொருட்டு
तोशते	தொஶதெ	இடித்துப் பிழியப்படுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

ஆவின் பால் முதலியவைகளுடன் கூடத்தக்க சோமம், கீழேயுள்ள துரோண கலசத்தில் ஒழுகுகின்றது. மீண்டும் அதுவே கூறப்படுகின்றது:— அச்சோமம், தான் கலப்பதின் பொருட்டுக் கறக்கின்ற பசுவின் பால் முதலியவைகளுடன் கூடுகின்றது. அன்றியும், கடலில் நீர்போய்ச் சேர்வது போல, போற்றத்தக்க இரசமாகிய அன்னங்கள், துரோண கலசத்தையடைகின்றன. மற்றும், மாந்தத்தைக் கொடுக்கின்ற சோமம், களிப்பின் பொருட்டு இடித்துப் பிழியப்படுகின்றது. 'தோசதி' என்பது இடித்தல் என்னும் பொருளுடையது என்று நிகண்டு கூறுகின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

१ २ ३ २ ३ज २र ३ १ २र३ १२
999. **यत्सोम चित्रमुक्थ्यं दिव्यं पार्थिवं वसु ।**
१ २ ३ १ २र
तन्नः पुनान आभर ॥ १ ॥

यꣳहो ஈ ீ ுꣳக்ꣳயꣳ ஔவ்ꣳ வாயி ுவꣳ வஹ ॥
தꣳஹ: வ ॥ நாந ஆஹர ॥

அன்வயம்.

सोम !, यत्, चित्रं, उक्थ्यं, दिव्यं, पार्थिवं वसु, तत्, पुनानः, नः, आभर ॥

பதவுரை.

सोम !	ஹொஉ !	சோமமே !
यत्	யꣳ	யாதொன்று,
चित्रं	ஈ ீ ுꣳ	பலவகையாய்ப்
उक्थ्यं	உ ுக்ꣳயꣳ	போற்றத்தக்கதும்,
दिव्यं	ஔவ்ꣳ	வானுலகைப் பற்றியதும்,
पार्थिवं वसु	வாயி ுவꣳ வஹ ॥	{ மண்ணுலக சம்பந்தமுடையதுமாகிய தனமோ,
तत्	தꣳ	அதை,

पुनानः	ப॒நா॒நः	சுத்தம் பண்ணப்பெற்ற நீ
नः	நः	எங்கட்குக்
आभर	ஆ॒ஹ॒ர	கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—மூன்றாவது மூன்றில்—1. அசிதர், அல்லது, தேவலர் ரிஷி.

சோமமே! பலவகையான அழகு வாய்ந்ததும், போற்றத்தக்கதும், சுவர்க்கத்திலுண்டாகியதும், மண்ணுலகின் சம்பந்தமுடையதுமாகிய யாதொரு தனமிருக்கின்றதோ, அதை, பவித்திரமாக்குகின்றவனாயிருக்கின்ற நீ, எங்கட்குக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 7.

१ २ ३ १ २र ३ २३ १ २ ३१ २
1000. वृषा *पुनान आयूꣳषि स्तनयन्नधिबर्हिषि ।
२३ २उ ३ १२
हरिः सन् †योनिमासदः ॥ २ ॥

வ்ருஷா வ॒நா॒ந ஆ॒யூ॒ꣳஷி ஸ்த॒நய॒ந்ந॒ஸி॒ப॒ஹி॒ர்ஷி ।
ஹ॒ரிஃ ஸந் யொ॒நிமா॒ஸதஃ ॥

அந்வயம்.

आयूंषि, पुनानः, वृषा, स्तनयन्, अधि बर्हिषि, हरिः सन्, योनिं, आसदः ॥

பதவுரை.

आयूंषि	ஆ॒யூ॒ꣳஷி	வேள்வித் தலைவன் முதலியோர்களின், ஆயுட்களைப்
पुनानः	ப॒நா॒நः	புநிதம் பண்ணுவதும்
वृषा	வ்ருஷா	விருப்பைப் பொழிகின்றதும்
स्तनयन्	ஸ்த॒நய॒ந்	ஒலிப்பதுமாகிய சோமம்
अधि बर्हिषि	அ॒தி ப॒ஹி॒ர்ஷி	விரித்துள்ள தருப்பையின்கண்
हरिः सन्	ஹ॒ரிஃ ஸந்	பசுமை நிறமுடையதாய்த்
योनिं	யொ॒நிꣳ	தனதிடத்தில்
आसदः	ஆ॒ஸ॒தஃ	நிலைத்திருக்கின்றது.

*पुनान आयुषु, † योनिमासदत्, என்பன இருக்கு.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

வேள்வித் தலைவன் முதலியோர்களின் வாழ்நாளைப் புஷ்டமாக்குவதும், விருப்பைப் பொழிகின்றதும், விரித்திருக்கின்ற தருப்பையின்கண், ஒலித்துக்கொண்டிருப்பதுமாகிய சோமம், பசுமை நிறமுடையதாய்த் தனது இடத்தில் இருக்கின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 8.

३१ २२ ३१२ ३ १२

1001. युवꣳ हि स्थः स्वःपती इन्द्रश्च सोम गोपती ।

३ १२३ १२

ईशाना पिप्यतं धियः ॥ ३–१३ ॥

இருக்கு 9-19-1-3-2.

ꣳ॒वꣳ ஹி ஷ்ஶ꣡ ஷ்ஶ்வꣳவꣳதீ ஊ॒ந்த்ரꣳ ஶ்ச ஸொꣳஅ மொவதீ ।
ஈꣳஶாநா ஷிவ்ய்தꣳ யியꣳ ॥

அன்வயம்.

सोम !, इन्द्रः च, युवं, हि स्वःपती स्थः, गोपती, ईशाना, धियः पिप्यतं ॥

பதவுரை.

सोम !	ஸொஅ !	சோமமே ! நீயும்
इन्द्रः च	ஊந்த்ரꣳ அ	இந்திரன் என்னும்
युवं	ꣳ॒வꣳ	நீங்களிருவரும்,
हि स्वःपती स्थः	ஹி ஷ்ஶ்வꣳவதீ ஷ்ஶ꣡	சந்தேகமின்றி அனைத்திற்கும் இறைவர்களாகவே யிருக்கின்றீர்கள். (மற்றும் நீவிர்)
गोपती	மொவதீ	பசுக்களைக் காப்பவர்களும்
ईशाना	ஈꣳஶாநா	ஐசுவரியத்திற்கு இறைவர்களுமாகி
धियः पिप्यतं	யியꣳ ஷிவ்ய்தꣳ	எனது கருமத்தை புஷ்டிப்படுத்துவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—3.

சோமமே ! நீயும், இந்திரனும் அனைத்திற்கும் உண்மையில் தலைவர்களாகவே இருக்கின்றீர்கள். ஆகவே, பசுக்களைப் பாதுகாப்பாற்றுபவர்

களும், ஈசுரர்களாகவு மிருந்து எனது கருமங்களை உறுதிப்படுத்து வீர்களாக. கருமஞ் செய்யும்போது கொடுக்கின்ற சோமரசத்தை யருந்து வீர்களாக எனினுமாம். (3)

நான்காவது கண்டம்

முற்றும்.

ஐந்தாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—3. அத்தியாயம்—6. கண்டம்—5.

ஆறு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

२ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २र
1002. इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः ।
२उ ३ २ ३ २ ३ १२र ३ १ २र ३ १ २
तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भे हवामहे स वाजेषु प्रनोऽविषत् ॥ १ ॥

இந்த்ரோ மதாய வாவ்ருதே ஶவஸே வ்ருத்ரஹா ந்ருபிஃ ।
தமிந்மஹத்ஸ்வாஜிஷூதிமர்பே ஹவாமஹே ஸ வாஜேஷு
[ப்ரநோ஽விஷத் ॥

அந்வயம்.

वृत्रहा, इन्द्रः, मदाय, शवसे, महत्सु आजिषु, अर्भे, ऊतिं, नृभिः, वावृधे, तं इत्, हवामहे, सः, वाजेषु, नः प्राविषत् ॥

பதவுரை.

वृत्रहा	வ்ருத்ரஹா	விருத்திரனைக் கொன்ற
इन्द्रः	இந்த்ரஃ	இந்திரன்,
मदाय	மதாய	களிப்பின் பொருட்டும்
शवसे	ஶவஸே	வலியின் பொருட்டும்
महत्सु आजिषु	மஹத்ஸு ஆஜிஷு	பெரும் யுத்தங்களிலும்
अर्भे	அர்பே	சிறிய சண்டையிலும்
ऊतिं	ஊதிம்	பாதுகாப்பைக் குறித்தும்
नृभिः	ந்ருபிஃ	வேட்போர்களின் துதிகளால்

वावृधे	வாவ்ருயெ	வளர்க்கப் பெற்றனன்.
तं इत्	தம் உ ஈ	அவ்விந்திரனையே
हवामहे	ஹவாமஹெ	அழைக்கின்றோம்.
सः	ஸः	அவன்,
वाजेषु	வாஜெஷு	போர்களில்
नः प्राविषत्	நஃ ப்ராவீஷீத்	எங்களைப் பாதுகாப்பானாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1. கோதம ரிஷி.

மழையைத்தடுக்கின்ற மேகத்தை, அல்லது, அசுரனைக்கொன்ற, அல்லது, சத்துருக்களை நாசஞ்செய்த இந்திரன், களிப்பின் பொருட்டும், ஆற்றலின் பொருட்டும், வேட்போர்களின் தோத்திரங்களால் வளர்ந்தனன். பெரும் போர்களிலும், சிறிய சண்டைகளிலும் பாதுகாப்பாற்றுகின்ற அவ்விந்திரனை, எங்களைப் பாதுகாத்தற்பொருட்டு அழைக்கின்றோம். மற்றும், அவ் விந்திரன் எங்களை, போர்களில் நன்கு பாதுகாப்பானாக என்பதாம். (1)

'சவஸ்' என்பது வலியெனக் கூறுகின்றது நிகண்டும்.

மந்திரம் 2.

२ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २
1003. असि हि वीर सेन्योऽसि भूरि पराददिः ।
१ २ ३ १ २ २र ३ १ २ ३ १२
असि दभ्रस्य चिद्वृधो यजमानाय शिक्षसि सुन्वते भूरि ते वसु ॥

ஸஸி ஹி வீர ஸெந்யோऽஸி பூரி பராததிஃ ।
ஸஸி தப்ரஸ்ய சித்வ்ருதோ யஜமானாய ஸிக்ஷஸி ஸுன்வதெ
பூரி தெ வஸு ॥

அன்வயம்.

वीर !, सेन्यः असि, हि, भूरि, पराददिः, असि, दभ्रस्य चित्, वृधः, सुन्वते, यजमानाय, शिक्षसि, ते भूरि वसु ॥

பதவுரை.

वीर !	வீர !	பகைவரைக் கொல்வதில், வல்லுனருகிய இந்திர ! நீ,
सेन्य असि	ஸெந்யஃ ஸஸி	சேனைபோன் றிருக்கின்றாய்.
हि	ஹி	ஆதலின்,

भूरि	ஹூரி	சத்துருக்களினுடைய மிகுந்த தனங்களைக்
परादिः	வராதிஃ	கைப்பற்றுவோனாயும்
असि	அஸி	இருக்கின்றாய்.
दभ्रस्य चित्	தஹ்ரஸ்ய சித்	தன்னைத் துதிக்கின்ற சிறியவனையும்
वृधः	வ்ருதஃ	பெரியோனாக்குகின்றாய்.
सुन्वते	ஸுந்வதெ	சோமரசம் பிழிகின்றவனுக்கும்
यजमानाय	யஜமாநாய	வேள்வித் தலைவனுக்கும்
शिक्षसि	ஶிக்ஷஸி	தனத்தைக் கொடுக்கின்றாய். (ஆதலின்)
ते भूरि वसु	தெ ஹூரி வஸு	உனக்கு, நிறையத் தனம் இருக்கின்றதென்க.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

சத்துருக்களை யழிப்பதில் வீரனாகிய இந்திர! நீ, சேனைக்குத் தக்கோனாகின்றனை. அதாவது, சேனையைப் போன்றிருக்கின்றாய். இவ்வாறானதால், பகைவரைத் தோல்வியடையுமாறு செய்து, அவருடைய பொருளைப் பறித்துக்கொள்வோனாயிருக்கின்றாய். உன்னைத் துதிக்கின்ற சிறியவனையும் பெரியவனாகச் செய்கின்றாய் சோமரசம் பிழிகின்றவனுக்கும், வேள்வித் தலைவனுக்கும் வேண்டிய தனத்தையுங் கொடுக்கின்றாய். இவ்வண்ணமானதால், உனக்குத் தனம் குறைவின்றி யிருக்கின்றது என்பது கருத்து. (2)

ஈண்டு மூலத்தில் 'சிட்சதி' என்பது 'ஈகை' என்று கூறுகின்றது நிகண்டு.

மந்திரம் 3.

२३ १२ ३१२ ३१२ ३ १२
1004. यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम् ।
३ १ २३ २३२३ २उ ३ १ २र ३ १ २३१२
युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी कꣳ हनः कं वसौ दधोऽस्माꣳ इन्द्रवसौ दधः ॥

3-14, இருக்கு 1-81-1-3.

யதுதீரத ஆஜயொ த்ருஷ்ணவெ தீயதெ தநம் ।
யுங்க்ஷ்வா மதச்யுதா ஹரீ கம் ஹநஃ கம் வஸௌ ததொ஽ஸ்மாம்
[இந்த்ர வஸௌ ததஃ ॥

அந்வயம்.

यत्, आजयः, उदीरते, धृष्णवे, धनं, धीयते, मदच्युता, हरी, युङ्क्ष्व, कं, हनः, कं, वसौ दधः, इन्द्र!, अस्मान् वसौ दधः ॥

பதவுரை.

यत्	யத்	எப்போது
आजयः	ஆஜயः	உயுத்தம்
उदीरते	உதீரதெ	உண்டாகின்றதோ, அப்போது,
धृष्णवे	த்⁴ருஷ்ணவெ	சத்துருவை வெல்வோருக்குத்
धनं	த⁴நம்	தனம்
धीयते	தீ⁴யதெ	இருப்பாய் வைக்கப்படுகின்றது. (ஆதலின்) நீ,
मदच्युता	மதச்யுதா	மதமொழுகுகின்ற
हरी	ஹரீ	தனது குதிரைகளை
युङ्क्ष्व	யுங்க்ஷ்வ	இரதத்திற் பூட்டுவாயாக.
कं	கம்	தன்னை வழிபடாதவர்கள் எவரையும்
हनः	ஹநः	கொல்வாயாக,
कं	கம்	தன்னை வழிபடுகின்ற எவரையும்
वसौ दधः	வஸௌ த⁴யः	தனமுடையராகச் செய்வாயாக.
इन्द्र !	இந்த்³ர !	இந்திரனே ! நீ
अस्मान् वसौ दधः	அஸ்மாந் வஸௌ த⁴யः	எங்கட்குத் தனத்தையுங் கொடுப்பாயாக,

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

ஈண்டொரு கதையுண்டு அஃதாவது:—இரகுகண புத்திரராகிய கோதமர் 'குருசிரு ஜய' வேந்தனுக்குப் புரோகிதராக இருந்தனர். அவ்வேந்தனுக்கும், பிற சத்துருக்களுக்கும் போர் தோன்றிய விடத்து, அந்த ரிஷி இம்மந்திரத்தால் இந்திரனைத் துதித்துத் தன்னைச் சேர்ந்தோர்கட்கு வெற்றியாமாறு பிரார்த்தித்தனர் என்பதாம். அவர் புரோகிதராக இருந்தமையை "கோதமர் ராகு கணர் என்னுமிருவருக்கும் புரோகிதராயிருந்தனர்" என வாசசனேய பறையுங் கூறுகின்றது என்பதாம்.

எப்போது யுத்தமுண்டாகின்றதோ, அப்போது, சத்துருக்களை வெல்பவருக்குத் தனம் இருப்பாக வைக்கப்படுகின்றது. வெற்றியால் தனங்கிடைக்கின்ற தென்பது பொருள். இந்திரனே ! நீ, அத்தன்மைய யுத்தங்கள் தொடங்கிய போது, சத்துருக்களை வெல்வதற்கு, மதங்களை ஒழுகச் செய்கின்ற நின்னுடைய குதிரைகளை இரதத்திற் பூட்டுவாயாக. பூட்டிக்கொண்டு, உன்னை வழிபடாத வேந்தர் யாரேனுமிருப்பரேல், அவரைக் கொல்வாயாக. உன்னை வழிபடுகின்ற வேந்தருக்குத் தனத்தைக் கொடுப்பாயாக என்பதாம்.

(3)

மந்திரம் 4.

३ २ ३ १ २३१ २ २ ३ ३कर२
1005. स्वादोरित्था विषूवतो मधोः पिबन्ति गौर्यः ।
१ २र ३ १२३२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३१३ ३ १ २
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा * मदन्ति शोभथा वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥

ஸ்வாதோரித்தா விஷூவதோ மதோ: பிபந்தி கௌர்ய: ।
யா இந்த்ரேண ஸயாவரீர்வ்ருஷ்ணா மதந்தி ஸோபதாவஸ்வீரநு ஸ்வராஜ்யம் ॥

அன்வயம்.

स्वादोः, इत्था, विषूवतः, मधोः, गौर्यः, पिबन्ति, या, इन्द्रेण, शोभथाः, वृष्णा सयावरीः, मदन्ति, वस्वीः स्वराज्यं अनु ॥

பதவுரை.

स्वादोः	ஸ்வாதோ:	இன்சுவை யுடையதும்,
इत्था	இத்தா	இவ்வாறு
विषूवतः	விஷூவத:	வேள்விகளனைத்திலும் நிறைந்தது ம்
मधोः	மதோ:	மதுரரச முடையதுமாகிய சோமத்தை,
गौर्यः	கௌர்ய:	வெண்மை நிறமுடைய பசுக்கள்
पिबन्ति	பிபந்தி	அருந்துகின்றன.
या	யா	எப் பசுக்கள்
इन्द्रेण	இந்த்ரேண	இந்திரனுடன்
शोभथाः	ஸோபதா:	அழகு பெற்றிருக்கின்றனவோ,
वृष्णा सयावरीः	வ்ருஷ்ணா ஸயாவரீ:	விரும்பியதைப் பொழிவனவாய்
मदन्ति	மதந்தி	இந்திரன் அருந்தி எஞ்சிய சோமத்தையுண்டு களிப்படைகின்றனவோ,
वस्वीः स्वराज्यं अनु	வஸ்வீ: ஸ்வராஜ்யம் அநு	பால் கொடுத்துக்கொண்டு இந்திரன் இராச்சியத்தில் வசிக்கின்றனவோ, (அப்பசுக்கள் என்பதாம்.)

* मदन्ति सोभसे, என்பது இருக்கு.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில்—1. கோதமர் ரிஷி.

இனிய சுவையுடையதும், இவ்வாற்றால் வேள்விகளனைத்திலும் வியாபகமுடையதும், மதுர ரசமுடையதுமாகிய சோமத்தை, வெண்மை நிறமுடைய பசுக்கள் அருந்துகின்றன. (எப்பசுக்களெனின்?) விரும்பிய வற்றைப் பொழிகின்ற இந்திரனுடன் செல்கின்றனவாய்க் களிப்படைகின்றவைகளும், பால் கொடுத்துக் கொண்டு இந்திரனுடைய இராச்சியத்தில் வாழ்கின்றவைகளுமான பசுக்கள் என்க. இந்திரன் அருந்தி எஞ்சிய சோமரசத்தை அருந்துகின்றன என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

१ २ ३२३ १२ ३ १ २
1006. ता अस्य पृशनायुवः सोमꣳ श्रीणन्ति पृश्नयः ।
३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २३ २ ३१२ ३ १ २
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रꣳ हिन्वन्ति सायकं वस्वीरनु स्वराज्यम्॥३॥

தா அஸ்ய பூஶநாயுவஃ ஸொமஂ ஶ்ரீணந்தி பூஶ்நயஃ ।
ப்ரியா இந்த்ரஸ்ய தெநவொ வஜ்ரஂ ஹிந்வந்தி ஸாயகஂ வஸ்வீ
[ரநு ஸ்வராஜ்யம் ॥

அந்வயம்.

अस्य, पृशनायुवः, ताः पृश्नयः, सोमं श्रीणन्ति, इन्द्रस्य, प्रियाः, धेनवः, सायकं वज्रं, हिन्वन्ति, वस्वीः, स्वराज्यं अनु ॥

பதவுரை.

अस्य	அஸ்ய	இவ்விந்திரனைத்
पृशनायुवः	பூஶநாயுவஃ	தொடுவதற்கு விரும்பின
ताः पृश्नयः	தாஃ பூஶ்நயஃ	பல நிறமுள்ள அப் பசுக்கள்,
सोमं श्रीणन्ति	ஸொமஂ ஶ்ரீணந்தி	இந்திரனருந்துதற்குரிய சோமரசத்தைத் தமது பாலுடன் கலக்கின்றன.
इन्द्रस्य	இந்த்ரஸ்ய	இந்திரனுக்குப்
प्रियाः	ப்ரியாஃ	பிரிய காரணமான
धेनवः	தெநவஃ	பாற் பசுக்கள்
सायकं वज्रं	ஸாயகஂ வஜ்ரஂ	பகைவரை யழிக்கின்ற வச்சிரமாகிய ஆயுதத்தைச்

हिन्वन्ति	ஹிந்வந்தி	சத்துருவின் பாற் செலுத்துகின்றன.
वस्वीः	வஸ்வீ:	பால் கொடுக்கின்ற அவைகள்
स्वराज्यं अनु	ஸ்வராஜ்யம் அநு	இந்திரனுடைய இராச்சியத்தில் வாழ்கின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

இவ் விந்திரனைத் தொடவிரும்பின பலவகை நிறமுடைய இந்திரனது பசுக்கள், இந்திரன் அருந்துதற்குரிய சோமரசத்தைப் பாலுடன் சேர்க்கின்றன. இந்திரனுக்குப் பிரியமானபாற் பசுக்கள், சத்துருக்களை நாசப்படுத்துகின்ற வச்சிரமென்னும் ஆயுதத்தைப் பகைவரின் மேற் செலுத்துகின்றன. அதாவது, சத்துருக்களின் மேல் ஆயுதத்தைச் செலுத்துமாறு இந்திரனுக்கு மதத்தைக் கொடுக்கின்றன. (களிப்பை யுண்டாக்குகின்றன.) என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

१ २ ३ १ २ ३ १ ३२ ३ १ २
1007. ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः ।
३ ३१ २ ३१ २ ३ २ ३१ २ ३ १ २
व्रतान्यस्य सश्रिरे पुरूणि पूर्वचित्तये वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ ३ ॥

இருக்கு 1-84-10-12.

தா அஸ்ய நமஸா ஸஹ: ஸபர்யந்தி ப்ரசேதஸ: ।
வ்ரதாந்யஸ்ய ஸஶ்ரிரே பூரூணி பூர்வசித்தயே வஸ்வீரநு
[ஸ்வராஜ்யம் ॥

அந்வயம்.

प्रचेतसः ताः, अस्य सहः, नमसा सपर्यन्ति, पूर्वचित्तये, अस्य, पुरूणि व्रतानि, सश्रिरे, वस्वीः, स्वराज्यं अनु ॥

பதவுரை.

प्रचेतसः ताः	ப்ரசேதஸ: தா:	சிறந்த அறிவுடைய அப் பசுக்கள்
अस्य सहः	அஸ்ய ஸஹ:	இவ்விந்திரனுடைய ஆற்றலை,
नमसा सपर्यन्ति	நமஸா ஸபர்யந்தி	தமது பால்வடிவ அன்னத்தாற் போற்றுகின்றன.
पूर्वचित्तये	பூர்வசித்தயே	போரிடுவோர்க்கு, முன்னுள்ளதை யறிவிப்பதற்கு

अस्य	ஸவஸ்ய	இவனுடைய
पुरूणि व्रतानि	வபுரணி வ்ரதானி	அநேகவீரதமான வீரச் செயல் களைப் (கண்டு)
सश्चिरे	ஸஶ்சிரெ	போற்றுகின்றன.
वस्वीः	வஸ்வீஃ	பால் கொடுக்கின்ற அப் பசுக்கள்
स्वराज्यं अनु	ஸ்வராஜ்யம் அநு	இந்திரனுடைய இராச்சியத்தில் வாழ்கின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

மிகப் புத்தியுள்ளவைகளான அப்பசுக்கள், தமது பாலாகிய அன்னத்தால் இவ் விந்திரனுடைய வலியைப் போற்றுகின்றன. இவனுடைய, பகைவரைக் கொல்லும் வீரச் செயல்களை உணர்தலாந் தன்மையாற் போற்றுகின்றன என்பதாம். எதன் பொருட்டெனின்? இவனுடன் போரிட்ட விருத்திரன் முதலியோர்கள் அனைவரும் மாண்டார்கள், எதன் பொருட்டுத் தாங்களும் உயிரிழக்கின்றீர்கள் என்று, அவர்களுக்கு முற்செய்தியை யறிவுறுத்தற் பொருட்டென்பதாம். மற்றையவை முன்போன்றன. (3)

ஐந்தாவது கண்டம்.

முற்றிற்று.

ஆறுவது கண்டம்

பிரபாடகம்—3. அத்தியாயம்—6. கண்டம்—6.

எட்டு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१ २ ३ १२२ ३ १ २२ ३ २
1008. असाव्यंशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः ।
३२उ ३ १२
श्येनो न योनिमासदत् ॥ १ ॥

ஸவஸாவ்யம்ஶுர்மதாயாப்ஸு தக்ஷோ கிரிஷ்டாஃ ।
ஶ்யெநோ ந யொநிமாஸதத் ॥

அன்வயம்.

गिरिष्ठाः, अंशुः, मदाय, असावि, अप्सु दक्षः, श्येनः, न योनिं, आसदत् ॥

பதவுரை.

गिरिष्ठाः अंशुः	மிரிஷ்டாः அம்ஶுः	மலையிலுண்டாகிய சோமம்
मदाय असावि	மதாய அஸாவி	களிப்பின் பொருட்டு நன்கு தோன்றியது. மற்றும்,
अप्सु दक्षः	அப்ஸு தக்ஷः	ஆற்று நீரிற் பெருகுகின்றது.
श्येनः न	ஶ்யேநः ந	பருந்து உட்காருவதுபோல்
योनिं आसदत्	யோநிம் ஆஸதத்	தனகிடத்திலிருக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1. சமதக்கினி ரிஷி.

பருவதத்திற் றோன்றுகின்ற சோமம், களிப்பின் பொருட்டுப் பிழியப் பெற்று 'வசதிவரி' என்னும் ஆற்று நீரில் வளர்கின்றது. அன்றியும், பருந்து, விரைவாய் வந்து தனகிடத்திலிருப்பது போல், தனகிடத்தில் வந்திருக்கின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३२

1009. शुभ्रमन्धो देववातमप्सु * धौतं नृभिः सुतम् ।

१ २ ३ २३ १ २

स्वदन्ति गावः पयोभिः ॥ २ ॥

ஶுப்ரமந்தோ தெவவாதமப்ஸு தௌதம் நரூபிஃ ஸுதம் ।

ஸ்வதந்தி காவஃ பயோபிஃ ॥

அன்வயம்.

देववातं, शुभ्रं, अन्धः, नृभिः सुतं, अप्सु धौतं, गावः, पयोभिः, स्वदन्ति ॥

பதவுரை.

देववातं	தெவவாதம்	தேவர்களாற் போற்றத்தக்கதும்
शुभ्रं	ஶுப்ரம்	அழகியதுப்,
अन्धः	அந்தஃ	உணவு வடிவமும்
नृभिः सुतं	நரூபிஃ ஸுதம்	வேட்போர்களாற் பிழியப்பெற்றதும்,
अप्सु धौतं	அப்ஸு தௌதம்	ஆற்று நீரிற் சுத்தம் பண்ணப் பட்டதுமாகிய சோமத்தை,

* धूतो नृभिः, என்பது இருக்கு.

गावः	ஹாவஃ	பசுக்கள்
पयोभिः	வயொபிஃ	தமது பால்களால்
स्वदन्ति	ஸ்வதந்தி	இன்சுவை யுடையனவாய்ச் செய்கின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

தேவர்களாற் பிரார்த்திக்கப்பெற்றதும், உணவானதும், வேட்போர்களாற் பிழியப்பட்டதும், ஆற்று நீராற் பரிசோதிக்கப் பெற்றதுமாகிய சோமத்தைப், பசுக்கள் தமது பால்களால் இன்சுவை மிகுந்ததாய்ச் செய்கின்றன என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

२ २२३ १ २२३ १२ ३१२
1010. आदीमश्वं न होतार मशूशुभन्नमृताय ।
२ ३१२ ३ १२
मधोरसꣳ सधमादे ॥ ३–१६ ॥

இருக்கு 9-62-4-6.

ஆதீமஶ்வம் ந ஹொதார மஶூஶுபன்னமுதாய ।
மதொரஸꣳ ஸதமாதெ ॥

அன்வயம்.

आत्, होतारं ईम्, मधोः रसं, सधमादे, अमृताय, अश्वं न, अशूशुभन् ॥

பதவுரை.

आत्	ஆத்	பின்னர்,
होतारं ईम्	ஹொதாரம் ஈம்	செலுத்துகின்ற
मधोः रसं	மதொஃ ரஸம்	இச் சோமரசத்தை,
सधमादे	ஸதமாதெ	வேள்வியில்
अमृताय	அமுதாய	மரணமிலாத்தன்மையின் பொருட்டு
अश्वं न	அஶ்வம் ந	குதிரையை அலங்கரிப்பது போல்,
अशूशुभन्	அஶூஶுபன்	வேட்போர்கள் அலங்கரிக்கின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

பின்னர், சாகாமையின் பொருட்டு வேட்போர்கள் ஏவுகின்ற இச்சோமரசத்தை, வேள்வியின்கண், அலங்கரிக்கின்றார்கள். அதிலுவமை:—போர்த் தலைவர்கள் உயுத்தத்தில் குதிரையை அலங்கரித்தல் போன்று என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

३ २ ३ २ ३२उ ३ १२ ३ १ १ ३२
1011. अभि द्युम्नं बृहद्यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुम् ।
१ २र ३ १ २
वि कोशं मध्यमं युव ॥ १ ॥

அபி த்யும்நம் ப்ருஹத்யஶ இஷஸ்பதெ திதீஹி தெவ தெவயும் ।
வி கொஶம் மத்யமம் யுவ ॥

அந்வயம்.

इषस्पते !, देव !, द्युम्नं, बृहत् यशः, देवयुं, अभिदिदीहि, मध्यमं कोशं, वियुव ॥

பதவுரை.

इषस्पते !	உஷஸ்பதெ !	அன்னங்சட்கு இறையே !
देव !	தெவ !	போற்றத்தக்க சோமமே ! நீ,
द्युम्नं	த்யும்நம்	பிரகாசமுடையதும்
बृहत् यशः	ப்ருஹத் யஶஃ	மிகுந்த அன்னமாயதும்
देवयुं	தெவயும்	தேவர்கள் விரும்பத்தக்கதும் அவியுமாகிய ரசத்தை
अभिदिदीहि	அபிதிதீஹி	எம்மை நோக்கி விளக்குவாயாக. (கொடுப்பாயாக.)
मध्यमं कोशं	மத்யமம் கொஶம்	மற்றும், அந்தரிட்சத்திலுள்ள மேகத்தை
वियुव	வியுவ	மழையின் பொருட்டு ஏவுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—பெருங்கீதத்தின் இண்டாவது சூக்தத்தில்—1. ஊர்த்துவ சத்மர் ரிஷி.

அன்னத்திற்குத் தலைவனாகிய தேவனென்னுஞ் சோமமே ! நீ, பிரகாசமுடையதும், மிகுந்ததும், அன்னவடிவமும், தேவர்களால் விரும்பத்தக்கதுமாகிய, உன்னுடைய ரசத்தை, எங்களை முன்னிட்டுக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

१ २ ३क २र ३ २ ३ २उ १ २ ३ १ २
1012. आ वच्यस्व सुदक्ष चम्वोः सुतो विशां वह्निर्न विश्पतिः ।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३२उ ३ १ २ ३ १ २
वृष्टिं दिवः पवस्व रीतिमपो जिन्वन् गविष्टये धियः ॥ २–१७ ॥

இருக்கு 9-108-9-10.

சூ வயஸ்வ ஸுதக்ஷ சம்வோஃ ஸுதோ விஶாம் வஹ்நிர்ந விஶ்பதிஃ ।
வ்ருஷ்டிம் திவோ பவஸ்வ ரீதிமபொ ஜிந்வந் கவிஷ்டயே தியஃ ॥

அந்வயம்.

सुदक्ष !, चम्वोः सुतः, वह्निः न विश्पतिः, विशां, आ वच्यस्व, गविष्टये, धियः जिन्वन्, अपः रीतिं वृष्टिं, दिवः पवस्व ॥

பதவுரை.

सुदक्ष !	ஸுதக்ஷ !	அழகிய வலியுடையோய் !
चम्वोः सुतः	அம்வோஃ ஸுதஃ	பலகைகளாற் பிழிந்தெடுக்கப் பெற்ற நீ,
वह्निः न विश्पतिः	வஹ்நிஃ ந விஶ்பதிஃ	பிரசைகளுக்கு இறைவனுகிய வேந்தன் போன்று
विशां	விஶாம்	பிரசைகளைத் தாங்குகின்றவனுகிக்
आ वच्यस्व	சூ வயஸ்வ	கலசத்தை யடைவாயாக.
गविष्टये	கவிஷ்டயே	பசுவை விரும்புகின்ற தலைவன் பொருட்டு
धियः जिन्वन्	தியஃ ஜிந்வந்	கருமங்களைச் செலுத்திக்கொண்டு
अपः रीतिं वृष्टिं	அபஃ ரீதிம் வ்ருஷ்டிம்	மழை பெய்தலை யொப்ப
दिवः पवस्व	திவஃ பவஸ்வ	வானிலிருந்து ஒழுகுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—6.

அழகிய ஆற்றலுடையோய் ! பலகைகளாற் பிழியப்பட்ட நீ, பிரசைகளைவரையுந் தாங்குகின்ற அரசன் போன்று, பிரசைகளைத் தாங்குபவனுயிருந்து கலசத்தை யடைவாயாக. அன்றியும், நீ, நீர்களின் நிறைவை யுண்டாக்கும் மழை பெய்வதுபோல், வானிலிருந்து ஒழுகுவாயாக. யாது செய்துகொண்டெனின் ? தன்னை விரும்புகின்ற வேள்வித் தலைவன் பொருட்டுக் கருமங்களை யேவிக்கொண் டென்பதாம். (6)

மந்திரம் 6.

३ १ २र३ २ २ ३ २ ३२ १ २
1013. प्राणा शिशुर्महीनाꣳ हिन्वन्नृतस्य दीधितिम् ।
२ ३ १ २ ३ १ २३ १ २ ३ २
विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता ॥ १ ॥

ப்ராணா ஶிஶுர்ஹீநாம் ஹிந்வந்ருதஸ்ய தீதிதிம் ।
விஶ்வா பரி ப்ரியா ஭ுவதத ஜிதா ॥

அந்வயம்.

प्राणा, महीनां शिशुः, ऋतस्य, दीधितिं, हिन्वन्, विश्वा प्रिया, परि भुवत्, अध द्विता ॥

பதவுரை.

प्राणा	ப்ராணா	இயக்குவிக்கின்றதும், அல்லது, வேள்வி முடிவதற்குச் சாதனமும்
महीनां शिशुः	மஹீநாம் ஶிஶுஃ	நீரின் புத்திரனுமாகிய சோமம்,
ऋतस्य	ஜதஸ்ய	வேள்வியை
दीधितिं	தீதிதிம்	விளக்குகின்ற, அல்லது, தாங்குகின்ற தனது ரசத்தைச்
हिन्वन्	ஹிந்வந்	செலுத்துவதாய்
विश्वा प्रिया	விஶ்வா ப்ரியா	அனைத்திற்கும் பிரியமாகிய அவிகளை
परि भुवत्	பரி ஭ுவத்	வியாபிக்கின்றது.
अध द्विता	அத ஜிதா	மற்றும், வானுலகம் மண்ணுலகம் என்னு மிரண்டிலுமிலிருக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—மூன்றாவது மூன்றில்—1. பருவதர், நாரதர் ரிஷி.

வேள்வியைச் செலுத்துபவனும், மகத்தாகிய நீரின் புத்திரனுமாகிய சோமம், வேள்வியை விளக்குகின்ற, அல்லது, தாங்குகின்ற தனது இரசத்தைச் செலுத்திக்கொண்டும், அனைத்திற்கும் பிரியமாகிய அவிகளை வியாபிப்பதாகியும் வானுலகம் மண்ணுலகங்களில் இருக்கின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 7.

१२ ३१ २ ३ २ १२३ १ २२ ३२
1014. उप त्रितस्य पाष्यो३ रभक्त यद्गुहा पदम् ।
३१ २ ३१ २२३१२ ३२
यज्ञस्य सप्त धामभिरध प्रियम् ॥ २ ॥

உவ தி₃தஸ்ய வாஷ்யோ₃ ரபக்த யத்₃கு₃ஹா பத₃ம் ।
யஜ்ஞஸ்ய ஸப்த தா₄மபி₄ரத₄ ப்ரியம் ॥

அன்வயம்.

त्रितस्य, गुहा, पाष्योः पदं, यत् उप अभक्त, अध, यज्ञस्य धामभिः सप्त, प्रियं, (अभिष्टुवन्ति) ॥

பதவுரை.

त्रितस्य	தி₃தஸ்ய	'திரிதர்' என்னும் இருடியினுடைய
गुहा	கு₃ஹா	வேள்வியிலுள்ள அவியின்கண்ணிருக்கப்பட்ட
पाष्योः पदं	வாஷ்யோ₃: பத₃ம்	கல்லைப்போல் வலியுள்ள, பிழியும் பலகைகளிரண்டை
यत् उप अभक्त	யத் உப ப₄க்த	எப்போது சோமம் அடைகின்றதோ,
अध	அத₄	அப்போது,
यज्ञस्य धामभिः सप्त	யஜ்ஞஸ்ய தா₄மபி₄: ஸப்த	வேள்வியைத்தாங்குகின்ற காயத்திரி முதலிய ஏழு இசைகளாற்
प्रियं	ப்ரியம்	களிப்பிக்கின்ற சோமத்தை
(अभिष्टुवन्ति)	(அபி₄ஷ்டு₂வந்தி)	வேட்போர்கள், துதிக்கின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

'திரிதர்' என்னும் பெயர் பூண்டவனும், துதிக்கின்றோனுமாகிய என்னுடைய வேள்வியில், அவிதாங்குமிடத்திலிருக்கப்பெற்ற கல்லைப்போல், வலிவுள்ளதாய்ப் பிழிகின்ற இரண்டு பலகையின் மேல், சோமம் எப்போது வசிக்கின்றதோ, அதன் பின்னர், வேள்வியைத் தாங்கப்பெற்ற காயத்திரி முதலிய ஏழுவகைச் சந்தங்களாற் பிரியப்படுத்துஞ் சோமத்தை, வேட்போர்கள் துதிக்கின்றார்கள். அல்லது, பரவுந் தன்மையுள்ள ஆற்று நீருடன் சோமத்தைக் கலக்கின்றார்கள் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 8.

१ २ २ २ ३ १२ ३१ २२ ३ २
1015. त्रीणि त्रितस्य धारया * पृष्टेष्वैरयद्रयिम् ।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः ॥ ३–१८ ॥

இருக்கு 9-102-1-3.

தீ⁻ணி தி⁻தஸ்ய தா⁻ரயா வ்ருஷ்டேஷ்வைரயத்ரயிம் ।
மிமீதே அஸ்ய யொஜ⁻நா வி ஸு⁻க்ரதுஃ ॥

அன்வயம்.

(सोमः,) धारया, त्रितस्य, त्रीणि, पृष्टेषु, रयिं, ऐरयत्, सुक्रतुः, अस्य योजना, विमिमीते ॥

பதவுரை.

(सोमः)	(ஸொமஃ)	(சோமம்)
धारया	தா⁻ரயா	தனது, தாரையால்
त्रितस्य	தி⁻தஸ்ய	திரிதனுகிய என்னுடைய
त्रीणि	தீ⁻ணி	வேள்வியின் அங்கங்களான மூன்று சவனங்களைக் குறித்து
पृष्टेषु	வ்ருஷ்டே⁻ஷு	சாமமறை பாடுபவர்களுக்குள்
रयिं	ரயிம்	தனம் கொடுக்கின்ற இந்திரனை,
ऐरयत्	ஐரயத்	ஏவுகின்றது. (ஏனெனின் ?)
सुक्रतुः	ஸு⁻க்ரதுஃ	சிறந்த வேள்வியைக் கொண்ட துதியாளன்
अस्य योजना	அஸ்ய யொஜ⁻நா	இவ் விந்திரனுடைய துதியைச்
विमिमीते	விமிமீதே	சொல்கின்றனன். (ஆதலின் என்க)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

சோமமானது, 'திரித' னென்னும் என்னுடைய வேள்வியின் தனமாகிய மூன்று சவனங்களைக் குறித்துத் தனது தாரையால் ஒழுகுகின்றது. அன்றியும், சாமவேதத்தைப் பாடுவதற்குத் தனங் கொடுக்கின்ற இந்திரனைச் செலுத்துகின்றது. வேள்வியைத் துதிக்கின்றவன் இவ் விந்திரனுடைய தோத்திரங்களைச் சொல்கின்றனன் ஆதலின், இந்திரனைச் சாமங்களில் செலுத்துகின்றது என்பதாம். (3)

மந்திரம் 9.

१२ ३ १ २ ३ २३ १२ ३ २
1016. पवस्व *वाजसातये पवित्रे धारया सुतः ।
१ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २
इन्द्राय सोम विष्णवे देवेभ्यो मधुमत्तरः ॥ १ ॥

பவஸ்வ வாஜஸாதயெ பவித்ரெ தாரயா ஸுதஃ ।
இந்த்ராய ஸொம விஷ்ணவெ தெவெப்யொ மதுமத்தரஃ ॥

அந்வயம்.

सोम !, सुतः, इन्द्राय, विष्णवे, देवेभ्यः, मधुमत्तरः, वाजसातये, पवित्रे, धारया, पवस्व ॥

பதவுரை.

सोम !	ஸொம !	சோமமே !
सुतः	ஸுதஃ	சமஸ்காரம் பண்ணப்பெற்ற நீ,
इन्द्राय	இந்த்ராய	இந்திரனுக்கும்
विष्णवे	விஷ்ணவெ	விட்டுணுவிற்கும்
देवेभ्यः	தெவெப்யஃ	ஏனைய தேவர்கட்கும்
मधुमत्तरः	மதுமத்தரஃ	மிகுந்த இன்சுவையுடைய
वाजसातये	வாஜஸாதயெ	உணவாகுமாறு
पवित्रे	பவித்ரெ	தசாபவித்திர மென்னும் ஆடையையுடைய பாத்திரத்திலிருந்து
धारया	தாரயா	தாரையால்
पवस्व	பவஸ்வ	ஒழுகுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—நான்காவது மூன்றில்—1. இரேபர் ரிஷி.

சோமமே ! பிழியப்பெற்ற நீ, இந்திரன் பொருட்டும், விட்டுணுவின் பொருட்டும், ஏனைய மித்திரன் முதலிய தேவர்களின் பொருட்டும், மிகுந்த இன்சுவையுடைய உணவாமாறு பாத்திரத்தின்கண் தாரையால் ஒழுகுவாயாக என்பதாம். (1)

---

* वाजसातमः, என்பது இருக்கு.

மந்திரம் 10.

१ २ ३२३ १२ ३ १२ ३१२
1017. त्वाꣳ रिहन्ति धीतयो हरिं पवित्रे अद्रुहः ।
३ २ ३२उ ३२३ १२ ३ १२
वत्सं जातं न मातरः पवमाना विधर्मणि ॥ २ ॥

க்வாம் ரிஹந்தி யீதயோ ஹரிம் பவித்ரே அத்ரு²ஹ: ।
வத்ஸம் ஜாதம் ந மாதர: பவமாநா விய²த்ரு²ணி ॥

அன்வயம்.

पवमान!, विधर्मणि, अद्रुहः, धीतयः, हरिं पवित्रे त्वां, रिहन्ति, जातं वत्सं, मातरः न ॥

பதவுரை.

पवमान!	பவமாந!	பவித்திரமாகிய சோமமே!
विधर्मणि	வியத்ருணி	பலவகை அவிகளைத் தாங்குகின்ற வேள்வியில்
अद्रुहः	அத்ரு²ஹ:	தீமையற்ற (கபடமற்று)
धीतयः	யீதய:	விரல்கள்
हरिं पवित्रे त्वां	ஹரிம்பவித்ரே த்வாம்	பாத்திரத்திலிருக்கின்ற பசுமை நிறமுடைய உன்னைப்
रिहन्ति	ரிஹந்தி	பிழிதற் பொருட்டுத் தொடுகின்றன.
जातं वत्सं	ஜாதம் வத்ஸம்	ஈன்ற கன்றைப்
मातरः न	மாதர: ந	பசுக்கள் நக்குவன போன்று.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

புனிதமாகிய சோமமே! அநேக விதமான அவிகளைத் தாங்குகின்ற வேள்வியில், துரோகம் பண்ணுத் விரல்கள், பவித்திரமாகிய பாத்திரத்திலிருக்கின்றதும், பச்சை நிறமுடையதுமாகிய உன்னைப் பிழிதற் பொருட்டுப் பற்றுகின்றன. அதிலுவமை:—ஈன்ற கன்றுகளைத் தாய்களான பசுக்கள் நக்குவன போன்று என்பதாம். (2)

ஈண்டு 'தீதய' என்பது விரல்களின் பெயர் என்று நிகண்டு கூறுகின்றது.

மந்திரம் 11.

१ २र २र
1018. त्वं द्यां च महिव्रत पृथीवीं चातिजभ्रिषे ।
१२ ३१२ ३ १२ ३२
प्रति द्रापिममुञ्चथाः पवमान महित्वना ॥ ३-१९ ॥

இருக்கு. 9-100-6-7-9.

க்வம் த்3யாம் ச மஹிவ்ரத வ்ரயிவீம் சாதிஜப்4ரிஷே ।
ப்ரதி த்3ராவிமமுஞ்சதா2ஃ பவமான மஹித்வநா ॥

அந்வயம்.

மஹிவ்ரத!, த்வं, த்யாம் ச, ப்ருதிவீம் ச, அதிஜப்4ரிஷே, பவமான, மஹித்வனா, த்3ராபிம் ப்ரதி, அமுஞ்சதா2ஃ ॥

பதவுரை.

மஹிவ்ரத!	உஹிவ்ரத!	கருமக்கட்குப் பெருஞ் சாதக மாகிய சோமதேவ!
த்வம்	க்வம்	நீ,
த்யாம் ச	த்3யாம் அ	வானுலகையும்
ப்ருதிவீம் ச	வ்ரயிவீம் அ	மண்ணுலகையும்
அதிஜப்4ரிஷே	சுதிஜஹ்ரிஷே	முழுதுந் தாங்குகின்றனை. மற்றும்,
பவமான	வவசாந	சமஸ்காரமுடையவனும்
மஹித்வனா	உஹிக்வநா	பெருந் தன்மை யுடையவனுமிருந்து
த்3ராபிம் ப்ரதி	ஊவிம் வ்ரதி	பட்டையைக்கொண்டுபற்றிய கவசத்தை
அமுஞ்சதாः	சுஉணுயாः	விட்டுவிடுகின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

பெரிய கருமங்களை முடிக்கின்ற சோமதேவ! நீ, வானநாட்டையும், மண்ணுட்டையும் இனிது தாங்குகின்றாய். சோமவடிவமாய் வானிலிருப்பதும், கொடியாய் மண்ணிலிருப்பது மாமென்க. இவ்வாறு, இரண்டுலகிலு மிருக்கும் தன்மை காண்க. ஓழுகுகின்ற சோமதேவ! நீ, மகத்தாந் தன்மையுடன் கூடியவனுமிருந்து கவசத்தை விட்டிருக்கின்றாய் என்பதாம். இம்மந்திரம் சோமக் கொடியிலுள்ள புரணி நீங்கி விட்டமையைக் கூறுகின்றது. (3)

மந்திரம் 12.

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २३ २ ३ १ २
1019. इन्दुर्वाजी पवते गोन्योधा इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय ।
२ ३ २ ३ १२ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २
हन्ति रक्षो बाधते पर्य्यरातिं वरिवस्कृण्वन् वृजनस्य राजा ॥ १ ॥

இந்துர்வாஜீ பவதெ கொந்யோதா இந்த்ரெ ஸொமஃ ஸஹ
[இந்வந்மதாய ।
ஹந்தி ரக்ஷோ பாதெ பர்யாராதிம் வரிவஸ்க்ருண்வந்
[வ்ருஜநஸ்ய ராஜா ॥

அந்வயம்.

वाजी, गोन्योधा, इन्दुः सोमः, सहः, इन्द्रे, इन्वन्, मदाय, पवते, वृजनस्य राजा, वरिवः कृण्वन्, रक्षः हन्ति, अरातिं, परि बाधते ॥

பதவுரை.

वाजी	வாஜீ	ஆற்றலுடையதும்,
गोन्योधा	கொந்யோதா	இரசப் பெருக்கின் வடிவமும்
इन्दुः सोमः	இந்துஃ ஸொமஃ	விளக்கமுடையதுமாகிய சோமம்,
सहः	ஸஹஃ	வலியைக் கொடுக்கின்ற இரசத்தை
इन्द्रे	இந்த்ரெ	இந்திரனிடத்திற்
इन्वन्	இந்வந்	செலுத்திக்கொண்டு
मदाय	மதாய	இந்திரனுடைய களிப்பின் பொருட்டு
पवते	பவதெ	ஒழுகுகின்றது.
वृजनस्य राजा	வ்ருஜநஸ்ய ராஜா	ஆற்றலுக்கிறையாகிய சோமம்,
वरिवः कृण्वन्	வரிவஃ க்ருண்வந்	துதிப்போர்களுக்குத் தனத்தைக் கொடுத்துக் கொண்டு
रक्षः हन्ति	ரக்ஷஃ ஹந்தி	இராக்கதர்களை யழிக்கின்றது. மற்றும்,
अरातिं	அராதிம்	பகைவர்களைப்
परि बाधते	பரி பாதெ	பலவகையாய்ப் பீடிக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்— 6. இருக்கு—ஐந்தாவது மூன்றில்—1. மன்யு ரிஷி.

ஒழுகுஞ் சீலமுள்ளதும், இரசப் பெருக்கின் வடிவமுமாகிய சோமம், இந்திரனிடத்து, வலியைக் கொடுக்கின்ற இரசத்தைச் செலுத்திக்கொண்டு

இவ்விந்திரனுடைய களிப்பின் பொருட்டு ஒழுகுகின்றது. அன்றியும், இராக்கதர்களின் குலத்தை யழிக்கின்றது. மற்றும், பகைவர்களைப் பலவகையாய்ப் பீடிக்கின்றது. எத்தன்மைய சோமமெனின்? துதிப்போர்களுக்குத் தனத்தை யளிப்பதும், ஆற்றலுக்குத் தலைமையா யுள்ளதுமாம் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 13.

२३ १२३ १ २ ३२ ३१ २र ३ १२
1020. अध धारया मध्वा पृचानस्तिरो रोम पवते अद्रिदुग्धः ।
२ ३१ २ ३ १ २३ २ ३२ ३१ २ ३१ २र
इन्दुरिन्द्रस्य सख्यं जुषाणो देवो देवस्य मत्सरो मदाय ॥ २ ॥

சுய யாரயா ஊ⁴வ்வா வ்ருʼசா நஸ்தி⁴ரோ ரோம² பவதே அத்³ரிதுக்³தோ⁴꞉ ।
இந்தூ³ரிந்த்³ரஸ்ய ஸக்²யம் ஜுʼஷாணோ தே³வோ தே³வஸ்ய
[மத்ஸரோ மதா³ய ॥

அன்வயம்.

அத, அத்ரிதுக்தோ⁴꞉, மத்⁴வா தா⁴ரயா, ப்ருʼசான꞉, ரோம, திர꞉ பவதே, இந்த்³ரஸ்ய, ஸக்²யம், ஜுʼஷாண꞉, தே³வ꞉, மத்ஸர꞉ இந்து³꞉, தே³வஸ்ய மதா³ய, பவதே ॥

பதவுரை.

अध	சுய	பின்னர்,
अद्रिदुग्धः	அத்³ரிதுக்³தோ⁴꞉	கற்களாலிடித்துப் பிழியப்பட்ட சோமம்,
मध्वा धारया	மத்⁴வா தா⁴ரயா	களிப்பைக் கொடுக்கின்ற தாரையால்
पृचानः	ப்ருʼசான꞉	தேவர்களைத் திருப்தி செய்து கொண்டு
रोम	ரோம²	பவித்திரமாகிய கம்பளியில்
तिर पवते	திர꞉ பவதே	வடிக்கப்பெற்று ஒழுகுகின்றது.
इन्द्रस्य	இந்த்³ரஸ்ய	இந்திரனுடைய
सख्यं	ஸக்²யம்	நட்பை
जुषाणः	ஜுʼஷாண꞉	அடைந்ததும்
देवः	தே³வ꞉	விளங்கப்பட்டதும்,
मत्सरः इन्दुः	மத்ஸர꞉ இந்து³꞉	களிப்பைக் கொடுக்கின்றதுமாகிய சோமம்,
देवस्य मदाय	தே³வஸ்ய மதா³ய	இந்திரனுடைய மதத்தின் பொருட்டு
पवते	பவதே	ஒழுகுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

பின்னர், கர்களாலிடித்துப் பிழிபப்பட்ட சோமம், மதங் கொடுக் கின்ற தாரையால் தேவர்களைச் சந்தோஷிக்கச் செய்துகொண்டு, ஆட்டு மயிர் களாற் செய்யப்பட்ட கம்பளியால் வடிக்கப்பட்டுக் கலசத்திற் பாய்கின் றது. மற்றும், இந்திரனுடைய நட்புத்தன்மையை, அல்லது, கருமத்தை, அடைந்து கொண்டதும், பிரகாசிப்பதும், களிப்பைக் கொடுப்பதுமாகிய சோமம், இந்திரனுடைய களிப்பின் பொருட்டு ஒழுகுகின்றது என்பதாம்.

மந்திரம் 14.

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३२उ ३ १२ ३ २

1021. *अभि व्रतानि पवते पुनानो देवो देवांस्वेन रसेन पृञ्चन् ।

२ ३१ २ ३ १ २र ३ २३ १ २ ३ २ ३ १ २

इन्दुर्धर्माण्यृतुथा वसानो दशक्षिपो अव्यत सानो अव्ये ॥३-२०॥

இருக்கு 9-97-10-12.

அபி வ்ரதானி பவதே புநாநோ தேவோ தேவாம்ஸ்வேந
[ரஸேந பிருஞ்சந் ।
இந்துர்தர்மாண்ருதுதா வஸாநோ தஸக்ஷிபோ அவ்யத
[ஸாநோ அவ்யே ॥

அந்வயம்.

धर्माणि व्रतानि, ऋतुथा वसानः, पुनानः, इन्दुः, अभिपवते, देवः, स्वेन रसेन, देवान् पृञ्चन्, दशक्षिपः, सानो अव्ये अव्यत ॥

பதவுரை.

धर्माणि व्रतानि	धर्माणि व्रतानि	வேள்வித் தலைவனைத் தாங்கு கின்ற கருமங்களை
ऋतुथा वसानः	ऋतुथा वसानः	இருது காலங்களில் வியாபித்துக் கொண்டுள்ள
पुनानः	पुनानः	பவித்திரமாகிய
इन्दुः	इन्दुः	சோமம்,
अभिपवते	अभिपवते	கலசத்தில் ஒழுகுகின்றது.
देवः	देवः	பிரகாசமுடைய சோமம்,
स्वेन रसेन	स्वेन रसेन	தனது இரசத்தால்

அபிப்ரியாணி, என்பது இருக்கு.

देवान् पृच्छन्	தெவாந் ப்ருஞ்ஜந்	இந்திரன் முதலிய தேவர்களைக் கூட்டிக்கொண்டு
दशक्षिपः	தஶக்ஷிபஃ	பத்து விரற்கடைக்கு மேல்
सानो अव्ये अव्यत	ஸாநொ அவ்யே அவ்யத	தசாபவித்திரமென்னும் ஆடையைச் சேர்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

நடக்கின்ற தரும கருமங்களை இருது காலத்தில் முடிப்பதும், பவித்திரமுமாகிய சோமம், கலசங்களை நோக்கிச் செல்கின்றது (ஒழுகுகின்றது.) எத்தன்மைய சோமமெனின்? இனிது கிரீடை செய்யுஞ் சீலமுடையதாகி, தனது இரசத்தால் இந்திரன் முதலியோர்களை யொன்று படுத்துகின்றதாமென்க. அத்தகைய இச்சோமம், பத்து விரற்கடைக்குமேல் தசாபவித்திரமென்னும் ஆடை நுனியில் ஒடுகின்றது. அல்லது, அச்சோமத்தை விரல்கள் பவித்திரமாகிய பாத்திரத்திற் சேர்ப்பிக்கின்றன. அல்லது, பவித்திரமென்னும் ஆடை நுனியில் ஒழுகுகின்ற சோமம் செல்கின்றது என்பதுமாம். (3)

ஈண்டு, 'க்ஷிப:' என்பது விரல்கள் என நிருத்தமுங் கூறுகின்றது.

ஆறாவது கண்டம்

முற்றும்.

ஏழாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—4. அத்தியாயம்—6. கண்டம்—7.

ஒன்பது மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१ २ ३ १ २ ३१२
1022. आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् ।
२ ३ ३ १ २ ३ २ ३१ २३ १ २र ३२ ३ १ २
यद्धस्या ते पनीयसी समिद्दीदयति द्यवीषꣳ स्तोतृभ्य आभर॥१॥

ஆ தெ அக்ந இதீமஹி த்யுமந்தம் தெவாஜரம் ।
யத்ஸ்யா தெ பநீயஸீ ஸமித்தீதயதி த்யவீஷம் ஸ்தொத்ருப்ய ஆபர ॥

அன்வயம்.

अग्ने देव!, द्युमन्तं, अजरं, ते आ, इधीमहि, यत् ह, पनीयसी, ते स्या, समित्, यवि, दीदयति, स्तोतृभ्यः, इषं आभर ॥

பதவுரை.

अग्ने देव!	அக்ஞெ தெவ!	அக்கினி தேவனே!
द्युमन्तं	த்யுமந்தம்	பிரகாசமுடையவனும்
अजरं	அஜரம்	கிழத்தன்மை யற்றவனுமாகிய
ते आ	தெ ஆ	அத்தகைய உன்னை, எல்லாவகையானும்
इधीमहि	இதீமஹி	வளர்க்கின்றோம்.
यत् ह	யத் ஹ	எப்போது உண்மையில்
पनीयसी	பநீயஸீ	போற்றத்தக்க
ते स्या	தெ ஸ்யா	உனது அத்தகையதாகிய
समित्	ஸமித்	சோதியானது,
यवि	த்யவி	வானுலகில்
दीदयति	தீதயதி	விளங்குகின்றதோ, அப்போது, (அக்கினியே! நீ)
स्तोतृभ्यः	ஸ்தோதృப்யஃ	துதிப்போர்கட்கு
इषं आभर	இஷம் ஆபர	அன்னத்தை நிறையக் கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—முதலாவது சூக்தத்தில்—1. வசுசுருதர், அல்லது வச்சர் ரிஷி.

அக்கினியே! பிரகாசமுடையவனும், கிழப்பருவமிலாதவனுமாகிய உன்னை, எல்லாவாற்றானும் வளர்க்கின்றோம். உண்மையில் எப்போது, போற்றத் தக்கதும், வளர்கின்றதுமாகிய சுவாலை வானுலகைப் பிரகாசிப்பிக்கின்றதோ, அப்போது, அக்கினியே! நீ, துதிப்போர்களான எங்கட்கு அன்னத்தை நிறையக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१ २ ३ २३ २ ३ १ २

1023. आ ते अग्न ऋचाहविः शुक्रस्य * ज्योतिषस्पते ।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२२ ३ १२ ३ २ ३ १ २

सुश्चन्द्र दस्म विश्पते हव्यवाट् तुभ्यꣳ हूयत इषꣳ स्तोतृभ्य आभर॥२॥

* सोचिषस्पते, என்பன இருக்கு.

சூ தெ சுஶ்ந ஊசாஹவிஃ ஶுக்ரஸ்ய ஜ்யோதிஷஸ்பதெ ।
ஸுஶ்சந்த்ர தஸ்ம விஶ்பதெ ஹவ்யவாட்ட் துப்யம் ஹூயத
[இஷம் ஸ்தோத்ரப்ய சூபர ॥

அந்வயம்.

सुश्चन्द्र, दस्म, विश्पते, हव्यवाट्, ज्योतिषस्पते, अग्ने !, शुक्रस्य, ते, तुभ्यं, ऋचाहविः, आहूयते, स्तोतृभ्यः, इषं आभर ॥

பதவுரை.

सुश्चन्द्र	ஸுஶ்சந்த்ர	இன்பந் தருபவனும்
दस्म	தஸ்ம	சத்துருவையழிப்பவனும்
विश्पते	விஶ்பதெ	பிரசைகளைப் பாதுகாப்பவனும்
हव्यवाट्	ஹவ்யவாட்ட்	அவிகளைச் சேர்ப்பவனும்
ज्योतिषस्पते	ஜ்யோதிஷஸ்பதெ	ஒளிக்கெலா மிறைவனுமாகிய
अग्ने !	சுஶ்ந !	அக்கினியே !
शुक्रस्य ते तुभ्यं	ஶுக்ரஸ்ய தெ துப்யம்	பிரகாசமுடைய நின்பொருட்டு
ऋचाहविः	ஊசாஹவிஃ	மந்திரத்துடன் கூடிய அவி
आहूयते	சூஹூயதெ	ஒருமையுடன் ஓமஞ் செய்யப்படுகின்றது. ஆதலின்
स्तोतृभ्यः	ஸ்தோத்ரப்யஃ	துதிப்போர்களுக்கு
इषं आभर	இஷம் சூபர	அன்னத்தை நிறையக் கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

ஒளிக்கெல்லா மிறைவனாகிய அக்கினியே! பிரகாசமுடையோய், களிப்பைக் கொடுப்போய்! அல்லது, அழகிய பொன்வடிவத்தோய்! சத்துருவையழிப்போய்! உனக்கு, மந்திரத்துடன் ஒரு நோக்காய் அவி ஓமஞ் செய்யப்படுகின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

१ २र ३ १ २ ३ १ २
1024. * ओभे सुश्चन्द्र विश्पते दर्वी श्रीणीष आसनि ।
३ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १२ ३ २ ३ २ २
उतो न उत्पुपूर्या उक्थेषु शवसस्पत इषꣳ स्तोतृभ्य आभर॥३-२१॥

இருக்கு 5-6-4-5-9.

* उभे सुश्चन्द्र सर्पिषे, என்பது இருக்கு.

ஒஸெ ஸுஶ்சந்த்ர விஶ்வதெ உவீ ஶ்ரீணீஷ சூஸநி।
உதொ ந உத்பூவத்யூ உக்ஷ்டூஷு ஶவஸஸ்பத இஷம்
[ஸ்தோத்ரப்ய சூபர ॥

அந்வயம்.

शवसस्पते!, विश्पते!, सुश्चन्द्र!, उभे दर्वी, आसनि श्रीणीषे, उतो, उक्थेषु, नः, उत्पुपूर्याः, स्तोतृभ्यः, इषं आभर ॥

பதவுரை.

शवसस्पते!	ஶவஸஸ்பதெ!	ஆற்றலுக்கு இறைவ!
विश्पते!	விஶ்வதெ!	பிரசைகளைப் பாதுகாப்போய்!
सुश्चन्द्र!	ஸுஶ்சந்த்ர!	அழகிய இந்திரனே! (அக்கினியே! நீ)
उभे दर्वी	உபெ உவீ	அகப்பை முதலிய இரண்டு பாத்திரங்களிலுள்ள அவிகளையும்
आसनि श्रीणीषे	சூஸநி ஶ்ரீணீஷெ	வாயில் வைத்துப் பக்குவமாக்கி விடுகின்றாய்.
उतो	உதொ	மற்றும்,
उक्थेषु	உக்ஷ்டூஷு	வேள்விகளில்
नः	நः	எங்களை,
उत्पुपूर्याः	உத்பூவத்யூ	நிறைந்த பலனடைந்தவர்களாகச் செய்கின்றனை.
स्तोतृभ्यः	ஸ்தோத்ரப்ய	துதிப்போர்களான எங்களுக்கு
इषं आभर	இஷம் சூபர	அன்னத்தைக் கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—2.

அழகிய களிப்புடைய அக்கினியே! அல்லது, அழகிய சுவர்ண மயமாகிய அக்கினியே! அகப்பை முதலியவைகளில் நிறைந்த அவிகளை, வாயினாற் பக்குவஞ் செய்கின்றாய். அஃதன்றியும், ஆற்றலைப் பரிபாலிப் போய்! வேள்விகளில், எங்களை நிறைந்த பலனுடையவர்களாகச் செய்வாயாக என்பதாம். ஏனைய பொருள் வெளிப்படை. (2)

மந்திரம் 4.

१ २ १ २ ३ १ २ ३२ ३२
1025. इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत् ।
३ १२ ३ १२ ३ १२
ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥ १ ॥

இந்த்ராய ஸாம காயத விப்ராய ப்ருஹதே ப்ருஹத் ।
ப்ரஹ்மக்ருதே விபஶ்சிதே பநஸ்யவே ॥

அந்வயம்.

(हे उद्गातारः !,) विप्राय, बृहते, ब्रह्मकृते, विपश्चिते, पनस्यवे, इन्द्राय, बृहत्साम गायत ॥

பதவுரை.

(हे उद्गातारः !)	(ஹே உத்காதாரஃ !)	சாமவேதம் பாடுவோர்களே ! நீவிர்
विप्राय	விப்ராய	கூரிய மதியுடையானும்
बृहते	ப்ருஹதே	பெரியோனும்
ब्रह्मकृते	ப்ரஹ்மக்ருதே	மழை வாயிலாக அவியாகிய அன்னத்தை யுண்டாக்குவோனும்
विपश्चिते	விபஶ்சிதே	நுண்ணறிவுடையோனும்
पनस्यवे	பநஸ்யவே	துதியை விரும்புவோனுமாகிய
इन्द्राय	இந்த்ராய	இந்திரன் பொருட்டுப்
बृहत्साम गायत	ப்ருஹத்ஸாம காயத	பிருகது, என்னுஞ் சாம மறையைப் பாடுவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—மூன்றாவது மூன்றில்—1. நிருமேதர் ரிஷி.

சாமமறை பாடுவோர்களே ! நீவிர், இந்திரன் பொருட்டு, 'பிருகத்' என்னும் சாமவேதத்தை யோதுவீர்களாக. எத்தன்மைய இந்திரன் பொருட்டெனின் ? நுண்ணறிவுடையவனும், பெரியவனும், மழை வாயிலாக அவிகளென்னும் அன்னங்களை யுண்டாக்குவோனும், தோத்திரத்தை விரும்புகின்றவனுமாகியவன் பொருட்டு என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

१ २ ३ १२ ३ १ २र
1026. त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वꣳ सूर्यमरोचयः ।
३ १२ ३ १२ ३ १ २
विश्वकर्मा विश्वदेवो महाꣳ असि ॥ २ ॥

க்வமிந்த்ராபிபூரஸி க்வம் ஸூர்யமரொசயஃ ।
விஶ்வகர்மா விஶ்வதெவொ மஹாம் அஸி ॥

அந்வயம்.

इन्द्र ! त्वं, अभिभूः असि, त्वं, सूर्यं अरोचयः, विश्वकर्मा, विश्वदेवः, महान्, असि ॥

பதவுரை.

इन्द्र ! त्वं	இந்த்ர ! க்வம்	இந்திரனே ! நீ,
अभिभूः असि	அபிபூஃ அஸி	சத்துருவை யடக்குகின்றவனாயிருக்கின்றாய்.
त्वं	க்வம்	மற்றும், நீ,
सूर्यं अरोचयः	ஸூர்யம் அரொசயஃ	இரவியை, சுவாலையாற் பிரகாசிப்பிக்கின்றாய்.
विश्वकर्मा	விஶ்வகர்மா	உலகிற் கிறைவனும்
विश्वदेवः	விஶ்வதெவஃ	எல்லாத் தேவர்கள் வடிவனும்
महान्	மஹாந்	எல்லாவற்றினும் பெரியோனுமாய்
असि	அஸி	இருக்கின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—2.

இந்திரனே ! நீ, பகைவர்களை யடக்குகின்றவனாயிருக்கின்றாய். மற்றும், நீ, சூரியனை ஒளிகளால் விளக்குவிக்கின்றாய். அன்றியும், உலகிற்கு இறைவனாயிருக்கின்றாய். எல்லாத் தேவர்களாயுமிருக்கின்றாய். அங்ஙனமே "இந்திரனைப் பற்றியது இரவியும் தேவதைகளும்" என, எசுர் மறையுங் கூறுகின்றது. இதனால், நீ எல்லாவற்றினுஞ் சிறந்தவனாயிருக்கின்றாய் என்பதாம்.

மந்திரம் 6.

३ २ ३ १ २ ३ २ १२ ३ २ ३ २
1027. विभ्राजञ्ज्योतिषा स्वा३रगच्छो रोचनं दिवः ।
३ १२ ३ १ २
देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे ॥ ३–२२ ॥

இருக்கு 9-98-1-3.

விஹ்ராஜஞ்ஜ்யோதிஷா ஸ்வாரகச்சோ ரோசநம் திவஃ ।
தெவாஸ்த இந்த்ர ஸக்யாய யெமிரெ ॥

அன்வயம்.

इन्द्र !, ज्योतिषा, दिवः, रोचनं, स्वः, विभ्राजन्, अगच्छः, देवाः, ते सख्याय, येमिरे ॥

பதவுரை.

इन्द्र !	இந்த்ர !	இந்திரனே !
ज्योतिषा	ஜ்யோதிஷா	ஒளியினால்
दिवः	திவஃ	ஆதித்தனை
रोचनं	ரோசநம்	விளக்கிக் கொண்டும்
स्वः	ஸ்வஃ	சுவர்க்கத்தை
विभ्राजन्	விஹ்ராஜந்	இனிது, பிரகாசிப்பித்துக்கொண்டும்.
अगच्छः	அகச்சஃ	வருகின்றனை. மற்றும்,
देवाः	தெவாஃ	தேவர்களனைவரும்
ते सख्याय	தெ ஸக்யாய	உன்னுடைய மித்திரத்தன்மையை யடைவதற்கு
येमिरे	யெமிரெ	முயல்கின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—3.

இந்திரனே ! நீ, ஒளிக்கு நிலைக்களனுந் தன்மையால் சுவர்க்கத்தையும், சூரியனையும் விளக்கிக்கொண்டு வருகின்றனை. அத்தகைய நீ, எங்கட்குக் கிடைப்பாயாக என்பதாம். மற்றும், தேவர்களனைவர்களும் உன்னுடைய நட்புத்தன்மையை யடைவதற்குத் தமதான்மாவை நியமனஞ் செய்கின்றார்கள். அதாவது, எங்களுக்கு இந்திரன் எவ்வாற்றால் நண்பனாவனை, அவ்வாறே யாம் முயலல் வேண்டுமென முயல்கின்றார்கள் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 7.

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
1028. असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवागहि ।
१ २ ३२उ १ ३ २ ३ २ ३ १ २
आ त्वा पृणक्त्विन्द्रियꣳ रजः सूर्यो न रश्मिभिः ॥ १ ॥

அஸாவி ஸொம இந்த்ர தெ ஶவிஷ்ட ஶ்ருஷ்ணவாகஹி ।
ஆ க்வா ப்ருணக்த்விந்த்ரியம் ரஜஃ ஸூர்யொ ந ரஶ்மிபிஃ ॥

அந்வயம்.

इन्द्र !, ते, सोम असावि, शविष्ठ !, धृष्णो ! आगहि, सूर्यः, रश्मिभिः, रजः न, त्वा, इन्द्रियं, आपृणक्तु ॥

பதவுரை.

इन्द्र !	இந்த்ர !	இந்திரனே !
ते	தெ	நின் பொருட்டுச்
सोम असावि	ஸொம அஸாவி	சோமரசம் சமஸ்காரம் பண்ணப் படுகின்றது.
शविष्ठ !	ஶவிஷ்ட !	பேராற்றலுடையோய் !
धृष्णो !	ஶ்ருஷ்ணோ !	பகைவரை யடக்குவோய் ! இந்திர ! நீ,
आगहि	ஆகஹி	இவ்வேள்விக்கு வருவாயாக.
सूर्यः	ஸூர்யஃ	சூரியன்,
रश्मिभिः	ரஶ்மிபிஃ	கிரணங்களால்
रजः न	ரஜஃ ந	அந்தரிட்சத்தை நிறையச் செய்வது போல்
त्वा	க்வா	உனக்குச்
इन्द्रियं	இந்த்ரியம்	சோம பானத்தாலுண்டாகிய பேராற்றல்
आपृणक्तु	ஆப்ருணக்து	பூரணமாயுண்டாகுக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—மூன்றாவது மூன்றில்—1. கோதமர் ரிஷி.

இந்திரனே ! உன் பொருட்டுச் சோமரசம் பிழியப்பட்டிருக்கின்றது. பேராற்றலுடையோய் ! இதனாலே பகைவரை யடக்குவோய் ! இந்திர !

நீ, வேள்விச்சாலைக்கு வருவாயாக வந்த உனக்கு, சோமபானத்தாலுண்டாகிய பேராற்றல் நிறைகுக. (சோமபானஞ் செய்து முழு வலியையடைவாயாக என்பது பொருள்.) எதைப்போலெனின்? சூரியன் கிரணங்களால் அந்தரிட்சத்தை நிறைப்பதுபோல் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

१ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १२
1029. आतिष्ठ वृत्रहन् रथं युक्ता ते ब्रह्मणा हरी ।
३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अर्वाचीनꣳ सु ते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना ॥ २ ॥

சூதிஷ்ட வ்ருத்ரஹந் ரதம் யுக்தா தெ ப்ரஹ்மணா ஹரீ ।
அர்வாசீநம் ஸு தெ மநோ க்ராவா க்ருணோது வக்நுநா ॥

அந்வயம்.

वृत्रहन्!, रथं आतिष्ठ, ते हरी, ब्रह्मणा, युक्ता, ग्रावा, वग्नुना, ते मनः, अर्वाचीनं, सुकृणोतु ॥

பதவுரை.

वृत्रहन्!	வ்ருத்ரஹந்!	விருத்திரனைக் கொன்ற இந்திரனே! நீ,
रथं आतिष्ठ	ரதம் சூதிஷ்ட	இரதத்தி லேறுவாயாக.
ते हरी	தெ ஹரீ	உன்னுடைய அரியென்னுங் குதிரைகள்
ब्रह्मणा	ப்ரஹ்மணா	தோத்திரத்தால்
युक्ता	யுக்தா	பூட்டப்பட்டன.
ग्रावा	க்ராவா	சோமரசம் பிழிகின்ற கற்கள்
वग्नुना	வக்நுநா	மனதைக் கவரத்தக்க ஒலியால்
ते मनः	தெ மநஃ	உன்னுடைய மனதை
अर्वाचीनं सुकृणोतु	அர்வாசீநம் ஸுக்ருணோது	எங்கள் மேல் நோக்குடையதாய்ச் செய்குக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—2.

சத்துருவைக் கொல்வோய்! இந்திரனே! நீ, இரதத்தி லேறுவாயாக. உன்னுடைய 'அரி' என்னுங் குதிரைகள் தோத்திர வடிவமந்திரத்தால் எங்களால் இரதத்திற் பூட்டப்பட்டன. (ஆதலின் இரதத்திலேறுவாயாக என முடிக்க) உன்னுடைய மனதையும், இரசம் பிழிய ஏற்பட்ட கற்கள், மனதைக் கவரத்தக்க சத்தத்தால் நன்கு எங்கள்மேல் நோக்குடையதாய்ச் செய்குக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 9.

२ ३ १ ३र ३ १ २
1030. इन्द्रमिद्धरी वहतोऽप्रतिधृष्टशवसम् ।
१ २ ३ २र ३२ ३ १ २
ऋषीणाꣳ सुष्टुरुप यज्ञं च मानुषाणाम् ॥ ३–२३ ॥

இருக்கு 1-84-1-3-2.

இந்த்ரமிஜ்ஜரீ வஹதொ஽ப்ரதித்ருஷ்டஶவஸம் ।
ஃஷீணாம் ஸுஷ்டுருப யஜ்ஞம் ச மாநுஷாணாம் ॥

அந்வயம்.

अप्रतिधृष्ट, शवसं, इन्द्रं इत्, ऋषीणां, मानुषाणां, सुष्टु, यज्ञं च, हरी, उपवहतः ॥

பதவுரை.

अप्रतिधृष्ट	அப்ரதித்ருஷ்ட	பிறர்களாற் கெடுக்க முடியாத
शवसं	ஶவஸம்	ஆற்றலையுடைய
इन्द्रं इत्	இந்த்ரம் இத்	இந்திரனையே,
ऋषीणां	ஃஷீணாம்	இருடிகளையும்
मानुषाणां	மாநுஷாணாம்	மனிதர்களையும்
सुष्टु	ஸுஷ்டு	அழகிய துதிகளையும்
यज्ञं च	யஜ்ஞம் ச	வேள்விகளையுங் குறித்து
हरी	ஹரீ	பொன்மயமான குதிரைகள்
उपवहतः	உபவஹதஃ	கொண்டுபோய்ச் சேர்க்கின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—3.

ஒருவராலேனுங் கெடுக்கமுடியாத இந்திரனையே, வசிட்டர் முதலிய ரிஷிகளைக் குறித்தும், ஏனைய மனிதர்களைக் குறித்தும், அழகிய துதிகளையும் வேள்விகளையுங் குறித்தும், 'அரிகள்' என்னும் இரண்டு குதிரைகளுங் கொண்டு போய்ச் சேர்க்கின்றன. எங்கெங்கு துதிக்கின்றார்களோ, வேள்வி செய்கின்றார்களோ, அங்கங்கு கொண்டுபோய்ச் சேர்க்கின்றன என்பதாம். (3)

வித்தியாதீர்த்த மகேசுரர், வேதப்பொருளை விளக்குவதால்
உள்ளத்தின் இருளை யோதுக்கிப் புருடார்த்தங்கள்
நான்கையுங் கொடுப்பாராக.

ஏழாவது கண்டம்

முற்றும்.

சாமவேத சங்கிதை

சாயண பாடியம் ஆறுவது அத்தியாயமும்
முற்றிற்று.

ஏழாவது அத்தியாயம்.

தேவர்கள் :—1, 6, 11, 13, 17, 21, பவமான சோமம். 8, ஆதித்கர். 23, விசுவே தேவர்கள்.

சந்தங்கள் :—1, 8, சகதி. 2, 6, 8, 11, 13, 14, 17, காயத்திரி. 12, 15, பிருகதி. 16, மகாபங்தி. 18, காயத்திரியும், சதோபிருகதியும். 19, உஷ்ணிக். 20, அதுஷ்டுப். 21, 23, திருஷ்டுப். 22, பூரி. 1, பிருகதி.

சுரங்கள் :—1, 7, நிஷாதம். 2, 6, 1, 18, 13, 14, 17, ஷட்சம். 1, 15, 22, மத்தியமம். 16, பஞ்சமம். 18, ஷட்சமும், மத்தியமும். 19, ரிஷபம். 20, காந்தாரம். 21, 23, தைவதம். ரிஷிகளே ஆங்காங்குக் கூறுவாம்.

முதலாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—4. முதற்பாதி. அத்தியாயம்—7. கண்டம்—1.

பதினறு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१ २ ३१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १२

1031. ज्योतिर्यज्ञस्य पवते मधु प्रियं पिता देवानाꣳ जनिता विभूवसुः ।

१ २ ३ १२ ३ १ २ ३क २र ३१ २ ३१ २ ३ १ २र

दधाति रत्नꣳ स्वधयोरपीच्यं मदिन्तमो मत्सर इन्द्रियो रसः॥१॥

ஜ்யோதிர்யஜ்ஞஸ்ய பவதே மது ப்ரியம் பிதா தேவானாம் ஜனிதா விபூவஸுः ।

தா⁴தி ரத்னம் ஸ்வயோரபீச்யம் மதி³ன்தமோ மத்ஸர இன்த்³ரியோ ரஸः॥

அன்வயம்.

यज्ञस्य, ज्योतिः, देवानां प्रियं, मधु पवते, पिता, जनिता, विभूवसुः, मदिन्तमः, मत्सरः, इन्द्रियः, रसः, स्वधयोः, अपीच्यं रत्नं, दधाति ॥

பதவுரை.

यज्ञस्य	யஜ்ஞஸ்ய	வேள்வியை
ज्योतिः	ஜ்யோதிः	விளக்குகின்றதும்
देवानां प्रियं	தேவானாம் ப்ரியம்	தேவர்கட்குப் பிரியமுமாகிய

मधु पवते	மது பவதெ	மதுர ரசம் ஒழுகுகின்றது.
पिता	பிதா	மற்றும், பாதுகாப்பதும்
जनिता	ஜநிதா	பலனை யுண்டாக்குவதும்
विभूवसुः	விபூவஸுஃ	மிகுந்த தனமுடையதும்
मदिन्तमः	மதிந்தமஃ	அளவற்ற களிப்பைக் கொடுப்பதும்
मत्सरः	மத்ஸரஃ	இன்பங் கொடுப்பதும்
इन्द्रियः	இந்த்ரியஃ	இந்திரனால் அநுபவிக்கப்படுவதுமாகிய
रसः	ரஸஃ	சோமரசம்,
स्वधयोः	ஸ்வதயொஃ	வானுலக மண்ணுலகங்கட்கிடையில்
अपीच्यं रत्नं	அபீச்யம் ரத்நம்	வைக்கப்பட்டிருக்கின்ற தனத்தைக்
दधाति	ததாதி	கொடுக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1. சிகதா நிவாரி ரிஷிகணர்.

அக்கினிட்டோம முதலிய வேள்விகளைப் பிரகாசிப்பிக்கும் சோமம், இந்திரன் முதலியோர்களுக்குப் பிரியமாயிருக்கின்ற மதுர ரசத்தை, தசாப வித்திரமென்னும் ஆடைநுனியால் ஒழுகுகச்செய்கின்றது. இரசம் விதந்து கூறப்படுகின்றது:—பரிபாலிப்பதும், பயனைத் தோற்றுவிப்பதும், மிகுந்த தனமுடையதும், மிகக் களிப்பைக் கொடுப்பதும், இன்பை யளிப்பதும், இந்திரனால் அநுபவிக்கப் பெற்றதுமாகிய சோமரசம் வானிலும் மண்ணிலும் இருக்கப்பட்ட தனத்தை, வேள்வித் தலைவனுக்குக் கொடுக்கின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

३ १ २ ३ १२ ३क २र ३ १ २ ३२ ३ १ २ ३ २
1032. अभिक्रन्दन् कलशं वाज्यर्षति पतिर्दिवः शतधारो विचक्षणः ।
१ २ ३ २ ३ १२ ३ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
हरिर्मित्रस्य सदनेषु सीदति मर्मृजानोऽविभिः सिन्धुभिर्वृषा ॥ २ ॥

அபிக்ரந்தந் கலஶம் வாஜ்யர்ஷதி பதிர்தி வஃ ஶததாரொ
[விசக்ஷணஃ ।
ஹரிர்மித்ரஸ்ய ஸதநேஷு ஸீததி மர்ம்ருஜாநொ ஽ விபிஃ
[ஸிந்துபிர்வ்ருஷா ॥

அன்வயம்.

दिवः पतिः, शतधारः, विचक्षणः, वाजी, हरिः, अभिक्रन्दन्, कलशं अर्षति।
सिन्धुभिः, अविभिः, मर्मृजानः, वृषा, मित्रस्य सदनेषु, सीदति॥

பதவுரை.

दिवः पतिः	திவः பதிः	வானுலகிற்கு இறையும்,
शतधारः	பதயாரஃ	நூற்றுக் கணக்கான தாரைகளை யுடையதும்,
विचक्षणः	விசக்ஷணஃ	புத்தியை வளர்ப்பதும்
वाजी	வாஜீ	வலியுடையதும்,
हरिः	ஹரிஃ	பசுமை நிறமுடையதுமாகிய சோமரசம்,
अभिक्रन्दन्	அபிக்ரந்தந்	ஒலித்துக்கொண்டு
कलशं अर्षति	கலசம் அர்ஷதி	கலசத்தை யடைகின்றது.
सिन्धुभिः	ஸிந்துபிஃ	ஓழுகுகின்றதற்குச் சாதனமான
अविभिः	அவிபிஃ	கம்பளியின் மயிர்களால்
मर्मृजानः	மர்ம்ருஜானஃ	சுத்தம் பண்ணப்பட்டதும்
वृषा	வ்ருஷா	விருப்பைப் பொழிவதுமாகிய சோமரசம்
मित्रस्य सदनेषु	மித்ரஸ்ய ஸதநேஷு	நண்பன் போன்று நன்மை செய்கின்ற வேள்வியின் பாத்திரங்களில்
सीदति	ஸீததி	நிலைத்திருக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

சோமமானது, வேகமுடையதாய், அல்லது, குதிரையைப் போன்று மிக வொலித்துக்கொண்டு துரோண கலசத்தை யடைகின்றது. எவ்வித மாகிய சோமமெனின்? அந்தரிக்ஷத்திலுள்ள தசாபவித்திர மென்னும் ஆடை நூனிக்குத் தலைமையானது. அல்லது, வானுலகிற்கு இறையாயுள்ளது. "வானில் சோமம் உண்டானது மூன்றுவதில் இதினின்றும் வானில் சோமம் இருந்தது" எனச் சுருதியும் கூறுகின்றது. நூற்றுக்கணக்கான தாரைகளை யுடையதும், நுண்ணிதாய்ப் பார்ப்பதும், பச்சை நிறமுடையதுமாகிய சோமரசம், மித்திரத்தன்மையை வளர்க்கின்ற வேள்வி சம்பந்தமான பாத்திரங்களில் இருக்கின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

२३ १ २ ३ १२ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २र

1033. अग्ने सिन्धूनां पवमानो * अर्षस्यग्रे वाचो अग्रियो गोषु † गच्छसि।

२३ १२ ३१ २र ३ २ ३१ २

अग्ने वाजस्य भजसे महद्धनꣳ स्वायुधः सोतृभिः सोम सूयसे ॥३-१॥

இருக்கு 9-87-10-12.

ꣳஹெ ஹிலுꣳநாம் வவஶாநோ ꣳஷ்ருஹ்யுஹெ வாசொ ꣳஹ்ரியொ
[ஹொஷ்ண ஹ்ஹஹி।

ꣳஹெ வாஜஸ்ய ஹஜஹெ ஸஹஸ்ரம் ஸ்வாய்ꣳயுஃ ஸொத௃ப்⁴ஹிஃ
[ஸொஸ ஸுயஹெ ॥

அந்வயம்.

हे सोम!, सिन्धूनां अग्ने, पवमानः, अर्षसि, वाचः, अग्रियः, गच्छसि, गोषु अग्ने, गच्छसि, वाजस्य, स्वायुधः, महत् धनं भजसे, सोमः, सोतृभिः, सूयसे ॥

பதவுரை.

हे सोम!	ஹெ ஸொஸ!	சோமமே நீ,
सिन्धूनां अग्ने	ஹிலுꣳநாம் ꣳஹெ	நீருக்கு முன்னர்
पवमानः	வவஶாநஃ	பவித்திரமாகச்
अर्षसि	ꣳஷ்ருஹி	செல்கின்றாய்.
वाचः	வாஜஃ	மத்திமை யென்னும் வாக்கிற்கும்
अग्रियः	ꣳஹ்ரியஃ	முதன்மையாய்ச்
गच्छसि	ஹ்ஹஹி	செல்கின்றாய்.
गोषु अग्ने	ஸொஷ்ண ꣳஹெ	கிரணங்களுக்கும் முன்னர்ச்,
गच्छसि	ஹ்ஹஹி	செல்கின்றாய்.
वाजस्य	வாஜஸ்ய	பகைவர்களின் அன்னத்தை யடைதற் பொருட்டு
स्वायुधः	ஸ்வாய்ꣳயுஃ	சிறந்த ஆயுதமுடையோனாய்
महत् धनं भजसे	ஸஹஸ்ரꣳ யநம் ஹஜஹெ	போரை யடைகின்றாய்.
सोमः	ஸொஸஃ	அத்தன்மைய சோமமாகிய நீ
सोतृभिः	ஸொத௃ப்⁴ஹிஃ	வேட்போர்களாற்
सूयसे	ஸுயஹெ	பிழியப்படுகின்றனை.

* अर्षस्यग्रे, † गच्छति, என்பன இருக்கு.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

சோமதேவ! நீ, நீருக்கு முன்னர்ப் பவித்திரமாய்ச் செல்கின்றாய். மழையால் நீரையுண்டாக்குதற் பொருட்டு ஆகுதியாயிலாக அந்தரிக்ஷத்திற் செல்கின்றாய் என்பது பொருள். அவ்வாறே, மத்திமை யென்னும் வாக்கிற்கு முன்னர்ப் போற்றத்தக்கோனுய்ச் செல்கின்றாய். அங்ஙனமே, கிரணங்களுக்கு முன்னர்ச் செல்கின்றாய். அவ்வாறே, சத்துருக்களின் அன்னத்தையடைதற் பொருட்டுப் பெரும் உயுத்தத்தைச் செய்கின்றாய். ஈண்டுச் சத்துருக்களின் அன்னத்தை யடைதற் பொருட்டென்பது எஞ்சி நின்றது. எத்தன்மையனு யெனின்? வெல்வதற்குக் கிறந்த ஆயுதங்களைக் கொண்டவனு யென்க. அத்தன்மைய சோமதேவ! நீ, வேட்போர்களாற் பிழியப்படுகின்றாய் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

३२ ३२ ३१२३ १ २र ३२
1034. असृक्षत प्रवाजिनो गव्या सोमासो अश्वया ।
३ १२ ३१२र
शुक्रासो वीरयाशवः ॥ १ ॥

ஈஸ்ருக்ஷத ப்ரவாஜினொ கவ்யா ஸொமாஸொ அஷ்வயா ।
ஸுக்ராஸொ வீரயாஸவஃ ॥

அந்வயம்.

वाजिनः, शुक्रासः, आशवः, सोमासः, गव्या, अश्वया, वीरया, प्र असृक्षत ॥

பதவுரை.

वाजिनः	வாஜிநஃ	ஆற்றலுடையதும்
शुक्रासः	ஸுக்ராஸஃ	பிரகாசமுடையதும்
आशवः	ஆஸவஃ	வேகமுடையதுமாகிய
सोमासः	ஸொமாஸஃ	சோமம்,
गव्या	கவ்யா	வேள்வித் தலைவனுக்கு, பசுக்களிலுண்டாம் இச்சையாலும்
अश्वया	அஷ்வயா	குதிரைகளிலுண்டாம் இச்சையாலும்
वीरया	வீரயா	புதல்வன், அடிமைக்காரன் முதலியோர்களிலுண்டாம் இச்சையாலும்
प्र असृक्षत	ப்ர ஈஸ்ருக்ஷத	இரசத்தைப் பொழிகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில்—1. கசியபர் ரிஷி.

ஆற்றல், பிரகாசம், வேகம், என்பவைகளையுடைய சோமம், வேள்வித் தலைவனுக்கு, பசு, குதிரை, மைந்தன், முதலியவைகள் வேண்டுமென்னும் விருப்பால் இரசத்தை யொழுகச் செய்கின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

३ १ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २
1035. **शुम्भमाना ऋतायुभिर्मृज्यमाना गभस्त्योः ।**
१२ ३ १ २ ३ १ २
पवन्ते वारे अव्यये ॥ २ ॥

ஶும்ப்ஹமாநா ஃதாயுபிர்ம்ருஜ்யமாநா கபஸ்த்யோஃ ।
பவந்தெ வாரெ அவ்யயெ ॥

அந்வயம்.

ऋतायुभिः, शुम्भमानाः, गभस्त्योः, मृज्यमानाः, अव्यये वारे, पवन्ते ॥

பதவுரை.

ऋतायुभिः	ஃதாயுபிஃ	வேள்வியை விரும்புகின்ற வேட்போர்களால்
शुम्भमानाः	ஶும்ப்ஹமாநாஃ	நன்கு அலங்கரிக்கப் பெற்றதும்
गभस्त्योः	கபஸ்த்யோஃ	இரண்டு கைகளால்
मृज्यमानाः	ம்ருஜ்யமாநாஃ	சுத்தம் பண்ணப்பட்டதுமாகிய சோமம்,
अव्यये वारे	அவ்யயெ வாரெ	மயிர்களாலாய கம்பளியில்
पवन्ते	பவந்தெ	ஒழுகுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

வேள்வியை விரும்புகின்ற வேட்போர் முதலியோர்களால் அலங்கரிக்கப்பட்டதும், கைகளாற் சுத்தஞ் செய்ததுமாகிய சோமம், கம்பளியிலிருந்து ஒழுகுகின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

१ २२ ३२३ २३ १२ ३ २३ १२
1036. ते विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा ।
१२ ३ २२
पवन्तामान्तरिक्ष्या ॥ ३–२ ॥

இருக்கு 9-64-4-6.

தெ விஶ்வா தாஶுஷெ வஸு ஸொமா திவ்யானி பார்திவா ।
வபவந்தாமாந்தரிக்ஷ்யா ॥

அன்வயம்.

ते सोमाः, दाशुषे, दिव्यानि, पार्थिवा, आन्तरिक्ष्या, विश्वा वसु, आपवन्ताम् ॥

பதவுரை.

ते सोमाः	தெ ஸொமாஃ	அச் சோமம்
दाशुषे	தாஶுஷெ	அவி கொடுக்கின்ற வேள்வித் தலைவன் பொருட்டு
दिव्यानि	திவ்யானி	வானிலுள்ளவைகளும்
पार्थिवा	பார்திவா	மண்ணிலுள்ளவைகளும்
आन्तरिक्ष्या	ஆந்தரிக்ஷ்யா	அந்தரிட்சத்திலுள்ளவைகளுமான
विश्वा वसु	விஶ்வா வஸு	எல்லாத் தனங்களையும்
आपवन्तां	ஆபவந்தாம்	நிறையப் பொழிவதாகுக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

பிழியப்பட்ட அச்சோமம், அவியை யளிக்கின்ற வேள்வித் தலைவனுக்கு, பசுக்கள் முதலிய தனங்களனைத்தையுங் கொடுப்பதாகுக. தனம் அனைத்தென்றது எவ்வாறுமெனின்? கூறப்படுகின்றது:—வானிலுண்டானவைகள், மண்ணிலுண்டானவைகள், அந்தரிட்சத்திலுண்டானவைகள், என்னும் பேதத்தால் தனமனைத்தென்பதாம். (3)

மந்திரம் 7.

१२ ३ १ २२ ३ १ २ ३ १ २
1037. पवस्व देववीरति पवित्रꣳ सोम रꣳह्या ।
१ २ ३ १ २२
इन्द्रमिन्दो वृषा विश ॥ १ ॥

வவஸ்வ தெவவீரதி வவித்ரꣳ ஸொம ரꣳஹ்யா ।
இந்த்ரமிந்தொ வ்ருஷா விச ॥

அன்வயம்.

सोम !, देववीः, रंह्या, पवित्रं अति पवस्व, इन्दो !, वृषा, इन्द्रं विश ॥

பதவுரை.

सोम !	ஸொம !	சோமமே !
देववीः	தெவவீஃ	தேவர்கள் விரும்புகின்ற நீ,
रंह्या	ரꣳஹ்யா	வேகத்துடன்
पवित्रं अतिपवस्व	வவித்ரꣳ அதிவவஸ்வ	தசாபவித்திரமாகிய ஆடை தூனியில் ஓடுகுவாயாக.
इन्दो !	இந்தொ !	சோமமே !
वृषा	வ்ருஷா	விருப்பைப் பொழிகின்ற நீ,
इन्द्रं विश	இந்த்ரꣳ விச	இந்திரனை யடைவாயாக.

சாயண பாடியம்.

மண்டலம்—1. இருக்கு—பத்தாவது மூன்றின் மூன்றாவது சூக்தத்தில்—1.

சோமமே ! தேவர்கள் விரும்புகின்ற நீ, வேகமாய் உள்ளவாறு தசாபவித்திர மென்னும் வஸ்திரத்திலிருந்து செல்வாயாக. மற்றும், சோமமே ! விருப்பைப் பொழிகின்ற நீ, இந்திரனை யடைவாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

१२ ३ २ ३ २ ३ १२ ३ १२
1038. आवच्यस्व महिष्परो वृषेन्दो द्युम्नवत्तमः ।
१ २२ ३ १ २
आयोनिं धर्णसिः सदः ॥ २ ॥

ஆவச்யஸ்வ மஹிஷ்பரொ வ்ருஷேந்தொ த்யும்நவத்தமஃ ।
ஆயொநிம் தர்ணஸிஃ ஸதஃ ॥

அன்வயம்.

इन्दो!, वृषा द्युम्नवत्तमः, धर्णसिः, महिष्टरः, आ वच्यस्व, योनिं आसदः ॥

பதவுரை.

इन्दो!	ஊந்தோ!	சோமமே!
वृषा द्युम्नवत्तमः	வ்ருஷா த்யு²ம்நவத்தமஃ	தொண்டர்கள் விரும்பியவற்றைக் கொடுப்பதில் பெரும் புகழுடையவனும்
धर्णसिः	தர்ணஸிஃ	தாங்குகின்றவனுமாகிய நீ,
महिष्टरः	மஹிஷ்டராஃ	மிகுந்த அன்னத்தையும், தண்ணீரையும்
आ वच्यस्व	ஆ வச்யஸ்வ	எமக்குக் கொடுப்பாயாக.
योनिं आसदः	யோநிம் ஆஸதஃ	தனதிடத்தையு மடைவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

சோமமே! தொண்டு பண்ணுவோர்க்கு, விரும்பின பலனைக் கொடுப்பதில் பெரும் புகழுடையவனும், தாங்குகின்றவனுமாகிய நீ, மிகுந்த அன்னத்தையும், நீரையும் எங்கட்குக் கொடுப்பாயாக. அன்றியும், தன்னுடைய இடத்திலுமிருப்பாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 9.

१२ ३२३ ३ १२३१ २ ३१२
1039. अधुक्षत प्रियं मधु धारा सुतस्य वेधसः ।
३१२ ३१२
अपो वसिष्ट सुक्रतुः ॥ ३ ॥

அதுக்ஷத ப்ரியம் மது⁴ தா⁴ரா ஸுதஸ்ய வேத⁴ஸஃ ।
அபோ வஸிஷ்ட² ஸுக்ரதுஃ ॥

அன்வயம்.

सुतस्य, वेधसः, धारा, प्रियं, मधु, अधुक्षत, सुक्रतुः, अपः वसिष्ट ॥

பதவுரை.

सुतस्य	ஸுதஸ்ய	பிழியப்பெற்றதும்,
वेधसः	வேதஸஃ	விரும்பியவற்றைக் கொடுக்கின்றதுமாகிய சோமத்தின்

धारा	ധാരാ	தாரைகள்,
प्रियं	പ്രിയം	பிரியமுடைய
मधु	മധു	அமுதத்தைப்
अधुक्षत	അധുക്ഷത	பாத்திரத்தில் நிறைக்கின்றன.
सुकृतः	സുകൃതഃ	சிறந்த கருமத்தின் சாதனமாகிய சோமம்,
अपः वसिष्ट	അപഃ വസിഷ്ട	'வசதீவரி' என்னும் ஆற்று நீரை மூடுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

பிழியப்பெற்றதும், விரும்பியவற்றைக் கொடுப்பதுமாகிய சோமத்தினுடைய தாரைகள், பிரியமிகுந்த அமுதத்தைப் பாத்திரத்தில் நிறைக்கின்றன. நற்கருமமுடைய அச்சோமம் 'வசதீவரி' என்னும் நீரை மறைக்கின்றது என்பதாம். (3)

மந்திரம் 10.

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
1040. महान्तं त्वा महीरन्वापो अर्षन्ति सिन्धवः ।
१ २र ३ १ २
यद्गोभिर्वासयिष्यसे ॥ ४ ॥

ഉഹാങ്കം ത്വാ ഉഹീരന്വാപോ അഷന്തി സിന്ധവഃ ।
യദ്ഗോഭിർവാസയിഷ്യസേ ॥

அன்வயம்.

(हे सोम!,) यत्, गोभिः, वासयिष्यसे, महान्तं, त्वा अनु, सिन्धवः, महीः आपः, अर्षन्ति ॥

பதவுரை.

(हे सोम!)	(ഹേ സോമ!)	(சோமமே! நீ,)
यत्	യത്	எப்போது
गोभिः	ഗോഭിഃ	பசுவின் பால் முதலியவற்றுடன்
वासयिष्यसे	വാസയിഷ്യസേ	கலக்கின்றனையோ, அப்போது,
महान्तं	ഉഹാങ്കം	குணங்களால் வளர்ந்த
त्वा अनु	ത്വാ അനു	உன்னை
सिन्धवः	സിന്ധവഃ	ஓடுகின்றதும்
महीः आपः	ഉഹീഃ അപഃ	மிகுதியுமாகிய நீர்
अर्षन्ति	അഷന്തി	அடைகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—4.

சோமமே! நீ, எப்போது, வேள்வியில் ஆவின் பால் முதலியவற்றால் மறைக்கப்படுகின்றனையோ, அப்போது, குணங்களால் வளர்ந்த உன்னை, ஓடுகின்ற மகத்தாகிய நீர் இனிது அடைகின்றது என்பதாம். (4)

மந்திரம் 11.

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
1041. समुद्रो अप्सु मामृजे विष्टम्भो धरुणो दिवः ।
१ २ ३ १ २ ३ २
सोमः पवित्रे अस्मयुः ॥ ५ ॥

ஸமுத்ரோ அப்ஸு மாமூஜே விஷ்டம்ஹோ தரு ணோ திவஃ ।
ஸொமஃ பவித்ரே அஸ்மயுஃ ॥

அந்வயம்.

समुद्रः, दिवः विष्टम्भः, धरुणः, अस्मयुः सोमः, पवित्रे अप्सु, मामृजे ॥

பதவுரை.

समुद्रः	ஸமுத்ரஃ	இரசமா யொழுகுகின்றதும்,
दिवः विष्टम्भः	திவஃ விஷ்டம்ஹஃ	சுவர்க்கத்திலிருப்பதும்,
धरुणः	தரு ணஃ	தாங்குவதும்,
अस्मयुः	அஸ்மயுஃ	யான் விரும்புவதுமாகிய
सोमः	ஸொமஃ	சோமம்,
पवित्रे अप्सु	பவித்ரே அப்ஸு	பவித்திரமாகிய நீரில்
मामृजे	மாமூஜே	பரிசோதிக்கப்படுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—5.

இரசமாயொழுகுகின்றதும், சுவர்க்கத்திலிருக்கின்றதும், தாங்குவதும், யான் விரும்புவதுமாகிய சோமம், நீரில் சுத்தஞ் செய்யப்படுகின்றது. அதாவது பவித்திரமாகிய நீருடன் சேர்க்கப்படுகின்றதென்பது பொருள் என்பதாம். (5)

மந்திரம் 12.

१२ ३२३ १२३२ ३ १ २२३२
1042. अचिक्रदद्वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः ।
१ २२
सꣳ सूर्येण दिद्युते ॥ ६ ॥

ꣳ ꣳ ꣳ

மிஈவ்ஹ ஊ ஏஜஸா ஸ்வ-ஜ்யந்தெ ஸுவஸ்யவஃ ।
யாபிஃடுதாய ஶ்ஂஸ்ஹெ ॥

அன்வயம்.

இன்தோ!, தே ஓஜஸா, அபஸ்யுவஃ கிரஃ, மர்ம்ருஜ்யந்தே, யாபிஃ, மதாய, ஶும்பஸே ॥

பதவுரை.

இன்தோ!	ஊந்தோ!	சோமமே!
தே ஓஜஸா	தெ ஏஜஸா	உன்னுடைய வலியால்
அபஸ்யுவஃ கிரஃ	அபஸ்யவஃ கிரஃ	கருமத்தில் விரும்புகின்ற தோத்திரங்கள்
மர்ம்ருஜ்யந்தே	ம்ருஜ்யந்தெ	பரிசோதிக்கப்படுகின்றன.
யாபிஃ	யாபிஃ	எத்தோத்திரங்களால், நீ
மதாய	மதாய	களிப்பின் பொருட்டு
ஶும்பஸே	ஶும்பஸெ	அழகு செய்யப்படுகின்றனையோ, (அத்தோத்திரங்கள்.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—7.

சோமமே! உன்னுடைய ஆற்றலால், கருமவேட்கையையுடைய துதிகள் பரிசுத்தமாக்கப்படுகின்றன. எத்துதிகளால் நீ களிப்பின் பொருட்டு ஒழுகுவதாய் அலங்கரிக்கப்படுகின்றனையோ, அத் துதிகள் என முடித்துக் கொள்க என்பதாம். (7)

மந்திரம் 14.

१ ३ १ २ ३ १ २ २१ २
1044. तं त्वा मदाय घृष्वय उ लोककृत्नु मीमहे ।
२३ १२ ३२
तव * प्रशस्तये महे ॥ ८ ॥

தம் த்வா மதாய க்ருஷ்வய உ லொகக்ருத்நு ஈமஹெ ।
தவ ப்ரஶஸ்தயெ மஹெ ॥

அன்வயம்.

(हे सोम!,) तव, महे प्रशस्तये, लोककृत्नुं, तं त्वा, घृष्वये, मदाय, ईमहे ॥

* प्रशस्तयो महीः, என்பது இருக்கு.

பதவுரை.

(हे सोम!)	(ஹெ ஸொம!)	(சோமமே!)
तव	தவ	உனக்குப்
महे प्रशस्तये	மஹெ ப்ரஶஸ்தயெ	பெருங் கீர்த்தியாமாறு
लोककृत्नु	லொகக்ருத்நும்	உலக கருத்தனுகிய
तं त्वा	தம் த்வா	அத்தகைய உன்னை,
घृष्वये	க்ருஷ்வயெ	சத்துருக்களை யடக்குகின்ற
मदाय	மதாய	களிப்பின் பொருட்டு
ईमहे	ஈமஹெ	அருந்துவதற்கு வேண்டுகின்றேன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—8.

உலகத்தை யுண்டாக்குகின்ற அத்தன்மைய வுன்னை, (சோமத்தை,) சத்துருக்களைத் தேய்க்குஞ் சிலமாகிய களிப்பின் பொருட்டு, அருந்துவதற்கு இரக்கின்றோம். ஈண்டு அருந்துவதற்கு என்பது எஞ்சி நின்றது. எதன் பொருட்டெனின்? கூறப்படுகின்றது:—உன்னுடைய பெரும் புகழின் பொருட்டு என்பதாம் (8)

மந்திரம் 15.

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ ३२

1045. **गोषा इन्दो नृषा अस्यश्वसा वाजसा उत ।**

३ २ ३ १ २ ३ २

आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः ॥ ९ ॥

மொஷா இந்தோ நரஷா அஸ்யஶ்வஸா வாஜஸா உத ।

ஆத்மா யஜ்ஞஸ்ய பூர்வ்யஃ ॥

அந்வயம்.

इन्दो!, यज्ञस्य, पूर्व्यः आत्मा, गोषा, नृषा, अश्वसा, उत, वाजसा, असि ॥

பதவுரை.

इन्दो!	இந்தோ!	சோமமே!
यज्ञस्य	யஜ்ஞஸ்ய	சோதிட்டோம முதலியவற்றின்
पूर्व्यः आत्मा	பூர்வ்யஃ ஆத்மா	பழமையாகிய ஆத்மா வென்னும் நீ,

गोषा	ஶோஷா	பசுக்களையும்
नृषा	நூஷா	புத்திரன், அடிமை, முதலிய மனிதர்களையும்
अश्वसा	அஶ்வஸா	குதிரையையும்
उत	உத	மற்றும்,
वाजसा	வாஜஸா	அன்னத்தையுங்
असि	அஸி	கொடுப்பவனா யிருக்கின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—9.

ஒழுகுகின்ற சோமமே! சோதிட்டோம முதலிய வேள்விகளின், நித்திய ஆன்மாவாகிய நீ, சோமம் வேள்வி வடிவாமென்பது வெளிப்படையாம். எங்களுக்குக் கோக்களைக் கொடுப்போனா யிருக்கின்றனை. மற்றும், புத்திரன், அடிமைக்காரன் முதலியோர்களைக் கொடுப்போனா யிருக்கின்றாய். (அஃதன்றியும்) குதிரைகளைக் கொடுப்போனா யிருக்கின்றாய். அன்றியும், அன்னத்தைக் கொடுப்போனுமா யிருக்கின்றாய் என்பதாம். (9)

மந்திரம் 16.

३ १ २ ३ १ २र ३ १२
1046. *अस्मभ्यमिन्दविन्द्रियं मधोः पवस्व धारया ।
३१ २ ३ १
पर्जन्यो वृष्टिमाꣳ इव ॥ १०—३ ॥

இருக்கு 9-2-1-10.

அஸ்மப்யமிந்தவிந்த்ரியம் மதோ: பவஸ்வ தாரயா ।
பர்ஜந்யோ வ்ருஷ்டிமாம் இவ ॥

அந்வயம்.

इन्दो!, वृष्टिमान्, पर्जन्यः इव, अस्मभ्यं, इन्द्रियं, मधोः धारया, पवस्व ॥

பதவுரை.

इन्दो!	உந்தோ!	சோமமே!
वृष्टिमान्	வ்ருஷ்டிமாந்	மழை பெய்கின்ற
पर्जन्य इव	பர்ஜந்ய இவ	மேகத்தைப் போல,
अस्मभ्यं	அஸ்மப்யம்	எங்களுக்கு

* अस्मभ्यमिन्द मिन्द्रयुः, என்பது இருக்கு.

इन्द्रियं	ஊந்ரியம்	இந்திரன் அநுபவிக்கின்ற, அல்லது, வீரத்தன்மையை வளர்க்கின்ற ரசத்தை
मधोः धारया	ஸொஃ யாரயா	அமுத தாரையாற்
पवस्व	வவஸ்வ	பொழிவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—10.

சோமமே! இந்திரனல் அநுபவித்தற்குரிய, அல்லது, வீரியத்தை வளர்க்கின்ற ரசத்தை அமுத தாரையால், மழை பெய்கின்ற மேகம்போன்று எங்கட்குப் பெய்வாயாக என்பதாம். (10)

முதலாவது கண்டம்

முற்றும்.

இரண்டாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—4. அத்தியாயம்—7. கண்டம்—2.

பதினேழு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१ २ ३१२३ १ २ ३ २ ३ १२
1047. स ना च सोम जेषि च पवमान महिश्रवः ।
१ २ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ १ ॥

ஸ நா ச ஸொஃ ஜெஷி ச வவமாந ஃஹிஸ்ரவஃ ।
அதா நொ வஸ்யஸஸ்க்ருதி ॥

அந்வயம்.

महिश्रवः; पवमान, सोम!, स न च, जेषि च, अथ, नः, वस्यसः कृधि ॥

பதவுரை.

महिश्रवः	மஹிஶ்ரவः	மிகுந்த அன்னமுடையதும்,
पवमान	பவமாந	சமஸ்காரமுடையதுமாகிய
सोम !	ஸொம !	சோமமே ! நீ,
स न च	ஸ ந ச	போற்றத்தக்க தேவர்களையும் வழிபடுவாயாக.
जेषि च	ஜெஷி ச	இராக்கதர்களையும் வெல்வாயாக.
अथ	அத	பின்னர்,
नः	நः	எங்கட்கு
वस्यसः कृधि	வஸ்யஸஃ க்ருதி	மேம்பாட்டையுஞ் செய்வாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—பத்தாவது இருக்கின் முதற் சூக்தத்தில்—1.

மிகுந்த அன்னமும், புநிதமுமுடைய சோமமே ! நீ, எமது வேள்வியில் ஆராதித்தற்குரிய தேவர்களைப் போற்றுவாயாக. மற்றும், வேள்விக்கு இடையூறு செய்கின்ற இராக்கதர்களையும் வெல்வாயாக. எங்கட்கு மேம்பாட்டையுஞ் செய்வாயாக. என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

२ ३ २ ३ २ ३ २ १ २ ३ १ २
1048. सना ज्योतिः सना स्वा३र्विश्वा च सोम सौभगा ।
१ २ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ २ ॥

ஸநா ஜ்யோதிஃ ஸநா ஸ்வாவிஶ்வா ச ஸொம ஸளஹகா ।
அதா நொ வஸ்யஸஸ்க்ருதி ॥

அந்வயம்.

सोम !, ज्योतिः स न, स्वः च, विश्वा सौभगा, स न, अथ, नः, वस्यसः, कृधि ॥

பதவுரை.

सोम !	ஸொம !	சோமமே ! நீ,
ज्योतिः स न	ஜ்யோதிஃ ஸ ந	எங்கட்கு ஒளியைக் கொடுப்பாயாக.
स्वः च	ஸ்வஃ ச	மற்றும், சுவர்க்கத்தையும்
विश्वा सौभगा	விஶ்வா ஸளஹகா	சகல ஐசுவரியங்களையுங்
स न	ஸ ந	கொடுப்பாயாக.

अथ	அத	பின்னர்,
नः	நः	எங்கட்கு
वस्यसः	வஸ்யஸः	மேம்பாட்டையுஞ்
कृधि	க்ருதி	செய்வாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

சோமமே! எங்கட்குச் சோதியைக் கொடுப்பாயாக. மற்றும், எங்கட்கு சுவர்க்கத்தைக் கொடுப்பாயாக. (அஃதன்றியும்) ஐசுவரியங்களனைத்தையுங் கொடுப்பாயாக என்பதாம். மற்றது வெளிப்படை. (2)

மந்திரம் 3.

२ ३ १ २ ३उ ३ १२ ३ १ २
1049. सना दक्षमुत क्रतुमप सोम मृधो जहि ।
१ २ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ ३ ॥

ஸநா தக்ஷமுத க்ரதுமப ஸோம ம்ருதோ ஜஹி ।
அதா நோ வஸ்யஸஸ்க்ருதி ॥

அன்வயம்.

हे सोम! दक्षं, क्रतुं, स न, मृधः, अपजहि, अथ नः, वस्यसः कृधि ॥

பதவுரை.

हे सोम!	ஹே ஸோம!	சோமமே!
दक्षं	தக்ஷம்	வலியையும்
क्रतु	க்ரதும்	வேள்விப் பலனையும்
स न	ஸ நஃ	எங்கட்குக் கொடுப்பாயாக.
मृधः	ம்ருதஃ	பகைவர்களையுங்
अपजहि	அபஜஹி	கொல்வாயாக.
अथ नः	அத நஃ	பின்னர், எங்கட்கு,
वस्यसः कृधि	வஸ்யஸஃ க்ருதி	மேம்பாட்டையுஞ் செய்வாயாக,

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

சோமமே! நீ, எங்கட்கு ஆற்றலைக் கொடுப்பாயாக. மற்றும், வேள்விப் பலனையுங் கொடுப்பாயாக. சத்துருக்களையுங் கொல்வாயாக. மற்றது வெளிப் படை. (3)

மந்திரம் 4.

१२ ३२३ २३१ २३ १२
1050. पवीतारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे ।
१२ ३ १२
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ ४ ॥

வவீதாரஃ வ॒நீதந ஸொமமிந்த்ராய வாதவெ ।
அதா நொ வஸ்யஸஸ்க்ருதி ॥

அன்வயம்.

पवीतारः, इन्द्राय पातवे, सोमं, पुनीतन, अथ नः, वस्यसः कृधि ॥

பதவுரை.

पवीतारः	வவீதாரஃ	சோமரசத்தை சம்ஸ்காரஞ் செய்கின்ற வேட்போர்களே! நீவிர்,
इन्द्राय पातवे	இந்த்ராய வாதவெ	இந்திரன் அருந்துதற் பொருட்டுச்
सोमं	ஸொமம்	சோமரசத்தை,
पुनीतन	வ॒நீதந	தசாபவித்திரமென்னும் ஆடை நூனியாற் சுத்தஞ் செய்வீர்களாக.
अथ नः	அத²நஃ	பின்னர், எங்கட்கு
वस्यसः	வஸ்யஸஃ	மேம்பாட்டையுஞ்
कृधि	க்ருதி	செய்வீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—4.

சோமத்தைப் பரிசோதிக்கின்ற வேட்போர்களே! நீவிர், தசாபவித்திர மென்னும் ஆடைநூனியாற் சோமரசத்தைச் சுத்தப்படுத்துவீர்களாக. எதன் பொருட்டெனின்! இந்திரன் அருந்துதற் பொருட்டென்பதாம். மற்றது வெளிப்படை. (4)

மந்திரம் 5.

१ २र ३ १ २ ३ २३ २ ३ २ ३ १ २
1051. त्वꣳ सूर्ये न आ भज तव क्रत्वा तवोतिभिः ।
१ २ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ ५ ॥

ஸ்வம் ஸூர்யே ந ஆ ஹஜ தவ க்ரத்வா தவொதிபிஃ ।
அதா நொ வஸ்யஸஸ்க்ருதி ॥

அந்வயம்.

(हे सोम !,) त्वं, तव क्रत्वा, तव ऊतिभिः, नः, सूर्ये आ भज, अथ नः, वस्यसः, कृधि ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	(சோமமே !)
त्वं	ஸ்வம்	நீ,
तव क्रत्वा	தவ க்ரத்வா	நின்னாற் செய்யப்பட்ட
तव ऊतिभिः	தவ ஊதிபிஃ	நினது பாதுகாப்புக்களால்
नः	நஃ	எங்களை,
सूर्ये आ भज	ஸூர்யே ஆ ஹஜ	சூரியனை வழிபடுமாறு செய்விப்பாயாக.
अथ नः	அத நஃ	பின்னர், எங்கட்கு
वस्यसः	வஸ்யஸஃ	மேம்பாட்டைச்
कृधि	க்ருதி	செய்வாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—5.

சோமமே ! நீ, உன்னாற் செய்யப்பட்ட நினது பாதுகாப்பாற்றல்களால், நாங்கள் சூரியனை யடையுமாறு செய்வாயாக என்பதாம். மற்றது வெளிப்படை. (5)

மந்திரம் 6.

२३ २३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
1052. तव क्रत्वा तवोतिभिर्ज्योक् पश्येम सूर्यम् ।
१ २ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ ६ ॥

தவ க்ரக்வா தவொதிஹிஜ்யோக்ஸ் வஶ்யேம ஸூர்யம் ।
அதா நொ வஸ்யஸஸ்க்ருதி ॥

அந்வயம்.

(हे सोम !,) तव क्रत्वा, तव ऊतिभिः, ज्योक्, सूर्यं पश्येम, अथ नः, वस्यसः कृधि ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	(சோமமே !)
तव क्रत्वा	தவ க்ரக்வா	நீ கொடுத்த ஞானத்தாலும்
तव ऊतिभिः	தவ ஊதிஹிஃ	நின்னுடைய பாதுகாப்புக்களாலும்
ज्योक्	ஜ்யோக்ஸ்	நீண்ட நாள்
सूर्यं पश्येम	ஸூர்யம் வஶ்யேம	யாம், சூரியனைப் பார்ப்போமாக.
अथ नः	அத நஃ	பின்னர், எங்கட்கு
वस्यसः कृधि	வஸ்யஸஃ க்ருதி	மேம்பாட்டை செய்வாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—6.

சோமமே! நீ கொடுத்த ஞானத்தாலும், நின்னுடைய பாதுகாப்புக்களாலும் நெடுநாள் யாம் சூரியனைக் காண்போமாக என்பதாம். மற்றது வெளிப்படை. (6)

மந்திரம் 7.

३क २र ३ १२ ३ १२ ३ २
1053. अभ्यर्ष स्वायुध सोम द्विबर्हसꣳ रयिम् ।
१ २ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ ७ ॥

அப்யர்ஷ ஸ்வாயுத ஸொம த்விபர்ஹஸம் ரயிம் ।
அதா நொ வஸ்யஸஸ்க்ருதி ॥

அந்வயம்.

स्वायुध सोम !, द्विबर्हसं रयिं, अभ्यर्ष, अथ नः, वस्यसः कृधि ॥

பதவுரை.

स्वायुध सोम !	ஸ்வாயுத ஸொம !	சிறந்த ஆயுதமுடைய சோமமே!
द्विबर्हसं रयिं	தி ஸ்வர்ஹஸம் ரயிம்	இரண்டுலகத்தும் நிலைத்திருக்கின்ற தனத்தை
अभ्यर्ष	அப்யர்ஷ	துதிப்போர்கட்குக் கொடுப்பாயாக.
अथ नः	அத நः	பின்னர், எங்கட்கு
वस्यसः कृधि	வஸ்யஸ: க்ருதி	மேம்பாட்டைச் செய்வாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—7.

சிறந்த ஆயுதமுடைய சோமமே! நீ, வானுலகம் மண்ணுலக மிரண்டிலும் நிலையாயுள்ள தனத்தைத் துதிப்போர்கள் அடையுமாறு செய்வாயாக என்பதாம். மற்றது வெளிப்படை. (7)

மந்திரம் 8.

३ २ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
1054. अभ्या३र्षानपच्युतो वाजिन्त्समत्सु सासहिः ।
१ २ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ ८ ॥

அப்யார்ஷாநபச்யுதோ வாஜிந்ஸமத்ஸு ஸாஸஹிஃ ।
அதா நோ வஸ்யஸஸ்க்ருதி ॥

அந்வயம்.

वाजिन् !, समत्सु, अनपच्युतः, सासहिः, अभ्यर्ष, अथ नः, वस्यसः कृधि ॥

பதவுரை.

वाजिन् !	வாஜிந் !	ஆற்றலுடைய சோமமே !
समत्सु	ஸமத்ஸு	போர்களிற்
अनपच्युतः	அநபச்யுதஃ	பகைவர்களால் அடக்கமுடியாதவனும்,
सासहिः	ஸாஸஹிஃ	சத்துருக்களைப் பழித்துத் தள்ளுவோனுமாகிய நீ
अभ्यर्ष	அப்யர்ஷ	துரோண கலசத்தை யடைவாயாக.

अथ नः	சுய நः	பின்னர், எங்கட்கு
वस्यसः कृधि	வஸ்யஸஃ கருயி	மேம்பாட்டைச் செய்வாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—8.

சோமமே! உயுத்தங்களிற் சத்துருக்களால் அடக்கமுடியாதவனும், சத்துருக்களே யடக்குவோனுமாகிய நீ, துரோண கலசத்திற் செல்வாயாக என்பதாம். மற்றது வெளிப்படை. (8)

மந்திரம் 9.

२ ३१२ ३ १२ ३ १२
1055. त्वां यज्ञैरवीवृधन् पवमान विधर्मणि ।
१२ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ ९ ॥

க்வாம் யஜ்ஞைரவீவ்ருதந் பவமான விதர்மணி ।
அதா நோ வஸ்யஸஸ்க்ருதி ॥

அன்வயம்.

पवमान!, त्वां, विधर्मणि, यज्ञैः, अवीवृधन्, अथ नः, वस्यसः कृधि ॥

பதவுரை.

पवमान!	பவமான!	புதிதாகிய சோமமே!
त्वां	க்வாம்	உன்னை,
विधर्मणि	விதர்மணி	பலவகைப் பயன்களையுடைய
यज्ञैः	யஜ்ஞைஃ	வேள்வியின் சாதனமான தோத்திரங்களால்
अवीवृधन्	அவீவ்ருதந்	வளர்க்கின்றார்கள்.
अथ नः	அத நஃ	பின்னர், எங்கட்கு
वस्यसः कृधि	வஸ்யஸஃ கருயி	மேம்பாட்டைச் செய்வாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—9.

சோதிக்கப்பெற்ற சோமமே! நின்னை, அநேகவகையான பயன்களைக் கொண்ட வேள்வியின் சாதனமான தோத்திரங்களால், வேள்வித் தலைவர்கள் விருத்தி பண்ணுகின்றார்கள் என்பதாம். மற்றது வெளிப்படை. (9)

மந்திரம் 10.

३ १ २ ३ २३ २ ३ १ २ २ २३ १२
1056. रयिं नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमाभर ।
१ २ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ १०–४ ॥

இருக்கு 9-4-1-10.

ரயிம் நஶ்சித்ரமஶ்வினமிந்தோ விஶ்வாயுமாபர ।
அதா நோ வஸ்யஸஸ்க்ருதி ॥

அன்வயம்.

इन्दो !, नः, चित्रं अश्विनं, विश्वायुं रयिं, आभर, अथ नः, वस्यसः, कृधि ॥

பதவுரை.

इन्दो !	ஹந்தோ !	சோமமே ! நீ,
नः	நஃ	எங்கட்கு,
चित्रं अश्विनं	சித்ரம் அஶ்வினம்	பலவகையான குதிரைகளை யுடையதும்,
विश्वायुं रयिं	விஶ்வாயும் ரயிம்	அனைவரும் விருப்புகின்றதுமாகிய தனத்தைக்
आभर	ஆபர	கொடுப்பாயாக.
अथ नः	அத நஃ	பின்னர், எங்கட்கு
वस्यसः	வஸ்யஸஃ	மேம்பாட்டைச்
कृधि	க்ருதி	செய்வாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2 இருக்கு—10.

வேள்விகளில் ஒழுகுகின்ற சோமமே ! நீ, பல்வகைக் குதிரைகளை யுடையதும், எல்லாராலும் விரும்பப்படுவதுமாகிய தனத்தை எங்கட்குக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். மற்றது வெளிப்படை. (10)

மந்திரம் 11.

२३२ ३ १ १ २ १२३१ २२
1057. तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः ।
२३२ २ १ २
तरत्स मन्दी धावति ॥ १ ॥

தரத்ஸ மந்தீ தாவதி தாரா ஸுதஸ்யாந்தஸஃ ।
தரத்ஸ மந்தீ தாவதி ॥

அன்வயம்.

मन्दी सः, तरत् धावति, सुतस्य, अन्धसः, धारा, धावति, मन्दी सः, तरत्, धावति ॥

பதவுரை.

मन्दी सः	உந்தீ ஸஃ	தேவர்களுக்குக் களிப்பைக் கொடுக்கின்ற அச் சோமம்,
तरत् धावति	தரந் யாவதி	துதிப்போர்களைப் பாவத்தினின்றுங் கரையேற்றுவதாய்த் தசாபவித்திரமென்னும் வேஷ்டி நுனியிலிருந்து கீழே ஒழுகுகின்றது.
सुतस्य	ஸுதஸ்ய	பிழியப்பெற்ற
अन्धसः	அந்ஸஃ	அன்னமாகிய சோமரசத்தின்,
धारा	யாரா	தாரை
धावति	யாவதி	தசாபவித்திர மென்னும் ஆடை நுனியிலிருந்து கீழே யொழுகுகின்றது.
मन्दी सः	உந்தீ ஸஃ	தேவர்களுக்குக் களிப்பைக் கொடுக்கின்ற அச் சோமம்
तरत्	தரந்	துதிப்போர்களைப் பாவத்தினின்றுங் கரையேற்றுவதாய்த்
धावति	யாவதி	தசாபவித்திரமாகிய ஆடை நுனியிலிருந்து கீழேயொழுகுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—நான்காவது மந்திரத்தின் இரண்டாஞ் சூக்கத்தில்—1. உசித்தியர் ரிஷி.

தேவர்களுக்குக் களிப்பைக் கொடுக்கின்ற அச் சோமம், துதிப்போர்களைப் பாவத்தினின்று கரையேற்றுவிப்பதாய், தசாபவித்திர மென்னும் ஆடைநுனியிலிருந்து கீழே ஒழுகுகின்றது. மீண்டும் அதுவே அன்பின் பொருட்டுக் கூறப்படுகின்றது. துதிப்போர்களைப் பாவத்தினின்றுங் கரையேற்றுவதாய், தசாபவித்திர மென்னும் ஆடை நுனியிலிருந்து கீழே யொழுகுகின்றது. அல்லது, "தாரையுடன் பிழியப்பெற்ற சோமரசத்தின் துதியானது, பாவத்தைப் போக்கி மேற்கதியைக் கொடுக்கின்றது" என யாஸ்க முனிவர் கூறியவாறே பொருள் கொள்ளினுமமையும் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 12.

३ १२३ १२३ १२ ३ १२
1058. उस्रा वेद वसूनां मर्त्तस्य देव्यवसः ।
२३ २ ३ १ २
तरत्स मन्दी धावति ॥ २ ॥

உஸ்ரா வெத வஸூநாம் உதர்த்யஸ்ய தெவ்யவஸஃ ।
தரத்ஸ மந்தீ தாவதி ॥

அந்வயம்.

वसूनां उस्रा, देवी, मर्त्तस्य, अवसः वेद, सः मन्दी, तरत्, धावति ॥

பதவுரை.

वसूनां उस्रा	வஸூநாம் உஸ்ரா	பலவகையான தனங்களைக் கொடுப்பதும்
देवी	தெவீ	பிரகாசமுடையதுமாகிய சோமரசத்தின் தாரையானது
मर्त्तस्य	உதர்த்யஸ்ய	வேள்வித் தலைவனைப்
अवसः वेद	அவஸஃ வெத	பாதுகாக்குந் தன்மையை யுணர்கின்றது.
सः मन्दी	ஸஃ மதீ	தேவர்களுக்குக் களிப்பைக் கொடுக்கின்ற அச் சோமம்
तरत्	தரத்	துதிப்போர்களைப் பாவத்தினின்றுங் கரையேற்றிவைப்பதாய்த்
धावति	தாவதி	தசாபவித்திரமென்னும் ஆடை நனியிலிருந்து கீழே ஒழுகுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

தனங்களைக் கொடுப்பதும், பிரகாசிப்பதும், அல்லது, துதிக்கத்தக்கதுமாகிய சோமத்தின் தாரையானது, வேள்வித் தலைவனைப் பாதுகாப் பாற்றுதலை யுணர்கின்றது என்பதாம் மற்றது வெளிப்படை. (2)

மந்திரம் 13.

३१२ ३२ ३२ ३१२
1059. ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा सहस्राणि दद्महे ।
२३२ ३ १ २
तरत्स मन्दी धावति ॥ ३ ॥

ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा सहस्राणि दद्महे ।
तरत्स मन्दी धावति ॥

அந்வயம்.

ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योः, सहस्राणि, आदद्महे, मन्दी सः, तरत्, धावति ॥

பதவுரை.

ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योः	ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योः	துவசிரர் புருஷந்தி, என்னுமரசர் களிருவரிடத்திலும் பெற்றுக் கொண்ட
सहस्राणि	ஸஹஸ்ராணி	ஆயிரச்சுணக்கான தனங்களை,
आदद्महे	ஆதத்³மஹே	நாங்கள் கொடுக்கின்றோம்.
मन्दी सः	மந்தீ³ ஸஃ	தேவர்களுக்குக் களிப்பைக் கொடுக்கின்ற அச்சோமம்
तरत्	தரத்	வேள்வித்தலைவனைக்கரையேற்றி வைப்பதாய்
धावति	தா⁴வதி	தசாபவித்திரமென்னும் ஆடை தூனியாற் செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2 இருக்கு—3.

துவசிரர், புருடந்தி, என்னும் இரண்டு அரசர்களிடத்து ஆயிரக்கணக்கான தனங்களை நாங்கள் ஏற்றுக்கொள்கின்றோம். எங்களால் ஏற்றுக்கொள்ளப்பட்ட தனம், உத்தமமானதாகுக. என இருடிகள் சோமத்தைப் போற்றுகின்றார்கள். ஆதலின் இது சோமத்தின் தோத்திரமாம். மற்றது வெளிப்படை. இதை "இவ்விருவர்களின் தனத்தை ஏற்றுக் கொண்டனர் இவ்வாறு தரந்த புருமீடர்கள் கொண்டனர்," என அவத்சாரமும், 'பின்னர் தரந்தபுருமீடர்கள் துவசிரர் புரடந்தியர்கள், என்றற்றொடக்கத்து மந்திரத்தாற் சாட்டியாயனமும் கூறுகின்றது என்பதாம். (3)

மந்திரம் 14.

१ २र ३ २३ १ २ ३१ २ ३ १ २

1060. आ ययोस्त्रिंशतं तना सहस्राणि च दद्महे ।

२३ २ ३ १ २

तरत्स मन्दी धावति ॥ ४ ॥

சூ யயொ த்ரிம்ஶதம் தநா ஸஹஸ்ராணி ச ததஹே ।

தரத்ஸ மந்தீ தாவதி ॥

அன்வயம்.

ययोः, त्रिंशतं, सहस्राणि च, तना, आदद्महे, हे सोम! मन्दी सः, तरत्, धावति ॥

பதவுரை.

ययोः	யயொஃ	எந்த, துவசிரர் புருடந்தி என் பவர்களின்
त्रिंशतं	த்ரிம்ஶதம்	முந்நூறு
सहस्राणि च	ஸஹஸ்ராணி அ	ஆயிரம்
तना	தநா	ஆடைகளை
आदद्महे	சூததஹே	யாம் ஏற்றுக்கொள்கின்றோமோ,
हे सोम!	ஹே ஸொம!	(சோமமே!) அவ்வனைத்தும் நல மாகுக.
मन्दी सः	மந்தீ ஸஃ	தேவர்களுக்குக் களிப்பைக் கொடுக்கின்ற அச் சோமம்
तरत्	தரத்	துதிப்போர்களைப் பாவத்தினின் றுங் கரையேற்றிவைப்பதாய்த்
धावति	தாவதி	தசாபவித்திரமென்னும் ஆடை நூனியிலிருந்து கீழே ஓழுகு கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—4.

'துவசிரர் புருடந்தி' என்னும் இருவரிடத்திலிருந்து முந்நூறு எந்த ஆடைகளையும், ஆயிரம் வேட்டிகளையும் நாங்கள் ஏற்றுக்கொண்டோமோ, அவையனைத்தும் ஏற்றுக்கொள்ளாதன போன்று ஆகுக. என்றிவ்வாறு இருடிகள் சோமத்தை வேண்டுகின்றார்கள். இதுவும் சோமத்தின் துதியே யாம். மற்றது வெளிப்படை. (4)

மந்திரம் 15.

३ १ २र ३ १ २र ३२
1061. एते सोमा असृक्षत गृणानाः शवसे महे ।
३ १ २ ३ १२
मदिन्तमस्य धारया ॥ १ ॥

ஸனெ தெ ஸொமா அஸ்ருக்ஷத க்ருணானாஃ ஶவஸெ மஹெ ।
மதிந்தமஸ்ய தாரயா ॥

அன்வயம்.

மதிந்தமஸ்ய, ஏதே ஸோமாஃ, க்ருணானாஃ, மஹே ஶவஸே, தாரயா, அஸ்ருக்ஷத ॥

பதவுரை.

मदिन्तमस्य	மதிந்தமஸ்ய	தேவர்களுக்குப் பெருங் களிப்பைக் கொடுக்கின்ற இரசமுடைய
एते सोमाः	ஸனெ தெ ஸொமாஃ	இச் சோமம்,
गृणानाः	க்ருணானாஃ	துதிக்கின்ற
महे शवसे	மஹெ ஶவஸெ	எமது பேராற்றலின் பொருட்டுத்
धारया	தாரயா	தாரையால்
असृक्षत	அஸ்ருக்ஷத	பாத்திரத்திற் செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—மூன்றுவது மூன்றில் சூக்தம்—1.

தேவர்களுக்கு எல்லையற்ற களிப்பைக் கொடுக்கின்ற இரசமுள்ள இச் சோமம், பிழியப்பெற்றுத் தோத்திரஞ் செய்கின்ற எங்களுடைய பேராற்றலின் பொருட்டுத் தாரையாய்ச் செல்கின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 16.

३ १ २र ३१२ ३ १ ३ २ १ २
1062. अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षसि ।
३१ २ ३ १२
सनद्वाजः परिस्रव ॥ २ ॥

அபி கவ்யானி வீதயெ க்ருணா புனானொ அர்ஷஸி ।
ஸநத்வாஜஃ பரிஸ்ரவ ॥

அன்வயம்.

(हे सोम !,) वीतये, नृम्णा, गव्यानि, पुनानः, अभ्यर्षसि, (हे सोम !,) सनद्वाजः, परिस्रव ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	(சோமமே ! நீ,)
वीतये	வீதயெ	தேவர்கள் அருந்துதற் பொருட்டு
नृम्णा	நரூணா	மிகப் பிரியமான
गव्यानि	கவ்யானி	பசுவின், பால், நெய்களைப்
पुनानः	பவமானஃ	புனிதமாக்கிக்கொண்டு,
अभ्यर्षसि	அப்யர்ஷஸி	பாத்திரத்திற் செல்கின்றாய்.
(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	(சோமமே !)
सनद्वाजः	ஸநத்வாஜஃ	அன்னமளிக்கின்ற நீ
परिस्रव	பரிஸ்ரவ	தசாபவித்திர மென்னும் வஸ்திரத்தி லொழுகுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

சோமமே ! தேவர்கள் அருந்துதற் பொருட்டு, தனம் போல் மிகப் பிரியமுள்ள ஆவின் பால் முதலியவைகளைப் புனிதமாக்கிக்கொண்டு, பாத்திரத்திற் செல்கின்றனை. சோமமே ! அன்னங் கொடுக்கின்ற நீ, தசாபவித்திர மென்னும் வஸ்திரத்திலிருந்து கீழே யொழுகுவாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 17.

३२ ३ १२ ३२३ १ २ ३ १२
1063. **उत नो गोमतीरिषो विश्वा अर्ष परिष्टुभः ।**
३ २ ३१२
गृणानो जमदग्निना ॥ ३–६ ॥

இருக்கு 9-62-22-24.

உத நொ கொமதீரிஷொ விஶ்வா அர்ஷ பரிஷ்டுபஃ ।
கிருணாநொ ஜமதக்நிநா ॥

அன்வயம்.

उत, (हे सोम !,) जमदग्निना, गृणानः, नः गोमतीः, परिष्टुभः, विश्वा इषः, अर्ष ॥

பதவுரை.

उत	உத	மற்றும்,
(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	(சோமமே !)
जमदग्निना	ஜமத்3க்3நி-நா	சமதக்கினி ரிஷியால்
गृणानः	க்3ருணா-நஃ	துதிக்கப்பெற்ற நீ,
नः	-நஃ	எங்களிமித்தம்
गोमतीः	கொ3ஸ-தீஃ	பசுக்களுடன்
परिष्टुभः	பரிஷ்டு-ஹஃ	பலவகையாலுந் துதித்தற்குரிய
विश्वा इषः	விஸ்வா இஷஃ	எல்லா வுணவுகளையுங்
अर्ष	அர்ஷ	கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

மற்றும், சோமமே ! சமதக்கினி என்னும் இருடியால் துதிக்கப்பெற்ற நீ, எங்கட்குப் பசுக்களுடன் கூடினதும், பலவாற்றாலுந் துதித்தற்குரியது மாகிய எல்லா அன்னங்களையுங் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (3)

இரண்டாவது கண்டம்

முற்றும்

மூன்றாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—4. அத்தியாயம்—7. கண்டம்—3.

ஒன்பது மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१२उ ३ १२ ३१२ ३ १२ ३ १ २ ३१ २

1064. इमꣳ स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया ।

३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३१ २र

भद्राहि नः प्रमतिरस्य सꣳसद्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव॥१॥

இமம் ஸ்தோமமர்ஹதே ஜாதவேதஸே ரதமிவ ஸம்மஹேமா மநீஷயா।
஭த்ராஹி நஃ ப்ரமதிரஸ்ய ஸம்ஸத்யக்ரே ஸவ்யே மா ரிஷாமா
[வயம் தவ ॥

அந்வயம்

अर्हते, जातवेदसे, मनीषया, इमं स्तोमं, रथं इव, संमहेम, अस्य संसदि, नः प्रमतिः, भद्राहि, अग्ने! तव सख्ये, वयं, मा रिषाम ॥

பதவுரை.

अर्हते	அர்ஹதே	போற்றத்தக்க
जातवेदसे	ஜாதவேதஸே	அக்கினியின் பொருட்டு,
मनीषया	மநீஷயா	கூரிய புத்தியால்
इमं स्तोमं	இமம் ஸ்தோமம்	மஞ்சரியாகிய இத்தோத்திரத்தை,
रथं इव	ரதம் இவ	தச்சன் இரதத்தை நலஞ்செய்யுமாறு
संमहेम	ஸம்மஹேம	இனியதாய்ச் செய்கின்றோம்.
अस्य संसदि	அஸ்ய ஸம்ஸதி	இவ்வக்கினியை நன்கு துதிப்பதில்
नः प्रमतिः	நஃ ப்ரமதிஃ	எமது சிறந்த புத்தியானது
भद्राहि	஭த்ராஹி	நலமுடையதாகவே இருக்கின்றது.
अग्ने! तव सख्ये	அக்ரே! தவ ஸவ்யே	அக்கினியே! உனது நட்பால்
वयं	வயம்	நாங்களும்
मा रिषाम	மா ரிஷாம	துன்புறாதவர்களாவோமாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1. குச்சர் ரிஷி.

போற்றத் தக்கதும், தோன்றியவைகளை யுணர்வதும், தோன்றிய வுணர்வை யுடையதும், அல்லது, தனமுடையதுமாகிய அக்கினியின் பொருட்டு, மஞ்சரிவடிவ இத்தோத்திரத்தை நுண்ணியமதியால் தச்சன் தாருவை நலஞ்செய்யுமாறு இனியதாய்ச் செய்கின்றோம். இவ்வக்கினியைப் போற்றுவதில் எங்களுடைய கூரியமதி, ஆற்றலுடையதாகவே யிருக்கின்றது. இதனால், அம்மதியால் இனிய துதிகளைச் செய்கின்றோம் என்பதாம். அக்கினியே! நாங்கள் உன்னுடன் நட்பாயிருக்கு மிடத்து, பிறரால் துன்புறுத்தப்படாதவர்களாவோமாக என்பதாம், (1)

மந்திரம் 2.

१ २३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १२ ३२
1065, भरामेध्मं कृणवामा हवीꣳषि ते चितयन्तः पर्वणा पर्वणा वयम् ।
३ १ २ ३१ २३ १ २र ३ १ २र ३१ २र
जीवातवे प्रतराꣳ साधया धियोऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ २ ॥

ஹராமெத்மம் க்ருணவாமா ஹவீம்ஷி தெ சிதயந்தஃ பர்வணா
[பர்வணா வயம் ।
ஜீவாதவெ ப்ரதராம் ஸாதயா தியொ஽க்ந்தெ ஸவ்யெ மா ரிஷாமா
[வயம் தவ ॥

அந்வயம்.

हे अग्ने !, इध्मं भराम, वयं, पर्वणा पर्वणा, चितयन्तः, ते, हवींषि, कृणवाम, जीवातवे, धियः प्रतरां, साधय, अग्ने !, तव सख्ये, वयं, मा रिषाम ॥

பதவுரை.

हे अग्ने !	ஹெ அக்ந்தெ !	அக்கினியே !
इध्मं भराम	உத்மம் ஹராம	உன்னுடைய வேள்வியின் பொருட்டு இருபத்தொரு சமித்துவகைகளைத் தேடுகின்கின்றோம்.
वयं	வயம்	நாங்கள்,
पर्वणा पर्वणा	பர்வணா பர்வணா	பௌர்ணமி அமாவாசையிற் செய்யும் வேள்வி வாயிலாக
चितयन्तः	சிதயந்தஃ	உன்னை ஞாபகப்படுத்தியவர்களாய்
ते	தெ	உனக்கு,
हवींषि	ஹவீம்ஷி	சரு, புரோடாச முதலிய அவிகளைக்
कृणवाम	க்ருணவாம	கொடுக்கின்றோம். அத்தகைய நீ,
जीवातवे	ஜீவாதவெ	நீண்ட நாள் நாங்கள் வாழ்வதற்கு
धियः प्रतरां	தியஃ ப்ரதராம்	தீ யோம்பல் முதலிய நற்கருமங்களை
साधय	ஸாதய	இனிது முடித்துவைப்பாயாக.
अग्ने !	அக்ந்தெ !	அக்கினியே !
तव सख्ये	தவ ஸவ்யெ	எங்கட்கு நின்னிடத்து நட்பிருக்குமிடத்து

वयं	வயம்	நாங்கள்
मा रिषाम	மா ரிஷாம	பிறரால் துன்புறுத்தப்படாதவர்களாவோமாக,

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

அக்கினியே! உனது வேள்வியின் பொருட்டுத் தீவளர்க்கச் சாதனமான இருபத்தொரு சமித்துக் கூட்டங்களைத் தேடுகின்றோம். அதன் பின், உனக்கு மாவுருண்டை, சரு முதலிய ஏனைய அவிகளையும் நாங்கள் கொடுக்கச் செய்கின்றோம். என்ன செய்து கொண்டெனின்? ஒவ்வொரு பட்சத்திலும் பௌர்ணமி அமாவாசையிற் செய்கின்ற வேள்விகளால் உன்னை நினைப்பூட்டுவிப்பவர்களாய் என்க. அத்தன்மைய நீ, நீண்டகாலம் நாங்கள் வாழ்ந்திருப்பதற்கு, வேள்வி செய்தல் முதலிய கருமங்களை இனிது முடித்துவைப்பாயாக என்பதாம். ஏனையவை முன் போன்றன. (2)

மந்திரம் 3.

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ २ ३ १२३ १ २
1066. **शकेम त्वा समिधꣳ साधया धियस्त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम् ।**
१ २ ३ १ २र ३ २ १ २र ३ १ २र ३१ २र
त्वमादित्याꣳ आवह तान् ह्यू३श्मस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥

3-7, இருக்கு 1-94-1-4-3.

ஶகெம க்வா ஸமிதம் ஸாதயா தியஸ்வெ தெவா ஹவிரதந்த்யா
[ஹுதம் ।
க்வமாதித்யாம் ஆவஹ தாந் ஹ்யூஶ்மஸ்யக்ந்ரெ ஸக்யெ மா ரிஷாமா
[வயம் தவ ॥

அந்வயம்.

हे अग्ने!, त्वा, समिधं शकेम, धियः साधय, त्वे आहुतं हविः, देवाः अदन्ति, त्वं, आदित्यान् आवह, तान्, हि उश्मसि, अग्ने!, तव सख्ये, वयं मा रिषाम ॥

பதவுரை.

हे अग्ने!	ஹெ அக்ந்ரெ!	அக்கினியே!
त्वा	க்வா	யாம், உன்னை
समिधं शकेम	ஸமிதம் ஶகெம	நன்குவளர்க்க ஆற்றலுடையவர்களாகின்றோம். நீயும்,

धियः साधय	யியः ஸாயய	தரிசபூர்ணமாச வேள்வியை முடித்துவைப்பாயாக.
त्वे आहुतं हविः	ஸ்வே ஸுஹுதம் ஹவிः	நின்பால் வேட்போர் வாயிலாக ஓமம் பண்ணப்பெற்ற தேவ வுணவுகளை
देवाः अदन्ति	தெவாः அத்தி	தேவர்கள் உண்கின்றார்கள்.
त्वं	ஸ்வம்	நீ
आदित्यान् आवह	ஆதித்யாந் ஆவஹ	அதிதியின்புத்திரர்களானதேவர் களனைவரையும் எமது வேள் விக்கு வருமாறு செய்வாயாக.
तान्	தாந்	அவர்களை
हि उशमसि	ஹி உஸ்மஸி	இப்போது விரும்புகின்றேன்.
अग्ने!	அக்நே!	அக்கினியே!
तव सख्ये	தவ ஸக்யே	உன்னுடன் நட்புண்டாகிய விடத்து
वयं मा रिषाम	வயம் மா ரிஷாம	நாங்கள் ஒருவரானுந் துன்புறுத் தப்படாதவர்களாவோமாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

அக்கினியே! யாம் உன்னை நன்கு வளர்ப்பதற்கு ஆற்றுடையவர்களா வோம். நீயும், எங்களுடைய தரிச பூர்ணமாசத்திற் செய்யும் வேள்விக் கருமங்களை முடித்துவைப்பாயாக. உன்னாலேயே, அனைத்து முண்டாகின் றன. நின்பால் ஓமம் பண்ணப்பட்ட புரோடாச (மாவுருண்டை) முதலிய தேவ வுணவுகளைத், தேவர்கள் உண்கின்றார்களாதலின் கருமத்தை முடித்து வைப்பாயாக என்பது பொருள். மற்றும், அதிதியின் புதல்வர்களான அனை வரையும், எமது வேள்விக்கு வரவழைப்பாயாக. அவர்களை இப்போது நாங்கள் விரும்புகின்றோம் என்பதாம். மற்றவை முன்போன்றவை. (3)

மந்திரம் 4.

१२ ३ २३ १२ ३ १ २ ३ १२
1067. प्रति वाꣳ सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम् ।
३ १२ ३ १२
अर्यमणꣳ रिशादसम् ॥ १ ॥

ப்ரதி வாம் ஸூர உதிதே மித்ரம் ஹ்ருணீஷே வருணம் ।
அர்யமணம் ரிஶாதஸம் ॥

அன்வயம்.

(हे मित्रावरुणौ !,) सूरे उदिते, मित्रं, वरुणं, वां, रिशादसं, अर्यमणं, प्रतिगृणीषे ॥

பதவுரை.

(हे मित्रावरुणौ !)	(ஹே மித்ராவரு ணள !)	(மித்திர வருணர்களே !)
सूरे उदिते	ஸூரே உதிதே	சூரியன் உதயமானவிடத்து
मित्रं	மித்ரம்	மித்திரன்,
वरुणं	வரு ணம்	வருணன்
वां	வாம்	என்னும் உங்களிருவரையும்,
रिशादसं	ரிஸாதஸம்	பகைவரை யுண்ணுகின்ற
अर्यमणं	அர்யமணம்	அரியமா என்னுந் தேவதையையும்
प्रतिगृणीषे	ப்ரதிகிருணீஷே	தனித்தனியே துதிக்கின்றேன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில்—1.

மித்திரன் வருணன் என்னுந் தேவர்களே ! உங்களிருவரையும், சத்துருவைக் கொல்கின்ற அரியமா என்னுந் தேவதையையும், தனித் தனியே துதிக்கின்றேன். எப்போதெனின்? இரவி எழுந்த சமயத்தி லென்பதாம். காலையில் என்பது பொருள். (1)

மந்திரம் 5.

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १२३ २ ३ १ २

1068. राया हिरण्यया मतिरियमवृकाय शवसे ।

३ १ २ २ ३ १ २

इयं विप्रा मेधसातये ॥ २ ॥

ராயா ஹிரண்யயா மதிரியமவ்ருகாய ஸவஸே ।

இயம் விப்ரா மேதஸாதயே ॥

அன்வயம்.

इयं मतिः, हिरण्यया, रायां, अवृकाय, शवसे, विप्राः !, इयं, मेधसातये ॥

பதவுரை.

इयं मतिः	ஈயம் மதிஃ	இத்தோத்திரம்,
हिरण्यया	ஹிரண்யயா	இனியதைச் செய்வதும், இரமிக்கத்தக்கதுமாகிய
राया	ராயா	தனத்துடன்
अवृकाय	அவ்ருகாய	பிறரால் தடைப்படாத
शवसे	ஶவஸெ	ஆற்றலின் பொருட்டாகுக.
विप्राः !	விப்ராஃ !	விப்பிரர்களே !
इयं	ஈயம்	இத்துதியானது
मेधसातये	மெஹாதயெ	வேள்வி இலாபத்தின் பொருட்டும் ஆகுக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

இனியதைச் செய்வதும், இரமித்தற் குரியதுமாகிய தனத்துடன், பிறராற் கெடுக்கமுடியாத எங்களுடைய ஆற்றலின் பொருட்டு, இப்போது செய்கின்ற தோத்திரம் ஆகுக. ஈண்டு, ஆகுக என்றது எஞ்சி நின்றது. மற்றும், கூரிய மதியுடையோர்களே ! இத்துதியே வேள்வி இலாபத்தின் பொருட்டும் ஆகுக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
1069. ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरिभिः सह ।
२३क२र
इषं स्वश्च धीमहि ॥ ३–८ ॥

இருக்கு 7-66-7-9.

தெ ஸ்யாஃ தெவ வரூண தெ மித்ர ஸூரிபிஃ ஸஹ ।
ஈஷம் ஸ்வஶ்ச தீமஹி ॥

அந்வயம்.

देव वरुण !, सूरिभिः सह, ते, स्याम, मित्र !, ते, इषं च, स्वः, धीमहि ॥

பதவுரை.

देव वरुण !	தெவ வரூண !	வருணதேவனே !
सूरिभिः सह	ஸூரிபிஃ ஸஹ	வேட்போர்களுடன்
ते	தெ	உன்னைத் துதிப்போனுகிய யான்

स्याम	ஸ்யாஅ	சம்பத்துடையாஞ்வேனுக.
मित्र!	மித்ர!	மித்திரனே!
ते	தெ	உன்னைத் துதிப்போனுகிய யான் வேட்போர்களுடன் சம்பத் துடையாஞவேனுக.
इषं च	இஷம் அ	அன்னத்தையும்,
स्वः	ஸ்வः	சுவர்க்கம், அல்லது, பொன்னை யும்
धीमहि	தீமஹி	அடைவோன் ஆகுக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

வருணதேவனே! உன்னைத் துதிப்போனுகிய யான், சம்பத்துடையா ஞவேனுக. வேள்வித் தலைவர்களான நாங்கள் மாத்திரமன்று, மற்றை, துதிக்கின்ற வேட்போர்களுடன் என்க. அங்ஙனமே, மித்திரதேவனே! நின்னைத் துதிப்போனுகிய யான் வேட்போர்களுடன் சம்பத்துடையாஞவே னுக. மற்றும், அன்னம், சுவர்க்கம், அல்லது, பொன்னைப் பெற்றோனு வேனுக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 7.

३ २उ ३ २३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र

1070. **भिन्धि विश्वा अप द्विषः परिबाधो जही मृधः ।**

१ २ ३ १ २र

वसु स्पार्हं तदाभर ॥ २ ॥

ஹிந்தி விஶ்வா அப த்விஷः பரிபாதோ ஜஹீ ம்ருதஃ ।
வஸு ஸ்பார்ஹம் ததாபர ॥

அன்வயம்.

(हे इन्द्र!,) विश्वाः द्विषः, अपभिन्धि, बाधः मृधः, परिजहि, स्पार्हं वसु, तत् आभर ॥

பதவுரை.

(हे इन्द्र!)	(ஹே இந்த்ர!)	(இந்திரனே! நீ,)
विश्वाः द्विषः	விஶ்வாः த்விஷः	சத்துருக்களின் சேனைகளனைத் தையும்
अपभिन्धि	அபஹிந்தி	அழிப்பாயாக,

बाधः मृधः	ஸாயஃ ஶூயஃ	துன்புறுத்தும் உயுத்தத்தை,
परिजहि	பரிஜஹி	நன்கு வெற்றி கொள்வாயாக.
स्पार्हं वसु	ஸ்பார்ஹம் வஸு	விரும்பத்தக்கது தனமாம்
तत् आभर	தத் ஆபர	அதை எமக்குக் கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—மூன்றாவது சூக்தத்தில்—1. திரிசோகர் ரிஷி.

இந்திரனே! நீ, சத்துருவின் சேனைகளனைத்தையும் நாசஞ் செய்வாயாக. அவ்வாறே, இம்சைசெய்கின்ற போர்களையும் அடக்குவாயாக. வியாபகனாகிய இந்திர! இச்சித்தற்குரிய பகைவர்களின் தனத்தை எமக்குக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

१ २ ३ १ २ ३१ २र ३ २ ३ १२
1071. यस्य ते विश्वमानुषग्भूरेर्दत्तस्य वेदति ।
१२ ३१ २र
वसु स्पार्हं तदाभर ॥ २ ॥

யஸ்ய தெ விஶ்வமாநுஷக்ஶூரெர்தத்தஸ்ய வெததி ।
வஸு ஸ்பார்ஹம் ததாபர ॥

அந்வயம்.

(हे इन्द्र !,) ते, दत्तस्य भूरेः, विश्वं, यस्य, आनुषक् वेदति, स्पार्हं, तत् वसु, (नः,) आभर ॥

பதவுரை.

(हे इन्द्र !)	(ஹெ இந்த்ர !)	(இந்திரனே !)
ते	தெ	நீ,
दत्तस्य भूरेः	தத்தஸ்ய ஶூரெஃ	மிகுதியாய்க் கொடுத்த
विश्वं	விஶ்வம்	தனங்களனைத்தும்
यस्य	யஸ்ய	எவனுக்கு அறியப்படுவதாகின்றதோ,
आनुषक् वेदति	ஆநுஷக் வெததி	எப்போதும் முறையாய்
स्पार्हं	ஸ்பார்ஹம்	விரும்புதற்குரிய
तत् वसु	தத் வஸு	அத் தனத்தை
(नः)	(நஃ)	(எங்கட்குக்)
आभर	ஆபர	கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

இந்திரனே! நீ கொடுத்த மிகுந்த தனங்களனைத்தையும், மனிதர்க ளனைவரு முணர்கின்றனர். விரும்பத்தக்க அத் தனத்தை எங்கட்கு நிறையக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 9.

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २२ ३ १ २

1072. **यद्वीडाविन्द्र यत् स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम् ।**

१२ ३१ २२

वसु स्पार्हं तदाभर ॥ ३–९ ॥

இருக்கு 8-45-40-42.

யத்³வீளாவிந்த்³ர யத்ஸ்தி²ரே யத்பர்ஶாநே பராப்⁴ருதம் ।
வஸு ஸ்பார்ஹம் தத³ாப⁴ர ॥

அன்வயம்.

इन्द्र!, यत् वीडौ, यत् स्थिरे, यत् विपर्शाने, पराभृतं, तत् स्पार्हं वसु, (नः) आभर ॥

பதவுரை.

इन्द्र!	ஊந்த்³ர!	இந்திரனே! உன்னால்,
यत् वीडौ	யத் வீளள	யாதொரு தனம், பிறரால் அசைக்க முடியாத மனிதரிடத்தும்
यत् स्थिरे	யத் ஸ்தி²ரே	நிலையுள்ள மனிதரிடத்தும், யாதொரு தனம்
यत् विपर्शाने	யத் விபர்ஶாநே	விசாரமுள்ள மனிதரிடத்தும்
पराभृतं	பராப்⁴ருதம்	வைக்கப்பட்டிருக்கின்றதோ,
तत् स्पार्हं वसु	தத் ஸ்பார்ஹம் வஸு	விரும்பத்தக்க அத் தனத்தை
(नः) आभर	(நः) ஆப⁴ர	(எங்கட்குக்) கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

இந்திரனே! பிறரால் அசைக்கமுடியாத மனிதரிடத்தில், நின்னால், யாதொரு தனம் வைக்கப்பட்டிருக்கின்றதோ, யாதொரு தனம் இயற்கையாய் நிலையுள்ள மனிதரிடத்தில் வைக்கப்பட்டிருக்கின்றதோ, ஆராய்ச்சியுடைய மனிதரிடத்து யாதொரு தனம் வைக்கப்பட்டிருக்கின்றதோ விரும்புதற்குரிய அத் தனங்களை எங்கட்குக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 10.

३२ ३ २उ ३ २ ३ २ ३ १२३ १२
1073. यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु ।
१ २ ३ १ २
इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ १ ॥

யஜ்ஞஸ்ய ஹி ஸ்த ரீக்விஜா ஸஸ்நீ வாஜேஷு கர்மஸு ।
இந்த்ராக்நீ தஸ்ய போததம் ॥

அன்வயம்.

इन्द्राग्नी !, यज्ञस्य, हि, ऋत्विजाः स्थः, वाजेषु कर्मसु, सस्नी, तस्य बोधतम् ॥

பதவுரை.

इन्द्राग्नी !	இந்த்ராக்நீ !	இந்திரன், அக்கினி என்னுந் தேவதைகளே ! நீங்கள்,
यज्ञस्य	யஜ்ஞஸ்ய	சோதிட்டோம முதலிய வேள்விக் காலத்தில்
हि	ஹி	உறுதியாய்
ऋत्विजाः स्थः	ரீக்விஜாः ஸ்தः	ஆராதிக்கத்தக்கவர்களாக இருக்கின்றீர்கள்.
वाजेषु कर्मसु	வாஜேஷு கர்மஸு	போர்களில், அல்லது, வேள்வியாகிய கருமங்களில்
सस्नी	ஸஸ்நீ	பரிசுத்தர்களாய்
तस्य बोधतं	தஸ்ய போததம்	அத்துதியை அறிவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட நான்காஞ் சூக்தத்தில்—1.

இந்திராக்கினிகளே ! நீங்கள், சோதிட்டோம முதலிய வேள்விக் காலத்தில் ஆராதிக்கத்தக்கவர்களா யிருக்கின்றீர்கள். இதனால், போரிடலாகிய கருமங்களிலும், இந்திராக்கினிகளே ! நீவிர், பரிசுத்தர்களாயிருந்து அதை யறிவீர்களாக. அல்லது, அதன் சம்பந்தியாகிய எனது துதியை யறிவீர்களாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 11.

३ १ २ ३ १ २ ३१ २२
1074. तोशासा रथयावाना वृत्रहणा पराजिता ।
१ २ ३ १ २
इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ २ ॥

தொஶாஸா ரதயாவா நா வ்ருத்ரஹணா பராஜிதா ।
இந்த்ராக்னீ தஸ்ய போதம் ॥

அன்வயம்.

तोशासा, रथयावाना, वृत्रहणा, अपराजिता, इन्द्राग्नी !, तस्य बोधतम् ॥

பதவுரை.

तोशासा	தொஶாஸா	சத்துருக்களைக் கொல்கின்றவர்களும்,
रथयावाना	ரதயாவா நா	இரதத்தில் யாத்திரை செய்கின்றவர்களும்,
वृत्रहणा	வ்ருத்ரஹணா	விருத்திராசுரனைக் கொன்றவர்களும்,
अपराजिता	அபராஜிதா	ஒருவராலும் வெல்ல முடியாதவர்களுமான
इन्द्राग्नी !	இந்த்ராக்னீ !	இந்திரன், அக்கினி என்பவர்களே ! நீவிர்
तस्य बोधतं	தஸ்ய போதம்	அத்தகைய எமது துதிகளை யுணர்வீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

இந்திரன் அக்கினி என்னுந் தேவர்களே ! நீவிர், பகைவரை யழிப்பவர்களும், இரதத்திற் செல்கின்றவர்களும், விருத்திராசுரனைக் கொல்கின்றவர்களும், ஒருவராலும் வெல்லப்படாதவர்களுமாவீர்கள். நீங்கள் அத்தகைய எமது துதிகளைக் கேட்பீர்களாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 12.

३ १ २ ३ १ २र३ १ २ ३ १२
1075. इदं वां मदिरं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः ।
१ २ ३ १ २
इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ ३–१० ॥

இருக்கு 8-38-1-3.

இதம் வாம் மதிரம் மத்வ்யுக்ஷந்த்ரிபிர்நரஃ ।
இந்த்ராக்ஷ்ந தஸ்ய பொதத்ம் ॥

அந்வயம்.

इन्द्राग्नी !, वां, मदिरं, इदं मधु, अद्रिभिः, अधुक्षन्, तस्य बोधतम् ॥

பதவுரை.

इन्द्राग्नी !	இந்த்ராக்ஷ்ந !	இந்திரன் அக்கினி, யென்னுந் தேவர்களே !
वां	வாம்	உங்கணிமித்தம்
मदिरं	மதிரம்	களிப்பைக் கொடுக்கின்ற சோமமாகிய
इदं मधु	இதம் மத்வ்	இவ் வமுதத்தை,
अद्रिभिः	அத்ரிபிஃ	கற்களால்
अधुक्षन्	அத்யுக்ஷந்	வேட்போர், பிழிந்து பாத்திரத்தில் வைத்திருக்கின்றனர்.
तस्य बोधतं	தஸ்ய பொதத்ம்	அத்தகைய எமது துதியை நீவிர் அறிவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

இந்திராக்கினிகளே ! உங்களைக் குறித்து, களிப்பைக் கொடுக்கின்ற சோமவடிவ இந்த அமுதத்தைக் கற்களாலிடித்து பிழிந்து பாத்திரத்தில் நிறைத்து வைத்திருக்கின்றனர். நீவிர் அத்தகைய எமது துதியை யுணர் வீர்களாக என்பதாம். (3)

மூன்றாவது கண்டம்

முற்றும்.

——

நான்காவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—4. அத்தியாயம்—7. கண்டம்— 4.

எட்டு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१ २ ३१ २ ३ १२ ३ १ २
1076. इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः ।
३ २ ३ १ २ ३१२
अर्कस्य योनिमासदम् ॥ १ ॥

இந்ராயெந்தோ மருத்வதெ பவஸ்வ மதுமத்தமஃ ।
அர்கஸ்ய யொநிமாஸதம் ॥

அன்வயம்.

इन्दो !, अर्कस्य योनिं, आसदं, मरुत्वते इन्द्राय, मधुमत्तमः, पवस्व ॥

பதவுரை.

इन्दो !	இந்தோ !	சோமமே ! நீ
अर्कस्य योनिं	அர்கஸ்ய யொநிம்	போற்றத்தக்க வேள்வியின்கண்
आसदं	ஆஸதம்	உட்காருவதற்கு,
मरुत्वते इन्द्राय	மருத்வதெ இந்ராய	மருத்துக்களுடன் கூடிய இந்திரன் பொருட்டு
मधुमत्तमः	மதுமத்தமஃ	மிக்க இன்சுவையுடையதாய்
पवस्व	பவஸ்வ	ஓழுகுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட முதலாவது சூக்தத்தில்—1. கசியபர் ரிஷி.

சோமமே ! மிகுந்த இன்சுவையுடைய நீ, போற்றத்தக்க வேள்வியின் கண் அமருவதற்கு, மருத்துக்களுடன் கூடிய இந்திரன் பொருட்டு ஓழுகுவாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

2 3 1 2 3 2 3 12 3 2
1077. தं त्वा विप्रा वचोविदः परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम् ।
1 2 3 12
सं त्वा मृजन्त्यायवः ॥ २ ॥

தம் ஷ்வா விப்ரா வசொவிதஃ வரிஷ்க்ருண்வந்தி தர்ணஸிம் ।
ஸம் ஷ்வா ம்ருஜந்த்யாயவஃ ॥

அன்வயம்.

(हे सोम !,) तं धर्णसिं त्वा, विप्राः, वचोविदः, परिष्कृण्वन्ति, आयवः, त्वा, संमृजन्ति ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹே ஸோம !)	(சோமமே !)
तं धर्णसिं त्वा	தம் தர்ணஸிம் ஷ்வா	தாங்குகின்ற அத்தகைய உன்னை,
विप्राः	விப்ராஃ	மிகுந்த புத்தியுள்ள
वचोविदः	வசொவிதஃ	தோத்திரஞ் செய்கின்றவர்கள்
परिष्कृण्वन्ति	வரிஷ்க்ருண்வந்தி	நன்கு அலங்கரிக்கின்றனர்.
आयवः	ஆயவஃ	மனிதர்கள்
त्वा	ஷ்வா	உன்னை,
संमृजन्ति	ஸம்ம்ருஜந்தி	நன்கு பரிசோதிக்கின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

சோமமே ! (அனைத்தையும்) தாங்குகின்ற அத்தகைய வுன்னை, அறிவுடைய தோத்தியாளர்கள் நன்கு அலங்கரிக்கின்றார்கள். மற்றும், உன்னை, மனிதர்கள் நன்றாய்ப் பரிசோதிக்கின்றார்கள் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

12 3 1 2 3 1 2 2 3 12
1078. रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्तु वरुणः कवे ।
12 3 12
पवमानस्य मरुतः ॥ ३–११ ॥

இருக்கு 9-64-22-20.

ரவம் தெ ரிதூ சுயாஸா விவக்ஷ வரூணஃ கவெ ।
வவசாநஸ்ய ஸுரூதஃ ॥

அன்வயம்.

कवे !, पवमानस्य, ते रसं, मित्रः, अर्यमा, वरुणः, मरुतः, पिबन्तु ॥

பதவுரை.

कवे !	கவெ !	கருமத்திற்குச் சாதனமாகிய சோமமே !
पवमानस्य	வவசாநஸ்ய	சமஸ்காரம் பண்ணப்பெற்ற
ते रसं	தெ ரவம்	உன்னுடைய இரசத்தை,
मित्रः	மித்ரஃ	மித்திரன்,
अर्यमा	சுயாஸா	அரியமா,
वरुणः	வரூணஃ	வருணன்,
मरुतः	ஸுரூதஃ	மருத்துக்கள், என்னுந் தேவர்கள்
पिबन्तु	விபக்ஷ	அருந்துவார்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—3.

பெருங் கருமத்தை யுணர்ந்த சோமமே ! பிழியப்பெற்ற உன்னுடைய இரசத்தை, மித்திரன், அரியமா, வருணன், மருத்துக்கள் என்னும் இத் தேவர்களனைவரும் அருந்துவார்களாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

३ १ २ ३१ २२
1079. मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचमिन्वसि ।
३२ ३ १२ ३ २३ २३ १२ ३क २२
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि ॥ १ ॥

ஊஜயாநஃ வரூஹவ்யா வஸரூஜ்ரே வாசமிந்வஸி ।
ரயிம் பிஸரூங்கம் பஹுலம் வரூரூஸ்ருஹம் பவமாநாஹ்யர்ஷஸி ॥

அன்வயம்.

सुहस्त्या !, मृज्यमानः !, समुद्रे, वाचं इन्वसि, पवमान !, पिशङ्गं, पुरुस्पृहं, बहुलं रयिं, अभ्यर्षसि ॥

பதவுரை.

सुहस्त्या !	ஸு-ஹஸ்த்யா !	அழகிய விரல்களா லெடுக்கப் பெற்ற சோமமே !
मृज्यमानः !	ம்ருஜ்யமானः !	சோதிக்கப்பெற்றுய் ! ஈ,
समुद्रे	ஸமுத்ரெ	கலசத்தில்
वाचं इन्वसि	வாசம் இன்வஸி	சத்தத்தைச் செலுத்துகின்றுய்.
पवमान !	பவமான !	புனிதமாகிய சோமமே ! ஈ,
पिशङ्गं	பிசங்கம்	(துதிப்போர்க்கு,) மஞ்சணிற முடையதும்,
पुरुस्पृहं	புரு-ஸ்ப்ருஹம்	பல்லோர்களால் விரும்பத்தக்கது மாகிய
बहुलं रयिं	பஹுலம் ரயிம்	மிகுந்த தனத்தைக்
अभ्यर्षसि	அப்யர்ஷஸி	கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—பெருங்கிதம் இரண்டாஞ் சூக்கத்தில்—1.

அழகிய விரல்களாலெடுக்கப்பெற்ற சோமமே ! சோதிக்கப்பெற்றுய் ! ஈ, கலசத்தில், அல்லது, அந்தரிட்சத்தில் ஒலியைச் செலுத்துகின்றுய். மற்றும், புனிதமாகிய சோமமே ! மனதுக் கினிமையாகியதும், மஞ்சள் நிறமுடையதும், பலரால் இச்சித்தற் குரியதுமாகிய அளவற்ற பொன் னைக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

३ २उ ३ १ २ ३ २३ १ २ ३१२

1080. *पुनानो वारे पवमानो अव्यये †वृषो अचिक्रदद्वने ।

३१२ ३१ २२ ३१२

देवानाꣳ सोम पवमान निष्कृतं गोभिरञ्जानो अर्षसि ॥ २–१२ ॥

இருக்கு 9-107-21-22.

வுநானொ வாரெ பவமானொ அவ்யெ வ்ருஷொ அசிக்ரதத்வனெ ।

தெவானாம் ஸொம பவமான நிஷ்க்ருதம் கொபிரஞ்ஜானொ அர்ஷஸி ॥

அன்வயம்.

वृषः, पुनानः, अव्यये वारे, पवमानः, वने अचिक्रदत्, सोम !, पवमान !, गोभिः, अञ्जानः, देवानां निष्कृतं, अर्षसि ॥

---

* मृजानो वारे, † वृषावचक्रदो वने, என்பன இருக்கு.

பதவுரை.

वृषः	வ்ருஷஃ	மனவிருப்பை நிறைவாக்குகின்ற சோமம்
पुनानः	வ்ரூநாநஃ	பிழியப்பெற்று, அனைத்தையும் புநிதமாக்குகின்றது.
अव्यये वारे	அவ்யயெ வாரெ	மயிர்களாலாய கம்பளியில்
पवमानः	வவமாநஃ	வடிக்கப்பட்டு
घने अचिक्रदत्	க்⁴நெ அசிக்ரதத்	நீரில் ஒலிக்கின்றது.
सोम!	ஸொம!	சோமமே!
पवमान!	வவமாந!	பவித்திரஞ் செய்கின்றோய்! நீ
गोभिः	கோ⁴பிஃ	ஆவின்பால் முதலியவைகளுடன்
अक्तानः	அக்தாநஃ	கலக்கப்பட்டு
देवानां निष्कृतं	தெவாநாம் நிஷ்க்ருதம்	சமஸ்காரம் பண்ணிய தேவர்களின் இடத்தை
अर्षसि	அர்ஷஸி	அடைவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

இச் சோமம், மனவிருப்பைப் பொழிகின்றதும், பிழியப்பட்டதுமாகி, அனைத்தையும் பரிசுத்தப்படுத்துகின்றது. கம்பளியால் புநிதமாய் வடிக்கப்பட்டு, நீரில், அல்லது, மரக்கலசத்தில் சத்தமிடுகின்றது. இனி முன்னிலையாய்த் கூறல். சோமமே! புநிதமாகிய நீ, பசுவின் பால் முதலியவைகளுடன் கலக்கப்பட்டதாய்ப் பரிசுத்தமாகிய தேவர்களின் இடத்தைப் பெறுகின்றாய் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

३२३२उ ३१२ ३२ ३ १२
1081. एतमु त्यं दशक्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम् ।
१२३१२
समादित्येभिरख्यत ॥ १ ॥

ஏதமூ த்யம் த³ஶக்ஷிபொ ம்ரூ⁴ஜந்தி ஸிந்து⁴மாதரம் ।
ஸமாதி³த்யேபி⁴ரக்²யத ॥

அந்வயம்.

सिन्धुमातरं, त्यं एतं, दशक्षिपः मृजन्ति, आदित्येभिः, समख्यत ॥

பதவுரை.

सिन्धुमातरं	ஸிந்ஹுமாதரம்	கடலென்னும் மாதாவையுடைய
स्यं एतं	தயம் வந தம்	அத்தகைய இச் சோமத்தை,
दशक्षिपः सृजन्ति	உபக்ஷிவ: ரஜந்தி	விரல்கள் பத்துஞ், பரிசோதிக்கின்றன. மற்றும்,
आदित्येभिः	ஆதித்யேபி:	ஆதித்தர்களுடன்
समस्यत	ஸமஸ்யத	இனிது சேர்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

சண்டம்—4. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட மூன்றுஞ் சூக்தத்தில்—1.

எச் சோமத்திற்கு, கடலானது புதிய அன்னையாராமோ, அத்தகைய இச் சோமத்தை, பத்துவிரல்களுஞ் சோதிக்கின்றன. மற்றும், அத்தன்மைய இச்சோமம் ஆதித்தர்களுடன் நன்கு சேர்கின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 7.

१ २र ३२ ३१ २ ३ १ २ ३ १२ १
1082. समिन्द्रेणोत वायुना सुत एति पवित्र आ ।
१ २र ३ १ २
सꣳ सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ २ ॥

ஸமிந்த்ரேணோத வாயுநா ஸுத ஏதி பவித்ர ஆ ।
ஸꣳ ஸூர்யஸ்ய ரச்மிபி: ॥

அன்வயம்.

सुतः, पवित्रे, इन्द्रेण, समेति, उत, वायुना आ, सूर्यस्य, रश्मिभिः, समेति ॥

பதவுரை.

सुतः	ஸுத:	பிழியப்பெற்ற சோமம்
पवित्रे	பவித்ர	கலசத்தில்
इन्द्रेण	இந்த்ரேண	இந்திரனுடன்
समेति	ஸமேதி	ஒன்றுபடுகின்றது.
उत	உத	மற்றும்,
वायुना आ	வாயுநா ஸு	வாயுவினுடன் ஒன்றுபடுகின்றது.
सूर्यस्य	ஸூர்யஸ்ய	சூரியனுடைய
रश्मिभिः	ரச்மிபி:	கிரணங்களுடன்
समेति	ஸமேதி	கூடுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

பிழியப்பட்ட சோமம், கலசத்தின்கண் இந்திரனுடன் சேர்கின்றது. மற்றும், வாயுவினுடன் ஒன்றுபடுகின்றது. சூரியனுடைய கிரணங்களுடனும் கலக்கின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 8.

२ ३ १ २ ३१२ ३ १ २ ३ १२
1083. स नो भगाय वायवे पूष्णे पवस्व मधुमान् ।
१ २ ३ १ २र
चारुर्मित्रे वरुणे च ॥ ३–१३ ॥

இருக்கு 9-61-7-9.

ஸ நொ ஹகாய வாயவெ வஷ்ணெ வவஸ்வ மதூமாந் ।
சாரூர்மித்ரெ வரூணெ ச ॥

அன்வயம்

(हे सोम !,) मधुमान्, चारुः, सः, नः, भगाय, वायवे, पूष्णे, मित्रे, वरुणे च, पवस्व ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	(சோமமே !)
मधुमान्	மதூமாந்	இன்சுவை யுடையதும்
चारुः	சாரூः	அழகுடையதுமாகிய
सः	ஸः	அத்தகைய நீ,
नः	நஃ	எங்களுடைய வேள்வியில்
भगाय	ஹகாய	'பக' தேவதை,
वायवे	வாயவெ	வாயு
पूष्णे	வஷ்ணெ	பூஷா (சூரியன்)
मित्रे	மித்ரெ	மித்திரன்
वरुणे च	வரூணெ அ	வருணன், என்னும் இவர்களின் பொருட்டு
पवस्व	வவஸ்வ	ஒழுகுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—3.

சோமமே! இனிய ரசமும், மங்கள வடிவமும், பிழியப்பட்டதுமாகிய நீ, எங்களுடைய வேள்வியில், 'பகம்' என்னும் தேவதையின் பொருட்டும், வாயுவின் பொருட்டும், மித்திரதேவதையின் பொருட்டும், வருணனின் பொருட்டும் ஒழுகுவாயாக என்பதாம். (3)

நான்காவது கண்டம்

முற்றும்.

ஐந்தாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—4. அத்தியாயம்—7. கண்டம்—5.

ஒன்பது மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३१२ ३१३१२ ३१२
1084. रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः ।
३२ ३ २३२२
क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥ १ ॥

ரெவதீர்நஃ ஸதமாத இந்த்ரே ஸந்து துவிவாஜாஃ ।
க்ஷுமந்தோ யாபிர்மதேம ॥

அன்வயம்.

क्षुमन्तः, याभिः, मदेम, इन्द्रे सधमादे, नः, रेवतीः, तुविवाजाः सन्तु ॥

பதவுரை.

क्षुमन्तः	க்ஷுமந்தஃ	அன்னத்தையுடைய யாங்கள்
याभिः	யாபிஃ	எப் பசுக்களுடன்,
मदेम	மதேம	இன்புறுகின்றோமோ,
इन्द्रे सधमादे	இந்த்ரே ஸதமாதே	இந்திரன் களிப்படைந்தவிடத்து

नः	நः	எங்களுடைய அப் பசுக்கள்,
रेवतीः	ரெவதீः	பால், நெய் முதலியவைகளையும்
तुविवाजाः सन्तु	துவிவாஜாः ஸந்து	ஆற்றலையு முடையவைகளாக இருக்குக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட சூக்தத்தில்—1. சுனச்சேபர் ரிஷி.

அன்னமுடையவர்களான யாங்கள், எப் பசுக்களுடன் களிப்படைகின்றோமோ, இந்திரன் எங்களுடன் களிப்புற்ற விடத்து, எங்களுடைய அப் பசுக்கள், தனமாகிய பால் முதலியவற்றை யுடையவைகளும், மிக்க ஆற்றலுடையவைகளுமாகுக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३२
1085. आ घ त्वावा *न्त्मना युक्त स्तोतृभ्यो धृष्णवीयानः ।
३ २उ ३ २ ३क २र
ऋणोरक्षं न चक्र्योः ॥ २ ॥

ஆ வ க்வாவாந்மநா யுக்த ஸ்தோதரப்யோ த்ருஷ்ணவீயாநः ।
ஃணோரக்ஷம் ந சக்ர்யோः ॥

அந்வயம்.

धृष्णो!, त्वावान्, त्मना युक्तः, ईयानः, स्तोतृभ्यः, घ आ ऋणोः, चक्र्योः अक्षं न ॥

பதவுரை.

धृष्णो !	த்ருஷ்ணோ !	வன்மையுடைய இந்திரனே !
त्वावान्	க்வாவாந	நின்னைப் போன்ற தேவர்கள்,
त्मना युक्तः	த்மநா யுக்தः	எனக்கு அருள்செய்யவேண்டுமென்னும் எண்ணமுடையவர்களும்
ईयानः	ஈயாநः	என்னால் வேண்டிக்கொள்ளப் பட்டவர்களுமாகி
स्तोतृभ्यः	ஸ்தோதரப்யः	துதிப்போர்களுக்கு அநுக்கிரகித்தற் பொருட்டு, அவர்கள் விரும்பிய பொருள்களை

* त्मनाऽप, என்பது இருக்கு.

घ आ ऋणोः	ஸ ஆ ஊணோ:	உறுதியாய்க் கொண்டுவந்து கொடுப்பார்களாக
चक्रयोः अक्षं न	அக்ரோ: அக்ஷம் ந	இரண்டு சக்கரமுடைய இரதத்தின் மீது பாரத்தைப் போடுவதுபோல் என்பதாம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

வலிமிகுந்த இந்திரனே! நின்னைப்போன்ற தேவர்கள், எனக்கு அருள் செய்ய வேண்டுமென்னும் புத்தியுடன், யான் இரந்துகொண்டவர்களுமாகி, துதிப்போர்களுக்கு அநுக்கிரகித்தற் பொருட்டு, அவர்களிச்சித்த பொருளைக் கொண்டுவந்து போடுவார்களாக. அதிலுவமை:—வண்டியிற் பாரத்தைப் போடுவதுபோல் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 3.

१ २र ३ १ २र ३ २
1086. आ यद्दुवः शतक्रतवा कामं जरितॄणाम् ।
३ २उ ३ १ २र
ऋणो रक्षं न शचीभिः ॥ ३–१४ ॥

இருக்கு 1-30-13-15.

ஆ யத்தூவ: ஶதக்ரதவா காமம் ஜரித்ரூணாம் ।
ஊணோ ரக்ஷம் ந ஶசீபி: ॥

அந்வயம்.

शतक्रतो!, यत् दुवः कामं, जरितॄणां, आ ऋणोः, शचीभिः अक्षं न ॥

பதவுரை.

शतक्रतो!	ஶதக்ரதோ!	இந்திரனே!
यत् दुवः कामं	யத் தூவ: காமம்	துதிப்போர்கள் தனம் வேண்டுமென இச்சித்தவாறே
जरितॄणां	ஜரித்ரூணாம்	துதிப்போர்களுக்கு அருள் செய்தற் பொருட்டு,
आ ऋणोः	ஆ ஊணோ:	அதைக் கொண்டுவந்து சேர்க்கின்றாய்.
शचीभिः अक्षं न	ஶசீபி: அக்ஷம் ந	வியாபாரிகளால் வண்டியிற் பாரம் போடப்படுவதுபோல்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

இந்திரனே! நீ எமக்குத் தனங்கிடைக்க வேண்டுமென, துதிப்போர்கள் விரும்பியவாறே, மனம் விருப்புற்றவைகளைக் கொண்டு வந்து கொடுக்கின்றாய். அநுதிவமை:—வணிகர் வண்டியில் வண்டிக்குத்தக்க பாரத்தை யேற்றுவது போன்று என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

३ २३१२ ३१ २ ३१२
1087. सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे ।
३२ ३ २
जुहूमसि द्यवि द्यवि ॥ १ ॥

ஸுரூபக்ருத்நுமூதயே ஸுதுகாமிவ கோதுஹே ।
ஜுஹூமஸி த்யவி த்யவி ॥

அந்வயம்.

सुरूपकृत्नुं, ऊतये, द्यवि द्यवि, जुहूमसि, गोदुहे, सुदुघां इव ॥

பதவுரை.

सुरूपकृत्नुं	ஸுரூபக்ருத்நும்	அழகிய கருமத்தைச் செய்கின்ற இந்திரனை,
ऊतये	ஊதயே	எமது பாதுகாப்பின் பொருட்டு
द्यवि द्यवि	த்யவி த்யவி	நாடோறும்
जुहूमसि	ஜுஹூமஸி	அழைக்கின்றோம்.
गोदुहे	கோதுஹே	பசுவைக் கறக்குமிடத்து
सुदुघां इव	ஸுதுகாம் இவ	பால் கொடுக்கின்ற நற்பசுவை யழைப்பது போன்று.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட இரண்டாவது சூக்தத்தில்—1.

அழகிய கருமத்தைச் செய்கின்றவனாகிய இந்திரனை, எங்கள் பாதுகாப்பின் பொருட்டு ஒவ்வொரு நாளும் அழைக்கின்றோம். (அதிலுவமை) பால் கொடுக்கின்ற நற்பசுவைப், பால் கறத்தற் பொருட்டு அழைக்குமாறு என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

१२ ३ २३ १ २ ३ १२
1088. उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब ।
३२उ ३२ ३ १२
गोदा इद्रेवतो मदः ॥ २ ॥

உவ நஃ ஸவநா கஹி ஸொமஸ்ய ஸொமபாஃ பிப ।
கொதா இத்ரேவதோ மதஃ ॥

அன்வயம்.

सोमपाः !, नः सवना, उप आगहि, सोमस्य पिब, रेवतः मदः, गोदा इत् ॥

பதவுரை.

सोमपाः !	ஸொமபாஃ !	சோமரசத்தையருந்துகின்ற இந்திரனே !
नः सवना	நஃ ஸவநா	எங்களுடைய தீ யோம்பல்கள் மூன்றிற்கும்
उप आगहि	உவ ஆகஹி	வருவாயாக. (வந்து)
सोमस्य पिब	ஸொமஸ்ய பிப	சோமரசத்தை யருந்துவாயாக.
रेवतः मदः	ரேவதஃ மதஃ	தனமுடைய நினக்கு உண்டாகுஞ் சந்தோஷம்
गोदा इत्	கொதா இத்	பசுக்களைக் கொடுப்பது வேயாகும்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

சோமரசத்தை யருந்துகின்ற இந்திரனே ! நீ, சோமரசத்தை அருந்துதற்பொருட்டு எங்களுடைய தீயோம்பல் மூன்றினருகிலும் வருவாயாக. வந்து, சோமத்தை யருந்துவாயாக. தனமுடைய நினக்குண்டாகின்ற களிப்பு, பசுக்களைக் கொடுப்பதேயாகும். நீ களிப்புற்றபோது எங்கட்குப் பசுக்கள் கிடைக்கும் என்பது பொருள். (2)

மந்திரம் 6.

१२ ३ १२ ३ १२ ३२
1089. अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम् ।
२ ३ १२ ३ १२
मा नो अति ख्य आगहि ॥ ३–१५ ॥

இருக்கு 1-4-1-3.

ꣳயா தெ ꣳஜஸா நாம் விஶ்வாꣳ ஸுஷ்டீ நாடி ।
ஆ நோ ꣳயாதிவு ꣳஶுஹி ॥

அன்வயம்.

अथ, ते अन्तमानां, सुमतीनां, विद्याम, आगहि, नः अति, मारुयः ॥

பதவுரை.

अथ	ꣳயா	சோமரசத்தைமருந்திய பின்னர், இந்திரனே !
ते अन्तमानां	தெ ꣳஜஸா நாம்	நினக்கருகிலுள்ள
सुमतीनां	ஸுஷ்டீ நாம்	பேரறிவாளர்களின் நடுவிலிருந்து கொண்டு (யாம்)
विद्याम	விஶ்வாꣳ	உன்னை யுணர்வோமாக. மேலும்
आगहि	ꣳஶுஹி	வருவாயாக. மற்றும்
नः अति	நோ ꣳயாதி	எங்களைத் தவிர
मारुयः	மாவ்யோ	பிறரைத் தம்மவரெனக் கூறு தொழிவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5 இருக்கு—3.

இந்திர ! நீ, சோமரசத்தை யருந்திய பின்னர், நினக்கு மிக அருகிலுள்ள நுண்ணறிவாளர்கட்கு நடுவில் நின்றுகொண்டு, நாங்கள் உன்னை யுணர்வோமாக. மேலும், எங்களைத் தவிர்த்து பிறரைத் தனது சம்பந்தமுடையாரெனக் கூறுதொழிவாயாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 7.

३ १ २२ ३ १ २ ३ २ ३ १ १
1090. उभे यदिन्द्र रोदसी आप प्राथोषा इव ।
३ १ २ १ १ २ ३ २
महान्तं त्वा महीनाꣳ सम्राजं चर्षणीनाम् ।
३ १ २२ ३ १ २२
देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ १ ॥

உலெ யதிந்ர ரொதஸீ ꣳஉப ப்ராயொஷா இவ ।
மஹாந்ꣳ த்வா மஹீநாꣳ ஸம்ராஜம் சர்ஷணீநாம் ।
தெவீ ஜநித்ர்யஜீஜநத்பத்ரா ஜநித்ர்யஜீஜநத் ॥

அன்வயம்.

इन्द्र !, उषा इव, उभे रोदसी, यत् आपप्राथ, महीनां महान्तं, चर्षणीनां, सम्राजं, त्वा, देवी जनित्री, अजीजनत्, भद्रा, जनित्री अजीजनत् ॥

பதவுரை.

इन्द्र !	ஹரே !	இந்திரனே !
उषा इव	உஷா ஈவ	உஷா, தனது ஒளியால் உலகை நிறையச் செய்யுமாறு
उभे रोदसी	உபே ரொதஸீ	வானுலக மண்ணுலக மிரண்டையும் (ஒளியால்)
यत् आपप्राथ	யத் ஆபப்ராத²	யாதொரு நீ நிறைக்கின்றாயோ,
महीनां महान्तं	மஹீநாம் மஹாந்தம்	பெரியார்களுக்குட் பெரியோனும்
चर्षणीनां	அர்ஷணீநாம்	மனிதர்களுக்கு
सम्राजं	ஸம்ராஜம்	இறைவனுமாகிய
त्वा	த்வா	(அத்தகைய) உன்னை,
देवी जनित्री	தே³வீ ஜநித்ரீ	'அதிதி' யென்னும் அன்னையார்
अजीजनत्	அஜீஜநத்	பெற்றனர். இதனால் அவர்
भद्रा	ப⁴த்³ரா	சிறந்த
जनित्री अजीजनत्	ஜநித்ரீ அஜீஜநத்	மாதாவாயினர்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட மூன்றாவது சூக்கத்தில்—1. மாந்தாதா ரிஷி.

இந்திரனே ! நீ, உஷாவானது தனது பிரகாசத்தால் உலகனைத்தையும் நிறையச் செய்வது போன்று. வானுலக மண்ணுலகங்களை, தனது ஒளியாற் பூரணமாக்குகின்றாய். (மற்றும்) மகத்தான தேவர்களுக்குட் பெரியோனும், மனிதர்களுக்கு இறைவனுமாகின்றனை. இத்தன்மைய உன்னை, பிரகாசமுடைய அதிதி தேவியார் பெற்றனர். இதனால் அவர் மிகச் சிறந்த அன்னையாராயினர் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
1091. दीर्घं ह्यङ्कुशं यथा शक्तिं बिभर्षि मन्तुमः ।
१२ ३ २ ३ २ ३ १ २र
पूर्वेण *मघवन् पदा वयामजो यथा यमः ।
३ १ २र
देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ २ ॥

தீர்ஷ்ம் ஹ்யங்குசம் யதா ஶக்திம் ஸிபர்ஷி மந்துமஃ ।
பூர்வேண மஹவந் பதா வயாமஜோ யதா யமஃ ।
தெவீ ஜநித்ர்யஜீஜநத்ஹத்ரா ஜநித்ர்யஜீஜநத் ॥

அந்வயம்.

मन्तुमः !, दीर्घं, अंकुशं यथा, शक्तिं बिभर्षि, मघवन् !, यथा अजः, पूर्वेण पदा, वयां यमः, देवी जनित्री, अजीजनत्, भद्रा जनित्री, अजीजनत् ॥

பதவுரை.

मन्तुमः !	மந்துமஃ !	அறிவு மிகுந்த இந்திரனே ! நீ,
दीर्घं	தீர்ஷ்ம்	நீண்ட
अङ्कुशं यथा	அங்குசம் யதா	அங்குசத்தைப் போன்ற
शक्तिं बिभर्षि	ஶக்திம் ஸிபர்ஷி	சத்தியென்னும் ஆயுதத்தைத் தாங்குகின்றாய்.
मघवन् !	மஹவந் !	தனமுடைய இந்திரனே !
यथा अजः	யதா அஜஃ	எவ்வாறு ஆடானது,
पूर्वेण पदा	பூர்வேண பதா	முன் காலால்
वयां यमः	வயாம் யமஃ	கிளைகளை வளைத்துக் கொள்கின்றதோ, அவ்வாறே, நீ, சத்துருவை யிழுத்துக் கொள்கின்றனை.
देवी जनित्री	தெவீ ஜநித்ரீ	'அதிதி' யென்னும் அன்னையார்,
अजीजनत्	அஜீஜநத்	உன்னைப் பெற்றனர்.
भद्रा जनित्री	ஹத்ரா ஜநித்ரீ	இதனால், அவ்வம்மையார் சிறந்தவர்
अजीजनत्	அஜீஜநத்	ஆயினார்.

* मघवन् पदाजोवया यथा यमः, என்பது இருக்கு.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

அறிவு மிக்குடைய இந்திரனே! நீ, நீண்ட அங்குசத்தைக் கையில் தாங்குவது போன்று, நீண்ட சத்தியென்னும் ஆயுதத்தைத் தாங்குகின்றாய். தனமுடைய இந்திர! எவ்வாறு, ஆடு, முன் பக்கத்திலுள்ள காலால் தழைகளையுடைய கிளையை வளைத்துக் கொள்கின்றதோ, அவ்வாறே, முற்கூறிய சத்தியென்னும் ஆயுதத்தாற் பகைவர்களை வளைத்துக் கொள்கின்றாய் என்பதாம். மற்றது வெளிப்படை. (2)

மந்திரம் 9.

१२ ३ १ २र ३ २
1092. अव स्म दुर्हणायतो मर्त्तस्य तनुहि स्थिरम् ।
३ १ २र ३ २ ३ १ १ ३ १२
अधस्पदं तमीं कृधि* यो अस्मँ अभिदासति ।
३ १ २र ३ १ २र
देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ ३–१६ ॥

இருக்கு 10-134-1-6-2.

அவ ஸ்ம துர்ஹணாயதோ மர்த்தஸ்ய தனுஹி ஸ்திரம் ।
அதஸ்பதம் தமீம் க்ருதி யோ அஸ்மாம் அபிதாஸதி ।
தெவீ ஜநித்ர்யஜீஜநத்பத்ரா ஜநித்ர்யஜீஜநத் ॥

அன்வயம்.

மர்த்தஸ்ய, துர்ஹணாயதः, ஸ்திரं, அவதனுஹி, யः, அஸ்மான், அபிதாஸதி, தं ஈம், அதஸ்பதம் க்ருதி, தேவீ ஜனித்ரீ, அஜீஜனத், பத்ரா ஜனித்ரீ, அஜீஜனத் ॥

பதவுரை.

मर्त्तस्य	மர்த்தஸ்ய	மனிதர்களை
दुर्हणायतः	துர்ஹணாயதः	துன்புறுத்திக் கவர்ந்துகொள்கின்ற சத்துருவின்
स्थिरं	ஸ்திரம்	உறுதியாகிய ஆற்றலைக்
अवतनुहि	அவதநுஹி	குறைப்பாயாக.
यः	யः	யாதொரு சத்துரு,
अस्मान्	அஸ்மாந்	எங்களைக்
अभिदासति	அபிதாஸதி	கொல்லுகின்றனனோ,

* यो अस्मां आदिदशति, என்பது இருக்கு.

तं ईम्	தம் ஈம்	அத்தகைய இச் சத்துருவை,
अवस्पदं कृधि	அவஸ்பதம் க்ருதி	தனது காலின்கீழ் மிதித்து வைத்துக்கொள்வாயாக.
देवी जनित्री	தெவீ ஜநித்ரீ	'அதிதி' தேவியாகிய அன்னையார்
अजीजनत्	அஜீஜநத்	உன்னைப் பெற்றனர், இதனால்
भद्रा जनित्री	ஹத்ரா ஜநித்ரீ	அவ் வம்மையார் சிறந்தவர்
अजीजनत्	அஜீஜநத்	ஆயினர்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

(இந்திர! நீ) துன்புறுத்துபவனும், கவர்ந்துகொள்பவனுமாகிய சத்துருவினுடைய பேராற்றலைக் குறைத்துவிடுவாயாக. யாதொரு சத்துரு எங்களைக்கொல்ல எண்ணுகின்றனனோ, அவனை, தனது காலின்கீழ் மிதித்து வைத்துக்கொள்வாயாக என்பதாம். மற்றது முன்போன்றது. (3)

ஐந்தாவது கண்டம்

முற்றும்.

ஆறுவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—4. அத்தியாயம்—7. கண்டம்—6.

பதிநான்கு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१२ ३१ ३३२ ३२३ १२
1093. परि स्वानो गिरिष्टाः पवित्रे सोमो अक्षरत् ।
१२ ३१२
मदेषु सर्वधा असि ॥ १ ॥

வரி ஸ்வாநொ கிரிஷ்டாஃ பவித்ரெ ஸொமொ அக்ஷரத் ।
மதெஷு ஸர்வதா அஸி ॥

அந்வயம்.

गिरिष्ठाः, स्वानः सोमः, पवित्रे, परि अक्षरत्, (हे सोम!,) मदेषु, सर्वधा असि ॥

பதவுரை.

गिरिष्ठाः	ஜிரிஷ்டாஃ	கல்லுக்கிடையி லிருந்துகொண்டு
स्वानः सोमः	ஸ்வாநஃ ஸொமஃ	ஒலிக்கின்ற சோமம்,
पवित्रे	பவித்ரே	தசாபவித்திரமென்னும் ஆடையில்
परि अक्षरत्	பரி அக்ஷரத்	நாற்புறங்களிலுமிருந்து ஒழுகுகின்றது.
(हे सोम!)	(ஹே ஸொம!)	(சோமமே! நீ,)
मदेषु	மதேஷு	களிப்பைக் கொண்ட அருந்துவோர்களிடத்து
सर्वधा असि	ஸர்வதா அஸி	எல்லா வகையானு மிருக்கின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட முதற் சூக்தத்தில்—1. அசிதர், அல்லது, தேவலர் ரிஷி.

இச்சோமம், தசாபவித்திரமென்னும் ஆடையின் நாற்புறத்திலு மிருந்து ஒழுகுகின்றது. எவ்வாறிருந்தெனின்? பிழிதற்குரிய கற்களின் இடையிலிருந்து சத்தமிட்டுக் கொண்டென்க. சோமமே! அத்தன்மைய நீ, நின்னை அருந்திக் களிப்பைக் கொண்டவர்களிடத்து, அனேத்தையுந் தாங்குபவனும், கொடுப்பவனுமா யிருக்கின்றாய் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

२उ ३ २ ३२उ ३ १ २ १ २२

1094. त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु प्र जातमन्धसः ।

१२ ३ १ २

मदेषु सर्वधा असि ॥ २ ॥

த்வம் விப்ரஸ்த்வம் கவிர்மது ப்ர ஜாதமந்தஸஃ ।

மதேஷு ஸர்வதா அஸி ॥

அந்வயம்.

(हे सोम !,) त्वं विप्रः, त्वं कविः, अन्धसः, जातं, मधु, प्र, मदेषु, सर्वधा असि ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹெ ஸொமஃ !)	(சோமமே !)
त्वं विप्रः	த்வம் விப்ரஃ	நீ, திருப்தியை யுண்டாக்குகின்றவன்
त्वं कविः	த்வம் கவிஃ	நீ நுண்ணறிவுடையவன்
अन्धसः	அந்ஸஃ	அன்னத்திலிருந்து
जातं	ஜாதம்	உண்டாகிய
मधु	மது	மதுர ரசத்தைக்
प्र	ப்ர	கொடுக்கின்றாய்.
मदेषु	மதேஷு	களிப்புற்று அருந்துவோரிடத்து
सर्वधा असि	ஸர்வதா அஸி	எல்லாவகையானுமிருக்கின்றனை.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

சோமமே ! நீ, திருப்தி யுண்டாக்குவோன். அல்லது, விப்பிரனைப் போன்றவன். கூரிய வுணர்வுடையவன். இதனால் நீ, அன்னத்திலிருந் துண்டாகின்ற மதுர ரசத்தைக் கொடுக்கின்றவனாகின்றாய். களிப்புற்று அருந்துவோரிடத்தில் எல்லாவகையானும் இருக்கின்றாய் என்பதாம். ஈண்டுக் கொடுக்கின்றாய் என்பது எஞ்சிநின்றது. (2)

மந்திரம் 3.

१ २२ ३ १२ ३ १२ ३ १ २
1095. त्वे विश्वे सजोषसो देवासः पीतिमाशत ।
१२ ३ १ २
मदेषु सर्वधा असि ॥ ३–१७ ॥

இருக்கு 9-18-1-3.

த்வே விஶ்வே ஸஜோஷஸோ தேவாஸஃ பீதிமாஶத ।
மதேஷு ஸர்வதா அஸி ॥

அந்வயம்.

(हे सोम !,) विश्वे देवासः, सजोषसः, त्वे पीतिं, आशत, मदेषु, सर्वधा असि ॥

பதவுரை.

(हे सोम!)	(ஹெ ஸொம!)	(சோமமே!)
विश्वे देवासः	விஸ்வெ தெவாஸஃ	தேவர்களனைவரும்
सजोषसः	ஸஜோஷஸஃ	முழுதும் பிரியமுடையராய்,
त्वे पीतिं	த்வெ பீதிம்	உன்னை யருந்துவதற்கு
आशत	ஆஶத	வந்து சேர்ந்தனர். நீ,
मदेषु	மதெஷு	அருந்திக் களிப்புற்றிருக்கிடத்து
सर्वधा असि	ஸர்வதா அஸி	எல்லாவகையானும் இருக்கின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

சோமமே! உன்னை யருந்துவதை முன்னிட்டுத் தேவர்களனைவரும் ஒத்த பிரியமுடையவர்களாய் வந்தடைந்தனர் என்பதாம். மற்றது முன்னின்றது. (3)

மந்திரம் 4.

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र

1096. स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इडानाम् ।

२ ३ १ २ ३ २

सोमो यः सुक्षितीनाम् ॥ १ ॥

ஸ ஸுன்வெ யொ வஸூநாம் யொ ராயாமானெதா ய இடாநாம் ।

ஸொமொ யஃ ஸுக்ஷிதீநாம் ॥

அன்வயம்.

यः सोमः, वसूनां, आनेता, यः रायां, यः इडानां, यः सुक्षितीनां, सः सुन्वे ॥

பதவுரை.

यः सोमः	யஃ ஸொமஃ	யாதொரு சோமம்,
वसूनां	வஸூநாம்	தனத்தைக்
आनेता	ஆநெதா	கொண்டுவருகின்றதோ,
यः रायां	யஃ ராயாம்	யாதொரு சோமம் பாற்பசுவைக் கொண்டு வருகின்றதோ,
यः इडानां	யஃ இடாநாம்	யாதொரு சோமம் அன்னத்தைக் கொண்டுவருகின்றதோ,

यः सुक्षितीनां	यः सु॒क्षि॒ती॒நாம்	யாதொரு சோமம் புத்திரன், முதலியோர்கட்குரிய இடத்தைக் கொடுக்கின்றதோ,
सः सुन्वे	सः सु॒न्वे	அச்சோமம், வேட்போர்கள் வாயிலாகப் பிழியப்பட்டது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—பெருங்கிதத்தின் இரண்டாவது சூக்தத்தில்—1.

யாதொரு சோமம், தனங்களைக் கொண்டுவருகின்றதும், பாற்பசுவைக் கொண்டுவருகின்றதும், நல்ல மனிதர்கள் வாழுகின்ற வீட்டைக்கொடுப்பதுமாயிருக்கின்றதோ, அச் சோமம் வேட்போர்களாற் பிழியப்பெற்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

१ २ ३ २ ३ २ ३१ २ ३२३ १ २ ३२३ १२

1097. यस्य त इन्द्रः पिबाद्यस्य मरुतो यस्य वार्यमणा भगः ।

१ २र ३ १ २र ३ १ २३ २ ३१२ ३२

आ येन मित्रावरुणा करामह एन्द्रमवसे महे ॥ २–१८ ॥

இருக்கு 9-108-13-14.

यस्य त इन्द्रः पिबाद्यस्य मरुतो यस्य वार्यमणा भगः ।
आ येन मित्रावरुणा करामह एन्द्रमवसे महे ॥

அந்வயம்.

(हे सोम!,) यस्य ते, इन्द्रः पिबात्, यस्य मरुतः, वा, अर्यमणा, भगः, यस्य, येन, महे अवसे, मित्रावरुणा आ, इन्द्रं आ ॥

பதவுரை.

(हे सोम!)	(ஹே ஸோம!)	(சோமமே!)
यस्य ते	யஸ்ய தே	உன்னுடைய எத்தன்மைய இரசத்தை
इन्द्रः पिबात्	இந்த்ரः பிபாத்	இந்திரன் அருந்துகின்றனோ,
यस्य मरुतः	யஸ்ய மருதः	எதை, மருத்துக்கள் அருந்துகின்றார்களோ,
वा	வா	மற்றும்,
अर्यमणा	அர்யமணா	அரியமா தேவதையுடன்
भगः	பகः	பக, என்னுந் தேவதையும்

यस्य	யஸ்ய	எதை அருந்துகின்றனவோ,
येन	யேந	எச் சோமவாயிலாக
महे अवसे	மஹே அவஸே	பெரும் பாதுகாப்பின் பொருட்டு
मित्रावरुणा आ	மித்ராவருணா ஆ	மித்திர வருணர்கள் நோக்குடையாராகின்றனரோ,
इन्द्रं आ	இந்த்ரம் ஆ	(எது) இந்திரனை நோக்கமுடையோனுய்ச் செய்கின்றதோ, (அச் சோமத்தைப் பிழிகின்றோம்)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

சோமமே! பிரசித்தியாகிய எத்தகைய உன்னை (இரசத்தை) இந்திரன் அருந்துகின்றனை, எதை மருத்துக்கள் அருந்துகின்றார்களோ, அரியமா என்னுந் தேவதையுடன் 'பக' தேவதையும் எதை யருந்துகின்றதோ, எச் சோமத்தால் நாங்கள் மித்திர வருணர்களை எமது நோக்குடையவர்களாகச் செய்கின்றோமோ, அத்தன்மைய உன்னைப் பிழிகின்றோம் என்பது பொருள். (2)

மந்திரம் 6.

१ २ ३ १ २ ३ २३ १ २
1098. **तं वः सखायो मदाय पुनानमभिगायत ।**
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
शिशुं न हव्यैः स्वदयन्त गूर्त्तिभिः ॥ १ ॥

தம் வः ஸகாயோ மதாய புநாநமபிகாயத ।
ஶிஶும் ந ஹவ்யைः ஸ்வதயந்த கூர்த்திபிः ॥

அன்வயம்.

सखायः !, वः, मदाय, तं पुनानं, अभिगायत, शिशुं न, हव्यैः, गूर्त्तिभिः, स्वदयन्त ॥

பதவுரை.

सखायः !	ஸகாயः !	மித்திரர்களான வேட்போர்களே !
वः	வः	நீங்கள்,
मदाय	மதாய	தேவர்களுடைய களிப்பின் பொருட்டு,

तं पुनानं	தம் வுநாநம்	புநிதமாகிய அச்சோமத்தை
अभिगायत	அபிகாயத	இனிது துதிப்பீர்களாக.
शिशुं न	ஶிஶும் ந	அலங்காரத்தாலும், பால் முதலியவற்றை அருந்துவதாலும், குழந்தை இன்புறுவதுபோல் (சோமத்தை)
हव्यैः	ஹவ்யைஃ	அவிகளாலும்
गूर्त्तिभिः	கூர்த்திபிஃ	துதிகளாலும்
स्वदयन्त	ஸ்வதயந்த	களிப்புடையதாகச் செய்வீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட மூன்றாஞ் சூக்தத்தில்—1.

நண்பர்களான வேட்போர்களே! நீங்கள், தேவர்கட்குக் களிப்புண்டாமாறு புநிதமாகிய சோமத்தை நன்கு துதிப்பீர்களாக. அலங்காரங்களாலும், பால் அருந்துதல் முதலியவைகளாலுங் குழந்தையைக் களிப்பிக்குமாறு, அத்தன்மைய இச் சோமத்தை, இன்புறச் செய்வீர்களாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 7.

२ ३ १ २ ३२ ३ १ २ ३ १ २
1099. सं वत्स इव मातृभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते ।
३ १ २र ३ २ ३ १२
देवावीर्मदो मतिभिः परिष्कृतः ॥ २ ॥

ஸம் வத்ஸ இவ மாத்ருபிரிந்துர்ஹிந்வாநோ அஜ்யதே ।
தெவாவீர்மதோ மதிபிஃ பரிஷ்க்ருதஃ ॥

அந்வயம்.

देवावीः, मदः, मतिभिः, परिष्कृतः, हिन्वानः, इन्दुः, समज्यते, मातृभिः, वत्सः इव ॥

பதவுரை.

देवावीः	தெவாவீஃ	தேவர்களைப் பாதுகாப்பதும்,
मदः	மதஃ	களிப்பைக் கொடுப்பதும்,
मतिभिः	மதிபிஃ	துதிகளால்,
परिष्कृतः	பரிஷ்க்ருதஃ	அலங்கரிக்கப்பெற்றதும்,
हिन्वानः	ஹிந்வாநஃ	செலுத்தப்பட்டதுமாகிய

इन्दुः	ஊந்தூ:	சோமம்,
समज्यते	ஸமஜ்யதெ	நீரால் நன்கு தெளிக்கப்படுகின்றது.
मातृभिः	மாதூபி:	பசுக்களால்,
वत्सः इव	வத்ஸ: இவ	அன்புடன் பால் வார்க்கப்படுகின்ற கன்றைப்போன்று.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

ஏவுகின்ற சோமம், 'வசதீவரி' என்னும் ஆற்று நீரால் நன்கு தெளிக்கப்பெற்றதாகின்றது. அதிலுவமை:—மாதாவாகிய பசுக்களால் பால் கொண்டு ஊட்டுவிக்கப்படும் கன்று போன்றெனல். எத்தன்மைய சோமமெனின்? தேவர்களைப் பாதுகாப்பதும், களிப்பை யுண்டாக்குவதும், தோத்திரங்களால் அழகுற்றதுமாம் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 8.

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३१२
1100. अयं दक्षाय साधनोयꣳ शर्धाय वीतये ।
३ १ ३२ ३ १ २ ३ २
अयं देवेभ्यो *मधुमत्तरः सुतः ॥ ३–१९ ॥

இருக்கு 9-105-1-3.

அயம் தக்ஷாய ஸாதநொயம் ஶர்தாய வீதயெ ।
அயம் தெவெஹ்யொ மதுமத்தரஃ ஸுதஃ ॥

அந்வயம்.

अयं, दक्षाय, साधनः, अयं, शर्धाय, वीतये, अयं सुतः, देवेभ्यः, मधुमत्तरः ॥

பதவுரை.

अयं	அயம்	இச் சோமம்,
दक्षाय	தக்ஷாய	ஆற்றலை வளர்ப்பதற்குச்
साधनः	ஸாதநஃ	சாதனமாயிருக்கின்றது.
अयं	அயம்	(மற்றும்) இச் சோமம்
शर्धाय	ஶர்தாய	ஆற்றலின் பொருட்டும்
वीतये	வீதயெ	தேவதைகள் உண்ணுதற் பொருட்டுமாகின்றது.

* मधुमत्तमः सुखः, என்பது இருக்கு.

अयं सुतः	அயம் ஸுதஃ	(மற்றும்) இச்சோமம் பிழியப் பட்டதாய்த்
देवेभ्यः	தெவெஹ்யஃ	தேவர்களின் பொருட்டு
मधुमत्तरः	மது மத்தரஃ	மிகுந்த இன்சுவையுடையதாகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

இச்சோமம், ஆற்றலின் பொருட்டு, அல்லது, வளர்தலின் பொருட்டுச் சாதனமாகின்றது. பிழியப்பெற்ற இச் சோமம், இந்திரன் முதலிய தேவர்கட்குச் சிறந்த இன்சுவையுடையதாகின்றது. அல்லது, மிகுந்த களிப்பைக் கொடுப்பதாகின்றது என்பதாம். (3)

மந்திரம் 9.

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
1101. सोमाः पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ क २ र ३ १ २
*मित्राः स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः ॥ १ ॥

ஸொமாஃ பவந்த இந்தவொ஽ஸ்மப்யம் காதுவித்தமாஃ ।
மித்ராஃ ஸ்வாநா அரெபஸஃ ஸ்வாத்யஃ ஸ்வர்விதஃ ॥

அந்வயம்.

मित्राः, स्वानाः, अरेपसः, स्वाध्यः, स्वर्विदः, गातुवित्तमाः, इन्दवः, सोमाः, अस्मभ्यं, पवन्ते ॥

பதவுரை.

मित्राः	மித்ராஃ	தேவர்களுக்கு நட்புடையதும்
स्वानाः	ஸ்வாநாஃ	சமஸ்காரஞ் செய்யப்பட்டதும்
अरेपसः	அரெபஸஃ	பாவமற்றதும்,
स्वाध्यः	ஸ்வாத்யஃ	அழகாய்த் தியானம் பண்ணுவதும்,
स्वर्विदः	ஸ்வர்விதஃ	முற்று முணர்வதும். அல்லது, சுவர்க்கத்தைக் கொடுக்கின்ற வழியை யறிவிப்பதும்,

* मित्रा सुवाना, என்பது இருக்கு.

गातुवित्तमाः	ஹாதுவித்தமாஃ	மிகச்சிறந்த வழியை யடைவிப்பதும்
इन्दवः	இந்தவஃ	விளங்குகின்றதுமாகிய
सोमाः	ஸொமாஃ	சோமம்,
अस्मभ्यं	அஸ்மப்⁻யம்	எம்பொருட்டுக்
पवन्ते	பவந்தெ	கலசத்தை யடைகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட நான்காஞ் சூக்தத்தில்—1.

சிறந்த நல்வழியை யடைவிப்பதும், பிரகாசமுடையதுமாகிய சோமம், எங்கள் நிமித்தம் ஒழுகுகின்றது. அல்லது, கலசத்திற்கு வருகின்றது. எத்தன்மைய சோமமெனின்? தேவர்களுக்கு நட்பானதும், பிழியப்பட்டதும், பாவமற்றதுமாமென்க. இதுபற்றியே அழகாய்த் தியானிப்பதும், முற்று முணர்வதும், அல்லது, சுவர்க்கத்தை யடைவிப்பதுமாம் என்பதாம்.

மந்திரம் 10.

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

1102. *ते पूतासो विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३२

सूरासो न दर्शतासो जिगत्नवो ध्रुवा घृते ॥ २ ॥

தெ வ⁻ஹ்தாவொ விவஶ்சிதஃ ஸொமாஸொ த³த்⁻யாஶிரஃ ।
ஸூராஸொ ந த³ர்ஶதாஸொ ஜிக³த்நவொ த்⁻ருவா க்⁻ருʼதெ ॥

அந்வயம்.

पूतासः, विपश्चितः, दध्याशिरः, घृते जिगत्नवः, ध्रुवाः, ते सोमासः, सूरासः न, दर्शतासः ॥

பதவுரை.

पूतासः	வ⁻ஹ்தாஸஃ	புனிதமானதும்,
विपश्चितः	விவஶ்சிதஃ	அறிவை வளர்ப்பதும்,
दध्याशिरः	த³த்⁻யாஶிரஃ	தயிருடன் கலந்ததும்,
घृते जिगत्नवः	க்⁻ருʼதெ ஜிக³த்நவஃ	ஆற்று நீரிற் செல்வதும்,
ध्रुवाः	த்⁻ருவாஃ	பாத்திரத்தில் நிலைத்திருப்பதுமாகிய

* एते पूता, என்பது இருக்கு.

ते सोमासः	தெ ஸொமாஸஃ	அச் சோமம்,
सूरासः न	ஸூராஸஃ ந	சூரியன் போன்று
दर्शतासः	த³ர்ஶதாஸஃ	பாத்திரத்தில் தரிசித்தற்குரியதாம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

பரிசுத்தஞ் செய்யப்பட்டதும், நுண்ணறிவுடையதும், தயிரிற் கலக்கப்பட்டதும், நீருடன் செல்வதும், பாத்திரத்தில் நிலைத்திருப்பதுமாகிய சோமம், சூரியன் போன்று, பாத்திரங்களில் அனைவராலுங் காணத்தக்கதாகின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 11.

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
1103. सुष्वाणासो व्यद्रिभिश्चिताना गोरधि त्वचि ।
१२३ १ २३ २ ३ १२ ३ १ २
इषमस्मभ्यमभितः समस्वरन्वसुविदः ॥ ३–२० ॥

இருக்கு 1-101-10-12-11.

ஸுஷ்வாணாஸோ வ்யத்³ரிபி⁴ஶ்சிதா நா கோ³ரதி⁴ த்வசி ।
இஷமஸ்மப்⁴யமபி⁴தஃ ஸமஸ்வரன்வஸுவிதஃ ॥

அன்வயம்.

गोः, अधि त्वचि, चिताना:, वि अद्रिभिः, सुष्वाणासः, वसुविदः, अस्मभ्यं, अभितः, इषं, समस्वरन् ॥

பதவுரை.

गोः	கோ³ஃ	பசுவினுடைய
अधि त्वचि	அதி⁴ த்வசி	தோலின்கண்
चिताना:	சி தா நாஃ	விளங்குகின்ற
वि अद्रिभिः	வி அத்³ரிபி⁴ஃ	பலமிதமான கற்களினால்
सुष्वाणासः	ஸுஷ்வாணாஸஃ	இடித்துப் பிழியப்பட்டதும்,
वसुविदः	வஸுவிதஃ	தனங் கொடுக்கின்றதுமாகிய இச் சோமம்,
अस्मभ्यं	அஸ்மப்⁴யம்	எங்கட்குப்

अभितः	ஸுஹிதः	பலவகையாகிய
इषं	ஊஷம்	அன்னத்தை
समस्वरन्	வஸுஷ்டுபு	நன்கு கொடுக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

இடபத்தின் தோலில் பலவகையாய் விளங்குகின்ற பிழிதற்குரிய கற்களால், இடித்துப் பிழிந்துள்ளதும், தனங்கொடுப்பதுமாகிய இச்சோமம் எங்கட்கு அன்னத்தை அதிகம் வகையாய்க் கொடுக்கின்றது என்பதாம். (3)

மந்திரம் 12.

३ २ ३ १ २३ १ २र ३ २ २ ३ १२३
1104. अया पवा पवस्वैना वसूनि मांश्चत्व इन्दो सरसि प्रधन्व ।
१२३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २३ १ २ ३ १ २३ १२
ब्रध्नश्चित्रस्य वातो न जूतिं पुरुमेधाश्चित्तकवे नरं धात् ॥ १ ॥

ஸுயா வவா வவஸ்வைனா வஸூனி மாம்ஶ்சத்வ இந்தோ ஸரஸி ப்ரதன்வ ।
[ப்ரயந்வ ।
ப்ரத்நஶ்சித்ரஸ்ய வாதோ ந ஜூதிம் புருமேதாஶ்சித்தகவே நரம் தாத் ॥
[நரம் யாத் ॥

அன்வயம்.

हे सोम !, अया पवा, एना वसूनि, पवस्व, इन्दो !, मांश्चत्वे सरसि, प्रधन्व, यस्य, ब्रध्नश्चित्, वातः न, जूतिं, पुरुमेधाश्चित्, तकवे (मह्यं,) नरं धात् ॥

பதவுரை.

हे सोम !	ஹே ஸோம !	சோமமே !
अया पवा	ஸுயா வவா	புகிதப்படுத்துகின்ற இத்தாரையால்
एना वसूनि	வனா வஸூனி	இத் தனங்களைப்
पवस्व	வவஸ்வ	பொழிவாயாக.
इन्दो !	இந்தோ !	சோமமே !
मांश्चत्वे सरसि	மாம்ஶ்சத்வெ ஸரஸி	புகழைக் கொடுக்கின்ற ஆற்று நீரிற்
प्रधन्व	ப்ரயந்வ	சேர்வாயாக.
यस्य	யஸ்ய	எதனைச் சோதித்தவிடத்து

अश्वित्	ஆஶ்வின்	அனைத்திற்கும் மூலமாகிய இரவியும்
वातः न	வாதः ந	வாயுவைப்போல்
जूतिं	ஜூதிம்	வேகத்தை யுடைத்தோ,
पुरुमेधाश्वित्	புரூமேதாஶ்வின்	பேரறிவையுடைய இந்திரனும்
तकवे (मह्य)	தகவே (மஹ்யம்)	சோமத்தை யடைகின்ற என் பொருட்டு
नरं धात्	நரம் தாக்	வேள்வி முதலிய கருமங்களைச் செய்யத்தக்க புதல்வனைக் கொடுக்கின்றனை, (அத்தன்மைய நீ சேர்வாயாக என முடிக்க.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட ஐந்தாவது சூக்தத்தில்—1. குத்சர் ரிஷி.

சோமமே! நீ, புதிதாகிய இத் தாரையால் இத் தனங்களைப் பொழிவாயாக. அவ்வாறே, சோமமே! நீ, கீர்த்தியையுடைய 'வசதிவரி' என்னும் நீரிற் போய்ச் சேர்வாயாக. எச் சோமத்தைச் சோதிக்கும்போது அனைத்தையு முணர்த்துகின்ற, அல்லது, அனைத்திற்கு மூலவடிவனுகிய சூரியனும் வாயுவைப்போல் வேகத்தை யடைந்தனனே, மற்றும், சிறந்த அறிவுடைய இந்திரனும் சோமத்தை யடைகின்ற எமக்கு, கருமங்களைச் செய்கின்ற புதல்வனைக் கொடுக்கின்றனனே, அத்தகைய நீ சேர்வாயாக என முன் கூட்டுக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 13.

१२ २ ३१ २ ३ १ २३ १२ ३ २ ३१ २ ३२
1105. उत न एना पवया पवस्वाधिश्रुते श्रावय्यस्य तीर्थे ।
३२ ३१ २ ३२ २र ३२उ ३१ २ ३१ २
षष्टिं सहस्रा नैगुतो वसूनि वृक्षं न पक्वं धूनवद्रणाय ॥ २ ॥

உத ந ஏனா பவயா பவஸ்வாதிஶ்ருதே ஶ்ராவய்யஸ்ய தீர்தே ।
ஷஷ்டிம் ஸஹஸ்ரா நைகுதோ வஸூநி வ்ருக்ஷம் ந பக்வம்
[தூநவத்ரணாய ॥

அன்வயம்.

(हे सोम !,) उत, श्रावय्यस्य तीर्थे, नः श्रुते, एना पवया, अधि पवस्व, नैगुतः, षष्टिं सहस्रा, वसूनि, रणाय, वृक्षं पक्वं न, धूनवत् ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹே ஸோம !)	சோமமே !
उत	உத	மற்றும்,
श्रावय्यस्य तीर्थे	ஸ்ராவய்யஸ்ய தீர்த்தே	அனைவருங் கேட்கத்தக்க நினது இடமாகிய
नः श्रुते	நஃ ஸ்ருதே	கீர்த்தியுள்ள என்னுடைய வேள்வியின்கண்,
एना पवया	ஏனா பவயா	புதிதமாகிய இத்தாரையால்
अधि पवस्व	அதி பவஸ்வ	ஒழுகுவாயாக.
नैगुतः	நைகுதஃ	பகைவரைக்கெடுக்கின்ற சோமம்
षष्टिं सहस्रा	ஷஷ்டிம் ஸஹஸ்ரா	அறுபதினாயிரம்
वसूनि	வஸூனி	பொன்களை,
रणाय	ரணாய	உபுத்தத்தின் பொருட்டு
वृक्षं पक्वं न	வ்ருக்ஷம் பக்வம் ந	பழுத்த கனிகளையுடைய மரத்தைப்போல்
धूनवत्	தூனவத்	எங்கட்குத் தனத்தைக் கொடுக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

சோமமே ! நீ, மற்றும், அநேகர்களாற் கேட்கத்தக்க கீர்த்திவாய்ந்த, அல்லது, எங்களுடைய தனவடிவமாகிய வேள்வியின்கண், புதிதமாகிய இத்தாரையால் நன்கு ஒழுகுவாயாக. சத்துருக்களைக் கொல்கின்ற இச் சோமம், சத்துருக்களை வெல்லுதற் பொருட்டு அறுபதினாயிரம் பொன்களைக் கொடுக்கின்றது. எதைப்போலெனின் ? பழுத்த கனியுடைய மரம் கனியை விரும்புவோர்க்குக் கொடுப்பதுபோல் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 14.

२ ३१ २ ३ २३ १ २ ३१ २२ ३ १२ ३ १२

1106. महीमे अस्य वृषनाम शूषे मार्ष्टिश्वत्वे वा पृशने वा वधत्रे ।

१ २ ३ १२ ३२३ २३२ ३ २ ३ १ २ ३ २

अस्वापयन्निगुतः स्नेहयच्चापामित्राꣳ अपाचितो अचेतः ॥ ३-२१ ॥

இருக்கு 9-97-52-54.

உஹீஉ ஸஸ்ய வ்ருஷநாஉ ஶூஷெ ஊம்ஶ்ஶக்வெ வா வ்ருஶநெ வா [வதத்ரெ ।
ஸஸ்வாபயந்நிகுதஃ ஸ்நெஹயச்சாபாஉத்ராம் ஸபாசிதொ ஸசெதஃ ॥

அந்வயம்.

मही, वृषनाम, इमे अस्य शूषे, मांश्चत्वे, वा, पृशने, वा, वधत्रे, निगुतः, अस्वापयन्, स्नेहयत्, (हे सोम !,) अमित्रान्, अप अचेतः, अपाचितः, (इतः) ॥

பதவுரை.

मही	உஹீ	அளவற்ற
वृषनाम	வ்ருஷநாஉ	பாணங்களைப் பொழிதல், சத்துருக்களை வணங்கவைத்தல்
इमे अस्य शूषे	ஊஉ ஸஸ்ய ஶூஷெ	என்னும், இவ்விரண்டு செய்கைகளும் இச் சோமத்திற்குச் சுகங்கொடுப்பனவாம்.
मांश्चत्वे	ஊம்ஶ்ஶக்வெ	குதிரைப் போரிலும்
वा	வா	அல்லது,
पृशने	வ்ருஶநெ	தோட்சண்டையிலும்,
वा	வா	அல்லது,
वधत्रे	வதத்ரெ	சத்துருவைக் கொல்கின்ற உயுத்தத்திலும்,
निगुतः	நிகுதஃ	இச் சோமம் சத்துருக்களைக்
अस्वापयन्	ஸஸ்வாபயந்	கொல்கின்றது.
स्नेहयत्	ஸ்நெஹயச்	ஓடச் செய்கின்றது.
(हे सोम !)	(ஹெ ஸொஉ !)	(சோமமே ! நீ)
अमित्रान्	ஸமித்ராந்	சத்துருக்களை
अप अचेतः	ஸப ஸசெதஃ	ஓட்டுவாயாக.
अपाचितः	ஸபாசிதஃ	தீ, யோம்பாதவர்களை
(इतः)	(உதஃ)	(என்னிடத்திலிருந்து நீக்குவாயாக.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

பாணங்களை மிகப் பொழியுமிடத்தும், சத்துருக்களைப் பணியச்செய்யுமிடத்தும், இச் சோமஞ் சுகங் கொடுப்பதாகின்றது. குதிரைகளைக் கொண்டு செய்கின்ற போரிலும், அல்லது, தோள்களாற் செய்யப்படுகின்ற சண்டையிலும், அல்லது, சத்துருக்களைக் கொல்லுகின்ற உயுத்தத்திலும் சுகங்கொடுப்பதாகின்றது எனக் கூட்டுக. மற்றும், சத்துருக்களைக் கொல்

கின்றது. சத்துருக்களை உயுத்தத்தினின்றும் வெளியே ஓட்டுகின்றது. இனிப்பிரத்தியட்சம், சோமமே! நீ, சத்துருவைத் துரத்திவிடுவாயாக. தீ வேட்காதவர்களையும் (அக்கினிசயனம் செய்யாதவர்களையும் நாத்திகர்களையும்,) என்னிடத்திலிருந்து விலக்கிவிடுவாயாக என்பதாம். (3)

குறிப்பு.—மூலத்தில் "மாம்சத்வே" என்பது குதிரை. அவ்வாறே நிகண்டுங் கூறுகின்றது.

ஆறாவது கண்டம்

முற்றும்.

ஏழாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—4. அத்தியாயம்—7. கண்டம்—7.

ஏழு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ १ ३क २र
1107. अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः ॥ १ ॥

அக்ஷ்ந க்வம் நொ அந்தம உத த்ராதா ஶிவொ ஭ுவொ வரூத்யஃ ॥

அந்வயம்.

अग्ने !, वरूथ्यः, त्वं, नः अन्तमः, उत, त्राता, शिवः, भुवः ॥

பதவுரை.

अग्ने !	அக்ஷ்ந !	அக்கினியே !
वरूथ्यः	வரூத்யஃ	போற்றத்தக்க
त्वं	க்வம்	நீ,
नः अन्तमः	நஃ அந்தமஃ	எங்கட்கு அருகிலிருப்பாயாக.
उत	உத	மற்றும்,
त्राता	த்ராதா	பாதுகாப்பவனும்
शिवः	ஶிவஃ	மங்களஞ் செய்பவனும்,
भुवः	஭ுவஃ	ஆவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1. பங்து ரிஷி.

அக்கினியே! போற்றத்தக்க, அல்லது, பரிதிகளாற் சூழப்பெற்ற நீ, எங்களுக்கருகில் இருப்பாயாக. மற்றும், பாதுகாப்பவனும், சுகந் தருபவனும் ஆவாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१२३ १ २२३ १ २ ३१२ ३ १ २

1108. वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमो रयिं दाः ॥ २ ॥

வஸுரக்³நிர்வஸுஶ்ரவா அச்ச²ா நக்ஷி த்³யு²த்தமோ ரயிம் தா³꞉ ॥

அன்வயம்.

वसुः, वसुश्रवाः, अग्निः, अच्छ नक्षि, द्युमत्तमः, रयिं दाः ॥

பதவுரை.

वसुः	வஸு꞉	வியாபகமும்
वसुश्रवाः	வஸுஶ்ரவா꞉	நிறைந்த அன்னமுடையதும்,
अग्निः	அக்³நி꞉	அனைத்தினும் முன்னிற்கின்றது மாகிய அக்கினி யென்னும் நீ,
अच्छ नक्षि	அச்ச² நக்ஷி	எம்மை நோக்கி விரிவாயாக.
द्युमत्तमः	த்³யு²த்தம꞉	மிகப் பிரகாசிக்கின்ற
रयिं दाः	ரயிம் தா³꞉	தனத்தைக் கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—2.

வியாபகமாகியதும், அனைத்தினும் முதன்மையானதும், நிறைந்த அன்னமுடையதுமாகிய அக்கினியே! நீ, எங்களைச் சூழ்ந்துக்கொள்வாயாக. பேரொளியையுடைய நீ, பசு முதலிய சம்பத்தையும் எங்கட்குக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

१ २ ३ १ २ ३१२ ३ १ २

1109. तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः ॥ ३—२२ ॥

இருக்கு 5-24-1-2-4.

தம் க்வா ஶோசிஷ்ட தீதிவஃ ஸும்நாய நூநமீமஹெ ஸகிப்யஃ ॥

அந்வயம்.

शोचिष्ठ, दीदिवः, तं त्वा, सुम्नाय, सखिभ्यः, नूनं, ईमहे ॥

பதவுரை.

शोचिष्ठ	ஶோசிஷ்ட	மிகுந்த
दीदिवः	தீதிவஃ	காந்தியுள்ள அக்கினியே !
तं त्वा	தம் க்வா	அத்தன்மைய வுன்னை,
सुम्नाय	ஸும்நாய	சுகத்திற்கும்
सखिभ्यः	ஸகிப்யஃ	புத்திரன் மித்திரர் முதலியவர்களின் பொருட்டும்
नूनं	நூநம்	உறுதியாக
ईमहे	ஈமஹெ	வேண்டுகின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—3.

சிறந்த ஒளியுடையவனும், தனது கிரணங்களாற் பிரகாசிக்கின்றவனுமாகிய அக்கினிதேவனே ! அத்தன்மைய வுன்னை, சுகத்தின் பொருட்டும், ஒத்த நண்பர்களின் பொருட்டும், உறுதியாய் வேண்டுகின்றோம். (புத்திரன், சுகம், முதலியவைகள் வேண்டுமென நின்னை யிரக்கின்றோம் என்பது பொருள்.) (3)

"சும்நம்" என்னும் மூலத்திலுள்ள சொற்குச் 'சுகமென்பது பொருளென' நிகண்டுங் கூறுகின்றது.

மந்திரம் 4.

३ २उ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २ ३ २
1110. इमा नु कं भुवना सीषधेमेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ॥ १ ॥

இமா நு கம் ஹுவநா ஸீஷதெமெந்த்ரஶ்ச விஶ்வெ ச தெவாஃ ॥

அந்வயம்.

इमा भुवना, नु, कं, सीषधेम, इन्द्रः च, विश्वे देवाः च ॥

பதவுரை.

इमा भुवना	ஊமா ஹுவநா	(யாம்) இப்புவனங்களனைத்தையும்
नु	நு	விரைவில்
कं	கம்	சுகத்திற்குச்
सीषधेम	ஸீஷயெம	சாதனமாக்கி விடுவோமாக.
इन्द्रः च	இந்த்ரஃ அ	இந்திரனும்,
विश्वे देवाः च	விஶ்வெ தெவாஃ அ	விசுவதேவர்களும் இவ்விருப்பை முடித்துவைப்பார்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில்—1. ஆத்தர் ரிஷி.

காணப்படுகின்ற இப்புவனங்களை, விரைவில் வசப்படுத்துவோமாக. அல்லது, காணப்படுகின்ற இப்புவனங்களனைத்தும் எங்கட்குச் சுகத்தைச் சம்பாதிப்பனவாகுக. இந்திரனும், ஏனைய தேவர்களும் துதியால் இதை நிறைவேற்றுவார்களாக என்பதாம். (4)

மந்திரம் 5.

३ १ २ ३क२र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
1111. यज्ञं च नस्तन्वञ्च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः *सह सीषधातु ॥ २ ॥

யஜ்ஞம் ச நஸ்தந்வஞ்ச ப்ரஜாம் சாதித்யைரிந்த்ரஃ ஸஹ ஸீஷயாது ॥

அந்வயம்.

आदित्यैः सह, इन्द्रः, यज्ञं च, तन्वं च, प्रजां च, नः, सीषधातु ॥

பதவுரை.

आदित्यैः सह	ஆதித்யைஃ ஸஹ	அதிதியின் மைந்தர்களான ஏனைய தேவர்களுடன்
इन्द्रः	இந்த்ரஃ	இந்திரன்,
यज्ञं च	யஜ்ஞம் அ	வேள்வியையும்
तन्वं च	தந்வம் அ	தேகத்தையும்
प्रजां च	ப்ரஜாம் அ	புத்திரர்களையும்
नः	நஃ	எங்கட்கு
सीषधातु	ஸீஷயாது	நன்கு கொடுப்பானாக.

* सह चीक्लृपाति, என்பது இருக்கு.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—2.

சோதிட்டோம முதலிய எமது வேள்விகளேயும், உடம்பையும், புத்திரன் முதலியோர்களேயும், அதிதியின் புத்திரர்களான வீனய தேவர்களுடன் கூடியுள்ள இந்திரன், யாங்கள் நன்கடையுமாறு செய்வானுக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

३ २उ ३ १२ ३१२३ १ २ ३ १ २

1112. आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिर* स्मभ्यं भेषजा करत् ॥ ३–२३ ॥

இருக்கு 10-157-1-2-3.

ஆதித்தைரிந்த்ரஃ ஸகணோ மருத்பிரஸ்மப்⁴யம் பே⁴ஷஜா கரத் ॥

அன்வயம்.

आदित्यैः, मरुद्भिः, सगणः इन्द्रः, अस्मभ्यं, भेषजा, करत् ॥

பதவுரை.

आदित्यैः	ஆதித்தைஃ	அதிதியின் புத்திரர்களான மித்திரர்களுடனும்,
मरुद्भिः	மருத்பிஃ	மருத்துக்களுடனும்,
सगणः इन्द्रः	ஸகணஃ இந்த்ரஃ	கணங்களுடனுங்கூடிய இந்திரன்,
अस्मभ्यं	அஸ்மப்⁴யம்	எங்களுக்குக்
भेषजा	பே⁴ஷஜா	காரியத்தை முடித்துக்கொடுக்கின்ற மருந்தைச்
करत्	கரத்	செய்வானுக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—3.

அதிதியின் புத்திரர்களான மித்திரர்களுடனும், மருத்துக்களுடனும், கணங்களுடனுங்கூடிய இந்திரன், எங்கணிமித்தம் (வேண்டியவற்றைக் கூட்டி வைக்கும்) மருந்தைச் செய்வானுக என்பதாம். (3)

* अस्माकं भूत्ववितातनूना, என்பது இருக்கு.

மந்திரம் 7.

1113. प्र वोऽर्चोप ॥ २४ ॥

ஹ வொ2செ2ூவ ॥

அன்வயம்.

(हे ऋत्विजः !,) (यजमानाः !,) वः, उप, प्रार्चे ॥

பதவுரை.

(हे ऋत्विजः !)	(ஹெ ரிக்விஜஃ !)	(வேட்போர்காள் !)
(यजमानाः !)	(யஜமானாஃ !)	(வேள்வித்தலைவர்காள் !)
वः	வஃ	நீங்கள்,
उप	உப	அருகில் நின்றுக்கொண்டு
प्रार्चे	ப்ராசே	இந்திரனை நன்கு இறைஞ்சுவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—நான்கெழுத்து வடிவமாம். "பத்ரம் நோ அபி வாதய மநஃ, என்னுமிது ஒரேதலையாயிருப்பதைப் போன்றதாம்.

வேட்போர்களே! வேள்வித் தலைவர்களே! நீங்கள், அருகிலிருந்து கொண்டு இந்திரனை நன்கு போற்றுவீர்களாக என்பதாம்.

வித்தியாதீர்த்த மகேசுரர், வேதப்பொருளை விளக்குவதால்
உள்ளத்தின் இருளை யோதுக்கிப் புருடார்த்தங்கள்
நான்கையுங் கொடுப்பாராக.

ஏழாவது கண்டம்
முற்றும்.

சாமவேத சங்கிதை
உத்தரார்ச்சிகம் ஏழாவது அத்தியாயமும்
முற்றிற்று.

எட்டாவது அத்தியாயம்.

தேவதைகள் :—1, 2, 7, 9, 10, பவமானன் சோமன். 4, மித்திர வருணர்கள். 5, 8, 13, 14, இந்திரன். 6, இந்திராக்கினி. 12, அக்கினி.

சந்தங்கள் :—1, 3, திருஷ்டுப். 2, 4, 5, 6, 11, 12, காயத்திரி. 7, சகதி. 8, பிரகாதம். 9, உஷ்ணிக். 10, துவிபதா விராட். 13, ககுப், உஷ்ணிக். 14, அநுஷ்டுப்.

சுரம் :—1, 3, தைவதம். 2, 4, 5, 6, 12, ஷட்சம். 7, நிஷாதம். 10, மத்தியமம். 11, ரிஷபம். 12, காந்தாரம்.

முதலாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—4. பிற்பாதி. அத்தியாயம்—8. கண்டம்—1.

பன்னிரண்டு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१ २र३ १२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १२

1114. प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति ।

१ २३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३क२र३ १२

महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन् ॥ १ ॥

ப்ர காவ்யமுஶனேவ ப்ரூவாணோ தெவோ தெவானாம் ஜநிமா [விவக்தி ।

மஹிவ்ரதஃ ஶுசிபந்துஃ பாவகஃ பதா வராஹோ அப்யேதி ரேபந் [ரெபந் ॥

அன்வயம்.

उशना इव, काव्यं, ब्रुवाणः, देवः, देवानां, जनिमा, प्रविवक्ति, महिव्रतः, शुचिबन्धुः, पावकः, वराहः, रेभन्, पदा, अभ्येति ॥

பதவுரை.

उशना इव	உஶநா இவ	உசனஸ் ரிஷியைப்போல்
काव्यं	காவ்யம்	தோத்திரத்தைச்
ब्रुवाणः	ப்ரூவாணஃ	சொல்லிக்கொண்டு

देवः	தெவஃ	துதிப்போனவன்
देवानां	தெவானாம்	இந்திரன் முதலிய தேவர்களின்
जनिमा	ஜநிமா	தோற்றத்தை
प्रविवक्ति	ப்ரவிவக்தி	நன்கு சொல்கின்றான்.
महिव्रतः	மஹிவ்ரதஃ	பேராற்றலுள்ளதும்
शुचिबन्धुः	ஶுசிபந்துஃ	மிகுந்த வொளியுடையதும்
पावकः	பாவகஃ	பாவங்களைப் போக்குவதும்
वराहः	வராஹஃ	நல்ல நாளில் பிழியப்பெற்றது மாகிய சோமரசம்
रेभन्	ரெபந்	ஒலித்துக்கொண்டு
पदा	பதா	பாத்திரத்திற்
अभ्येति	அப்யெதி	செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—பன்னிரண்டாம் இருக்கில்—1.

'உசனு' என்னும் ரிஷியைப் போல், தோத்திரங்களைச் சொல்லிக் கொண்டு தோத்திரம் பண்ணுவோனவன் இந்திரன் முதலிய தேவர் களின் பிறப்புக்களை நன்கு புகழ்கின்றான். வலிய செய்கையை யுடையதும், பேராற்றலை, அல்லது, பெருங்கீர்த்தியை யுடையதும், மிகுந்த வொளி யுடையதும், பாவங்களைப் போக்குவதும், நல்ல தினத்திற் பிழியப்பட்டது மாகிய சோமரசம், சத்தமிட்டுக்கொண்டுப் பாத்திரங்களை யடைகின்றது. அல்லது, பன்றி, பூமியைக் கெல்லிக்கொண்டு ஒலிக்கின்றதுபோல் எனினு மாம் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

२ ३ २ ३१ २ ३२उ ३ २उ ३ १२

1115. प्र हंसास*स्तृपला वग्नुमच्छामादस्तं वृषगणा अयासुः ।

३ २ ३ १२ ३ १ २ ३१२ ३ १ २र ३२

†अङ्गोषिणं पवमानꣳ सखायो ‡दुर्मषं वाणं प्रवदन्ति साकम्॥२॥

ப்ர ஹꣳஸாஸஸ்த்ருபலா வக்நுமச்சாஅதஸ்தம் வ்ருஷகணா

[அயாஸுஃ ।

அங்கோஷிணம் பவமாநꣳ ஸகாயோ துர்மஷம் வாணம் ப்ரவதந்தி

[ஸாகம் ॥

---

* तृपलं मन्यु, †आंगूष्यं पवमान, ‡ दुर्मषं साकं प्रवदन्ति बाणं, என்பன இருக்கு.

அந்வயம்.

हंसासः, वृषगणाः, अमात्, वग्नुं अच्छ, तृपला, अस्तं, प्रायासुः, सखायः, अङ्गोषिणं, दुर्मर्षं, पवमानं, वाणं साकं, प्रवदन्ति ॥

பதவுரை.

हंसासः	ஹம்ஸாஸஃ	சத்துருக்களால் துன்புறுத்தப்பட்ட
वृषगणाः	வ்ருஷகணாஃ	'விருஷ கணர்' என்னும் இருடியானவர்
अमात्	அமாத்	பகைவர்களின் ஆற்றலினின்றும் பாதுகாக்கப்படுவாராக.
वग्नुं अच्छ	வக்நும் அச்ச	பிழிகின்ற சத்தத்தை நோக்கிக் கொண்டு
तृपला	த்ருபலா	விரைவாக
अस्तं	அஸ்தம்	வேள்விச் சாலையைச்
प्रायासुः	ப்ராயாஸுஃ	சேர்வாராக.
सखायः	ஸகாயஃ	நண்பராகிய துதிப்போர்கள்
अङ्गोषिणं	அங்கோஷிணம்	சத்துருக்கட்கு
दुर्मर्षं	துர்மர்ஷம்	ஆற்றமுடியாத
पवमानं	பவமானம்	சோமத்தைக் குறித்து
वाणं साकं	வாணம் ஸாகம்	வாத்தியத்தை
प्रवदन्ति	ப்ரவதந்தி	முழக்குகின்றனர்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

சத்துருக்களால் துன்புறுத்தப்பட்ட, அல்லது, அன்னத்தைப் போன்ற நடையுடைய 'விருஷ கணர்' என்னும் இருடியானவர், பகைவர்களுடைய ஆற்றலினின்றும் பாதுகாக்கப் பெற்றவராய், பிழிகின்ற சத்தத்தைக் குறியாகக்கொண்டு விரைவாக வேள்விச்சாலையை யடைவாராக. அதினின்று, துதித்தல் துதிக்கப்படுதல் என்னுஞ் சம்பந்தம் பற்றி, நண்பர்களான துதிப்போர்கள், சத்துருக்களாற் பொறுத்துக்கொள்ள முடியாத சோமத்தைக் குறித்து, வாத்திய விசேடத்தை ஒருங்கே முழக்குகின்றார்கள். அதனால் உபலக்கணமா யுணரப்பெற்ற சங்கீதத்தைப் பாடுகின்றனர் என்பது பொருள். (2)

மூலத்தில் 'திருபல:' என்று கூறுதற்கு 'விரைவு' எனப் பொருள் கூறுகின்றது நிருத்தம்.

மந்திரம் 3.

१ २ ३१२ ३२उ ३ १२ ३ १ २र
1116. *स योजत उरुगायस्य जूतिं वृथा क्रीडन्तं मिमते न गावः ।
३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ २३१२ ३ १२ ३ २
परीणसं कृणुते तिग्मशृङ्गो दिवा हरिर्ददृशे नक्तमृज्रः ॥ ३ ॥

இருக்கு 9-97-7-9.

स योजत उरुगायस्य जूतिं वृथा क्रीडन्तं शिशते
[न गावः ।
परीणसं कृणुते तिग्मशृङ्गो दिवा हरिर्ददृशे
[नक्तमृज्रः ॥

அந்வயம்.

सः, उरुगायस्य, जूतिं, योजते, वृथा क्रीडन्तं, गावः, न मिमते, तिग्मशृंगः, परीणसं, कृणुते, दिवाहरिः ददृशे, नक्तं ऋज्रः ॥

பதவுரை.

सः	सः	அச் சோமம்
उरुगायस्य	उरुगायस्य	பல்லோர்களுந் துதிக்கின்ற தனது
जूतिं	जूतिं	நிலைமையை,
योजते	योजते	அந்தரிட்சத்தில் ஏவுகின்றது.
वृथा क्रीडन्तं	वृथा क्रीडन्तं	விளையாட்டாய்ச் செல்கின்ற சோமத்தின் நடையை
गावः	गावः	ஏனைய நடையுடையார்
न मिमते	न शिशते	அளக்கமாட்டார்.
तिग्मशृङ्गः	तिग्मशृङ्गः	கூரிய ஒளியுடையதாய் அந்தரிட்சத்திற் சஞ்சரிக்கின்ற சோமம்,
परीणसं	परीणसं	பலவகை ஒளிகளைப்
कृणुते	कृणुते	பரப்புகின்றது.
दिवाहरिः ददृशे	दिवाहरिः ददृशे	பகலில் பச்சைநிறமாய்த் தோற்றுகின்றது.
नक्तं ऋज्रः	नक्तं ऋज्रः	இரவில் நன்கு பிரகாசிக்கின்றது.

* संहरत उगायस्य, என்பது இருக்கு.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

அச் சோமம், அநேகரால் போற்றப்பெற்ற தனது நிலைமையை அந்தரிட்சத்திற் செலுத்துகின்றது. விளையாட்டாகச் செல்கின்ற சோமத்தை, ஏனைய நடையாளர்கள் அளக்கமாட்டார்கள். மற்றும், கூரிய பேரொளியையுடைய பலவகைத் தேசுக்களைச் செய்வதாகுக. அந்தரிட்சத்திலிருக்கின்ற சோமம், இரவுபகல் பச்சைநிறமாய்க் காணப்படுகின்றது என்பதாம். விளங்கவில்லை யென்பது பொருள். (3)

மூலத்தில் 'பரீணசம்' என்றதற்குப் பலவகையென நிகண்டுங் கூறுகின்றது.

மந்திரம் 4.

२ ३ २३ १२३ १२ ३ १ २३ १२
1117. प्र स्वानासो रथा इवार्वन्तो न श्रवस्यवः ।
१२ ३१ २
सोमासो राये अक्रमुः ॥ ४ ॥

ப்ர ஸ்வாநாஸோ ரதா இவார்வந்தோ ந ஸ்ரவஸ்யவ: ।
ஸோமாஸோ ராயே அக்ரமு: ॥

அந்வயம்.

स्वानासः, सोमासः, रथाः इव, अर्वन्तः न, श्रवस्यवः, राये, प्राक्रमुः ॥

பதவுரை.

स्वानासः	ஸ்வாநாஸ:	பிழியுங்கால், பாத்திரத்தில் ஒலிக்கின்ற
सोमासः	ஸோமாஸ:	சோமம்,
रथाः इव	ரதா: இவ	சத்தமிடுகின்ற இரதம்போலும்,
अर्वन्तः न	அர்வந்த: ந	கத்துகின்ற குதிரை போலும்
श्रवस्यवः	ஸ்ரவஸ்யவ:	பகைவரிடத்தில் அன்னத்தை விரும்பியதாய்
राये	ராயே	வேள்வித்தலைவனது தனத்தின் பொருட்டு
प्राक्रमुः	ப்ராக்ரமு:	நன்கு செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—4.

பிழியும்போது சப்திக்கின்ற சோமம், இரதஞ் சத்தமிடுவதுபோலும், குதிரை ஒலிக்கின்றதுபோலும், சத்துருக்களிடத்திலிருந்து அன்னத்தை வேண்டுவதாய், வேள்வித்தலைவரின் பொருட்டுத் தனத்தை விரும்புகின்றது என்பதாம். (4)

மந்திரம் 5.

३ २ ३ १ २ २ ३ १ २२

1118. **हिन्वानासो रथा इव दधन्विरे गभस्त्योः ।**

१ २ ३ १ २

भरासः कारिणामिव ॥ ५ ॥

ஹிந்வாநாஸோ ரதா இவ தத⁴ந்விரே க³ப⁴ஸ்த்யோ: ।
ப⁴ராஸ: காரிணாமிவ ॥

அந்வயம்.

रथाः इव, हिन्वानासः, भरासः, कारिणां इव, गभस्त्योः, दधन्विरे ॥

பதவுரை.

रथाः इव	ரதாः உவ	போரிற் செல்கின்ற இரதத்தைப் போல்
हिन्वानासः	ஹிந்வாநாஸः	வேள்வியிற் செல்கின்ற சோமம்,
भरासः	ப⁴ராஸः	சுமையைக் கொண்டுசெல்கின்ற
कारिणां इव	காரிணாம் உவ	கூலிக்காரன், தோல்களிற் சுமையைத் தாங்குவதுபோல்
गभस्त्योः	க³ப⁴ஸ்த்யோः	வேட்போரின் தோள்களில்
दधन्विरे	த⁴ந்விரே	தாங்கப்படுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—5.

உயுத்தகளத்திற்கு இரதஞ் செல்வதுபோல் வேள்விச் சாலையைக் குறித்துச் செல்கின்ற சோமம், வேட்போர்களின் தோட்களாற் றாங்கப்படுகின்றது. அதிலுவமை:—சுமை யெடுப்போர்கள், தோட்களில் சுமையை யெடுப்பதுபோல் என்பதாம். (5)

மந்திரம் 6.

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
1119. राजानो न प्रशस्तिभिः सोमासो गोभिरञ्जते ।
३२उ ३२ ३ १ २
यज्ञो न सप्त धातृभिः ॥ ६ ॥

ராஜாநோ ந ப்ரஶஸ்திபிஃ ஸொமாஸொ கொபிரஞ்ஜதெ ।
யஜ்ஞோ ந ஸப்த தாதூபிஃ ॥

அன்வயம்.

सोमासः, प्रशस्तिभिः, राजानः न, सप्त धातृभिः, यज्ञः न, गोभिः, अञ्जते ॥

பதவுரை.

सोमासः	ஸொமாஸஃ	சோமம்,
प्रशस्तिभिः	ப்ரஶஸ்திபிஃ	தோத்திரமாகிய வாக்குகளால்,
राजानः न	ராஜாநஃ ந	அரசன் போன்றும்,
सप्त धातृभिः	ஸப்த தாதூபிஃ	எழுவகை வேட்போர்களால்
यज्ञः न	யஜ்ஞஃ ந	வேள்விபோலும்
गोभिः	கொபிஃ	ஆவின் பால் நெய் முதலியவைகளாற்
अञ्जते	அஞ்ஜதெ	பரிசுத்தப்படுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—6.

துதியாகிய வாக்குகளால், அரசன் போன்றும், எழுவகை வேட்போர்களால் வேள்வி போன்றும். சோமம், பசுவின் நெய் பால் முதலான வைகளாற் பரிசுத்தப்படுகின்றது என்பதாம். (6)

மந்திரம் 7.

१२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ २
1120. परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा ।
१ २ ३ १२
मधो अर्षन्ति धारया ॥ ७ ॥

வரி ஸ்வாநாஸ இந்தவொ மதாய ப்ருஹணா கிரா ।
மதொ ஸ்ருஷ்டீ தாரயா ॥

அந்வயம்.

स्वानासः, इन्दवः, बर्हणा, गिरा, मदाय, मधोः, धारया, परि अर्षन्ति ॥

பதவுரை.

स्वानासः	ஸ்வாநாஸஃ	பிழியப்பெற்ற
इन्दवः	இந்தவஃ	சோமம்,
बर्हणा	பர்ஹணா	மிகப் பெரிய
गिरा	கிரா	துதியாகிய வாணியுடன்கூடி
मदाय	மதாய	களிப்பின் பொருட்டு
मधोः	மதொஃ	மதுரமாகிய இன்சுவையின்
धारया	தாரயா	தாரையால்
परि अर्षन्ति	பரி அர்ஷந்தி	நாற்புறமும் ஒழுகுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—7.

பிழிந்தெடுக்கப்பெற்ற சோமம், மிகப் பெரிய தோத்திரமாகிய வாக்குடன் கூடியதாய்க், களிப்பின் பொருட்டு நாற்புறமும் ஒழுகுகின்றது என்பதாம். (7)

மந்திரம் 8.

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ · १ २ ३ २ ३ १ २
1121. आपानासो विवस्वतो * जिन्वन्त उषसो भगम् ।
२ ३ २ ३ १ २
सूरा अण्वं वि तन्वते ॥ ८ ॥

சூவாநாஸொ விவஸ்வதொ ஜிந்வந்த உஷஸொ ஹக்ம் ।
ஸூரா அண்வம் வி தந்வதெ ॥

அந்வயம்.

(सूराः,) विवस्वतः, आपानासः, उषसः, भगं, जिन्वन्तः, अण्वं, वितन्वते ॥

பதவுரை.

(सूराः)	(ஸூராஃ)	(சோமம்,)
विवस्वतः	விவஸ்வதஃ	இந்திரன் அருந்தத்தக்க
आपानासः	சூவாநாஸஃ	ஒரு உணவுப் பொருளாகி

* जनन्त उषसो भगं, என்பது இருக்கு.

उषसः	உஷஸ:	உஷாவின்
भगं	ஹகம்	அழகைப்
जिन्वन्तः	ஜிந்வந்த:	பரப்பிக்கொண்டு
अपवं	அபவம்	பிழியுங்கால்
वितन्वते	விதந்வதே	சத்தமிடுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—8.

பிரகாசமுடைய இந்திரனுக்கு ஒருவித வுணவாகியும், உஷாவின் அழகைப் பரப்பிக்கொண்டுஞ் செல்கின்ற சோமம், பிழியும்போது சத்தமிடுகின்றது என்பதாம். (8)

மந்திரம் 9.

२३ १२ ३ २ ३ १ २ ३१२

1122. अप द्वारा मतीनां प्रत्ना ऋण्वन्ति कारवः ।

२ ३ १२ ३१२

वृष्णो हरस आयवः ॥ ९ ॥

அப த்வாரா மதீநாம் ப்ரத்நா ருண்வந்தி காரவ: ।
வ்ருஷ்ணோ ஹரஸ ஆயவ: ॥

அன்வயம்.

मतीनां, कारवः, प्रत्नाः, वृष्णः, हरसः, आयवः, द्वारा, अप ऋण्वन्ति ॥

பதவுரை.

मतीनां	மதீநாம்	துதிகளைச்
कारवः	காரவ:	செய்கின்றவர்களும்,
प्रत्नाः	ப்ரத்நா:	மிகப் பழைமையானவர்களும்
वृष्णः	வ்ருஷ்ண:	சோமத்தைக்
हरसः	ஹரஸ:	கொண்டு வருகின்றவர்களுமான
आयवः	ஆயவ:	வேட்போர்கள்
द्वारा	த்வாரா	வேள்வியின் வழியைத்
अप ऋण्वन्ति	அப ருண்வந்தி	திறக்கின்றார்கள்,

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—9.

தோத்திரங்களைச் செய்கின்றவர்களும், பழையோரானவர்களும், இரசத்தை வார்க்கின்ற சோமத்தைக் கொண்டுவருவோர்களுமான வேட்போர்கள், வேள்வியின் வழியைத் திறக்கின்றார்கள் என்பதாம். (9)

மந்திரம் 10.

३ १२ ३ १ २ ३१ २
1123. समीचीनास *आशत होतारः †सप्त जानयः ।
३१ २२ ३ १ २
पदमेकस्य पिप्रतः ॥ १० ॥

ஸமீசீநாஸ ஆஶத ஹொதாரஃ ஸப்த ஜாநயஃ ।
பதமேகஸ்ய பிப்ரதஃ ॥

அந்வயம்.

समीचीनासः, जानयः, एकस्य पदं, पिप्रतः, सप्त होतारः, आशत ॥

பதவுரை.

समीचीनासः	ஸமீசீநாஸஃ	சிறந்த
जानयः	ஜாநயஃ	பிறப்புடையாரைப் போன்றவர்களும்
एकस्य पदं	ஏகஸ்ய பதம்	சோமத்தினுடைய இடத்தைப்
पिप्रतः	பிப்ரதஃ	பூரணமாக்குகின்றவர்களும்
सप्त होतारः	ஸப்த ஹொதாரஃ	எழுவகையருமான வேட்போர்கள்
आशत	ஆஶத	வேள்வியை வியாபிக்கின்றனர்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—10.

மேம்பட்ட குலத்தவர்கட்கு ஒப்பாகியவர்களும், சோமத்தின் இடத்தில் நிறைந்தவர்களுமான, வேட்போர்கள் எழுவர்கள், வேள்வியை வியாபிக்கின்றார்கள் என்பதாம். (வேட்போர் எழுவர் வேள்விசெய்வான் முன்வந்து நிற்கின்றனர் என்பது பொருள்.) (10)

---

*आसते होतारः, †सप्त जामयः, என்பன இருக்கு.

மந்திரம் 11.

२ ३ ११ ३ १२३ १२३ १२ ३२
1124. नाभा नाभिं न आददे * चक्षुषा सूर्यं दृशे ।
३१ २२३१२१
कवेरपत्यमादुहे ॥ ११ ॥

நாஹா நாஹிம் ந ஆததெ சக்ஷுஷா ஸூர்யம் த்ருஶெ ।
கவெரபத்யமாதுஹெ ॥

அன்வயம்.

चक्षुषा, सूर्यं, दृशे, नाभिं, नः, नाभा, आददे, कवेः, अपत्यं, आदुहे ॥

பதவுரை.

चक्षुषा	அக்ஷுஷா	கண்ணால்
सूर्यं	ஸூர்யம்	சூரியனைக்
दृशे	த்ருஶெ	காண்பதற்கு
नाभिं	நாஹிம்	வேள்வியின் நாபியாகிய சோமத்தை
नः	நः	நாங்கள்
नाभा	நாஹா	எங்களுடைய நாபியாற்
आददे	ஆததெ	கொள்கின்றோம்.
कवेः	கவெஃ	சோமத்தின்
अपत्यं	அபத்யம்	கிரணத்தை
आदुहे	ஆதுஹெ	நிறைக்கின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—11.

வேள்வியின் நாபிவடிவாகிய சோமத்தை எங்களுடைய நாபியில் வைக்கின்றோம். யாம் சோமத்தை யருந்தி நாபியின்கண் செலுத்துகின்றோம் என்பது பொருள். எதன் பொருட்டெனின் ? கண்ணினாற் சூரியனைப் பார்ப்பதற்கென்க. மற்றும், சோமத்தினுடைய கிரணத்தை நிறையச் செய்கின்றோம் என்பதாம். (11)

* चक्षुश्चित्सूर्ये सचा, என்பது இருக்கு.

மந்திரம் 12.

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २

1125. * अभि प्रियं दिवस्पदमध्वर्युभिर्गुहाहितम् ।

१ २ ३ १ २

सूरः पश्यति चक्षुषा ॥ १२–१ ॥

இருக்கு 9-10-1-9.

அபி ப்ரியம் திவஸ்பதமத்⁴வர்யுபி⁴ர்கு³ஹாஹிதம் ।
ஸூரி: பஶ்யதி சக்ஷுஷா ॥

அன்வயம்.

सूरः, दिवः, प्रियं पदं, अध्वर्युभिः, गुहाहितं, चक्षुषा, अभि पश्यति ॥

பதவுரை.

सूरः	ஸூரி:	சிறந்த வீரமுடைய இந்திரன்,
दिवः	தி³வ:	தனது
प्रियं पदं	ப்ரியம் பத³ம்	பிரியத்திற்கிடமாகியதும்,
अध्वर्युभिः	அத்⁴வர்யுபி⁴:	வேட்போர்களால்
गुहाहितं	கு³ஹாஹிதம்	இருதயத்தில் வைக்கப்பட்டது மாகிய சோமத்தை
चक्षुषा	சக்ஷுஷா	நேத்திரத்தால்
अभि पश्यति	அபி பஶ்யதி	நன்கு பார்க்கின்றான்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—12.

சிறந்த பராக்கிரமமுடைய இந்திரன், தனது பிரியத்திற் கிடமாகியதும், வேட்போர்களால் இருதயத்தில் வைக்கப்பட்டதும் (அருந்தியது) மாகிய சோமத்தைக் கண்ணினாற் பார்க்கின்றான் என்பதாம். (12)

முதலாவது கண்டம்

முற்றும்.

---

* அபிப்ரியா திவஸ்பதம், என்பது இருக்கு.

இரண்டாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—4. அத்தியாயம்—8. கண்டம்—2.

பன்னிரண்டு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१२३१२ ३ १ २र्३१२ ३१२
1126. असृग्रमिन्दवः पथा धर्मन्नृतस्य सुश्रियः ।
३ १२३ १२
विदाना अस्य योजना ॥ १ ॥

அஸ்ருக்ரமிந்தவஃ பதா தர்மன்ரிதஸ்ய ஸுஶ்ரியஃ ।
விதாநா அஸ்ய யொஜநா ॥

அந்வயம்.

अस्य योजना, विदानाः, सुश्रियः, इन्दवः, धर्मन्, ऋतस्य पथा, असृग्रम् ॥

பதவுரை.

अस्य योजना	அஸ்ய யொஜநா	இவ் வேள்வித் தலைவனுற் செய்யப்பட்ட சம்பந்தத்தை,
विदानाः	விதாநாஃ	அறிகின்றதும்
सुश्रियः	ஸுஶ்ரியஃ	அழகியதுமாகிய
इन्दवः	இந்தவஃ	சோமம்,
धर्मन्	தர்மன்	கருமத்தின்கண்
ऋतस्य पथा	ரிதஸ்ய பதா	வேள்விவழியாக
असृग्रं	அஸ்ருக்ரம்	உண்டாக்குகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—1. சமதக்கினி, அசிதர், தேவலர் ரிஷிகள்.

இவ் வேள்வித்தலைவனுற் செய்யப்பட்ட அவ்வத் தேவதைகட்குரியோக்கியமான சம்பந்தங்களை, அறிவுடையதும், அழகியதுமாகிய சோமம், கருமத்தில் வேள்வியின் மார்க்கமாக (அவியைத் தாங்கும் வாயிலாக) உண்டாக்குகின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

२उ ३ १ २ ३ २ ३ २३ १ २र
1127. प्र धारा मधो अग्रियो महीरपो विगाहते ।
३२ ३ २ ३ १ २
हविर्हविःषु वन्द्यः ॥ २ ॥

ப்ர யாரா உயொ சுஶ்ரியொ உஹீரபொ விகாஹதெ ।
ஹவிர்ஹவிஃஷு வந்த்யஃ ॥

அந்வயம்.

हविःषु, वन्द्यः, हविः, महीः, अपः, विगाहते, मधोः, अग्रियः, धाराः, प्र (पतन्ति) ॥

பதவுரை.

हविःषु	ஹவிஃஷு	அவிகளுக்குள்
वन्द्यः	வந்த்யஃ	போற்றத்தக்க
हविः	ஹவிஃ	அவியாகிய சோமம்,
महीः	உஹீஃ	மிகுந்த
अपः	சுபஃ	ஆற்றுநீரை யடைந்து, அதில்
विगाहते	விகாஹதெ	மூழ்குகின்றது.
मधोः	உயொஃ	சோமத்தினுடைய
अग्रियः	சுஶ்ரியஃ	முக்கியமான
धाराः	யாராஃ	தாரைகள்
प्र (पतन्ति)	ப்ர (பதந்தி)	பெருகுகின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

அவிகளுக்குட் போற்றத்தக்க அவியாகிய சோமம், 'வசதீவரி' என்னும் மிகுதியாகிய ஆற்றுநீரிற் கலக்கின்றது. அச் சோமத்தின் முக்கியமான தாரைகள் நன்கு விழுகின்றன என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २२ ३ १२
1128. प्र युजा वाचो अग्रियो वृषो अचिक्रदद्वने ।
२ ३ २ ३ १ २ ३२
सद्माभि सत्यो अध्वरः ॥ ३ ॥

ஓ யுஜா வாசொ அக்ரியொ வ்ருஷொ அசிக்ரதத்வனெ ।
ஸத்மாபி ஸத்யொ அத்வரஃ ॥

அந்வயம்.

अग्रियः, युजा वाचः, प्र, वृषः, सत्यः, अध्वरः, सद्म अभि, वने अचिक्रदत् ॥

பதவுரை.

अग्रियः	அக்ரியஃ	அவிகளிற் சிறந்ததாகிய, சோமம்,
युजा वाचः	யுஜா வாசஃ	உரித்தாகிய வாக்கை
प्र	ப்ர	வெளிப்படுத்துகின்றது.
वृषः	வ்ருஷஃ	மன்விருப்பைப் பொழிகின்றதும்,
सत्यः	ஸத்யஃ	உண்மையாகியதும்,
अध्वरः	அத்வரஃ	இம்சை செய்யாததுமாகிய சோமம்,
सद्म अभि	ஸத்ம அபி	வேள்விச் சாலையைக் குறித்து
वने अचिक्रदत्	வனெ அசிக்ரதத்	நீரிற் சத்தமிடுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

அவிகளுக்குட் சிறந்த சோமம், உரிமையாகிய வாக்கை நன்கு உண்டாக்குகின்றது. மேலும் இதுவே காட்டப்படுகின்றது. மனவிருப்பைப் பொழிகின்றதும், உண்மையாகியதும், இம்சை யற்றதுமாகிய சோமம் வேள்விச் சாலையைக் குறித்து நீரிற் சத்தமிடுகின்றது என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

२३ १ २र ३२ ३ १ २ ३ १ २र
1129. परि यत् काव्या कवि * र्नृम्णा पुनानो अर्षति ।
२र ३ १ २
स्वर्वाजी सिषासति ॥ ४ ॥

பரி யத் காவ்யா கவிர்ந்ரும்ணா புநாநோ அர்ஷதி ।
ஸ்வர்வாஜீ ஸிஷாஸதி ॥

அந்வயம்.

कविः, नृम्णा, पुनानः, काव्या, यत् परि अर्षति, स्वः, वाजी, सिषासति ॥

பதவுரை.

कविः	கவிः	மிகுந்த வுணர்வுடைய சோமம்,
नृम्णा	ந்ரும்ணா	ஆற்றலைப்
पुनानः	புநாநः	பரிசோதித்துக்கொண்டு
काव्या	காவ்யா	தோத்திரத்தை
यत् परि अर्षति	யத் பரி அர்ஷதி	அடையுங்கால்,
स्वः	ஸ்வः	சுவர்க்கத்தில்
वाजी	வாஜீ	ஆற்றுலுள்ளவனும் அன்னமுடையவனுமாகிய இந்திரன்,
सिषासति	ஸிஷாஸதி	வேள்வியில் பலரும் தனது ஆற்றலை, வழிபடுமாறு விரும்புகின்றனன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—4.

மிகுந்த கருமங்களை யுணர்ந்த சோமம், ஆற்றலைப் பரிசோதனை செய்துகொண்டு துதிகளைப் பெற்றுக்கொள்ளும்போது, சுவர்க்கத்தில் ஆற்றலையும், அன்னங்களையுமுடைய இந்திரன், வேள்வியை யடைதற் பொருட்டு, தனது ஆற்றலை ஆராதிக்குமாறு விரும்புகின்றனன் என்பதாம். (4)

* नृम्णा वसानो, என்பது இருக்கு.

மந்திரம் 5.

१२ ३२उ ३ २ ३ १२
1130. पवमानो अभिस्पृधो विशो राजेव सीदति ।
१२३१२ ३१२
यदीमृण्वन्ति वेधसः ॥ ५ ॥

வவமாநோ அபிஸ்ப்ருதோ விசோ ராஜேவ ஸீததி ।
யதீம்ருண்வந்தி வேதஸஃ ॥

அந்வயம்.

वेधसः, यत्, ईम्, ऋण्वन्ति, पवमानः, स्पृधः, अभिसीदति, विशः, राजा इव ॥

பதவுரை.

वेधसः	வேதஸஃ	கருமஞ்செய்கின்ற வேட்போர்கள்
यत्	யத்	எப்போது
ईम्	ஈம்	இச்சோமத்தை,
ऋण्वन्ति	ருண்வந்தி	ஏவுகின்றார்களோ,
पवमानः	பவமாநஃ	ஒழுகுகின்ற சோமம்,
स्पृधः	ஸ்ப்ருதஃ	வேள்விக்கு இடையூறு செய்வோர்களை யழிப்பதற்குச்
अभिसीदति	அபிஸீததி	(அப்போது) செல்கின்றது.
विशः	விசஃ	துவேஷங் கொள்கின்ற மனிதரை நாசஞ்செய்ய
राजा इव	ராஜா இவ	அரசன் செல்வதுபோல் என்பதாம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—5.

இச்சோமத்தைக், கருமஞ் செய்கின்ற வேட்போர்கள் எப்போது செலுத்துகின்றார்களோ, அப்போது, இச்சோமம் ஒழுகுவதாகி வேள்விக்கு இடையூறு செய்கின்ற இராக்கதர் முதலியோர்களைக் கொல்வதற்குச் செல்கின்றது. அதிலுவமை:—அரசன் விரோதமுடையார்களைக் கொல்வதற்குச் செல்வதுபோல் என்பதாம். (5)

மந்திரம் 6.

२ ३ २३ १ २ ३ २३ ३ १
1131. *अव्या वारे परि प्रियो हरिर्वनेषु सीदति ।
३ १ २ ३ २
रेभो वनुष्यते मती ॥ ६ ॥

சுவ்யா வாரெ வரி வ்ரியொ ஹரிர்வநெஷு ஸீததி ।
ரெஹோ வநுஷ்யதெ மதீ ॥

அன்வயம்.

हरिः, प्रियः, वनेषु, अव्या वारे, परि सीदति, रेभः, मती वनुष्यते ॥

பதவுரை.

हरिः	ஹரிஃ	பச்சை நிறமுடையதும்,
प्रियः	ப்ரியஃ	தேவர்கட்குப் பிரியமுடையது மாகிய சோமம்
वनेषु	வநெஷு	நீரிற் கலப்புற்றதாய்,
अव्या वारे	அவ்யா வாரெ	ஆட்டின் மயிர்களாலாய கம்பளியில்
परि सीदति	பரி ஸீததி	வடிக்கப்பட்டிருக்கின்றது.
रेभः	ரெஹஃ	பிழியும்போது, முழக்கமுடையதாய்,
मती वनुष्यते	மதீ வநுஷ்யதெ	துதியால் வழிபடப்படுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—6.

பச்சை நிறமுடையதும். தேவர்கட்குப் பிரியமுடையதுமாகிய சோமம், நீரிற் சேர்க்கப்பட்டு, கம்பளியில் வடிக்கப்பெற்றிருக்கின்றது. மற்றும், பிழியும்போது ஒலிப்பதாகி, தோத்திரத்தாற் சேவிக்கப்படுகின்றது என்பதாம். (6)

---

* अव्यो वारे, என்பது இருக்கு.

மந்திரம் 7.

२ ३१ ३२३ १ २ ३१ २२
1132. स वायुमिन्द्रमश्विना साकं मदेन गच्छति ।
२३ १ २ ३ १२
रणा यो अस्य धर्मणा ॥ ७ ॥

ஸ வாயுமிந்த்ரமஶ்வினா ஸாகம் மதேந கச்சதி ।
ரணா யோ அஸ்ய தர்மணா ॥

அன்வயம்.

यः, अस्य धर्मणा, रणा, सः, वायुं, इन्द्रं, अश्विना, मदेन साकं, गच्छति ॥

பதவுரை.

यः	யः	எவ்வேள்வித் தலைவன்
अस्य धर्मणा	அஸ்ய தர்மணா	இச் சோமத்தைப் பிழிதல் முதலிய கருமத்தால்
रणा	ரணா	விளையாடுகின்றானே,
सः	ஸः	அவ்வேள்வித் தலைவன்,
वायुं	வாயும்	வாயுவையும்,
इन्द्रं	இந்த்ரம்	இந்திரனையும்,
अश्विना	அஶ்வினா	அசுவினிகளையும்,
मदेन साकं	மதேந ஸாகம்	களிப்போடுகூட
गच्छति	கச்சதி	அடைகின்றான்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—7.

எவ்வேள்வித் தலைவன், இச்சோமத்தைப் பிழிதல் முதலிய கருமங்களுடன் இரமிக்கின்றானே, அவ்வேள்வித் தலைவன், வாயுவையும், இந்திரனையும் அசுவினி குமாரர்களையும், களிப்புடன் அடைகின்றான் என்பதாம். (7)

மந்திரம் 8.

२ ३१ २२३ २ ३ १ २ ३१२
1133. * आ मित्रे वरुणे भगे मधोः पवन्त ऊर्मयः ।
३ १ २ ३ १ २
विदाना अस्य शक्मभिः ॥ ८ ॥

* आमित्रा वरुणा भगं, என்பது இருக்கு.

சூ மித்ரே வரூணே ஹபெ மதோ: பவந்த ஊர்மயஃ ।
விதாநா சுஸ்ய ஶக்மபிஃ ॥

அந்வயம்.

मधोः ऊर्मयः, मित्रे वरुणे, भगे, पवन्ते, अस्य सोमस्य, विदानाः, शक्मभिः ॥

பதவுரை.

मधोः ऊर्मयः	மதோ: ஊர்மயஃ	எவ்வேள்வித் தலைவர்களுடைய சோமத்தின் அலைத்துளிகள்
मित्रे वरुणे	மித்ரே வரூணே	மித்திரன், வருணன், என்னுந் தேவதைகளின் பொருட்டும்
भगे	ஹபெ	'பக' தேவதையின் பொருட்டும்
पवन्ते	பவந்தெ	ஒழுகுகின்றனவோ, (அவர்கள்)
अस्य सोमस्य	சுஸ்ய ஸொமஸ்ய	இச்சோமத்தை
विदानाः	விதாநாஃ	அறிந்தவர்களாய்ச்
शक्मभिः	ஶக்மபிஃ	சுகத்தை யடைகின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—8.

எவ் வேள்வித் தலைவர்களுடைய சோமரசத்தின் அலைகள், மித்திரன், வருணன், பக, என்னுந் தேவதைகளின் பொருட்டு துளிகளாய் ஒழுகுகின்றனவோ, அவர்கள், இச்சோமத்தை யுணர்ந்தவர்காளய்ச் சுகமடைகின்றார்கள் என்பதாம். (8)

மந்திரம் 9.

३ १ २ ३२उ ३ १२ ३१२
1134. अस्मभ्यꣳ रोदसी रयिं मध्वो वाजस्य सातये ।
२ ३ १२ ३ १ २
श्रवो वसूनि संजितम् ॥ ९ ॥

சுஸ்மப்யம் ரொதஸீ ரயிம் மத்வோ வாஜஸ்ய ஸாதயெ ।
ஶ்ரவொ வஸூநி ஸம்ஜிதம் ॥

அந்வயம்.

हे रोदसी !, मध्वः, वाजस्य, सातये, अस्मभ्यं, रयिं, श्रवः, वसूनि, संजितम् ॥

பதவுரை.

हे रोदसी !	ஹெ ரொஃஸீ !	{ வானுலக மண்ணுலங்களே யதிட்டித்து நிற்கின்ற தேவதைகளே ! நீங்கள்,
मघवः	ஃக்வஃ:	{ தேவர்கட்குக் களிப்பைக் கொடுக்கின்ற
वाजस्य	வாஜஸ்ய	அன்னத்தை
सातये	ஸாதயெ	அடைதற் பொருட்டு,
अस्मभ्यं	அஸ்மப்⁴யம்	எங்கட்குத்
रयिं	ரயிம்	தனத்தையும்
श्रवः	ஶ்ரவஃ	அன்னத்தையும்
वसूनि	வஸூனி	பசு, முதலிய சம்பத்துக்களையும்
संजितं	ஸம்ஜிதம்	கொடுப்பீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—9.

வானுலக மண்ணுலக தேவர்களே ! நீங்கள், தேவர்களைக் களிப்பிக்கின்ற சோமமாகிய அன்னங் கிடைத்தற்பொருட்டு, தனம், அன்னம், பசு முதலிய சம்பத்துக்களை எங்கட்குக் கொடுப்பீர்களாக என்பதாம். (9)

மந்திரம் 10.

२ ३ १२ ३ २३ १ २ ३ १ २
1135. आ ते दक्षं मयो भुवं वह्निमद्या वृणीमहे ।
२ ३ १ २३ १२
पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥ १० ॥

ஆ தெ த³க்ஷம் மயொ ப⁴ுவம் வஹ்நிமத்³யா வ்ருணீமஹெ ।
பாந்தமா புருஸ்ப்ருஹம் ॥

அன்வயம்.

(हे सोम !,) ते दक्षं, अद्य, आ वृणीमहे, मयो भुवं, वह्निं, पान्तं, पुरुस्पृहम् ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	(சோமமே ! வேள்வியைச் செய்கின்ற நாங்கள்,)
ते दक्षं	தெ தக்ஷம்	உன்னுடைய ஆற்றலை
अद्य	அத்³ய	இப்போது
आवृणीमहे	ஆவ்ருணீமஹெ	ஆராதிக்கின்றோம். (அவ்வாறு)
मयो भुवं	மயொ பு⁴வம்	சுகத்தை யுண்டாக்குவதும்
वहिं	வஹ்நிம்	தனங்கள் முதலியவைகளை யடைவிப்பதும்,
पान्तं	பாந்தம்	சத்துருக்களினின்றும் பாதுகாப்பதும்
पुरुस्पृहं	புருஸ்ப்ருஹம்	விரும்பியவற்றை யடைதற்பொருட்டு, அநேகர்களால் அடையப்படுவதுமாமென்க.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—10.

சோமமே ! வேட்கின்ற யாங்கள், உன்னுடைய தனமாகிய ஆற்றலை இப்பொழுது ஆராதிக்கின்றோம். எத்தன்மைய ஆற்றலெனின் ? சுகத்தையுண்டாக்குவதும், தனமுதலியவைகளைப் பயப்பதும், விரும்பியவற்றை யடைதற்பொருட்டுப் பலரால் விரும்பத்தக்கதுமாமென்க. (10)

மந்திரம் 11.

२ ३ १ २र ३उ ३ १ २ ३ १२
1136. आ मन्द्रमा वरेण्यमा विप्रमा मनीषिणम् ।
२ ३ १ २ १२
पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥ ११ ॥

ஆ மந்த்³ரா வரெண்யா விப்ரா மநீஷிணம் ।
வாந்தா புருஸ்ப்ருஹம் ॥

அந்வயம்.

हे सोम !, मन्द्रं आ, वरेण्यं आ, विप्रं आ, मनीषिणं आ, पान्तं, पुरुस्पृहं आ ॥

பதவுரை.

हे सोम!	ஹெ ஸொம!	சோமமே!
मन्द्रं आ	மந்த்₃ரம் ஆ	களிப்பைக் கொடுக்கின்ற உன்னை ஆராதிக்கின்றேம்.
वरेण्यं आ	வரெண்யம் ஆ	(மற்றும்) அனைவராலும் போற்றத்தக்க உன்னை வழிபடுகின்றேம்.
विप्रं आ	விப்ரம் ஆ	கூரிய வுணர்வுடைய உன்னை ஆராதிக்கின்றேம்.
मनीषिणं आ	மநீஷிணம் ஆ	மனத்தை வசப்படுத்திய உன்னை ஆராதிக்கின்றேம்.
पान्तं	பாந்தம்	அனைத்தையும் பாதுகாக்கின்றவனும்,
पुरुस्पृहं आ	புருஸ்ப்ருஹம் ஆ	பல்லோர்களால் விரும்பத்தக்கவனுமாகிய வுன்னை ஆராதிக்கின்றேம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—11.

சோமமே! களிப்பைக் கொடுக்கின்ற, அல்லது, துதிக்கின்ற வுன்னைப் போற்றுகின்றேம். அனைவரினுஞ் சிறந்தவனும், வழிபடத்தக்கவனுமாகிய வுன்னை ஆராதிக்கின்றேம். மற்றும், கூரிய மதியுடையவனும், மனத்தை வென்றவனும், அல்லது, துதிபுடன் கூடியவனுமாகிய வுன்னை ஆராதிக்கின்றேம். அஃதன்றியும், அனைவரையும் பாதுகாப்பவனும், பல்லோர்களால் விரும்பப்பட்டவனுமாகிய வுன்னை இறைஞ்சுகின்றேம் என்பதாம். (11)

மந்திரம் 12.

२ ३१ २२३ २३ १ २ ३ २
1137. आ रयिमा सुचेतुनमा सुक्रतो तनूष्वा ।
२ ३ १ २३ १२
पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥ १२—२ ॥

இருக்கு 9-7-1-9, இருக்கு 9-65-58-60.

ஆ ரயிமா ஸுசெதுனமா ஸுக்ரதோ தநூஷ்வா ।
பாந்தமா புருஸ்ப்ருஹம் ॥

அன்வயம்.

हे सुक्रतो!, रयिं आ, सुचेतुनं आ, तनुषु आ, पान्तं, पुरुस्पृहं, आ ॥

பதவுரை.

हे सुक्रतो !	ஹெ ஸுக்ரதொ !	சிறந்த வறிவுடைய சோமமே !
रयिं आ	ரயிம் கூ	(நாங்கள்) தனத்தை வேண்டுகின்றோம்.
सुचेतुनं आ	ஸுசெதனம் கூ	நல்லுணர்வை யிரக்கின்றோம்.
तनुषु आ	தநிஷு கூ	எமது புத்திரர்களுக்குத் தனத்தையும் நல்லுணர்வையுங் கொடுப்பாயாக.
पान्तं	வாஜம்	அந்தத்தையும் பாதுகாப்பவனும்
पुरुस्पृहं	வாஜம்புரு ஸ்ப்ருஹம்	பல்லோர்களால் விரும்பத்தக்கவனுமாகிய வன்னி
आ	கூ	ஆராதிக்கின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—12.

சிறந்த வுணர்வையுடைய சோமமே ! உன்னுடைய தனத்தை நாங்கள் வேண்டுகின்றோம். நல்லுணர்வையும் வேண்டுகின்றோம். மற்றும், எங்களுடைய புத்திரர்கட்குத் தனத்தையும் நல்லுணர்வையும் நீ கொடுப்பாயாக. அல்லது, புத்திரன் பொருட்டு வேண்டுகின்றோம். அங்ஙனமே, அந்தத்தையும் பாதுகாப்பவனும் வேட்கின்ற அநேகர்களால் விரும்பப்பட்டவனுமாகிய வன்னி இறைஞ்சுகின்றோம் என்பதாம். (12)

இரண்டாவது கண்டம்

முற்றும்.

மூன்றுவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—4. அத்தியாயம்—8. கண்டம்—3.

பதிநான்கு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३ १ २ ३ १ ३२१ २ ३ १ ३२३२उ ३२३ २

1138. मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् ।

३ २ ३ २३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १२ ३ २

कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्नः पात्रं जनयन्त देवाः ॥१॥

மூர்த்தாநம் திவோ அரதிம் வ்ருதிவ்யா வைஶ்வாநரமூத ஆஜாத
[மூர்ந்தி ।
கவிம் ஸம்ராஜ மதிதிம் ஜநாநாமாஸந்ந: பாத்ரம் ஜநயந்த தேவா: ॥

அந்வயம்.

दिवः, मूर्धानं, पृथिव्याः, अरतिं, वैश्वानरं, ऋते, आजातं, कविं, सम्राजं, जनानां, अतिथिं, आसन्, नः, पात्रं अग्निं, देवाः, आ जनयन्त ॥

பதவுரை.

दिवः	திவ:	வானுலகத்திற்குச்
मूर्धानं	மூர்த்தாநம்	சென்னியானவனும்,
पृथिव्याः	வ்ருதிவ்யா:	மண்ணுலகிற்கு
अरतिं	அரதிம்	இறைவனும்,
वैश्वानरं	வைஶ்வாநரம்	எல்லா நரர்களிடத்துஞ் சம்பந்த முடையவனும்
ऋते	ஊதே	வேள்வியின் பொருட்டுப்
आजातं	ஆஜாதம்	படைப்பின் முதலில் உண்டானவனும்,
कविं	கவிம்	பேரறிவையுடையவனும்
सम्राजं	ஸம்ராஜம்	நன்கு விளங்குகின்றவனும்
जनानां	ஜநாநாம்	வேள்வித் தலைவர்களுக்கு
अतिथिं	அதிதிம்	அதிதிபோன்று ஆராதிக்கத் தக்கவனும்
आसन्	ஆஸந்	தேவர்களுடைய 'வாய்' வடிவாக அமைந்துள்ளவனும்
नः	ந:	எங்களைப்
पात्रं अग्निं	பாத்ரம் அக்நிம்	பாதுகாப்பவனுமாகிய வைசுவாநரன் என்னும் அக்கினியைத்,
देवाः	தேவா:	தேவர்கள், அல்லது, வேட்போர்கள்
आजनयन्त	ஆஜநயந்த	வேள்வியில், தீக்கடைக்கோலால் உண்டாக்கினர்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1. பரத்துவாசர் ரிஷி.

வானுலகத்திற்குச் சிரசுபோன்றவனும், பூமிக்குத் தலைவனும், அல்லது, பூமியைச் செலுத்துவோனும், உலக மக்களிடத்துச் சம்பந்தமுடையோனும், ஆதலின், சத்தியம் அல்லது, வேள்வியின் நிமித்தமாய்ச் சிருட்டி

யின் முதலில் உண்டானவனும், பேரறிவுடையவனும், நன்கு விளங்குகின்றவனும், வேள்வித் தலைவனுடைய அவியை யேற்கச் செல்வோனும், அல்லது, அதிதிபோன்று போற்றத்தக்கவனும், தேவர்கள் அக்கினியாகிய முகத்தினால் அவியை யுண்ணுதலின் தேவர்களின் 'வாய்' போன்றவனும், எங்களைப் பாதுகாப்போனுமாகிய வைசுவாநரன் என்னும் அக்கினி தேவனை, வேட்போர்கள், அல்லது, தேவர்கள், தீக்கடைக் கோலால் உண்டாக்கிக் கொண்டிருக்கின்றனர் என்பதாம். (1)

'நிதம்' என்னும் மூலபதம் சத்தியத்தையேனும், வேள்வியையேனுங் குறிக்கின்றது. நிகண்டும் அவ்வாறே கூறுகின்றது.

மந்திரம் 2.

१ २र ३ १२ ३ २३ २ ३ २ ३ १ २२३

1139. त्वा विश्वे अमृत जायमानꣳ शिशुं न देवा अभि सं नवन्ते ।

२३ १२ ३१२ १२३२३ १ २र

तव क्रतुभिरमृतत्वमायन् वैश्वानर यत्पित्रोरदीदेः ॥ २ ॥

ꣳவா விஶ்வே ꣳஅ்ரு꣡த ஜாயமாநꣳ ஶிஶு꣣ம் ந ஜெவா ꣳஅபி ꣳஸம் நவந்தெ ।

தவ க்ரு꣡துபிரம்ருதத்வமாயந் வைஶ்வாநர யத்பி꣡த்ரோரதீதெः ॥

அந்வயம்.

அமृत!, विश्वे देवाः, जायमानं त्वा, शिशुं न, अभि संनवन्ते, वैश्वानर!, पित्रोः, यत्, अदीदेः, क्रतुभिः, तव अमृतत्वं, आयन् ॥

பதவுரை.

अमृत!	ꣳஅ்ரு꣡த!	இறப்பில்லாத அக்கினியே!
विश्वे देवाः	விஶ்வே ஜெவாः	தேவர்களனைவரும்
जायमानं त्वा	ஜாயமாநꣳ ஜ்வா	தீக்கடைக் கோலினின்று உண்டாகிய வுன்னை,
शिशुं न	ஶிஶு꣣ம் ந	பிதா, குழந்தையை யடைவது போன்று
अभि संनवन्ते	ꣳஅபி ꣳஸம் நவந்தெ	நன்கு பெற்றுக்கொள்கின்றனர்.
वैश्वानर!	வைஶ்வாநர!	வைசுவாநர அக்கினியே! நீ
पित्रोः	வி꣡த்ரோः	வானுலக மண்ணுலகங்களுக்கிடையில்
यत्	யத்	எப்போது
अदीदेः	அதீதெः	பிரகாசிக்கின்றனையோ, (அப்போது)

क्रतुभिः	க்ரதுபிஃ	வேள்விகளால்
तव अमृतत्वं	தவ அமூதத்வம்	வேள்வித் தலைவர்கள் உன்னுடைய தேவத்தன்மையை
आयन्	ஆயந்	அடைகின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

மரணமில்லா அக்கினியே! துதிக்கின்றவர்களனைவரும், தீக்கடைக் கோலிலிருந்து உண்டாகிய வுன்னைப் புத்திரனைப் போன்று போற்றுகின்றார்கள். அல்லது, பிதா குழந்தையை யடைவதுபோல் பிரகாசிக்கின்ற கிரணங்களனைத்தும் உன்னை யடைக்கின்றன என்பதாம். மற்றும், வைசுவாநர அக்கினியே! நீ, எப்போது வானிற்கும் மண்ணிற்கும் நடுவில் பிரகாசிக்கின்றனையோ, அப்போது, சோதிட்டோம முதலிய வேள்விகளால் வேள்வித் தலைவர்கள் உனது தெய்வத்தன்மையை யடைகின்றார்கள் என்பதாம்.

மந்திரம் 3.

१ २ ३ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३२३ १ २र
1140. नाभिं यज्ञानाꣳ सदनꣳ रयीणां महामाहावमभि सं नवन्ते ।
३ २ ३क२र ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ २
वैश्वानरꣳ रथ्यमध्वराणां यज्ञस्य केतुं जनयन्त देवाः ॥ ३-३ ॥

இருக்கு 6-7-1-4-2.

நாபிம் யஜ்ஞாநாம் ஸதநம் ரயீணாம் மஹாமாஹாவமபி ஸம் நவந்தே।
வைஶ்வாநரம் ரத்யமத்வராணாம் யஜ்ஞஸ்ய கேதும் ஜநயந்த தேவாஃ॥

அந்வயம்.

यज्ञानां नाभिं, रयीणां सदनं, महां, आहावं, अभि सं नवन्ते, वैश्वानरं, अध्वराणां रथ्यं, यज्ञस्य केतुं, देवाः, जनयन्त ॥

பதவுரை.

यज्ञानां नाभिं	யஜ்ஞாநாம் நாபிம்	வேள்விகளுக்கு நாபியும்,
रयीणां सदनं	ரயீணாம் ஸதநம்	தனங்கட்குக் களஞ்சியமும்,
महां	மஹாம்	பெரியதும்,
आहावं	ஆஹாவம்	ஆகுதி கொடுக்கப் பெறுவதுமாகிய அக்கினியை,
अभि सं नवन्ते	அபி ஸம் நவந்தே	வேட்போர்கள் நன்கு துதிக்கின்றார்கள். அவ்வாறே

वैश्वानरं	வைஶ்வா நரம்	மனிதர்களனைவரிடத்துஞ் சம்பந்தப்பட்டதும்,
अध्वराणां रथ्यं	அத்வராணாம் ரத்யம்	வேள்வியை நடாத்துவதும்,
यज्ञस्य केतुं	யஜ்ஞஸ்ய கெதும்	வேள்வியின் அறிகுறியுமாகிய அக்கினியைத்,
देवाः	தெவாஃ	தேவர்கள், அல்லது, வேட்போர்கள்
जनयन्त	ஜநயந்த	கடைதலினால் உண்டாக்குகின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

வேள்விகளின் நாபியும், தனங்கட்குக் களஞ்சியமும், பெரியதும், ஆகுதி செய்யப்படுவதும், அல்லது, மழை, தண்ணீர், உடுக்கள் என்பன வற்றிற்குக் காரணவடிவமுமாகிய அக்கினியைத், துதிப்போர்கள் நன்கு தோத்திரஞ் செய்கின்றார்கள். அங்ஙனமே, உலக மனிதர்களுடன் சம்பந்த முற்றதும், வேள்வியை நடாத்துவதும், வேள்வியின் அறிகுறியுமாகிய அக்கினியை, வேட்போர்கள், அல்லது, தேவர்கள், கடைதலினால் உண்டாக்குகின்றார்கள் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

१ २ ३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ २

1141. **प्र वो मित्राय गायत वरुणाय विपा गिरा ।**

१ २ ३२ ३२

महिक्षत्रावृतं बृहत् ॥ १ ॥

ப்ர வொ மித்ராய காயத வருணாய விபா கிரா ।
மஹிக்ஷத்ராவ்ருதம் ப்ருஹத் ॥

அன்வயம்.

(हे मदीया ऋत्विजः !), वः, मित्राय, वरुणाय, विपा गिरा, प्रगायत, महिक्षत्रौ, ऋतं, बृहत् ॥

பதவுரை.

(हे मदीया ऋत्विजः !)	(ஹே மதீயா ரித்விஜஃ !)	எமது வேட்போர்களே !
वः	வஃ	நீங்கள்,
मित्राय	மித்ராய	மித்திரன் பொருட்டும்,
वरुणाय	வருணாய	வருணன் பொருட்டும்,

विपा गिरा	விவா கிரா	நிறைந்த வாக்கால்
प्रगायत	ப்ரகாயத	இனிது துதிப்பீர்களாக.
महिक्षत्रौ	மஹிக்ஷத்ரள	பேராற்றலுடைய இந்திரவருணர்களே! (நீங்கள்)
ऋतं	ரிதம்	வேள்வியிற் செய்கின்ற
बृहत्	ப்ருஹத்	அரிய துதியின் பொருட்டு வருவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—இரண்டாவது மூன்றில்—1. எசதர் ரிஷி.

எமது வேட்போர்களே! நீங்கள், மித்திரனையும், வருணனையும், பெருகிய தோத்திரத்தால் துதிப்பீர்களாக. துதியால் துதிப்பீர்களாக என்றது, பக்குவத்தாற் சமைப்பீர்களாக என்றுற் போன்றதாம். பேராற்றலுடைய மித்திர வருணர்களே! நீவிர், வேள்வியில் நன்கு துதித்தற் பொருட்டு வருவீர்களாக. அல்லது, மிகுந்த துதியைக் கேட்பீர்களாக. ஈண்டுக், கேட்பீர்களாக என்பது எஞ்சிநின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २

1142. सम्राजा या घृतयोनी मित्रश्चोभा वरुणश्च ।

३ २ ३ १ २ ३ २

देवा देवेषु प्रशस्ता ॥ २ ॥

ஸம்ராஜா யா க்⁴ருதயோனீ மித்ரஶ்சோபா⁴ வருணஶ்ச ।

தே³வா தே³வேஷு ப்ரஶஸ்தா ॥

அன்வயம்.

मित्रश्च, वरुणश्च, या उभा, सम्राजा, घृतयोनी, देवा, देवेषु, प्रशस्ता ॥

பதவுரை.

मित्रश्च	மித்ரஶ்ச	மித்திரன்
वरुणश्च	வருணஶ்ச	வருணன் என்னும்
या उभा	யா உபா⁴	எவ்விருவரும்,
सम्राजा	ஸம்ராஜா	அனைத்திற்குந் தலைவரும்
घृतयोनी	க்⁴ருதயோனீ	நீரை யுண்டாக்குபவரும்
देवा	தே³வா	பிரகாசிப்பவரும்

देवेषु	தெவெஷு	தேவர்களுக்குட்
प्रशस्ता	ப்ரஶஸ்தா	சிறந்தவருமாவாரோ, அவ் விருவரையுந் துதிப்பீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

அனைத்திற்கு மிறைவர்களும், நீரை யுண்டாக்குபவர்களும், பிரகாசிப்பவர்களும், தேவர்களுக்குட் போற்றத்தக்கவர்களும் மித்திரன், வருணன் என்னும் எவ்விருவர்களாவார்களோ, அவர்களைத் துதியால் போற்றுவீர்களாக என முந்தியதுடன் கூட்டுக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

१ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २
1143. ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य ।
१ २ ३ २ ३ १ २
महि वां क्षत्रं देवेषु ॥ ३–४ ॥

இருக்கு 5-6-1-3.

தா நஃ ஶக்தம் பார்தி்வஸ்ய மஹோ ராயோ தி்வ்யஸ்ய ।
மஹி வாம் க்ஷத்ரம் தெவெஷு ॥

அந்வயம்.

ताः, नः, पार्थिवस्य, दिव्यस्य, महः रायः, शक्तं, (हे देवौ !), देवेषु महि, वां, क्षत्रम् ॥

பதவுரை.

ताः	தாஃ	அந்த மித்திர வருண தேவர்கள்
नः	நஃ	எங்கட்குப்,
पार्थिवस्य	பார்தி்வஸ்ய	பூமியிலும்,
दिव्यस्य	தி்வ்யஸ்ய	வானிலுமுள்ள
महः रायः	மஹஃ ராயஃ	மிகுந்த தனங்களைக் கொடுப்பதற்குச்
शक्तं	ஶக்தம்	சமர்த்தர்களாவார்கள்.
(हे देवौ !)	(ஹெ தெவள !)	மித்திர வருண தேவர்களே !
देवेषु महि	தெவெஷு மஹி	தேவர்களுக்குட் போற்றத்தக்க
वां	வாம்	உங்களிருவருடைய
क्षत्रं	க்ஷத்ரம்	ஆற்றலையும் போற்றுகின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

அத் தேவதைகளிருவரும், பூமியின் சம்பந்தப்பட்டதும், வானுலக சம்பந்தப்பட்டதுமாகிய மிகுந்த தனத்தை எங்கட்குக் கொடுப்பதற்கு வல்லுநர்களாவார்கள். ஈண்டு வல்லுநர்கள் என்பது எஞ்சி நின்றது. தேவர்களுக்குள்ளும் கீர்த்திவாய்ந்த உங்களிருவரின் ஆற்றலைத் துதிக்கின்றேன் என்பதாம். ஈண்டுத் துதிக்கின்றேன் என்பது எஞ்சிநின்றது. (3)

மந்திரம் 7.

१ २र ३ २ ३२ ३१२
1144. इन्द्रायाहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
अण्वीभिस्तना पूतासः ॥ १ ॥

இந்த்ராயாஹி சித்ரபாநொ ஸுதா இமெ த்வாயவஃ ।
அண்வீபிஸ்தநா பூதாஸஃ ॥

அந்வயம்.

चित्रभानो, इन्द्र !, आयाहि, अण्वीभिः, सुताः, तना पूतासः, इमे, त्वायवः ॥

பதவுரை.

चित्रभानो	சித்ரபாநொ	அதிசயமாகிய வொளியையுடைய
इन्द्र !	இந்த்ர !	இந்திரனே ! நீ,
आयाहि	ஆயாஹி	இக்கருமத்திற்கு வருவாயாக.
अण्वीभिः	அண்வீபிஃ	வேட்போர்களின் விரல்களாற்
सुताः	ஸுதாஃ	பிழியப்பெற்றதும்
तना पूतासः	தநா பூதாஸஃ	எப்பொழுதும் புநித முடையதுமாகிய,
इमे	இமெ	இச்சோமம்
त्वायवः	த்வாயவஃ	உன்னுடையதேயாம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—மூன்றாவது மூன்றில்—1. மதுச்சந்தர் ரிஷி.

பலவகை யொளிகளையுடைய இந்திரனே ! நீ, இக்கருமத்திற்கு வருவாயாக. பிழியப்பெற்ற இச்சோமம், உன்னால் விரும்பப்பட்டதாயுள்ளதாம். எதனாற் பிழியப்பட்டதெனின் ? வேட்போர்களின் விரல்களாலென்க.

மூலத்தில் 'அண்வீபிः' என்றது விரல்களால் என்பதாம். 'அண்வீ' என்பது விரல்கள் என நிகண்டு கூறுகின்றதாமாதலினென்க. மற்றும், அச்சோமம் எப்பொழுதும் பவித்திரமாகவே யிருக்கின்றது, கம்பளியால் வடிக்கப்பெற்றதாமாதலின் என்க. (1)

மந்திரம் 8.

१ २र ३२३१ २र ३ १२
1145. इन्द्रायाहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः ।
२३ १२ ३१२
उप ब्रह्माणि वाघतः ॥ २ ॥

ஈந்த்ராயாஹி யியெஷிதொ விப்ரஜூதஃ ஸுதாவதஃ ।
உப ப்ரஹ்மாணி வாகதஃ ॥

அன்வயம்.

इन्द्र !, धिया इषितः, विप्रजूतः, सुतावतः, वाघतः, ब्रह्माणि, उप, आयाहि ॥

பதவுரை.

इन्द्र !	ஈந்த்ர !	இந்திரனே !
धिया इषितः	யிபா உஷிதஃ	அன்புடன் எனது புத்தியாற் செலுத்தியவனும்
विप्रजूतः	விப்ரஜூதஃ	வேட்போர்களால் ஏவப்பட்டவனுமாகிய நீ,
सुतावतः	ஸுதாவதஃ	பிழிந்துள்ள சோமரசத்தையுடைய
वाघतः	வாகதஃ	வேட்போர்களின்
ब्रह्माणि	ப்ரஹ்மாணி	வேதமாகிய துதிகளை
उप	உப	ஏற்றுக்கொள்வதற்கு
आयाहि	ஆயாஹி	வருவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

இந்திரனே ! நீ, இக் கருமத்திற்கு வருவாயாக. 'வாதः' என்பது 'வேட்போர்' என நிகண்டு கூறுகின்றது. எதன் பொருட்டெனின் ? வேட்போர்களின் வேதமாகிய துதிகளை ஏற்றுக் கொள்வதற்கு என்க. எத்தன்மையன் நீ, யெனின் ? எமது புத்தியாற் செலுத்தப்பட்டவன் என்க. அதாவது எமது பக்தியால் ஏவப்பட்டவன் என்பதாம். மற்றும், வேள்வித்

தலைவரால் அன்புடன் ஏவப்படுவதுபோல, ஏனைய துண்ணறிவுடைய வேட்போர்களாலும் ஏவப்பட்டவன் என்க. எவ் வண்ணமானவர்களின் துதியையெனின்? பிழிந்த சோமத்தோடு கூடியவர்களின் துதியை என்க. அவர்களுடைய துதியை ஏற்றுக்கொள்ளுதற் பொருட்டு வருவாயாக என முடித்துக்கொள்க என்பதாம். (2)

மந்திரம் 9.

१ २२३ १२ ३ २३ १२
1146. इन्द्रायाहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः ।
३ १ २ ३ १२
सुते दधिष्व नश्चनः ॥ ३–५ ॥

இருக்கு 1-3-4-6.

இந்த்³ராயாஹி தூ⁴தூ³ஜான உப ப்³ரஹ்மாணி ஹரிவ: ।
ஸு²தே த³தி⁴ஷ்வ நஶ்சன: ॥

அந்வயம்.

हरिवः इन्द्र !, ब्रह्माणि उप, तूतुजानः, आयाहि, सुते, नः चनः, दधिष्व ॥

பதவுரை.

हरिवः इन्द्र !	ஹரிவ: இந்த்³ர !	அரி, என்னுங் குதிரைகளையுடைய இந்திரனே ! நீ
ब्रह्माणि उप	ப்³ரஹ்மாணி உப	வேதமாகிய துதியை ஏற்றுக் கொள்வதற்கு
तूतुजानः	தூ⁴தூ³ஜான:	விரைவில்
आयाहि	ஆயாஹி	வருவாயாக.
सुते	ஸு²தே	சோமரசத்தைப் பிழிந்தவிடத்து
नः चनः	ந: அந:	எமது அவியாகிய அன்னத்தை
दधिष्व	த³தி⁴ஷ்வ	ஏற்றுக்கொள்வாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

அரி, என்பது இந்திரனுடைய குதிரைகளின் பெயராம். இவ்வாறே "அரி இந்திரனுடைய வெண்மை அக்கினி" என நிகண்டுங் கூறுகின்றது. ஆதலின், அரி, என்னுங் குதிரைகளையுடைய இந்திரனே! நீ, தோத்திரங்களை யேற்றுக்கொள்வதற்கு வருவாயாக. எத்தன்மையன் நீ யெனின்? வேகமுடையவனென்க. அத்தன்மையனாகிய நீ, சோமரசத்தைப் பிழிகின்ற

இக்கருமத்திற்கு வந்து, எமது அவியாகிய அன்னத்தை ஏற்றுக்கொள் வாயாக என்பதாம். ஈண்டு 'சந:' என்பது அன்னம் எனக் கூறுகின்றது நிகண்டு என்பதுமுணர்க. (3)

மந்திரம் 10.

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

1147. तमीडिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत् ।

३ २ ३ १ २ ३ १ २

कृष्णा कृणोति जिह्वया ॥ १ ॥

தமீடிஷ்வ யோ அர்சிஷா வநா விஶ்வா பரிஷ்வஜத் ।

கிருஷ்ணா கிருணோதி ஜிஹ்வயா ॥

அன்வயம்.

यः, अर्चिषा, विश्वा वना, परिष्वजत्, जिह्वया, कृष्णा, कृणोति, तं ईडिष्व ॥

பதவுரை.

यः	யः	எவ்வக்கினி
अर्चिषा	அர்சிஷா	சுவாலையாகிய ஒளியால்
विश्वा वना	விஶ்வா வநா	வனங்களனைத்தையுஞ்
परिष्वजत्	பரிஷ்வஜத்	சூழ்ந்து கொள்கின்றதோ, மற்றும், அதை
जिह्वया	ஜிஹ்வயா	சுவாலையால் எரித்துக்
कृष्णा	கிருஷ்ணா	கருமை நிறமுடையதாகச்
कृणोति	கிருணோதி	செய்கின்றதோ, (துதிப்போர்களே! நீவிர்)
तं ईडिष्व	தம் ஈடிஷ்வ	அவ்வக்கினியைத் துதிப்பீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—நான்காவது மூன்றில்—1. பரத்துவாசர் ரிஷி.

துதியாளர்களே, நீவிர்! அவ் வக்கினியைத் துதிப்பீர்களாக. (எவ்வக் கினியை யெனின்?) யாதொரு அக்கினி தனது சுவாலையாகிய ஒளியால் ஆரணியங்களனைத்தையுஞ் சுற்றிக் கொள்கின்றதோ, மற்றும், அவ்வனங் களை எரித்துக் கருகச் செய்கின்றதோ, அவ் வக்கினியை என்பதாம். (1)

மந்திரம் 11.

२ ३२ ३ १ २ ३१ २२ ३ १ २
1148. य इद्ध आ विवासति सुम्नमिन्द्रस्य मर्त्यः ।
३ १ २ ३१ २ ३२
द्युम्नाय सुतरा अपः ॥ २ ॥

य ऊ॒ ऋ॒ विवा॑स॒ति ॑ स्॒ऽउ॑म्॒ऽन्द्र॑स्य॒ मर्त्यः॑ ।
द्यु॒ऽउ॒म्नाय॑ स्॒ऽउ॒तरा॒ ऋ॒वः॑ ॥

அன்வயம்.

यः मर्त्यः, इद्धे, इन्द्रस्य, सुम्नं, आ विवासति, द्युम्नाय, सुतरा, अपः ॥

பதவுரை.

यः मर्त्यः	यः ऽमर्त्यः	ஏம் மனிதன்
इद्धे	ऊ॒ऽए	வளர்க்கப்பட்ட தீயில்
इन्द्रस्य	ऽइन्द्र॑स्य	இந்திரன் பொருட்டு,
सुम्नं	स्॒ऽउ॑म्नं	சுகத்தைக் கொடுக்கின்ற
आ विवासति	ऋ॒ विवा॑स॒ति	அவியை அர்ப்பிக்கின்றானே,
द्युम्नाय	द्यु॒ऽउ॒म्नाय	அவனது அன்னத்திற்கு,
सुतरा	स्॒ऽउ॒तरा	இனிது நீந்துதற்குரிய
अपः	ऋ॒वः	தண்ணீரை (இந்திரன்) உண்டாக்குவானாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

ஏம் மனிதன், வளர்த்த அக்கினியில் இந்திரனுக்குச் சுகத்தைக் கொடுக்கின்ற அவியை அர்ப்பிக்கின்றானே, அம் மனிதனுடைய அன்னத்தின் பொருட்டு இனிது நீந்தத்தக்க மழை நீரை இந்திரன் பெய்விப்பானாக என்பதாம். (2)

குறிப்பு—மூலத்திய இந்திரனுடைய என்னும் ஆறும் வேற்றுமை நான்காம் வேற்றுமையில் நின்றது.

மந்திரம் 12.

२ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३१२
1149. ता नो वाजवतीरिष आशून्पिपृतमर्वतः ।
१ २ ३ २ ३ १२
* एन्द्रमग्निं च वोढवे ॥ ३–६ ॥ இருக்கு 6-60-10-12.

इन्द्रमग्निञ्च, என்பது இருக்கு.

தா நொ வாஜவதீரிஷ ஆஶூந்விபூதமர்வதஃ ।
ஸந்த்ரமிந்ரம் ச வொஹவெ ॥

அந்வயம்.

(हे इन्द्राग्नी !,) ता, इन्द्रं, अग्निं च, आ वोढवे, वाजवतीः, इषः, आशून्, अर्वतः, नः, पिपृतम् ॥

பதவுரை.

(हे इन्द्राग्नी !)	(ஹெ இந்த்ராக்நீ !)	இந்திரன், அக்கினி, என்னுந் தேவதைகளே !
ता	தா	அத்தன்மைய நீங்கள்
इन्द्रं	இந்த்ரம்	இந்திரனுக்கும்,
अग्निं च	அக்நிம் ச	அக்கினிக்கும்,
आ वोढवे	ஆ வொஹவெ	பலவகையாகிய அவிகளைக் கொண்டுபோய்ச் சேர்ப்பதன் பொருட்டு,
वाजवतीः	வாஜவதீஃ	ஆற்றலுள்ள
इषः	இஷஃ	அன்னத்தையும்,
आशून्	ஆஶூந்	விரைவாய்ச் செல்லுகின்ற
अर्वतः	அர்வதஃ	குதிரையையும்,
नः	நஃ	எங்கட்குக்
पिपृतं	பிபூதம்	கொடுப்பீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

இந்திரன், அக்கினி, என்னும் அத்தகைய தேவதைகளே ! நீங்கள், வேண்டிய அன்னங்களையும், அல்லது, ஆற்றலுடைய அன்னங்களையும், விரைவாய்ச் செல்கின்ற குதிரைகளையும் எங்கட்குக் கொடுப்பீர்களாக. எதன் பொருட்டெனின் ! இந்திரன் அக்கினி என்னு மிவர்கட்குப் பலவகையான அவிகளைச் சேர்ப்பித்தற்பொருட்டு என்பதாம். (3)

மூன்றாவது கண்டம்

முற்றும்.

நான்காவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—4. அத்தியாயம்—8. கண்டம்—4.

ஐந்து மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

1 2 3 2 31 2 3 22 3

1150. प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतꣳ सखा

2 31 22 312

सख्युर्न प्र मिनाति सङ्गिरम् ।

12 323 123 12

मर्य्य इव युवतिभिः समर्षति सोम

312 312 32

कलशे शतयामना पथा ॥ १ ॥

ப்ரோ அயாஸீதிந்துரிந்த்ரஸ்ய நிஷ்க்ருதம் ஸகா
ஸக்யுர்ந ப்ர மினாதி ஸங்கிரம் ।
மர்ய இவ யுவதிபிஃ ஸமர்ஷதி ஸோம
கலஶே ஶதயாமநா பதா ॥

அன்வயம்.

इन्दुः, इन्द्रस्य, निष्कृतं, प्रो अयासीत्, सखा सख्युः, सङ्गिरं, न प्रमिनाति, मर्यः, युवतिभिः इव, सोमः, समर्षति, शतयामना, पथा कलशे, (गच्छति) ॥

பதவுரை.

इन्दुः	இந்துஃ	சோமம்,
इन्द्रस्य	இந்த்ரஸ்ய	இந்திரனுடைய
निष्कृतं	நிஷ்க்ருதம்	வயிறென்னுமிடத்தை
प्रो अयासीत्	ப்ரோ அயாஸீத்	நன்கு அடைகின்றது. அடைந்து
सखा सख्युः	ஸகா ஸக்யுஃ	மித்திரனுகிய இந்திரனுடைய
सङ्गिरं	ஸங்கிரம்	வயிற்றை
न प्रमिनाति	ந ப்ரமினாதி	தன்புறுத்தாததாகின்றது.
मर्यः	மர்யஃ	காளைப்பருவமுடைய மனிதன்,
युवतिभिः इव	யுவதிபிஃ இவ	பருவப்பெண்களுடன் கலப்பது போல்

सोमः	ஸொமஃ	சோமரசம்,
समर्षति	ஸமர்ஷதி	வசதீவரி, என்னும் நீருடன் கலக்கின்றது. பின்னர்,
शतयामना	ஶதயாமநா	நூற்றுக்கணக்கான சாமக்கிரிகளையுடைய தசாபவித்திரமென்னும் ஆடையின் வாயிலாக,
पथा कलशे	வயா கலஶெ	துரோண கலசமென்னுமொரு பாத்திரத்தின் வாயிலாகச்
(गच्छति)	(கச்சதி)	(செல்கின்றது.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1. சிகதாநிவாரி ரிஷிகணம்.

சோமரசம், இந்திரனுடைய புசிதமாகிய வயிற்றை யடைகின்றது. அடைந்து வயிற்றைத் துன்புறுத்தாததாகின்றது. மற்றும், காளைப்பருவத்தன் பருவப்பெண்ணிடத்திற் கலத்தல் போன்று, இச் சோமரசமும், கலத்தற்குரிய 'வசதீவரி' என்னும் ஆற்று நீருடன் ஒன்று கலக்கின்றது. பிழிந்த பின்னர், சோமரசம் நூற்றுக்கணக்கான சாதனங்களுடன் கூடிய தசாபவித்திரமென்னும் வஸ்திரத்தின் வாயிலாக துரோண கலசமென்னும் பெயர் பூண்ட, கீழே வைத்துள்ள ஒரு பாத்திரத்தில் விழுகின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

२ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १२ ३ १२

1151. प्र वो धियो मन्द्रयुवो विपन्युवः पनस्युवः संवरणेष्वक्रमुः ।

२ ३ १ २ ३क २ २३ २ ३ २ ३ २३ २३ १२

हरिं क्रीडन्तमभ्यनूषत स्तुभोऽभिधेनवः पयसेदशिश्रयुः ॥ २ ॥

ப்ர வொ யியொ மந்த்ரயுவொ விபந்யுவஃ பநஸ்யுவஃ

[ஸம்வரணேஷ்வக்ரமுஃ ।

ஹரிம் க்ரீடந்தமப்யநூஷத ஸ்துபோऽபிதேநவஃ பயஸேதஶிஶ்ரயுஃ ॥

அன்வயம்.

हे सोमाः !, वः, धियः, मन्द्रयुवः, पनस्युवः, विपन्युवः, संवरणेषु, प्राक्रमुः, स्तुभः, हरिं, क्रीडन्तं, अभ्यनूषत, धेनवः, पयसा, इत्, अभि अशिश्रयुः ॥

பதவுரை.

हे सोमाः!	ஹெ ஸொமாஃ!	சோமமே!
वः	வஃ	உன்னைத்
धियः	யீயஃ	தாங்குகின்றவர்களும்,
मन्द्रयुवः	மந்த்ரயுவஃ	களிப்புண்டாக்குஞ் சத்தத்தை விரும்பியவர்களும்,
पनस्युवः	பநஸ்யுவஃ	தோத்திரத்தை விழைந்தவர்களுமான
विपन्युवः	விபந்யுவஃ	துதிப்போர்கள்,
संचरणेषु	ஸம்சரணேஷு	வேள்வி மண்டபங்களில்
प्राक्षुः	ப்ராக்ஷுஃ	கருமங்களைச் செய்யத் தொடங்குகின்றனர்.
स्तुभः	ஸ்துபஃ	துதிப்போர்களும்,
हरिं	ஹரிம்	பசுமை நிறமுடையதும்,
क्रीडन्तं	க்ரீடந்தம்	பல்வகை விளையாட்டை யுடையதுமாகிய சோமத்தைத்
अभ्यनूषत	அப்யநூஷத	துதிக்கின்றார்கள்.
धेनवः	தெநவஃ	ஆனினங்களும்
पयसा	பயஸா	தனது பாலால்
इत्	இத்	இச் சோமத்தைப்
अभि अशिश्रयुः	அபி அசிச்ரயுஃ	பெருகச் செய்கின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

சோமமே! நின்னைத் தாங்குகின்றவர்களும், களிப்பைக் கொடுக்கின்ற சத்தத்தை விரும்புவோர்களுமான துதிப்போர்கள், புல் முதலியவைகளால் மூடப்பட்ட வேள்விச்சாலைகளில் கருமங்களைத் தொடங்குகின்றனர். அதுவே கூறப்படுகின்றது:—துதியாளர்கள், பசுமை நிறமுடையதும், விளையாடுஞ் சிலமுடையதுமாகிய சோமத்தைத் துதிக்கின்றார்கள். மற்றும், பசுக்கள் தமது பாலால் இச்சோமத்தை மிகுதியாக்குகின்றன என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

१ २ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १२ ३ १२ ३ १ २
1152. आ नः सोम संयतं पिप्युषीमिषमिन्दो पवस्व पवमान * ऊर्मिणा ।
२ ३ १ २ ३ २उ ३ १२ ३ १२र ३ १२ ३ १ २
या नो दोहते त्रिरहन्नसश्चुषी क्षुमद्वाजवन्मधुमत्सुवीर्यम् ॥ ३–७ ॥

இருக்கு. 9-68-16-28.

ஆ நஃ ஸொம ஸம்யதம் பிப்யுஷீமிஷமிந்தோ பவஸ்வ பவமாந
[ஊர்மிணா ।
யா நொ தொஹதெ த்ரிரஹந்நஸஶ்சுஷீ க்ஷுமத்வாஜவந்மது
[மத்ஸுவீர்யம் ॥

அந்வயம்.

इन्दो !, सोम पवमान !, नः संयतं, पिप्युषीं इषं, ऊर्मिणा, पवस्व, या (इट्), नः अहन्, त्रिः असश्चुषी, क्षुमत्, वाजवत्, मधुमत्, सुवीर्यं, दोहते ॥

பதவுரை.

इन्दो !	உந்தோ !	விளங்குகின்றோய்,
सोम ! पवमान !	ஸொம ! பவமாந !	புநிதமுடையோய் ! சோமமே ! நீ,
नः संयतं	நஃ ஸம்யதம்	நாங்கள் தேடிய
पिप्युषीं इषं	பிப்யுஷீம் உஷம்	மிகுந்த அன்னத்தை,
ऊर्मिणा	ஊர்மிணா	ஒழுகுகின்ற உனது இரசத்தால்
पवस्व	பவஸ்வ	புநிதஞ் செய்வாயாக.
या (इट्)	யா (உட்)	எவ் வன்னம்,
नः अहन्	நஃ அஹந்	எங்களுடைய தினத்தின்
त्रिः असश्चुषी	த்ரிஃ அஸஶ்சுஷீ	மூவேளைக் கருமங்களிலுங் கேடின்றியதாய்,
क्षुमत्	க்ஷுமத்	யாண்டும் பிரசித்தியுடையவனும்,
वाजवत्	வாஜவத்	ஆற்றலுடையவனும்,
मधुमत्	மதுமத்	அழகிய
सुवीर्यं	ஸுவீர்யம்	நல்ல வீரமுடையவனுமாகிய
दोहते	தொஹதெ	புத்திரனைக் கொடுக்கின்றதோ, (அதைப் புநிதமாக்குவாயாக) என்பதாம்.

* ऊर्मिणा अध्रियम्, என்பது பாட பேதம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

பிரகாசிக்கின்றதும், புனிதமுடையதுமாகிய சோமமே! நீ, நாங்கள் தேடிய மிகுந்த அன்னத்தைப், பெருகுகின்ற உனது இரசத்தால் அடைவாயாக. (எவ்வன்னத்தை யெனின்?) எங்களுடைய மூவேளைகளிற் செய்கின்ற வேள்விக் கிரியைகளில் தடையிலாது கொடுக்கப்படுகின்ற அவ்வன்னத்தை யென்க. எதைக் கொடுக்கின்றதெனின்? கீர்த்தி, ஆற்றல், நல்ல வீரம் என்பவைகளையுடைய புத்திரனை என்பதாம். (2)

மந்திரம் 4.

२ २ १ २र ३ २ ३ १ २ २ १२

1153. नकिष्टं कर्मणा नशद्यश्चकार सदावृधम् ।

२ ३ २ ३२ ३ १ २ ३१ २ ३१२ ३ १ २र

इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्त्तमृभ्वसमदृष्टं * धृष्णुमोजसा ॥ १ ॥

நகிஷ்டம் கர்மணா நஶத்யஶ்சகார ஸதாவ்ருதம் ।

இந்த்ரம் ந யஜ்ஞைர்விஶ்வகூர்த்தமுப்வஸமதஷ்டம் த்ருஷ்ணுமோஜஸா ॥

அன்வயம்.

यः, सदावृधं, विश्वगूर्त्तं, ऋभ्वसं, अदृष्टं, ओजसा, धृष्णुं, इन्द्रं, न, यज्ञैः चकार, तं, कर्मणा, नकिः नशत् ॥

பதவுரை.

यः	யः	எவன்
सदावृधं	ஸதாவ்ருதம்	எப்போதும் வளர்கின்றவனும்,
विश्वगूर्त्तं	விஶ்வகூர்த்தம்	யாவர்க்குள்ளும் போற்றத்தக்கவனும்,
ऋभ्वसं	ஊப்வஸம்	பெரியோனும்,
अदृष्टं	அதஷ்டம்	பகைஞரால் தாழ்த்தப்படாதவனும்,
ओजसा	ஓஜஸா	தனது வலியால்
धृष्णुं	த்ருஷ்ணும்	சத்துருவை யடக்குபவனுமாகிய
इन्द्रं	இந்த்ரம்	இந்திரனை,
न	ந	இப்போது

* धृष्णुमोजसम्, என்பது பாட பேதம்.

यज्ञैः चकार	யஜ்ஞைஃ சகார	வேள்விகளால் அநுகூலஞ்செய்து கொள்கின்றானோ,
तं	தம்	அவனைக்,
कर्मणा	கர்மணா	கொல்லுதல் முதலிய தொழில்களால்
नकिः नशत्	நகிஃ நஶத்	மற்றொருவன் அடக்கமாட்டான்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—3. புருஹன்ம ரிஷி. பெருங்கீதமாகிய இரண்டாஞ் சூக்தத்தில்—(1).

கொல்லவிரும்பிய மற்றொருவன், அவனைக் கொல்லுந் தொழில் முதலியவைகளால் துன்புறுத்தமாட்டான். எவனையெனின்? எவன் வேள்விகளால் இந்திரனை அநுகூலனாக்கிக் கொண்டனனோ, அவனை யென்க. எவ்விதனான இந்திரனையெனின்! இடையறாது வளர்பவனும், யாவராலும் போற்றப்படுபவனும், பெரியோனும் ஆனவனை யென்க. மற்றும், பகைவரால் அடக்கமுடியாதோனும், பகைவரை யடக்குவோனுமானவனை அநுகூலனாக்கிக்கொண்டவன் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 5.

१ २ ३१ २र ३ १ २र ३ १ २३ १ २
1154. अषाढमुग्रं पृतनासु सासहिं यस्मिन्मही रुरुज्रयः ।
२ ३ २ ३ १ २ ३ २३ १ २
सं धेनवो जायमाने अनोनवु* र्द्यावः क्षामीरनोनवुः ॥ २ ॥

இருக்கு 8-70-3-4.

அஷாஶமுக்ரம் ப்ருதநாஸு ஸாஸஹிம் யஸ்மிந்மஹீ ரூரூஜ்ரயஃ ।
ஸம்தெநவொ ஜாயமாநெ அநொநவுர்த்யாவஃ க்ஷாமீரநொநவுஃ ॥

அந்வயம்.

अषाढं, उग्रं, पृतनासु, सासहिं, यस्मिन् जायमाने, महीः, उरुज्रयः, धेनवः, समनोनवुः, द्यावः, क्षामीः, समनोनवुः ॥

---

* द्यावः क्षामः, என்பது பாட பேதம்.

பதவுரை.

अषाढं	சுஷாடம்	பொறுக்கமுடியாததும்,
उग्रं	உக்ரம்	பராக்கிரம முடையதுமாகிய
पृतनासु	வ்ருதநாஸு	பகைவரின், சேனையை
सासहिं	ஸாஸஹிம்	அடக்குகின்ற இந்திரனைத் துதித்கின்றேன்.
यस्मिन् जायमाने	யஸ்மிந ஜாயமாநெ	எவ்விந்திரன் வெளிப்பட்டவிடத்து
महीः	மஹீஃ	மிக
उरूत्रयः	உரூத்ரயஃ	வேகமுள்ள
धेनवः	தெநவஃ	கோக்கள்
समनोनवुः	ஸமநோநவுஃ	வணங்குகின்றனவோ,
द्यावः	த்யாவஃ	வானுலகமும்
क्षामीः	க்ஷாமீஃ	மண்ணுலகமும்
समनोनवुः	ஸமநோநவுஃ	வணங்குகின்றதோ, (அவ்விந்திரனைத் துதிக்கின்றேன் என முடிக்க.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

ஈண்டுத், தாங்கமுடியாத பராக்கிரமமுடைய பகைவர்களின் சேனைகளை யடக்குகின்ற இந்திரனைத் துதிக்கின்றேன் என்பது பொருள். எவ்விந்திரன் வெளிப்படும்போது பேராற்றலுள்ள கோக்களும், அவிமுதலிய வைகளாற் பிரியங்கொடுக்கின்ற ஆடுகளும், அல்லது, பாற்பசுக்களும் நன்கு துதிக்கின்றனவோ, அவ்விந்திரனை யெனமுடிக்க. அங்குள்ள உயிர்களனைத்தும் எவ்விந்திரனை வணங்குகின்றனவோ அவ்விந்திரன் என்பது பொருள். (2)

நான்காவது கண்டம்

முற்றும்.

ஐந்தாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—4. அத்தியாயம்—8. கண்டம்—5.

எட்டு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१ २३ १ २र २ २ ३ १ २
1155. सखाय आ निषीदत पुनानाय प्रगायत ।
२ ३ २ ३१ २र ३ २
शिशुं न यज्ञैः परिभूषत श्रिये ॥ १ ॥

ஸவாய ஆ நிஷீதத வ்ரு நாநாய ப்ர கா யத ।
ஶிஶும் ந யஜ்ஞைஃ வரிஹ்ருஷத ஶ்ரியை ॥

அந்வயம்.

सखायः !, आ निषीदत, पुनानाय, प्रगायत, शिशुं न, यज्ञैः, श्रिये, परिभूषत ॥

பதவுரை.

सखायः !	ஸவாயः !	நண்பர்களான வேட்போர்களே ! நீவிர்,
आ निषीदत	ஆ நிஷீதத	தோத்திரஞ் செய்தற் பொருட்டு உட்காருவீர்களாக.
पुनानाय	புநாநாய	சோமத்தின் பொருட்டு
प्रगायत	ப்ர கா யத	இனிய துதியைப் பாடுவீர்களாக. (துதிக்கப்பட்ட சோமத்தை)
शिशुं न	ஶிஶும் ந	பிதா குழந்தையை அலங்கரிப்பது போன்று
यज्ञैः	யஜ்ஞைஃ	வேட்பதற்குரிய அவிமுதலிய பொருள்களால்
श्रिये	ஶ்ரியை	அழகுமிகுமாறு
परिभूषत	பரிஹ்ருஷத	நன்கு அலங்கரிப்பீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1. நாரதர் ரிஷி.

மித்திரர்களான துதிப்போர்காள்! வேட்போர்காள்! நீவிர், துதிப்பதற்கு அமர்வீர்களாக. பின்னர், சோமத்தின் பொருட்டு நன்கு தோத்திரஞ் செய்வீர்களாக. அதன்பின்னர் துதிக்கப்பெற்ற சோமத்தை, வேட்பதற்குரிய அவிழுதலியவைகளால் அழகுறுவதற்கு நன்கு அலங்காரஞ் செய்வீர்களாக. அதிலுவமை :—பிதா புத்திரனை அணிகளால் அலங்கரித்தல் போன்று என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१ २ ३ २उ ३१ २ ३ १ २ ३ १२
1156. समीं वत्सं न मातृभिः सृजता गयसाधनम् ।
३ २ १२ ३ १ २र
देवाव्यांऽमदमभि द्विशवसम् ॥ २ ॥

ஸமீம் வத்ஸம் ந மாதৃபிஃ ஸৃஜதா கயஸாதனம் ।
தெவாவ்யாம் மதமபி த்விஶவஸம் ॥

அந்வயம்.

हे ऋत्विजः !, गयसाधनं, देवाव्यं, मदं, द्विशवसं, ईम्, मातृभिः, वत्सं न, अभिसंसृजत ॥

பதவுரை.

(हे ऋत्विजः !)	(ஹெ ரித்விஜஃ !)	(வேட்போர்களே ! நீங்கள்)
गयसाधनं	கயஸாதனம்	இல்லிற்கதுகூலமாகிய
देवाव्यं	தெவாவ்யம்	தேவதைக்குக்
मदं	மதம்	களிப்பை யுண்டாக்குவதும்,
द्विशवसं	த்விஶவஸம்	வானுலக மண்ணுலகங்களிரண்டின் ஆற்றலை வளர்ப்பதுமாகிய
ईम्	ஈம்	இச்சோமத்தை,
मातृभिः	மாதৃபிஃ	அன்னைகளுடன்
वत्सं न	வத்ஸம் ந	குழந்தையைச் சேர்ப்பது போன்று,
अभिसंसृजत	அபிஸம்ஸৃஜத	'வசதீவரி' என்னும் நீருடன் சேர்ப்பீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

வேட்போர்காள்! நீவிர், இல்லத்திற்குச் சாதனமாகிய இச்சோமத்தை, அன்னையாகியதும் 'வசதீவரி' என்னும் பெயர் கொண்டதும், நிழற்பட்டதாய் ஓடுகின்றதுமாகிய ஆற்று நீருடன் நன்கு சேர்ப்பீர்களாக. எவ்வாறெனின்? மாதாவான கோக்களுடன் கன்றைச் சேர்ப்பது போன்றென்க. எத்தன்மைய சோமரசத்தை யெனின்? தேவர்களைப் பாதுகாக்கின்ற மதத்தைக் கொடுப்பதும், இரட்டித்த வேகமுடையதும், அல்லது, பேராற்றலுடையதுமாகிய சோமத்தை யென்க. அல்லது, இரண்டுலகத்தும், தேவர்களும், மனிதர்களும் சோமத்தால் நிலைத்திருக்கின்றார்கள் என்பது பொருள். அவர்களை, அவி கொடுக்கின்ற தன்மையால் வளர்க்கின்ற அச்சோமத்தைச் சேர்ப்பாயாக என்பதாம். (2)

குறிப்பு.—ஓடும் ஆற்றில், மரத்தின் நிழற்பட்டு, அல்லது, தனதுடம்பின் நிழற்பட்டெடுத்த, நீர் 'வசதீவரி' என்னும் பெயருடையதாம்.

மந்திரம் 3.

३ १ २ ३१ २ ३ २ ३ १ २
1157. पुनाता दक्षसाधनं यथा शर्द्धाय वीतये ।
१ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २
यथा मित्राय वरुणाय * शन्तमम् ॥ ३–९ ॥

இருக்கு 9-104-1-3.

ப்ருநாதா தக்ஷஸாதநம் யதா ஶர்த்தாய வீதயே ।
யதா மித்ராய வருணாய ஶந்தமம் ॥

அந்வயம்.

शर्द्धाय, वीतये, मित्राय, वरुणाय, यथा शन्तमं, दक्षसाधनं, पुनाता ॥

பதவுரை.

शर्द्धाय	ஶர்த்தாய	வேகநிமித்தமாய்த்
वीतये	வீதயே	தேவதைகள் அருந்துவதற்கும்,
मित्राय	மித்ராய	மித்திர தேவதைக்கும்,
वरुणाय	வருணாய	வருண தேவதைக்கும்,
यथा शन्तमं	யதா ஶந்தமம்	இன்பங் கொடுக்குமாறு,
दक्षसाधनं	தக்ஷஸாதநம்	ஆற்றலுக்குச் சாதனமாகிய சோமத்தைப்
पुनाता	ப்ருநாதா	புநிதமாக்குவீர்களாக என்க.

* शन्तमः, என்பது பாட பேதம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

ஆற்றலுக்குச் சாதனமாகிய, அல்லது, தனம் பெருகுவதற்குச் சாதனமாகிய சோமத்தைப் புனிதமாக்குவீர்களாக என்பது பொருள். வேகத்தின் பொருட்டும், தேவர்கள் அருந்துவதற்கும், உள்ளவாறே மித்திரனுக்கும், வருணனுக்கும் மிகுந்த இன்பமாமாறும் புனிதஞ் செய்வீர்களாக என்பதாம்.

மந்திரம் 4.

२ ३क २र ३१२ ३२ ३२३ २उ ३१२

1158. *प्रवाज्यक्षाः सहस्रधारस्तिरः पवित्रं वि वारमव्यम् ॥ ४ ॥

ப்ரவாஜ்யக்ஷாஃ ஸஹஸ்ரதாரஸ்திரஃ பவித்ரம் வி வாரமவ்யம் ॥

அன்வயம்.

वाजी, सहस्रधारः, अव्यं वारं, पवित्रं तिरः, वि प्राक्षाः ॥

பதவுரை.

वाजी	வாஜீ	ஆற்றலுடையதும்,
सहस्रधारः	ஸஹஸ்ரதாரஃ	ஆயிரக்கணக்கான தாரைகளை யுடையதுமாகிய சோமரசம்,
अव्यं वारं	அவ்யம் வாரம்	கம்பளியினது மயிர்களின்வாயிலாக
पवित्रं तिरः	பவித்ரம் திரஃ	வடிக்கப்பட்டுப்
वि प्राक्षाः	வி ப்ராக்ஷாஃ	பலவகையாய் ஒழுகுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—மூன்று வடிவ இருபதங் கொண்டதில்—1.
ஐசுவர்கள், அக்ரயதிஷ்டர்கள் இருடிகள்.

ஆற்றலுடையதும், அல்லது, வேகமுடையதும் எண்ணிறந்த தாரைகளை யுடையதுமாகிய சோமம், ஆட்டின் மயிர்களாலாய கம்பளியால் வடிக்கப் பட்டுப் பலவகையாய் ஒழுகுகின்றது என்பதாம். (1)

---

* प्रसुवानः, என்பது பாட பேதம்.

மந்திரம் 5.

२ ३क२र ३१२ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
1159. स वाज्यक्षाः सहस्ररेता अद्भिर्मृजानो गोभिः श्रीणानः ॥ २ ॥

ஸ வாஜ்யக்ஷாஃ ஸஹஸ்ரரெதா அத்பிர்மூஜாநொ கொபிஃ
[ஸ்ரீணாநஃ ॥

அந்வயம்.

वाजी, सहस्ररेताः, अद्भिः, मृजानः, गोभिः, श्रीणानः सः, अक्षाः ॥

பதவுரை.

वाजी	வாஜீ	ஆற்றலுடையதும்
सहस्ररेताः	ஸஹஸ்ரரெதாஃ	ஆயிரக்கணக்கான வீரியங்களை யுடையதும், அல்லது, நீரை யுடையதும்,
अद्भिः	அத்பிஃ	'வசதீவரி' என்னும் ஆற்று நீராற்
मृजानः	மூஜாநஃ	கழுவப்பட்டதும்,
गोभिः	கொபிஃ	ஆவின் பால் முதலியவற்றுடன்
श्रीणानः सः	ஸ்ரீணாநஃ ஸஃ	கூடியதுமாகிய அச் சோமரசம்,
अक्षाः	அக்ஷாஃ	ஒழுகுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

அச்சோமரசம் ஒழுகுகின்றது. அஃது எத்தன்மையதெனின்? ஆற்றலுடையதும் பலவகை வீரியங்களையுடைய 'வசதீவரி' என்னும் ஆற்று நீராற் சுத்தம் பண்ணப்பெற்றதும், ஆவின் பால் முதலியவைகளுடன் கூடியதுமாமென்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ २
1160. प्र सोम याहीन्द्रस्य कुक्षा नृभिर्येमाणो अद्रिभिः सुतः ॥ ३–१० ॥

இருக்கு 9-109-16-18.

ப்ர ஸொம யாஹீந்த்ரஸ்ய கூக்ஷா ந்ருபிர்யெமாணொ
[அத்ரிபிஃ ஸுதஃ ॥

அந்வயம்.

हे सोम!, नृभिः, येमानः, अद्रिभिः, सुतः, इन्द्रस्य कुक्षा, प्रयाहि ॥

பதவுரை.

हे सोम !	ஹெ ஸொம !	சோமரசமே !
मृभिः	ம்ருபிஃ	வேட்போர்களால்
येमानः	யெமானஃ	நியமித்த
अद्रिभिः	அத்ரிபிஃ	கற்களால்
सुतः	ஸுதஃ	இடித்துப் பிழியப்பட்ட நீ,
इन्द्रस्य कुक्षा	இந்த்ரஸ்ய குக்ஷா	இந்திரனுடைய வயிறென்னுங் கலசத்திற்
प्रयाहि	ப்ரயாஹி	புகுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

சோமரசமே ! நீ, வேட்போர்களால் நியமிக்கப்பட்ட கற்களால் இடித்துப் பிழியப்பட்டு இந்திரனுடைய வயிற்றில், அல்லது, இந்திரனுடைய வயிறென்னுங் கலசத்தில் நன்கு சேர்வாயாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 7.

२र ३२३ १ २ ३१२ ३२
1161. ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे ।
२ ३१ २३ १२
ये वादः शर्यणावति ॥ १ ॥

யெ ஸொமாஸஃ பராவதி யெ அவாவதி ஸுன்விரெ ।
யெ வாதஃ ஶர்யணாவதி ॥

அன்வயம்.

ये सोमासः, परावति, ये अर्वावति, सुन्विरे, वा ये अदः, शर्यणावति ॥

பதவுரை.

ये सोमासः	யெ ஸொமாஸஃ	யாதொரு சோமரசம்
परावति	பராவதி	மிகத் தூரத்திலும்
ये अर्वावति	யெ அவாவதி	மற்றும், யாதொன்று சமீபத்திலும்
सुन्विरे	ஸுன்விரெ	பிழியப்படுகின்றதோ

वा ये अदः	வா யெ அதஃ	மற்றும், யாதொரு சோமரசம் குருக்ஷேத்திரத்தின் நடுப்பாதியில்
शर्यणावति	ஶயஂணாவதி	'சர்யணாவதி' என்னும் சோமமுள்ள பொய்கையில் பிழியப்படுகின்றதோ, (அது விரும்பியதைக் கொடுக்குக.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட மூன்றாவது சூக்தத்தில்—1. வாருணி, அல்லது, பிருகு, அல்லது, சமதக்கினி ரிஷி.

இவ்விரண்டு இருக்குகளால் எல்லா விடத்திலும் சோமம் பிழிதல் (வழக்கில்) இருக்கின்றதெனக் கூறப்படுகின்றது:—யாதொரு சோமம் மிகத் தூரமாகிய விடத்திலும், மற்றும், சமீபமாகிய விடத்திலும் பிழியப்படுகின்றதோ, யாதொரு சோமம் குருக்ஷேத்திரத்தின் நடுப்பாதியில் உள்ள 'சர்யணாவதி' என்னும் இன்சுவையுடைய சோமமுள்ள பொய்கையின்பால் இந்திரன் பொருட்டுப் பிழியப்படுகின்றதோ, அஃது எங்கட்கு விரும்பிய பயனைத் தருவதாகுக, என மேலே சேர்த்துக்கொள்க என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३क २र
1162. य आर्जीकेषु कृत्वसु ये मध्ये पस्त्यानाम् ।
२ ३ १२ ३ १ २
ये वा जनेषु पञ्चसु ॥ २ ॥

ய ஆர்ஜீகெஷு க்ருத்வஸு யெ மத்யெ பஸ்த்யாநாம் ।
யெ வா ஜநெஷு பஞ்சஸு ॥

அந்வயம்.

ये आर्जीकेषु, ये कृत्वसु, पस्त्यानां मध्ये, वा ये पञ्चसु जनेषु ॥

பதவுரை.

ये आर्जीकेषु	யெ ஆர்ஜீகெஷு	யாதொரு சோமம், அருகில் நேராகிய விடங்களிலும்,
ये कृत्वसु	யெ க்ருத்வஸு	யாதொன்று, கருமமே முதன்மையாயுள்ள விடத்திலும்,

परस्यानां मध्ये	वञ्ज्यानाम् अयेज्य	சரஸ்வதி முதலிய நதிகளுக்கருகிலும்,
वा ये पञ्चसु जनेषु	वा ये वनुषे ज्ञनेषु	எது, நிஷாதர் என்பவரை ஐந்தாமவராய்க்கொண்ட நான்குவகை மனிதர்களாலும் பிழியப்படுகின்றது மாமோ, அது, விரும்பியபயனைக் கொடுக்குக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

யாதொரு சோமம், நேராகிய அருகிலுள்ளவிடத்திற் பிழியப்படுகின்றதோ, அவ்வாறே, கருமங்கள் முக்கியமானவிடத்திற் பிழியப்படுகின்றதோ, அன்றியும், சரஸ்வதி முதலிய நதிகளின் நடுவிலும், அருகிலும் பிழியப்படுகின்றதோ, மற்றும் நிஷாதர் என்னும் ஒருவகை மனிதரை ஐந்தாமவராகவுடைய நால்வகை மக்களாலும் யாதொரு சோமம் பிழியப்படுகின்றதோ, அச் சோமம் எங்கட்குப் பயனைக் கொடுப்பதாகுக என மேற்கூட்டுக என்பதாம்.

"இருடிகள் நதிக்கரையில் சத்திரவேள்வியை யடைந்திருந்தனர்" என்னும் வாக்கியத்தில் நதிக்கரையில் வேள்வி செய்தமை கூறப்பட்டிருத்தலுங் காண்க. (2)

மந்திரம் 9.

१ २ ३ ३२उ ३ १२ ३ २ ३ १२

1163. **ते नो वृष्टिं दिवस्परि पवन्तामा सुवीर्यम् ।**

२ ३ ३ २ ३ १ २

***स्वाना देवास इन्दवः ॥ ३–११ ॥**

இருக்கு 9-65-22-24.

ते नो वृष्टिं धिषणे वनुष्यतां सुवीर्यं पवन्ताम् ।
स्वाना देवास इन्दवः ॥

அன்வயம்.

स्वानाः, देवासः, इन्दवः ते, नः, दिवस्परि, वृष्टिं, सुवीर्यं, आपवन्ताम् ॥

பதவுரை.

स्वानाः	ஸ்வாநாஃ	பிழியப்பட்டதும்
देवासः	தெவாஸஃ	விளங்குகின்றதும்
इन्दवः ते	இந்தவஃ தெ	பாண்டத்திலொழுகுவதுமாகிய அச் சோமரசம்,

* सुवानाः, என்பது பாட பேதம்,

नः	நः	எங்களுக்கு
दिवस्परि	திவஷ்பரி	வானுலகிலிருந்து
वृष्टिं	வ்ருஷ்டிம்	மழையையும்,
सुवीर्यं	ஸுவீர்யம்	வீரத்தன்மையுடைய புத்திரனையும்
आपवन्तां	ஆபவந்தாம்	கொடுப்பதாகுக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

ஈண்டுப் பிழியப்பட்டதும், திகியால் பிரகாசிக்கின்றதும், தெய்வத்தன்மையுடையதும், நிரகம் என்னும் பாத்திரங்களில் வீழ்கின்றதுமாகிய அச்சோமரசம், எங்கட்கு, அந்தரிட்சத்தினின்று, அல்லது, ஆதித்தனிடத்தினின்று, மழையைக்கொடுக்க. மற்றும், நல்ல ஆற்றலையுடைய புத்திரனையும், அல்லது, தன முதலியவைகளையும் கொடுக்குக. உண்மையாய், வேள்வித் தலைவன் சோமரசத்தால் வேண்டிய பலன்களை யடைகின்றன் என்பதாம். (3)

"தீயிலிட்ட ஆகுதி இரவியின் பாற்சென்று நிலைக்கின்றது. இரவியினின்று மழை யுண்டாகின்றது" என மதுவந் கூறியுள்ளார். ஆதலின் இரவியும் மழைக்கோர் காரணமா மென்பது பொருந்துமாறறிக.

ஐந்தாவது கண்டம்

முற்றும்.

ஆறாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—4. அத்தியாயம்—8. கண்டம்—6.

ஒன்பது மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
1164. आ ते वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात् ।
२ ३ १ २ ३ २
अग्ने त्वां * कामये गिरा ॥ १ ॥

* कामया, என்பது பாட பேதம்.

சூ தெ வஷ்தோ உஷோ யஉதுஷா ஜிதயஹாஸ் ।
சுஹ்ரு சுவாம் காமயே கிரா ॥

அந்வயம்.

அக்னேः !, வத்ஸः, த்வாம், காமயே, கிரா, தே மனः, பரமாச்சித், ஸதஸ்தாத், ஆயமத் ॥

பதவுரை.

அக்னேः !	சுஹ்ருः !	அக்கினியே !
வத்ஸः	வத்ஸः	வச்ச ரிஷியானவர்
த்வாம்	சுவாம்	நினக்கு
காமயே	காமயே	விருப்பமுள்ள
கிரா	கிரா	துதியால்
தே மனः	தெ உநः	உன்னுடைய மனதை,
பரமாச்சித்	வரஷாத்சிக்	சிறந்த
ஸதஸ்தாத்	ஸதஸ்தாக்	வானிடத்திலிருந்து
ஆயமத்	ஆயமக்	இழுத்துக்கொள்கின்றார்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—மூன்றாவுள்ள முதலாவது சூக்தத்தில்—1. வச்சர் ரிஷி.

அக்கினியே ! உன்னுடைய மனதை, வச்ச ரிஷியானவர், மிகமேம் பட்ட வானுலகத்தினின்று இழுத்துக் கொள்கின்றனர். எச் சாதனத்தாலெனின் ? நினக்கு விருப்பமாகிய தோத்திரத்தால் என்க. அல்லது, துதியால் உன்னை விரும்புகின்றேன் எனினுமாம் என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

३ २ ३ १ २ ३ २ १ २ १ २ ३ १ २
1165. पुरुत्रा हि सदङ्ङसि * दिशो विश्वा अनु प्रभुः ।
३ १ २
समत्सु त्वा हवामहे ॥ २ ॥

வரூத்ரா ஹி ஸத்ருங்ஙஸி திஶோ விஶ்வா அநு ப்ரபுः ।
ஸமத்ஸு த்வா ஹவாமஹே ॥

* विदिशः, என்பது பாட பேதம்.

அந்வயம்.

(अग्ने!) पुरुत्रा हि, सदृङ् असि, विश्वा दिशः, अनु प्रभुः, त्वा, समत्सु, हवामहे ॥

பதவுரை.

(अग्ने!)	(அக்நே!)	(அக்கினியே! நீ)
पुरुत्रा हि	புருத்ரா ஹி	எல்லாத் தேசங்களிலும்
सदृङ् असि	ஸத்ருங் அஸி	சமநோக்குடையவனாயிருக்கின்றாய். (இதனால்)
विश्वा दिशः	விஶ்வா திஶஃ	எல்லாத் திசைகட்கும்
अनुप्रभुः	அநுப்ரபூஃ	இறைவனாகின்றனை.
त्वा	த்வா	அத்தன்மைய உன்னைப்
समत्सु	ஸமத்ஸு	போர்களில்
हवामहे	ஹவாமஹே	பாதுகாப்பின் பொருட்டு அழைக்கின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

அக்கினியே! நீ, தேசங்களனைத்திலும் ஒத்த நோக்குடையவனாகின்றாய். இதனாலே எல்லாத் திக்குகளுக்கும் நீ இறைவனாகின்றனை, அத்தன்மைத்தாகிய உன்னை யுத்தங்களில் பாதுகாத்தற் பொருட்டுக் கூப்பிடுகின்றோம் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

३२ ३१ २२ ३१ २
1166. समत्स्वग्निमवसे वाजयन्तो हवामहे ।
१२ ३१२
वाजेषु चित्रराधसम् ॥ ३–१२ ॥

இருக்கு 8-11-7-9.

ஸமத்ஸ்வக்நிமவஸே வாஜயந்தோ ஹவாமஹே ।
வாஜேஷு சித்ரராதஸம் ॥

அந்வயம்.

समत्सु, वाजयन्तः, अवसे, वाजेषु, चित्रराधसं, अग्निं, हवामहे ॥

பதவுரை.

समत्सु	ஸமத்ஸு	மதங்கொண்ட போர்களில்
वाजयन्तः	வாஜயந்தஃ	ஆற்றலை விரும்புகின்ற நாங்கள்,
अवसे	அவஸெ	பாதுகாத்தற் பொருட்டு
वाजेषु	வாஜெஷு	விரும்பத்தக்கதும்
चित्रराधसं	சித்ரராதஸம்	தனமுடையதுமாகிய
अग्निं	அக்நிம்	அக்கினியைப்
हवामहे	ஹவாமஹெ	போற்றுகின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

மதத்துடன் கூடின போர்களில், வலியை விரும்புகின்ற நாங்கள், பரிபாலன நிமித்தம் அக்கினியைப் போற்றுகின்றோம். எத்தன்மைய அக்கினியை யெனின்? யுத்தங்களில் இரப்பதற்குரிய தனமாயுள்ளதை என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

१ २ ३ १२३ १ २ ३ १ २
1167. त्वं न इन्द्राभर *ओजो नृम्णाꣳ शतक्रतो विचर्षणे ।
२ ३१ २ ३१ २
आवीरं पृतनासहम् ॥ १ ॥

க்வம் ந இந்த்ராபர ஓஜோ ந்ரும்ணாம் ஶதக்ரதோ விசர்ஷணெ ।
ஆ வீரம் ப்ருதநாஸஹம் ॥

அந்வயம்.

शतक्रतो !, विचर्षणे !, इन्द्र ! त्वं, नः, नृम्णं, ओजः, आभर, पृतनासहं, वीरं, आ (याचामहे) ॥

பதவுரை.

शतक्रतो !	ஶதக்ரதோ !	பலவகைக் கருமங்களை யுடையோய் !
विचर्षणे !	விசர்ஷணெ !	சிறந்த வறிவுடையோய் !
इन्द्र ! त्वं	இந்த்ர ! க்வம்	இந்திர ! நீ,
नः	நஃ	எங்கட்கு

* आहृतामोजः, என்பது பாட பேதம்.

नृम्णं	நரு ஂணம்	அன்னத்தையும்
ओजः	ஒஜஃ	ஆற்றலையும்
आभर	ஆபர	கொடுப்பாயாக.
पृतनासहं	வரு தநாஸஹம்	சேனைகளை யடக்குகின்ற
वीरं	வீரம்	வீரமுடைய புத்திரனையும்
आ (याचामहे)	ஆ (யாசாமஹை)	கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு— இரண்டாவது சூக்தத்தில்—1. கிருமேதர் ரிஷி.

பலவிதமாகிய கருமமுடையோய்! சிறந்த நோக்குடையோய்! இந்திர! நீ, எங்கட்கு ஆற்றலையும், அன்னத்தையும் நிறையக்கொடுப்பாயாக. வீர முடையவனும், சேனைகளை யடக்குபவனுமாகிய உன்னை வேண்டுகின்றோம். ஈண்டு, வேண்டுகின்றோம் என்பது எஞ்சி நின்றது. (1)

மந்திரம் 5.

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

1168. त्वꣳ हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ ।

१ २ ३ १ २

अथा ते सुम्नमीमहे ॥ २ ॥

கூவம் ஹி நஃ விதா வஸோ கூவம் மாதா ஸதக்ரதோ பபூவிய ।

அதா தெ ஸும்நமீமஹெ ॥

அந்வயம்.

वसो !, शतक्रतो !, त्वं हि, नः, पिता, बभूविथ, त्वं, माता, अथ, ते, सुम्नं, ईमहे ॥

பதவுரை.

वसो !	வஸோ !	வியாபகனே !
शतक्रतो !	ஸதக்ரதோ !	இந்திர !
त्वं हि	கூவம் ஹி	நீ,
नः	நஃ	எங்களுடைய
पिता	விதா	{பிதாவைப்போல் பாதுகாப்போன்
बभूविथ	பபூவிய	ஆவாயாக.
त्वं	கூவம்	(மற்றும்) நீயே,

माता	ஸாதா	அன்னையைப்போல் தாங்குவோ னுமாவாயாக.
अथ	அத²	மற்றும்,
ते	தெ	உனது
सुम्नं	ஸும்நீ ம்	சுகத்தை, நாங்கள்
ईमहे	ஈமஹெ	விரும்புகின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

நிறைந்தானுகிய பலவகைக் கருமமுடைய இந்திரனே! நீ, பிதா போன்று எங்களைப் பாதுகாப்போனுவாயாக. அன்னை போன்று நீ வந்திக்கொள்வோனுமாவாயாக. மற்றும், நாங்கள் உன்னுடைய தனமாகிய சுகத்தை வேண்டுகின்றோம் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

१ २ ३ २ ३ १२

1169. त्वाꣳ शुष्मिन्पुरुहूत वाजयन्तमुपब्रुवे सहस्कृत ।

१ २ ३ १२

स नो रास्व सुवीर्यम् ॥ ३–१३ ॥

க்வாம் ஶுஷ்மின்புருஹூத வாஜயந்தமுபப்ருவே ஸஹஸ்க்ருத ।

ஸ நோ ராஸ்வ ஸுவீர்யம் ॥

அன்வயம்.

सहस्कृत, शुष्मिन्!, पुरुहूत!, वाजयन्तं, त्वां, उपब्रुवे, सः, नः सुवीर्यं, रास्व ॥

பதவுரை.

सहस्कृत	ஸஹஸ்க்ருத	துதிப்போர்கள் வாயிலாக
शुष्मिन्!	ஶுஷ்மின்!	வலியுற்றோய்!
पुरुहूत!	புருஹூத!	அதிக வேள்வித்தலைவர்களாற் கூப்பிடப்படுபெற்ற இந்திரனே!
वाजयन्तं	வாஜயந்தம்	ஆற்றலை விரும்புகின்ற
त्वां	க்வாம்	உன்னைத்
उपब्रुवे	உபப்ரூவே	துதிக்கின்றேன்.
सः	ஸः	அத்தன்மைய நீ,

नः	நः	எங்கட்குச்
सुवीर्यं	ஸுவீர்யம்	சிறந்த தனத்தைக்
रास्व	ரா ஸ்வ	கொடுப்பாயாக,

சாயணர் பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

துதிப்போர்களால் வலியடைந்தோய்! இந்திரனே! (துதியால், தேவதை கட்கு வலி வளர்கின்றது ஆதலின், ஈண்டு இந்திரனை 'வலியடைந்தோய்!' என்று விளிக்கப்பட்டது) இதனை வலியுடையோய்! அநேக வேள்வித்தலை வர்களால் அழைக்கப்படுவோய்! இந்திர! ஆற்றலை விரும்புகின்ற உன்னை நன்கு துதிக்கின்றேம். அத்தகைய நீ, எங்கட்கு நல்ல தனத்தைக் கொடுப் பாயாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 7.

१ २ १ ३२उ ३ १ २
1170. यदिन्द्र चित्र * म इह नास्ति त्वादातमद्रिवः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
राधस्तन्नो विदद्वस उभया हस्त्या †ऽभर ॥ १ ॥

யதிந்த்ர சித்ர ஊ ஹ நாஸ்தி த்வாதாதமத்ரிவஃ ।
ராதஸ்தன்னோ விதத்வஸ உபயா ஹஸ்த்யாऽபர ॥

அந்வயம்.

अद्रिवः!, चित्र!, इन्द्र!, त्वादातं, यत् राधः, इह, मे, नास्ति, विदद्वसो! उभया हस्ती, तत्, नः, आभर ॥

பதவுரை.

अद्रिवः!	அத்ரிவஃ!	வச்சிரந் தாங்கினோய்!
चित्र!	சித்ர!	சித்திரவடிவோய்!
इन्द्र!	இந்த்ர!	இந்திரனே!
त्वादातं	த்வாதாதம்	உன்னைக் கொடுக்கத்தக்க
यत् राधः	யத் ராதஃ	யாதொரு தனமுண்டோ, அது,
इह	இஹ	இவ்வுலகில்
मे	மே	எனக்கு
नास्ति	நாஸ்தி	இல்லை.

* मेहनाः, † आहर, என்பன இருக்கு.

विद्वसो!	விதுஅவொ !	தனமுள்ள இந்திர !
उभया हस्ती	உஹயா ஹஸ்தீ	இருகைகளாலும்
तत्	தத்	அத்தனத்தை
नः	நஃ	எங்கட்கு
आभर	ஆபர	நிறையக் கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—மூன்றுவது மூன்றில்—1. பௌமர், அத்திரி ரிஷிகள்.

வச்சிரந் தாங்கினோய்! விசித்திர வடிவோய்! இந்திர! நின்னுற் கொடுத்தற்குரிய தனம், இவ்வுலகில் என்பால் இல்லை. தனமுள்ளோய்! எங்கட்கு இரண்டு கைகளாலும் அத்தனத்தை நிறையக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

१ २२३ १२ ३ १ २ ३ १ २२

1171. **यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र द्युक्षं तदाभर ।**

३ २३ १ २ ३१२२ ३१२

विद्याम तस्य ते वयमकूपारस्य *दावनः ॥ २ ॥

யந்மந்யஸே வரேண்யமிந்த்ர த்யுக்ஷம் ததாபர ।
வித்யாம தஸ்ய தே வயமகூபாரஸ்ய தாவநஃ ॥

அன்வயம்.

इन्द्र!, यत् द्युक्षं, वरेण्यं, मन्यसे, तत्, आभर, ते वयं, तस्य अकूपारस्य, दावनः, विद्याम ॥

பதவுரை.

इन्द्र!	இந்த்ர !	இந்திரனே !
यत् द्युक्षं	யத் த்யுக்ஷம்	யாதொரு அன்னத்தை
वरेण्यं	வரேண்யம்	மிகச் சிறந்ததென்று
मन्यसे	மந்யஸே	எண்ணுகின்றனையோ,
तत्	தத்	அதைக் (எங்கட்குக்)
आभर	ஆபர	கொடுப்பாயாக.
ते वयं	தே வயம்	நின்னைச்சார்ந்த யாங்கள்

* दावने, என்பது பாடபேதம்.

तस्य अक्षरस्य	{ தஸ்ய சகரஸ்ய வாசகஸ்ய	{ அழகிய எல்லையுள்ள அவ் வன்னத்தைத்
दावनः	தாவநஃ	{ தானமா யேற்றுக்கொள்ளத்தக்க வர்களாய்
विद्याम	விதேம	இருக்கின்றோம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

இந்திர! எவ் வன்னத்தை நீ மிகச் சிறந்ததென்று உடன்படுகின்றனையோ, அதை எங்கட்குக் கொடுப்பாயாக. உன்னைப் பற்றிய யாங்கள் இனிய வரம்புடைய அவ்வன்னத்தைத் தானமாய் வாங்குவதற்கு உரியவர்களாயிருக்கின்றோம் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 9.

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३२ ३२

1172. यत्ते दिक्षु प्रराध्यं मनो अस्ति श्रुतं बृहत् ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २२ ३१२

तेन दृढाचिदद्रिव आ वाजं दर्षि सातये ॥ ३–१४ ॥

இருக்கு 5-59-1-3.

यत्ते दिक्षू प्रराध्यं मनो अस्ति श्रुतं बृहत् ।
तेन दृढाचिदद्रिव आ वाजं दर्षि सातये ॥

அந்வயம்.

अद्रिवः!, ते दिक्षु, प्रराध्यं, श्रुतं, बृहत्, यत् मनः, अस्ति, तेन, दृढाचित्, वाजं, सातये, आदर्षि ॥

பதவுரை.

अद्रिवः!	அத்ரிவஃ!	இந்திர!
ते दिक्षु	தெ திக்ஷு	உனது திக்குகளில்
प्रराध्यं	ப்ரராத்யம்	நன்கு துதித்தற்குரியதும்,
श्रुतं	ஸ்ருதம்	கீர்த்தியானதும்,
बृहत्	ப்ருஹத்	பெரியதுமாகிய
यत् मनः	யத் மநஃ	யாதொரு மனம்,

अस्ति	அஸ்தி	இருக்கின்றதோ,
तेन	தெந	அம் மனத்தால்
दृढाचित्	த்ருஹாசித்	திடமாகிய
वाजं	வாஜம்	அன்னத்தை
सातये	ஸாதயெ	எங்களுடைய உபயோகத்தின் பொருட்டுக்
आदर्षि	ஆதர்ஷி	கொடுக்கின்றனை.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

இந்திரனே! நீ, உனது திக்குகளில் நன்கு துதிக்கத்தக்கதும், பிரசித்தியானதும், பெரிதுமாகிய யாதொரு மனம் இருக்கின்றதோ, அம் மனத்தால், வச்சிரமேந்தினோய்! எங்களுடைய உபயோகத்தின் பொருட்டு, அல்லது, இலாபத்தின் பொருட்டு உறுதியாகிய அவ்வன்னத்தைக் கொடுக்கின்றாய் என்பதாம். (3)

ஆறாவது கண்டம்

முற்றும்.

வித்தியாதீர்த்த மகேசுரர், வேதப்பொருளை விளக்குவதால்
உள்ளத்தின் இருளைப் போக்கிப் புருடார்த்தங்கள்
நான்கையுங் கொடுப்பாராக.

சாமவேத பாடியம்

உத்தரார்ச்சிகம் எட்டாவது அத்தியாயமும்

முற்றிற்று.

ஒன்பதாவது அத்தியாயம்.

தேவதைகள்:—1-8, 11, 12, 15, 17, பவமான சோமம். 9, 18, அக்கினி. 10, 13, 14, 16, 20, இந்திரன்.

சந்தங்கள்:—2-11, 15, 17, காயத்திரி. திருஷ்டுப். 12, சகதி. 13, பிருகதி. 14, பிராகாதம். 16, 20, அநுஷ்டுப். 16, துஷிபதாவிராட். 19, உஷ்ணிக்.

சுரங்கள்:—2-11, 15, 18, ஷட்சம். 1, தைவதம். 12, நிஷாதம். 13, 14, மத்தியமம். 16, 20, காந்தாரம். 17, பஞ்சமம். 19, ரிஷபம்.

முதலாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—4. அத்தியாயம்—9. கண்டம்—1.

பதிஞ்ஞரு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१ २ ३ १ २३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२

1173. शिशुं जज्ञानꣳ हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति * विप्रं मरुतो गणेन ।

३ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २

कविर्गीभिः काव्येन कविः सन्त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन् ॥ १ ॥

ஶிஶுꣳ ஜஜ்ஞாநꣳ ஹர்யதம் ம்ருஜந்தி ஶும்ப⁴ந்தி விப்ரம் மருதோ க³ணேந ।

[மணைத ।

கவிர்கீ³பி⁴꞉ காவ்யேந கவி꞉ ஸன்ஸோம꞉ பவித்ரமத்யேதி ரேப⁴ந்॥

அந்வயம்.

जज्ञानं, शिशुं, हर्यतं, मरुतः, मृजन्ति, विप्रं, गणेन, शुम्भन्ति, कविः सोमः, काव्येन, कविः रेभन् सन्, गीर्भिः, पवित्रं, अत्येति ॥

---

* वहिं, என்பது மிருந்த இருக்குப் பாடம்.

பதவுரை.

जज्ञानं	ஜஜ்ஞாநம்	இப்பொழுது தோன்றியதும், (இதனை)
शिशुं	ஶிஶும்	குழந்தை போன்றிருப்பதும்,
हर्यतं	ஹர்யதம்	அநேகரால் விரும்பத்தக்கது மாகிய சோமத்தை,
मरुतः	மருதः	மருத்துக்கள்
मृजन्ति	ம்ருஜந்தி	பரிசுத்தப்படுத்துகின்றார்கள்.
विप्रं	விப்ரம்	மிகுந்த அறிவுள்ள சோமத்தை,
गणेन	கணேந	ஏழென்னும் எண்ணால்
शुम्भन्ति	ஶும்பந்தி	அலங்கரிக்கின்றார்கள். பின்னர்,
कविः सोमः	கவிः ஸோமः	கூரிய மதியுடைய சோமம்
काव्येन	காவ்யேந	தோத்திரஞ் செய்தலால்
कविः रेभन् सन्	கவிः ரேபந் ஸந்	கவியை ஒலிக்கச் செய்துகொண்டு
गीर्भिः	கீர்பிஃ	துதிகளுடன் கூடவே
पवित्रं	பவித்ரம்	கலசத்தை
अत्येति	அத்யேதி	அடைகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—முதலாவது மூன்றில்—1.

இவ்வத்தியாயத்தில் சோமம் துதிக்கப்படுகின்றது. எவருடைய மூச்சுக்காற்று வேதங்களோ, எவர் வேதங்களிலிருந்து உலகனைத்தையும் உண்டாக்கினாரோ, அந்த வித்தியாதீர்த்த மகேசுரரை யான் வணங்குகின்றேன்.

இப்பொழுது உதித்ததாற் குழந்தையைப்போல் இருக்கின்றதும், அல்லது, பாவத்தைப் போக்குவதும், நன்கு தோன்றியதும், இதனனே யாவராலும் விரும்பத்தக்கதுமாகிய சோமத்தை, மருத்துக்கள் பரிசுத்தப் படுத்துகின்றார்கள். மற்றும், பேரறிவுள்ள சோமத்தைத், தன்னுடன் ஏழென்னுந் தொகையால் அலங்கரிக்கின்றார்கள். பின்னர், எல்லையற்ற அறிவுடைய சோமம், தோத்திரத்தைச் செய்தலால் கவியை ஒலிக்கச்செய்துகொண்டு தோத்திரங்களுடன் எழுந்து கலசத்தில் செல்கின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
1174. ऋषिमना य ऋषिकृत्स्वर्षाः सहस्रनीथः पदवीः कवीनाम् ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ र ३ १ २ ३ १ ३ १ २ ३ २
तृतीयं धाम महिषः सिषासंत्सोमो विराजमनुराजतिष्टुप् ॥ २ ॥

ஃஷிஉநா ய ஃஷிக்ருத்ஸ்வர்ஷாஃ ஸஹஸ்ரநீதஃ பதவீஃ கவீநாம் ।
த்ருதீயம் தாஉ மஹிஷஃ ஸிஷாஸந்ஸோமொ விராஜமநுராஜ
[திஷ்டுப் ॥

அந்வயம்.

ऋषिमनाः, ऋषिकृत्, स्वर्षाः, सहस्रनीथः, कवीनां पदवीः, यः सोमः, महिषः, तृतीयं धाम, सिषासन्, स्तुप्, विराजं, अनुराजति ॥

பதவுரை.

ऋषिमनाः	ஃஷிஉநாஃ	அனைத்தையுங்காணுகின்ற மனமுடையதும், இதனானே
ऋषिकृत्	ஃஷிக்ருத்	விளக்குவதும்,
स्वर्षाः	ஸ்வர்ஷாஃ	எல்லாவற்றையுஞ் சேவிப்பதும், அல்லது, சூரியனைச் சேவிப்பதும்,
सहस्रनीथः	ஸஹஸ்ரநீதஃ	ஆயிரக்கணக்கான துதிகளையுடையதும்,
कवीनां पदवीः	கவீநாம் பதவீஃ	கவிகளுக்குள் மறந்த பதங்களை நன்கு தொடுப்பிப்பதுமாகிய
यः सोमः	யஃ ஸொமஃ	யாதொரு சோமமுண்டோ, அது,
महिषः	மஹிஷஃ	மகத்தானதாம். அத்தன்மைத்தாய அது,
तृतीयं धाम	த்ருதீயம் தாஉ	மூன்றாவதாகிய உலகைச்
सिषासन्	ஸிஷாஸந்	சேவிக்க விரும்பியதாய்த்
स्तुप्	ஸ்துப்	துதிக்கப் பெற்றுக்கொண்டு
विराजं	விராஜம்	மிக விளங்காநின்ற இந்திரனை
अनुराजति	அநுராஜதி	விளக்குகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

அனைத்தையும் நோக்கும் மனமுடையதும், இதுபற்றியே எல்லாவற்றையுங் காண்பதும், எல்லாவற்றையும் வழிபடுவதும், அல்லது, சூரியனை வழிபடுவதும், ஆயிரம்வகையான தோத்திரங்களை யுடையதும், பேரறிவாளர்களுக்குள், மறந்தபதங்களை நன்கு சேர்ப்பதுமாகிய மகத்தென்னும் யாதொரு சோமமுண்டோ, அது, மூன்றுவதாகிய வானுலகை வழிபட விரும்பித் துதிக்கப்பெற்று மிக விளங்குகின்ற இந்திரனை விளக்குகின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

३२ ३१ २३२ ३१ २ ३ २३ १२ २२ ३ १ २
1175. चमूषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि बिभ्रत् ।
३ २३१ २२ ३२३२३ १२ ३१२
अपामूर्मिꣳ सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति ॥३-१॥

இருக்கு 9-16-17-19.

ꣳअꣳषꣳचꣳषꣳदꣳ ꣳशꣳकꣳनꣳो विꣳभꣳृꣳत्वꣳा ꣳगꣳोꣳविꣳन्ꣳदꣳुꣳर्द्रꣳप्ꣳस ꣳआꣳयꣳुꣳधꣳाꣳनꣳि [विꣳभꣳृꣳ ।
ꣳसꣳमꣳुꣳद्रꣳꣳसꣳचꣳमꣳाꣳनꣳः ꣳसꣳमꣳुꣳद्रꣳं ꣳतꣳुꣳरꣳीꣳयꣳं ꣳधꣳाꣳमꣳ ꣳमꣳहꣳिꣳषꣳो ꣳविꣳवꣳक्ꣳतꣳि ॥

அன்வயம்.

चमूषत्, श्येनः, शकुनः, विभृत्वा, गोविन्दुः, द्रप्सः, आयुधानि बिभ्रत्, अपां ऊर्मिं, समुद्रं, सचमानः, महिषः, तुरीयं धाम, विवक्ति ॥

பதவுரை.

चमूषत्	அꣳषꣳ	சதுரமாகிய மரத்தட்டுகளிலிருப்பதும்,
श्येनः	ꣳशꣳ	புகழத்தக்கதும்,
शकुनः	ꣳशꣳ	ஆற்றலைத் தருவதும்,
विभृत्वा	ꣳविꣳ	பாத்திரங்களில் விளையாடுவதும்,
गोविन्दुः	ꣳगꣳोꣳविꣳ	தலைவனுக்கு ஆக்களைக் கொடுப்பதும்,
द्रप्सः	ꣳदꣳ	தாங்குவதும்,
आयुधानि बिभ्रत्	ꣳआꣳयꣳुꣳधꣳाꣳनꣳि ꣳविꣳ	மிகுந்த ஆற்றலைக்கொண்டதும்
अपां ऊर्मिं	ꣳअꣳपꣳां ꣳऊꣳ	நீரைச் செலுத்துகின்ற

समुद्रं	ஸமுத்₃ரம்	அந்தரிட்சத்தைச்
सचमानः	ஸசமானஃ	சேவிக்கின்றதும்,
महिषः	மஹிஷஃ	மகத்துவமாகிய சோமம்
तुरीयं धाम	துரீயம் யாம	நான்காவதாகிய சந்திர லோகத்தை
विवक्ति	விவக்தி	வழிபடுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

சோமரசத்தை யருந்துதற்குரிய சதுரமாகிய மரத்தட்டில் இருப்பதும், அல்லது, பிழிகின்ற பலகையிரண்டின்கண்ணிருப்பதும், போற்றத்தக்கதும், வலியைக் கொடுப்பதும், பாண்டங்களில் விளையாடுந் தன்மையதும், தூலவனுக்குக் கோக்களைக் கொடுப்பதும், தாங்குவதும், போராற்றலையுடையதும் நீரை ஏவுகின்ற அந்தரிட்சத்தை வழிபடுவதும், பெரிதுமாகிய சோம ரசம், நான்காவதாகிய சந்திர வுலகத்தை வழிபடுகின்றது. சூரிய லோகத்திற்கு மேல் சந்திர வுலகமிருக்கின்றதென்பது "இயமன் நிலத்திற்கிறைவனுவன்" என்று முடிவுபெற்ற வேத மந்திரங்களாலுணரப்படுகின்றது என்பதாம். (3)

மூலத்திலுள்ள 'சமுத்திரம்' என்னுஞ் சொற்கு அந்தரிட்சம் எனப் பொருள் கூறுகின்றது நிகண்டு. 1-2-வது சூத்திரம்.

மந்திரம் 4.

३१ २र ३२ ३१ २र ३ १२

1176. एते सोमा अभि प्रियमिन्द्रस्य काममक्षरन् ।

१२ ३क२र

वर्धन्तो अस्य वीर्यम् ॥ १ ॥

ஏதே ஸொமா அபி ப்ரியமிந்த்₃ரஸ்ய காமமக்ஷரன் ।

வர்த₄ந்தோ அஸ்ய வீர்யம் ॥

அன்வயம்.

एते सोमाः, अस्य, वीर्यं वर्धन्तः, इन्द्रस्य कामं, प्रियं, समभ्यक्षरन् ॥

பதவுரை.

एते सोमाः	ஏதே ஸொமாஃ	பிழியப்பட்ட இச்சோமம்
अस्य	அஸ்ய	இவ்விந்திரனுக்கு
वीर्यं वर्धन्तः	வீர்யம் வர்த₄ந்தஃ	வீரியத்தைப் பெருக்கிக்கொண்டு

इन्द्रस्य कामं	இந்ரஸ்ய காமம்	இந்திரனுக்குப் பிரியமானதும்,
प्रियं	ப்ரியம்	களிப்பைக் கொடுப்பதுமாகிய இரசத்தை
समभ्यक्षरन्	ஸமப்யக்ஷரந்	நன்கு பொழிகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—ஒன்பதாவது மூன்றின் இரண்டாஞ் சூக்தத்தில்-1. அசிதர், தேவலர், ரிஷிகள்.

பிழிந்தெடுத்த சோமரசம், இவ் விந்திரனுடைய வலியை வளர்த்துக் கொண்டு இந்திரனுக்குப் பிரியத்தையும், களிப்பையுங் கொடுக்கத்தக்க இரசத்தைப் பொழிகின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

३ १२ ३१२ १ २ ३२ ३ १ २
1177. पुनानासश्चमूषदो * गच्छन्तो वायुमश्विना ।
१ २ ३ १२
ते नो † धत्त सुवीर्यम् ॥ २ ॥

பு॒நா॒நா॒ஸஶ்ச॒மூ॒ஷதோ॒ ஗ ச்ஹ॒ந்தோ வாயு॒மஶ்வி॒நா ।
தெ நொ ய த்த ஸு॒வீர்யம் ॥

அந்வயம்.

पुनानासः, चमूषदः, वायुं, अश्विना, गच्छन्तः, ते, नः, सुवीर्यं धत्त ॥

பதவுரை.

पुनानासः	பு॒நா॒நா॒ஸஃ	பிழியப்பெற்றதும்,
चमूषदः	ச॒மூ॒ஷதஃ	பாத்திரத்திலிருப்பதுமாகிய சோமமே! நீ,
वायुं	வாயு॒ம்	வாயுவையும்,
अश्विना	அஶ்வி॒நா	அசுவினி குமாரர்களையும்
गच्छन्तः	஗ ச்ஹ॒ந்தஃ	அடைந்து,
ते	தெ	நின்னைச்சார்ந்த
नः	நஃ	எங்கட்கு
सुवीर्यं	ஸு॒வீர்யம்	சிறந்த வீரத்தன்மையைக்
धत्त	ய த்த	கொடுப்பாயாக.

*प्रयच्छत, † धान्तु, என்பன பாட பேதம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

பிழியப்பட்டதும், பாத்திரத்திலிருப்பதுமாகிய சோமமே! நீ, வாயுவையும், அசுவினி குமாரர்களையும் அடைந்தவனாய், நின்னைச் சார்ந்த எங்கட்கு நல்ல வீரத்தன்மையைக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

१ २ ३ १२ ३ १ २र
1178. इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो हार्दि चोदय ।
३ २ ३ १ २ ३१२
*देवानां योनिमासदम् ॥ ३ ॥

இந்த்ரஸ்ய ஸொம ராதஸெ பூநாநொ ஹார்தி சொதய ।
தெவாநாம் யொநிமாஸதம் ॥

அந்வயம்.

सोम !, पुनानः, इन्द्रस्य, राधसे, हार्दि, चोदय, देवानां, योनिं, आसदम् ॥

பதவுரை.

सोम !	ஸொம !	சோமமே !
पुनानः	பூநாநஃ	புநிதமாகிய நீ,
इन्द्रस्य	இந்த்ரஸ்ய	இந்திரனுடைய
राधसे	ராதஸெ	ஆராதனையின் பொருட்டு
हार्दि	ஹார்தி	உள்ளத்தைச்
चोदय	சொதய	செலுத்துவாயாக.
देवानां	தெவாநாம்	தேவாராதனைக்குரிய
योनिं	யொநிம்	வேள்வியாகிய இடத்தை
आसदं	ஆஸதம்	யான் அடைந்துள்ளேன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

சோமமே! பரிசுத்தமாகிய நீ, இந்திரனுடைய நல்ல ஆராதனையின் பொருட்டு, உள்ளத்தைச் செலுத்துவாயாக. யானும் சுவர்க்கமாகிய

* देवाना ऋतस्य, என்பது பாடபேதம்.

இந்திரன் முதலியோர்களுடைய இடத்தை யடைந்துள்ளேன். அல்லது, தேவர்களுடைய ஆராதனைக்குச் சாதனமாகிய வேள்வியென்னும் இடத்தை அடைந்துள்ளேன் எனினுமாம். (3)

மந்திரம் 7.

३१२ ३ २३१२३१२ ३२ ३१२
1179. मृजन्ति त्वा दशक्षिपो हिन्वन्ति सप्त धीतयः ।
२३ १२
अनु विप्रा अमादिषुः ॥ ४ ॥

ஊஜந்தி த்வா தஶக்ஷிபோ ஹிந்வந்தி ஸப்த தீதயஃ ।
அநு விப்ரா அமாதிஷுஃ ॥

அன்வயம்.

(हे सोम!,) त्वा, दशक्षिपः, मृजन्ति, सप्त धीतयः, हिन्वन्ति, विप्राः, अनु, अमादिषुः ॥

பதவுரை.

(हे सोम!)	(ஹே ஸோம!)	(சோமமே!)
त्वा	த்வா	உன்னை,
दशक्षिपः	தஶக்ஷிபஃ	பத்து விரல்கள்
मृजन्ति	ஊஜந்தி	பரிசுத்தப்படுத்துகின்றன.
सप्त धीतयः	ஸப்த தீதயஃ	வேட்போர்கள் எழுவர்கள்
हिन्वन्ति	ஹிந்வந்தி	தத்தமது செய்கையால் திருப்தி செய்கின்றார்கள்.
विप्राः	விப்ராஃ	துதிக்கின்றவர்களும்
अनु	அநு	பின்னர்க்
अमादिषुः	அமாதிஷுஃ	களிப்படைவிக்கின்றனர்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—4.

சோமமே! உன்னைப், பத்தென்னும் எண்கொண்ட விரல்கள் புனிதமாக்குகின்றன. பின்னர் ஏழென்னும் எண்கொண்ட வேட்போர்களும், உன்னைத் தத்தமது செய்கைகளால் அன்புண்டாக்குகின்றார்கள், அங்ஙனமே, துதிப்போர்களும் உன்னைக் களிப்படைவிக்கின்றார்கள் என்பதாம். (4)

ஈண்டு, க்ஷிபஃ, என்பது விரல்கள் எனக் கூறுகின்றது நிருத்தம்.

மந்திரம் 8.

३१२ ३१२३१ २ ३१ २र ३क२र
1180. देवेभ्यस्त्वा मदाय कꣳ सृजानमति मेष्यः ।
१ २र
सं गोभिर्वासयामसि ॥ ५ ॥

தெவெஹ்யஸ்த்வா மதாய கꣳ ஸ்ருஜானமதி மேஷ்யஃ ।
ஸம் மொஹிர்வாஸயாமஸி ॥

அந்வயம்.

(हे सोम !,) मेष्यः, अतिसृजानं, कं, त्वा, देवेभ्यः, मदाय, गोभिः, संवासयामसि ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	சோமமே !
मेष्यः	மேஷ்யஃ	வடிக்கும் ஆடை நூனியிலுள்ள கம்பளியில்
अतिसृजानं	அதி ஸ்ருஜானம்	இருக்கப்பட்டதும்,
कं	கம்	சுகவடிவமுடையதுமாகிய
त्वा	த்வா	உன்னை,
देवेभ्यः	தெவெப்யஃ	தேவர்களின்
मदाय	மதாய	மதத்தின் (களிப்பின்) பொருட்டுப்
गोभिः	கோபிஃ	பசு நெய் முதலியவைகளுடன்
संवासयामसि	ஸம்வாஸயாமஸி	நிலைக்க வைக்கின்றேன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—5.

சோமமே ! சுகவடிவாகிய உன்னைத், தேவர்களின் மதத்தின் பொருட்டுப் பசுவின்பால் முதலியவைகளுடன் கூடியிருக்கச் செய்கின்றேன். எவ்விதமாகிய நின்னை யெனின் ? வடிக்கும் ஆடையின் நூனியிலுள்ள கம்பளியில் இருக்கின்ற உன்னை யென்க. இத்தன்மையவுன்னைத் தாபிக்கின்றேன் என்பதனுடன் சேர்த்து முடித்துக்கொள்க. (5)

மந்திரம் 9.

३ २ ३२ ३ १ २र ३१ २र
1181. पुनानः कलशेष्वा वस्त्राण्यरुषो हरिः ।
२३ १ २
परि गव्यान्यव्यत ॥ ६ ॥

பு॒நா॒நஃ க॒லஶே॒ஷ்வா வஸ்த்ரா॒ண்யரு॒ஷோ ஹரிஃ ।
பரி ஶவ்யா॒ந்யவ்யத ॥

அந்வயம்.

पुनानः, कलशेषु आ, अरुषः, हरिः, गव्यानि, वस्त्राणि, परि अव्यत ॥

பதவுரை.

पुनानः	பு॒நா॒நஃ	புநிதமானதும்,
कलशेषु आ	க॒லஶே॒ஷு॒ ஆ	கலசத்திற் பிழியப்பட்டதும்,
अरुषः	அரு॒ஷஃ	பிரகாசிப்பதும்,
हरिः	ஹரிஃ	பச்சை நிறமுடையதுமாகிய சோமம்,
गव्यानि	ஶவ்யா॒நி	பசுவின்பால் முதலியவற்றின் சம்பந்தமான
वस्त्राणि	வஸ்த்ரா॒ணி	ஆடைகளை
परि अव्यत	பரி அவ்யத	முழுது மறைக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—6.

புநிதமானதும், யோனியைப்போன்ற துரோணகலச மென்னும் பாண்டத்தில் ஒழுகுவதும், விளக்கமானதும், பச்சை நிறமுடையதுமாகிய சோமம், பசுவின் சம்பந்தமான பால் முதலியவற்றின் ஆடைகளை நன்கு மறைக்கின்றது என்பதாம். (6)

மந்திரம் 10.

३ २ ३ १ २ ३२र ३ २ ३१ २
1182. मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अपद्विषः ।
२ ३ १ २३ १ २
इन्दो सखायमाविश ॥ ७ ॥

ஊவொ॒ஷ்ட॑ சூ வவஷ்வ ஹொ॒ ஜஹி விஷ்வா॒ சுவ॑ஜிஷ்டிः ।
ஊஹொ॒ ஸவ்வாயஸாவிஷ ॥

அந்வயம்.

இந்தோ!, மகோன, நः, ஆ பவஸ்வ, த்விஷः, விஶ்வா, அபஜஹி, ஸகாயं, ஆவிஶ ॥

பதவுரை.

இந்தோ!	ஊஹொ!	சோமனே!
மகோன	ஊவொ॒ஷ்ட॑	தனமுடைய
நः	ந॑ः	எங்கட்கு
ஆ பவஸ்வ	சூ வவஷ்வ	ஒரு முகமாய் ஒழுகுவாயாக.
த்விஷः	ஜிஷ்டிः	துவேஷஞ் செய்பவர்கள்
விஶ்வா	விஷ்வா	எல்லோரையும்
அபஜஹி	சுவ॑ஜஹி	நாசஞ் செய்வாயாக.
ஸகாயं	ஸவாயம	எமது நண்பனுகிய இந்திரனை
ஆவிஶ	சூவிஷ	அடைவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—7.

சோமனே! நீ, தனமுடைய எங்கணிமித்தமாய் ஒரு நோக்குற்று ஒழுகு, வாயாக. துவேஷஞ் செய்கின்றவர் அனைவரையும் ஒழிப்பாயாக. (எமது) நண்பனுகிய இந்திரனை யடைவாயாக என்பதாம். (7)

மந்திரம் 11.

३ १२ ३१ २२ ३ १२
1183. नृचक्षसं त्वा वयमिन्द्रपीतꣳ स्वर्विदम् ।
३ १ २ ३ १२२
भक्षीमहि प्रजामिषम् ॥ ८ ॥

நூ॒ஸக்ஷஸம் சுவா வயமிந்த்ரபீதம் ஸ்வர்விதம் ।
ஸக்ஷீமஹி ப்ரஜாமிஷ ॥

அந்வயம்.

(ஹே சோம!,) நृசக்ஷஸं, ஸ்வர்விதं, இந்த்ரபீதं, த்வா, வயं, ப்ரஜாं, இஷं, பக்ஷீமஹி ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	(சோமமே !)
नृचक्षसं	ந்ருசக்ஷஸம்	மனிதர்களைக் காண்போனும்,
स्वर्विदं	ஸ்வர்விதம்	அனைத்தையு முணர்பவனும்,
इन्द्रपीतं	இந்த்ரபீதம்	இந்திரனால் அருந்துதற்குரியவனுமாகிய
त्वा	த்வா	உன்னை,
वयं	வயம்	நாங்கள், வழிபட்டுப்
प्रजां	ப்ரஜாம்	புத்திரன் முதலியவைகளையும்
इषं	இஷம்	அன்னத்தையும்
भक्षीमहि	ஹக்ஷீமஹி	அநுபவிப்போமாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—8.

சோமமே! மனிதர்களை நோக்குவோனும், எல்லாவற்றையு முணர்பவனும், இந்திரனால் அருந்தப் பெற்றவனுமாகிய நின்னை, வழிபடுகின்ற நாங்கள், புத்திரப் பேற்றையும், அன்னத்தையும் அநுபவிப்போமாக என்பதாம். (8)

மந்திரம் 12.

३२ ३१ २र ३ २ २ ३ १ २र
1184. वृष्टिं दिवः परिस्रव द्युम्नं पृथिव्या अधि ।
१ २ ३ १ २
सहो नः सोम पृत्सु धाः ॥ ९–२ ॥

இருக்கு 9-8-1-9.

வ்ருஷ்டிம் தி வ: பரிஸ்ரவ த்யும்நம் ப்ருதிவ்யா அதி ।
ஸஹோ ந: ஸொம ப்ருத்ஸு தா: ॥

அந்வயம்.

हे सोम !, दिवः, वृष्टिं, परिस्रव, पृथिव्याः, अधि द्युम्नं, नः सहः, पृत्सु धाः ॥

பதவுரை.

हे सोम !	ஹெ ஸொம !	சோமமே! நீ,
दिवः	தி வ:	வானுலகினின்று
वृष्टिं	வ்ருஷ்டிம்	மழையைப்

परिस्रव	வரிஸ்ரவ	பெய்விப்பாயாக.
पृथिव्याः	ப்ருதிவ்யாஃ	பூமியின் கண்ணும்,
अधि द्युम्नं	அதி த்யும்நம்	அன்னத்தை புண்டாக்குவாயாக.
नः सहः	நஃ ஸஹஃ	எங்களுடைய ஆற்றலைப்,
पृत्सु	ப்ருத்ஸு	போர்களில்
धाः	தாஃ	நிலைநாட்டுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—9.

சோமமே! நீ, வானுலகினின்று மழை சூழ்ந்து பெய்யுமாறு செய்வாயாக. மண்ணில் அன்னத்தையு முண்டாக்குவாயாக. எங்களுடைய ஆற்றலை உயுத்தங்களில் நிலைநாட்டுவாயாக என்பதாம். (9)

முதலாவது கண்டம்

முற்றும்.

இரண்டாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—5. அத்தியாயம்—9. கண்டம்—2.

ஒன்பது மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१२ ३ १ २ ३१ ३ १ २
1185. सोमः पुनानो अर्षति सहस्रधारो अत्यविः ।
३ १ २र ३२
वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम् ॥ १ ॥

ஸொமஃ புநாநோ அர்ஷதி ஸஹஸ்ரதாரோ அத்யவிஃ ।
வாயோரிந்த்ரஸ்ய நிஷ்க்ருதம் ॥

அந்வயம்.

सहस्रधारः, अत्यविः, पुनानः, सोमः, वायोः, इन्द्रस्य, निष्कृतं, अर्षति ॥

பதவுரை.

सहस्रधारः	ஸஹஸ்ரதாராஃ	ஆயிரக்கணக்கான தாரைகளை யுடையதும்
अत्यविः	அத்யவிஃ	கம்பளியின் நுனியால் வடிக்கப் பெற்றதும்
पुनानः	புநாநஃ	புனிதமாக்குவதுமாகிய
सोमः	ஸோமஃ	சோமம்,
वायोः	வாயோஃ	வாயுவும்
इन्द्रस्य	இந்த்ரஸ்ய	இந்திரனும் அருந்துவதற்குச்
निष्कृतं	நிஷ்க்ருதம்	சமத்காரஞ் செய்யப்பட்டுப்
अर्षति	அர்ஷதி	பாண்டத்தை யடைகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—ஒன்பதாவது சூக்தத்தில்—1. அசிதர் ரிஷி.

புனிதமாகிய இச்சோமரசம் பாத்திரத்திற் செல்கின்றது. இஃது எத்தன்மைய தெனின்? எண்ணிறந்த தாரைகளை யுடையதும், வடிக்கும் கம்பளியினின்று வெளிச் சென்றொழுகுவதுமானதென்க. எதன் பொருட்டெனின்? இந்திரனும், வாயுவும் அருந்துதற் பொருட்டென்க. எதிற் செல்கின்றதெனின்? சமத்காரம் பண்ணப்பட்ட பாத்திரத்திற் செல்கின்றதென்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

३२ ३ १ २ ३ १ २२
1186. पवमान मवस्यवो विप्रमभि प्रगायत ।
३ २ ३ १२
सुष्वाणं देववीतये ॥ २ ॥

வவமாந உவஸ்யவோ விப்ரமபி ப்ரகாயத ।
ஸுஷ்வாணம் தெவவீதயெ ॥

அன்வயம்.

अवस्यवः, पवमानं, विप्रं, देववीतये, सुष्वाणं, अभि प्रगायत ॥

பதவுரை.

अवस्यवः	ஈவஸ்யவஃ	பாதுகாப்பை விரும்புகின்றவர்களான சாமவேதம் பாடுவோன் முதலியோர்களே! நீவிர்,
पवमानं	வவமாநம்	புனிதஞ் செய்வதும்,
विप्रं	விப்ரம்	தேவர்களை நன்கு திருப்தி செய்வதும்,
देववीतये	தெவவீதயெ	தேவர்களருந்துதற் பொருட்டுப்
सुष्वाणं	ஸுஷ்வாணம்	பிழியப்பட்டதுமாகிய சோமத்தை முன்னிட்டு
अभि प्रगायत	அபி ப்ரகாயத	இனிது பாடுவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

பாதுகாப்பை விரும்புகின்றவர்களான சாமகானஞ் செய்வோன் முதலியோர்களே! நீங்கள், பரிசுத்தமானதும், தேவர்களுக்குச் சிறந்த பிரியத்தையுண்டாக்குவதும், அல்லது, விப்ரனைப்போல் அறிவதும், தேவர்கள் அருந்துதற் பொருட்டுப் பிழியப்பட்டதுமாகிய சோமத்தை முன்னிட்டு நன்கு துதிப்பீர்களாக என்பதாம். (2)

'விப்ரன்' என்னும் மூலச் சொற்கு நுண்ணறிவுடையது எனினுமாம். "விப்பிரன் நுண்ணுணர்வோன்" என்று கூறுகின்றது நிகண்டு.

மந்திரம் 3.

१२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
1187. पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः ।
३ २ ३ १ २
गृणाना देववीतये ॥ ३ ॥

வவந்தெ வாஜஸாதயெ ஸொமாஃ ஸஹஸ்ரபாஜஸஃ ।
ஹ்ருணாநா தெவவீதயெ ॥

அன்வயம்.

वाजसातये, देववीतये, गृणानाः, सहस्रपाजसः, सोमाः, पवन्ते ॥

பதவுரை.

वाजसातये	வாஜஸாதயெ	அன்னங் கிடைத்தற்பொருட்டும்
देववीतये	தெவவீதயெ	தெய்வ வேள்வி சித்தித்தற் பொருட்டுங்
गृणानः	ஹ்ருணானஃ	துதிக்கப்படுகின்றதுங்
सहस्रपाजसः	ஸஹஸ்ரபாஜஸஃ	ஆயிரம்வகையாகிய பயனைக் கொடுக்கின்றதுமாகிய
सोमाः	ஸொமாஃ	சோமரசம்
पवन्ते	பவந்தெ	ஒழுகுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

சோமரசம் ஒழுகுகின்றது. எதன் பொருட்டெனின்? அன்ன லாபத்தின் பொருட்டென்க. எவ்விதமாகிய சோமரசமெனின்? மனிதர்களுக்கு ஆயிரக்கணக்கான பலன்களைக் கொடுக்கத்தக்கதும், துதிக்கப்பெற்றதுமென்க. மற்றும், எதன் பொருட்டெனின்? தெய்வ வேள்வி சித்தியாதற் பொருட்டென்க.

ஈண்டு, வேள்வியின் சித்தி சோம பயனும். அன்னத்தின் லாபமோ, வேள்வி வாயிலாய் வருவதாமென்றுணர்க. (3)

மந்திரம் 4.

३२ ३ १२ ३ १२ ३ १ २२
1188. **उत नो वाजसातये पवस्व बृहतीरिषः ।**
३ १२ ३ १२
द्युमदिन्दो सुवीर्यम् ॥ ४ ॥

உத நொ வாஜஸாதயெ பவஸ்வ ப்ருஹதீரிஷஃ ।
த்யுமதிந்தொ ஸுவீர்யம் ॥

அன்வயம்.

इन्दो !, द्युमत्, सुवीर्यं, पवस्व, उत, नः, वाजसातये, बृहतीः इषः ॥

பதவுரை.

इन्दो !	உந்தொ !	சோமமே !
द्युमत्	த்யுமத்	விளக்கமுள்ளதும்,
सुवीर्यं	ஸுவீர்யம்	சிறந்ததுமாகிய வீரத்தன்மையைப்

पवस्व	வவஸ்வ	பொழிவாயாக. (கொடுப்பாயாக)
उत	உத	மற்றும்,
नः	நः	எங்களுடைய
वाजसातये	வாஜஸாதயெ	உயுத்தத்தின் பொருட்டு
बृहतीः इषः	ப்ருஹதீஃ உஷஃ	மிகுந்த அன்னத்தையும் பொழிவாயாக. (கொடுப்பாயாக.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—4.

சோமமே! கீர்த்தியுடைய நல்ல பராக்கிரமத்தைப் பொழிவாயாக. சிறந்த ஆற்றலுடன் கூடின தாரைகளைப் பொழிவாயாக என்பது பொருள். அல்லது, எங்களுடைய உயுத்தத்தின் பொருட்டு, மிகுந்த அன்னத்தையும், விளங்கிய நல்ல வீரத்தன்மையையுந், தேடிக் கொள்ளுதற் பொருட்டுத் தாரையாய்ப் பொழிவாயாக என்பது கருத்து. (4)

மந்திரம் 5.

१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
1189. अत्या हियाना हेतृभिरसृग्रं वाजसातये ।
२उ ३ १ २ ३ १२
विवारमव्यमाशवः ॥ ५ ॥

அத்யா ஹியாநா ஹெதாரஹிரஸ்ருக்ரம் வாஜஸாதயெ ।
விவாரமவ்யமாசவஃ ॥

அந்வயம்.

वाजसातये, आशवः, हियानाः, हेतृभिः, अव्यं वारं, व्यत्यसृग्रम् ॥

பதவுரை.

वाजसातये	வாஜஸாதயெ	உயுத்தத்தின் பொருட்டு
आशवः	ஆசவஃ	விரைவிற் செல்கின்ற ஒருவனைப் போன்று
हियानाः	ஹியாநாஃ	ஏவுகின்ற சோமரசம்,
हेतृभिः	ஹெதாரஹிஃ	வேட்போர்களான செலுத்துவோர்களால்,
अव्यं वारं	அவ்யம் வாரம்	வடிக்குங் கம்பளியை
व्यत्यसृग्रं	வ்யத்யஸ்ருக்ரம்	அலைத்துக்கொண்டு செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—5.

செலுத்துகின்றவர்கள் போரிற்கு விரைவிற் செல்வதுபோன்று, வேட்கின்றவர்களால் ஏவப்பட்டு விரைவிற் செல்லுஞ் சோமரசம், அன்ன லாபத்தின் பொருட்டு வடிக்கப்பட்டுக் கம்பளியைக்கடந்து செல்கின்றது என்பதாம். (5)

மந்திரம் 6.

१ २ ३ १२ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
1190. ते नः सहस्रिणꣳ रयिं पवन्तामा सुवीर्यम् ।
३ २ ३ २ ३ १ २
* स्वाना देवास इन्दवः ॥ ६ ॥

தெ நஃ ஸஹஸ்ரிணம் ரயிம் பவந்தாஆ ஸுவீர்யம் ।
ஸ்வாநா தெவாஸ இந்தவஃ ॥

அன்வயம்.

स्वानाः, देवासः, ते इन्दवः, नः, सहस्रिणं, रयिं, सुवीर्यं, आ पवन्ताम् ॥

பதவுரை.

स्वानाः	ஸ்வாநாஃ	துதிக்கப்பெற்றதும்,
देवासः	தெவாஸஃ	விளங்குகின்றதுமாகிய
ते इन्दवः	தெ இந்தவஃ	அச் சோமரசம்
नः	நஃ	எங்கட்கு,
सहस्रिणं	ஸஹஸ்ரிணம்	ஆயிரக்கணக்கான
रयिं	ரயிம்	தனங்களையும்,
सुवीर्यं	ஸுவீர்யம்	நல்ல வீரத்தன்மையையுங்
आपवन्तां	ஆபவந்தாம்	கொடுக்குக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—6.

சோமரசம், எங்கட்கு ஆயிரக்கணக்கான தனங்களையும், சிறந்த வீரத் தன்மையையுங் கொடுப்பதாகுக. அச் சோமரசம், எத்தன்மையதெனின்? துதிக்கப்பட்டதும், பிரகாச முதலிய குணங்களை யுடையதுமாமென்பதாம்.

---

* ஸுவானா, என்பது பாட பேதம்.

மந்திரம் 7.

३ १ २३ १ २ ३ २ ३२उ ३१२
1191. वाश्रा अर्षन्तीन्दवोऽभिवत्सं न * मातरः ।
३ १ २२
दधन्विरे गभस्त्योः ॥ ७ ॥

வாஶ்ரா அர்ஷந்தீந்தவோஅபிவத்ஸம் ந மாதரஃ ।
தன்விரே கபஸ்த்யோஃ ॥

அன்வயம்.

वाश्राः, इन्दवः, मातरः, वत्सं न, अभ्यर्षन्ति, गभस्त्योः, दधन्विरे ॥

பதவுரை.

वाश्राः	வாஶ்ராஃ	ஒலிக்கின்ற
इन्दवः	இந்தவஃ	சோமரசம்,
मातरः	மாதரஃ	தாயாகிய பசுக்களிடத்துக்
वत्सं न	வத்ஸம் ந	கன்றுகள் செல்வது போன்று,
अभ्यर्षन्ति	அப்யர்ஷந்தி	பாத்திரத்திற் செல்கின்றது.
गभस्त्योः	கபஸ்த்யோஃ	(மற்றும்) தோள்களிரண்டால்
दधन्विरे	தன்விரே	தாங்கப்படுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—7.

ஒலிக்கின்ற சோமம், கதறுகின்ற தாய்ப்பசுக்கள், கன்றைக் குறித்துச் செல்வனபோன்று. சோமம், பாத்திரத்திற் செல்கின்றது, அச்சோமம் தோள்களால் தாங்கப்படுகின்றது என்பதாம். (7)

மந்திரம் 8.

२३ १ २ ३१ २२ ३ १ २
1192. जुष्ट इन्द्राय मत्सरः †पवमानः कनिक्रदत् ।
२ ३ २३ १ २
विश्वा अप द्विषो जहि ॥ ८ ॥

ஜுஷ்ட இந்த்ராய மத்ஸரஃ பவமானஃ கனிக்ரதத் ।
விஶ்வா அப த்விஷோ ஜஹி ॥

---

* धेनवः, † पवमाना, என்பன பாடபேதம்.

அன்வயம்.

(सोमः,) इन्द्राय, जुष्टः, मत्सरः, पवमानः, क्रनिक्रदत्, विश्वा द्विषः, अपजहि ॥

பதவுரை.

(सोमः)	(சொமஃ)	சோமரசம்,
इन्द्राय	இந்த்ராய	இந்திரனுக்குப்
जुष्टः	ஜுஷ்டஃ	போதுமானதாம்.
मत्सरः	மத்ஸரஃ	திருப்திபண்ணுகின்ற
पवमानः	பவமாநஃ	சோமம்,
क्रनिक्रदत्	க்ரநிக்ரதத்	ஒலித்துக்கொண்டு
विश्वा द्विषः	விஶ்வா த்விஷஃ	எமது துவேஷிகளனைவரையும்
अपजहि	அபஜஹி	நாசமாக்குவதாகுக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—8.

சோமரசம், இந்திரன் பொருட்டுப் போதுமானதாகின்றது. ஈண்டுச் சோமம் என்பது எஞ்சி நின்றது. திருப்தி செய்கின்ற அத்தன்மைய சோமம் இரைந்து கொண்டு, எங்களிடத்துப் பொறாமை யுடையவர்களை ஒழித்து விடுவதாகுக என்பதாம். (8)

மூலத்திலுள்ள 'மத்சரः' என்னுஞ் சொற்குப் பொருள் திருப்தி என்று கூறுகின்றது நிகண்டு.

மந்திரம் 9.

३ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १२
1193. अपघ्नन्तो अराव्णः पवमानाः स्वर्दृशः ।
१ २३१ २
योनावृतस्य सीदत ॥ ९–३ ॥

இருக்கு 9-13-1-9.

அபக்⁴நந்தோ அராவ்ணஃ பவமாநாஃ ஸ்வர்த்³ருஶஃ ।
யோநாவ்ருதஸ்ய ஸீத³த ॥

அன்வயம்.

पवमानाः !, स्वर्दृशः, अराव्णः, अपघ्नन्तः, ऋतस्य योनौ, सीदत ॥

பதவுரை.

पवमानाः !	பவமாநாஃ !	சோமமே !
स्वर्दृशः	ஸ்வர்த்ருஶஃ	அனைத்தையுங் காண்கின்ற நீ,
अराव्णः	அராவ்ணஃ	தானங் கொடுக்காத தலைவனை
अपघ्नन्तः	அப஘்நந்தஃ	நாசமாக்கி விட்டு
ऋतस्य योनौ	ஃதஸ்ய யொநள	வேள்வி மண்டபத்தில்
सीदत	ஸீதத	அமர்வாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—9.

சோமமே! கொடையில்லாத வேள்வித் தலைவர்களைக் கொல்லுகின்றவனும், அனைத்தையுங் காண்பவனுமாகிய நீ, வேள்வியின்கண் அமர்வாயாக. சோமத்தை யருந்துதற்பொருட்டு, மேற்கூறிய இயல்புடைய தேவர்கள் வேள்வியின்கண் உட்கார்வார்களாக என இயைத்துப் பொருள்கொள்க என்பதாம். (9)

இரண்டாவது கண்டம்

முற்றும்.

மூன்றாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—5. அத்தியாயம்—9. கண்டம்—3.

ஒன்பது மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ २ १२
1194. सोमा असृग्रमिन्दवः सुता ऋतस्य * धारया ।
१ २ ३ १२
इन्द्राय मधुमत्तमाः ॥ १ ॥

ஸொமா அஸ்ருக்ரமிந்தவஃ ஸுதா ஃதஸ்ய தாரயா ।
இந்த்ராய மதுமத்தமாஃ ॥

---

* सादने, என்பது பாட பேதம்.

அன்வயம்.

ऋतस्य, सुताः, मधुमत्तमाः, इन्दवः, सोमाः, इन्द्राय, धारया, असृग्रम् ॥

பதவுரை.

ऋतस्य	ஃதஸ்ய	வேள்வியின் பொருட்டுப்
सुताः	ஸுதாஃ	பிழியப் பெற்றதும்,
मधुमत्तमाः	மதுமத்தமாஃ	மிகுந்த இன்சுவை யுடையதும்
इन्दवः	இந்தவஃ	இரசவடிவமுமாகிய
सोमाः	ஸோமாஃ	சோமம்,
इन्द्राय	இந்த்ராய	இந்திரன் பொருட்டுத்
धारया	தாரயா	தாரையுடன்
असृग्रं	அஸ்ருக்ரம்	ஒழுகும்படி செய்யப்படுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—ஒன்பது இருக்குள்ள சூக்தத்தில்—1. அசிதர், தேவலர் இருடிகள்.

வேள்வியின் பொருட்டுப் பிழியப்பெற்றதும், மிகுந்த இன்சுவையுடையதும், ஒழுகுவதுமாகிய சோமரசம், இந்திரன் பொருட்டுத் தாரையுடன் ஒழுகுமாறு செய்யப்படுகின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

३ १ २२ ३ १ १ ३२२ ३ १२
1195. अभि विप्रा अनूषत गावो वत्सं न *धेनवः ।
२ ३ १२ ३ १२
इन्द्रꣳ सोमस्य पीतये ॥ २ ॥

அஃபி விப்ரா அனூஷத காவோ வத்ஸம் ந தேனவஃ ।
இந்த்ரꣳ ஸோமஸ்ய பீதயே ॥

அன்வயம்.

विप्राः !, धेनवः, गावः, वत्सं न, सोमस्य पीतये, इन्द्रं, अभ्यनूषत ॥

---

* मातरः, என்பது பாட பேதம்.

பதவுரை.

विप्राः !	விப்ராः !	வேட்போர்கள்
धेनवः	யெநவஃ	பால் கறக்கின்ற
गावः	காவஃ	பசுக்கள்
वत्सं न	வத்ஸம் ந	கன்றை யழைப்பது போன்று,
सोमस्य पीतये	ஸொமஸ்ய பீதயெ	சோமரசத்தை யருந்துவதற்கு
इन्द्रं	இந்த்ரம்	இந்திரனை
अस्यनूषत	அஸ்ய நூஷத	துதிக்கின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

கூரிய மதியுடையவர்கள், சோமரசத்தை யருந்துதற்பொருட்டு இந்திரனை யழைக்கின்றார்கள். அதிலுவமை:—பாற்பசுக்கள், பாலருந்துதற்குக் கன்றை யழைப்பது போன்று என்பதாம். (3)

மந்திரம் 3.

३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २

1196. मदच्युत् क्षेति सादने सिन्धोरूर्मा विपश्चित् ।

१ २ ३ १ २२ ३२

सोमो गौरी अधिश्रितः ॥ ३ ॥

மதச்யுத் க்ஷேதி ஸாதநெ ஸிந்தொரூர்மா விபஶ்சித் ।

ஸொமொ கௌரீ அதிஶ்ரிதஃ ॥

அன்வயம்.

मदच्युत्, सोमः, सादने, क्षेति, सिन्धोः, ऊर्मा, विपश्चित्, गौरी, अधिश्रितः ॥

பதவுரை.

मदच्युत्	மதச்யுத்	மதத்தைக் கொடுத்தற்குரிய இரசத்தைப் பொழிகின்ற
सोमः	ஸொமஃ	சோமம்,
सादने	ஸாதநெ	வேள்விச்சாலையில்
क्षेति	க்ஷேதி	வசிக்கின்றது.
सिन्धोः	ஸிந்தொஃ	நதியின்
ऊर्मा	ஊர்மா	அலைகளில்

विपश्चित्	விபஶ்சித்	நுண்ணறிவுள்ள சோமம்
गौरी	கௌரீ	வாக்கினிடத்து
अधिश्रितः	அதிஶ்ரிதஃ	இருக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

களிப்பைக் கொடுக்கின்ற இரசமா யொழுகுகின்ற சோமம், வேள்வி யாகிய இடத்தில் வசிக்கின்றது. இப்பொருளே விரித்துக் கூறப்படுகின் றது:—நதிகளின் அலைகள்போல் அறிவுடையதாகிய சோமம், மத்தியம மென்னும் வாணியின் கண் இருக்கின்றது. "மத்தியமமெனும் வாக்கில் காந்தருவ மென்னும் வாக்கு இது" என்று நிகண்டுங் கூறுகின்றது என்ப தாம். (3)

மந்திரம் 4.

३ १ २२ ३ २ ३ १२
1197. दिवो नाभा विचक्षणोऽव्या वारे महीयते।
२ ३ २ ३ १२ ३ २
सोमो यः सुक्रतुः कविः ॥ ४ ॥

திவொ நாஹா விசக்ஷணொ(அ)வ்யா வாரெ மஹீயதெ।
ஸொமொ யஃ ஸுக்ரதுஃ கவிஃ ॥

அன்வயம்.

यः, सुक्रतुः, कविः, विचक्षणः सोमः, दिवः, नाभा, अव्या वारे, महीयते ॥

பதவுரை.

यः	யஃ	யாதொரு சோமம்
सुक्रतुः	ஸுக்ரதுஃ	நுண்ணறிவுடையதும்,
कविः	கவிஃ	சிறந்த நோக்குடையதும்,
विचक्षणः सोमः	விசக்ஷணஃ ஸொமஃ	நன்கு காண்பதுமாமோ, அச் சோமம்,
दिवः	திவஃ	அந்தரிட்சத்தின்
नाभा	நாஹா	நாபி வடிவாயுள்ள
अव्या वारे	அவ்யா வாரெ	கம்பளியில்
महीयते	மஹீயதெ	பெருந் தன்மையை யடைகின் றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—4.

யாதொரு சோமம், கூரிய மதியுடையதும், நற்செய்கை யுடையதும், பெரு நோக்குடையதுமாமோ, அச்சோமம் அந்தரிட்சத்தின் நாபிவடிவாய் அமைக்துள்ள கம்பளியில் (கப்பளிக் கயிற்றில்) பெருந்தன்மையை யடைகின்றது என்பதாம். (4)

மந்திரம் 5.

१ २र ३२ ३ २ ३ २ ३२३ १ २
1198. यः सोमः कलशेष्वा अन्तः पवित्र आहितः ।
२उ ३ १ २
तमिन्दुः परिषस्वजे ॥ ५ ॥

யஃ ஸொமஃ கலஶேஷ்வா அன்தஃ பவித்ர ஆஹிதஃ ।
தமிந்துஃ பரிஷஸ்வஜே ॥

அன்வயம்.

यः सोमः, कलशेषु आ, पवित्रे अन्तः, आहितः, तं, इन्दुः, परिषस्वजे ॥

பதவுரை.

यः सोमः	यः सोमः	யாதொரு சோமம்,
कलशेषु आ	कलशेषु आ	கலசங்களில் இருக்கின்றதோ,
पवित्रे अन्तः	पवित्रे अन्तः	பவித்திரத்தின் நடுவில்
आहितः	आहितः	வைக்கப்பட்டிருக்கின்றதோ,
तं	तं	அச் சோமத்தைக் குறித்து
इन्दुः	इन्दुः	சந்திராபிமானி தேவதை
परिषस्वजे	परिषस्वजे	பிரவேசிக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—5.

எச்சோமரசம், கலசங்களில் இருக்கின்றதோ, மற்றும், பவித்திரமாகிய பாத்திரமென்னும் வடிச்சும் பாண்டத்தின் நடுவில் வைக்கப்பட்டிருக்கின்றதோ, அச்சோமரசத்தில், சந்திராபிமானி தேவதை பிரவேசிக்கின்றது என்பதாம். (5)

மந்திரம் 6.

२उ ३ १ २ ३१ २२ ३ १ २
1199. प्र वाचमिन्दुरिष्यति समुद्रस्याधि विष्टपि ।
२ ३ १ २ ३ १२
जिन्वन् कोशं मधुश्च्युतम् ॥ ६ ॥

ஹ வாசமிந்துரிஷ்யதி ஸமுத்ரஸ்யாதி விஷ்டபி ।
ஜின்வந் கோசம் மதுஶ்யுதம் ॥

அன்வயம்.

மதுஶ்யுதம், இந்துः, கோசம், ஜின்வன், ஸமுத்ரஸ்ய, அதிவிஷ்டபி, வாசம், ப்ரேஷ்யதி ॥

பதவுரை.

மதுஶ்யுதம்	மயூஶ்யூதம்	தேன் ததும்புகின்ற
இந்துः	ஊந்துः	சோமம்,
கோசம்	கோசம்	கலசத்தை
ஜின்வன்	ஜின்வந்	நிறையச் செய்துகொண்டு
ஸமுத்ரஸ்ய	ஸமுத்ரஸ்ய	அந்தரிட்சத்திற்கு
அதிவிஷ்டபி	அதிவிஷ்டவி	ஆதாரமாகிய விடத்தில்
வாசம்	வாசம்	சத்தத்தைச்
ப்ரேஷ்யதி	ப்ரேஷ்யதி	செலுத்துகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—6.

நெகிழ்ச்சித்தன்மையை யுடையதும், தேன் ததும்புகின்றதுமாகிய சோமரசம், துரோணகலசத்தை நிரப்பிக்கொண்டு அந்தரிட்சத்திலுள்ள நிலைக்களத்தில் ஒலியைச் செலுத்துகின்றது. பவித்திரமாகிய பாண்டத்தில் பாய்ந்து ஒலிக்கின்றதென்பது பொருள். (6)

மந்திரம் 7.

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ ३ १ २ ३ १ २
1200. नित्यस्तोत्रो वनस्पति * धेनामन्तः सर्वदुघाम् ।
३ १ २र ३ २
हिन्वानो मानुषा युजा ॥ ७ ॥

---

* श्रीनामन्तः सर्वदुघः, என்பது பாட பேதம்.

நித்யஸ்தோத்ரோ வநஸ்பதிர்மானுஷா யுஜா ஹிந்வாநோ ஸர்வதுஷ்ஷாம் ।
ஹிந்வாநோ மாநுஷா யுஜா ॥

அந்வயம்.

नित्यस्तोत्रः, वनस्पतिः, मानुषा, युजा, हिन्वानः, सर्वदुघां, अन्तः, धेनाम् ॥

பதவுரை.

नित्यस्तोत्रः	நித்யஸ்தோத்ரஃ	நித்தியந் துதிக்கப்படுகின்றதும்,
वनस्पतिः	வநஸ்பதிஃ	வனங்கட்கு இறையுமாகிய சோமம்,
मानुषा	மாநுஷா	வேட்போர்களை
युजा	யுஜா	இருவராய்க் கூட்டிச்
हिन्वानः	ஹிந்வாநஃ	செலுத்திக்கொண்டு,
सर्वदुघां	ஸர்வதுஷ்ஷாம்	அமுதமொத்த வாக்கை விளக்குகின்ற
अन्तः	அந்தஃ	துதிப்போர்கட்கு நடுவில்
धेनां	தேநாம்	தோத்திரத்தை ஏற்றுக்கொள்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—7.

இடையறாது துதிக்கப்பெற்றதும், வனங்கட்குத் தலைமையுடையதுமாகிய சோமம், வேட்கின்ற மனிதக் கூட்டத்தை ஏவிக்கொண்டு, அமுதமொத்த மிகுந்த இன்சொற்களைத் (துதியாகிய வாக்கை) துதிப்போர்கட்கு நடுவில் ஏற்றுக்கொள்கின்றது என்பதாம். (7)

மந்திரம் 8.

१ २ ३ २ ३ १ २
1201. आ पवमान धारय रयिं सहस्रवर्चसम् ।
३ १ २ ३ १ २
अस्मे इन्दो स्वाभुवम् ॥ ८ ॥

ஆ பவமாந தாரய ரயிம் ஸஹஸ்ரவர்சஸம் ।
அஸ்மே இந்தோ ஸ்வாபுவம் ॥

அந்வயம்.

पवमान इन्दो !, सहस्रवर्चसं, स्वाभुवं, रयिं, अस्मे, धारय ॥

பதவுரை.

पवमान इन्दो !	பவமாந இந்தோ !	சமத்காரம் பண்ணப்பெற்ற சோமமே !
सहस्रवर्चसं	ஸஹஸ்ரவர்ஷஸம்	எண்ணிறந்த பிரகாசங்களையுடையதும்,
स्वाभुवं	ஸ்வாபுவம்	அழகியதுமாகிய நிலயத்தையும்,
रयिं	ரயிம்	தனத்தையும்
अस्मे	அஸ்மே	எங்கள் பால்
धारय	தாரய	நிலை நிறுத்துவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—8.

புநிதமாக்கிய, அல்லது, புநிதமாக்குகின்ற சோமமே ! நீ, ஆயிரக்கணக்கான பிரகாசங்களையுடைய அழகிய நிலயத்தையும், தனத்தையும் எங்களிடத்து நிலைக்க வைப்பாயாக என்பதாம். (8)

மந்திரம் 9.

३ २ ३ २ ३ २ ३२उ ३ १ २र ३२
1202. अभि प्रिया * दिवः कविर्विप्रः स धारया † सुतः ।
१ २ ३ १२
सोमो ‡ हिन्वे परावति ॥ ९–४ ॥

இருக்கு 9-12-1-9.

அபி ப்ரியா திவஃ கவிர்விப்ரஃ ஸ தாரயா ஸுதஃ ।
ஸோமோ ஹிந்வே பராவதி ॥

அந்வயம்.

कविः, सुतः, परावति, विप्रः, सः सोमः, धारया, दिवः, प्रिया, अभिहिन्वे ॥

பதவுரை.

कविः	கவிஃ	எண்ணிறந்த கருமங்களையுடையதும்,
सुतः	ஸுதஃ	பிழியப்பெற்றதும்,
परावति	பராவதி	சிறந்த விடத்திலிருப்பதும்,
विप्रः	விப்ரஃ	மிகுந்த திருப்தியைக் கொடுப்பதுமாகிய

*दिवः पतिः, † सुतः कविः, ‡ हिन्वेपरानो अर्षति, என்பன பாட பேதங்கள்.

सः सोमः	ஸஃ ஸொமஃ	அச் சோமம்,
धारया	யாரயா	தனது தாரையால்
दिवः	திவஃ	விண்ணுலகின்கண்
प्रिया	ப்ரியா	பிரியமுள்ள விடத்தை
अभिहिन्वे	அபிஹின்வே	முழுதும் நடத்திவருகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—9.

எல்லையற்ற கருமங்களையுடையதும், பிழியப்பட்டதுமாகிய அச்சோமம், உயர்ந்தவிடத்திலிருந்துகொண்டு, தனது தாரையால் விண்ணுலகத்தின்கண் பிரியமான விடங்களைக் குறித்து ஏவுகின்றது என்பதாம். (9)

மூன்றுவது கண்டம்

முற்றும்.

நான்காவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—5. அத்தியாயம்—9. கண்டம்—4.

ஐந்து மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
1203. उत्ते शुष्मास ईरते सिन्धोरूर्मेरिव स्वनः ।
३ १ २ ३ २
वाणस्य चोदया पविम् ॥ १ ॥

உத்தே ஶுஷ்மாஸ ஈரதே ஸிந்தொரூர்மேரிவ ஸ்வநஃ ।
வாணஸ்ய சோதயா பவிம் ॥

அன்வயம்.

(हे सोम!,) सिन्धोः, ऊर्मेः, स्वनः इव, ते, शुष्मासः, उदीरते, वाणस्य, पविं, चोदय ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	(சோமமே !)
सिन्धोः	ஸிந்தொஃ	கடலின்
ऊर्मेः	ஊர்மெஃ	அலையினுடைய
स्वनः इव	ஸ்வநஃ இவ	ஒலியைப்போன்ற
ते	தெ	உனது
शुष्मासः	ஶுஷ்மாஸஃ	வேகமானது
उदीरते	உதீரதெ	எழும்புகின்றது. அத்தன்மைய நீ,
वाणस्य	வாணஸ்ய	'வாணம்' என்னுமோர் வீணை விசேடத்தின்
पविं	பவிம்	ஒலியைச்
चोदय	சொதய	செலுத்துவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—ஐந்தாவது சூக்தத்தில்—1. உசத்தியர் ரிஷி.

சோமமே! உன்னுடைய வேகம் மேலெழும்புகின்றது. அதிலுவமை:—கடலின் அலைகளினுடைய ஒலி எழும்புகின்றது போன்றெனல். அத்தன்மை வாய்ந்த நீ, நூற்றுக்கணக்கான கம்பிகள் பூட்டியுள்ள 'வாணம்' என்னும் வீணை விசேடத்தின் ஒலியை யுண்டாக்குவாயாக. வேகமாய்ப் பாய்கின்ற நீ, வாணம் என்னும் வீணையின் ஒலிபோன்று ஒலிப்பாயாக என்பது பொருள். (1)

ஈண்டு 'பவிம்' என்னும் மூலத்திலுள்ள சொற்கு ஒலியெனப் பொருள் கூறுகின்றது நிகண்டு.

மந்திரம் 2.

३ २ ३ ३ २ ३ १ २२ ३ १२
1204. प्रसवे त उदीरते तिस्रो वाचो मखस्युवः ।
२उ ३ २ ३ १२
यदव्य एषि सानवि ॥ २ ॥

ப்ரஸவெ த உதீரதெ திஸ்ரோ வாசொ மகஸ்யுவஃ ।
யதவ்ய ஏஷி ஸாநவி ॥

அன்வயம்.

(हे सोम !,) ते प्रसवे, मखस्युवः, तिस्रः वाचः, उदीरते, यत्, सानवि, अव्ये, एषि ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	(சோமமே !)
ते प्रसवे	தெ ப்ரஸவெ	நினது தோற்றமான விடத்து,
मखस्युवः	மகஸ்யுவः	வேள்வியில் வேட்கையுள்ள தலைவனுக்கு,
तिस्रः वाचः	திஸ்ரः வாசஃ	இருக்கு, எசுர், சாமம், என்னும் வாக்குகள்
उदीरते	உதீரதெ	தோன்றுகின்றன.
यत्	யத்	எப்போது நீ,
सानवि	ஸாநவி	உயர்ந்த
अव्ये	அவ்யெ	கம்பளியிற்
वृषि	வ்ருஷி	செல்கின்றனையோ, (அப்போது என்பதாம்.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

சோமமே ! நீ, உண்டான விடத்து, வேள்வியை விரும்புகின்ற தலைவனுக்கு, இருக்கு, எசுர், சாமம், என்னும் மூவகை வாக்குகள் எழுகின்றன. எப்போதெனின் ? உயர்ந்ததும், புதிதமுடையதுமாகிய கம்பளியில் நீ எப்போது செல்கின்றனையோ அப்போது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

२ ३ २३ १२ ३ १ २२ २ १२

1205. अव्या वारैः परि प्रियꣳ हरिꣳ हिन्वन्त्यद्रिभिः ।

१२ ३ १२

पवमानं मधुश्च्युतम् ॥ ३ ॥

அவ்யா வாரைஃ பரி ப்ரியம் ஹரிம் ஹின்வந்த்யத்ரிபிஃ ।

பவமாநம் மதுஶ்ச்யுதம் ॥

அந்வயம்.

प्रियं, हरिं, अद्रिभिः, मधुश्च्युतं, पवमानं, अव्याः, वारैः, परि हिन्वन्ति ॥

பதவுரை.

प्रियं	ப்ரியம்	தேவர்கட்குப் பிரியமானதும்,
हरिं	ஹரிம்	பசிய நிறமுடையதும்,
अद्रिभिः	அத்ரிபிஃ	கற்களாலிடிக்கப்பட்டதும்,

मधुश्चुतं	ꣳꣳꣳ

पवित्रं	வபித்ரம்	புதிதமாகிய பாத்திரத்தில் வடிக்கப்பட்டுத்
धारया	யாரயா	தாரையுடன்
आपवस्व	சூவவஸ்வ	ஒரு நோக்காய் ஒழுகுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—4.

களிப்பைக் கொடுப்போய்! எல்லையற்ற கருமங்களை யுடையோய்! சோமமே! போற்றுதற்குரிய இந்திரனுடைய வயிறுகியவிடத்திற் சேர்வதற்குப், புதிதமாகிய பாத்திரத்தைக் கடந்து தாரையாய் ஒழுகுவாயாக என்பதாம். (4)

மந்திரம் 5.

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

1207. **स पवस्व मदिन्तम गोभिरञ्जानो अक्तुभिः ।**

१ २ ३१२

*** एन्द्रस्य जठरं विश ॥ ५–५ ॥**

இருக்கு 9-50-1-5.

ஸ வவஸ்வ மதிந்தம கோபிரஞ்ஜானோ அக்துபிஃ ।

வேந்த்ரஸ்ய ஜடரம் விஸ ॥

அந்வயம்.

मदिन्तम!, अक्तुभिः, गोभिः, अञ्जानः सः (त्वं), पवस्व, इन्द्रस्य, जठरं, आविश ॥

பதவுரை.

मदिन्तम!	மதிந்தம!	களிப்பைக் கொடுக்கின்ற சோமமே!
अक्तुभिः	அக்துபிஃ	(நின்னுடன்) சேருதற்குரித்தான
गोभिः	கோபிஃ	பசுவின் பால் முதலியவைகளாற்
अञ्जानः सः (त्वं)	அஞ்ஜானஃ ஸஃ (ஸ்வம்)	போற்றப்பட்டவனாகிய நீ,
पवस्व	வவஸ்வ	ஒழுகுவாயாக. (பின்னர்,)
इन्द्रस्य	இந்த்ரஸ்ய	இந்திரனுடைய
जठरं	ஜடரம்	வயிற்றை
आविश	ஆவிஸ	அடைவாயாக.

* इन्द्राय पीतये, என்பது பாட பேதம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—5.

மிகுந்த மதத்தைக் கொடுக்கின்ற சோமமே! கலப்பதற்குச் சாதன மாகிய பசுவின் பால் முதலியவைகளால் நன்கு போற்றப்பட்ட நீ ஒழுகுவா யாக, பின்னர் இந்திரனுடைய வயிற்றிற் சேர்வாயாக என்பதாம். (5)

நான்காவது கண்டம்

முற்றும்.

ஐந்தாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—5. அத்தியாயம்—9. கண்டம்—5.

ஒன்பது மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३ २ १ ३ २र ३ १ २ ३ २३ २
1208. अया वीती परिस्रव यस्त इन्दो मदेष्वा ।
३ १२ ३ १ २र
अवाहन्नवतीर्नव ॥ १ ॥

சுயா வீதீ வரிஸ்ரவ யஸ்த இந்தோ மதெஷ்வா ।
சுவாஹன்னவதீர்நவ ॥

அன்வயம்.

इन्दो!, वीती, अया, परिस्रव, ते यः, मदेषु, नव नवतीः, अवाहन् ॥

பதவுரை.

इन्दो!	இந்தோ!	சோமமே! நீ,
वीती	வீதீ	இந்திரன் அருந்துவதற்கு
अया	சுயா	இத்தகைய இரசமாக
परिस्रव	வரிஸ்ரவ	நன்கு ஒழுகுவாயாக.
ते यः	தெ யஃ	உனது யாதொரு இரசமானது

मदेषु	மதேஷு	போர்களில்
नव नवतीः	நவ நவதீஃ	பகைவர்களின் எண்பத்தொன்று நகரங்களை
अवाहन्	அவாஹந்	அழித்ததுவோ, (அந்த இரசத்தால் என்பதாம்.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட முதலாவது சூக்தத்தில்—1. அமகீயு ரிஷி.

சோமமே! நீ, இத்தகைய இரசமாக இந்திரன் அருந்துதற் பொருட்டு ஒழுகுவாயாக. எவ்விதமான இரசமாயெனின்? உன்னுடையதொரு ரசம், உயுத்தங்களிற் சத்துருக்களின் எண்பத்தொரு நகரங்களை யழித்ததோ, அத்தகைய இரசமாய் என மேற்கூட்டுக. இச்சோமரசத்தை யருந்திக்கொண்டு இந்திரன் சத்துருக்களுடைய எண்பத்தொரு நகரங்களையு மழித்தனன். அது பற்றி, இரசமே யழித்ததென்று உபசாரமாய்க் கூறப்பட்டது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१२ ३२ ३ १ २३ १ २ ३ १ २

1209. **पुरः सद्य इत्था धिये दिवोदासाय शम्बरम् ।**

२ ३ ३ ३ २ ३

अध त्यं तुर्वशं यदुम् ॥ २ ॥

வுரஃ ஸத்ய இத்தா தியெ திவொதாஸாய ஸம்பரம் ।
அத த்யம் துர்வஸம் யதும் ॥

அன்வயம்.

सद्यः पुरः, इत्था धिये, दिवोदासाय, शम्बरं, अध, त्यं तुर्वशं, यदुं, (अवाहन्) ॥

பதவுரை.

सद्यः पुरः	ஸத்யஃ வுரஃ	இந்திரன் அருந்திய சோம ரசம், மிக விரைவில் பகைவர் நகரங்களை யழித்துவிட்டு,
इत्था धिये	உத்தா தியெ	இவ்வாறே, உண்மையாகிய கருமங்களையுடைய
दिवोदासाय	திவொதாஸாய	'திவோதாச' னென்னும் மன்னன் பொருட்டு,

शंबरं	ஶம்பரம்	சத்துருக்கட்கு இறைவனையும்
अध	அத	பின்னர்,
त्यं तुर्वशं	த்யம் துர்வஶம்	திவோதாசனது பகைவனாகிய 'துர்வசன், என்பவனையும்
यदुं	யதும்	'எது' என்னும் பெயருள்ள அரசனையும்
(अवाहन्)	(அவாஹந்)	(கொன்றது) என்பதாம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

சோமரசம், ஒரே நாளிலேயே பகைவர் புரங்களை அழித்துவிட்டது. அவ்வாறே சத்திய கருமங்களையுடைய 'திவோதாசன்' என்னும் அரசன் பொருட்டு, பகைவர் நகரங்கட்கு இறைவனையும், பின்னர், 'துர்வசன்' என்னும் மன்னனையும், திவோதாசனுடைய சத்துருவாகிய 'எது' வென்னும் அரசனையுங் கொன்றுவிட்டது என்பதாம். ஈண்டுச் சோமரசத்தை யருந்தி உன்மத்தனாகிய இந்திரன், இக்காரியங்களனைத்தையுஞ் செய்தனன். அது பற்றிச் சோமரசஞ் செய்ததென உபசாரமாய்க் கூறப்பட்டது என்பது காண்க. (2)

மந்திரம் 3.

१२ ३ १२ ३१ २र ३ १२
1210. *परि नो अश्वमश्वविद्गोमदिन्दो हिरण्यवत् ।
१२ ३२ ३१२
क्षरा सहस्रिणीरिषः ॥ ३–६ ॥

இருக்கு 9-61-1-3.

பரி நொ அஶ்வமஶ்வவிதோமதிந்தோ ஹிரண்யவத் ।
க்ஷரா ஸஹஸ்ரிணீரிஷஃ ॥

அந்வயம்.

इन्दो !, अश्ववित्, नः, गोमत्, हिरण्यवत्, अश्वं, सहस्रिणीः, इषः, परिक्षर ॥

பதவுரை.

इन्दो !	உந்தோ !	சோமமே !
अश्ववित्	அஶ்வவித்	குதிரையைக் கொடுக்கின்ற நீ,
नः	நஃ	எங்கட்குப்

* परिणः, என்பது பாட பேதம்.

गोमत्	ஶொமத்	பசுக்களையும்,
हिरण्यवत्	ஹிரண்யவத்	பொன்னுடன்கூட
अश्वं	அஶ்வம்	குதிரையையும்,
सहस्रिणीः	ஸஹஸ்ரிணீ:	ஆயிரவகையான
इषः	இஷ:	அன்னங்களையுங்
परिक्षर	பரிக்ஷர	கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

சோமமே! குதிரையைக் கொடுக்கின்ற நீ, எங்கட்குக் குதிரையையும், பொன்னோடு கூட பசு முதலியவைகளையும், தனத்தையும், மற்றும், ஆயிரவகையான அன்னங்களையுங் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
1211. अपघ्नन् पवते मृधोऽप सोमो अरावणः ।
२ ३ १ २ ३ २
गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥ १ ॥

அபவ்நந் பவதெ ம்ருதோ஽ப ஸொமொ அராவணஃ ।
ஶச்ஹந்த்ரஸ்ய நிஷ்க்ருதம் ॥

அந்வயம்.

सोमः, मृधः, अपघ्नन्, अरावणः अप, इन्द्रस्य, निष्कृतं, गच्छन्, पवते ॥

பதவுரை.

सोमः	ஸொமஃ	சோமரசம்,
मृधः	ம்ருதஃ	துன்புறுத்தும் பகைவர்களைக்
अपघ्नन्	அபவ்நந்	கொன்றுவிட்டு,
अरावणः अप	அராவணஃ அப	ஈயாதோர்களையு மழித்துக் கொண்டு,
इन्द्रस्य	இந்த்ரஸ்ய	இந்திரனுடைய
निष्कृतं	நிஷ்க்ருதம்	இடத்தை
गच्छन्	ஶச்ஹந்	அடைந்து
पवते	பவதெ	ஒழுகுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட இரண்டாஞ் சூக்தத்தில்—1.

சோமரசம், பீடிக்கின்ற பகைவர்களைக் கொன்றுவிட்டு, கொடுக்க ஆற்றலுள்ளவிடத்துங் கொடுக்காதோர்களையு மழித்துக்கொண்டு, இந்திரனுடைய நிலயத்தையடைந்து தாரையாய்ப் பொழிகின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

३ १ २ ३१ २२३ १२ ३ १ २२
1212. **महो नो राय आभर पवमान जही मृधः ।**
१ २ ३२३१ २
रास्वेन्दो वीरवद्यशः ॥ २ ॥

உஹோ நொ ராய ஆபர பவமான ஜஹீ ம்ருதஃ ।
ராஸ்வேந்தோ வீரவத்யஃ ॥

அன்வயம்.

पवमान, इन्दो !, नः, महः, रायः, आभर, मृधः, जहि, वीरवत्, यशः, रास्व ॥

பதவுரை.

पवमान	பவமான	புனிதமாகிய
इन्दो !	இந்தோ !	சோமமே ! நீ,
नः	நஃ	எங்கட்கு,
महः	மஹஃ	மிகுந்த
रायः	ராயஃ	தனத்தைக்
आभर	ஆபர	கொடுப்பாயாக.
मृधः	ம்ருதஃ	சத்துருக்களையுங்
जहि	ஜஹி	கொல்வாயாக.
वीरवत्	வீரவத்	புத்திரன் முதலியோர்களுடன்
यशः	யஶஃ	கீர்த்தியையுங்
रास्व	ராஸ்வ	கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

பரிசுத்தமாகிய சோமமே ! நீ, எங்களுக்கு மிகுந்த தனத்தைக் கொடுப்பாயாக. பீடிக்கின்ற பகைவர்களையும் நாசஞ் செய்வாயாக. புத்திரன் முதலியோர்களுடன் கீர்த்தியையுங் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

१ २ ३२३२उ ३ २३ १ २३१२
1213. न त्वा शतश्चन हुतो राधो दित्सन्तमामिनन् ।
१२३१२३१२
यत्पुनानो मखस्यसे ॥ ३–७ ॥

இருக்கு 9-61-25-27.

ந க்வா ஶதஞ்சந ஹூதோ ராயோ தி³த்ஸந்தமாமினந் ॥
யத்பு³நாநோ மக²ஸ்யஸே ॥

அன்வயம்.

(हे सोम !,) पुनानः, यत्, मखस्यसे, राधः दित्सन्तं, त्वा, हुतः, शतश्चन, न आमिनन् ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	(சோமமே !)
पुनानः	வ்ருநாநஃ	புனிதமாகிய நீ,
यत्	யத்	எப்போது
मखस्यसे	மக²ஸ்யஸி	தனங்கொடுக்க விரும்புகின்றனையோ, (அப்போது)
राधः दित्सन्तं	ராத⁴ஃ தி³த்ஸந்தம்	தனங்கொடுக்க விரும்புகின்ற
त्वा	த்வா	உன்னை,
हुतः	ஹூதஃ	துன்புறுத்துஞ் சத்துருக்கள்
शतश्चन	ஶதஞ்சந	நூற்றுக்கணக்கான பேர்கள் கூடின போதிலும்
न आमिनन्	ந ஆமிநந்	தடுக்கமாட்டார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

சோமமே ! தனங் கொடுப்பதற்கு விரும்பிய உன்னைத், துன்புறுத்துகின்ற நூற்றுக்கணக்கான சத்துருக்களும் பீடிக்கமாட்டார்கள். (அதாவது தடுக்கமாட்டார்கள்.) எப்போதெனின் ? பவித்திரமாகிய நீ எப்போது தனத்தைக்கொடுக்க விரும்புகின்றனையோ அப்போது என்பதாம். (3)

மந்திரம் 7.

३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १२
1214. अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः ।
३ १ २२ ३२
हिन्वानो मानुषीरपः ॥ १ ॥

ꣳꣳꣳ

ஸுயுக்த ஸூர ஸாதஶம் பவமாநோ மநாவதி ।
அந்தரிக்ஷேண யாதவே ॥

அந்வயம்.

पवमानः, मनावधि, अन्तरिक्षेण, यातवे, सूरः, एतशं, अयुक्त ॥

பதவுரை.

पवमानः	பவமாநः	சோமமானது,
मनावधि	மநாவதி	மனிதர்கள்
अन्तरिक्षेण	அந்தரிக்ஷேண	அந்தரிட்சவாயிலாகச்
यातवे	யாதவே	செல்வதற்குச்
सूरः	ஸூரः	செலுத்துகின்ற சூரியனது
एतशं	ஸாதஶம்	'ஏதசம்' என்னுங் குதிரையைப்
अयुक्त	அயுக்த	(இரதத்திற்) பூட்டுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

புநிதமாகிய சோமமானது, மனிதர்கள், அந்தரிட்ச மார்க்கமாய்ச் செல்வதற்குச் செலுத்துகின்ற சூரியனுடைய 'ஏதசம்' என்னுங் குதிரையைப் (தேரிற்) பூட்டுகின்றது. ஏதசம், என்பது குதிரையென நிகண்டு. 1-14-10-வது சூத்திரம் கூறுகின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 9.

३२ ३ २ ३ २३ १ २ ३ १२
1216. उत त्या हरितो रथे सूरो अयुक्त यातवे ।
२ ३ २ ३ १२ ३२
इन्दुरिन्द्र इति ब्रुवन् ॥ ३–८ ॥

இருக்கு 9-63-7-9.

உத த்வா ஹரிதோ ரதே ஸூரோ அயுக்த யாதவே ।
இந்துரிந்த்ர இதி ப்ரூவந் ॥

அந்வயம்.

उत, इन्दुः, इन्द्रः इति, ब्रुवन्, यातवे, त्याः हरितः सूरः, रथे, अयुक्त ॥

பதவுரை.

उत	உத	மற்றும்,
इन्दुः	இந்துஃ	சோமமானது
इन्द्रः इति	இந்த்ரஃ இதி	'இந்திரன்' என்று
ब्रुवन्	ப்ருவந்	சொல்லிக்கொண்டு
यातवे	யாதவே	செல்வதன் பொருட்டுப்
त्याः हरितः	தயாஃ ஹரிதஃ	பச்சை நிறமுடைய அக் குதிரைகளைச்
सूरः	ஸூரஃ	சூரியனுடைய
रथे	ரதே	தேரிற்
अयुक्त	அயுக்த	பூட்டுகின்றது.

சாயணபாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

அன்றியும், சோமமானது, 'இந்திர' என்று சொல்லிக்கொண்டு செல்வதற்குப் பச்சைநிறமுடைய அக்குதிரைகளைச் சூரியனுடைய தேரிற் பூட்டுகின்றது என்பதாம். (3)

ஐந்தாவது கண்டம்

முற்றும்.

ஆறுவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—5. அத்தியாயம்—9. கண்டம்—6.

ஆறு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३ १ २ ३ २३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३१२ ३१ २

1217. अग्निं वो देवमग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूतमध्वरे कृणुध्वम् ।

१ २२३ १ २ ३ २ ३ १२ ३ १२ ३२

यो मर्त्येषु निध्रुविर्ऋतावा तपुर्मूर्धा घृतान्नः पावकः ॥ १ ॥

கூழீம் வொ தெவஂழிஹிஃ வஜொஷா யஜிஷ்டம் ஂ ஊ தஂவ்வெ
[கூரணாவ்ழி।
யொ ஃமெர்யேஷு நிஂ ரிஷீடகாவா தவஂஃமயா
[வ்ரதாஹஃ வாவகஃ ॥

அன்வயம்.

(हे देवाः !,) वः, अग्निभिः, सजोषा, यजिष्टं, अग्निं देवं, अध्वरे, दूतं कृणुध्वं, यः, मर्त्येषु, निष्विः, ऋतावा, तपुर्मूर्धा, घृतान्नः, पावकः ॥

பதவுரை.

हे देवाः !	ஹெ தெவாஃ !	தேவர்களே !
वः	வஃ	நீங்கள்,
अग्निभिः	கூழீஹிஃ	மற்றைய அக்கினிகளுடன்
सजोषा	வஜொஷா	கூடியவனும்,
यजिष्टं	யஜிஷ்டம்	மிகப் போற்றத்தக்கவனுமாகிய
अग्निं देवं	கூழீம் தெவம்	அக்கினிதேவனை,
अध्वरे	கூவ்வெ	வேள்வியின்கண்
दूतं कृणुध्वं	ஊதம் கூரணாவ்வம்	தூதுவனுகச் செய்வீர்களாக.
यः	யஃ	எவனொருவன் தேவனுக இருந்தும்,
मर्त्येषु	ஃமெர்யேஷு	மனிதர்களுக்குள்
निष्विः	நிஂரிஷீஃ	சிறந்தவனும்,
ऋतावा	ஊதாவா	வேள்வியின் சம்பந்தமுடையவனும்,
तपुर्मूर्धा	தவஂஃமயா	சுடும் ஒளியுடையவனும்,
घृतान्नः	வ்ரதாஹஃ	நெய்யருந்துவோனும்,
पावकः	வாவகஃ	புனிதஞ் செய்பவனுமாவனை, (அவ்வக்கினிதேவனை யென்க)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட முதற் சூக்தத்தில்—1. வசிஷ்டர் ரிஷி.

தேவர்காள் ! நீவிர், பிரகாசமுடைய அக்கினியை ஒழுங்காயுள்ள வேள்வியில் தூதனுகச் செய்வீர்களாக. எத்தன்மைய அக்கினியையெனின் ? எது வேறைய அக்கினிகளுடன் கூடியதும், இறைஞ்சற்குரியதும், தேவதையாயிருந்தும் மனிதர்களுட் சிறந்ததும், வேள்வியை யுடையதும், அல்லது, சத்தியமுடையதும், சுடும் ஒளியுடையதும், புனிதமாக்குவதுமாமோ, அவ்வக்கினியைத் தூதுவனுகச் செய்வீர்களாக எனக் கூட்டுக. (1)

மந்திரம் 2.

२ ३२ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३२ ३१२ ३
1218. प्रोथदश्वो न यवसेऽविष्यन् यदा महः संवरणात् व्यस्थात् ।
१ २ ३२३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
आदस्य वातो अनुवाति शोचिरध स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति ॥२॥

ப்ரோதத்ஶ்வோ ந யவஸெ ஸவிஷ்யந் யதா மஹஃ ஸம்வரணாத்
[வ்யஸ்தாத் ।
ஆதஸ்ய வாதோ அநுவாதி ஶோசிரத ஸ்ம தெ வ்ரஜநம் கூஷ்ண
[மஸ்தி ॥

அந்வயம்.

अविष्यन्, यवसे, प्रोथत्, अश्वः न, यदा, महः संवरणात्, व्यस्थात्, आत्, अस्य, शोचिः, अनुवातः, वाति, अध, (हे अग्ने !,) ते व्रजनं, कृष्णं अस्ति ॥

பதவுரை.

अविष्यन्	அவிஷ்யந்	புல்லைத் தின்று
यवसे	யவஸெ	புல்லின்மேல் நின்று
प्रोथत्	ப்ரோதத்	கனைக்கின்ற
अश्वः न	அஶ்வஃ ந	குதிரையைப் போன்று,
यदा	யதா	அக்கினி, எப்போது
महः संवरणात्	மஹஃ ஸம்வரணாத்	பெருந்தடையினின்று
व्यस्थात्	வ்யஸ்தாத்	பரந்த மரங்களில் இருக்கின்றதோ,
आत्	ஆத்	அப்போது
अस्य	அஸ்ய	இவ் வக்கினியினுடைய
शोचिः	ஶோசிஃ	சுவாலை
अनुवातः	அநுவாதஃ	வாயுவைப் பின்பற்றிக்கொண்டு
वाति	வாதி	செல்கின்றது.
अध	அத	பின்னர்
(हे अग्ने !)	(ஹெ அக்ந்தெ !)	(அக்கினியே !)
ते व्रजनं	தெ வ்ரஜநம்	நினது வழி
कृष्णं अस्ति	கூஷ்ணம் அஸ்தி	கரியதாயிருக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

புல்லைத்தின்று புல்லின்மேனின்று கணைக்கின்ற, அல்லது, செல்கின்ற குதிரையைப்போன்று, பெருந் தடையினின்றுங் கிளம்பிய தீயின் சுவாலை, காற்றைப் பின்பற்றிக்கொண்டு செல்கின்றது. இனி கட்புலப் பட்ட தூதி :—பின்னர், அக்கினியே! நினது மார்க்கம் கருமையா யிருக்கின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

२ २२ ३ १२ ३ २उ ३ १२ ३ १ २ ३ २

1219. उद्यस्य ते नवजातस्य वृष्णोऽग्ने चरन्त्यजरा इधानाः ।

२ ३ १२३ २ ३१ २ ३ २ ३१ २३ १२ ३ २ ३ २

अच्छा द्यामरुषो धूम *एषि सं दूतो अग्न ईयसे हि देवान् ॥ ३-९ ॥

இருக்கு 7-3-1-3.

உத்யஸ்ய தே நவஜாதஸ்ய வ்ருஷ்ணோஅக்ன சரந்த்யஜரா இதாநாஃ ।
அச்சா த்யாமருஷோ தூம ஏஷி ஸம் தூதோ அக்ன ஈயஸே ஹி தேவாந் ॥

அந்வயம்.

अग्ने!, नवजातस्य, वृष्णः, इधानाः, अजरा, यस्य ते, उच्चरन्ति, अग्ने!, अरुषः, धूमः, दूतः हे अग्ने!, द्यां, अच्छ समेषि, देवान्, हि, ईयसे॥

பதவுரை.

अग्ने!	அக்ன!	அக்கினியே!
नवजातस्य	நவஜாதஸ்ய	புதிதாய் உண்டானவைகளும்
वृष्णः	வ்ருஷ்ணஃ	மழையைப் பெய்விப்பவைகளுமான
इधानाः	இதாநாஃ	சுவாலைகள்
अजरा	அஜரா	மூப்பற்ற
यस्य ते	யஸ்ய தே	நின்னிடத்திலிருந்து
उच्चरन्ति	உச்சரந்தி	எழுகின்றன.
अग्ने!	அக்ன!	அக்கினியே!
अरुषः	அருஷஃ	பிரகாசமுடையவனும்,

* एति, என்பது பாட பேதம்.

धूमः	ധൂമഃ	புகையுள்ளவனும்
दूतः हे अग्ने !	ദൂതഃ ഹെ അഗ്നേ !	தூதுவனுமாகிய அக்கினியே! நீ,
द्यां	ദ്യാം	வானுலகை
अच्छ समेषि	അച്ഛ സമേഷി	இனிதடைகின்றாய். பின்னர், அங்கிருந்து
देवान्	ദെവാന്	இந்திரன் முதலிய தேவர்களை
हि	ഹി	ஒருதலையாகச்
ईयसे	ഈയസെ	சேர்கின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

அக்கினியே! புதிதாய்த் தோன்றியவனும், மழையைப் பெய்விப்பவனும், மூப்பற்றவனுமாகிய அத்தகைய நினது சுவாலைகள் பெருகியெழுகின்றன. அக்கினியே! பிரகாசமுடையவனும், புகையுடையவனும், தூதுவனுமாகிய நீ, வானுலகை இனிதடைகின்றாய். அல்லது, அக்கினியே! உன்னுடைய புகை, வானுலகிற் செல்கின்றது. ஈண்டுப் பால் திரிந்தது. நீயும் தேவர்களை யடைகின்றாய் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

१ २२ ३२ ३ २३ १ २
1220. तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे ।
१ २२ ३ १ २
स वृषा वृषभो भुवत् ॥ १ ॥

തമിന്ദ്രം വാജയാമസി മഹെ വൃത്രായ ഹന്തവെ ।
സ വൃഷാ വൃഷഭോ ഭുവത് ॥

அன்வயம்.

महे, वृत्राय, हन्तवे, तं इन्द्रं, वाजयामसि, वृषा सः, वृषभः भुवत् ॥

பதவுரை.

महे	മഹെ	மிகப் பெரிய
वृत्राय	വൃത്രായ	விருத்திராசுரனைக்
हन्तवे	ഹന്തവെ	கொல்லுதற் பொருட்டு
तं इन्द्रं	തം ഇന്ദ്രം	அவ்விந்திரனை,

वाजयामसि	வாஜயாமஸி	சோமத்தாலும், துதியாலும் வலியுறுத்திக் கொண்டிருக்கின்றோம்.
वृषा सः	வ்ருஷா ஸஃ	தனத்தைப் பொழியும் அவ்விந்திரன், எங்கட்குச்
वृषभः	வ்ருஷபஃ	சோமத்தைப் பொழிந்து துதிக்கத்தக்க
भुवत्	பூவத்	கொடையாளியாவானாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட இரண்டாஞ் சூக்தத்தில்—1. சுகட்சர், அல்லது, சுருதகட்சர் ரிஷி.

வேள்வித் தலைவர்கள் கூறுகின்றார்கள்:—முற் கூறிய இந்திரனை, சோமத்தாலும், துதிகளாலும் ஆற்றலுடையவனாய்ச் செய்கின்றோம் என்பதாம். மூலத்தில் 'வாஜயாமஸி' (வலியாக்குகின்றோம்) என்னுஞ் சொல், வலியுடையார்கள் மேனின்றது. தனத்தைப் பொழிகின்ற அவ்விந்திரன், சோமங் கொடுக்கின்றவர்களும், துதியைப் பாடுகின்றவர்களுமான எங்கட்குத் தன முதலியவைகளை ஈவோனாகுக என்பதாம். ஈண்டு, முன்னிலை தன்மையாய்த் திரிந்தது. (1)

மந்திரம் 5.

२ ३ १ २र ३ १ २र३ १ २र ३ २
1221. इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स बले हितः ।
३ २ ३२उ ३ २
द्युम्नो श्लोकी स सोम्यः ॥ २ ॥

இந்த்ரஃ ஸ தாமநெ க்ருத ஒஜிஷ்டஃ ஸ ஸ்வலெ ஹிதஃ ।
த்யும்நொ ஶ்லோகீ ஸ ஸொம்யஃ ॥

அந்வயம்.

सः इन्द्रः, दामने, कृतः, ओजिष्ठः, सः, बले हितः, द्युम्नः, श्लोकी, सः, सोम्यः ॥

பதவுரை.

सः इन्द्रः	ஸஃ இந்த்ரஃ	அவ் விந்திரன்,
दामने	தாமநெ	துதிப்போர்க்குத் தனங்கொடுத்தற் பொருட்டே,

कृतः	கரு தः	பிரசாபதியாற் சிருட்டிக்கப்பட்டனன்.
ओजिष्ठः	ஒஜிஷ்டः	மற்றும், ஆற்றலுள்ள
सः	ஸஃ	அவ் விந்திரன்,
बले हितः	பலெ ஹி தஃ	வலிகொடுக்குஞ் சோமரசத்தை யருந்துவதற்குப் படைப்புக் காலத்தில் நியமிக்கப்பட்டனன்.
द्युम्नः	த்யும்நஃ	அன்னமுடையவனும்,
श्लोकी	ஷ்லோகீ	புகழுடையவனுமாகிய
सः	ஸஃ	அவ் விந்திரன்,
सोम्यः	ஸொம்யஃ	சோமத்திற்கு உரியவன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—2.

அவ்விந்திரன், துதிப்போர்கட்குத் தன முதலியவைகளைக் கொடுத்தற் பொருட்டே பிரசாபதியாற் சிருட்டிக்கப்பட்டான். மற்றும், ஆற்றல் மிகுந்த அவ்விந்திரன், வலியைக் கொடுக்கின்ற சோமரசத்தை யருந்துவதற் கும், சோமத்தின் பொருட்டும் பிரசாபதியாற் படைப்புக்காலத்தில் உண் டாக்கப்பட்டனன். 'த்யும்நஃ' என்னுஞ் சொற்கு பிரகாசம், அல்லது கீர்த்தி, அல்லது, அன்னம், பொருள் என்று கூறுகின்றது. (நிருத்தம் நைருத்திய காண்டம் 5-5-ம் சூத்திரம்) ஆதலின், கீர்த்தியுடைய, அல்லது, அன்னமுடைய அவ்விந்திரன் சோமரசத்திற்குரியவனேயாவன் என்பதாம்.

மந்திரம் 6.

३ २उ ३ १ २२३ १ २ ३ १ २

1222. गिरा वज्रो न संभृतः सबलो अनपच्युतः ।

३ २ ३ १ २र

ववक्ष उग्रो अस्तृतः ॥ ३–१० ॥

இருக்கு 8-93-7-9.

கிரா வஜ்ரோ ந ஸம்ப்ருதஃ ஸபலோ அநபச்யுதஃ ।
வவக்ஷ உக்ரோ அஸ்த்ருதஃ ॥

அந்வயம்.

वज्रः न, गिरा, संभृतः, सबलः, अनपच्युतः, उग्रः, अस्तृतः, ववक्षे ॥

பதவுரை.

वज्रः न	வஜ்ரः ந	வச்சிராயுதத்தைக் கூர்மைப் படுத்துவதுபோல்,
गिरा	கிரா	துதியாகிய வாக்கால்
संभृतः	ஸம்ப்ருதஃ	கூர்மையாக்கப் பெற்றவனும்,
सबलः	ஸபலஃ	ஆற்றலுடையவனும்,
अनपच्युतः	அநபவ்யுதஃ	பிறராற் ருழ்த்தப்படாதவனும்,
उग्रः	உக்ரஃ	பெரியோனும்,
अस्तृतः	அஸ்ருதஃ	பிறரால் புண்படாதவனுமாகிய இந்திரன்
ववक्षे	வவக்ஷே	துதிப்போர்கட்குத் தனம் கொடுக்க விரும்புகின்ருன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—6. இருக்கு—3.

துதியாகிய வாக்கைக்கொண்டு தோத்திரஞ் செய்பவர்களால் கூர்மையாக்கப்பட்டவனும், அதிலுவமை :— வச்கிரம் என்னும் ஆயுதம், அதைச் செய்வோர்களால் மிகக் கூர்மையுடையதாய்ச் செய்யப்படுவதுபோன்றனல். இதுபற்றியே வலியுடையவனும், ஆற்றலுடையவனும், இதனுனே பிறர்களால் தாழ்த்தப்படாதோனும், பெரியோனும், போரில் பகைவர்களாற் கொல்லப்படாதோனுமாகிய இந்திரன், தோத்திரஞ் செய்வோர்கட்குத் தனமுதலியவைகளைக் கொடுக்க விரும்புகின்ருன் என்பதாம். (3)

ஆருவது கண்டம்

முற்றும்.

ஏழாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—5. அத்தியாயம்—9. கண்டம்—7.

பத்து மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१ २ ३ १ २ ३१ २२ ३१ २ १ २

1223. अध्वर्यो अद्रिभिः सुतꣳ सोमं पवित्र आनय ।

३ १ २३ १२

* पुनाहीन्द्राय पातवे ॥ १ ॥

---

* पुनीहि, என்பது பாட பேதம்.

அத்வர்யோ அத்ரிபிः ஸுதம் ஸோமம் பவித்ர ஆநய ।
புநாஹீந்த்ராய பாதவே ॥

அந்வயம்.

हे अध्वर्यो!, अद्रिभिः, सुतं, सोमं, पवित्रे, आनय, इन्द्राय पातवे, पुनाहि ॥

பதவுரை.

हे अध्वर्यो!	ஹே அத்வர்யோ!	வேள்வி செய்வோய்! நீ,
अद्रिभिः	அத்ரிபிः	கற்களால் (இடித்துப்)
सुतं	ஸுதம்	பிழியப்பட்ட
सोमं	ஸோமம்	சோமரசத்தை,
पवित्रे	பவித்ரே	தசாபவித்திரம் என்னும் வடிக்கும் ஆடையிற்
आनय	ஆநய	சேர்ப்பாயாக. மற்றும்,
इन्द्राय पातवे	இந்த்ராய பாதவே	இந்திரன் அருந்துதற்குப்
पुनाहि	புநாஹி	புநிதஞ் செய்வாக.

சாயணபாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட முதற் சூக்தத்தில் 1.

வேட்போய்! நீ, கற்களாலிடித்துப் பிழியப்பெற்ற சோமம், தசாபவித்திரமென்னும் வடிக்கின்ற ஆடை நுனியை அடையுமாறு செய்வாயாக. மற்றும், இந்திரன் அருந்துதற் பொருட்டுப் புநிதமாக்குவாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

२३ १ २ ३ १ २ ३२उ ३क २र
1224. तव त्य इन्दो अन्धसो देवा मधो * व्याशत ।
१२ १२३
पवमानस्य मरुतः ॥ २ ॥

தவ த்ய இந்தோ அந்ஸஸோ தேவா மதோவ்யாஶத ।
பவமாநஸ்ய மரூதஃ ॥

அந்வயம்.

हे इन्दो!, तव, मधोः, पवमानस्य, अन्धसः, त्ये देवाः, मरुतः, व्याशत ॥

---

* व्यश्नुत, என்பது பாட பேதம்.

பதவுரை.

हे इन्दो !	ஹெ இந்தோ !	சோமமே !
तव	தவ	உன்னுடைய
मधोः	மதொஃ	மதந்தரும்
पवमानस्य	பவமாநஸ்ய	புநிதமுள்ள
अन्धसः	அந்ஸஸஃ	அன்னமாகிய இரசத்தை
त्ये देवाः	த்ய தெவாஃ	இந்திரன் முதலிய அத் தேவர்களும்,
मरुतः	மருதஃ	மருத்துக்களென்னுந் தேவதைகளும்
व्याशत	வ்யாஶத	அருந்துகின்றனர்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—2.

சோமமே ! புநிதமாகிய உனது அன்னவடிவ இரசத்தை, அவ்விந்திரன் முதலிய தேவர்களும், மருத்துக்களும் அருந்துகின்றார்கள் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

३ २ ३ १२ ३२उ १२ ३ ३ १ २
1225. दिवः पीयूषमुत्तमꣳ सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
३ २ ३ १२
सुनोता मधुमत्तमम् ॥ ३–११ ॥

இருக்கு 9-51-1-3-2.

தி வஃ பீயூஷமுத்தமம் ஸொமமிந்த்ராய வஜ்ரிணெ ।
ஸுநொதா மதுமத்தமம் ॥

அந்வயம்.

(हे अध्वर्यवः !,) मधुमत्तमं, दिवः, पीयूषं, उत्तमं सोमं, वज्रिणे इन्द्राय, सुनोत ॥

பதவுரை.

(हे अध्वर्यवः !)	(ஹெ அத்வர்யவஃ !)	(வேள்வி செய்கின்றோர்களே !) நீவிர்,
मधुमत्तमं	மதுமத்தமம்	மிகுந்த இன்சுவை யுடையதும்,
दिवः	தி வஃ	வானுலகிற்கு
पीयूषं	பீயூஷம்	அமுதமும்

उत्तमं सोमं	உத்தமம் ஸொமம்	சிறந்ததுமாகிய சோமத்தை,
वज्रिणे इन्द्राय	வஜ்ரிணை இந்த்ராய	வச்சிரந் தாங்கிய இந்திரன் பொருட்டுப்
सुनोत	ஸுநோத	பிழிவீர்களாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—3.

வேட்போர்காள்! நீவிர், மிகுந்த இன்சுவையுடையதும், வானுலகிற்கு அமுதமுமாகிச் சிறந்துள்ள சோமத்தை, வச்சிரம் தாங்கிய இந்திரன் பொருட்டுப் பிழிவீர்களாக என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

३ २ ३१ २३ २ ३२३ १ २ ३१ २ ३ २ ३ १२

1226. धर्त्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो देवानामनु माद्यो नृभिः ।

१२ ३२उ ३ २ २र ३२उ १ १ ३२

हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर्वृथा पाजांसि कृणुषे नदीष्वा ॥१॥

ध॒र्त्ता॒ दिवः॑ पवते कृ॒त्व्यो॑ र॒सो दे॒वाना॒मनु॑ मा॒द्यो॑ नृ॒भिः॑ ।

[हरिः॑ सृ॒जानो॒ अत्यो॒ न स॒त्वभि॒र्वृथा॒ पाजां॑सि कृणुषे॒ नदी॑ष्वा ॥

अन्वयம்.

कृत्व्यः, रसः, देवानां दक्षः, नृभिः, अनुमाद्यः, धर्त्ता, दिवः, पवते, हरिः, सत्वभिः, सृजानः, अत्यः न, नदीषु, वृथा, पाजांसि, आ कृणुषे ॥

பதவுரை.

कृत्व्यः	கிருத்வ்யஃ	சோதித்தற்குரியதும்,
रसः	ரஸஃ	இரசவடிவத்தையுடையதும்,
देवानां दक्षः	தேவாநாம் தக்ஷஃ	தேவர்கட்கு ஆற்றலைக் கொடுப்பதும்,
नृभिः	நிருபிஃ	வேட்போர்களால்
अनुमाद्यः	அநுமாத்யஃ	துதித்தற்குரியதும்
धर्त्ता	தர்த்தா	அணைத்தையுந் தாங்குவதுமாகிய சோமம்,
दिवः	திவஃ	அந்தரிட்சத்திலிருக்கின்ற வடிக்கும் பாத்திரத்திலிருந்து

पवते	பவதெ	ஒழுகுகின்றது.
हरिः	ஹரிஃ	பச்சை நிறமுடைய அச் சோமரசம்
सत्वभिः	ஸக்வபிஃ	உயிர்களால்
सृजानः	ஸ்ரஜாநஃ	உண்டாக்கப்பட்டு,
अत्यः न	அத்யஃ ந	பழகிய குதிரை இனிது செல்லுமாறு
नदीषु	நதீஷு	'வசதீவரி' என்னும் ஆற்றுநீரிற்
वृथा	வ்ரதா	செலுத்துவோரின்றி
पाजांसि	பாஜாம்ஸி	ஆற்றல்களை
आ कृणुषे	ஆ க்ருணுஷெ	உண்டாகச் செய்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட இரண்டாஞ் சூக்தத்தில்—1.

அனைத்தையுந் தாங்குகின்ற சோமம், அந்தரிட்சத்திலிருக்கின்ற வடிக்கும் ஆடை நுனியிலிருந்து ஒழுகுகின்றது. எத்தன்மைய சோமரசமெனின்? சோதிக்கத்தக்கதும், இரச வடிவானதும், தேவர்களுக்கு ஆற்றலைக் கொடுப்பதும், அல்லது, வளர்ப்பதும், வேட்போர்களால் களிக்கத்தக்கதும், அல்லது, துதிக்கத்தக்கதுமாமென்க. பச்சை நிறமுடையதும், எங்களால் உண்டாக்கத் தக்கதும், பழக்கிய குதிரை வருத்தமின்றிச் செல்வதுபோன்று வருத்தமின்றித் தனது ஆற்றலை உண்டாக்குகின்றதும், குடத்தினிறைத்து வைத்திருந்த ஆற்று நீரில் (வசதீவரி என்னும் நீரிற்) கலந்து வலியடைகின்றதுமாமென்க. (1)

மந்திரம் 5.

२ ३ १ २ १२ ३ १२ ३ २ १ २ ३ १ २र
1227. शूरो न धत्त आयुधा गभस्त्योः स्वाः३ सिषासन्रथिरो गविष्टिषु ।
१ २ ३ १ २ ३१२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रस्य शुष्ममीरयन्नपस्युभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते मनीषिभिः ॥

ஶூரொ ந தத்த ஆயுதா கபஸ்த்யோஃ ஸ்வாஃ ஸிஷாஸந்ரதி
[ரொ கவிஷ்டிஷு ।
இந்த்ரஸ்ய ஶுஷ்மமீரயந்நபஸ்யுபிரிந்துர்ஹிந்வாநொ அஜ்யதெ
[மநீஷிபிஃ ॥

அந்வயம்.

(अयं सोमः,) शूरः न, गभस्त्योः, आयुधा, धत्ते, स्वः, सिषासन्, रथिरः, गविष्टिषु, इन्द्रस्य, शुष्मं, ईरयन्, इन्दुः, अपस्युभिः, मनीषिभिः, हिन्वानः, अज्यते ॥

பதவுரை.

(अयं सोमः)	(அயம் ஸொமஃ)	(இச் சோமம்,)
शूरः न	ஶூரஃ ந	வீரனைப்போன்று
गभस्त्योः	கபஸ்த்யோஃ	இரண்டு கைகளிலும்
आयुधा	ஆயுதா	ஆயுதங்களைத்
धत्ते	தத்தே	தாங்குகின்றது.
स्वः	ஸ்வஃ	சுக சாதனத்தை, அல்லது, வேள்வி வழிபாட்டைச்
सिषासन्	ஸிஷாஸந்	செய்ய விரும்பி,
रथिरः	ரதிரஃ	தேரையுடையதாய்
गविष्टिषु	கவிஷ்டிஷு	வேள்வித் தலைவனுக்குண்டாகிய பசு விருப்பங்களை முன்னிட்டு
इन्द्रस्य	இந்த்ரஸ்ய	இந்திரனுடைய
शुष्मं	ஶுஷ்மம்	ஆற்றலைச்
ईरयन्	ஈரயந்	செலுத்திக்கொண்டு,
इन्दुः	இந்துஃ	சோமம்
अपस्युभिः	அபஸ்யுபிஃ	கருமத்தை விரும்புகின்ற
मनीषिभिः	மநீஷிபிஃ	வேட்போர்களாற்
हिन्वानः	ஹிந்வாநஃ	செலுத்தப்பட்டு
अज्यते	அஜ்யதே	ஆவின் நெய் முதலியவைகளுடன், கலக்கப்படுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—2.

இச்சோமம், சூரனைப்போல் கைகளில் ஆயுதங்களைத் தாங்குகின்றது. சுவர்க்கத்தை, அல்லது, சுகசாதனத்தை அநுபவிக்க விரும்பி, தேர் முதலிய வைகளையுடையதாய், வேள்வித் தலைவனுக்குப் பசுக்கள் வேண்டுமென்னும் இச்சையிருக்குமிடத்து, இந்திரனுடைய வலியை ஏவிக்கொண்டு, கருமத்தை விரும்புகின்ற அறிவு மிகுந்த வேட்போர்களாற் செலுத்தப்பட்டு, சோமமாகிய தேவதை ஆவின்பால் முதலியவைகளுடன் கலக்கின்றது என்பதாம். (இது கிரககாலத்திலென்றுணர்க.) (2)

மந்திரம் 6.

१ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३२३ १ २
1228. इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणा तविष्यमाणो जठरेष्वाविश ।
१ २ ३ २३ २३ १२ ३ ३ २ ३ १२ ३ १ २
प्र नः पिन्व विद्युदभ्रेव रोदसी धिया नो वाजाꣳ * उपमाहि शश्वतः॥

2-12, இருக்கு 9 76-1-3.

இந்த்ரஸ்ய ஸோம பவமான ஊர்மிணா தவிஷ்யமாணோ ஜடரேஷ்வாவிஶ ।
ப்ர நஃ பின்வ வித்யுதப்ரேவ ரோதஸீ தியா நோ வாஜாꣳ உபமாஹி ஶஶ்வதஃ ॥

அன்வயம்.

सोम !, पवमान, तविष्यमाणः, इन्द्रस्य जठरेषु, ऊर्मिणा, आविश, विद्युत्, अभ्रा इव, नः, रोदसी, प्रपिन्व, धिया, नः, शश्वतः वाजान्, उपमाहि ॥

பதவுரை.

सोम !	ஸோம !	சோமமே !
पवमान	பவமான	சமத்காரம் பண்ணப்பெற்ற நீ,
तविष्यमाणः	தவிஷ்யமாணஃ	பெருகினவனுய்,
इन्द्रस्य जठरेषु	இந்த்ரஸ்ய ஜடரேஷு	இந்திரனுடைய வயிறுகளில்
ऊर्मिणा	ஊர்மிணா	தாரையுடன்
आविश	ஆவிஶ	புகுவாயாக.
विद्युत्	வித்யுத்	மின்னல்
अभ्रा इव	அப்ரா இவ	மேகத்தைக் கறப்பதுபோல்,
नः	நஃ	எங்கணிமித்தம்
रोदसी	ரோதஸீ	{ வானுலகம் மண்ணுலகமிரண்டையுங்
प्रपिन्व	ப்ரபின்வ	கறப்பாயாக.
धिया	தியா	கருமவாயிலாக
नः	நஃ	எங்களுக்கு
शश्वतः वाजान्	ஶஶ்வதஃ வாஜாந்	மிகுந்த அன்னங்களை
उपमाहि	உபமாஹி	அருகிலுண்டாக்குவாயாக.

* उपमासि, என்பது பாட பேதம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—3.

சோமமே! புனிதம் பண்ணப்பட்ட நீ, வளர்ச்சியுடையவனும், இந்திரனுடைய வயிறுகளில் பெரிய தாரையாற் சேர்வாயாக. பெரியவயிறுனதாற் பன்மை. எங்ஙணிமித்தம், மின்னலானது மேகங்களே மழையாகக் கறத்தல் போன்று, வானையும் மண்ணையுங் கறப்பாயாக. மற்றும், கருமத்திலுல் எங்களுக்கு மிகுந்த அன்னங்களே அருகிலுண்டாக்குவாயாக என்பதாம்.

'ஸஷ்வதஃ' என்னும் மூலச் சொற்கு மிகுதிப் பொருள் எனக் கூறுகின்றது நிகண்டு. 3-1. ம் சூத்திரம். (3)

மந்திரம் 7.

१ २ ३ २उ ३२३क २र ३२३ १२
1229. यदिन्द्र प्रागपागुदग्न्यग्वा हूयसे नृभिः ।
३ १३१ २ १ २३१ २ ३१२
सिमा पुरु नृषूतो अस्यानवेऽसि प्रशर्ध तुर्वशे ॥ १ ॥

யதிந்ர ப்ராகபாகுதக்ந்யக்வா ஹூயஸே நரிஃ।
ஸிமா புரு நரிஷூதோ அஸ்யானவேऽஸி ப்ரசர்த துர்வசே॥

அன்வயம்.

इन्द्र!, प्राक्, अपाक्, उदक्, न्यक् वा, नृभिः, यत्, हूयसे, सिम!, आनवे, पुरु नृषूतः, असि, प्रशर्ध!, तुर्वशे ॥

பதவுரை.

इन्द्र!	ஊந்ர!	இந்திரனே! நீ,
प्राक्	ப்ராக்	கீழ்த்திசையிலும்
अपाक्	அபாக்	மேற்றிசையிலும்
उदक्	உதக்	வடதிசையிலும்
न्यक् वा	நயக் வா	கீழுயுள்ள திசைகளிலு மிருக்கின்ற
नृभिः	நரிஃ	மனிதர்களால்
यत्	யக்	எப்போதும்
हूयसे	ஹூயஸே	அழைக்கப்படுகின்றாய். அங்ஙனமாயினும்,
सिम!	ஸிம!	சிறந்தோய்!

आनवे	சூநவெ	அநு, என்னும் இராசகுமாரன் பொருட்டு
पुरु नृषूतः	பூரு நூஷூதஃ	மிகுதியாய் அவனுடைய மனிதர்களால் ஏவப்படுகின்றோனாய்
असि	அஸி	இருக்கின்றனை.
प्रशर्ध !	ப்ரஶர்ட்ம !	(அங்ஙனமே) பகைவரை நன்கு அடக்குவோய்!
तुर्वशे	தூர்வ்ஶெ	'துருவசன்' என்னும் அரசன் பொருட்டும், அவனது மனிதர்களால் ஏவப்படுகின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—பிரகாதமாகிய மூன்றாவது சூக்தத்தில்—1. தேவாதிதி ரிஷி.

இந்திரனே! நீ, கிழக்குத் திக்கிலிருந்து தோத்திரஞ் செய்பவர்களாலும், மேற்குத் திக்கிலிருந்து தோத்திரம் செய்பவர்களாலும், வடக்குத் திக்கிலிருந்து தோத்திரஞ் செய்பவர்களாலும், கீழேயுள்ள திக்குகளிலிருந்துதோத்திரஞ் செய்பவர்களாலும் அவரவர்களின் காரியத்தின்பொருட்டு எப்போதும் அழைக்கப்படுகின்றாய். சிறந்த இந்திர! இவ்வாறு பல்லோர்களாலழைக்கப்படுவோனெனினும், 'அநு' என்னும் அரச புத்திரனாகிய இராச ரிஷியின் பொருட்டு, அவரது, துதியாளர்களால் மிக நன்கு அழைக்கப்பட்டோனாயிருக்கின்றாய். அரசனுக்கு இதமாமாறு துதிப்போர்கள் உன்னைப் பிரியப்படுத்துகின்றார்கள் என்பதாம். மற்றும், சத்துருக்களை நன்கு அடக்குகின்ற இந்திர! நீ, 'துருவசன்' என்னும் அரசன் பொருட்டும் அவனது மனிதர்களால் ஏவப்பட்டோனாயிருக்கின்றாய் என்பதாம். (1)

'சிம' என்னும் மூலத்திலுள்ள சொற்கு 'சிறப்பு' எனப் பொருள் கூறுகின்றது வாசசநேயமும்.

மந்திரம் 8.

२ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २
1230. यद्वा रुमे रुशमे श्यावके कृप इन्द्र मादयसे सचा ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १२
कण्वासस्त्वा स्तोमेभि * र्ब्रह्मवाहस इन्द्रा यच्छन्त्यागहि ॥ २-१३ ॥

இருக்கு 8-4-1-2.

யஶா ரூமெ ரூஶமெ ஶ்யாவகெ க்ருப இந்த்ர மாதயஸெ ஸசா ।
கண்வாஸஸ்த்வா ஸ்தொமெபிர்ப்ரஹ்மவாஹஸ இந்த்ரா யச்ஹந்த்யாகஹி ॥

*ब्रह्माभिः स्तोमवाहसः, என்பது பாட பேதம்.

அந்வயம்.

इन्द्र !, रुमे, रुशमे, श्यावके, कृपे, यद्वा, सचा, मादयसे, ब्रह्मवाहसः, कण्वासः, स्तोमेभिः, इन्द्र !, त्वा, आयच्छन्ति, (अतः त्वं) आगहि ॥

பதவுரை.

इन्द्र !	ஊர !	இந்திர ! நீ,
रुमे	ரூமெ	உருமன்,
रुशमे	ரூஶமெ	உருசமன்,
श्यावके	ஶ்யாவகெ	சியாவகன்,
कृपे	கூபெ	கிருபன், என்னும் இவ்வரசர்களிடத்தில்
यद्वा	யதா	எப்போதும்
सचा	ஸசா	ஒருமுகமாய்க்
मादयसे	மாதயஸெ	களிப்புற்றவனு யிருக்கின்றாய். அங்ஙனமாயினும்,
ब्रह्मवाहसः	ப்ரஹ்மவாஹஸஃ	தோத்திரங்களைக்கொண்டு செல்கின்ற
कण्वासः	கண்வாஸஃ	கண்ணுவரிஷி கோத்திரத்திலுள்ள ரிஷிகளின்
स्तोमेभिः	ஸ்தோமெபிஃ	தோத்திர மஞ்சரிகளால் அவர்கள் வசப்பட்டுவிடுகின்றாய்.
इन्द्र !	ஊர !	இந்திரனே !
त्वा	த்வா	உன்னை
आयच्छन्ति	ஆயச்சந்தி	வருமாறு அழைக்கின்றார்கள்.
(अतः त्वं)	(அதஃ த்வம்)	ஆதலின் நீ,
आगहि	ஆகஹி	வருவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—2.

உருமன் முதலிய நான்கு அரசர்களிடத்தும், இந்திர ! நீ, எக்காலும் முழுதுங் களிப்படைகின்றாய். அங்ஙனமாயினும், துதிகளைக் கொண்டு செல்கின்ற, அல்லது, அன்னங்களைக் கொண்டுசெல்கின்ற கண்ணுவரிஷி கோத்திரத்திலுள்ள இருடிகள், தோத்திர சமூகங்களுடன் வருமாறு (நின்னை) அழைக்கின்றார்கள். இதனால் நீ விரைவாய் வருவாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 9.

३१२ ३१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
1231. उभयꣳ शृणुवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः ।
३ १ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २र३ १ २
सत्राच्या मघवान्त्सोमपीतये धिया शविष्ट आगमत् ॥ १ ॥

உலயம் ஶ்ருணுவச்ச நஇந்த்ரோ அர்வாகிதம் வசஃ ।
ஸத்ராச்யா மகவாந்த்ஸோமபீதயே தியா ஶவிஷ்ட ஆகமத் ॥

அன்வயம்.

उभयं, इदं वचः, नः अर्वाक्, इन्द्रः, शृणुवत्, मघवान्, सत्राच्या, धिया, शविष्टः, सोमपीतये, आगमत् ॥

பதவுரை.

उभयं	உலயம்	தோத்திரம், சாத்திரம், என்னும் இருவகையான
इदं वचः	இதம் வசஃ	இவ்வாக்கியத்தை
नः अर्वाक्	நஃ அர்வாகிதம்	எங்கள்மேல் நோக்குடையனுய்
इन्द्रः	இந்த்ரஃ	இந்திரன்
शृणुवत्	ஶ்ருணுவத்	கேட்பானுக.
मघवान्	மகவான்	தனமுடைய இந்திரன்
सत्राच्या	ஸத்ராச்யா	எங்களுடன் பெருமை தங்கிய
धिया	தியா	புத்தியுடனிருக்கின்றன். இதனல்
शविष्टः	ஶவிஷ்டஃ	வன்மையுடைய
सोमपीतये	ஸோமபீதயே	சோமரசத்தை யருந்துதற் பொருட்டு
आगमत्	ஆகமத்	வருவானுக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—பெருங் கீதத்தின் நான்காஞ் சூக்தத்தில்—1. பார்க்க ரிஷி.

தோத்திரம், சாத்திரமென்னும் இரண்டு வகையான இவ்வாக்கை, இந்திரன் எங்கள்மேல் நோக்குடையனுய்க் கேட்பானுக. தனமுடைய இந்திர ! நீயும் நற்புத்தியுடையவனுயிருந்து வலிமையுடைய சோமரசத்தை எங்களுடன் (இருந்து) நன்கு அருந்துதற் பொருட்டு வருவாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 10.

२उ ३ १२ ३१ २२ ३ १२ ३ १२
1232. तꣳ हि स्वराजं वृषभं तमोजसा धिषणे निष्टतक्षतुः ।
३ २३ १ २ ३ १ २२३ १२ २ २ ३ १२
उतोपमानां प्रथमो निषीदसि सोमकामꣳ हि ते मनः ॥ २-१४ ॥

இருக்கு 8-61-1-2.

தம் ஹி ஸ்வராஜம் வ்ருஷபம் தமொஜஸா தியிஷணே நிஷ்டதக்ஷதுஃ।
உதோபமானாம் ப்ரதமோ நிஷீதஸி ஸொமகாமம் ஹி தெ மனஃ ॥

அன்வயம்.

स्वराजं, वृषभं, तं हि, ओजसा, धिषणे, निः ततक्षतुः, उत, (हे इन्द्र !), उपमानां, प्रथमः, निषीदसि, हि ते मनः, सोमकामम् ॥

பதவுரை.

स्वराजं	ஸ்வராஜம்	தானுகவே விளங்குகின்றவனும்,
वृषभं	வ்ருஷபம்	மழை பெய்விப்பவனுமாகிய
तं हि	தம் ஹி	அவ் விந்திரனையே
ओजसा	ஒஜஸா	வலியால்
धिषणे	தியிஷணெ	வானுலக மண்ணுலகங்கள்,
निः ततक्षतुः	நிஃ ததக்ஷதுஃ	அடைகின்றன.
उत	உத	மற்றும்,
(हे इन्द्र !)	(ஹெ இந்த்ர !)	இந்திரனே ! நீ,
उपमानां	உபமானாம்	உவமானர்களான ஏனைய தேவர்களுக்குள்
प्रथमः	ப்ரதமஃ	முதல்வனாய்
निषीदसि	நிஷீதஸி	விளங்குகின்றாய்.
हि ते मनः	ஹி தெ மனஃ	உண்மையில் உனது மனம்
सोमकामं	ஸொமகாமம்	சோம விருப்பமுடையதாம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—2.

தானுகவே விளங்குகின்றவனும், மழை பெய்விப்போனுமாகிய அவ்விந்திரனையே வானும் மண்ணும் அடைகின்றன. எத்தன்மைய இந்திரனெனின் ? உலகிற்கு உதவியாகியமழை பெய்விப்பவனென்க. எவ்வாற்று

லடைகின்றனவெனின்? வலியாலென்க. மற்றும், இவ்வாறுதலின் இந்திர! நீ, உவமானர்களான வேனிய தேவர்களுக்குள் முதல்வனுயிருந்து விளங்குகின்றனை; உன்னுடைய மனம் ஒரு தலையாகச் சோமரசத்தை விரும்புகின்றது என்பதாம். (2)

ஏழாவது கண்டம்

முற்றும்.

எட்டாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—5. அத்தியாயம்—9. கண்டம்—8.

ஒன்பது மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१२ ३१ २३१ २२ ३ १२
1233. पवस्व *देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः ।
३२ २२३ १२
वायुमारोह धर्मणा ॥ १ ॥

வவஸ்வ தெவ ஆயுஷகிந்த்₃ரம் க₃ச்ச₂து தே மத₃꞉ ।
வாயுமாரோஹ த₄ர்மணா ॥

அன்வயம்.

(सोम!,) देवः, पवस्व, ते मदः, आयुषक् इन्द्रं, गच्छतु, धर्मणा, वायुं, आरोह ॥

பதவுரை.

(सोम!)	(வொஅ!)	(சோமமே! நீ,)
देवः	தெவ꞉	பிரகாசமுடையவனுகித்
पवस्व	வவஸ்வ	தாரையாய் ஒழுகுவாயாக.
ते मदः	தெ மத₃꞉	களிப்பைக் கொடுக்கின்ற உனது இரசம்
आयुषक् इन्द्रं	ஆயுஷகி₃ந்த்₃ரம்	அவ் விந்திரனை
गच्छतु	க₃ச்ச₂து	அடைவதாகுக. மற்றும்,

*देवः, என்பது பாட பேதம்.

धर्मणा	௰௨௰௱	தாங்குகின்ற இரசவாயிலாக
वायुं	வாயுஂ	வாயுவை
आरोह	ஆரொஹ	அடைவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—8. இருக்கு— மூன்றுகொண்ட முதற் சூக்தத்தில்—1.

சோமமே! பிரகாசமான நீ, தாரையாய் ஒழுகுவாயாக. மற்றும், மதத்தைக் கொடுக்கும் உன்னுடைய இரசம், அவ்விந்திரனை யடைவதாகுக. அஃதன்றியும், தாங்குகின்ற இரசத்தால் நீ வாயுவை யடைவாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१२ ३ १ २ १ २ ३ १ २
1234. पवमान नितोशसे रयिꣳ सोम श्रवाय्यम् ।
१ २ ३१ २र
इन्दो समुद्रमाविश ॥ २ ॥

வவமாந நிதொஶஸெ ரயிஂ ஸொம ஶ்ரவாய்யம் ।
இந்தொ ஸமுத்ரமாவிஶ ॥

அந்வயம்.

पवमान, इन्दो सोम!, श्रवाय्यं, रयिं, नितोशसे, समुद्रं, आविश ॥

பதவுரை.

पवमान!	வவமாந!	புநிதமும்
इन्दो सोम!	இந்தொ ஸொம!	ஒழுகுகின்றதுமாகிய சோமமே! நீ,
श्रवाय्यं	ஶ்ரவாய்யஂ	கீர்த்தியுள்ள
रयिं	ரயிஂ	பகைவரின் தனத்தைப்பற்றி
नितोशसे	நிதொஶஸெ	மிகவும் பீடையையடைகின்றாய். அத்தன்மைய நீ,
समुद्रं	ஸமுத்ரஂ	'துரோணம்' என்னும் கீழ்வைத்திருக்கின்ற மட்பாண்டத்தை
आविश	ஆவிஶ	அடைவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—8. இருக்கு—2.

ஒழுகுகின்றதும், புனிதமுமாகிய சோமமே! நீ, கீர்த்திமிகுந்த பகைவர் களின் தனத்தைப்பற்றி மிகுதியாய்ப் பீடையுறுகின்றனை. அங்ஙனமாகிய நீ, கீழே யிருக்கின்ற துரோணம் என்னும் மட்பாண்டத்தி லிறங்குவாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

३ १२ ३ १२
1235. अपघ्नन् पवसे मृधः ॥ ३ ॥
அபக்நந் பவஸே ம்ருதஃ ॥

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—8. இருக்கு—3.

இது இருக்கின் பிரதீகம். (மந்திரத்தின் முதலடி.) இது சந்த ஆர்ச்சிக மென்னும் முற்பாதியிற் கூறப்பட்டுள்ளது. ஆண்டு 6-1-1-6-ல் இதற்கு உரை கூறப்பட்டிருத்தல் காண்க. (3)

மந்திரம் 4.

३ १ २ ३ १२
1236. अभी नो वाज सातमम् ॥ १ ॥
அபீ நோ வாஜ ஸாதமம் ॥

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—8. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட மூன்றுஞ் சூக்தத்தின் பிரதீகம். (முதலடி.) அம்பரீஷர் ரிஷி.

இம்மந்திரம் 549-ல் கூறப்பட்டுள்ளது. இதற்கு உரையும் ஆண்டே கூறப்பட்டிருத்தல் காண்க. (4)

மந்திரம் 5.

३ १ १ २ १ २२ ३ १ २ ३ १२
1237. वयं ते अस्य राधसो वसोर्वसो पुरुस्पृहः ।
१ २२ ३१ २२ ३ १ २
नि नेदिष्ठतमा इषः स्याम सुम्ने ते अधिगो ॥ २ ॥

வயம் தெ அஸ்ய ராயஸோ வஸோவஸோ புருஸ்ப்ருஹஃ ।
நி நெதிஷ்ட²தமா இஷஃ ஸ்யாம ஸும்நெ² தெ அதி⁴கோ³ ॥

அந்வயம்.

वसो !, पुरुस्पृहः, वसोः, अस्य ते राधसः, वयं, नि नेदिष्ठतमाः, स्याम, अध्रिगो !, ते, इषः, सुम्ने ॥

பதவுரை.

वसो !	வஸொ !	வாழ்விக்கின்ற சோமமே !
पुरुस्पृहः	பு ரு ஸ்ப்ரஹஃ	பல்லோர் விரும்பத்தக்கதும்
वसोः	வஸொஃ	நீ கொடுத்ததுமாகிய
अस्य ते राधसः	அஸ்ய தெ ராதஸஃ	உன்னுடைய இத்தகைய தனத்திற்கு
वयं	வயம்	யாம்
नि नेदिष्ठतमाः	நி நெதிஷ்டதமாஃ	மிக அண்மையிலிருப்பவர்களாக
स्याम	ஸ்யாம	ஆவோமாக.
अध्रिगो !	அத்ரிகொ !	வச்சிரந்தாங்கிய இந்திர !
ते	தெ	நீ கொடுத்த
इषः	இஷஃ	அன்னத்திற்கு
सुम्ने	ஸும்நெ	அருகிலுள்ளவர்களாவோமாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—8. இருக்கு—2.

வாழ்வை நிறையச் செய்கின்ற சோமமே! இத்தன்மைய உனது தனத்திற்குச் சமீபமாயும், பல்லோர்களால் விரும்பப்பட்ட நிறைந்த உனது அன்னத்திற்கு அருகிலும் உள்ளவர்களாய் நாங்கள் ஆவோமாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

२३ २ ३ १ २ ३२ ३२ ३ १२
1238. परि स्य स्वानो *अक्षरदिन्दुरव्ये मदच्युतः ।
२ ३ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २र ३२
धारा य ऊर्ध्वो अध्वरे भ्राजा न याति गव्ययुः ॥ ३–१६ ॥

இருக்கு 9-98-1-5-3.

பரி ஸ்ய ஸ்வாநொ அக்ஷரதிந்துரவ்யெ மதச்யுதஃ ।
தாரா ய ஊர்த்வொ அத்வரெ ப்ராஜா ந யாதி கவ்யயுஃ ॥

* अक्षा;, என்பது பாட பேதம்.

அந்வயம்.

गव्ययुः, ऊर्ध्वः, यः, भ्राजा न, अध्वरे, धारा, याति, स्वानः, स्यः इन्दुः, मदच्युतः, अव्ये, पर्यक्षरत् ॥

பதவுரை.

गव्ययुः	ஹவ்யயுஃ	பசுவின் பால் முதலியவைகளை விரும்புகின்றதும்,
ऊर्ध्वः	ஊர்ஜ்வஃ	அனைத்தினுஞ் சிறந்ததுமாகிய
यः	யஃ	யாதொரு சோமமுண்டோ, அது,
भ्राजा न	ப்ராஜா ந	பிரகாசத்தால் அந்தரிட்சத்தை யடைவதுபோன்று,
अध्वरे	அத்வரெ	வேள்வியின்கண்
धारा	தாரா	தாரையாகச்
याति	யாதி	செல்கின்றது.
स्वानः	ஸ்வாநஃ	பிழியப்பட்ட
स्यः इन्दुः	ஸ்யஃ இந்துஃ	அச்சோமம்,
मदच्युतः	மதச்யுதஃ	மதத்தின் பொருட்டுக்
अव्ये	அவ்யெ	கம்பளியின்கண்
पर्यक्षरत्	பர்யக்ஷரத்	துளித்துளியாய் விழுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—8. இருக்கு—3.

பசுவை விரும்புகின்றதும், அல்லது, பசுவின்பால் முதலியவைகளை விரும்புகின்றதும், அனைத்தினுஞ் சிறந்ததுமாகிய யாதொரு சோமமுண்டோ, அது, பிரகாசத்தால் அந்தரிட்சத்திற்குச் செல்வதுபோன்று, பிரகாசத்தால் வேள்வியின்கண் தனது தாரைவாயிலாகச் செல்கின்றது. பிழியப்பட்ட அச்சோமம், களிப்பின் பொருட்டு வேதங்களாலேவப்பட்டுப் புநிதமாகிய கம்பளியில் துளித் துளியாய் ஒழுகுகின்றது என்பதாம். (3)

மந்திரம் 7.

१२ ३ १ २ ३२
1239. पवस्व सोम महान्त्समुद्रः ।
३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
पिता देवानां विश्वाभिधाम ॥ १ ॥

வவஸ்வ ஸொஉ உஹாந்ஸமுத்ரஃ ।
பிதா தெவாநாம் விஶ்வாஸிதாஉ ॥

அந்வயம்.

सोम !, महान्, समुद्रः, पिता, देवानां, विश्वा धाम, अभि पवस्व ॥

பதவுரை.

सोम !	ஸொஉ !	சோமமே !
महान्	உஹாந்	பெருந்தன்மையுடையவனும்,
समुद्रः	ஸமுத்ரஃ	இரசத்தை நிறையப் பெற்றவனும்
पिता	பிதா	அனைத்தையும் பாதுகாப்பவனுமாகிய நீ,
देवानां	தெவாநாம்	தேவர்களுடைய
विश्वा धाम	விஶ்வா தாஉ	உடம்புகளனைத்தையுங் குறித்து
अभि पवस्व	அபி வவஸ்வ	நன்கு ஒழுகுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—8. இருக்கு—மூன்றாவது சூக்தத்தில்—1. இருணர், அல்லது, திரிசதசியுர் ரிஷி.

சோமமே ! பிரகாசிக்கின்ற தன்மையால் பெருந்தன்மையுடையவனும், இரசம் நிறையப் பெற்றவனும், எல்லாவற்றையும் பாதுகாப்பவனுமாகிய நீ, தேவர்களுடைய உடம்புகளனைத்தையும் முன்னிட்டு ஒழுகுவாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 8.

३ १ २ ३ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २र
1240. शुक्रः पवस्व देवेभ्यः सोम दिवे पृथिव्यै शं च ।
३ १ २
*प्रजाभ्यः ॥ २ ॥

ஶுக்ரஃ பவஸ்வ தெவெஸ்யஃ ஸொஉ திவெ ப்ருதிவ்யை ஶம் ச ।
ப்ரஜாஸ்யஃ ॥

* प्रजायै, என்பது பாட பேதம்.

அன்வயம்.

सोम !, शुक्रः, देवेभ्यः, पवस्व, दिवे, पृथिव्यै, प्रजाभ्यः च, शम् ॥

பதவுரை.

सोम !	ஸொம !	சோமமே !
शुक्रः	ஶுக்ரஃ	விளங்குகின்ற நீ,
देवेभ्यः	தெவெப்யஃ	தேவர்களின் பொருட்டுத்
पवस्व	வவஸ்வ	துரோணகலசம் என்னும் பாண்டத்திலொழுகுவாயாக.
दिवे	தி3வெ	(மற்றும்) வானுலகத்திற்கும்
पृथिव्यै	ப்ருதி2வ்யை	மண்ணுலகத்திற்கும்
प्रजाभ्यः च	ப்ரஜாப்யஃ அ	பிரசைகளின் பொருட்டும்
शं	ஶம்	இன்பங்கொடுப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

சோமமே ! பிரகாசமாகிய நீ, தேவர்களின் பொருட்டு ஒழுகுவாயாக. மற்றும், வானுலக மண்ணுலகங்களின் பொருட்டும், அவைகளிலுள்ள பிரசைகளின் பொருட்டும் சுகத்தைக் கொடுப்பாயாக என்பதாம். (2)

மந்திரம் 9.

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २२ ३ १ २

1241. **दिवो धर्त्तासि शुक्रः पीयूषः सत्ये विधर्मन्वाजी पवस्व॥ ३-१७॥**

இருக்கு 9-109-4-6.

தி3வொ த4ர்த்தாஸி ஶுக்ரஃ பீயூஷஃ ஸத்யெ வித4ர்மன்வாஜீ
பவஸ்வ ॥

அன்வயம்.

(हे सोम !,) शुक्रः, पीयूषः, दिवः, धर्त्ता असि, वाजी, सत्ये विधर्मन्, पवस्व ॥

பதவுரை.

(हे सोम !)	(ஹெ ஸொம !)	சோமமே ! நீ,
शुक्रः	ஶுக்ரஃ	பிரகாசிப்பவனும்,
पीयूषः	பீயூஷஃ	அருந்துதற்குரியவனும்,

दिवः	திவः	வானுலகைத்
धर्त्ता असि	धर्त्ता ऽसि	தாங்குகின்றவனுமாயிருக்கின்றாய்,
वाजी	वाजी	(மற்றும்) ஆற்றலுடைய நீ,
सत्ये विधर्मन्	सत्ये विधर्मन्	சத்தியமாகிய வேள்வியில்
पवस्व	पवस्व	ஒழுகுவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—8. இருக்கு—3.

சோமமே!, விளக்கமுடையவனும், உண்ணத்தக்கவனுமாகிய நீ, வானுலகைத் தாங்குவோனுயிருக்கின்றனை. அத்தன்மையனுகிய நீ, வேட்போர்கள் பலவகைக் கருமங்களைச் செய்கின்ற சத்தியமாகிய வேள்வியில், அல்லது, சோமசமூதலிய பலவகை அவிகளைத் தாங்கப்பெற்ற வேள்வியில் (இரசமாய்) ஒழுகுவாயாக என்பதாம். (3)

எட்டாவது கண்டம்

முற்றும்.

ஒன்பதாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—5. அத்தியாயம்—9. கண்டம்—9.

ஒன்பது மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१२ ३ १२ ३२ ३ १२ ३२
1242. प्रेष्ठं वो अतिथिꣳ स्तुषे मित्रमिव प्रियम् ।
२३ २३ १ २२
अग्ने रथं न वेद्यम् ॥ १ ॥

ப்ரேஷ்ட²ம் வோ அதிதி²ம் ஸ்துஷே மித்ரமிவ ப்ரியம் ।
அக்³னே ரத²ம் ந வேத்³யம் ॥

அன்வயம்.

अग्ने!, वः प्रेष्ठं, अतिथिं, मित्रं इव प्रियं, रथं न वेद्यं, स्तुषे ॥

பதவுரை.

अग्ने !	அக்நே !	அக்கினியே !
वः प्रेष्ठं	வः ப்ரெஷ்ட²ம்	எங்கட்கு மிகப் பிரியனும்,
अतिथिं	அதிதிம்	விருந்தினன் போன்று போற்றத் தக்கவனும்,
मित्रमिव प्रियं	மித்ரமிவ ப்ரியம்	நண்பன் போன்று பிரியமுடையவனும்,
रथं न वेद्यं	ரத²ம் ந வேத்³யம்	தேரைப்போல் தனத்தை அடைவிப்போனுமாகிய உன்னைத்
स्तुषे	ஸ்துஷே	துதிக்கின்றேன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—9. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட சூக்தத்தில்—1. உசனா ரிஷி.

அக்கினிதேவ ! உன்னை, உசனாவாகிய யான் துதிக்கின்றேன். ஈண்டு உசனாவாகிய நான் என்பது எஞ்சி நின்றது. எத்தன்மைய நின்னை யெனின் ? தனங் கொடுப்பவனுதலின் மிகப் பிரியனும், அனைவராலும் விருந்தைப் போன்று ஆராதிக்கத்தக்கவனும், அல்லது, அதி, என்னும் வடமொழிப் பகுதிக்கு இடையறாச் செல்கை என்பதும் பொருளாமாதலின், தேவர்கட்கு அவிகொடுத்தற் பொருட்டுச் செல்பவனும், நண்பன் போன்று துதிப்போர்கட்குப் பிரியங் கொடுப்பவனும், தனக்கு வேண்டிய இலாபத்தின் பொருட்டு வண்டியைக் கொள்ளில் அதுவே தனங் கிடைத்தற்குக் காரணமாவது போன்று, துதிப்போர்கள் இவனுல் தனத்தையடைக்கின்றனர் ஆதலின் தனங்கிடைத்தற்குக் காரணனுமானவனை யென்க. இனியானென்றும் உணரத்தக்கவனென்றும் உன்னை உணர்ந்து, வேள்விக்கிரியை முடியுமாறு யான் துதிக்கின்றேன் என இயைத்துக்கொள்க. (1)

மந்திரம் 2.

३१२ ३२ ३२३२३१२ ३२
1243. कविमिव प्रशंस्यं यं देवास इति द्विता ।
१ २२ ३२
नि मर्त्येष्वा दधुः ॥ २ ॥

கவிமிவ ப்ரஶம்ஸ்யம் யம் தே³வாஸ இதி த்³விதா ।
நி மர்த்யேஷ்வா த³தூ⁴꞉ ॥

அன்வயம்.

देवासः, कविं इव, प्रशंस्यं, यं, मर्त्येषु इति, द्विता, न्यादधुः ॥

பதவுரை.

देवासः	தெவாஸஃ	இந்திரன் முதலிய தேவர்கள்,
कविमिव	கவிமிவ	அறிஞன்போன்று
प्रशंस्यं	ப்ரஶம்ஸ்யம்	போற்றத்தக்க
यं	யம்	எவ்வக்கினியை
मर्त्येषु इति	மர்த்தெயேஷ்வ இதி	மனிதர்களுக்குள், மேற்கூறும் வகையாய்
द्विता	த்விதா	காருகபத்தியம், (இல்லறத்தானால் தாபிக்கப்பட்டது) ஆகவநீயம், (ஆகுதி கொடுக்கத்தக்கது) என இரண்டு வகையாய்த்
न्यादधुः	ந்யாதது:	தாபிக்கின்றார்களோ, (அவ் வக்கினியைத் துதிக்கின்றேன்).

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—9. இருக்கு—2.

பேரறிவாளனே இருவகைச்செய்கையில் நியமிக்குமாறு, இந்திரன் முதலிய தேவர்கள், "மனிதர்களுக்குள்" என மேலே கூறப்படும் வகையால் எவ்வக்கினியைக், காருகபத்தியம், ஆகவநீயம், என இருவகையாய்த் தாபித்தார்களோ, அல்லது, அவியை ஏற்றுக்கொள்வதற்கு மண்ணிலும், அவிகொடுத்தற் பொருட்டு வானிலும், என்னு மிவ்விருவகைபற்றி மண்ணி லும் விண்ணிலும் இரண்டு வகையாய்த் தாபித்தார்களோ, அவ் வக்கினி யைத் துதிக்கின்றேன் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

१ २ ३२ ३ १ २ ३ १ २२
1244. त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄंः पाहि शृणुही गिरः ।
१ २ ३२ ३ १ २२
रक्षा तोकमुत त्मना ॥ ३-१८ ॥

இருக்கு 8-84-1-3.

त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄं पाहि शृणुहि गिरः ।
रक्षा तोकस्य तनया ॥

அன்வயம்.

यविष्ठ !, त्वं, दाशुषः, नॄन्, पाहि, गिरः, शृणुहि, उत, त्मना, तोकं, रक्ष ॥

பதவுரை.

यविष्ठ !	யவிஷ்ட² !	கட்டிளமையுடைய இந்திர !
त्वं	த்வம்	நீ,
दाशुषः	தா³ஶுஷ꞉	அவி கொடுக்கின்ற
नॄन्	நॄந்	வேள்வித் தலைவர்களைப்
पाहि	பாஹி	பாதுகாப்பாயாக.
गिरः	கி³ர꞉	துதிகளைக்
शृणुहि	ஶ்ருணு²ஹி	கேட்பாயாக.
उत	உத	மற்றும்,
त्मना	த்மநா	முயற்சியால்
तोकं	தோகம்	எமது புதல்வர்களைப்
रक्ष	ரக்ஷ	பரிபாலிப்பாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—9. இருக்கு—3.

என்று மிளமையை யுடையோய்! அல்லது, தேவர்களுக்கு அவிகளை நன்கு சேர்ப்போய்! இந்திர! நீ, அவிகொடுத்த வேள்வித் தலைவர்களைத் தனங் கொடுத்துப் பாதுகாப்பாயாக. அன்றியும், நின்னைப் பற்றிய துதிகளை இனிது கேட்பாயாக. மற்றும், நீயே எமது புத்திரனைப் பாதுகாப்பாயாக. நீயே என்றதால் நின்னைத் தவிர்த்துக் காப்பாற்றுவோரைக் கண்டிலோம், ஆதலின் நீயே இதையுங் கேட்பாயாக என்பதுங் கொள்ளற்பாலதாம் என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

१ १ ३ १ २
1245. **एन्द्र नो गधि * प्रिय सत्राजिदगोह्य ।**
३ २उ ३ १ २ ३१ २२ ३ २
गिरिर्न † विश्वतः पृथुः पतिर्दिवः ॥ १ ॥

ஏந்த்³ர நோ க³தி⁴ ப்ரிய ஸத்ராஜிதி³கோ³ஹ்ய ।
கி³ரிர்ந விஶ்வத꞉ ப்ருது²꞉ பதிர்தி³வ꞉ ॥

அந்வயம்.

प्रिय !, इन्द्र !, सत्राजित्, अगोह्य, गिरिः न, विश्वतः, पृथुः, दिवः पतिः, नः, आगधि ॥

---

* प्रियः सत्राजिदगोह्यः, என்பதும், † विश्वतः शृणु, என்பதும் பாடபேதம்.

பதவுரை.

प्रिय !	ப்ரிய !	துதிப்போர்க்குப் பிரியங்கொடுப் போய் !
इन्द्र !	இந்ர !	இந்திர !
सत्राजित्	ஸத்ராஜித்	பகைவரை வெல்வோய் !
अगोह्य	அகோஹ்ய	ஒருவராலும் அடக்க முடியா தோய் !
गिरिः न	கிரிः ந	மலையைப் போன்று
विश्वतः	விஶ்வதः	நாற்புறத்தும்
पृथुः	ப்ருதுः	பெரியோனும்
दिवः पतिः	திவः பதிः	வானுலகிற் கிறைவனுமாகிய, நீ
नः	நः	எங்கட் கருகில்
आगधि	ஆகதி	வருவாயாக.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—9. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட இரண்டாவது சூக்தத்தில்—1. நிருமேதர் ரிஷி.

துதிப்போர்க்கு இன்பத்தைக் கொடுப்போய் ! பெரும்பகைவரை வெல்வோய் ! ஒருவராலும் அடக்க முடியாதோய் ! இந்திர ! மலையைப் போன்று நாற்புறத்தும் பருத்தோனும், துறக்கத்திற்கு இறைவனுமாகிய நீ, எங்கட் கருகில் வருவாயாக என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

३ १ २र ३ २ ३ २३ १ २
1246. अभि हि सत्य सोमपा उभे बभूथ रोदसी ।
१ २र ३ २ ३ १ २र ३ २
इन्द्रासि सुन्वतो वृधः पतिर्दिवः ॥ २ ॥

அபி ஹி ஸத்ய ஸோமபா உபே பபூத ரோதஸீ ।
இந்ராஸி ஸுன்வதோ வ்ருதः பதிர்திவः ॥

அன்வயம்.

सत्य, सोमपाः, इन्द्र ! (त्वं) हि, रोदसी उभे, अभिबभूथ, सुन्वतः, वृधः, दिवः पतिः, असि ॥

பதவுரை.

सत्य	ஸத்ய	சத்தியனும்,
सोमपाः	ஸொமபாஃ	சோமரசத்தை யருந்துகின்றவனுமாகிய
इन्द्र! (त्वं) हि	இந்த்ர! (க்வம்) ஹி	இந்திரனே! நீ,
रोदसी उभे	ரொதஸீ உபெ	வான், மண் என்னும் இரண்டையும்
अभिबभूथ	அபிபபூத	மறைத்துக்கொண்டனை. அத்தன்மைய நீ,
सुन्वतः	ஸுந்வதஃ	சோமரசத்தைப் பிழிகின்ற வேள்வித் தலைவனை
वृधः	வ்ருதஃ	வளர்ப்பவனும்,
दिवः पतिः	திவஃ பதிஃ	வானுலகிற் கிறைவனுமாக
असि	அஸி	இருக்கின்றாய்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—9. இருக்கு—2.

சத்தியனும், சோமத்தை யருந்துகின்றவனுமாகிய இந்திரனே! நீ, வானுலகையும், மண்ணுலகையும் மூடிக் கொண்டிருக்கின்றனை. அத்தன்மையனாகிய நீ, சோமரசத்தைப் பிழிகின்ற வேள்வித் தலைவனை வளர்ப்போனாயிருக்கின்றாய், சுவர்க்கத்திற்கும் இறைவனாயிருக்கிறாய் என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
1247. त्वꣳ हि शश्वतीनामिन्द्र धर्त्ता पुरामसि ।
३२उ ३१ २३ १ २र ३ २
हन्ता दस्योर्मनोर्वृधः पतिर्दिवः ॥ ३–१९ ॥

இருக்கு 8-98-4-6.

க்வம் ஹி ஶஶ்வதீநாமிந்த்ர தத்தா பூராமஸி ।
ஹந்தா தஸ்யோர்மநோர்வ்ருதஃ பதிர்திவஃ ॥

அந்வயம்.

इन्द्र!, त्वं हि, शश्वतीनां, पुरां, धर्त्ता, दस्योः, हन्ता, मनोः, वृधः, दिवः, पतिः, असि ॥

பதவுரை.

इन्द्र !	ஊந்ர !	இந்திரனே !
त्वं हि	த்வம் ஹி	நீயே
शश्वतीनां	ஸஸ்வதீநாம்	அநேக
पुरां	பூராம்	பகைவர் புரங்களை
भर्त्ता	ப⁴ர்த்தா	அழிகின்றவனும்,
दस्योः	தஸ்யோः	விண்போது கழிக்கின்ற அசுரர்களை
हन्ता	ஹந்தா	நாசமாக்குகின்றவனும்,
मनोः	மநோः	வேள்வியாற்றுகின்றமனிதர்களை
वृधः	வ்ருத⁴ஸ:	வளர்க்கின்றவனும்,
दिवः	தி³வ:	வானுலகிற்கு
पतिः	பதி:	இறைவனும்
असि	அஸி	இருக்கின்றனை.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—9. இருக்கு—3.

இந்திர! நீயே, பகைவரின் அநேக நகரங்களை யொழிக்கின்றவனாயிருக்கின்றாய். அன்றியும், விணாட்போக்குகின்ற அசுரர்களைக் கொல்கின்றவனும், வேள்வி முதலியன செய்கின்றவர்களை வளர்ப்பவனும், சுவர்க்கத்திற்குத் தலைவனுமாயிருக்கின்றனை என்பதாம். (3)

மந்திரம் 7.

३२ ३ १ २२ ३१ २२
1248. पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत ।
२ ३ १२३ १२ ३ २ ३ १ ३२ ३२
इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्त्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥ १ ॥

பூராம் பி⁴ந்து³ர்யுவா கவிரமிதௌஜா அஜாயத ।
இந்த்³ரோ விஸ்வஸ்ய கர்மணோ த⁴ர்த்தா வஜ்ரீ புருஷ்டுத: ॥

அன்வயம்.

पुरां, भिन्दुः, युवा, कविः, अमितौजाः, विश्वस्य कर्मणः, धर्त्ता, वज्री, पुरुष्टुतः, इन्द्रः, अजायत ॥

பதவுரை.

पुरां	வுரா∘ம்	அசுரர்களின் பட்டினங்களைத்
भिन्दुः	பிந்து∘ஃ	தகர்க்கின்றவனும்,
युवा	யுவா	கட்டிளமை யுடையோனும்,
कविः	கவிஃ	அநுபவமுடையோனும்,
अमितौजाः	அமிதௌஜாஃ	எண்ணில்லாத பராக்கிரமமுடையவனும்,
विश्वस्य कर्मणः	விஶ்வஸ்ய கர்மணஃ	சோதிட்டோம முதலிய கருமங்களனைத்தையும்
धर्त्ता	தர்த்தா	பரிபாலிப்பவனும்,
वज्री	வஜ்ரீ	வச்சிராயுதந் தாங்கியவனும்,
पुरुहूतः	புருஹூத∘ஃ	பலவகைக் கருமங்களாற் போற்றப்படுபவனுமாகிய
इन्द्रः	இந்த்ரஃ	இந்திரன்
अजायत	அஜாயத	வெளிப்பட்டனன்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—7. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட மூன்றுவது சூக்தத்தில்—1. சேதா ரிஷி.

மேற்கூறின குணங்களையுடைய இவ்விந்திரன் இடைத்தனன். எத்தன்மைய குணமுடையானெனின்? அது கூறப்படுகின்றது:—அசுரர்களின் நகரங்களை யிடித்துத்தகர்ப்பவனும், எப்போதும் மூப்பற்றவனும், போரறிவாளனும், பேராற்றலுடையவனும், சோதிட்டோம முதலிய கருமங்களனைத்தையும் பரிபாலிப்பவனும், தலைவனைப் பாதுகாப்பதற்கு இடையறாது வச்சிராயுதத்தை ஏந்தியவனும், பலவகைக் கருமங்களைக்கொண்டு போற்றப்பட்டவனுமானவன் என்பதாம். (இம்மந்திரத்தின் சொற்கள், வடமொழியிலக்கணப்படி முடிகின்ற வகைகளைச் சாயணபாடியத்திற் காண்க.) (1)

மந்திரம் 8.

२ ३२ ३ २३१ २ ३ १२

1249. त्वं बलस्य गोमतोऽपावरद्रिवो बिलम् ।

२ ३१ २र ३ १ २

त्वां देवा अभिभ्युषस्तुज्यमानस आविषुः ॥ २ ॥

கூம் வ(ஹ)ஸ்ய மொஉதோ(ஹ)வாவரத்³ரிவோ விலம் ।

கூவாம் தெவா அபிஹ்யு॑ஷஸ்துஜ்யமாந ஆவிஷு॑ஃ ॥

அன்வயம்.

अद्रिवः, त्वं, गोमतः, बलस्य, बिलं, अपावः, तुज्यमानसः, देवाः, अभिश्युषः, त्वां, आविषुः ॥

பதவுரை.

अद्रिवः !	அத்ரிவः !	வச்சிரத்தை யேந்திய இந்திர !
त्वं	த்வம்	நீ,
गोमतः	கோமதः	கோக்களைக் கவர்ந்துகொண்ட
बलस्य	பலஸ்ய	'பலன்' என்னும் அரக்கனுடைய
बिलं	பிலம்	குகையைத்
अपावः	அபாவஃ	திறந்தபோது,
तुज्यमानसः	தூஜ்யமாநாஸஃ	அவ் வரக்கனால் பீடிக்கப்பட்ட
देवाः	தேவாஃ	தேவர்கள்
अभिश्युषः	அபிஶ்யுஷஃ	பயமற்றவர்களாய்
त्वां	த்வாம்	உன்னை
आविषुः	ஆவிஷுஃ	அடைந்தார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—9. இருக்கு—2.

'பலன்' என்னும் ஒரு அசுரன், தேவர்களுடைய ஆனினங்களைக் கவர்ந்து ஒருவிடத்தில் குகையினுள் மறைத்து வைத்துவிட்டனன். அக்கால் இந்திரன் அக் குகையை யடைந்து அதினின்றும் பசுக்களை வெளிக் கொண்டுவந்தனன், என்னுமொரு சரித்தத்தை, "இந்திரன் பலனுடைய வலியைக் குறைத்தனன்" என்றற் றொடக்கத்துப் பிராமணம் என்னுமொரு மறையின் கூறுகள் கூறுகின்றன. அக் கருத்தை உட்கொண்டு இம் மந்திரந் தொடங்கப்படுகின்றது.

வச்சிராயுதந் தாங்கிய இந்திர ! நீ, பசுக்களுடன் கூடிய 'பலன்' என்னு மசுரனுடைய குகையை, உனது சேனைகளைக்கொண்டு திறந்தனை. அப்போது, 'பலன்' என்னு மரச்சனாற் பீடிக்கப்பட்ட தேவர்கள், நினது

கருணையால் 'பலன்' என்பவனாற் பயமடையாதவர்களாய் உன்னை யடைந்தார்கள் என்பதாம். இம் மந்திரத்தின் சுரமுதலிய இலக்கண முறைகளை வடமொழிச் சாயணபாடியத்திற் காண்க. (2)

மந்திரம் 9.

१ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
1250. इन्द्रमीशानमोजसाभि स्तोमैरनूषत ।
३२३ १ २ ३१२ ३२ २ ३ १२
सहस्रं यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसीः ॥ ३–२० ॥

இருக்கு 1-11-4-5-8.

இந்த்ரமீஶாநமொஜஸாபி ஸ்தொமைரநூஷத ।
ஸஹஸ்ரம் யஸ்ய ராதய உத வா ஸந்தி ஭ூயஸீஃ ॥

அந்வயம்.

यस्य, रातयः, सहस्रं, उतवा, भूयसीः, सन्ति, ओजसा, ईशानं इन्द्रं, स्तोमैः, अभ्यनूषत ॥

பதவுரை.

यस्य	யஸ்ய	எவ்விந்திரனுக்கு,
रातयः	ராதயஃ	தனங்கள்
सहस्रं	ஸஹஸ்ரம்	ஆயிரக்கணக்காய் இருக்கின்றனவோ,
उतवा	உதவா	அல்லது,
भूयसीः	஭ூயஸீஃ	ஆயிரத்தினும் மிகுதியாகப்
सन्ति	ஸந்தி	பொன்கள் இருக்கின்றனவோ, (இன்னும்),
ओजसा	ஒஜஸா	ஆற்றலால்
ईशानं इन्द्रं	ஈஶாநம் இந்த்ரம்	உலகைத் தனது ஆணையில் நடத்துகின்ற அவ்விந்திரனைத்
स्तोमैः	ஸ்தொமைஃ	தோத்திர மஞ்சரிகளால்
अभ्यनूषत	அப்யநூஷத	துதிக்கின்றார்கள்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—9. இருக்கு—3.

வலியால் உலகைத் தனது ஆணையிற் செலுத்துகின்ற இந்திரனை, மூன்று முதலிய தோத்திர பஞ்சரிகளால் போற்றுவோர்கள் யாண்டுந் துதிக்கின்றார்கள். எவனுக்கு, தனங்கள், ஈகை முதலியவைகள் ஆயிரக்கணக்காக இருக்கின்றனவோ, அல்லது, ஆயிரத்தினும் அதிகமாய் இருக்கின்றனவோ, அவ் விந்திரனைத் துதிக்கின்றார்கள் என மேற்கூட்டிக்கொள்க. இம்மந்திரத்தின் இலக்கண முறைகளைச் சாயணபாடியத்திற் காண்க. (3)

ஒன்பதாவது கண்டம்

முற்றும்.

வித்தியாதீர்த்த மகேசுரர், வேதப்பொருளை விளக்குவதால்
உள்ளத்தின் இருளைப் போக்கிப் புருடார்த்தங்கள்
நான்கையுங் கொடுப்பாராக.

உத்தரார்ச்சிகம் ஒன்பதாவது அத்தியாயமும்

முடிந்தது.

சுப்ரமண்யோம்! சுப்ரமண்யோம்!! சுப்ரமண்யோம்!!!

பத்தாவது அத்தியாயம்.

தேவதைகள் :—1-7, 10, 11, 13, 16, 20, பவமான சோமம். 8, பாவமானி அத்தியேத்ரு. த்ருதி:. 9, அக்கினி. 10, 14, 15, 21, 23, இந்திரன்.

சந்தங்கள் :—1-9, திருஷ்டுப். 2-7, 10, 11, 16, 20, 21, காயத்திரி. 8, 18, 23, அநுஷ்டுப். 13, சகதி. 14, நிசிருத் பிருகதி. 15, பிராகாதம். 17, 22, உஷ்ணிக். 12, 16, துவிபதா, பங்க்தி:.

சுரங்கள் :—1, 6, தைவதம். 2-7, 10, 11, 16, 20, 21, ஷட்சம். 8, 18, 23, காந்தாரம். 13, நிஷாதம். 14, 15, மத்தியமம். 12, 16, பஞ்சமம். 17, 22, ரிஷபம். இருடிகள் ஆங்காங்கு இயைந்தவாறு கூறப்படுவார்கள். இவ்வத்தியாயத்தில் சோமம் துதிக்கப்படுகின்றது.

முதலாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—5. பிற்பாதி அத்தியாயம்—10. கண்டம்—1.

பதின்மூன்று மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

१ २ ३१ २३१ २र ३१२३ १ २र ३१

1251. अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मन् जनयन् प्रजा भुवनस्य * गोपाः ।

१ २ ३२३ २ ३ २३ १ २ ३१ २र ३१ २र

वृषा पवित्रे अधिसानो अव्ये बृहत्सोमो वावृधे स्वानो † अद्रिः ॥ १ ॥

அக்ராந்ஸமுத்³ரஃ ப்ரத²மே வித⁴ர்மன் ஜனயன் ப்ரஜா பு⁴வனஸ்ய
[கோபாஃ ।
வ்ருஷா பவித்ரே அதி⁴ஸானோ அவ்யே ப்³ருஹத்ஸோமோ வாவ்ருதே⁴ ஸ்வானோ அத்³ரிஃ ॥
[வாவ்ருʼதே⁴ ஸ்வானோ அத்³ரிஃ ॥

அந்வயம்.

समुद्रः, गोपाः, भुवनस्य, विधर्मन्, प्रथमे, प्रजाः, जनयन्, अक्रान्, वृषा, स्वानः, अद्रिः, सः सोमः, अधिसानौ, पवित्रे अव्ये, बृहत्, वावृधे ॥

* राजा, எனவும், † इन्दुः, எனவும் பாட பேதம்.

பதவுரை.

समुद्रः	ஸமுத்ரஃ	நீரைப் பொழிவதும்
गोपाः	கோபாஃ	அனைத்தையுங் காப்பாற்றுவதுமாகிய சோமம்
भुवनस्य	ஹுவநஸ்ய	நீரைத்
विधर्मन्	விதர்மந்	தாங்கிக்கொண்டுள்ள
प्रथमे	ப்ரதமே	விரிந்தவானில்
प्रजाः	ப்ரஜாஃ	பிரசைகளை
जनयन्	ஜநயந்	உண்டாக்குவதாய்
अक्रान्	அக்ராந்	அனைத்தினும் பெரியதாயிருக்கின்றது.
वृषा	வ்ருஷா	விருப்பை நிறைவிப்பதும்
स्वानः	ஸ்வாநஃ	சமத்காரம் பண்ணப்பட்டதும்
अद्रिः	அத்ரிஃ	ஆதரமுடையதுமாகிய
सः सोमः	ஸஃ ஸோமஃ	அச் சோமம்,
अधिसानौ	அதிஸாநள	மிக உயரத்திலிருக்கின்ற
पवित्रे अव्ये	பவித்ரே அவ்யே	புநிதமாகிய கம்பளியில்
बृहत्	ப்ருஹத்	மிகுதியாய்ப்
वावृधे	வாவ்ருதே	பெருகுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

எவருடைய மூச்சுக்காற்று வேதமோ, எவர் வேதங்களினின்று உலகனைத்தையு முண்டாக்கினாரோ, அவ் வித்தியாதீர்த்த மகேசுரரை வணங்குகின்றேன்.

கண்டம்—1. இருக்கு—மூன்றுகொண்ட முதற் சூக்தத்தில்—1. பராசரர் ரிஷி.

நீரைப் பொழிவதும், இறைவனாந் தன்மையால் அனைத்தையும் பாதுகாப்பதுமாகிய சோமரசம், நீரைத் தாங்கி நிற்கின்ற விரிந்த அந்தரிட்சத்தில் பிரசைகளை யுண்டாக்கிக் கொண்டு எல்லாவற்றிலு மேம்பட்டதாகின்றது. விரும்பியவற்றைப் பொழிவதும், பிழியப்பட்டதும், ஆதரவையுடையதுமாகிய அச்சோமம், மிக உயரமாகிய கம்பளியில் பெருகுகின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

१ २ ३ २३ २३ १२ ३ १ २ ३ १२र ३ १२
1252. मत्सि वायुमिष्टये *राधसे नो मत्सि मित्रावरुणा पूयमानः ।
२ ३ २ ३ १२३ १ २ ३२र ३ १ २ ३ १ २
मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि द्यावापृथिवी देवसोम ॥

உத்ஸி வாயுமிஷ்டயெ ராதஸெ நொ உத்ஸி மித்ராவருணா பூயமாநஃ ।
உத்ஸி ஶர்த்தொ மாருதம் உத்ஸி தெவாந் உத்ஸி த்யாவாப்ருதிவீ தெவ
[ஸொம ॥

அந்வயம்.

देव सोम!, नः, इष्टये, राधसे, वायुं, मत्सि, पूयमानः, मित्रावरुणा, मत्सि, मारुतं, शर्धः, मत्सि, देवान्, मत्सि, द्यावापृथिवी, मत्सि ॥

பதவுரை.

देव सोम!	தெவ ஸொம!	துதித்தற்குரிய சோமமே! நீ,
नः	நஃ	எங்கட்கு
इष्टये	இஷ்டயெ	அன்னமும்,
राधसे	ராதஸெ	தனமுங் கிடைத்தற்பொருட்டு
वायुं	வாயும்	வாயுவைக்
मत्सि	உத்ஸி	களிப்படைவிப்பாயாக.
पूयमानः	பூயமாநஃ	சமத்காரஞ் செய்யப்பட்ட
मित्रावरुणा	மித்ராவருணா	மித்திரன், வருணன் என்னுந் தேவதைகளையுங்
मत्सि	உத்ஸி	களிப்படைவிப்பாயாக.
मारुतं	மாருதம்	மருத் தேவதைகளின்
शर्धः	ஶர்த்தஃ	ஆற்றலையுங்
मत्सि	உத்ஸி	களிப்படைவிப்பாயாக.
देवान्	தெவாந்	இந்திரன் முதலிய தேவர்களையுங்
मत्सि	உத்ஸி	களிப்படைவிப்பாயாக.
द्यावापृथिवी	த்யாவாப்ருதிவீ	வானுலக மண்ணுலகங்களையுங்
मत्सि	உத்ஸி	களிப்படைவிப்பாயாக.

* राधसेच, என்பது பாட பேதம்.

சாயணபாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

சோமமே! நீ, வாயுவை மகிழ்விப்பாயாக. எதன் பொருட்டெனின்? விரும்பிய அன்னமும் தனமும் எங்கட்குக் கிடைத்தற்பொருட்டென்க. அவ்வாறே, கம்பளியாற் புநிதமாகிய நீ, மித்திர, வருண, தேவதைகளை மகிழ்விப்பாயாக. மற்றும், வாயுக்களின் வடிவமான ஒலியையும், ஆற்றலையும், மகிழ்விப்பாயாக. அங்ஙனமே, இந்திரன் முதலிய தேவர்களையும் மகிழ்விப்பாயாக. மற்றும், போற்றத்தக்க சோமமே! நீ, வானுலக மண்ணுலகங்களையும் மகிழ்விப்பாயாக என்பதாம். இவர்களை மகிழ்ச்சி யுடையவர்களாகச்செய்து எங்கட்குத் தனத்தைக் கொடுப்பாயாக என்பது பொருள். (2)

மந்திரம் 3.

३१ २र ३१ २ ३ ३ १ २र ३ २
1253. महत्तत्सोमो महिषश्चकारापां यद्गर्भोऽवृणीत देवान् ।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र३ २३ २ ३ १ २
अदधादिन्द्रे पवमान ओजोऽजनयत्सूर्ये ज्योतिरिन्दुः ॥ ३–१ ॥

இருக்கு 9-97-40-42.

மஹத்தத்ஸோமோ மஹிஷஶ்சகாராபாம் யத்ஹர்ப்பொ ஸவ்ருணீத தெவாந்ய
அததாதிந்த்ரே பவமாந ஓஜோஜநயத்ஸூர்யே ஜ்யோதிரிந்துஃ ॥

அந்வயம்.

महिषः, अपां गर्भः, सोमः, देवान्, अवृणीत, यत्, तत्, महत्, चकार, पवमानः, इन्द्रे, ओजः, अदधात्, इन्दुः, सूर्ये, ज्योतिः, अजनयत् ॥

பதவுரை.

महिषः	மஹிஷஃ	ஆராதிக்கத்தக்கதும்
अपां गर्भः	அபாம் ஹர்ப்பஃ	நீரின் கருப்பவடிவுமாகிய
सोमः	ஸோமஃ	சோமம்,
देवान्	தெவாந்	தேவர்களை
अवृणीत	அவ்ருணீத	வழிபடலாகிய
यत्	யத்	யாதொரு கருமமுண்டோ,
तत्	தத்	அத்தகைய
महत्	மஹத்	மகத்தாகிய காரியத்தைச்
चकार	சகார	செய்தது.
पवमानः	பவமாநஃ	(மற்றும்) புநிதமாகிய சோமம்

इन्द्रे	உந்த்ரே	இந்திரனிடத்தில்
ओजः	ஓஜஃ	வன்மையை
अदधात्	அததாத்	நிலை நாட்டியது. (அஃதன்றியும்)
इन्दुः	இந்துஃ	விளங்குகின்ற சோமம்
सूर्ये	ஸூர்யே	இரவியின்கண்
ज्योतिः	ஜ்யோதிஃ	ஒளியை
अजनयत्	அஜநயத்	உண்டாக்கினது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

போற்றத்தக்க, அல்லது, மகத்தாகிய சோமம், பெருங்காரியத்தைச் செய்தது. அஃதென்னையோ வெனின்? உண்டாக்கல் உண்டாக்கப்படுதல் என்னுந் தன்மையால் நீரின் கருப்பவடிவாகிய அச்சோமம், தேவர்களை வழி படலாகிய செய்கையைச் செய்தது. மற்றும், புதிதாகிய அச்சோமம், அதை யருந்துதலாலுண்டாகிய வன்மையை இந்திரனிடத்து நிறுவினது. அவ்வாறே சூரியனிடத்தில் ஒளியையு முண்டாக்கினது என்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

३२ ३ १ २२ ३ १२
1254. एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव * दीयते ।
३ १ २२ ३ १ २
अभि द्रोणान्यासदम् ॥ १ ॥

ஸஷ தெவொ அமர்த்யஃ பர்ணவீரிவ தீயதெ ।
அபி த்ரோணான்யாஸதம் ॥

அன்வயம்.

देवः, अमर्त्यः, एषः, द्रोणानि, अभि आसदं, पर्णवीः इव, दियते ॥

பதவுரை.

देवः	தெவஃ	பிரகாசமுடையதும்
अमर्त्यः	அமர்த்யஃ	இறவாததுமாகிய
एषः	ஸஷஃ	இச் சோமம்,
द्रोणानि	த்ரோணானி	துரோண கலசங்களென்னும் பாண்டங்களில்

* दीयति, என்பது பாட பேதம்.

अभि आसदं	அபி ஆஸதம்	முழுதும் நிலைத்திருப்பதற்கு,
पर्णवीः इव	பர்ணவீ: இவ	பறவையைப் போன்று
दीयते	தீயதெ	விரைவாய்ச் செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—பத்துக்கொண்ட இரண்டாஞ் சூக்தத்தில்—1. சுனச்சேபர் ரிஷி.

விளங்குகின்றதும், இறப்பற்றதுமாகிய இச்சோமம், துரோண கலசங்களை நோக்கி, அதில் நிலைத்திருப்பதற்கு, பறவை போன்று வேகமாய்ச் செல்கின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 5.

३१ २र३१ २३ २ ३१ २र
1255. एष विप्रैरभिष्टुतोऽपो देवो विगाहते ।
२३१ २ ३१२
दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ २ ॥

ஸஷ விப்ரைரபிஷ்டுதொ2பொ தெவொ விகாஹதெ ।
தத்ரத்நாநி தாஶுஷெ ॥

அந்வயம்.

विप्रैः, अभिष्टुतः, देवः, एषः, दाशुषे, रत्नानि, दधत्, अपः, विगाहते ॥

பதவுரை.

विप्रैः	விப்ரை:	துதிப்போர்களாற்
अभिष्टुतः	அபிஷ்டுத:	போற்றப்பட்டதும்
देवः	தெவ:	பிரகாசமுடையதுமாகிய
एषः	ஸஷ:	இச்சோமம்,
दाशुषे	தாஶுஷெ	அவிகொடுக்கின்ற வேள்வித் தலைவனுக்கு
रत्नानि	ரத்நாநி.	இரத்தினங்களைக்
दधत्	தத்ஸ	கொடுப்பதாய்க்
अपः	அப:	குடத்திலுள்ள ஆற்று நீருடன்
विगाहते	விகாஹதெ	சேர்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—2.

கூரிய மதியுடைய துதிப்போர்களால் இறைஞ்சப் பெற்றதும், பிரகாச முடையதுமாகிய இச்சோமம், அவிகளைக் கொடுக்கின்ற வேள்வித் தலைவன் பொருட்டு இரமிக்கத்தக்க தனங்களை யளிப்பதாய் 'வசதீவரி' என்னும் பெயர்பூண்டு, குடத்திலுள்ள ஆற்று நீரிற் சேர்கின்றது என்பதாம். (2)

மந்திரம் 6.

३१ २२ ३ २ ३ २ ३ १ २३ १ २
1256. एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सत्वभिः ।
१२
पवमानः सिषासति ॥ ३ ॥

ஏஷ விஶ்வாநி வார்யா ஶூரோ யந்நிவ ஸத்வபிஃ ।
பவமாநஃ ஸிஷாஸதி ॥

அன்வயம்.

पवमानः, शूरः, एषः, विश्वानि वार्या, सत्वभिः, यन् इव, सिषासति ॥

பதவுரை.

पवमानः	பவமாநஃ	புனிதமாகியதும்
शूरः	ஶூரஃ	வீரமுடையதுமாகிய
एषः	ஏஷஃ	இச்சோமம்,
विश्वानि वार्या	விஶ்வாநி வார்யா	வரத்தக்க தனங்களனைத்தையும்
सत्वभिः	ஸத்வபிஃ	ஆற்றல்களால்
यन् इव	யந் இவ	தனதாக்கிக்கொண்டு (அவைகளை)
सिषासति	ஸிஷாஸதி	எமக்குக் கொடுக்க விரும்புகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—3.

சுத்தமானதும், வீரமுடையதுமாகிய இச்சோமம், அடையத்தக்க தனங்களனைத்தையும் வலிகளால் தன் வசப்படுத்திக்கொண்டு (அவற்றை) எம் பொருட்டுக் கொடுக்க மிகவும் விரும்புகின்றது என்பதாம். (3)

மந்திரம் 7.

३२ ३ १ २ ३ २
1257. एष देवो रथर्यति पवमानो दिशस्यति ।
३ १ २
आविष्कृणोति वग्वनुम् ॥ ४ ॥

ஸஷ தெவொ ரதர்யதி பவமாநொ திஶஸ்யதி ।
ஆவிஷ்க்ருணோதி வக்வநும் ॥

அன்வயம்.

देवः, एषः पवमानः, रथर्यति, दिशस्यति, वग्वनुं, आविष्कृणोति ॥

பதவுரை.

देवः	தெவஃ	திவ்யமாகிய
एषः पवमानः	ஸஷஃ பவமாநஃ	இச்சோமம்
रथर्यति	ரதர்யதி	எமது வேள்வியின் பொருட்டு வருவதற்கு, இரதத்தை விரும்புகின்றது.
दिशस्यति	திஶஸ்யதி	வந்து, நாங்கள் வேண்டின பொருள்களைக் கொடுக்க விரும்புகின்றது.
वग्वनुं	வக்வநும்	மற்றும், ஒலியை
आविष्कृणोति	ஆவிஷ்க்ருணோதி	வெளிப்படுத்துகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—4.

ஒழுகுகின்ற சோமரசமாகிய தேவதை, எமது வேள்வியின் பொருட்டு வருவதற்கு இரதத்தை விரும்புகின்றது. வந்து, வேண்டின பொருள்களை எங்கட்குக் கொடுக்கவேண்டுமென விரும்புகின்றது. மற்றும், பிழியும் போது சத்தத்தை யுண்டாக்குகின்றது என்பதாம். (4)

மந்திரம் 8.

३२ ३ १ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २
1258. एष देवो विपन्युभिः पवमान ऋतायुभिः ।
२३ १ २
हरिर्वाजाय मृज्यते ॥ ५ ॥

ஸஷ தெவொ விவந்யுபிஃ பவமாந ஃதாயுபிஃ ।
ஹரிர்வாஜாய மூஜ்யதெ ॥

அந்வயம்.

देवः, एषः पवमानः, ऋतायुभिः, विपन्युभिः, वाजाय, हरिः, मृज्यते ॥

பதவுரை.

देवः	தெவஃ	திவ்யமாகிய
एषः पवमानः	ஸஷஃ பவமாநஃ	இச் சோமம்
ऋतायुभिः	ஃதாயுபிஃ	உண்மையை விரும்புகின்ற
विपन्युभिः	விவந்யுபிஃ	துதியாளர்களால்
वाजाय	வாஜாய	போரின் பொருட்டு
हरिः	ஹரிஃ	குதிரை அலங்கரிக்கப்படுவது போன்று
मृज्यते	மூஜ்யதெ	தோத்திரங்களால் அலங்கரிக்கப் படுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—5.

ஒழுகுகின்ற இச்சோமமாகிய தேவதை, உண்மையை விரும்புகின்ற, அல்லது, வேள்வியை விரும்புகின்ற துதியாளர்களால் போர்நிமித்தமுள்ள குதிரை போன்று தோத்திரங்களால் அலங்கரிக்கப்படுகின்றது என்பதாம். (5)

மந்திரம் 9.

३२ ३ २ ३ २३ २ ३ १ २
1259. एष देवो विपाकृतोऽति ह्वरांꣳसि धावति ।
१ २ ३ १ २
पवमानो अदाभ्यः ॥ ६ ॥

ஸஷ தெவொ விபாக்ருதொஃதி ஹ்வராஂஸி தாவதி ।
பவமாநொ அதாப்யஃ ॥

அந்வயம்.

विपाकृतः, देवः, एषः पवमानः, अदाभ्यः, ह्वरांसि, अति धावति ॥

பதவுரை.

विपाकृतः	விவாகூ₃தஃ	விரல்களாற் பிழியப்பட்டதும்
देवः	தெவஃ	திவ்யமானதுமாகிய
एषः पवमानः	வஸஷஃ வவரோ₃நஃ	இச் சோமம்
अदाभ्यः	சூதாஹ்யஃ	ஒருவராலேனும் பீடிக்கப்படாத தாய்ப்
द्वरांसि	ஹ்வரா₃ம்ஸி	பகைவர்களைக்
अति धावति	சூதி யாவதி	கொல்வதற்கு மிக ஓடுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—6.

விரல்களாற் பிழிந்தெடுக்கப்பட்ட இச்சோமரச மென்னுந் தேவதை, ஒழுகுவதாயும், ஒருவராலேனுந் தன்புறுத்தப்படாததாயு மிருந்துகொண்டு பகைவர்களைக் கொல்லுவதற்குச் செல்கின்றது என்பதாம். (6)

மூலத்திலுள்ள 'விபா' என்னுஞ் சொற்கு நிகண்டு 1-5-9-வது சூத்திரம், விரல் என்று பொருள் கூறுகின்றது.

மந்திரம் 10.

३२उ ३ १२ ३१२२ ३ १२

1260. एष दिवं विधावति तिरो रजाꣳसि धारया ।

१२ ३ १२

पवमानः कनिक्रदत् ॥ ७ ॥

வஸஷ திவம் வியாவதி திரொ ரஜாꣳஸி யாரயா ।

வவரோ₃நஃ கநிக்ரத₃த் ॥

அன்வயம்.

धारया, पवमानः, एषः, कनिक्रदत्, रजांसि, तिरः, दिवं, विधावति ॥

பதவுரை.

धारया	யாரயா	தாரையாய்
पवमानः	வவரோ₃நஃ	ஒழுகப்பட்ட
एषः	வஸஷஃ	இச் சோமம்,
कनिक्रदत्	கநிக்ரத₃த்	இரைந்து கொண்டும்,
रजांसि	ரஜாꣳஸி	உலகங்களைப்

तिरः	கிரஃ	{ பழித்துக்கொண்டும், வேள்வியி னிடத்தினின்று
दिवं	திவம்	சுவர்க்கத்தைக் குறித்துச்
व्यावति	வ்யாவதி	செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—7.

தாரையாய் ஒழுகுகின்ற இச் சோமம், பிழியுங்கால் ஒலித்துக்கொண் டும், உலகங்களைப் பழித்துக்கொண்டும், வேள்வித்தானத்திலிருந்து வானுல கை யடைகின்றது என்பதாம். (7)

மந்திரம் 11.

३२उ ३ १२ ३२उ३ १ २

1261. **एष दिवं व्यासरत्तिरो रजाꣳस्यस्तृतः ।**

१२ ३२

पवमानः स्वध्वरः ॥ ८ ॥

ஏஷ திவம் வ்யாஸரத்திரோ ரஜாꣳஸ்யஸ்தூதஃ ।

பவமாநஃ ஸ்வத்வரஃ ॥

அந்வயம்.

स्वध्वरः, एषः पवमानः, अस्तृतः, रजांसि, तिरः, दिवं, व्यासरत् ॥

பதவுரை.

स्वध्वरः	ஸ்வத்வரஃ	இனிதாகிய வேள்வியையடைந்த
एषः पवमानः	ஏஷஃ பவமாநஃ	இச்சோமம்,
अस्तृतः	அஸ்தூதஃ	{ ஒருவராலும் துன்புறுத்தப்படா ததும்,
रजांसि	ரஜாꣳஸி	உலகங்களைப்
तिरः	கிரஃ	{ பழிக்கின்றதுமாகி, வேள்வித் தானத்திலிருந்து
दिवं	திவம்	வானுலகை நோக்கிச்
व्यासरत्	வ்யாஸரத்	செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—8.

ஒழுகுகின்ற இச் சோமம், அழகிய வேள்வியை யுடையதாயும், ஒரு வராலேனுந் துன்புறுத்தப்படாததாயுமாகி, உலகங்களை விட்டு வானுலகத்திற்குச் செல்கின்றது என்பதாம். (8)

மந்திரம் 12.

३२ ३ २३ १ २ ३ २ ३१ २ ३२
1262. एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः ।
१२ ३ १ २
हरिः पवित्रे अर्षति ॥ ९ ॥

ஸஷ ப்ரத்நேந ஜந்மநா தெவொ தெவெப்யஃ ஸுதஃ ।
ஹரிஃ பவித்ரே ஸ்ஷதி ॥

அந்வயம்.

हरिः, देवः, एषः, प्रत्नेन, जन्मना, देवेभ्यः, सुतः, पवित्रे, अर्षति ॥

பதவுரை.

हरिः	ஹரிஃ	பச்சை நிறமுடையதும்
देवः	தெவஃ	பிரகாசமுள்ளதுமாகிய
एषः	ஸஷஃ	இச் சோமம்,
प्रत्नेन	ப்ரத்நேந	பண்டைக்காலத்திய
जन्मना	ஜந்மநா	உற்பத்தியால்
देवेभ्यः	தெவெப்யஃ	தேவர்களின் பொருட்டுப்
सुतः	ஸுதஃ	பிழியப்பெற்று
पवित्रे	பவித்ரே	வடிக்கும் பாத்திரத்திற்
अर्षति	ஸ்ஷதி	செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—9.

பசுமை நிறமுடையதாய் விளங்குகின்ற இச் சோமம், பழைமையாகிய உற்பத்தியால் தேவர்கணிமித்தம் பிழியப்பெற்று, வடிக்கும் பாத்திரத்திலிருப்பதற்குச் செல்கின்றது என்பதாம். (9)

மந்திரம் 13.

३२ २ १ २३ १ २ ३ १ ३ २ ३ १ २
1263. एष उ स्य पुरुव्रतो जज्ञानो जनयन्निषः ।
१२ ३२
धारया पवते सुतः ॥ १०–२ ॥

இருக்கு 9-3-1-64-5-3-2-7-10.

ஸஷ உ ஸ்ய பூரூவ்ரதொ ஜஜ்ஞாநொ ஜநயஹ்ஷிஃ ।
யாரயா பவதெ ஸுதஃ ॥

அந்வயம்.

एषः, उ स्य, पुरुव्रतः, जज्ञानः, इषः, जनयन्, सुतः, धारया, पवते ॥

பதவுரை.

एषः	ஸஷஃ	இத்தகைய
उ स्य	உ ஸ்ய	அச் சோமம்
पुरुव्रतः	பூரூவ்ரதஃ	மிகுந்த கருமங்களையுடையதாய்,
जज्ञानः	ஜஜ்ஞாநஃ	தோன்றியபோதே
इषः	உஷஃ	அன்னத்தை
जनयन्	ஜநயந்	உற்பத்தியாக்கிக்கொண்டு,
सुतः	ஸுதஃ	பிழியப்பட்டதாகித்
धारया	யாரயா	தாரையுடன்
पवते	பவதெ	ஒழுகுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—1. இருக்கு—10.

அத்தகைய இச் சோமம், பல்வகைக் கருமங்களுடன் (கூடித்) தோன்றியபோதே அன்னங்களை உற்பத்தியாக்கிக் கொண்டு, பிழிந்ததாய்த் தாரையுடன் ஒழுகுகின்றது என்பதாம். (10)

முதலாவது கண்டம்

முற்றும்.

இரண்டாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—5. அத்தியாயம்—10. கண்டம்—2.

எட்டு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २
1264. एष धिया यात्यण्या शूरो रथेभिराशुभिः ।
२ ३ १ २ १२
गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥ १ ॥

ஏஷ தியா யாத்யண்யா ஶூரொ ரதெ²பி⁴ராஶுபி⁴꞉ ।
க³ச்ச²ன்னிந்த்³ரஸ்ய நிஷ்க்ருதம் ॥

அன்வயம்.

शूरः, अण्या, एषः, इन्द्रस्य, निष्कृतं, आशुभिः, रथेभिः धिया, गच्छन् याति ॥

பதவுரை.

शूरः	ஶூரः	வீரத்தன்மையுடையதும்,
अण्या	அண்யா	விரல்களாற் பிழியப்பட்டதுமாகிய,
एषः	ஏஷः	இச் சோமரசம்,
इन्द्रस्य	இந்த்³ரஸ்ய	இந்திரனுடைய
निष्कृतं	நிஷ்க்ருதம்	(சுவர்க்கமென்னும்) இடத்தைக் குறித்து
आशुभिः	ஆஶுபி⁴꞉	விரைவாய்ச் செல்கின்ற
रथेभिः	ரதெ²பி⁴꞉	தேர்களாலும்
धिया	தியா	கருமத்தாலும்
गच्छन् याति	க³ச்ச²ன் யாதி	இந்திரனுடன் போய்ச் சேருகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—1. அதிதர், தேவலர் ரிஷிகள். இருக்கு எட்டாம் சூக்தத்தில்—1.

இச் சோமரசம், வீரத்தன்மை யுடையதும், விரல்களாற் பிழியப்பட்டதுமாகிக் கருமத்தால் (மேலிடத்தை) அடைகின்றது. எவ்வாறடைகின்றதெனின்? கூறப்படுகின்றது :—சுவர்க்கமென்னும் இந்திரனுடைய இடத்தைக் குறித்து, வேகமாய்ச் செல்கின்ற தேர்களில் இந்திரனுடன் இரதத்திலிருந்து கொண்டென்க. விரல்களாற் பிழியப்பட்டு ஓமம்பண்ணும் வாயிலாகத் தனதிடத்திற்குக் கொண்டுபோகின்ற அக்கினியை யடைகின்றதென்பது பொருள். (1)

மந்திரம் 2.

३२ ३१ २ ३२ ३१ २
1265. एष पुरु धियायते बृहते देवतातये ।
२ ३१ २३ १ २
यत्रामृतास *आशत ॥ २ ॥

ஸஷ வுரு தியாயதெ ப்ருஹதெ தெவதாதயெ ।
யத்ராமூதாஸ சூஶத ॥

அந்வயம்.

यत्र, अमृतासः, आशत, बृहते, देवतातये, एषः, पुरु धियायते ॥

பதவுரை.

यत्र	யத்ர	எவ் வேள்வியில்
अमृतासः	அமூதாஸ:	தேவர்கள்
आशत	சூஶத	சூழ்ந்திருக்கின்றனரோ,
बृहते	ப்ருஹதெ	பெரிதாகிய
देवतातये	தெவதாதயெ	அவ் வேள்வியின் பொருட்டு
एषः	ஸஷ:	இச் சோமம்,
पुरु धियायते	வுரு தியாயதெ	மிகுந்த கருமங்களை விரும்புகின்றது.

* आसत, என்பது பாட பேதம்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—2.

இச்சோமம், மிகுந்த கருமங்களை விரும்புகின்றது. எதன் பொருட்டெனின்? மகத்தாகிய வேள்வியின் பொருட்டென்க. எவ்வேள்வியில் தேவர்கள் சூழ்ந்திருக்கின்றனரோ, அவ்வேள்வியின் பொருட்டென்று இயைத்துக்கொள்க. (2)

மந்திரம் 3.

३१ २ ३ २ ३२३ १२ ३१२
1266, एतं मृजन्ति मर्ज्यमुप द्रोणेष्वायवः ।
३ २ ३ १ २२
प्रचक्राणं महीरिषः ॥ ३ ॥

வதம் ஊஜஹ்தி உஜ்ருஹ்வ த்ரோணேஷ்வாயவஃ ।
ப்ரசக்ராணம் மஹீரிஷஃ ॥

அந்வயம்.

आयवः, महीः, इषः, प्रचक्राणं, मर्ज्यं, एतं, द्रोणेषु, उपमृजन्ति ॥

பதவுரை.

आयवः	சூயவஃ	வேட்போர்கள்,
महीः	மஹீஃ	மிகுந்த
इषः	இஷஃ	இரசமாகிய அன்னத்தைப்
प्रचक्राणं	ப்ரசக்ராணம்	பெய்கின்றதுப்,
मर्ज्यं	மர்ஜ்யம்	சோதிக்கத்தக்கதுமாகிய
एतं	வதம்	இச்சோமத்தை,
द्रोणेषु	த்ரோணேஷு	{துரோண கலசங்களென்னும் பாத்திரங்களில்
उपमृजन्ति	உபஊஜந்தி	புனிதமாகப் பிழிகின்றனர்.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—3.

வேட்போர்கள், சோதிக்கத்தக்க இச்சோமத்தைப் பிழிகின்றார்கள். சவைகளிலெனின்? 'துரோணகலசங்க' ளென்னும் கீழ்வைத்துள்ள பாத்திரங்களிலென்க. எத்தன்மையதை யென்னில்? மிகுதியான இரசமா யொழுகுகின்றதை யென்பதாம். (3)

மந்திரம் 4.

३२ ३ १ २र ३ २ ३ १२ ३ २
1267. एष हितो विनीयतेऽन्तः शुध्यावता पथा ।
१ २ ३ २ ३ १ २
यदी तुञ्जन्ति भूर्णयः ॥ ४ ॥

ஸஷ ஹிதொ விநீயதெஉந்தஃ ஶுத்யாவதா பதா ।
யதீ துஜ்ஜந்தி ஹூர்ணயஃ ॥

அந்வயம்.

एषः, हितः, विनीयते, अन्तः, शुध्यावता, पथा, यदि, भूर्णयः, तुञ्जन्ति ॥

பதவுரை.

एषः	ஸஷஃ	இச் சோமம்,
हितः	ஹிதஃ	சோமரச முதலிய அவிகள் வைக்கின்ற மண்டபத்தில் வைக்கப் பெற்று
विनीयते	விநீயதெ	ஓமம் பண்ணும் அக்கினிக் கருகாய்க் கொண்டு போகப் படுகின்றது.
अन्तः	அந்தஃ	அவி கொடுக்கின்ற 'தீ' அவி வைக்கின்ற மண்டபம், என்னும், இரண்டிற்கும் நடுவில்
शुध्यावता	ஶுத்யாவதா	புநிதமாக்கிய
पथा	பதா	முறையால்
यदि	யதி	எக்கால்
भूर्णयः	ஹூர்ணயஃ	வேட்போர்கள்
तुञ्जन्ति	துஜ்ஜந்தி	தேவர்களுக்கு அர்ப்பிக்கின்றனரோ, (அப்போது கொண்டு போகப்படுகின்றது என்க.)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—4.

இச்சோமம், அவிகள் வைக்கின்ற இடத்தில் வைக்கப்பெற்று (பின்னர்) அவ்விடத்திலிருந்து அவி கொடுக்கின்ற தீயிருக்குமிடத்திற்குக் கொண்டு போகப்படுகின்றது. அவ்விரண்டிற் கிடையில் புநிதமாகிய மார்க்கத்தால்

மூடிக்குஞ் சிலமுடைய வேட்போர்கள், எப்போது தேவர்களுக்கு அர்ப் பணஞ் செய்கின்றார்களோ, அப்போது கொண்டு போகப்படுகின்றதென இயைத்துக்கொள்க என்பதாம். (4)

மந்திரம் 5.

२३ ३ १ २ ३ २ ३ १ २३ १ २
1268. एष रुक्मिभिरीयते वाजी शुभ्रेभिरंशुभिः ।
२३ १ २ ३ १२
पतिः सिन्धूनां भवन् ॥ ५ ॥

ஏஷ ருக்மிபிரீயதே வாஜீ ஶுப்ரேபிரம்ஶுபிஃ ।
பதிஃ ஸிந்தூநாம் பவந் ॥

அன்வயம்.

वाजी, शुभ्रेभिः, अंशुभिः, एषः, सिन्धूनां, पतिः भवन्, रुक्मिभिः, ईयते ॥

பதவுரை.

वाजी	வாஜீ	வேகமுடையதும்,
शुभ्रेभिः	ஶுப்ரேபிஃ	வெண்ணிறமுடையதும்
अंशुभिः	அம்ஶுபிஃ	கிரணங்களுடன் கூடியதுமாகிய
एषः	ஏஷஃ	இச்சோமம்,
सिन्धूनां	ஸிந்தூநாம்	ஒழுகுகின்ற இரசத்திற்கு
पतिः भवन्	பதிஃ பவந்	இறைவனாகி
रुक्मिभिः	ருக்மிபிஃ	வேட்போர்களுடன்
ईयते	ஈயதே	செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—5.

இச்சோமம், வேட்போர் முதலியோர்களுடன் போகின்றது. எத் தன்மைய சோமமெனின் ? வேகமுடையதும், வெள்ளிய கிரணங்களுடைய தும், ஒழுகுகின்ற இரசங்களுக்குத் தலைமையானதுமாம் என்பதாம். (5)

மந்திரம் 6.

३१ २र ३ १२३ १ २ ३ २ १ २
1269. एष शृङ्गाणि दोधुवच्छिशीते यूथ्यो३ वृषा ।
३ १ २र ३ १२
नृम्णा दधान ओजसा ॥ ६ ॥

ஸஷ ஶ்ரஜ்ஜாணி தொதுவச்ஹிஶீதெ யூத்யோ வ்ருஷா ।
ந்ருஜ்ணா ததாந ஒஜஸா ॥

அந்வயம்.

यूथ्यः, वृषा, शिशीते, ओजसा, नृम्णा, दधानः, एषः, शृङ्गाणि, दोधुवत् ॥

பதவுரை.

यूथ्यः	யூத்யஃ	யூதபதியாகிய
वृषा	வ்ருஷா	இடபம்,
शिशीते	ஶிஶீதெ	தனது கொம்பை அசைத்தல் போன்று.
ओजसा	ஒஜஸா	வலியால்,
नृम्णा	ந்ருஜ்ணா	தனங்களை
दधानः	ததாநஃ	எம்பொருட்டுத் தாங்குகின்ற
एषः	ஸஷஃ	இச்சோமம்,
शृङ्गाणि	ஶ்ருஜ்ஜாணி	கொம்புகள் போன்ற உயரமான கிரணங்களைப்
दोधुवत्	தொதுவச்	பிழியும்போது அசைக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—6.

இச் சோமம், கொம்புகள்போன்று உயரமாயுள்ள கிரணங்களை அசைக்கின்றது. எதைப்போலெனின்? அதிலுவமை:— இடபம் தனது கூரிய கொம்புகளை யசைப்பது போன்றெனல். எத்தன்மையதாகி யெனின்? ஆற்றலால் எம்பொருட்டுத் தனங்களைத் தாங்கிக்கொண்டதாகி யென்க. (6)

மந்திரம் 7.

१२ २२ ३१ २२ ३ ३ १ २२
1270. एष वसूनि * पिप्दनः परुषा ययिवाꣳ अति ।
२३ १२
अव शादेषु गच्छति ॥ ७ ॥

ஏஷ வஸூநி பிப்தநஃ பரூஷா யயிவாꣳ அதி ।
அவ ஶாதேஷு கச்சதி ॥

அன்வயம்.

वसूनि, पिप्दनः, एषः, परुषा, अति ययिवान्, शादेषु, अवगच्छति ॥

பதவுரை.

वसूनि	வஸூநி	கருமங்களைச் செய்யாமல் தடுக்கின்ற அரக்கர்களைப்,
पिप्दनः	பிப்தநஃ	பீடிக்கின்ற
एषः	ஏஷஃ	இச் சோமம்,
परुषा	பரூஷா	பருவ வாயிலாகக்
अति ययिवान्	அதி யயிவாந்	கடந்துபோய்க்,
शादेषु	ஶாதேஷு	கொல்லத்தக்க இராக்கதர்களிடத்துச்
अवगच्छति	அவகச்சதி	செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—7.

கருமங்களைச் செய்யாமல் தடுக்கின்ற இராக்கதர்களைத் துன்புறுத்திக் கொண்டு, இச் சோமம் பருவங்களிலூற் கடந்துபோய்க் கொல்லத்தக்க இராக்கதர்கள் மேற்செல்கின்றது என்பதாம். (7)

மந்திரம் 8.

३ २३ २उ ३ २ ३ १२ ३ १२
1271. एतमु त्यं दशक्षिपो हरिꣳ हिन्वन्ति यातवे ।
१ २ ३ १ २
स्वायुधं मदिन्तमम् ॥ ८–३ ॥

இருக்கு 9-15-1-2-7,3,5,4-6,8.

* पिप्दना, என்பது பாட பேதம்.

ஸு॒தஃ॒ ஈம் ஏ॒ஷ ரு॒ஷிவொ॑ ஹரி॑ம் ஹி॒ன்வந்தி॑ யா॒தவே ।
ஸ்வா॒யு॒஧ம் ம॑தி॒ன்தம॑ம் ॥

அன்வயம்.

स्वायुधं, मदिन्तमं, हरिं, त्यं एतं उ, यातवे, दश क्षिपः, हिन्वन्ति ॥

பதவுரை.

स्वायुधं	ஸ்வாயு॒஧ம்	சிறந்த ஆயுதத்தையுடையதும்
मदिन्तमं	மதி॒ன்தம॑ம்	களிப்பைக் கொடுக்கின்றதும்
हरिं	ஹரி॑ம்	பசுமை நிறமுடையதுமாகிய
त्यं एतं उ	த்ய॑ம் ஏ॒ன॑ம் உ	அத்தகைய இச் சோமத்தைச்,
यातवे	யா॒தவே	செல்லுமாறு
दश क्षिपः	த॒ஸ க்ஷிவ॑ஃ	பத்து விரல்களுஞ்
हिन्वन्ति	ஹி॒ன்வந்தி॑	செலுத்துகின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—2. இருக்கு—8.

பசுமை நிறமுடைய அத்தகைய இச் சோமத்தைப், பத்து விரல்களும் செல்லுமாறு ஏவுகின்றன. எவ்வண்ணமாகிய சோமத்தை யெனின்? அழகிய ஆயுதமுடையதையும், மிகக் களிப்பைக் கொடுப்பதையுமா மென்க. இராக்கதர்களைக் கொல்லுந் தன்மையைக் குறிப்பித்தற் பொருட்டு அழகிய ஆயுதமெனப்பட்டது. (8)

இரண்டாவது கண்டம்

முற்றும்.

மூன்றுவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—5. அத்தியாயம்—10. கண்டம்—3.

ஆறு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३२ ३ २उ ३ २उ ३ १२
1272. एष उ स्य वृषा रथो * ऽव्या वारेभिरव्यत ।
२ ३ १२ ३ १ २
गच्छन् वाजꣳ सहस्रिणम् ॥ १ ॥

* अव्यो वारेभिरर्षति, என்பது பாட பேதம்.

ஏஷ உ ஸ்ய வ்ருஷா ரதோ²வ்யா வாரமேஹிரவ்ருʼத ।
ம³ஹந்ன் வாஜம் ஸஹஸ்ரிணம் ॥

அந்வயம்.

वृषा, रथः, स्यः एषः, सहस्रिणं, वाजं, गच्छन्, अव्या वारेभिः, अव्यत ॥

பதவுரை.

वृषा	வ்ருʼஷா	மனம் விரும்பினவற்றைப் பொழிகின்றதும்,
रथः	ரதோ²ஃ	வேகமுடையதுமாகிய
स्यः एषः	ஸ்யஃ ஏஷஃ	அத்தகைய இச் சோமரசம்,
सहस्रिणं	ஸஹஸ்ரிணம்	ஆயிரம் வகையான
वाजं	வாஜம்	அன்னங்களை வேள்வித் தலைவனுக்குக் கொடுத்தற் பொருட்டு,
गच्छन्	க³ச்ச²ந்	துரோண கலசமென்னும் பாண்டத்திற் சென்று
अव्या वारेभिः	அவ்யா வாரேபி⁴ஃ	புனிதமான கம்பளி மயிர்களால்
अव्यत	அவ்யத	வடிக்கப்பெற்று அதிற்பாய்ச் சேர்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—1 இரகுகணர் ரிஷி. ஆறுவது சூக்தத்தில்—1.

கீர்த்தி பெற்றதும், பிழிந்ததுமாகிய அத்தகைய இச் சோமரசம், மனம் விரும்பினவற்றை பொழிவதாயும், வேகமுடையதாயுமாகி, தசாபவித்திர மென்னும் ஆடைநுனியை யடைந்து புனிதமான கம்பளி மயிர்களின் வாயிலாக, துரோணகலச மென்னும் பாண்டத்திற் செல்கின்றது. அதாவது வேள்வித் தலைவனுக்கு ஆயிரம் வகையான அன்னங்களை யளித்தற் பொருட்டு, துரோண கலசத்திற் புகுகின்றதென்பது பொருள். (1)

மந்திரம் 2.

३२ ३२ ३ १२ ३ १२ ३ १ २
1273. एतं त्रितस्य योषणो हरिꣳ हिन्वन्त्यद्रिभिः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥ २ ॥

ஏதம் த்ரிதஸ்ய யோஷணோ ஹரிꣳ ஹிந்வந்த்யத்³ரிபி⁴ஃ ।
இந்தூ³மிந்த்³ராய பீதயே ॥

அன்வயம்.

इन्द्राय, पीतये, हरिं, एतं इन्दुं, त्रितस्य, योषणः, अद्रिभिः, हिन्वन्ति ॥

பதவுரை.

इन्द्राय	ஊரூராய்	இந்திரன்
पीतये	வீதயெ	அருந்துதற் பொருட்டுப்
हरिं	ஹரிம்	பச்சை நிறமுடைய
एतं इन्दुं	வனதம் ஊந்தும்	இச் சோமக்கொடியை
त्रितस्य	த்ரிதஸ்ய	'திரித' ரிஷியின்
योषणः	யொஷணஃ	விரல்கள்,
अद्रिभिः	அத்ரிபிஃ	கற்களால்
हिन्वन्ति	ஹின்வந்தி	ஏவுகின்றன. (இடிக்கின்றன)

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—2.

பசுமை நிறமுடைய இச் சோமத்தைத், 'திரிதர்' என்னும் ரிஷியி னுடைய விரல்கள், இடித்தற்குரிய கற்களால் ஏவுகின்றன. (இடிக்கின்றன) எதன் பொருட்டெனின் ? இந்திரன் (சோமரசத்தை) அருந்துதற் பொருட் டென்பதாம். (2)

மந்திரம் 3.

३ १ २र ३ २ ३ऽउ ३ १ २
1274. एष स्य मानुषीष्वा श्येनो न विक्षु सीदति ।
१ २ ३ २उ ३ १ २
गच्छन् जारो न योषितम् ॥ ३ ॥

வஷ ஸ்ய மானுஷீஷ்வா ஸ்யெனொ ந விக்ஷு ஸீததி ।
கச்சந் ஜாரொ ந யொஷிதம் ॥

அன்வயம்.

स्यः, एषः, मानुषीषु विक्षु, श्येनः न, योषितं गच्छन्, जारः न, आसीदति ॥

பதவுரை.

स्यः	ஸ்யஃ	அத்தகைய
एषः	வஷஃ	இச் சோமம்

मानुषीषु विक्षु	மாநுஷீஷு விக்ஷு	வேள்வித் தலைவர்களான மனிதர் களுக்குள்,
श्येनः न	ஶ்யேநः ந	பருந்தின் வீழ்ச்சிபோன்றும்,
योषितं गच्छन्	யோஷிதம் கச்சந்	வியபிசாரியாகிய பெண்பாலிடத் திற் செல்லும்
जारः न	ஜாரः ந	பிறர்மனை நயப்பவன் போன்றும்
आसीदति	ஆஸீததி	(விரைவில்) வந்திருக்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—3.

அத்தகைய இச்சோமம், மனிதர்கட்கு நடுவில், பருந்து வீழ்வது போன்று விரைவில் வேள்வித் தலைவர்கட்கு அருள் புரியுமாறு வந்து இருக்கின்றது. மற்றும், எதைப் போலெனின்? வியபிசாரியாகிய பெண் பாலிடத்திற் செல்கின்ற பிறர்மனை நயப்பவன் போன்றும் என்பதாம். அதாவது, பிறர்மனை புகுவோன் அவள் விரும்பியதை முடித்தற் பொருட்டு மறைந்து செல்கின்றனன்றே, அதைப் போன்றென்க. (3)

மந்திரம் 4.

३२उ ३ १ २र ३ १ २र
1275. एष स्य मधो रसोऽवचष्टे दिवः शिशुः ।
२र ३ २३ १ २
य इन्दुर्वारमाविशत् ॥ ४ ॥

ஏஷ ஸ்ய மதோ₄ ரஸோऽவசஷ்டே தி₃வः ஶிஶுः ।
ய இந்து₃ர்வாரமாவிஶத் ॥

அந்வயம்.

दिवः, शिशुः, यः, इन्दुः, वारं, आविशत्, स्यः एषः, मध्यः, रसः, अवचष्टे ॥

பதவுரை.

दिवः	தி₃வः	வானுலகிலுண்டானதால்
शिशुः	ஶிஶுः	புத்திரனைப் போன்ற
यः	யः	யாதொரு
इन्दुः	இந்து₃ः	சோமமுண்டோ, அது,
वारं	வாரம்	வடிக்கும் பாத்திரத்திற்

आविशत्	சூவிஶத்	புகுகின்றது
स्यः एषः	ஸ்யஃ ஏஷஃ	அத்தன்மைய இச்சோமம்
मद्यः	மத்3யஃ	மதத்தைக் கொடுக்கின்ற
रसः	ரஸஃ	இரசமாகின்றது. மற்றும்,
अवचष्टे	அவசஷ்டே	அனைத்தையும் பார்க்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—4.

அத்தகைய இச்சோமம், மதத்திற்குக் காரணமாகிய இரசமாகின்றது. அஃது, அனைத்தையும் பார்க்கின்றதும், வானுலகிற்குக் குழந்தையுமாகின்றது. விளங்குகின்ற சோமம் வடிக்குங் கம்பளியில் புகுகின்றது. சோமம் வானுலகிலுண்டானதால் வானுலகிற்கு ஒரு மகவெனப்படுகின்றது என்பதாம். (4)

மந்திரம் 5.

३२उ ३१२ ३ १ २र ३ २
1276. एष स्य पीतये सुतो हरिर्धर्णसिः ।
२ ३ १ २ ३ २ ३ २
क्रन्दन्योनिमभि प्रियम् ॥ ५ ॥

ஏஷ ஸ்ய பீதயே ஸுதோ ஹரிர்தர்ணஸிஃ ।
க்ரந்த3ன்யோனிமபி4 ப்ரியம் ॥

அன்வயம்.

पीतये, सुतः, हरिः, धर्णसिः, स्यः एषः, प्रियं, योनिं, क्रन्दन्, अभ्यर्षति ॥

பதவுரை.

पीतये	பீதயே	தேவர்கள் அருந்துதற் பொருட்டுப்
सुतः	ஸுதஃ	பிழியப்பட்டதும்,
हरिः	ஹரிஃ	பசுமை நிறமுடையதும்,
धर्णसिः	தர்ணஸிஃ	அனைத்தையுந் தாங்குவதுமாகிய
स्यः एषः	ஸ்யஃ ஏஷஃ	அத்தகைய இச்சோமம்,
प्रियं	ப்ரியம்	அன்புள்ள
योनिं	யோநிம்	துரோணகலச மென்னும் பாண்டத்தைக் குறித்து

क्रन्दन्	க்ரந்த	ஒலித்துக்கொண்டுச்
अभ्यर्षति	அப்யர்ஷதி	செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம—3. இருக்கு—5.

தேவர்க ளருந்துவதற்குப் பிழியப்பட்டதும், பச்சை நிறமுடையதும், தாங்குவதுமாகிய அத்தகைய இச்சோமம், விருப்பமாகிய யோநிவடிவாய் அமைந்துள்ள துரோண கலச மென்னும் பாண்டத்தில் ஒலித்துக்கொண்டுச் செல்கின்றது என்பதாம். (5)

மந்திரம் 6.

३२उ ३२ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
1277. एतं त्यꣳ हरितो दश मर्मृज्यन्ते अपस्युवः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
याभिर्मदाय शुम्भते ॥ ६–४ ॥

இருக்கு 9-38-1-2-4-5-6-3.

ஸ்ரீதம் த்யம் ஹரிதோ தஶ மர்ஜ்யந்தே அபஸ்யுவஃ ।
யாபிர்மதாய ஶும்ப்ஹதே ॥

அந்வயம்.

याभिः, मदाय, शुम्भते, त्यं एतं, दश हरितः, अपस्युवः, मर्मृज्यन्ते ॥

பதவுரை.

याभिः	யாபிஃ	எவ் விரல்களால்
मदाय	மதாய	இந்திரனுடைய களிப்பின் பொருட்டுச்
शुम्भते	ஶும்ப்ஹதே	சோதிக்கப்படுகின்றதோ,
त्यं एतं	த்யம் ஸ்ரீதம்	அத்தன்மைய இச்சோமத்தை,
दश हरितः	தஶ ஹரிதஃ	பத்து விரல்களும்
अपस्युवः	அபஸ்யுவஃ	கருமத்தை விரும்பியவைகளாய்ச்
मर्मृज्यन्ते	மர்ஜ்யந்தே	பரிசோதிக்கின்றன.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—3. இருக்கு—6.

வேட்போர்கள் பிடித்தற்குரிய பத்து விரல்களும், கருமங்களை விரும்பினவைகளாய் அச்சோமத்தைச் சோதிக்கின்றன. எவ்விரல்களால் இந்திரனுடைய களிப்பின் பொருட்டுச் சோதிக்கப்படுகின்றதோ, அச்சோமத்தையெனக்கூட்டுக. (6)

மூன்றாவது கண்டம்

முற்றும்.

நான்காவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—5. அத்தியாயம்—10. கண்டம்—4.

ஆறு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३२ ३ २ ३ १ २र ३ १ २र३ १ २
1278. एष वाजी हितो नृभिर्विश्वविन्मनसस्पतिः ।
२ ३ २३ १ २
*अव्यं वारं विधावति ॥ १ ॥

ஸஷ வாஜீ ஹிதோ நூஹிர்விஶ்வவிந்மநஸஸ்பதிஃ
அவ்யம் வாரம் விதாவதி ॥

அந்வயம்.

वाजी, नृभिः, हितः, विश्ववित्, मनसः पतिः, एषः, अव्यं, वारं, विधावति ॥

பதவுரை.

वाजी	வாஜீ	வேகமுடையதும்
नृभिः	நூஹிஃ	வேட்போர்களாற்
हितः	ஹிதஃ	பாத்திரத்தில் தாபிக்கப்பட்டதும்,

---

* अव्ये, என்பது பாட பேதம்.

विश्ववित्	விஶ்வவித்	எல்லாவற்றையு முணர்வதும்,
मनसः पतिः	உநஸஃ பதிஃ	மனதிற் கிறையாவதுமாகிய
एषः	ஏஷஃ	இச்சோமம்,
अव्यं	அவ்யம்	ஆட்டின் மயிர்களாலாய
वारं	வாரம்	கம்பளியைக்கடந்து
विधावति	வித்⁴யாவதி	பலவகைத் தாரைகளாற் செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—ஆறு மந்திரங்கொண்ட சூக்தத்தில்—1. பிரிய மேதர் ரிஷி.

வேகமுடையதும், அனைத்தையு முணர்வதும், தோத்திரத்திற்குத் தலைமையானதும், அல்லது, சோமத்திற்கு மனம் அபிமானி யாதலின் மனத்திற்குத் தலைமையானதுமாகிய இச் சோமம், அது பற்றியே, "சந்திரன் மனமாகிய உள்ளத்திற் புகுந்தனன்" என மறையுங் கூறுகின்றது. வடிக்கின்ற கம்பளியால் வடிக்கப் பெற்று பாத்திரத்திற் பலவகையாய்ச் செல்கின்றது என்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

३२ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
1279. एष पवित्रे अक्षरत्सोमो देवेभ्यः सुतः ।
२ ३ १२ ३२
विश्वा धामान्याविशन् ॥ २ ॥

ஏஷ வவித்ர ஆக்ஷரத்ஸோமோ தே³வேப்⁴யஃ ஸுதஃ ।
விஶ்வா தா⁴மான்யாவிஶந் ॥

அன்வயம்.

एषः सोमः, देवेभ्यः, सुतः, पवित्रे, अक्षरत्, विश्वा धामानि, आविशन् ॥

பதவுரை.

एषः सोमः	ஏஷஃ ஸோமஃ	இச் சோமம்,
देवेभ्यः	தே³வேப்⁴யஃ	தேவர்களின் பொருட்டுப்
सुतः	ஸுதஃ	பிழியப்பட்டது. (மற்றும் அது)
पवित्रे	வவித்ர	புனிதமாகிய கம்பளியில்

अक्षरत्	ஈக்ஷரத்	வடிக்கப்பெற்றதாய்த்
विश्वा धामानि	விஶ்வா தாமானி	தேவர்களின் உடம்புகளனைத்தி லும்
आविशन्	ஆவிஶந்	புகுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—2.

இச்சோமம், தேவர்களின் பொருட்டுப் பிழியப்பட்டதாய் வடிக்கும் பாத்திரத்திற் கம்பளிவாயிலாக இறங்கி, தேவர்களுடைய உடம்புகளனைத் திலும் புகுகின்றது. புகுதற் பொருட்டு வடிக்கப்படுகின்றதென்பது கருத்து. (2)

மந்திரம் 3.

३२ ३१ २ ३२ ३ २ ३ १ २
1280. एष देवः शुभायतेऽधि योनावमर्त्यः ।
३ १ २ ३ १२
वृत्रहा देववीतमः ॥ ३ ॥

ஏஷ தெவஃ ஶுஹாயதெऽயி யொநாவமர்த்யஃ ।
வ்ருத்ரஹா தெவவீதமஃ ॥

அன்வயம்.

अमर्त्यः, वृत्रहा, देववीतमः, देवः, एषः, अधियोनौ, शुभायते ॥

பதவுரை.

अमर्त्यः	அமர்த்யஃ	இறவாததும்
वृत्रहा	வ்ருத்ரஹா	பகைவரைக் கொல்வதும்,
देववीतमः	தெவவீதமஃ	தேவர்களை மிக விரும்புவதும்,
देवः	தெவஃ	விளங்குகின்றதுமாகிய
एषः	ஏஷஃ	இச் சோமரசம்,
अधियोनौ	அதியொநௌ	கலசமாகிய இடத்தில்
शुभायते	ஶுஹாயதெ	அழகுற்று விளங்குகின்றது.

சாயணபாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—3.

இச்சோமரசம் அழகு பெற்று விளங்குகின்றது. எதன்கண்ணெனின்? தனது இடத்திலென்க. இஃதெத்தன்மையதெனின்? இறவாததும், சத்துருவைக் கொல்வதும், தேவர்களே மிக விரும்புவதுமாமென்க. (3)

மந்திரம் 4.

३२उ ३ १२ ३१२ ३१२३२

1281. एष वृषा कनिक्रदद्दशभिर्जामिभिर्यतः ।

३१ २र

अभि द्रोणानि धावति ॥ ४ ॥

ஏஷ வ்ருஷா கனிக்ரதத்³ த³ஶபி⁴ர்ஜாமிபி⁴ர்யத: ।

அபி⁴ த்³ரோணானி தா⁴வதி ॥

அன்வயம்.

वृषा, एषः, कनिक्रदत्, दशभिः, जामिभिः, यतः, द्रोणानि, अभि धावति ॥

பதவுரை.

वृषा	வ்ருஷா	மனவிருப்பைப் பொழிகின்ற
एषः	ஏஷ:	இச்சோமம்,
कनिक्रदत्	கனிக்ரதத்	ஒலித்துக்கொண்டும்,
दशभिः	த³ஶபி⁴:	பத்து
जामिभिः	ஜாமிபி⁴:	விரல்களினல்
यतः	யத:	தாங்கப்பட்டும்,
द्रोणानि	த்³ரோணானி	துரோண கலசங்களை நோக்கி
अभि धावति	அபி⁴ தா⁴வதி	நன்கு செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—4.

வேண்டியவற்றைப் பொழிகின்ற இச்சோமம், இரைத்து கொண்டும், பத்து விரல்களாற் ரூங்கப்பட்டும், துரோண கலசங்களை நோக்கிச் செல்கின்றது என்பதாம். (4)

மந்திரம் 5.

३१ २र ३ १२ ३ २३१२
1282. एष सूर्यमरोचयत् पवमानो अधिद्यवि ।
३१२ ३१ २र
पवित्रे * मत्सरो मदः ॥ ५ ॥

ஸஷ ஸூர்யமரோசயத் பவமாநோ அதித்யவி ।
பவித்ரே மத்ஸரோ மதஃ ॥

அன்வயம்.

पवित्रे, मत्सरः, मदः, पवमानः, एषः, अधिद्यवि, सूर्यं, अरोचयत् ॥

பதவுரை.

पवित्रे	பவித்ரே	வடிக்கும் பாத்திரத்திலிருப்பதும்,
मत्सरः	மத்ஸரஃ	களிப்பைக் கொடுப்பதும்,
मदः	மதஃ	சந்தோஷ வடிவமுடையதும்
पवमानः	பவமாநஃ	சமற்காரஞ் செய்யப்பட்டதுமாகிய
एषः	ஸஷஃ	இச்சோமம்
अधिद्यवि	அதித்யவி	வானுலகிலிருக்கின்ற
सूर्यं	ஸூர்யம்	இரவியை
अरोचयत्	அரோசயத்	விளக்குகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—5.

புனிதமாக்கப்பட்ட இச்சோமம், வானிலிருக்கின்ற சூரியனைப் பிரகாசிப்பிக்கின்றது. இஃது எத்தன்மையதெனின்? தசாபவித்திரமென்னும் ஆடையின்கண்ணிருப்பதும், மதத்திற்கு நிமித்தமானதும், களிப்பைத்தருவதுமாமென்பதாம். (5)

* विचर्षणि, என்பது பாட பேதம்.

மந்திரம் 6.

३१ २र ३१ २ ३१ २
1283. एष सूर्येण हासते संवसानो विवस्वता ।
१ २ ३ १ २र
पतिर्वाचो अदाभ्यः ॥ ६–५ ॥

ஸஷ ஸூர்யேண ஹாஸதெ ஸம்வஸாநொ விவஸ்வதா ।
பதிர்வாசொ அதாப்யஃ ॥

அந்வயம்.

वाचः, पतिः, अदाभ्यः एषः, संवसानः, विवस्वता, सूर्येण, हासते ॥

பதவுரை.

वाचः	வாசுஃ	துதியாகிய வாக்குகட்கு
पतिः	பதிஃ	இறையும்,
अदाभ्यः एषः	அதாப்யஃ ஸஷஃ	எவற்றானும் துன்புறாதுமாகிய இச்சோமம்,
संवसानः	ஸம்வஸாநஃ	அனைத்தையும் மறைத்துக் கொண்டு
विवस्वता	விவஸ்வதா	பிரகாசமுடைய
सूर्येण	ஸூர்யேண	சூரியனால்
हासते	ஹாஸதெ	தசாபவித்திரமென்னும் ஆடையில் வார்க்கப்படுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—4. இருக்கு—6.

இச்சோமம், அனைத்தையும் மறைத்துக்கொண்டு சூரியனால் (ஒளியால்) தசாபவித்திரமென்னும் ஆடையில் வார்க்கப்படுக்கின்றது. ஈண்டுத், தசாபவித்திரமென்னும் வேஷ்டியில் என்பது எஞ்சி நின்றது. அஃது எத்தன்மையதெனின்? துதிவடிவவாக்கிற்கு இறையானதும், அல்லது, பரிபாலிப்பதும், ஒருவராலுந் துன்புறுத்தப்படாததுமாமென்க. (6)

இக் கண்டத்திலுள்ள ஆறு மந்திரங்கள், இருக்கில், 9-28-1-4, 27-9-25, 9-26-4, என மூன்று வகையாய்க் கொள்ளப்பட்டிருக்கின்றன.

நான்காவது கண்டம்

முற்றும்.

ஐந்தாவது கண்டம்.

பிரபாடகம்—5. அத்தியாயம்—10. கண்டம்—5.

ஆறு மந்திரங்களாலானது.

மந்திரம் 1.

३२ ३ २३ १ २ ३ २ ३ १ २
1284. एष कविरभिष्टुतः पवित्रे अधितोशते ।
३ २ ३ १ २
पुनानो घ्नन्नप * द्विषः ॥ १ ॥

ஸஷ கவிரபிஷ்டுதஃ பவித்ரே அதிதோஶதே ।
புநாநோ ஹ்நந்நபஜிஷஃ ॥

அந்வயம்.

कविः, अभिष्टुतः, एषः, पुनानः, द्विषः, अपघ्नन्, पवित्रे, अधितोशते ॥

பதவுரை.

कविः	கவிஃ	நுண்ணறிவுடையதும்,
अभिष्टुतः	அபிஷ்டுதஃ	துதிக்கப்படுவதுமாகிய,
एषः	ஸஷஃ	இச்சோமம்,
पुनानः	புநாநஃ	புநிதமாக்கப்பட்டுச்
द्विषः	ஜிஷஃ	சத்துருக்களைக்
अपघ्नन्	அபஹ்நந்	கொல்வதாய்,
पवित्रे	பவித்ரே	தசாபவித்திர மென்னும் ஆடையில்
अधितोशते	அதிதோஶதே	செல்கின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—ஆறுகொண்ட சூக்தத்தில்—1. நிருமேத ரிஷி.

இச்சோமம், பேரறிவுடையதும், துதிக்கப்படுவதும், தசாபவித்திர மென்னும் வடிக்கின்ற பாத்திரத்தைத் தாண்டிச் செல்கின்றதுமாம். ஈண்டுத் "தோசதி" என்னுஞ் சொற்குப் பொருள் வதைத்தலாமாயினும், இடிப்ப

* स्विधः, என்பது பாட பேதம்.

தென்னும் பொருளும் பொருந்துமாதலின் இங்குச் செல்லல் மாத்திரமாகிய பொருளோத்தந்து நின்றது. அல்லது, புனிதமாகிய கருமான் தோலின் மேல்வைத்து இடிக்கப்படுகின்றது. என்ன செய்துகொண்டெனின்? புனிதமாக்கப்பட்டும், பகைவரை வதைத்துக் கொண்டு மென்க. இவ்வணம் சோமம் இடிக்கப்படுகின்ற தென்பதாம். (1)

மந்திரம் 2.

३१ २र ३१२ ३१ २र
1285. एष इन्द्राय वायवे स्वर्जित्परिषिच्यते ।
३१२ ३ १२
पवित्रे दक्षसाधनः ॥ २ ॥

ஸஷ ஈந்த்ராய வாயவெ ஸ்வர்ஜித்பரிஷிச்யதெ ।
பவித்ரே தக்ஷஸாதனஃ ॥

அந்வயம்.

दक्षसाधनः, स्वर्जित्, एषः, इन्द्राय, वायवे, पवित्रे, परिषिच्यते ॥

பதவுரை.

दक्षसाधनः	தக்ஷஸாதனஃ	ஆற்றலுக்குச் சாதனமும்
स्वर्जित्	ஸ்வர்ஜித்	அனைத்தையும் வெல்வதுமாகிய
एषः	ஸஷஃ	இச்சோமம்,
इन्द्राय	ஈந்த்ராய	இந்திரனுக்கும்,
वायवे	வாயவெ	வாயுவுக்கும்,
पवित्रे	பவித்ரே	வடிக்கும் ஆடையிலிருந்து
परिषिच्यते	பரிஷிச்யதெ	தூனித் தூளியாய் விழுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—2.

சுவர்க்கத்தை, அல்லது, அனைத்தையும் வெல்வதாகிய இச்சோமம், இந்திரன் பொருட்டும், வாயுவின் பொருட்டும், வடிக்கும் வேஷ்டியினின்று ஒழுகுகின்றது. அஃது எத்தன்மையதெனின்? வன்மைக்குக் கருவியா மென்க. (2)

மந்திரம் 3.

३२उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २
1286. एष नृभिर्विनीयते दिवो मूर्धा वृषा सुतः ।
२ ३ १२ ३२
सोमो वनेषु विश्ववित् ॥ ३ ॥

ஸஷ நூஹிர்விநீயதெ தி வொ மூர்ஷா வூஷா ஸுதஃ ।
ஸொமொ வநெஷு விஶ்வவிஃ ॥

அந்வயம்.

दिवः, मूर्धा, वृषा, सुतः, विश्ववित्, एषः सोमः, नृभिः, वनेषु, विनीयते ॥

பதவுரை.

दिवः	தி வஃ	வானுலகிற்குத்
मूर्धा	மூர்ஷா	தலைபோன்று முக்கியமாகியதும்
वृषा	வூஷா	மனம் விரும்பியவற்றைப் பொழிவதும்
सुतः	ஸுதஃ	பிழியப்பட்டதும்
विश्ववित्	விஶ்வவிஃ	முற்று முணர்ந்ததுமாகிய
एषः सोमः	ஸஷஃ ஸொமஃ	இச் சோமம்,
नृभिः	நூஹிஃ	வேட்போர்களால்
वनेषु	வநெஷு	மரப் பாத்திரங்களில்
विनीयते	விநீயதெ	இனிது சேர்க்கப்படுகின்றது.

சாயண பாடியம்.

கண்டம்—5. இருக்கு—3.

இச்சோமம், வேட்போர்களால், பலவகையாய்க் கொண்டு போய்ச் சேர்க்கப்படுகின்றது. அஃது எத்தன்மையதெனின்? வானுலகத்திற்குத் தலையைப் போன்று முதன்மையானதும், வேண்டியதை நிறையக் கொடுப்பதும், பிழியப்பட்டதுமாமென்க. எங்குக் கொண்டு போய் சேர்க்கப்படுகின்றதெனின்? போற்றத்தக்க பாத்திரங்களிலென்க. அல்லது, வனத்திலுண்டாகிய மரங்களாலான பாத்திரங்களிலென்க. இவ்வாற்றால் எல்லாவற்றையு முணர்வது இச் சோமமெனல் பொருந்துமாறறிக. (3)